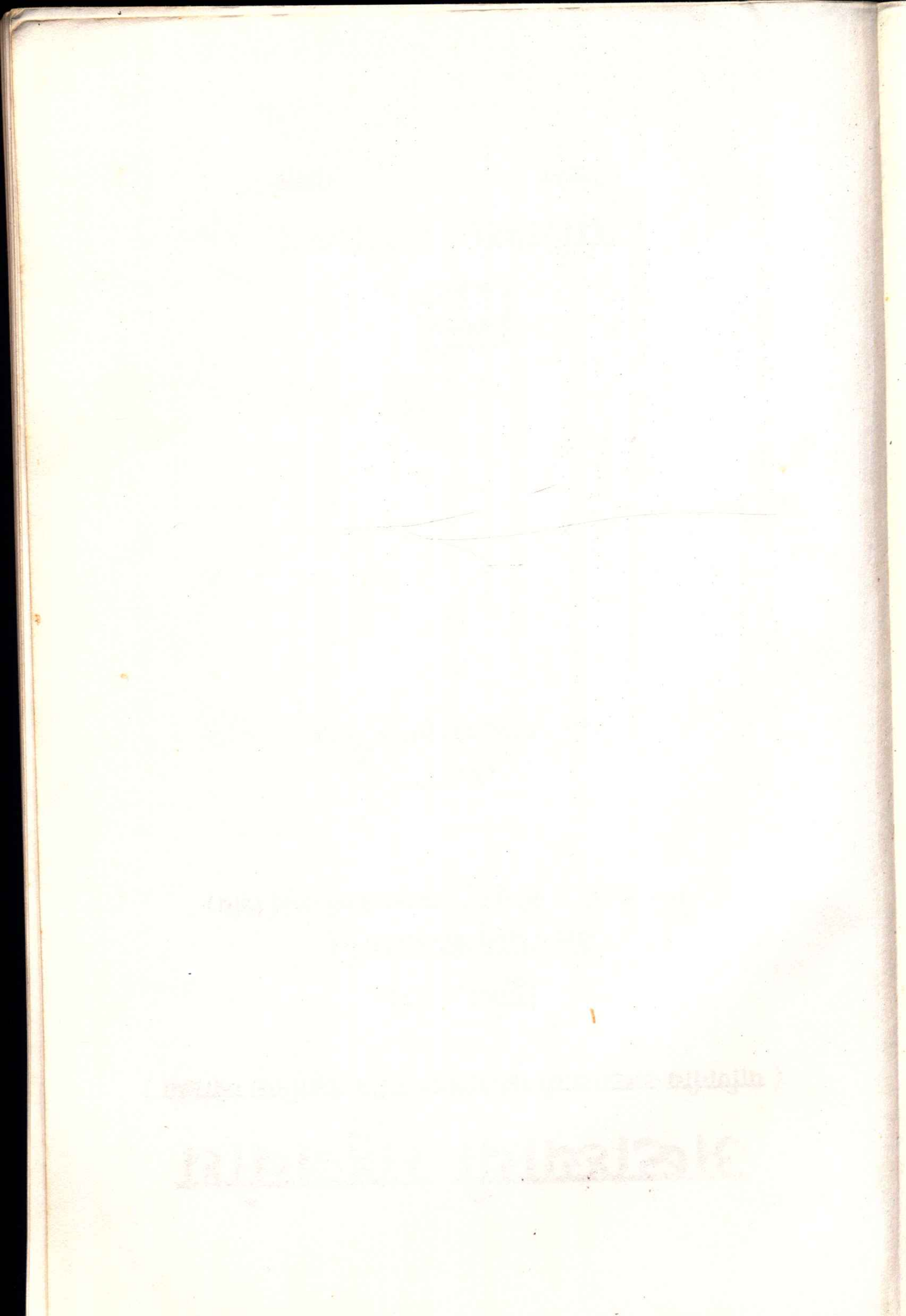
अष्टाध्यायी सहजबोध

द्वितीय भाग : आर्धधातुकप्रकरणम्



डॉ० पुष्पा दीक्षित



अष्टाध्यायी सहजबोध

(पाणिनीय अष्टाध्यायी की सर्वथा नवीन वैज्ञानिक व्याख्या)

द्वितीय भाग

आर्धधातुकप्रकरणम्

(समस्त धातुओं में सारे कृत् प्रत्यय लगाने की अपूर्व विधि)

रचयित्री

डॉ० (श्रीमती) पुष्पा दीक्षित



प्रतिभा प्रकाशन

दिल्ली भारत

तृतीय संस्करण 2011

ISBN : 978-81-7702-121-4 (द्वितीय भाग)
978-81-7702-006-4 (सेट)

मूल्य : 1500 (Set 1-4 vols.

प्रकाशक :
डॉ० राधेश्याम शुक्ल
एम.ए., एम. फ़िल्., पी-एच.डी.
प्रतिभा प्रकाशन
(प्राच्यविद्या-प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता)
7259/23, अजेन्द्र मार्केट, प्रेमनगर
शक्तिनगर, दिल्ली-110007
दूरभाष : (O) 011-47084852, (M) 9350884227
e-mail : pratibhabooks@ymail.com

टाईप सेटिंग : एस०के० ग्राफिक्स
दिल्ली-84

मुद्रक : एस०के० ऑफसेट, दिल्ली

AṢṬĀDHĀYĪ SAHAJABODHA

A Modern & Scientific Approach
To
Pāṇini's Aṣṭādhyāyī

Volume II
Ārdhadhātukaprakaraṇam

By

Dr. (Smt.) Pushpa Dixit



PRATIBHA PRAKASHAN
DELHI-110007

Third Edition : 2011

ISBN : 978-81-7702-006-4 (Vol. II.)
978-81-7702-007-2 (Set)

Rs. : 1500 (Set 1-4 vols.)

Published by :
Dr. Radhey Shyam Shukla
M.A., Ph.D.
PRATIBHA PRAKASHAN
(Oriental Publishers & Booksellers)
7259/23. Ajendra Market,
Prem Nagar, Shakti Nagar
Delhi-110007
Ph. : (O) 47084852, 09350884227
e-mail : pratibhabooks@ymail.com

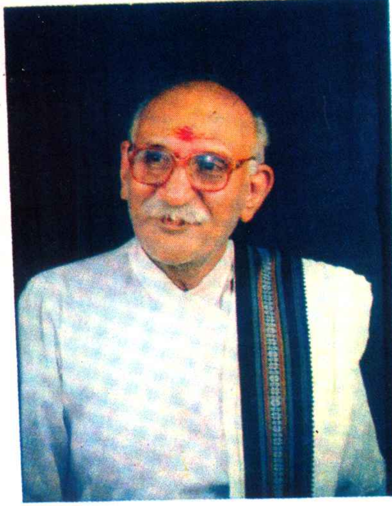
Laser Type Setting :
S.K. Graphics, Delhi–84

Printed at : **S.K. Offset,** Delhi

समर्पणम्

आचार्य डॉ. रामयत्न शुक्ल,

भूतपूर्व व्याकरणविभागाध्यक्ष, सम्पूर्णानन्द संस्कृत
विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ. प्र.



अखिलभुवनमण्डलमण्डनायमानेभ्यः, सकलशास्त्रावगाहिधिषणेभ्यः, काश्या महामहिमशालिन्याः शास्त्रपरम्पराया रक्षणार्थं छात्राणामध्यापने निरन्तरमासक्तेभ्यो, ग्रन्थग्रन्थिभेदं कुर्वत्यातिवैलक्षण्यशालिन्याध्यापनशैल्यान्तेवासिहृदयेषु हठात् प्रविशद्भ्यः, पदवाक्यप्रमाणपारावारीणेभ्यो, दर्शनमात्रेणैव पुण्योदयं पापक्षयं च विदधद्भ्यः प्रखरप्रसिद्धिमुपगतेभ्यो वैयाकरणप्रवरेभ्यो गुरुवर्येभ्यः श्रीमद्रामयत्नशुक्लपादेभ्यो ग्रन्थमिमं सादरं समर्पये। तपःपूतचेतसां तेषामेवायं, न मम। ❀❀❀

विषयानुक्रमणिका

आर्धधातुक खण्ड

सम्प्रसारणी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने की विधि ८८ / अनिदित् धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने की विधि ९१ / सम्प्रसारणी तथा नलोपी धातुओं से बचे हुए **'अजन्त'** धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने की विधि ९२ /

सम्प्रसारणी तथा नलोपी धातुओं से बचे हुए **'हलन्त'** धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने की विधि ९६ / चुरादिगण के तथा णिजन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने की विधि ९६।

समस्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के आत्मनेपदी रूप बनाने की विधि – आशीर्लिङ् लकार के आत्मनेपदी प्रत्यय ९८ / इडागम व्यवस्था ९८ / अतिदेश तथा सामान्य अङ्गकार्य १०२ / षत्व विधि १०३ / ढत्व विधि १०४ / अजन्त आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के आत्मनेपदी रूप बनाने की विधि १०५ / सेट् हलन्त आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि १०५ / अनिट् तथा वेट् हलन्त आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के आत्मनेपदी रूप बनाने की विधि १०५ / सन्नन्त तथा यङन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के आत्मनेपदी रूप बनाने की विधि ११८ ।

सप्तम पाठ – समस्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि – ३७ – ७५

लुट् लकार के प्रत्यय १२० / इडागम विधि १२१ / धात्वादेश १२६ / अतिदेश १२६ / सामान्य अङ्गकार्य १२८ / आकारान्त तथा एजन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि १३० / सेट् इकारान्त तथा ईकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि १३१ / अनिट् इकारान्त तथा ईकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि १३२ / सेट् उकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि १३२ / अनिट् उकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि १३३ / सेट् ऊकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि १३३ / सेट् तथा अनिट् ऋकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि १३४ / दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि १३५ /

सेट् हलन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि १३६ / अनिट् तथा वेट् हलन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि १३९

/ चुरादिगण के धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि १५२ / सन्नन्त तथा यङन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि १५२।

अष्टम पाठ - समस्त धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि - १५४ - २७८। लुङ् लकार के प्रत्यय बारह प्रकार के होते हैं। इन्हें अलग अलग करके इस प्रकार जानना चाहिये -

लुङ् लकार के १२ प्रकार के प्रत्यय १५४ / धात्वादेश १५३ / अट्, आट् का आगम १५७।

किन धातुओं के लुङ् लकार के 'परस्मैपदी रूप' बनाने के लिये सिच् का लुक् करके बने हुए प्रत्यय लगायें ?

विधि - पृष्ठ - १५९

गा, स्था, घुसंज्ञक पाँच दा, धा, पा, घ्रा, धेट् (धा) शा, छा, सा तथा भू, इन १४ धातुओं के लुङ् लकार के 'परस्मैपदी रूप' बनाने के लिये सिच् का लुक् करके बने हुए प्रत्यय लगाइये।

ध्यान रहे कि इन धातुओं के आत्मनेपदी रूप बनाने के लिये 'सिच्' से बने हुए प्रत्यय ही लगाये जायें।

किन धातुओं के लुङ् लकार के 'परस्मैपदी रूप' बनाने के लिये सक् + इट् + सिच् से बने हुए प्रत्यय लगायें ?

विधि - पृष्ठ - १६२

गा, स्था, घुसंज्ञक पाँच दा, धा, पा, घ्रा, धेट् (धा) शा, छा तथा सा इन १३ आकारान्त धातुओं को छोड़कर शेष आकारान्त धातुओं तथा यम्, रम्, नम् धातुओं के लुङ् लकार के 'परस्मैपदी रूप' बनाने के लिये सक् + इट् + सिच् से बने हुए प्रत्यय लगाइये।

ध्यान रहे कि इन धातुओं के आत्मनेपदी रूप बनाने के लिये 'सिच्' से बने हुए प्रत्यय ही लगाये जायें।

किन धातुओं के लुङ् लकार के 'परस्मैपदी रूप' बनाने के लिये अङ् से बने हुए प्रत्यय लगायें ?

विधि - पृष्ठ - १६४

असु क्षेपणे धातु - असु धातु जब सोपसर्ग होगा तब उसमें अङ् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय लगेंगे और जब असु धातु अनुपसर्ग होगा तब उसमें

अङ् से बने हुए परस्मैपदी प्रत्यय लगेंगे।

वच् धातु – यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि एक वच परिभाषणे, परस्मैपदी धातु है, इससे लुङ् लकार में अङ् से बने हुए केवल परस्मैपदी प्रत्यय लगेंगे। एक ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि धातु है, जो कि उभयपदी है। इस धातु को आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ब्रुवो वचिः सूत्र से वच् आदेश होता है। चूँकि यह धातु उभयपदी है अतः इससे लुङ् लकार में अङ् से बने हुए उभयपदी प्रत्यय लग सकते हैं।

ख्या धातु – ख्या प्रकथने यह धातु अदादिगण का है, इससे लुङ् लकार में अङ् से बने हुए ये प्रत्यय लगते हैं तथा जो अदादिगण का चक्षिङ् धातु है उसे जब आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर चक्षिङः ख्याञ् सूत्र से ख्या आदेश होता है, तब उससे भी लुङ् लकार में ये अङ् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।।

लिप उपदेहे, षिच क्षरणे, तथा ह्वेञ् स्पर्धायाम् – इन तीन धातुओं से भी लुङ् लकार में अङ् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

लिप्, षिच् तथा ह्वे ये तीनों धातु उभयपदी हैं। इनके लिये व्यवस्था यह है कि ये जब परस्मैपद में हों तब इनसे अङ् से बने प्रत्यय लगते है। किन्तु यदि इन धातुओं का आत्मनेपद में प्रयोग करना हो तब इनसे अङ् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय भी लग सकते हैं तथा सिच् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय जो अन्त में दिये जा रहे हैं, वे भी लग सकते हैं।

पुषादिगण के धातु – दिवादिगण का धातुपाठ देखिये। इसमें एक पुषादि अन्तर्गण है जो पुष पुष्टौ (११०७) से लेकर ष्णिह प्रीतौ (११६८) तक है। इन पुषादि धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये परस्मैपद में इन अङ् से बने हुए प्रत्ययों को लगाया जाता है। ये पुषादि धातु इस प्रकार हैं –

शक	असु	जसु	तसु	दसु	वसु	यसु	मसी	श्लिष
ष्विदा	षिधु	बिस	रिष	डिप	क्लिदू	मिदा	क्ष्विदा	पुष
शुष	तुष	दुष	क्रुध	क्षुध	शुध	व्युष	प्लुष	बुस
मुस	लुट	उच	रुष	कुप	गुप	युप	रुप	लुप
लुभ	क्षुभ	णभ	तुभ	भृशु	वृश	कृश	तृषा	हृष
ऋधु	गृधु	शमु	तमु	दमु	श्रमु	भ्रमु	क्षमु	क्लमु
मदी	रध	णश	तृप्	दृप	द्रुह	मुह	ष्णुह	ष्णिह

कुंस भ्रंशु = ६५

पुषादि अन्तर्गण के तृप्, दृप् धातुओं के लिये विशेष -

पुषादि अन्तर्गण के धातुओं में से जो तृप्, दृप् धातु हैं, इनसे अङ् और सिच् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लग सकते हैं।

पुषादि अन्तर्गण में श्लिष् धातु है। जब इसका अर्थ आलिङ्गन करना नहीं होता है, अपितु चिपकना आदि होता है, तब इससे अङ् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं। जब इसका अर्थ आलिङ्गन करना होता है, तब इससे क्स से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

द्युतादिगण के धातु - भ्वादिगण का धातुपाठ देखिये। इसमें एक द्युतादि अन्तर्गण है। जो द्युत दीप्तौ (८५६) से लेकर कृपू सामर्थ्ये (८६९) तक है। इन धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये परस्मैपद में इन अङ् से बने हुए प्रत्ययों को लगाया जाता है। आत्मनेपद में सिच् से बने हुए प्रत्ययों को ही लगाया जाता है। ये द्युतादि धातु इस प्रकार हैं -

द्युत रुच घुट रुट लुट लुठ शुभ क्षुभ तुभ
णभ भ्रंशु वृतु वृधु श्रृधु स्यन्दू कृपू श्विता मिदा
ष्विदा स्रंसु ध्वंसु भ्रंसु ध्वंसु स्रंभु।

लृदित् धातु -

आप्लृ शक्लृ पत्लृ षद्लृ गम्लृ कृप्लृ शद्लृ मुच्लृ लुप्लृ
विद्लृ शिष्लृ पिष्लृ घस्लृ विष्लृ = १४

इन पुषादि, द्युतादि तथा लृदित् धातुओं में से जो धातु परस्मैपदी है उनसे ही यह अङ् से बने हुए प्रत्यय लगेंगे।

जो धातु आत्मनेपदी हैं, उनसे सिच् से बने हुए प्रत्यय ही लगेंगे।

सृ धातु, शास् धातु तथा ऋ धातु - के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये भी इन अङ् से बने हुए प्रत्ययों को लगाते हैं।

'ऋ' धातु के लिये विशेष -

ऋ धातु जब सम् उपसर्ग से युक्त होता है तब वह आत्मनेपदी हो जाता है। जब यह परस्मैपदी होता है, तब इसमें अङ् से बने हुए परस्मैपद के प्रत्यय लगते हैं किन्तु जब यह आत्मनेपदी होता है, तब इसमें अङ् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय लगते हैं।

इरित् धातु - पूरे धातुपाठ में जिन धातुओं में इर् की इत् संज्ञा हुई है वे धातु इरित् धातु हैं। इन इरित् धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये ये अङ् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लगाये जाते हैं।

अर्थात् हम चाहें तो अङ् से बने हुए प्रत्यय लगायें, चाहें तो अन्त में कहे हुए सिच् से बने हुए प्रत्यय लगायें। धातुपाठ के कुल इरित् धातु इस प्रकार हैं -

च्युतिर् श्चुतिर् श्च्युतिर् स्फुटिर् घुषिर् तुहिर् दुहिर् उहिर्
स्कन्दिर् दृशिर् बुधिर् णिजिर् विजिर् शुचिर् रुधिर् भिदिर्
छिदिर् क्षुदिर् उच्छृदिर् उतृदिर् रिचिर् विचिर् युजिर्

दृश् धातु के लिये विशेष - न दृशः - इरित् धातुओं में से जो दृश् धातु है, इससे अङ् और सिच् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लग सकते हैं।

जॄष् वयोहानौ, म्रुचु, म्लुचु गत्यर्थौ, ग्रुचु ग्लुचु स्तेयकरणे, ग्लुञ्चु गतौ, टुओश्वि गतिवृद्धयोः धातु - इन धातुओं से तथा स्तन्भु धातु जो धातुपाठ में न होकर इस सूत्र में होने के कारण सौत्र धातु है, उससे, लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये ये अङ् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लगाये जाते हैं।

अर्थात् हम चाहें तो अङ् से बने हुए प्रत्यय लगायें, चाहें तो अन्त में कहे हुए सिच् से बने हुए प्रत्यय लगायें।

कृ, मृ, दृ, रुह् धातु - इन धातुओं से वेद में लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये अङ् प्रत्यय का प्रयोग होता है।

अतः ध्यान रहे कि लोक में अर्थात् संस्कृत भाषा में यदि इन धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाना हो तो अङ् का प्रयोग न करके यथाविहित प्रत्ययों का प्रयोग करें। लोक में कृ, मृ, दृ, धातुओं से सिच् से बने हुए तथा रुह् धातु से क्स से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

किन धातुओं के लुङ् लकार के 'परस्मैपदी रूप' बनाने के लिये चङ् से बने हुए प्रत्यय लगायें ?

विधि - पृष्ठ - १७३

श्रि, द्रु धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये उनमें चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाये जाते हैं।

जिस भी धातु से 'णिच्' या णिङ्' प्रत्यय लगे हों, ऐसे ण्यन्त धातुओं

के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये भी उनमें चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाये जाते हैं।

किन धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये
क्स से बने हुए प्रत्यय लगायें ?

विधि - पृष्ठ - २०६

क्रुश्, दिश्, रिश्, रुश्, लिश्, विश्, त्विष्, द्विष्, मिह् रुह्, लिह्, दिह्, दुह् इन १३ धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये क्स से बने हुए प्रत्यय लगते है।

श्लिष् धातु का अर्थ जब आलिङ्गन करना होता है, तब तो उससे क्स से बने हुए प्रत्यय लगते हैं, तथा जब इसका अर्थ चिपकना होता है, तब उससे अङ् से बने हुए प्रत्यय ही लगते हैं, यह ध्यान रखना चाहिये।

स्पृश्, मृश्, कृष् इन धातुओं से क्स से बने हुए और सिच् से बने हुए दोनों ही प्रत्यय विकल्प से लगते हैं।

किन धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये
सिच् से बने हुए प्रत्यय लगायें ?

विधि - २०९ - २७८

इन सारे प्रत्ययों से जो धातु बच जायें, उन धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये सिच् से बने हुए प्रत्यय लगायें। ये धातु इस प्रकार हैं-

१. **आकारान्त तथा एजन्त धातु** - जब आकारान्त तथा एजन्त धातु आत्मनेपदी होते हैं, तब उनसे सिच् से बने हुए अनिट् प्रत्यय लगाये जाते हैं।

केवल एक आकारान्त धातु ह्वे (ह्वा) धातु ऐसा है, जिससे आत्मनेपद में सिच् से बने हुए प्रत्यय तथा अङ् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लगते हैं। अह्वत / अह्वास्त।

२. **इकारान्त, ईकारान्त धातु** - इनमें श्वि धातु से अङ्, चङ् और सिच् ये तीन प्रत्यय लग सकते हैं। श्रि धातु से केवल चङ् लगता है। शेष इकारान्त धातुओं से सिच् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

३. **उकारान्त, ऊकारान्त धातु** - इनमें भू धातु से सिज्लुक् कहा गया है। द्रु, स्रु से चङ् कहा गया है। इन तीन को छोड़कर सारे उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं से सिच् प्रत्यय ही लगेगा।

४. ऋकारान्त, ॠकारान्त धातु – सृ धातु से तथा ऋ धातु से अङ् प्रत्यय कहा गया है। जॄ से विकल्प से अङ् और सिच् कहे गये हैं। कॄ, मॄ, दॄ से केवल वेद में अङ् कहा है, अतः सृ, ऋ के अलावा सारे ऋकारान्त, ॠकारान्त धातुओं से लोक में, ये सिच् से बने हुए प्रत्यय ही लगेंगे।

५. हलन्त धातु – पहिले उन हलन्त धातुओं को अलग कर दें, जिनसे अन्य अन्य प्रत्यय लग चुके हैं। ये धातु इस प्रकार हैं।

क. क्रुश्, दिश्, रिश्, रुश्, लिश्, विश्, त्विष्, द्विष्, श्लिष्, दिह्, दुह्, मिह् रुह्, लिह्, इन चौदह शलन्त इगुपध धातओं से क्स से बने हुए प्रत्यय ही लगते हैं।

ख. लिप्, सिच्, इन दो हलन्त धातुओं से परस्मैपद में अङ् से बने हुए प्रत्यय कहे गये हैं। अतः आत्मनेपद में सिच् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

ग. यम्, रम्, नम्, इन तीन हलन्त धातुओं से परस्मैपद में सक् + सिच् से बने हुए प्रत्यय कहे गये हैं। अतः आत्मनेपद में सिच् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

घ. स्पृश्, मृश्, कृष् इन शलन्त इगुपध धातुओं से क्स और सिच् दोनों ही प्रंत्यय विकल्प से लग सकते हैं।

ङ. दिवादिगण के अन्तर्गत पुष् से गृध् तक, जो ६५ धातुओं का पुषादि अन्तर्गण है, उन पुषादि धातुओं से अङ् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

तृप्, दृप् ये दोनों धातु भी पुषादि अन्तर्गण में आते हैं, तथापि इनसे अङ् और सिच् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लग सकते हैं।

अतः यह जानिये कि ६३ पुषादि धातुओं से अङ्, तथा २ पुषादि धातुओं से अङ् और सिच् दोनों ही प्रत्यय लग सकते हैं।

च. भ्वादि गण के भीतर द्युत दीप्तौ से कृपू सामर्थ्ये तक जो २२ धातुओं का द्युतादि अन्तर्गण है, उनसे परस्मैपद में केवल अङ् प्रत्यय लगता है। आत्मनेपद में सिच् प्रत्यय लगता है।

छ. अस्, वच्, शास् इन तीन धातुओं से केवल अङ् प्रत्यय लगता है।

ज. १४ लृदित् धातु हैं, उन लृदित् धातुओं से भी केवल अङ् प्रत्यय लगता है।

झ. २३ इरित धातु हैं। इनसे भी केवल अङ् प्रत्यय लगता है।

ञ. म्रुचु, म्लुचु गत्यर्थौ, ग्रुचु, ग्लुचु स्तेयकरणे, ग्लञ्चु गतौ, तथा स्तन्भु धातु से, लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये अङ् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लगाये जाते हैं। अतः इनसे एक पक्ष में अङ् से बने हुए प्रत्यय तथा द्वितीय पक्ष में सिच् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

ट. रुह् धातु से वेद में लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये अङ् प्रत्यय का प्रयोग होता है तथा लोक में रुह् धातु के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये सिच् प्रत्यय का प्रयोग होता है।

ये कुल १५१ धातु हैं। इन १५१ हलन्त धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये ऊपर कहा हुआ विचार कीजिये। शेष हलन्त धातुओं से लुङ् लकार में सिच् से बने हुए प्रत्यय ही लगाइये।

यह भी ध्यान रखिये कि जो सेट् प्रत्यय हैं, वे सेट् धातुओं से लगाये जायें तथा जो अनिट् प्रत्यय हैं, वे अनिट् धातुओं से ही लगाये जायें।

परस्मैपदी प्रत्यय, परस्मैपदी धातुओं से लगाये जायें तथा आत्मनेपदी प्रत्यय आत्मनेपदी धातुओं से लगाये जायें।

धातुओं में सिच् से बने हुए प्रत्यय लगाने की विधि

नवम पाठ - समस्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि



आर्धधातुक खण्ड

प्रथम पाठ

आर्धधातुक प्रत्ययों के लिये सरल धातुपाठ

पाणिनीय धातुपाठ के सारे धातु हमने इस ग्रन्थ के प्रथमखण्ड में, अर्थ सहित दिये हैं। अतः इस खण्ड में इनके अर्थ न देकर केवल धातु का निरनुबन्ध रूप ही दे रहे हैं। धातु के इसी निरनुबन्ध रूप से ही सारे आर्धधातुक प्रत्यय लगाइये। यदि इनके अर्थ जानना हो, तो प्रथमखण्ड के पीछे दी हुई धातुसूची से इन धातुओं के अर्थों को देखा जा सकता है।

हम जानते हैं कि पाणिनीय धातुपाठ के समग्र धातु १० भागों में बँटे हुए हैं। प्रत्येक भाग को हम गण कहते हैं। प्रत्येक गण का अलग अलग चिह्न या विकरण होता है, यह हम पढ़ चुके हैं। ये विकरण इस प्रकार हैं -

क्रमाङ्क	- गणनाम	- विकरण	क्रमाङ्क	- गणनाम	-विकरण
प्रथमगण	= भ्वादिगण	- शप्	षष्ठगण	= तुदादिगण	- श
द्वितीयगण	= अदादिगण	- शप्लुक्	सप्तमगण	= रुधादिगण	- श्नम्
तृतीयगण	= जुहोत्यादिगण	- शप्श्लु	अष्टमगण	= तनादिगण	- उ
चतुर्थगण	= दिवादिगण	- श्यन्	नवमगण	= क्र्यादिगण	- श्ना
पञ्चमगण	= स्वादिगण	- श्नु	दशमगण	= चुरादिगण	- शप्

लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लकारों के प्रत्यय, तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय हैं। शतृ, शानच्, शानन्, चानश्, खश्, श, एश्, शध्यै, शध्यैन् ये कृत्,सार्वधातुक प्रत्यय हैं। इन प्रत्ययों का अर्थ जब कर्ता होता है, तब इनके परे होने पर धातुओं के बाद गणों के ये विकरण बैठते हैं। जैसे - भू + ति। इसमें 'भू' यह भ्वादिगण का धातु है, तथा 'ति' यह लट् लकार का कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय है। अतः इनके बीच में शप् विकरण बैठेगा।

कर्मार्थक अथवा भावार्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, तथा कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातु + प्रत्यय के बीच में ये विकरण कभी नहीं बैठते। जैसे - दा + स्यति। यह 'स्यति' प्रत्यय लृट् लकार का आर्धधातुक

प्रत्यय है। अतः इसके लगने पर धातु और प्रत्यय के बीच में विकरण नहीं बैठेगा।

इस खण्ड में हम लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, आशीर्लिङ्, लुङ्, लृङ्, इन आर्धधातुक लकारों के रूप तथा सन्नन्त, यङन्त आदि प्रक्रियाएँ बनाने जा रहे हैं। इन सभी के प्रत्यय आर्धधातुक ही हैं।

जब आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर विकरण को बैठना ही नहीं है, तो क्यों न हम, सारे गणों के धातुओं को एक साथ मिलाकर काम करें। इससे सरलता होगी। इसी भाव से हमने, भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे धातुओं को एक साथ मिलाकर, प्रक्रिया की सरलता के लिये यह धातुपाठ बनाया है, क्योंकि -

आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर गणों का कोई भेद नहीं होता।

ध्यान दें कि आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, एजन्त धातु 'आदेच उपदेशेऽशिति' सूत्र से आकारान्त हो जाते हैं। अतः हमने उन्हें आकारान्त बनाकर, आकारान्त धातुओं के वर्ग में ही मिला दिया है।

इस धातुपाठ में धातु इस क्रम से दिये गये हैं - भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे आकारान्त तथा एजन्त धातु / भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे इकारान्त धातु / भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे ईकारान्त धातु / भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे उकारान्त धातु / भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे ऊकारान्त धातु / भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे ऋकारान्त धातु / भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे ॠकारान्त धातु / भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे अदुपध धातु / भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे इदुपध धातु / भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे ऋदुपध धातु / भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे सम्प्रसारणी धातु / भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे अनिदित् धातु / भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे शेष धातु।

इन नौ गणों के सम्मिलित धातुपाठ के बाद, धातुओं के अन्तर्गणों को रखा है, क्योंकि उनमें पृथक् कार्य हो सकते हैं। चुरादिगण के धातुओं को भी अलग रखा है, क्योंकि चुरादिगण के किसी भी धातु में पहिले 'सत्यापपाशरूपवीणा - तूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्' सूत्र से 'णिच्' प्रत्यय लगाया जाता है। णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद जो 'णिजन्त' धातु तैयार होता है, उससे ही अन्य कोई भी प्रत्यय लगाया जा सकता है, सीधे नहीं।

अब आर्धधातुक प्रत्ययों के लिये यह धातुपाठ प्रारम्भ कर रहे हैं -

भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के धातु तथा उनके अन्तर्गण

आकारान्त धातु		डुधाञ्	धा	त्रैङ्	त्रा	क्षि	क्षि
(सारे अनिट् हैं)		**एजन्त धातु**		श्यैङ्	श्या	चिरि	चिरि
पा	पा	**(सारे अनिट् हैं)**		वेञ्	वा	जिरि	जिरि
घ्रा	घ्रा	दैप्	दा	शो	शा	रि	रि
ध्मा	ध्मा	धेट्	धा	छो	छा	पि	पि
ष्ठा	स्था	देङ्	दा	षो	सा	धि	धि
म्ना	म्ना	दो	दो	ह्वेञ्	ह्वा	क्षि	क्षि
गाङ्	गा	ग्लै	ग्ला	(लिट्लकार में हु)		षिञ्	सि
या	या	म्लै	म्ला	व्येञ्	व्या	**ईकारान्त धातु**	
वा	वा	द्यै	द्या	(लिट्लकार में व्ये)		**(सेट् धातु)**	
भा	भा	द्रै	द्रा	**इकारान्त धातु**		डीङ्	डी
ष्णा	स्ना	ध्रै	ध्रा	**(सेट् धातु)**		शीङ्	शी
श्रा	श्रा	ध्यै	ध्या	टुओश्वि	श्वि	**(अनिट् धातु)**	
द्रा	द्रा	रै	रा	श्रिञ्	श्रि	णीञ्	नी
प्सा	प्सा	स्त्यै	स्त्या	**(अनिट् धातु)**		वी	वी
पा	पा	ष्ट्यै	स्त्या	जि	जि	ञिभी	भी
रा	रा	खै	खा	जि	जि	ह्री	ह्री
ला	ला	क्षै	क्षा	ज्रि	ज्रि	दीङ्	दी
ख्या	ख्या	जै	जा	क्षि	क्षि	डीङ्	डी
प्रा	प्रा	षै	सा	ष्मिङ्	स्मि	धीङ्	धी
मा	मा	कै	का	इण्	इ	मीङ्	मी
माङ्	मा	गै	गा	इङ्	इ	रीङ्	री
ओहाङ्	हा	शै	शा	इक्	इ	लीङ्	ली
ओहाक्	हा	श्रै	श्रा	कि	कि	व्रीङ्	व्री
गा	गा	पै	पा	षिञ्	सि	डुक्रीञ्	क्री
माङ्	मा	ओवै	वा	शिञ्	शि	प्रीञ्	प्री
ज्ञा	ज्ञा	ष्टै	स्ता	डुमिञ्	मि	श्रीञ्	श्री
दाण्	दा	ष्णै	स्ना	चिञ्	चि	मीञ्	मी
दाप्	दा	ष्यैङ्	स्या	हि	हि	री	री
डुदाञ्	दा	मेङ्	मा	रि	रि	ली	ली

ब्ली ब्ली
प्ली प्ली
व्री व्री
भ्री भ्री
क्षीष् क्षी

उकारान्त धातु
(सेट् धातु)

यु यु
रु रु
णु नु
टुक्षु क्षु
क्ष्णु क्ष्णु
ष्णु स्नु

(अनिट् धातु)

ध्रु ध्रु
दु दु
द्रु द्रु
स्रु स्रु
षु सु
गुङ् गु
कुङ् कु
घुङ् घु
उङ् उ
ङुङ् ङु
च्युङ् च्यु
ज्युङ् ज्यु
प्रुङ् प्रु
प्लुङ् प्लु
रुङ् रु
द्यु द्यु
षु सु
कु कु
ऊर्णुञ् ऊर्णु
रु रु
ष्टुञ् स्तु
ह्नुङ् ह्नु
हु हु
षुञ् सु
धुञ् धु
टुदु दु
स्कुञ् स्कु
युञ् यु
श्रु श्रु

ऊकारान्त धातु
(सारे सेट् हैं)

भू भू
पूङ् पू
मूङ् मू
ब्रूञ् ब्रू
षूङ् सू
षूङ् सू
दूङ् दू
धूञ् धू
षू सू
क्नूञ् क्नू
द्रूञ् द्रू
पूञ् पू
लूञ् लू
धूञ् धू

ऋकारान्त धातु
(सेट् धातु)

वृङ् वृ
वृञ् वृ

(अनिट् धातु)

ऋ ऋ
सृ सृ
ह्वृ ह्वृ
ह्वृ ह्वृ
स्वृ स्वृ
स्मृ स्मृ
गृ गृ
घृ घृ
ध्वृ ध्वृ
धृङ् धृ
भृञ् भृ
हृञ् हृ
धृञ् धृ
जागृ जागृ
डुभृञ् भृ
सृ सृ
घृ घृ
हृ हृ
ऋ ऋ
स्तृञ् स्तृ
कृञ् कृ
पृ पृ
स्पृ स्पृ
दृ दृ
पृङ् पृ
मृङ् मृ
दृङ् दृ
धृङ् धृ
डुकृञ् कृ

ॠकारान्त धातु

तॄ तॄ
पॄ पॄ
जॄष् जॄ
झॄष् झॄ
कॄ कॄ
गॄ गॄ
स्तॄञ् स्तॄ
कॄञ् कॄ
वॄञ् वॄ
शॄ शॄ
पॄ पॄ
वॄ वॄ
भॄ भॄ
मॄ मॄ
दॄ दॄ
जॄ जॄ
नॄ नॄ
कॄ कॄ
ॠ ॠ
गॄ गॄ

अदुपध धातु
(अनिट् धातु)

रभ रभ्
डुलभष् लभ्
यभ यभ्
णम नम्
गम्लृ गम्
दह दह्
णह नह्
तप तप्
त्यज त्यज्
घस्लृ घस्
वस वस्

डुपचष्	पच्	लज	लज्	रप	रप्	मव	मव्
वच	वच्	जज	जज्	लप	लप्	अव	अव्
भज	भज्	गज	गज्	रफ	रफ्	कष	कष्
शद्लृ	शद्	वज	वज्	अण	अण्	खष	खष्
षद्लृ	सद्	व्रज	व्रज्	रण	रण्	जष	जष्
यम	यम्	अंट	अट्	वण	वण्	झष	झष्
गम्लृ	गम्	पट	पट्	भण	भण्	मष	मष्
हद	हद्	रट	रट्	मण	मण्	शष	शष्
पद	पद्	लट	लट्	कण	कण्	वष	वष्
अद	अद्	शट	शट्	क्वण	क्वण्	भष	भष्
हन	हन्	वट	वट्	व्रण	व्रण्	ह्लस	ह्लस्
शप	शप्	जट	जट्	भ्रण	भ्रण्	रस	रस्
(सेट् धातु)		झट	झट्	ध्वण	ध्वण्	लस	लस्
बद	बद्	भट	भट्	ध्रन	ध्रन्	मह	मह
खद	खद्	तट	तट्	ष्टन	स्तन्	चह	चह्
अत	अत्	खट	खट्	वन	वन्	मश	मश्
कख	कख्	नट	नट्	वन	वन्	शव	शव्
गद	गद्	हट	हट्	षण	सन्	शश	शश्
रद	रद्	षट	सट्	अम	अम्	षम	सम्
णद	नद्	पठ	पठ्	द्रम	द्रम्	ष्टम	स्तम्
नद	नद्	वठ	वठ्	हय	हय्	कमु	कम्
तक	तक्	मठ	मठ्	अल	अल्	जभी	जभ्
बख	बख्	कठ	कठ्	फल	फल्	मनु	मन्
मख	मख्	रट	रट्	स्खल	स्खल्	कटी	कट्
णख	नख्	हठ	हठ्	खल	खल्	कनी	कन्
रख	रख्	शठ	शठ्	गल	गल्	छमु	छम्
लख	लख्	अड	अड्	षल	सल्	जमु	जम्
घघ	घघ्	लड	लड्	दल	दल्	झमु	झम्
ध्रज	ध्रज्	कड	कड्	श्वल	श्वल्	शसु	शस्
ध्वज	ध्वज्	जप	जप्	त्सर	त्सर्	त्रिफला	फल्
अज	अज्	चप	चप्	क्मर	क्मर्	दध	दध्
खज	खज्	षप	सप्	चर	चर्	दद	दद्

ष्वद	स्वद्	व्यय	व्यय्	यसु	यस्	विष्लृ	विष्
कक	कक्	अस	अस्	शक्लृ	शक्	क्षिप	क्षिप्
चक	चक्	स्पश	स्पश्	अशू	अश्	खिद	खिद्
षच	सच्	लष	लष्	षघ	सघ्	विद	विद्
शच	शच्	चष	चष्	अह	अह्	लिश	लिश
श्वच	श्वच्	छष	छष्	दघ	दघ्	दिश	दिश्
कच	कच्	झष	झष्	चमु	चम्	भिदिर्	भिद्
चमु	चम्	षच	सच्	षद्लृ	सद्	छिदिर्	छिद्
मच	मच्	खनु	खन्	शद्लृ	शद्	रिचिर्	रिच्
अय	अय्	कटे	कट्	चल	चल्	विचिर्	विच्
वय	वय्	हसे	हस्	ओलजी	लज्	खिद	खिद्
पय	पय्	चते	चत्	तनु	तन्	विद	विद्
मय	मय्	चदे	चद्	षणु	सन्	रिश	रिश्
चय	चय्	पण	पण्	क्षणु	क्षण्	लिश	लिश्
तय	तय्	पन	पन्	वनु	वन्	विश	विश्
णय	नय्	क्रमु	क्रम्	णभ	नभ्	शिष्लृ	शिष्
दय	दय्	लष	लष्	अश	अश्	पिष्लृ	पिष्
रय	रय्	बध	बध्	उध्रस्	ध्रस्	**(सेट् धातु)**	
शल	शल्	अस	अस्	खच	खच्	तिज	तिज्
वल	वल्	षस	सस्	ग्रह	ग्रह्	कित	कित्
मल	मल्	श्वस	श्वस्	**इदुपध धातु**		चिती	चित्
भल	भल्	अन	अन्	**(अनिट् धातु)**		षिधू	सिध्
कल	कल्	भस	भस्	षिध	सिध्	इख	इख्
णस	नस्	धन	धन्	मिह	मिह्	किट	किट्
भ्यस	भ्यस्	जन	जन्	तिपृ	तिप्	खिट	खिट्
ग्लह	ग्लह्	ष्णसु	स्नस्	त्विष	त्विष्	शिट	शिट्
यती	यत्	क्नसु	क्नस्	द्विष	द्विष्	षिट	सिट्
ग्रसु	ग्रस्	त्रसी	त्रस्	दुह	दुह्	चिट	चिट्
ग्लसु	ग्लस्	षह	सह्	लिह	लिह्	विट	विट्
त्रपूष्	त्रप्	अण	अण्	विद	विद्	विट	विट्
क्षमूष्	क्षम्	मन	मन्	णिजिर्	निज्	पिट	पिट्
कबृ	कब्	जनी	जन्	विजिर्	विज्	किट	किट्

तिल	तिल्
शिष	शिष्
रिष	रिष्
जिषु	जिष्
विषु	विष्
मिषु	मिष्
श्रिषु	श्रिष्
श्लिषु	श्लिष्
क्षिबु	क्षिव्
पिसृ	पिस्
णिश	निश्
मिश	मिश्
णिदृ	निद्
ञिष्विदा	स्विद्
पिठ	पिठ्
विथृ	विथ्
टिकृ	टिक्
तिकृ	तिक्
प्लिह	प्लिह्
ष्टिप	स्तिप्
मिदृ	मिद्
ष्ठिवु	ष्ठिव्
रुदिर्	रुद्
धिष	धिष्
तिम	तिम्
ष्टिम	स्तिम्
इष	इष्
क्लिश	क्लिश्
दिवु	दिव्
षिवु	सिव्
स्रिवु	स्रिव्
ष्ठिवु	ष्ठिव्

ष्टिघ	स्तिघ्
तिक	तिक्
तिग	तिग्
इष	इष्
क्षिप	क्षिप्
ओविजी	उद्विज्
रिफ	रिफ्
विध	विध्
मिष	मिष्
किल	किल्
तिल	तिल्
चिल	चिल्
इल	इल्
विल	विल्
बिल	बिल्
णिल	निल्
हिल	हिल्
शिल	शिल्
षिल	सिल्
मिष	मिष्
लिख	लिख्
मिल	मिल्
ओविजी	विज्
क्षिणु	क्षिण्
क्लिशू	क्लिश्
इष	इष्
विष	विष्

उदुपध धातु

(अनिट् धातु)

पुष	पुष्
रुश	रुश्
णुद	नुद्
रुधिर्	रुध्
क्षुदिर्	क्षुद्
युजिर्	युज्
भुज	भुज्
रुजो	रुज्
भुजो	भुज्
दुह	दुह्
बुध	बुध्
युध	युध्
अनोरुध	अनुरुध्
युज्	युज्
तुद	तुद्
णुद	नुद्

(सेट् धातु)

गुहू	गुह्
गुप	गुप्
गुपू	गोप्
च्युतिर्	च्युत्
श्चुतिर्	श्चुत्
श्च्युतिर्	श्च्युत्
उख	उख्
शुच	शुच्
कुच	कुच्
म्रुचु	म्रुच्
म्लुचु	म्लुच्
ग्रुचु	ग्रुच्
ग्लुचु	ग्लुच्
कुजु	कुज्
खुजु	खुज्
तुज	तुज्
मुज	मुज्
स्फुट	स्फुट्
लुट	लुट्
मुड	मुड्
प्रुड	प्रुड्
स्फुटिर्	स्फुट्
रुठ	रुठ्
लुठ	लुठ्
उठ	उठ्
शुठ	शुठ्
चुप	चुप्
हुड्ड	हुड्
तुड्ड	तुड्
तुप	तुप्
त्रुप	त्रुप्
तुफ	तुफ्
त्रुफ	त्रुफ्
घुण	घुण्
घुषिर्	घुष्
रुष	रुष्
उष	उष्
पुष	पुष्
प्रुष	प्रुष्
प्लुषु	प्लुष्
तुस	तुस्
तुहिर्	तुह्
दुहिर्	दुह्
बुधिर्	बुध्
उहिर्	उह्
मुद	मुद्
गुद	गुद्
युतृ	युत्
जुतृ	जुत्
कुक	कुक्

षटुच	स्तुच्
षटुभु	स्तुभ्
शुभ	शुभ्
तुर	तुर्
ष्णुसु	स्नुस्
व्युष	व्युष्
प्लुष	प्लुष्
कुथ	कुथ्
पुथ	पुथ्
गुध	गुध्
षुह	सुह्
शुचिर्	शुच्
जुषी	जुष्
लुभ	लुभ्
तुप	तुप्
तुफ	तुफ्
गुफ	गुफ्
उभ	उभ्
शुभ	शुभ्
जुड	जुड्
तुण	तुण्
पुण	पुण्
मुण	मुण्
कुण	कुण्
शुन	शुन्
तुण	तुण्
घुण	घुण्
खुर	खुर्
कुर	कुर्
खुर	खुर्
मुर	मुर्

क्षुर	क्षुर्
घुर	घुर्
पुर	पुर्
छुप	छुप्
गुध	गुध्
कुष	कुष्
क्षुभ	क्षुभ्
तुभ	तुभ्
प्रुष	प्रुष
प्लुष	प्लुष्
मुष	मुष्

ऋदुपध धातु

(अनिट् धातु)

दृशिर्	दृश्
कृष	कृष्
सृप्लृ	सृप्
तृप	तृप्
दृप	दृप्
सृज	सृज्
स्पृश	स्पृश्
मृश	मृश्

(सेट् धातु)

धृज	धृज्
गृज	गृज्
पृषु	पृष्
वृषु	वृष्
मृषु	मृष्
घृषु	घृष्
हृषु	हृष्
हृस	हृस्
दृह	दृह्
बृह	बृह्

षृभु	सृभ्
वृक	वृक्
ऋज	ऋज्
भृजी	भृज्
वृतु	वृत्
वृधु	वृध्
शृधु	शृध्
मृधु	मृध्
गृहू	गृह्
वृजी	वृज्
पृची	पृच्
मृजू	मृज्
नृती	नृत्
वृतु	वृत्
मृष	मृष्
ऋधु	ऋध्
ञिधृषा	धृष्
ऋषी	ऋष्
ऋच	ऋच्
ऋफ	ऋफ्
दृभी	दृभ्
चृती	चृत्
मृड	मृड्
पृड	पृड्
पृण	पृण्
वृण	वृण्
मृण	मृण्
वृहू	वृह्
तृहू	तृह्
स्तृहू	स्तृह्
उच्छृदिर्	छृद्
उतृदिर्	तृद्

कृती	कृत्
पृची	पृच्
वृजी	वृज्
तृह	तृह्
ऋणु	ऋण्
तृणु	तृण्
घृणु	घृण्
मृद	मृद्
मृड	मृड्

सम्प्रसारणी धातु

(ग्रह्यादि)

ग्रह	ग्रह्
ज्या	ज्या
व्यध	व्यध्
वश	वश्
व्यच	व्यच्
ओव्रश्चू	व्रश्च्

(अनिट् धातु)

प्रच्छ	प्रच्छ्
भ्रस्ज	भ्रज्ज्

सम्प्रसारणी धातु

(वच्यादि)

(अनिट् धातु)

वच	वच्
ञिष्वप	स्वप्
यज	यज्
डुवप	वप्
वह	वह्
वस	वस्
वेञ्	वे
व्येञ्	व्ये
वद	वद्

ह्वेञ्	ह्वे	श्रम्भु	श्रम्भ्	टुमस्जो	मस्ज्	तुर्वी	तूर्व्
(सेट् धातु)		स्रंसु	स्रंस्	**(सेट् धातु)**		थुर्वी	थूर्व्
टुओश्वि	श्वि	ध्वंसु	ध्वंस्	ओखृ	ओख्	दुर्वी	दूर्व्
अनिदित् धातु		भ्रंसु	भ्रंस्	एजृ	एज्	धुर्वी	धूर्व्
(अनिट् धातु)		स्रम्भु	स्रम्भ्	ईट	ईट्	गुर्वी	गूर्व्
दंश	दंश्	स्यन्दू	स्यन्द्	ओणृ	ओण्	हुर्छा	हूर्च्छ्
ष्वञ्ज	स्वञ्ज्	कुंस	कुंस्	ईर्क्ष्य	ईर्क्ष्य्	मुर्छा	मूर्च्छ्
षञ्ज	सञ्ज्	भ्रंशु	भ्रंश्	ईर्ष्य	ईर्ष्य्	स्फुर्छा	स्फूर्च्छ्
रञ्ज	रञ्ज्	तृम्फ	तृम्फ्	उच्छी	उच्छ्	उर्द	ऊर्द्
(सेट् धातु)		तुम्प	तुम्प्	ईष	ईष्	कुर्द	कूर्द्
मन्थ	मन्थ्	तुम्फ	तुम्फ्	उक्ष	उक्ष्	खुर्द	खूर्द्
शुन्ध	शुन्ध्	दृम्फ	दृम्फ्	ऊष	ऊष्	गुर्द	गूर्द्
कुञ्च	कुञ्च्	ऋम्फ	ऋम्फ्	एध	एध्	कुथि	कुन्थ्
क्रुञ्च	क्रुञ्च्	गुम्फ	गुम्फ्	एजृ	एज्	पुथि	पुन्थ्
लुञ्च	लुञ्च्	उम्भ	उम्भ्	ईज	ईज्	लुथि	लुन्थ्
वञ्चु	वञ्च्	शुम्भ	शुम्भ्	एठ	एठ्	मथि	मन्थ्
चञ्चु	चञ्च्	तृन्हू	तृंह्	ईक्ष	ईक्ष्	अति	अन्त्
तञ्चु	तञ्च्	तञ्चू	तञ्च्	ईष	ईष्	अदि	अन्द्
त्वञ्चु	त्वञ्च्	उन्दी	उन्द्	ईह	ईह्	इदि	इन्द्
मुञ्चु	मुञ्च्	ञिइन्धी	इन्ध्	ऊह	ऊह्	बिदि	बिन्द्
म्लुञ्चु	म्लुञ्च्	भञ्जो	भञ्ज्	एषृ	एष्	भिदि	भिन्द्
ग्लुञ्चु	ग्लुञ्च्	अञ्जू	अञ्ज्	ऊयी	ऊय्	गडि	गन्ड्
तुम्प	तुम्प्	बन्ध	बन्ध्	इदि	इन्द्	णिदि	निन्द्
त्रुम्प	त्रुम्प्	मन्थ	मन्थ्	उखि	उन्ख्	टुनदि	नन्द्
तुम्फ	तुम्फ्	श्रन्थ	श्रन्थ्	इखि	इन्ख्	चदि	चन्द्
त्रुम्फ	त्रुम्फ्	ग्रन्थ	ग्रन्थ्	ईखि	ईन्ख्	त्रदि	त्रन्द्
षृम्भु	सृम्भ्	कुन्थ	कुन्थ्	इगि	इन्ग्	कदि	कन्द्
शुम्भ	शुम्भ्	**शेष धातु**		उछि	उन्छ्	क्रदि	क्रन्द्
हम्म	हम्म्	**(अनिट् धातु)**		ऋजि	ऋन्ज्	क्लदि	क्लन्द्
शंसु	शंस्	आप्लृ	आप्	इवि	इन्व्	क्लिदि	क्लिन्द्
उबुन्दिर्	बुन्द्	राध	राध्	मुर्वी	मूर्व्	तकि	तन्क्
स्कन्दिर्	स्कन्द्	साध	साध्	उर्वी	ऊर्व्	उखि	उन्ख्

वखि	वन्ख्	रुटि	रुन्ट्	वदि	वन्द्	धृजि	धृन्ज्
मखि	मन्ख्	लुटि	लुन्ट्	भदि	भन्द्	ध्वजि	ध्वन्ज्
रखि	रन्ख्	कुठि	कुन्ठ्	मदि	मन्द्	खजि	खन्ज्
णखि	नन्ख्	लुठि	लुन्ठ्	स्पदि	स्पन्द्	लजि	लन्ज्
लखि	लन्ख्	शुठि	शुन्ठ्	क्लिदि	क्लिन्द्	लाजि	लान्ज्
रगि	रन्ग्	रुठि	रुन्ठ्	श्रथि	श्रन्थ्	जजि	जन्ज्
लगि	लन्ग्	लुठि	लुन्ठ्	ग्रथि	ग्रन्थ्	तुजि	तुन्ज्
अगि	अन्ग्	गडि	गन्ड्	स्रकि	स्रन्क्	गजि	गन्ज्
वगि	वन्ग्	कुबि	कुन्ब्	श्रकि	श्रन्क्	गृजि	गृन्ज्
मगि	मन्ग्	लुबि	लुन्ब्	श्लकि	श्लन्क्	मुजि	मुन्ज्
तगि	तन्ग्	तुबि	तुन्ब्	शकि	शन्क्	अठि	अन्ठ्
श्रगि	श्रन्ग्	चुबि	चुन्ब्	अकि	अन्क्	वठि	वन्ठ्
श्लगि	श्लन्ग्	पिवि	पिन्व्	वकि	वन्क्	मठि	मन्ठ्
रिगि	रिन्ग्	मिवि	मिन्व्	मकि	मन्क्	कठि	कन्ठ्
लिगि	लिन्ग्	णिवि	निन्व्	ककि	कन्क्	मठि	मन्ठ्
त्वगि	त्वन्ग्	हिवि	हिन्व्	वकि	वन्क्	हिडि	हिन्ड्
युगि	युन्ग्	दिवि	दिन्व्	श्वकि	श्वन्क्	हुडि	हुन्ड्
जुगि	जुन्ग्	जिवि	जिन्व्	त्रकि	त्रन्क्	कुडि	कुन्ड्
बुगि	बुन्ग्	रिवि	रिन्व्	रघि	रन्घ्	वडि	वन्ड्
दघि	दन्घ्	रवि	रन्व्	लघि	लन्घ्	मडि	मन्ड्
लघि	लन्घ्	धवि	धन्व्	अघि	अन्घ्	भडि	भन्ड्
मघि	मन्घ्	काक्षि	कान्क्ष्	वघि	वन्घ्	पिडि	पिन्ड्
शिघि	शिन्घ्	वाक्षि	वान्क्ष्	मघि	मन्घ्	मुडि	मुन्ड्
गुजि	गुन्ज्	माक्षि	मान्क्ष्	श्वचि	श्वन्च्	तुडि	तुन्ड्
लाछि	लान्छ्	द्राक्षि	द्रान्क्ष्	शचि	शन्च्	हुडि	हुन्ड्
वाछि	वान्छ्	ध्राक्षि	ध्रान्क्ष्	कचि	कन्च्	मुडि	मुन्ड्
आछि	आन्छ्	ध्वाक्षि	ध्वान्क्ष्	काचि	कान्च्	चडि	चन्ड्
उछि	उन्छ्	रहि	रन्ह्	मुचि	मुन्च्	शडि	शन्ड्
ध्रजि	ध्रन्ज्	दृहि	दृन्ह्	मचि	मन्च्	तडि	तन्ड्
मडि	मन्ड्	बृहि	बृन्ह्	पचि	पन्च्	पडि	पन्ड्
कुडि	कुन्ड्	स्कुदि	स्कुन्द्	धिवि	धिन्व्	कडि	कन्ड्
चुडि	चुन्ड्	श्विदि	श्विन्द्	कृवि	कृण्व्	खडि	खन्ड्

कपि	कन्प्	गाहृ	गाह्	खोर्ऋ	खोर्	तेवृ	तेव्
रबि	रन्ब्	राखृ	राख्	धोर्ऋ	धोर्	देवृ	देव्
लबि	लन्ब्	लाखृ	लाख्	पेसृ	पेस्	षेवृ	सेव्
अबि	अन्ब्	द्राखृ	द्राख्	लाघृ	लाघ्	गेवृ	गेव्
लबि	लन्ब्	ध्राखृ	ध्राख्	द्राघृ	द्राघ्	ग्लेवृ	ग्लेव्
ष्टभि	स्तन्भ्	खादृ	खाद्	श्लाघृ	श्लाघ्	पेवृ	पेव्
स्कभि	स्कन्भ्	शाखृ	शाख्	लोचृ	लोच्	मेवृ	मेव्
जृभि	जृन्भ्	श्लाखृ	श्लाख्	भ्रेजृ	भ्रेज्	म्लेवृ	म्लेव्
रफि	रन्फ्	शौटृ	शौट्	भ्राजृ	भ्राज्	रेवृ	रेव्
घुषि	घुन्ष्	यौटृ	यौट्	हेडृ	हेड्	गेषृ	गेष्
घिणि	घिन्ण्	म्लेटृ	म्लेट्	होडृ	होड्	ग्लेषृ	ग्लेष्
घुणि	घुन्ण्	म्रेडृ	म्रेड्	बाडृ	बाड्	पेषृ	पेष्
घृणि	घृन्ण्	क्रीडृ	क्रीड्	द्राडृ	द्राड्	जेषृ	जेष्
वहि	वन्ह्	हूडृ	हूड्	ध्राडृ	ध्राड्	णेषृ	नेष्
महि	मन्ह्	होडृ	होड्	शाडृ	शाड्	प्रेषृ	प्रेष्
अहि	अन्ह्	रौडृ	रौड्	तेपृ	तेप्	रेषृ	रेष्
कसि	कंस्	रोडृ	रोड्	ष्टेपृ	स्तेप्	हेषृ	हेष्
णिसि	निंस्	लोडृ	लोड्	ग्लेपृ	ग्लेप्	ह्रेषृ	ह्रेष्
णिजि	निंज्	शोणृ	शोण्	टुवेपृ	वेप्	कासृ	कास्
शिजि	शिंज्	श्रोणृ	श्रोण्	केपृ	केप्	भासृ	भास्
पिजि	पिंज्	श्लोणृ	श्लोण्	गेपृ	गेप्	णासृ	नास्
षस्ति	संस्त्	पैणृ	पैण्	ग्लेपृ	ग्लेप्	रासृ	रास्
हिसि	हिंस्	मीमृ	मीम्	मेपृ	मेप्	वेहृ	वेह्
टुओस्फूर्जा	स्फूर्ज्	वेलृ	वेल्	रेपृ	रेप्	जेहृ	जेह्
ह्लादी	ह्लाद्	चेलृ	चेल्	कृपू	कल्प्	वाहृ	वाह्
पूयी	पूय्	केलृ	केल्	लेपृ	लेप्	द्राहृ	द्राह्
क्नूयी	क्नूय्	खेलृ	खेल्	क्लीबृ	क्लीब्	काशृ	काश्
क्ष्मायी	क्ष्माय्	क्ष्वेलृ	क्ष्वेल्	क्षीबृ	क्षीब्	गाधृ	गाध्
स्फायी	स्फाय्	पेलृ	पेल्	शीभृ	शीभ्	बाधृ	बाध्
ओप्यायी	प्याय्	फेलृ	फेल्	चीभृ	चीभ्	नाथृ	नाथ्
क्षेवु	क्षेव्	शेलृ	शेल्	रेभृ	रेभ्	नाधृ	नाध्
त्वक्षू	त्वक्ष्	खोलृ	खोल्	तायृ	ताय	वेथृ	वेथ्

शीकृ	शीक्	स्वाद	स्वाद्	गोष्ट	गोष्ट्	शुच्य	शुच्य्
लोकृ	लोक्	पर्द	पर्द्	लोष्ट	लोष्ट्	मील	मील्
श्लोकृ	श्लोक्	कत्थ	कत्थ्	घट्ट	घट्ट्	श्मील	श्मील्
द्रेकृ	द्रेक्	स्वर्द	स्वर्द्	हेठ	हेठ्	स्मील	स्मील्
ध्रेकृ	ध्रेक्	अर्द	अर्द्	चुड्ड	चुड्ड्	क्ष्मील	क्ष्मील्
रेकृ	रेक्	गर्द	गर्द्	अड्ड	अड्ड्	पील	पील्
सेकृ	सेक्	तर्द	तर्द्	कड्ड	कड्ड्	नील	नील्
स्रेकृ	स्रेक्	कर्द	कर्द्	हर्य	हर्य्	शील	शील्
टीकृ	टीक्	खर्द	खर्द्	शल्भ	शल्भ्	कील	कील्
तीकृ	तीक्	ष्वष्क	ष्वष्क्	वल्भ	वल्भ्	कूल	कूल्
राघृ	राघ्	वस्क	वस्क्	गल्भ	गल्भ्	शूल	शूल्
ढौकृ	ढौक्	मस्क	मस्क्	जल्प	जल्प्	तूल	तूल्
त्रौकृ	त्रौक्	फक्क	फक्क्	पर्प	पर्प्	पूल	पूल्
टुयाचृ	याच्	बुक्क	बुक्क्	अर्ब	अर्ब्	मूल	मूल्
प्रोथृ	प्रोथ्	वल्ग	वल्ग्	पर्ब	पर्ब्	चुल्ल	चुल्ल्
मेदृ	मेद्	वर्च	वर्च्	लर्ब	लर्ब्	फुल्ल	फुल्ल्
मेधृ	मेध्	अर्च	अर्च्	बर्ब	बर्ब्	चिल्ल	चिल्ल्
णेदृ	नेद्	लछ	लच्छ्	भर्ब	भर्ब्	वेल्ल	वेल्ल्
चीवृ	चीव्	युच्छ	युच्छ्	कर्ब	कर्ब्	खल्ल	खल्ल्
चायृ	चाय्	कूज	कूज्	खर्ब	खर्ब्	अभ्र	अभ्र्
दाशृ	दाश्	अर्ज	अर्ज्	गर्ब	गर्ब्	वभ्र	वभ्र्
भेषृ	भेष्	सर्ज	सर्ज्	शर्ब	शर्ब्	मभ्र	मभ्र्
भ्रेषृ	भ्रेष्	गर्ज	गर्ज्	षर्ब	सर्ब्	जीव	जीव्
भ्लेषृ	भ्लेष्	तर्ज	तर्ज्	चर्ब	चर्ब्	पीव	पीव्
दासृ	दास्	कर्ज	कर्ज्	घूर्ण	घूर्ण्	मीव	मीव्
माहृ	माह्	खर्ज	खर्ज्	भाम	भाम्	तीव	तीव्
वेणृ	वेण्	तेज	तेज्	वल्ल	वल्ल्	णीव	नीव्
अक्षू	अक्ष्	क्षीज	क्षीज्	मल्ल	मल्ल्	पूर्व	पूर्व्
तक्षू	तक्ष्	लाज	लाज्	भल्ल	भल्ल्	पर्व	पर्व्
स्पर्ध	स्पर्ध्	अट्ट	अट्ट्	वल्ल	वल्ल्	मर्व	मर्व्
ह्राद	ह्राद्	वेष्ट	वेष्ट्	मव्य	मव्य्	चर्व	चर्व्
षूद	सूद्	चेष्ट	चेष्ट्	सूर्क्ष्य	सूर्क्ष्य्	भर्व	भर्व्

कर्व	कर्व्	चूष	चूष्	पूरी	पूर्	रुट	रुट्
खर्व	खर्व्	तूष	तूष्	तूरी	तूर्	लुट	लुट्
गर्व	गर्व्	पूष	पूष्	धूरी	धूर्	लुठ	लुठ्
अर्व	अर्व्	मूष	मूष्	गूरी	गूर्	शुभ	शुभ्
शर्व	शर्व्	लूष	लूष्	घूरी	घूर्	क्षुभ	क्षुभ्
षर्व	सर्व्	रूष	रूष्	जूरी	जूर्	तुभ	तुभ्
धावु	धाव्	शूष	शूष्	शूरी	शूर्	णभ	नभ्
धुक्ष	धुक्ष्	यूष	यूष्	चूरी	चूर्	स्रंसु	स्रंस्
धिक्ष	धिक्ष्	जूष	जूष्	काशृ	काश्	घ्वंसु	घ्वंस्
वृक्ष	वृक्ष्	भूष	भूष्	वाशृ	वाश्	भ्रंसु	भ्रंस्
शिक्ष	शिक्ष्	जर्ज	जर्ज्	राध	राध्	ध्वंसु	ध्वंस्
भिक्ष	भिक्ष्	चर्च	चर्च्	दम्भु	दम्भ्	स्रंभु	स्रंभ्
क्लेश	क्लेश्	झर्झ	झर्झ्	दाशृ	दाश्	वृतु	वृत्
दक्ष	दक्ष्	अर्ह	अर्ह्	ओलस्जी	लस्ज्	वृधु	वृध्
दीक्ष	दीक्ष्	हिक्क	हिक्क्	षस्ज	सस्ज्	शृधु	शृध्
भाष	भाष्	रेटृ	रेट्	विच्छ	विच्छ्	स्यन्दू	स्यन्द्
वर्ष	वर्ष्	भ्रक्ष	भ्रक्ष्	उछि	उञ्छ्	कृपू	कल्प्
गर्ह	गर्ह्	भ्लक्ष	भ्लक्ष्	उच्छी	उच्छ्	श्विता	श्वित्
गल्ह	गल्ह्	मान	मान्	ऋच्छ	ऋच्छ्	ञिमिदा	मिद्
बर्ह	बर्ह्	दान	दान्	मिच्छ	मिच्छ्	ञिष्विदा	स्विद्
बल्ह	बल्ह्	शान	शान्	जर्ज	जर्ज्	**घटादि अन्तर्गण**	
वर्ह	वर्ह्	धूप	धूप	चर्च	चर्च्	(अनिट् धातु)	
वल्ह	वल्ह्	चक्षिङ्	चक्ष्	झर्झ	झर्झ्	रञ्ज	रञ्ज्
रक्ष	रक्ष्	ईर	ईर्	त्वच	त्वच्	श्रा	श्रा
णिक्ष	निक्ष्	ईड	ईड्	उब्ज	उब्ज्	ज्ञा	ज्ञा
त्रक्ष	त्रक्ष्	ईश	ईश्	उज्झ	उज्झ्	ग्ला	ग्ला
ष्ट्रक्ष	स्त्रक्ष्	आस	आस्	घूर्ण	घूर्ण्	स्ना	स्ना
णक्ष	नक्ष्	आङ:शासु	आशास्	हेठ	हेठ्	स्मृ	स्मृ
वक्ष	वक्ष्	पुष्प	पुष्प्	**द्युतादि अन्तर्गण**		(सेट् धातु)	
मृक्ष	मृक्ष्	ष्टीम	स्तीम्	द्युत	द्युत्	कखे	कख्
तक्ष	तक्ष्	व्रीड	व्रीड्	रुच	रुच्	रगे	रग्
सूर्क्ष	सूर्क्ष्	दीपी	दीप्	घुट	घुट्	लगे	लग्

ह्वगे	ह्वग्
ह्लगे	ह्लग्
षगे	सग्
ष्टगे	स्तग्
कगे	कग्
घट	घट्
व्यथ	व्यथ्
प्रथ	प्रथ्
प्रस	प्रस्
म्रद	म्रद्
स्खद	स्खद्
दक्ष	दक्ष्
हेड	हेड्
क्रप	क्रप्
ञित्वरा	त्वर्
ज्वर	ज्वर्
गड	गड्
नट	नट्
भट	भट्
णट	नट्
चक	चक्
अक	अक्
अग	अग्
कण	कण्
रण	रण्
चण	चण्
शण	शण्
श्रण	श्रण्
श्रथ	श्रथ्
श्लथ	श्लथ्
क्रथ	क्रथ्
क्लथ	क्लथ्
वन	वन्
ज्वल	ज्वल्
ह्वल	ह्वल्
ह्मल	ह्मल्
षृक	सृक्
क्षजि	क्षन्ज्
कदि	कन्द्
क्रदि	क्रन्द्
क्लदि	क्लन्द्
ध्वन	ध्वन्
दल	दल्
वल	वल्
स्खल	स्खल्
रण	रण्
ध्वन	ध्वन्
त्रप	त्रप्
क्षप	क्षप्
स्वन	स्वन्
चल	चल्
लड	लड्
ज्वल	ज्वल्
ह्वल	ह्वल्
ह्मल	ह्मल्
मदी	मद्
जनी	जन्
जृष्	जृ
क्नसु	क्नस्
स्खदिर्	स्खद्
नॄ	नॄ
दॄ	दॄ
छदिर्	छद्

(कम्, अम्, चम् को छोड़कर नवगणी के सारे अमन्त धातु भी इस गण में हैं)

फणादि अन्तर्गण

फण	फण्
स्वन	स्वन्
ध्वन	ध्वन्
स्यमु	स्यम्
राजृ	राज्
टुभ्राजृ	भ्राज्
टुभ्राशृ	भ्राश्
टुभ्लाशृ	भ्लाश्

ज्वलादि अन्तर्गण

(अनिट् धातु)

बुध	बुध्
रुह	रुह्
षद्लृ	सद्
शदलृ	शद्
रमु	रम्

(सेट् धातु)

ज्वल	ज्वल्
चल	चल्
जल	जल्
टल	टल्
ट्वल्	ट्वल
ष्ठल्	स्थल्
हल	हल्
णल	नल्
पल	पल्
बल	बल्
शल	शल्
क्षर	क्षर्
षह	सह्
कस	कस्
टुवम्	वम्
भ्रमु	भ्रम्
पत्लृ	पत्
क्वथे	क्वथ्
पथे	पथ्
मथे	मथ्
पुल	पुल्
कुल	कुल्
हुल	हुल्
क्रुश	क्रुश्
कुच	कुच्

जक्षादि अन्तर्गण

दरिद्रा	दरिद्रा
दीधीङ्	दीधी
वेवीङ्	वेवी
जागृ	जागृ
चकासृ	चकास्
शासु	शास्

पुषादि अन्तर्गण

(अनिट् धातु)

शक	शक्
श्लिष	श्लिष्
ष्विदा	स्विद्
पुष	पुष्
शुष	शुष्
तुष	तुष्
दुष	दुष्
क्रुध	क्रुध्
क्षुध	क्षुध्

शुध	शुध्
तृप्	तृप्
दृप	दृप्
(सेट् धातु)	
असु	अस्
जसु	जस्
तसु	तस्
दसु	दस्
वसु	वस्
मसी	मस्
णभ	नभ्
षिधु	सिध्
बिस	बिस्
रिष	रिष्
डिप	डिप्
क्लिदू	क्लिद्
ञिमिदा	मिद्
ञिक्ष्विदा	क्ष्विद्
व्युष	व्युष्
प्लुष	प्लुष्
बुस	बुस्
मुस	मुस्
लुट	लुट्
उच	उच्
रुष	रुष्
कुप	कुप्
गुप	गुप्
युप	युप्
रुप	रुप्
लुप	लुप्
लुभ	लुभ्
क्षुभ	क्षुभ्

तुभ	तुभ्
भृशु	भृश्
वृश	वृश्
कृश	कृश्
ञितृषा	तृष्
हृष	हृष्
ऋधु	ऋध्
गृधु	गृध्
कुंस	कुंस्
भ्रंशु	भ्रंश्
शमु	शम्
तमु	तम्
दमु	दम्
श्रमु	श्रम्
भ्रमु	भ्रम्
क्षमू	क्षम्
क्लमु	क्लम्
मदी	मद्
रध	रध्
णश	नश्
द्रुह	द्रुह्
मुह	मुह्
ष्णुह	स्नुह्
ष्णिह	स्निह्
मुचादि अन्तर्गण	
(अनिट् धातु)	
मुच्लृ	मुच्
लुप्लृ	लुप्
विद्लृ	विद्
लिप	लिप्
षिच	सिच्
खिद	खिद्

कृती	कृत्
(सेट् धातु)	
पिश	पिश्
कुटादि अन्तर्गण	
(अनिट् धातु)	
गु	गु
ध्रु	ध्रु
कुङ्	कु
कुट	कुट्
पुट	पुट्
कुच	कुच्
गुज	गुज्
गुड	गुड्
डिप	डिप्
छुर	छुर्
स्फुट	स्फुट्
मुट	मुट्
त्रुट	त्रुट्
तुट	तुट्
चुट	चुट्
छुट	छुट्
जुट	जुट्
कड	कड्
लुट	लुट्
कृड	कृड्
कुड	कुड्
पुड	पुड्
घुट	घुट्
तुड	तुड्
थुड	थुड्
स्थुड	स्थुड्

स्फुर	स्फुर्
स्फुल	स्फुल्
स्फुड	स्फुड्
चुड	चुड्
व्रुड	व्रुड्
क्रुड	क्रुड्
मृड	मृड्
गुरी	गुर्
णू	नू
धू	धू
किरादि अन्तर्गण	
(अनिट् धातु)	
दृङ्	दृ
धृङ्	धृ
प्रच्छ	प्रच्छ्
(सेट् धातु)	
कॄ	कॄ
गॄ	गॄ
तनोत्यादि धातु	
(अनिट् धातु)	
डुकृञ्	कृ
(सेट् धातु)	
तनु	तन्
षणु	सन्
क्षणु	क्षण्
क्षिणु	क्षिण्
ऋणु	ऋण्
तृणु	तृण्
घृणु	घृण्
वनु	वन्
मनु	मन्



चुरादिगण

चुरादिगण के किसी भी धातु में पहिले **'सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेना लोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्'** सूत्र से 'णिच्' प्रत्यय लगाया जाता है। णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद जो 'णिजन्त' धातु तैयार होता है, उससे ही अन्य कोई भी प्रत्यय लगाया जा सकता है, सीधे नहीं। अतः हमने चुरादिगण के धातुओं को सारे धातुपाठ से अलग बैठाया है, और इनमें 'णिच्' प्रत्यय लगाकर आपके सामने रख दिया है। इन 'णिजन्त' धातुओं से ही आप अन्य कोई भी प्रत्यय लगाइये, सीधे धातु से नहीं। चुरादिगण के लिये यही व्यवस्था है।

इस व्यवस्था के अपवाद - चुरादिगण में धातुओं का एक ऐसा वर्ग है, जिसमें णिच् प्रत्यय विकल्प से लगता है। अतः इनमें णिच् प्रत्यय लगाकर अथवा णिच् प्रत्यय लगाये बिना भी अन्य कोई प्रत्यय लगाया जा सकता है।

अतः इनमें णिच् लगाकर, तथा णिच् लगाये बिना, ऐसे दो दो रूप हमने दिये हैं। ये धातु हमने इस पाठ में अलग से दिये हैं।

चुरादिगण के 'आकुस्मीय' आगर्वीय' तथा अन्य भी कुछ धातु ऐसे हैं, जिनसे केवल आत्मनेपदी प्रत्यय ही लगते हैं। इनका भी हमने पृथक् निर्देश कर दिया है।

आकारान्त धातु		बध	बाधि	कण	काणि	पिस	पेसि
ज्ञा	ज्ञापि	प्रथ	प्राथि	पश	पाशि	ष्णिह	स्नेहि
इकारान्त धातु		शठ	शाठि	अम	आमि	स्मिट	स्मेटि
चिञ्	चायि	श्वठ	श्वाठि	चट	चाटि	श्लिष	श्लेषि
उकारान्त धातु		श्रण	श्राणि	घट	घाटि	विल	वेलि
च्यु	च्यावि	तड	ताडि	लस	लासि	बिल	बेलि
भुव्	भावि	खड	खाडि	भज	भाजि	तिल	तेलि
ऋकारान्त धातु		क्षल	क्षालि	यत	याति	तिज	तेजि
घृ	घारि	तल	तालि	रक	राकि	डिप	डेपि
पृ	पारि	कल	कालि	लग	लागि	इल	एलि
अदुपध धातु		चल	चालि	त्रस	त्रासि	**उदुपध धातु**	
लड	लाडि	लष	लाषि	नस	नासि	चुर	चोरि
जल	जालि	व्रज	व्राजि	चर	चारि	चुद	चोदि
नट	नाटि	गज	गाजि	ष्वद	स्वादि	तुल	तोलि
श्रथ	श्राथि	ह्लप	ह्लापि	**इदुपध धातु**		दुल	दोलि

पुल	पोलि
चुल	चोलि
चुट	चोटि
मुट	मोटि
शुठ	शोठि
जुड	जोडि
स्फुट	स्फोटि
मुद	मोदि
मुच	मोचि
रुष	रोषि
ष्टुप	स्तोपि
घुषिर्	घोषि
ऋदुपध धातु	
पृथ	पर्थि
शेष धातु	
पुंस	पुंसि
षम्ब	सम्बि
शम्ब	शम्बि
लुण्ट	लुण्टि
अञ्चु	अञ्चि
वञ्चु	वञ्चि
चिति	चिन्ति
यत्रि	यन्त्रि
स्फुडि	स्फुन्डि
कुद्रि	कुन्द्रि
मिदि	मिन्दि
ओलडि	लन्डि
तुजि	तुन्जि
पिजि	पिन्जि
पथि	पन्थि
छदि	छन्दि

खडि	खन्डि
कुडि	कुन्डि
कुडि	कुन्डि
गुडि	गुन्डि
खुडि	खुन्डि
वटि	वन्टि
मडि	मन्डि
भडि	भन्डि
पडि	पन्डि
पसि	पंसि
चपि	चम्पि
क्षपि	क्षम्पि
छजि	छन्जि
चुबि	चुम्बि
टकि	टन्कि
शुठि	शुन्ठि
पचि	पन्चि
कुबि	कुम्बि
लुबि	लुम्बि
तुबि	तुम्बि
चुटि	चुन्टि
जसि	जंसि
पिडि	पिन्डि
जभि	जम्भि
तसि	तंसि
लिगि	लिन्गि
घट्‌ट	घट्‌टि
मुस्त	मुस्ति
खट्ट	खट्टि
षट्ट	सट्टि
स्फिट्ट	स्फिट्टि

पूल	पूलि
धूस	धूसि
कीट	कीटि
चूर्ण	चूर्णि
पूज	पूजि
मार्ज	मार्जि
मर्च	मर्चि
कॄत	कीर्ति
वर्ध	वर्धि
म्रक्ष	म्रक्षि
म्लेच्छ	म्लेच्छि
ब्रूस	ब्रूसि
बर्ह	बर्हि
गुर्द	गूर्दि
ईड	ईडि
चर्च	चर्चि
बुक्क	बुक्कि
शब्द	शब्दि
षूद	सूदि
अर्ज	अर्जि
आङः क्रन्द	आक्रन्दि
भूष	भूषि
लक्ष	लक्षि
पीड	पीडि
ऊर्ज	ऊर्जि
पक्ष	पक्षि
पिच्छ	पिच्छि
वर्ण	वर्णि
चूर्ण	चूर्णि
भक्ष	भक्षि
कुट्ट	कुट्‌टि

पुट्ट	पुट्टि
चुट्ट	चुट्टि
अट्ट	अट्टि
षुट्ट	सुट्टि
षान्त्व	सान्त्वि
श्वल्क	श्वल्कि
वल्क	वल्कि
छर्द	छर्दि
पुस्त	पुस्ति
बुस्त	बुस्ति
नक्क	नक्कि
धक्क	धक्कि
चक्क	चक्कि
चुक्क	चुक्कि
मूल	मूलि
पाल	पालि
शुल्ब	शुल्बि
शूर्प	शूर्पि
शुल्क	शुल्कि
श्वर्त	श्वर्ति
श्वभ्र	श्वभ्रि
अर्ह	अर्हि
बर्ह	बर्हि
वल्ह	वल्हि
अर्क	अर्कि
मित् धातु	
ज्ञप	ज्ञपि
यम	यमि
चह	चहि
रह	रहि
बल	बलि

चिञ्	चयि	दल	दलि	रुट	रोटि	लजि	लन्जि
चुरादिगण के			दल्		रुट्		लन्ज्
वैकल्पिक णिच्		रुज	रोजि	वृतु	वर्ति	अजि	अन्जि
वाले धातु			रुज्		वृत्		अन्ज्
अञ्चु	अञ्चि	पुष	पोषि	वृधु	वर्धि	दसि	दंसि
	अञ्च्		पुष्		वृध्		दंस्
दिदु	दिवि	जि	जायि	तुजि	तुन्जि	भृशि	भृंशि
	दिव्		जि		तुन्ज्		भृंश्
जसु	जसि	चि	चायि	मिजि	मिन्जि	रुशि	रुंशि
	जस्		चि		मिन्ज्		रुंश्
जसु	जसि	पट	पाटि	पिजि	पिन्जि	रुसि	रुंसि
	जस्		पट्		पिन्ज्		रुंस्
शृधु	शर्धि	घट	घाटि	लुजि	लुन्जि	पुटि	पुन्टि
	शृध्		घट्		लुन्ज्		पुन्ट्
वृतु	वर्ति	णद	नादि	भजि	भन्जि	रघि	रन्घि
	वृत्		नद्		भन्ज्		रन्घ्
वृधु	वर्धि	नट	नाटि	लघि	लन्घि	लघि	लन्घि
	वृध्		नट्		लन्घ्		लन्घ्
तनु	तनि	तड	ताडि	त्रसि	त्रंसि	अहि	अंहि
	तन्		तड्		त्रंस्		अंह्
उध्रस	उध्रसि	नल	नालि	पिसि	पिंसि	रहि	रंहि
	उध्रस्		नल्		पिंस्		रंह्
मृजू	मर्जि	पुट	पोटि	कुसि	कुंसि	महि	मंहि
	मृज्		पुट्		कुंस्		मंह्
वञ्चु	वञ्चि	लुट	लोटि	दशि	दंशि	लडि	लन्डि
	वञ्च्		लुट्		दंश्		लन्ड्
भुव्	भावि	गुप	गोपि	कुशि	कुंशि	विच्छ	विच्छि
	भुव्		गुप्		कुंश्		विच्छ्
कृप	कल्पि	पुथ	पोथि	घटि	घन्टि	चीव	चीवि
	कृप्		पुथ्		घन्ट्		चीव्
ग्रस	ग्रसि	कुप	कोपि	बृहि	बृंहि	लोकृ	लोकि
	ग्रस्		कुप्		बृंह्		लोक्

लोचृ	लोचि		श्रथ्	मृजू	मर्जि		आप्
	लोच्	छद	छदि		मृज्	मान	मानि
तर्क	तर्कि		छद्	मृष	मर्षि		मान्
	तर्क्	तनु	तनि		मृष्	गर्ह	गर्हि
शीकृ	शीकि		तन्	धृष	धर्षि		गर्ह्
	शीक्	वद	वदि		धृष्	मार्ग	मार्गि
धूप	धूपि		वद्	ग्रन्थ	ग्रन्थि		मार्ग्
	धूप्	वच	वचि		ग्रन्थ्	**आकुस्मीय**	**अन्तर्गण**
पूरी	पूरि		वच्	ग्रन्थ	ग्रन्थि	यु	यावि
	पूर्	आङ: षद	आसदि		ग्रन्थ्	गृ	गारि
ली	लायि		आसद्	श्रन्थ	श्रन्थि	डप	डपि
	ली	रिच	रेचि		श्रन्थ्	स्पश	स्पशि
ज्रि	ज्रायि		रिच्	शुन्ध	शुन्धि	लल	ललि
	ज्रि	शिष	शेषि		शुन्ध्	शठ	शठि
मी	मायि		शिष्	हिसि	हिंसि	स्मय	स्मयि
	मी	युज	योजि		हिंस्	शम	शमि
प्रीञ्	प्रायि		युज्	कठि	कन्ठि	गल	गलि
	प्री	जुष	जोषि		कन्ठ्	भल	भलि
भू	भावि		जुष्	अर्च	अर्चि	मद	मदि
	भू	पृच	पर्चि		अर्च्	चित	चेति
धूञ्	धावि		पृच्	ईर	ईरि	डिप	डेपि
	धू	वृजी	वर्जि		ईर्	दिवु	देवि
वृञ्	वारि		वृज्	शीक	शीकि	विद	वेदि
	वृ	तृप	तर्पि		शीक्	त्रुट	त्रोटि
जॄ	जारि		तृप्	चीक	चीकि	वृष	वर्षि
	जॄ	छृदी	छर्दि		चीक्	तर्ज	तर्जि
षह	सहि		छृद्	अर्द	अर्दि	दशि	दंशि
	सह्	दृभी	दर्भि		अर्द्	दसि	दंसि
तप	तपि		दृभ्	अर्ह	अर्हि	तत्रि	तन्त्रि
	तप्	दृभ	दर्भि		अर्ह्	मत्रि	मन्त्रि
श्रथ	श्रथि		दृभ्	आप्लृ	आपि	भर्त्स	भर्त्सि

बस्त	बस्ति
गन्ध	गन्धि
विष्क	विष्कि
निष्क	निष्कि
कूण	कूणि
तूण	तूणि
भ्रूण	भ्रूणि
यक्ष	यक्षि
गूर	गूरि
लक्ष	लक्षि
कुत्स	कुत्सि
कूट	कूटि
कुट्ट	कुट्टि
वञ्चु	वन्चि
मान	मानि
कुस्म	कुस्मि

अदन्त धातु

कथ	कथि
वर	वरि
गण	गणि
शठ	शठि
श्वठ	श्वठि
पट	पटि
वट	वटि
रह	रहि
स्तन	स्तनि
गदी	गदि
पत	पति
पष	पषि
स्वर	स्वरि
रच	रचि
कल	कलि
चह	चहि
मह	महि
सार	सारि
कृप	कृपि
श्रथ	श्रथि
स्पृह	स्पृहि
भाम	भामि
सूच	सूचि
खेट	खेटि
क्षोट	क्षोटि
गोम	गोमि
कुमार	कुमारि
शील	शीलि
साम	सामि
वेल	वेलि
पल्यूल	पल्यूलि
वात	वाति
गवेष	गवेषि
वास	वासि
निवास	निवासि
भाज	भाजि
सभाज	सभाजि
ऊन	ऊनि
ध्वन	ध्वनि
कूट	कूटि
संकेत	संकेति
ग्राम	ग्रामि
कुण	कुणि
गुण	गुणि
केत	केति
कूट	कूटि
स्तेन	स्तेनि
सूत्र	सूत्रि
मूत्र	मूत्रि
रूक्ष	रूक्षि
पार	पारि
तीर	तीरि
पुट	पुटि
धेक	धेकि
कत्र	कत्रि
वष्क	वष्कि
चित्र	चित्रि
अंस	अंसि
वट	वटि
लज	लजि
मिश्र	मिश्रि
सङ्ग्राम	सङ्ग्रामि
स्तोम	स्तोमि
छिद्र	छिद्रि
अन्ध	अन्धि
दण्ड	दण्डि
अङ्क	अङ्कि
अङ्ग	अङ्गि
सुख	सुखि
दुःख	दुःखि
रस	रसि
व्यय	व्ययि
रूप	रूपि
छेद	छेदि
छद	छदि
लाभ	लाभि
व्रण	व्रणि
वर्ण	वर्णि
पर्ण	पर्णि
विष्क	विष्कि
क्षिप	क्षिपि
वस	वसि
तुत्थ	तुत्थि

आगर्वीय अदन्त धातु

पद	पदि
गृह	गृहि
मृग	मृगि
कुह	कुहि
शूर	शूरि
वीर	वीरि
स्थूल	स्थूलि
सत्र	सत्रि
अर्थ	अर्थि
गर्व	गर्वि



द्वितीय पाठ

आर्धधातुक प्रत्यय तथा उनकी इडागम व्यवस्था

सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय, इस ग्रन्थ के प्रथम पाठ में पृष्ठ १७ से २४ में, विस्तार से बतलाये जा चुके हैं। इनका विस्तृत लक्षण वहीं देखें। यहाँ हम संक्षेप में पुनः इनका भेद स्पष्ट कर रहे हैं।

तिङ् शित् सार्वधातुकम् - सार्वधातुक प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं

तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय - लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट्, इन पाँच लकारों के प्रत्ययों का नाम, 'तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय' है।

कृत् सार्वधातुक प्रत्यय - शतृ, शानच्, शानन्, चानश्, खश्, श, एश्, शध्यै, शध्यैन्, इन ९ शित् प्रत्ययों का नाम 'कृत् सार्वधातुक प्रत्यय' है।

विकरण सार्वधातुक प्रत्यय - शप्, श्यन्, श्नु, श, श्नम्, श्ना, शायच्, शानच्, इन ८ शित् प्रत्ययों का नाम 'विकरण सार्वधातुक प्रत्यय' है।

सार्वधातुक प्रत्यय कुल इतने ही हैं।

आर्धधातुकं शेषः - इनके अलावा धातु से लगने वाले जो भी प्रत्यय बचे, उन सभी प्रत्ययों का नाम आर्धधातुक प्रत्यय होता है।

अत्यावश्यक - अभी तक हमने दसों गणों के धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट्, इन पाँच सार्वधातुक लकारों के धातुरूप बनाना सीखा है।

इनके रूप बनाते समय हमने क्या किया है ?

इन धातुओं के रूप बनाते समय हमने, इन धातुओं के सामने इन तिङ् सार्वधातुक प्रत्ययों को बैठाकर विचार किया है, कि ये धातु किस गण के हैं तथा उस गण का विकरण क्या है ?

जिस भी गण का वह धातु है, उसी गण का विकरण, धातु + प्रत्यय के बीच में अवश्य बैठाया है।

परन्तु धातुओं से आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ऐसा नहीं होता। धातुओं से आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, न तो धातुओं के गण का विचार किया जाता

है, न ही धातु + आर्धधातुक प्रत्यय के बीच में विकरण बैठाया जाता है।

यह सिद्धान्त बहुत अच्छी तरह जानकर ही हमें आगे आर्धधातुक खण्ड में प्रवेश करना चाहिये।

अतः यह जानिये कि धातुपाठ में जो दस गण बने हैं, वे सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये हैं, आर्धधातुक प्रत्ययों के लिये कोई गण नहीं है। आर्धधातुक प्रत्ययों के लिये तो सभी गण एक समान ही होते हैं।

ये आर्धधातुक प्रत्यय चार प्रकार के होते हैं -

तिङ् आर्धधातुक प्रत्यय

लिट्, लुट्, लृट्, आर्धधातुक लेट्, लृङ्, आशीर्लिङ्, तथा लुङ्, इन सात लकारों के प्रत्ययों का नाम 'तिङ् आर्धधातुक प्रत्यय' है। तिङ् आर्धधातुक प्रत्यय इस ग्रन्थ के प्रथम पाठ में पृष्ठ २० से २३ में, विस्तार से बतलाये जा चुके हैं। आगे भी प्रत्येक लकार के 'तिङ् आर्धधातुक प्रत्यय' हम वहीं बतलाते चलेंगे।

कृत् आर्धधातुक प्रत्यय

इन्हें केवल देखिये, समझिये और पहिचानिये। याद मत कीजिये।

ण्वुल्	वुञ्	ण्यत्	घञ्	णिनि	ण	ण्युट्	अण्
खुकञ्	ण्वि	ञ्युट्	ण्विन्	घिनुण्	उकञ्	उण्	णच्
इनुण्	इञ्	ण्वुच्	णमुल्	खमुञ् /	तव्य	तव्यत्	अनीयर्
यत्	तृच्	ल्यु	अच्	ष्वुन्	थकन्	वुन्	ट
इन्	खच्	ड	खिष्णुच्	विट्	विच्	मनिन्	वनिप्
इनि	ख्युन्	तृन्	इष्णुच्	युच्	षाकन्	आलुच्	रु
घुरच्	उ	ऊक्	र	आरु	लुकन्	वरच्	डु
ष्ट्रन्	इत्र	तुमुन्	अप्	अथुच्	नन्	अ	अनि
ल्युट्	घ	खल्	से	सेन्	असे	असेन्	अध्यै
अध्यैन्	तवै	तवेन्	तोसुन्	त्वन्	अतृन् /	क्यप्	क
टक्	क्विन्	कञ्	क्विप्	कप्	क्वनिप्	क्त	क्तवतु
ङ्वनिप्	कानच्	क्वसु	ग्स्नु	क्नु	क्मरच्	कुरच्	क्वरप्
किन्	कि	नजिङ्	कुक्	क्त्रि	नङ्	क्तिन्	अङ्
क्तिच्	क्से	कसेन्	कध्यै	कध्यैन्	तवेङ्	कमुल्	कसुन्
केन्	केन्य	क्त्वा।					

धातुओं से लगने वाले ये ११५ प्रत्यय 'कृत् आर्धधातुक प्रत्यय' हैं।

विकरण आर्धधातुक प्रत्यय

क्स चङ् अङ् सिप् स्य तास् च्लि सिंच्
चिण् उ यक् = ११।

इन ११ प्रत्ययों का नाम 'विकरण आर्धधातुक प्रत्यय' है, किन्तु इनमें क्स से लेकर चिण् तक जो विकरण हैं, उन्हें मिला मिलाकर हमने तिङ् आर्धधातुक प्रत्यय बना लिये हैं। अतः यहाँ हम यही मानेंगे कि विकरण आर्धधातुक प्रत्यय केवल दो हैं, 'उ' तथा 'यक्'।

तिङ्, कृत्, विकरण से भिन्न, शेष आर्धधातुक प्रत्यय

आम् णिच् ईयङ् यङ् सन् = ५

आर्धधातुक प्रत्यय इतने ही हैं। इन्हें विस्तार से प्रथम खण्ड में पढ़ें।

इन आर्धधातुक प्रत्ययों को होने वाला इडागम

हमने जानते हैं कि - धातु से **'तिङ्' या 'कृत्'** सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातु के गण का विचार अवश्य किया जाता है, तथा धातु + प्रत्यय के बीच में उस गण का विकरण भी अवश्य बैठाया जाता है, जिस गण का वह धातु होता है। जैसे - भू + ति = भू + शप् + ति / दिव् + ति = दिव् + श्यन् + ति / क्री + ति = क्री + श्ना + ति।

किन्तु धातु से आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातुओं के गण का विचार नहीं किया जाता और धातु + प्रत्यय के बीच में तत् तत् गणों का विकरण भी कभी नहीं बैठाया जाता।

ध्यान दें कि जब धातु से कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय लगता है, तब उस आर्धधातुक प्रत्यय के पूर्व में आकर, कभी कभी एक 'इ' बैठ जाता है। इस 'इ' को ही 'इट्' कहते हैं। जैसे - भू + स्यति / इडागम होकर - भू + इट् + स्यति - भू + इष्यति = भविष्यति / पठ् + क्त - इडागम होकर - पठ् + इट् + त = पठित / इसी प्रकार - पठ् + क्त्वा - इडागम होकर - पठ् + इट् + त्वा = पठित्वा आदि में, आर्धधातुक प्रत्यय को इडागम होता है।

जिन प्रत्ययों को यह इडागम होता है, वे प्रत्यय इट् के सहित होने के कारण सेट् प्रत्यय कहलाते हैं। अतः ये स्यति, तुमुन्, क्त्वा, क्त आदि सेट्

प्रत्यय हैं।

अब 'पठनीय' को देखिये। पठ् + अनीय के बीच में इट् नहीं बैठा है। पाठ्य को देखिये। पठ् + य के बीच में भी इट् नहीं बैठा है।

जिन प्रत्ययों को यह इडागम नहीं होता है, वे प्रत्यय इट् से रहित होने के कारण अनिट् प्रत्यय कहलाते हैं। अतः ये य, अनीय, आदि अनिट् प्रत्यय हैं।

आर्धधातुक प्रत्ययों के पूर्व में इट् को बैठाने को ही 'इडागम करना' कहते हैं। अतः धातुओं से कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय लगते ही, हमें यह स्पष्ट जानकारी होना चाहिये कि किस आर्धधातुक प्रत्यय को हम 'इडागम' करें और किस आर्धधातुक प्रत्यय को हम 'इडागम' न करें।

अब धातु की दृष्टि से इडागम का विचार कीजिये -

'कृत' को देखिये। यहाँ शङ्का होती है कि - कृ + क्त = कृत में, क्त प्रत्यय तो वही सेट् प्रत्यय है, जो पठित में लगा है, तो भी उसे इट् का आगम क्यों नहीं हुआ है ? इसलिये नहीं हुआ, कि 'कृ' धातु अनिट् है।

'दास्यति' को देखिये। यहाँ भी शङ्का होती है कि - दा + स्यति = दास्यति में, स्यति प्रत्यय तो वही सेट् प्रत्यय है, जो 'पठिष्यति' में लगा है, तो भी उसे इट् का आगम क्यों नहीं हुआ है ? इसलिये कि 'दा' धातु अनिट् है।

जिन धातुओं से लगने वाले सेट् प्रत्ययों को भी, यह इडागम नहीं होता है, वे धातु अनिट् धातु कहलाते हैं।

जिन धातुओं से लगने वाले सेट् प्रत्ययों को इडागम होता है, वे धातु सेट् धातु कहलाते हैं।

इस प्रकार हमने जाना कि -

१. पठ् + क्त = पठित में, इडागम इसलिये होता है कि पठ् धातु भी सेट् है, क्त प्रत्यय भी सेट् है।

२. कृ + क्त = कृत में, इडागम इसलिये नहीं होता है कि क्त प्रत्यय तो सेट् है, किन्तु कृ धातु अनिट् है।

३. पठ् + अनीय = पठनीय में, इडागम इसलिये नहीं होता है कि पठ् धातु तो सेट् है, किन्तु अनीय प्रत्यय अनिट् है।

४. गम् + अनीय = गमनीय में, इडागम इसलिये नहीं होता है कि

गम् धातु भी अनिट् है, अनीय प्रत्यय भी अनिट् है।

अतः हमने अब जाना, कि कुछ धातु सेट् होते हैं, कुछ प्रत्यय सेट् होते हैं। जब सेट् धातु से सेट् आर्धधातुक प्रत्यय लगता है, तभी उस आर्धधातुक प्रत्यय को इडागम होता है। **जो कि 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से होता है।**

अतः आर्धधातुक प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं - सेट् तथा अनिट्।

धातु भी दो प्रकार के होते हैं - सेट् तथा अनिट्। दोनों को अलग अलग पहिचान लेना चाहिये।

सेट् अनिट् प्रत्यय

आर्धधातुकस्येड् वलादेः - आर्धधातुक प्रत्यय बतलाये गये हैं। इन्हें देखिये। इनमें से जो वलादि आर्धधातुक प्रत्यय हैं, उन्हें ही इडागम होता है।

नेड् वशि कृति - इन वलादि आर्धधातुक प्रत्ययों में से भी, जो वशादि कृत् आर्धधातुक प्रत्यय हैं, उन्हें इडागम नहीं होता है।

तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च - वलादि होने के बाद भी ति, तु, त्र, त, थ, सि, सु, सर, क, स, इन दस आर्धधातुक प्रत्ययों को इडागम नहीं होता है।

ये तीन सूत्र ही वस्तुतः प्रत्ययों को इडागम होने या न होने का विधान करते हैं।

वस्तुतः लाघव (संक्षेप) अष्टाध्यायी का प्राण है। अतः भगवान् पाणिनि ने, अष्टाध्यायी में, लाघव के लिये, सारे प्रत्ययों की इडागम व्यवस्था, **'नेड्वशि कृति' सूत्र ७.२.८ से लेकर 'ईडजनोर्ध्वे च'** ७.२.७८ तक के सूत्रों में, इडागम प्रकरण बनाकर, एक साथ बतला दी है। इनके एक साथ होने से सामान्य जन को इडागम के विषय में उलझन हो जाती है।

अतः हमने इस अध्याय में उन्हें पृथक् पृथक् कर दिया है, ताकि आप सेट्, अनिट् धातुओं तथा सेट्, अनिट् प्रत्ययों को अलग अलग पहिचान सकें।

इन सारे सूत्रों के तात्पर्य को एक साथ मिलाने से सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों की स्थिति इस प्रकार बनती है -

१. लिट् लकार के प्रत्यय

प्र. पु.	णल् (अ)	अतुः	उः	ए	आते	इरे
म. पु.	थल् (थ)	अथुः	अ	से	आथे	ध्वे
उ. प्र.	णल् (अ)	व	म	ए	वहे	महे

ये लिट् लकार के प्रत्यय हैं। इन प्रत्ययों को देखिये। लिट् लकार के ये सारे १८ प्रत्यय, तिङ् आर्धधातुक प्रत्यय हैं, किन्तु लिट् लकार के इन प्रत्ययों में से **केवल थल् (थ) व, म, से, ध्वे, वहे, महे ये ७ प्रत्यय** ही वलादित्वात् सेट् प्रत्यय हैं। शेष ११ प्रत्यय अनिट् हैं।

किन्तु इन ७ सेट् प्रत्ययों को भी, तभी इडागम होता है, जब ये प्रत्यय सेट् धातुओं से लगे हों। लिट् लकार के इन सेट् प्रत्ययों की इडागम व्यवस्था हम लिट् लकार में ही बतलायेंगे।

२. क्वसु प्रत्यय

यह सेट् प्रत्यय है। इसकी इडागम व्यवस्था हम कृदन्त में बतलायेंगे।

३. शेष प्रत्यय

अब ऊपर कहे हुए लिट् लकार के सात प्रत्यय तथा क्वसु प्रत्यय, इन आठ प्रत्ययों के अलावा जो भी आर्धधातुक प्रत्यय बचे, उनकी इडागम व्यवस्था इस प्रकार समझें -

सेट् तकारादि आर्धधातुक प्रत्यय - ति, तु, त्र, त, इन चार तकारादि प्रत्ययों को छोड़कर, 'त' से प्रारम्भ होने वाले सारे आर्धधातुक प्रत्यय सेट् होते हैं, जो इस प्रकार हैं - क्त, क्तवतु, क्त्वा, तुमुन्, तव्य, तव्यत्, तृच्, तृन्, तास्, तवै, तवेन्, तोसुन्, त्वन्, तवेङ् = १४

सेट् सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय - सि, सु, सर, स इन चार सकारादि प्रत्ययों को छोड़कर, 'स' से प्रारम्भ होने वाले सारे आर्धधातुक प्रत्यय सेट् होते हैं, जो इस प्रकार हैं - सिच्, सीयुट्, सन्, स्य, क्से, से, सेन्, सिप् = ८

ये १४ + ८ सेट् प्रत्यय, यदि सेट् धातुओं से लगेंगे, तो ही इन्हें इडागम होगा। जैसे - पठ् + क्त - पठ् + इट् + त = पठितः। पठ् + तुमुन् - पठ् + इट् + तुम् = पठितुम्। पठ् + स्यति - पठ् + इट् + स्यति = पठिष्यति।

ये १४ + ८ सेट् प्रत्यय, यदि अनिट् धातुओं से लगेंगे, तो इन्हें कभी भी इडागम नहीं होगा। जैसे - कृ + क्त = कृत / कृ + तुमुन् = कर्तुम् आदि।

इसका अर्थ यह हुआ कि ऊपर कहे गये थल् (थ) व, म, से, ध्वे, वहे, महे तथा क्वसु ये आठ प्रत्यय, १४ तकारादि आर्धधातुक प्रत्यय और ८ सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय, ये ३० आर्धधातुक प्रत्यय ही 'सेट्' होते हैं।

इन ३० आर्धधातुक प्रत्ययों के अलावा, सारे आर्धधातुक प्रत्यय अनिट्

होते हैं। चाहे वे वलादि हों, चाहे वलादि न हों। ये अनिट् प्रत्यय चाहे सेट् धातुओं से लगें, चाहे अनिट् धातुओं से लगें, इन्हें इडागम नहीं होता। जैसे -

भस्	+	म	=	भस्म
ईश्	+	वर	=	ईश्वर:
दीप्	+	र	=	दीप्र:
याच्	+	ना	=	याच्ञा
दीप्	+	क्तिन् (ति)	=	दीप्ति:
तन्	+	क्तिन् (ति)	=	तन्ति:
सच्	+	तु	=	सक्तु:
तन्	+	ष्ट्रन्	=	तन्त्र:
कुष्	+	सि	=	कुक्षि:
इष्	+	सु	=	इक्षु:
अश्	+	क्सरन् (सर्)	=	अक्षरम्
वस्	+	स	=	वत्स:

(उणादि प्रत्ययों के बारे में यह जानना चाहिये कि वहाँ यदि प्रत्यय सेट् हैं, तो धातु अनिट् हैं, जैसे - एतश:, भित्तिका आदि में। यदि दोनों सेट् हैं तो बाहुलक से इडागम का निषेध है, जैसे - वर्तिका, कृत्तिका, पत्तनम् आदि में। अत: यह इडागम व्यवस्था, उणादि प्रत्ययों के लिये भी बिल्कुल ठीक है, यह जानना चाहिये।)

सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को भी तभी इडागम होता है, जब वह धातु भी सेट् हो, जिससे कि ये लगे हैं। अत: आवश्यक है कि अब हम यह भी जानें कि कौन से धातु सेट् हैं तथा कौन से अनिट् हैं ?

इस उद्देश्य से अब हम सेट् अनिट् धातु अलग अलग बतला रहे हैं।

सेट् अनिट् धातु

एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् - उपदेशावस्था में जो धातु एकाच् भी हों तथा अनुदात्त भी हों, वे अनिट् होते हैं। ऐसे अनुदात्त धातुओं से परे आने वाले सेट् प्रत्यय को भी इडागम नहीं होता है।

इसका अर्थ यह हुआ कि अनेकाच् धातु सेट् होते हैं और इन अनेकाच् धातुओं से परे आने वाले सेट् प्रत्यय को इडागम अवश्य होता है।

एकाच् अनेकाच् पहिचानने की विधि - ध्यान रखिये कि धातुओं के अनुबन्धों की इत् संज्ञा करने के बाद जो धातु बचता है, उसमें यदि एक अच् हो, तो ही उसे एकाच् धातु समझना चाहिये। जैसे - डुपचष् पाके यह धातु है। देखने में तो इसमें तीन अच् हैं किन्तु इसमें डु,चकारोत्तर 'अ' तथा 'ष्' की इत् संज्ञा होकर 'पच्' ही शेष बचता है। अब यह 'पच्' एकाच् धातु है।

इस प्रकार धातुपाठ को देखने पर हम पाते हैं कि जागृ, ऊर्णु, दरिद्रा, चकासृ, दीधी तथा वेवी इन ६ धातुओं को छोड़कर भ्वादिगण से क्र्यादिगण के मध्य आने वाले सारे धातु एकाच् ही हैं, जैसे पठ्, लिख्, बुध् आदि। पर ये सब के सब अनुदात्त नहीं हैं। इसलिये सारे एकाच् धातु अनिट् भी नहीं हैं।

अब चुरादिगण के बारे में विचार करें। चुरादिगण के प्रत्येक धातु में किसी भी प्रत्यय के लगने के पूर्व, स्वार्थिक णिच् प्रत्यय लगता ही है। इस णिच् प्रत्यय के लगने के कारण, चुरादिगण के सारे धातु अनेकाच् हो जाते हैं। जैसे - चुर् + णिच् = चोरि, गण् + णिच् = गणि आदि। अनेकाच् हो जाने से ये धातु सेट् हो जाते हैं, यह जानना चाहिये।

इसी प्रकार भ्वादिगण से क्र्यादिगण के मध्य आने वाले जो धातु अनुदात्त तथा एकाच् होने से अनिट् हैं, उनमें भी यदि सन्, यङ् आदि कोई भी प्रत्यय लग जाता है, तो ये धातु भी प्रत्यय के लग जाने से अनेकाच् हो जाते हैं। जैसे - गम् + सन् = जिगमिष। देखिये, कि यह गम् धातु तो अनुदात्त तथा एकाच् होने के कारण अनिट् है, परन्तु सन् प्रत्यय लग जाने पर, अब यह अनेकाच् हो गया है तथा अनेकाच् होने के कारण अब यह सेट् हो गया है।

हमने जाना कि सारे अनेकाच् धातु तो सेट् ही होते हैं और एकाच् अनिट् धातु भी सन्, यङ् आदि प्रत्ययों के लग जाने पर, अनेकाच् हो जाने से, सेट् हो जाते हैं।

इस प्रकार के सेट् धातुओं को छोड़कर, जो एकाच् धातु बचते हैं, उन्हीं में हमें सेट् अनिट् का विचार करना चाहिये क्योंकि एकाच् धातु, केवल एकाच् होने से अनिट् नहीं हो जाते हैं अपितु एकाच् होने के साथ साथ जब वे अनुदात्त भी होते हैं तभी वे अनिट् कहलाते हैं। जैसे - 'पच्' यह एकाच् अनुदात्त धातु है, अतः अनिट् है। किन्तु पठ् धातु एकाच् तो है, पर अनुदात्त न होकर उदात्त है, इसलिये यह सेट् है।

एकाच् तो हम देखकर पहिचान लेंगे, किन्तु अनुदात्त धातुओं को हम कैसे पहिचानें ? इन अनुदात्त धातुओं को रटने के सिवा और कोई विधि नहीं है। अत: हम एकाच् धातुओं के अन्तिम वर्ण को वर्णमाला के क्रम से रखकर, धातुओं का सेट्, अनिट् विभाजन दे रहे हैं। इन्हें याद करके ही आप जान सकेंगे कि एकाच् धातुओं में से कौन से धातु सेट् हैं और कौन से अनिट्।

अब हम 'ता' इस लुट् लकार के एक प्रत्यय को लगाकर, उदाहरण देते हुए धातुओं का सेट् अनिट् विभाग बतलायेंगे।

१. एकाच् आकारान्त धातु - सारे एकाच् आकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं। जैसे - पा + ता = पाता। दा + ता = दाता। घ्रा + ता = घ्राता। अनेकाच् होने से दरिद्रा धातु सेट् है।

२. एकाच् ह्रस्व इकारान्त धातु - श्वि, श्रि को छोड़कर, शेष सारे एकाच् ह्रस्व इकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं। जैसे - जि + ता = जेता। चि + ता = चेता। परन्तु श्रि तथा श्वि धातु सेट् होते हैं, तो इडागम होकर इनके रूप बनेंगे - श्रि + इ + ता = श्रयिता / श्वि + इ + ता = श्वयिता।

३. एकाच् दीर्घ ईकारान्त धातु - शीङ्, डीङ् को छोड़कर, शेष सारे एकाच् दीर्घ ईकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं। जैसे - नी + ता = नेता। क्री + ता = क्रेता। परन्तु शीङ्, तथा डीङ् धातु सेट् होते हैं, तो इनके रूप बनेंगे - शी + इ + ता = शयिता / डी + इ + ता = डयिता।

४. एकाच् ह्रस्व उकारान्त धातु - स्नु, नु, क्षु, यु, रु, क्ष्णु इन ६ धातुओं को छोड़कर, शेष सारे एकाच् ह्रस्व उकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं। जैसे - हु + ता = होता। द्रु + ता = द्रोता। परन्तु ये ६ धातु सेट् होते हैं। इन्हें इडागम होकर रूप बनेंगे - स्नु + इ + ता - स्नविता / नु + इ + ता - नविता / क्षु + इ + ता - क्षविता / यु + इ + ता - यविता / रु + इ + ता - रविता / क्ष्णु + इ + ता - क्ष्णविता।

५. एकाच् दीर्घ ऊकारान्त धातु - इनमें सू, धू, वेट् होते हैं, शेष सारे एकाच् ऊकारान्त धातु सेट् ही होते हैं। जैसे - भू + इ + ता = भविता।

६. एकाच् ह्रस्व ऋकारान्त धातु - इनमें वृङ्, वृञ् धातु सेट् होते हैं - वृ + इ + ता - वरिता आदि। अनेकाच् होने से 'जागृ' धातु सेट् है।

स्वृ धातु वेट् होता है - स्वृ + इ + ता - स्वरिता / स्वृ + ता - स्वर्ता आदि।

शेष सारे एकाच् ह्रस्व ऋकारान्त धातु अनिट् होते हैं। जैसे - कृ + ता = कर्ता। हृ + ता = हर्ता।

७. **एकाच् दीर्घ ॠकारान्त धातु** - ये सभी सेट् होते हैं। जैसे - तॄ + इ + ता = तरिता।

८. **एजन्त धातु** - जिनके अन्त में ए, ओ, ऐ, औ, हों, उन्हें एजन्त धातु कहते हैं। ये धातु **आदेच उपदेशेऽशिति** सूत्र से आकारान्त बन जाते हैं। आकारान्त धातुओं के समान ये सब भी अनिट् ही होते हैं। जैसे - गै + ता = गाता / धे + ता = धाता = शाता आदि।

यह एकाच् अजन्त धातुओं में से सेट् तथा अनिट् धातुओं को अलग अलग पहिचानने की विधि पूर्ण हुई।

अब एकाच् हलन्त धातुओं में से सेट् तथा अनिट् धातुओं को कैसे अलग - अलग पहिचाना जाये, यह विधि बतला रहे हैं।

एकाच् हलन्त धातुओं में से, सेट् तथा अनिट् धातुओं को पहिचानने की विधि

अनिट् हलन्त धातु

अब नीचे अन्तिम वर्ण के वर्णमालाक्रम से १०२ हलन्त एकाच् धातु दिये जा रहे हैं। ये सब एकाच् तथा अनुदात्त होने के कारण अनिट् हैं। इनके बाद वेट् धातु दिये जा रहे हैं। इनके अलावा जो भी एकाच् हलन्त धातु आप पाएँगे, वे सब सेट् ही होंगे, यह जानना चाहिए।

१. **एकाच् ककारान्त धातुओं में** - स्वादिगण का शक्लृ शक्तौ, यह १ धातु ही अनिट् होता है। शक् + ता = शक्ता। शेष सारे ककारान्त धातु सेट् होते हैं। अत: दिवादिगण का शक् धातु सेट् है।

२. **एकाच् चकारान्त धातुओं में** - पच्, मुच्, रिच्, वच्, विच्, सिच्, ये ६ धातु अनिट् होते हैं। जैसे - पच् + ता = पक्ता / मुच् + ता = मोक्ता / रिच् + ता = रेक्ता / वच् + ता = वक्ता / विच् + ता = वेक्ता / सिच् + ता = सेक्ता। शेष सारे चकारान्त धातु सेट् होते हैं।

३. **एकाच् छकारान्त धातुओं में** - प्रच्छ्, यह १ धातु अनिट् होता है। जैसे - प्रच्छ् + ता = प्रष्टा / शेष सारे छकारान्त धातु सेट् होते हैं।

४. **एकाच् जकारान्त धातुओं में** - त्यज्, निजिर्, भज्, भञ्ज्, भुज्, भ्रस्ज्, मस्ज्, यज्, युज्, रुज्, रञ्ज्, विजिर् (रुधादि), स्वञ्ज्, सञ्ज्, सृज् - ये

१५ धातु अनिट् होते हैं। जैसे - त्यज् + ता = त्यक्ता / निज् + ता = नेक्ता / भज् + ता = भक्ता / भञ्ज् + ता = भङ्क्ता / भुज् + ता = भोक्ता / भ्रस्ज् + ता = भ्रष्टा / मस्ज् + ता = मङ्क्ता / यज् + ता = यष्टा / युज् + ता = योक्ता / रुज् + ता = रोक्ता / रञ्ज् + ता = रङ्क्ता / विज् + ता = वेक्ता / स्वञ्ज् + ता = स्वङ्क्ता / सञ्ज् + ता = सङ्क्ता / सृज् + ता = स्रष्टा। शेष सभी जकारान्त धातु सेट् होते हैं।

५. **एकाच् दकारान्त धातुओं में** - अद्, क्षुद्, खिद्, छिद्, तुद्, नुद्, पद् (दिवादिगण), भिद्, विद् (दिवादिगण), विद् (रुधादिगण), शद्, सद्, स्विद्, स्कन्द्, और हद् ये १५ धातु अनिट् होते हैं। जैसे - अद् + ता = अत्ता / क्षुद् + ता = क्षोत्ता / खिद् + ता = खेत्ता / छिद् + ता = छेत्ता / तुद् + ता = तोत्ता / नुद् + ता = नोत्ता / पद् + ता = पत्ता / भिद् + ता = भेत्ता / विद् + ता = वेत्ता / विद् + ता = वेत्ता / शद् + ता = शत्ता / सद् + ता = सत्ता / स्विद् + ता = स्वेत्ता / स्कन्द् + ता = स्कन्त्ता / हद् + ता = हत्ता। शेष सभी दकारान्त धातु सेट् होते हैं।

विशेष - विद् धातु चार हैं। इनमें से दिवादि तथा रुधादिगण के विद् धातु अनिट् होते हैं और अदादिगण तथा तुदादिगण के विद् धातु सेट् होते हैं।

६. **एकाच् धकारान्त धातुओं में** - क्रुध्, क्षुध्, बुध् (दिवादिगण), बन्ध्, युध्, रुध्, राध्, व्यध्, साध्, शुध्, सिध् (दिवादिगण) ये ११ धातु अनिट् होते हैं। जैसे - क्रुध् + ता = क्रोद्धा / क्षुध् + ता = क्षोद्धा / बुध् + ता = बोद्धा / बन्ध् + ता = बन्द्धा / युध् + ता = योद्धा / रुध् + ता = रोद्धा / राध् + ता = राद्धा / व्यध् + ता = व्यद्धा / साध् + ता = साद्धा / शुध् + ता = शोद्धा / सिध् + ता = सेद्धा। शेष सभी धकारान्त धातु सेट् होते हैं।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि बुध् धातु दो हैं। इनमें से भ्वादिगण का बुध् धातु सेट् है। इससे इडागम होकर बोधिता बनता है। दिवादिगण का बुध् धातु अनिट् है। इससे इडागम न होकर बोद्धा बनता है।

७. **एकाच् नकारान्त धातुओं में** - मन् (दिवादिगण) तथा हन्, ये २ धातु अनिट् होते हैं। मन् + ता = मन्ता / हन् + ता = हन्ता। शेष सारे नकारान्त धातु सेट् होते हैं।

८. **एकाच् पकारान्त धातुओं में** - आप्, छुप्, क्षिप्, तप्, तिप्, तृप्

(दिवादिगण), दृप् (दिवादिगण), लिप्, लुप्, वप्, शप्, स्वप्, सृप्, ये १३ धातु अनिट् होते हैं, जैसे - आप् + ता = आप्ता / छुप् + ता = छोप्ता / क्षिप् + ता = क्षेप्ता / तप् + ता = तप्ता / तिप् + ता = तेप्ता / तृप् + ता = तर्प्ता / दृप् + ता = दर्प्ता / लिप् + ता = लेप्ता / लुप् + ता = लोप्ता / वप् + ता = वप्ता / शप् + ता = शप्ता / स्वप् + ता = स्वप्ता / सृप् + ता = सर्प्ता। शेष सारे पंकारान्त धातु सेट् होते हैं।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि तृप् धातु तीन हैं। इनमें से स्वादिगण तथा तुदादिगण के तृप् धातु सेट् होते हैं। इनसे इडागम होकर तर्पिता बनता है। दिवादिगण का तृप् धातु वेट् होता है। इससे इडागम होने पर तर्पिता बनता है तथा इडागम न होने पर होकर त्रप्ता / तर्प्ता रूप बनते हैं।

९. **एकाच् भकारान्त धातुओं में** - यभ्, रभ्, लभ्, ये ३ धातु अनिट् होते हैं। यभ् + ता = यब्धा / रभ् + ता = रब्धा / लभ् + ता = लब्धा। शेष सारे भकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१०. **एकाच् मकारान्त धातुओं में** - गम्, नम्, यम्, रम्, ये ४ धातु अनिट् होते हैं। गम् + ता = गन्ता / नम् + ता = नन्ता / यम् + ता = यन्ता / रम् + ता = रन्ता। शेष सारे मकारान्त धातु सेट् होते हैं।

११. **एकाच् शकारान्त धातुओं में** - क्रुश्, दंश्, दिश्, दृश्, मृश्, रिश्, रुश्, लिश्, विश्, स्पृश्, ये १० धातु अनिट् होते हैं। जैसे - क्रुश् + ता = क्रोष्टा / दंश् + ता = दंष्टा / दिश् + ता = देष्टा / दृश् + ता = द्रष्टा / मृश् + ता = म्रष्टा / रिश् + ता = रेष्टा / रुश् + ता = रोष्टा / लिश् + ता = लेष्टा / विश् + ता = वेष्टा / स्पृश् + ता = स्प्रष्टा। शेष सारे शकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१२. **एकाच् षकारान्त धातुओं में** - कृष्, त्विष्, तुष्, द्विष्, दुष्, पुष् (दिवादि गण), पिष्, विष्, शिष्, शुष्, श्लिष् (दिवादिगण), ये ११ धातु अनिट् होते हैं। जैसे - कृष् + ता = कर्ष्टा / त्विष् + ता = त्वेष्टा / तुष् + ता = तोष्टा / द्विष् + ता = द्वेष्टा / दुष् + ता = दोष्टा / पुष् + ता = पोष्टा / पिष् + ता = पेष्टा / विष् + ता = वेष्टा / शिष् + ता = शेष्टा / शुष् + ता = शोष्टा / श्लिष् + ता = श्लेष्टा। शेष सभी षकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१३. एकाच् सकारान्त धातुओं में - वस्, घस्, ये २ धातु अनिट् होते हैं। जैसे - वस् + ता = वस्ता / घस् + ता = घस्ता। शेष सारे सकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१४. एकाच् हकारान्त धातुओं में - दह्, दिह्, दुह्, नह्, मिह्, रुह्, लिह्, वह्, ये ८ धातु अनिट् होते हैं। दह् + ता = दग्धा / दिह् + ता = देग्धा / दुह् + ता = दोग्धा / नह् + ता = नद्धा / मिह् + ता = मेढा / रुह् + ता = रोढा / लिह् + ता = लेढा / वह् + ता = वोढा। शेष सारे हकारान्त धातु सेट् होते हैं।

सेट्, अनिट् के अलावा कुछ धातु वेट् भी होते हैं, जिनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को भी विकल्प से इट् का आगम होता है। ये इस प्रकार हैं -

वेट् हलन्त धातु

स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा - स्वृ धातु, अदादिगण का सू धातु, दिवादिगण का सू धातु, स्वादि तथा क्र्यादिगण का धूञ् धातु तथा सारे ऊदित् धातुओं से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

ऊदित् धातु - 'ऊदित्' का अर्थ होता है, ऐसे धातु जिनमें 'ऊ' की इत् संज्ञा हुई हो। धातुपाठ में पढ़े गये सारे 'ऊदित् धातु' इस प्रकार हैं -

अक्षू	तक्षू	त्वक्षू	गृहू	मृजू	अशू	वृहू	तृन्हू
क्षमू	क्लिदू	अञ्जू	क्लिशू	षिधू	त्रपूष्	क्षमूष्	गाहू
गुहू	स्यन्दू	कृपू	गुपू	ओव्रश्चू	तृहू	स्तृहू	तञ्चू।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि स्वादि, क्र्यादि तथा चुरादिगण में धूञ् कम्पने धातु हैं। तुदादिगण में धू विधूनने धातु है। इनमें से स्वादिगण तथा क्र्यादिगण के धूञ् कम्पने धातु ही वेट् होते हैं। इनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है - धोता / धविता।

तुदादिगण का धू विधूनने धातु तथा चुरादिगण का धूञ् कम्पने धातु सेट् होता है। इनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को नित्य इडागम होता है - धविता।

रधादिभ्यश्च - रध्, नश्, तृप्, दृप्, द्रुह्, मुह्, स्निह्, स्नुह्, ये ८ धातु वेट् होते हैं। इन आठ धातुओं से परे आने वाले सेट् प्रत्ययों को विकल्प से

इडागम होता है।

रध्	+	ता	-	रद्धा	रधिता
नश्	+	ता	-	नंष्टा	नशिता
तृप्	+	ता	-	तर्प्ता	तर्पिता
दृप्	+	ता	-	दर्प्ता	दर्पिता
द्रुह्	+	ता	-	द्रोग्धा / द्रोढा	द्रोहिता
मुह्	+	ता	-	मोग्धा / मोढा	मोहिता
स्नुह्	+	ता	-	स्नोग्धा / स्नोढा	स्नोहिता
स्निह्	+	ता	-	स्नेग्धा / स्नेढा	स्नेहिता

निरः कुषः - निर् उपसर्गपूर्वक कुष् धातु से परे आने वाले सेट् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

निर्	+ कुष्	-	निष्कोष्टा	निष्कोषिता

इस प्रकार ३६ धातु वेट् हैं। इन ३६ वेट् धातुओं से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि जहाँ एक आकृति के अनेक धातु हैं, वहाँ हमने स्पष्ट निर्देश करके कोष्ठक में उस गण का नाम लिख दिया है, जिस गण का धातु अनिट् होता है। इससे यह जानना चाहिये कि जिसका नाम नहीं लिखा है वह सेट् ही है।

सेट् हलन्त धातु

इन अनिट् और वेट् धातुओं के अलावा जितने भी हलन्त धातु बचे, वे सब के सब सेट् ही हैं, यह जानना चाहिये।

हम पढ़ चुके हैं कि लिट् लकार के थल्, व, म, से, ध्वे, वहे, महे प्रत्यय, क्वसु प्रत्यय, क्त, क्तवतु, क्त्वा, तास्, तुमुन्, तव्य, तव्यत्, तृच्, तृन्, तवै, तवेन् तोसुन्, त्वन्, तवेङ् ये १४ तकारादि प्रत्यय तथा सीयुट्, स्य, सिच्, सन्, क्से, से सेन सिप् ये ८ सकारादि प्रत्यय, इस प्रकार कुल ३० प्रत्यय सेट् हैं।

ये ३० प्रत्यय जब किसी सेट् धातु से लगेंगे तब इन प्रत्ययों को नित्य इडागम होगा। ये ३० प्रत्यय जब किसी वेट् धातु से लगेंगे तब इन्हें विकल्प से इडागम होगा। ये ३० प्रत्यय जब किसी अनिट् धातु से लगेंगे तब इन्हें इडागम नहीं होगा।

यह सेट्, अनिट् तथा वेट् धातुओं को पहिचानने की तथा सेट् अनिट् प्रत्ययों को पहिचानने की औत्सर्गिक अर्थात् मूलभूत सामान्य व्यवस्था है। इसे कण्ठस्थ कर लीजिये।

इसके अपवाद

हर व्यवस्था के कुछ न कुछ अपवाद होते हैं, अपवादों को सामने रख कर ही कोई भी कार्य करना चाहिये। अतः अब प्रत्येक प्रत्यय के लिये इडागम व्यवस्था के अपवाद बतला रहे हैं। जिस भी प्रत्यय को लगाकर आपको रूप बनाना हो, पहले उसके अपवादों को खोलकर सामने रख लीजिये, अन्यथा केवल मूल औत्सर्गिक (सामान्य) व्यवस्था को देखकर चलने से गलतियाँ हो जायेंगी। अब एक एक प्रत्यय को लेकर उसके अपवाद बतला रहे हैं। ऊपर बतलाई गई व्यवस्था को मूल औत्सर्गिक (सामान्य) व्यवस्था समझिये और उसे रट लीजिये। उसके बाद जिस भी प्रत्यय को लगाना हो उसके लिये मूल व्यवस्था तथा उसकी अपवाद व्यवस्था को एक साथ सामने रख कर काम कीजिये।

स्य प्रत्यय के लिये विशेष इडागम व्यवस्था

देखिये कि लृट् तथा लृङ् लकार के सारे प्रत्यय 'स्य' प्रत्यय से प्रारम्भ हो रहे हैं।

१. **ऋद्धनोः स्ये** - ऋकारान्त धातु तथा हन् धातु यद्यपि मूलतः अनिट् हैं, किन्तु इनसे परे आने वाले स्य प्रत्यय को इट् का आगम होता है।

कृ	+	स्यति	-	कृ	+	इट्	+	स्यति	=	करिष्यति
अकृ	+	स्यत्	-	अकृ	+	इट्	+	स्यत्	=	अकरिष्यत्
हन्	+	स्यति	-	हन्	+	इट्	+	स्यति	=	हनिष्यति
अहन्	+	स्यत्	-	अहन्	+	इट्	+	स्यति	=	अहनिष्यत्

२. **सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृदनृतः** - कृत्, चृत्, छृद्, तृद्, नृत् इन ५ धातुओं से परे आने वाले सेट् सकारादि आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है। स्य प्रत्यय चूँकि सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय है, अतः इन पाँच धातुओं से परे होने पर इसे विकल्प से इडागम होगा, तो इनके रूप इस प्रकार बनेंगे-

कृत्	-	कर्तिष्यति	कर्त्स्यति	/	अकर्तिष्यत्	अकर्त्स्यत्
चृत्	-	चर्तिष्यति	चर्त्स्यति	/	अचर्तिष्यत्	अचर्त्स्यत्
छृद्	-	छर्दिष्यति	छर्त्स्यति	/	अच्छर्दिष्यत्	अच्छर्त्स्यत्

तृद्	-	तर्दिष्यति	तर्त्स्यति / अतर्दिष्यत्	अतर्त्स्यत्
नृत्	-	नर्तिष्यति	नर्त्स्यति / अनर्तिष्यत्	अनर्त्स्यत्

३. गमेरिट् परस्मैपदेषु - गम् धातु यद्यपि अनिट् है तथापि उससे परे आने वाले परस्मैपदी सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय को इडागम होता है। यथा -

गम् - गमिष्यति अगमिष्यत्

किन्तु आत्मनेपदी सकारादि प्रत्यय परे होने पर उसे इडागम नहीं होता है। यथा संगंसीष्ट/ संगंस्यते / संजिगंसते।

४. न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः - वृत्, वृध्, शृध्, स्यन्द् ये धातु यद्यपि आत्मनेपदी हैं किन्तु **'वृद्भ्यः स्यसनोः'** सूत्र से स्य, सन् प्रत्यय परे होने पर ये धातु विकल्प से परस्मैपदी भी हो जाते हैं।

जब ये धातु परस्मैपदी हो जाते हैं, तब इनसे परे आने वाले सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय को इडागम नहीं होता है। यथा -

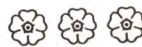
वृत्	-	वर्त्स्यति	/	अवर्त्स्यत्
वृध्	-	वर्त्स्यति	/	अवर्त्स्यत्
शृध्	-	शर्त्स्यति	/	अशर्त्स्यत्
स्यन्द्	-	स्यन्त्स्यति	/	अस्यन्त्स्यत्

किन्तु आत्मनेपद में नित्य इडागम होकर बनेगा - वर्तिष्यते / वर्धिष्यते आदि।

५. तासि च क्लृपः - क्लृप् धातु से परे आने वाले परस्मैपदसंज्ञक सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय को तथा तास् प्रत्यय को इडागम नहीं होता है किन्तु आत्मनेपद संज्ञक सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय को तथा तास् प्रत्यय को इडागम होता है।

		परस्मैपद		आत्मनेपद
क्लृप् धातु	-	कल्प्स्यति	/	कल्पिष्यते
		अकल्प्स्यत्	/	अकल्पिष्यत

जब भी स्य प्रत्यय लगाकर कोई भी धातुरूप आप बनायें, तब औत्सर्गिक इडागम व्यवस्था के साथ इन अपवादों को देखकर ही कार्य प्रारम्भ करें।



तृतीय पाठ

समस्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

लृट् शेषे च - अनद्यतन भविष्यत् काल में लुट् लकार के प्रत्यय लगाये जाते हैं। जैसे - देवदत्तः श्वः कर्ता। श्वः भोक्ता। देवदत्त कल करेगा, कल खायेगा आदि। परन्तु यदि इसी काल में अद्यतन काल मिल जाये, तो ऐसे व्यामिश्र काल में लुट् का प्रयोग नहीं होगा, उसमें लृट् का प्रयोग किया जायेगा। जैसे - अद्य श्वो वा भविष्यति। आज या कल होगा। अतः जानिये कि सामान्य भविष्यत्काल में लृट् लकार का प्रयोग किया जाता है।

धातु दो प्रकार के होते हैं। सेट् तथा अनिट्। ये बतलाये जा चुके हैं।

चूँकि धातु दो प्रकार के होते हैं, अतः प्रत्यय भी दो प्रकार के होते हैं। सेट् तथा अनिट्।

अब लृट् लकार के ये प्रत्यय बतलाये जा रहे हैं।

अनिट् धातुओं से लगने वाले लृट् लकार के अनिट् प्रत्यय

जब धातु अनिट् हो तब उसके लृट् लकार के रूप बनाने के लिये ये प्रत्यय ही लगाइये -

	परस्मैपदी अनिट् प्रत्यय			**आत्मनेपदी अनिट् प्रत्यय**		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	स्यति	स्यतः	स्यन्ति	स्यते	स्येते	स्यन्ते
म. पु.	स्यसि	स्यथः	स्यथ	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उ. पु.	स्यामि	स्यावः	स्यामः	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

ये लृट् लकार के प्रत्यय हैं। लृट् लकार के इन सारे प्रत्ययों के आदि में इट् नहीं बैठा है। आदि में इट् के न बैठे रहने के कारण ये प्रत्यय अनिट् प्रत्यय कहलाते हैं। जब धातु अनिट् हो, तभी उसमें ये प्रत्यय लगाइये।

जब धातु सेट् हो तब इन्हीं अनिट् प्रत्ययों के आदि में इट् (इ) जोड़ दीजिये। अर्थात् स्यति आदि को इष्यति आदि बना दीजिये। जैसे -

सेट् धातुओं से लगने वाले लृट् लकार के सेट् प्रत्यय

	परस्मैपदी सेट् प्रत्यय			आत्मनेपदी सेट् प्रत्यय		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	इष्यति	इष्यतः	इष्यन्ति	इष्यते	इष्येते	इष्यन्ते
म. पु.	इष्यसि	इष्यथः	इष्यथ	इष्यसे	इष्येथे	इष्यध्वे
उ. पु.	इष्यामि	इष्यावः	इष्यामः	इष्ये	इष्यावहे	इष्यामहे

लृट् लकार के इन सारे प्रत्ययों के आदि में इट् बैठा है। आदि में इट् के बैठे रहने के कारण ये प्रत्यय सेट् प्रत्यय कहलाते हैं। जब धातु सेट् हो तभी उसमें ये प्रत्यय लगाइये।

लृट् लकार के ये सारे के सारे ३६ प्रत्यय 'स्य' प्रत्यय से बने हुए हैं। अतः हम इन सारे प्रत्ययों को 'स्य' प्रत्यय ही कहेंगे। इन प्रत्ययों को धातुओं में लगाने से लृट् लकार के धातुरूप बन जाते हैं।

धातुओं में किसी भी प्रत्यय को लगाने के कार्य को हमें खण्ड खण्ड में ही सीखना चाहिये। पूरा धातुरूप एक साथ बना लेने का प्रयास नहीं करना चाहिये।

धातुओं में 'स्य' प्रत्यय लगाकर धातुरूप बनाने का भी जो कार्य होता है उसके अनेक खण्ड होते हैं। ये खण्ड इस प्रकार हैं -

इडागम विधि, धात्वादेश, अतिदेश, अङ्गकार्य, षत्व विधि तथा सन्धि। इनमें से इडागम विधि हमने अभी अभी पढ़ी है। उसे स्मरण रखें और शेष को एक एक करके जानें -

धात्वादेश

यदि प्रत्यय आर्धधातुक है, तो नीचे कहे जाने वाले धातुओं के स्थान पर इस प्रकार आदेश (परिवर्तन) कीजिये -

अस्तेर्भूः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अस् धातु को भू आदेश होता है। अतः स्य से बने हुए लृट् लकार के प्रत्यय परे होने पर अस् धातु के स्थान पर भू आदेश कीजिये।

ब्रुवो वचिः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ब्रू धातु को वच् आदेश होता है। अतः स्य से बने हुए लृट् लकार के प्रत्यय परे होने पर ब्रू धातु के स्थान पर वच् आदेश कीजिये।

चक्षिङ् ख्याञ् - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर चक्ष् धातु को ख्या आदेश होता है। अतः स्य से बने हुए लृट् लकार के प्रत्यय परे होने पर चक्ष् धातु के स्थान पर ख्या आदेश कीजिये।

अजेर्व्यघञपोः - घञ्, अप् को छोड़कर शेष सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अज् धातु को वी आदेश होता है। अतः स्य से बने हुए लृट् लकार के प्रत्यय परे होने पर अज् धातु के स्थान पर वी आदेश कीजिये।

आदेच उपदेशेऽशिति - शित् प्रत्यय परे न रहने पर, सारे एजन्त अर्थात् ए, ऐ, ओ, औ से अन्त होने वाले धातुओं को 'आ' अन्तादेश होता है।

जैसे - ग्लै - ग्ला, म्लै - म्ला, ध्यै - ध्या, शो - शा, सो - सा, वे - वा छो - छा आदि। लृट् लकार के प्रत्यय भी अशित् प्रत्यय हैं, अतः इनके परे होने पर एजन्त धातुओं के एच् स्थान पर 'आ' आदेश कीजिये।

अतिदेश

धातु से प्रत्यय लगने पर, धातु का नाम अङ्ग हो जाता है। प्रत्यय लगने पर, धातु पर प्रत्यय का जो प्रभाव पड़ता है, उस प्रभाव का नाम ही अङ्गकार्य होता है। अङ्गकार्य कैसा हो, यह प्रत्यय पर ही निर्भर है। जैसा प्रत्यय होगा वैसा ही अङ्गकार्य होगा।

अङ्गकार्य करने के लिये प्रत्यय की सही पहिचान सबसे आवश्यक है। यदि प्रत्यय कित्, गित् या ङित् होगा, तो अङ्गकार्य अलग प्रकार का होगा। यदि प्रत्यय कित्, गित्, ङित्, नहीं होगा, तो अङ्गकार्य अलग प्रकार का होगा। देखिये कि 'स्य' प्रत्यय न तो कित् है, न गित्, न ङित्। तथापि कुछ सूत्रों के प्रभाव से यह 'स्य' प्रत्यय, कहीं 'ङित्' जैसा मान लिया जाता है। जहाँ यह ङित् जैसा मान लिया जाता है, वहाँ वे कार्य किये जाते हैं, जो कार्य ङित् प्रत्यय परे होने पर किये जाते हैं। जहाँ यह ङित् जैसा नहीं माना जाता, वहाँ यह जैसा है, वैसा ही रहता है।

यह मानने का कार्य जिन सूत्रों के कारण होता है, उन सूत्रों को हम अतिदेश सूत्र कहते हैं। अब हम उन सूत्रों को देखें, जिनके कारण यह 'स्य' प्रत्यय ङित् जैसा मान लिया जाता है। कोई भी अङ्गकार्य सीखने के पहिले, इन अतिदेश सूत्रों को जानना अत्यावश्यक है।

ये सूत्र इस प्रकार हैं -

अतिदेश सूत्र

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् - 'इङ्' धातु के स्थान पर होने वाले 'गाङ्' धातु से, तथा तुदादिगण के अन्तर्गत जो कुट् से लेकर कुङ् तक ३६ धातुओं का कुटादिगण है, उस कुटादिगण में आने वाले धातुओं से परे आने वाले, ञित् णित् से भिन्न, सारे प्रत्यय, ङिद्वत् मान लिये जाते हैं। कुटादि धातु इस प्रकार हैं -

कु	गु	ध्रु	नू	धू	कड्	डिप्	कुच्	गुज्
कुट्	घुट्	चुट्	छुट्	जुट्	तुट्	पुट्	मुट्	त्रुट्
लुट्	स्फुट्	कुड्	क्रुड्	गुड्	चुड्	तुड्	थुड्	पुड्
व्रुड्	स्थुड्	स्फुड्	गुर्	छुर्	स्फुर्	स्फुल्	कृड्	मृड्=३६

'स्य' प्रत्यय भी ञित् णित् से भिन्न प्रत्यय है, अतः यह जब गाङ् या कुटादि धातुओं के बाद आता है, तब इसे ङित् प्रत्यय जैसा मान लिया जाता है।

विज इट् - तुदादि गण के विज् धातु से परे आने वाले सारे सेट् प्रत्यय ङित्वत् माने जाते हैं।

व्यचेः कुटादित्वमनसीति वक्तव्यम् (वार्तिक) - व्यच् धातु से परे आने वाले 'अस्' से भिन्न सारे प्रत्यय ङिद्वत् होते हैं।

विभाषोर्णोः - ऊर्णु धातु से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्यय विकल्प से ङित्वत् माने जाते हैं।

इन अतिदेश सूत्रों को पढ़कर ही अङ्गकार्य करना प्रारम्भ करें।

सामान्य अङ्गकार्य

धातु में 'स्य' प्रत्यय जोड़ते समय हमारी दृष्टि में तीन बातें एकदम स्पष्ट होना चाहिये।

१. पृष्ठ २९ से ३४ पर दी हुई इडागम विधि को पढ़कर यह निर्णय कीजिये कि जिस धातु में हम प्रत्यय जोड़ रहे हैं, वह धातु सेट् है या अनिट् या वेट्? कहीं ऐसा तो नहीं है कि स्य प्रत्यय को देखकर कोई अनिट् धातु सेट् हो गया हो, या कोई सेट् धातु वेट् हो गया हो। यह स्पष्ट ज्ञान होना चाहिये।

२. यह ज्ञान भी होना चाहिये कि स्य प्रत्यय को देखकर कहीं किसी धातु को धात्वादेश होकर धातु की आकृति तो नहीं बदल रही है ?

३. यह ज्ञान भी होना चाहिये कि कहीं किसी अतिदेश सूत्र के प्रभाव

से यह स्य प्रत्यय कित् जैसा अथवा कहीं ङित् जैसा तो नहीं मान लिया गया है? इन तीन निर्णयों पर ही हमारे सारे अङ्गकार्य आधारित होंगे। ये तीनों कार्य ऊपर बतलाये जा चुके हैं।

सार्वधातुकार्धधातुकयोः - धातु के अन्त में आने वाले इक् को गुण होता है, कित्, ङित्, गित् ञित्, णित्, से भिन्न सार्वधातुक अथवा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। गुण का अर्थ होता है इ, ई के स्थान पर ए / उ, ऊ के स्थान पर ओ / ऋ, ॠ के स्थान पर अर् हो जाना। जैसे - नी - ने - नेष्यति, हु - हो - होष्यति / स्वृ - स्वर् - स्वर्ष्यति आदि।

ध्यान रहे कि यदि गुण करने के बाद अजादि प्रत्यय परे हो तब एचोऽयवायावः सूत्र से ए को अय् तथा ओ को अव्, ऐसी अयादि सन्धि अवश्य करना चाहिये। जैसे -

शी	+	इष्यते	-	शे	+	इष्यते	-	शय्	+	इष्यते =	शयिष्यते
यु	+	इष्यति	-	यो	+	इष्यति	-	यव्	+	इष्यति =	यविष्यति

पुगन्तलघूपधस्य च - धातु की उपधा में स्थित लघु इक् के स्थान पर गुण होता है, कित्, ङित्, गित् से भिन्न सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। जैसे - लिख् - लेख् - लेखिष्यति / क्रुश् - क्रोश् - क्रोक्ष्यति / तृप् - तर्प् - तर्प्स्यति आदि।

क्ङिति च - यदि सार्वधातुक अथवा आर्धधातुक प्रत्यय कित्, ङित्, गित् हो, तब न तो अङ्गों के अन्त में आने वाले इक् को गुण होता है और न ही उपधा में स्थित लघु इक् को गुण होता है। जैसे - डिप् - डिपिष्यति / कुट् - कुटिष्यति / कृड् - कृडिष्यति / गु - गुष्यति / कु - कुष्यति आदि।

इस प्रकार ३६ कुटादि धातु + १ विज् धातु = ३७ धातुओं को छोड़कर, शेष सारे धातुओं के अन्तिम इक् को स्य प्रत्यय परे होने पर, सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण होगा तथा उपधा के लघु इक् को पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण होगा।

अब प्रश्न उठेगा कि गु + स्यति - गुष्यति तो बन जायेगा, क्योंकि यहाँ 'उ' के बाद हलादि प्रत्यय आ रहा है, किन्तु नू + इष्यति में जब नू को गुण नहीं होगा, तब इन ऊ + इ को जोड़ा कैसे जायेगा ?

इसकी व्यवस्था यह है कि जब प्रत्यय अजादि कित्, ङित् होता है, तब

अङ्ग के अन्तिम 'इ' को इयङ् (इय्) तथा अन्तिम 'उ' को उवङ् (उव्) आदेश होता है। इसके लिये सूत्र है -

अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ - श्नुप्रत्ययान्त इवर्णान्त, उवर्णान्त जो धातु और भ्रूरूप जो अङ्ग, उन्हें इयङ्, उवङ् आदेश होते हैं।

अतः अजादि कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर धातुरूप अङ्ग के अन्तिम इ को इयङ् (इय्) तथा अन्तिम उ को उवङ् (उव्) कीजिये। जैसे - नू + इष्यति - नुव् + इष्यति - नुविष्यति / धू + इष्यति - धुव् + इष्यति - धुविष्यति / ऊर्णु + इष्यति - ऊर्णुव् + इष्यति - ऊर्णुविष्यति।

व्यचेः कुटादित्वमनसीति वक्तव्यम् - व्यच् धातु से परे आने वाले 'अस्' से भिन्न सारे प्रत्यय ङिद्वत् होते हैं। फल यह होता है कि व्यच् धातु से परे आने वाले स्य प्रत्यय के ङिद्वत् होने के कारण, व्यच् धातु को सम्प्रसारण हो जाता है। सम्प्रसारण करने वाला सूत्र है -

ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च - ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज् इन धातुओं को सम्प्रसारण होता है कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर।

अतः ङित् प्रत्यय परे होने पर व्यच् के य' को सम्प्रसारण करके 'इ' होता है - व्यच् + इष्यति - विच् + इष्यति = विचिष्यति।

इन अङ्गकार्यों को यहीं बुद्धिस्थ कर लें, तब लृट् लकार के रूप बनायें। अब षत्वविधि बतला रहे हैं।

षत्व विधि

आदेशप्रत्यययोः - इण् प्रत्याहार तथा कवर्ग के बाद आने वाले, आदेश के सकार को तथा प्रत्यय के सकार को मूर्धन्यादेश होता है। यथा - ने + स्यति = नेष्यति / हो + स्यति = होष्यति / स्वर् + स्यति = स्वर्ष्यति, आदि।

इण् प्रत्याहार का अर्थ है इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल्, तथा कवर्ग का अर्थ है क्, ख्, ग्, घ्, ङ्।

तात्पर्य यह है कि जिस भी प्रत्यय के 'स' के पूर्व 'अ, आ' के अलावा कोई भी स्वर होगा, अथवा ह, य, व, र्, ल तथा कवर्ग में से कोई व्यञ्जन होगा उस प्रत्यय के स् को ष् बन जायेगा चाहे वह सकार, स्य प्रत्यय का हो, चाहे से, स्व, सि, सिच् आदि किसी भी प्रत्यय का क्यों न हो। जैसे -

पास्यसि में स्य के पूर्व में 'आ' है अतः यह स्य, स्य ही रहेगा। किन्तु

ने + स्यति = नेष्यति, हो + स्यति = होष्यति, आदि में स्य के पूर्व में अ, आ से भिन्न स्वर आया है अर्थात् इण् आया है अतः यह स्य, 'ष्य' बन जाता है।

इसी प्रकार - स्वर् + स्यति = स्वर् + ष्यति = स्वर्ष्यति आदि बनाइये। इण् का अर्थ इण् प्रत्याहार है।

जिस प्रत्यय के 'स' के पूर्व, कवर्ग में से कोई व्यञ्जन होगा, उस प्रत्यय के स् को भी ष् बन जायेगा। जैसे -

शक् + स्यति को देखिये यहाँ स्यति के 'स्' के पूर्व क् है, अतः स्यति को ष्यति बन जायेगा - शक् + ष्यति। क् + ष् मिलकर क्ष् बनते हैं (क्ष्संयोगे क्षः) तो शक् + ष्यति = शक्ष्यति बनेगा। इसे यहीं हृदयङ्गम कर लें।

अब हम भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के धातुओं के लृट् लकार के रूप बनायें। चुरादिगण के धातुओं में पहिले 'णिच्' प्रत्यय लगाया जाता है, उसके बाद ही उनमें कोई अन्य प्रत्यय लगाया जाता है, अतः उनके रूप बनाने की विधि हम अन्त में अलग से बतलायेंगे।

अब हम भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के धातुओं का वर्गीकरण करके इस क्रम से इनके रूप बनायें

१. सारे अजन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि।
२. सेट् हलन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि।
३. अनिट् हलन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि।
४. चुरादिगण के धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि।
५. सन्नन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि।
६. यङन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि।

ध्यान रहे कि अनिट् धातुओं से 'अनिट् प्रत्यय' अर्थात् स्यति, स्यतः, स्यन्ति, आदि ही लगाये जायें तथा सेट् धातुओं से 'सेट् प्रत्यय' अर्थात् इष्यति, इष्यतः, इष्यन्ति आदि ही लगाये जायें।

१. अजन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

अजन्त धातुओं के इस प्रकार वर्ग बनायें - आकारान्त तथा एजन्त धातु, इकारान्त धातु, ईकारान्त धातु, उकारान्त धातु, ऊकारान्त धातु, ऋकारान्त धातु, ॠकारान्त धातु।

आकारान्त तथा एजन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

दरिद्रा धातु - अनेकाच् होने से यह सेट् है। अतः दरिद्रा + इष्यति / 'दरिद्रातेरार्धधातुके विवक्षिते आलोपो वाच्यः' इस वार्तिक से आ का लोप करके - दरिद्र् + इष्यति = दरिद्रिष्यति।

शेष आकारान्त धातु - इसके अलावा सारे एकाच् आकारान्त धातु अनिट् हैं। अतः इनसे 'अनिट् प्रत्यय' ही लगाइये - पा + स्यति = पास्यति।

एजन्त धातु -

आदेच उपदेशेऽशिति - शित् प्रत्यय परे न रहने पर, सारे एजन्त धातुओं को 'आ' अन्तादेश होता है। जैसे - ग्लै - ग्ला, म्लै - म्ला, ध्यै - ध्या, शो - शा, सो - सा, वे - वा छो - छा आदि।

अब इनके रूप भी आकारान्त धातुओं के समान ही बनाइये।

धे + स्यति - धा + स्यति = धास्यति
ध्यै + स्यति - ध्या + स्यति = ध्यास्यति
शो + स्यति - शा + स्यति = शास्यति, आदि।

उदाहरणार्थ वेञ् - वा धातु के पूरे रूप

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	वास्यति	वास्यतः	वास्यन्ति	वास्यते	वास्येते	वास्यन्ते
म. पु.	वास्यसि	वास्यथः	वास्यथ	वास्यसे	वास्येथे	वास्यध्वे
उ. पु.	वास्यामि	वास्यावः	वास्यामः	वास्ये	वास्यावहे	वास्यामहे

विशेष - आगे हम केवल प्रथमपुरुष एकवचन का रूप बनाकर देंगे। लृट् लकार के अन्य प्रत्यय लगाकर, शेष रूप उसी के समान बना लीजिये।

सेट् इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

हम जानते हैं कि एकाच् इकारान्त, ईकारान्त धातुओं में श्रि, श्वि, शीङ्, डीङ्, ये चार धातु ही सेट् होते हैं। अतः इनमें सेट् प्रत्यय ही लगाइये।

श्रि + इष्यति / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - श्रे + इष्यति / एचोऽयवायावः सूत्र से इस 'ए' को अयादेश करके - श्रय् + इष्यति = श्रयिष्यति। इसी प्रकार श्वि + इष्यति से श्वयिष्यति बनाइये।

शी + इष्यते - शे + इष्यते / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - शे + इष्यते / एचोऽयवायावः सूत्र से इस 'ए' को अयादेश करके - शय् + इष्यते = शयिष्यते। इसी प्रकार डी + इष्यते से डयिष्यते बनाइये।

इसके अपवाद - दीधी, वेवी धातु - ये अनेकाच् होने से सेट् हैं।

दीधीवेवीटाम् - दीधी और वेवी धातुओं के इक् के स्थान पर कोई भी गुण या वृद्धि कार्य नहीं होते।

यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः - यकारादि और इकारादि प्रत्यय परे होने पर दीधी, वेवी धातुओं के 'ई' का लोप होता है।

दीधी + इष्यते - दीध् + इष्यते = दीधिष्यते
वेवी + इष्यते - वेव् + इष्यते = वेविष्यते

इसी प्रकार लृट् लकार के सारे प्रत्यय लगाकर इनके पूरे रूप बनाइये।

अनिट् इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

श्रि, श्वि, शीङ्, डीङ्, को छोड़कर सारे एकाच् इकारान्त, ईकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं, अतः इनमें अनिट् प्रत्यय ही लगाइये।

धातु के अन्तिम इ, ई को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके ए बनाइये तथा प्रत्यय के 'स्' को षत्व करके 'ष्' बनाइये।

जि + स्यति - जे + ष्यति = जेष्यति
नी + स्यति - ने + ष्यति = नेष्यति
अधि + इ + स्यते - अधि + ए + ष्यते = अध्येष्यते

इसी प्रकार सारे इकारान्त, ईकारान्त अनिट् धातुओं के रूप, चि - चेष्यति आदि बनाइये।

इसके अपवाद - 'ली धातु' -

विभाषा लीयतेः - जब भी 'ली' धातु को गुण होकर 'ए' होता है, तब उस 'ए' को विकल्प से 'आ' आदेश होता है। ली - ले - ला - लास्यते। 'आ' आदेश न होने पर - पूर्ववत् लेष्यते ही बनेगा।

सेट् उकारान्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

उकारान्त धातुओं में यु, रु, नु, स्नु, क्षु, क्ष्णु, ये ६ धातु ही सेट् होते हैं, अतः इनमें सेट् प्रत्यय ही लगाइये। यु + इष्यति / सार्वधातुकार्धधातुकयोः

सूत्र से गुण करके - यो + इष्यति। एचोऽयवायाव: सूत्र से इस ओ को अवादेश करके - यव् + इष्यति = यविष्यति।

इन छहों सेट् ऊकारान्त धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाइये -

		गुण करके		अवादेश करके		
नु + इष्यति	-	नो + इष्यति	-	नव् +	इष्यति	= नविष्यति
रु + इष्यति	-	रो + इष्यति	-	रव् +	इष्यति	= रविष्यति
स्नु + इष्यति	-	स्नो + इष्यति	-	स्नव् +	इष्यति	= स्नविष्यति
क्षु + इष्यति	-	क्षो + इष्यति	-	क्षव् +	इष्यति	= क्षविष्यति
क्ष्णु + इष्यति	-	क्ष्णो + इष्यति	-	क्ष्णव् +	इष्यति	= क्ष्णविष्यति

इनका अपवाद - ऊर्णु धातु - ध्यान रहे कि ऊर्णु धातु से परे आने वाला स्य प्रत्यय 'विभाषोर्णो:' सूत्र से विकल्प से ङिद्वत् होता है।

ङिद्वत् होने पर - ऊर्णु धातु को 'क्ङिति च' सूत्र से गुण निषेध होने के कारण 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से उवङ् ही कीजिये -

ऊर्णु + इष्यति - ऊर्णुव् + इष्यति = ऊर्णुविष्यति

ङिद्वत् न होने पर - ऊर्णु धातु को सार्वधातुकार्धधातुकयो: सूत्र से गुण करके यविष्यति के समान ही - ऊर्णविष्यति बनाइये।

अनिट् उकारान्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

इन छह के अलावा शेष उकारान्त धातु अनिट् होते हैं, अत: इनमें अनिट् प्रत्यय ही लगाइये। धातु के अन्तिम उ ऊ को 'सार्वधातुकार्धधातुकयो:' सूत्र से गुण करके ओ बनाइये - हु + स्यति - हो + स्यति - प्रत्यय के स् को 'आदेशप्रत्यययो:' सूत्र से षत्व करके - होष्यति।

इसके अपवाद - कुटादि धातु

गु धातु / ध्रु धातु / कुङ् धातु - ये कुटादि धातु हैं तथा अनिट् हैं। अत: इनसे अनिट् प्रत्यय लगाइये। इनसे परे आने वाला 'स्य' प्रत्यय 'गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्' सूत्र से ङित्वत् होगा, अत: रूप इस प्रकार बनेंगे -

क्ङिति च - यदि सार्वधातुक अथवा आर्धधातुक प्रत्यय कित्, ङित्, या गित् हो, तब न तो अङ्गों के अन्त में आने वाले इक् को गुण होता है और न ही उपधा में स्थित लघु इक् को गुण होता है। अत: गु + स्यति = गुष्यति

/ धु + स्यति = धुष्यति / कु + स्यते = कुष्यते बनाइये।

सेट् ऊकारान्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

ऊकारान्त धातुओं में, सारे धू धातु, अदादिगण का सू धातु, दिवादिगण का सू धातु, ये वेट् हैं। शेष सारे ऊकारान्त धातु सेट् ही हैं।

पू + इष्यति / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - पो + इष्यति / एचोऽयवायावः सूत्र से इस 'ओ' को अवादेश करके - पव् + इष्यति - पविष्यति।

इसके अपवाद -

कुटादि ऊकारान्त धातु - चूँकि कुटादि धातुओं से परे आने वाला स्य प्रत्यय गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् सूत्र से ङिद्वत् होता है, अतः इसके परे होने पर नू, धू, इन कुटादि धातुओं को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण न करके अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से उवङ् ही कीजिये -

नू + इष्यति - नुव् + इष्यति = नुविष्यति
धू + इष्यति - धुव् + इष्यति = धुविष्यति

ब्रू धातु - ब्रुवो वचिः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर 'ब्रू' धातु को 'वच्' आदेश होता है - वच् + स्यति - सन्धि करके = वक्ष्यति।

सन्धि करने की विधि आगे अनिट् हलन्त धातुओं में देखिये।

वेट् ऊकारान्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

हम जानते हैं कि ऊकारान्त धातुओं में, सारे धू धातु, अदादिगण का सू धातु, दिवादिगण का सू धातु, ये वेट् हैं। अतः इनसे -

अनिट् प्रत्यय लगने पर	**सेट् प्रत्यय लगने पर**
सू + स्यति = सोष्यति	सू + इष्यति = सविष्यति
धू + स्यति = धोष्यति	धू + इष्यति = धविष्यति

सेट् ऋकारान्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

ध्यान रहे कि ह्रस्व ऋकारान्त धातुओं में स्वृ धातु वेट् होता है। शेष ह्रस्व ऋकारान्त धातु 'ऋद्धनोः स्ये' सूत्र से सेट् होते हैं।

इन्हें सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके -

कृ + इष्यति - कर् + इष्यति = करिष्यति

धृ + इष्यति - धर् + इष्यति = धरिष्यति
भृ + इष्यति - भर् + इष्यति = भरिष्यति बनाइये।

विशेष वृङ्, वृञ् धातु -

धातुओं के अन्तिम ऋ को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - वृ + इष्यति - वर् + इष्यति -

वॄतो वा - वृङ् धातु, वृञ् धातु, तथा सारे ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाले, इट् को विकल्प से दीर्घ होता है। अतः वृङ् धातु, वृञ् धातु, तथा सारे दीर्घ ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाले 'इट्' को विकल्प से दीर्घ कर दीजिये। जैसे -

वृङ् + इष्यते - वर् + इष्यते = वरिष्यते / वरीष्यते
वृञ् + इष्यते - वर् + इष्यति = वरिष्यति / वरीष्यति

वेट् ऋकारान्त स्वृ धातु

इसमें सेट् अनिट्, दोनों ही प्रकार के प्रत्यय लग सकते हैं।

सेट् प्रत्यय लगने पर - स्वृ + इष्यति / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - स्वर् + इष्यति = स्वरिष्यति।

अनिट् प्रत्यय लगने पर - स्वृ + स्यति / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके तथा स् को मूर्धन्यादेश करके - स्वर् + स्यति = स्वर्ष्यति।

दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

ध्यान रहे कि दीर्घ ॠकारान्त सारे धातु तो सेट् ही होते हैं। अतः दीर्घ ॠकारान्त धातुओं में, सेट् प्रत्यय ही लगाइये। इन प्रत्ययों के परे होने पर, इन धातुओं के अन्तिम ॠ को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके अर् बनाइये तथा ऊपर कहे गये 'वॄतो वा' सूत्र से सारे दीर्घ ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाले 'इट्' को विकल्प से दीर्घ कर दीजिये। जैसे -

तॄ + इष्यति - तर् + इष्यति = तरिष्यति / तरीष्यति
शॄ + इष्यति - शर् + इष्यति = शरिष्यति / शरीष्यति
जॄ + इष्यति - जर् + इष्यति = जरिष्यति / जरीष्यति
गॄ + इष्यति - गर् + इष्यति = गरिष्यति / गरीष्यति
आदि।

यह अजन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

अब हम हलन्त धातुओं के रूप बनायें -

२. सेट् हलन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

हलन्त धातुओं के रूप बनाने के लिये पहिले हम उपधा को जानें -

अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा - किसी भी शब्द के अन्तिम वर्ण के ठीक पहिले वाला वर्ण उपधा कहलाता है। जैसे चित् में अन्तिम वर्ण त् है, उसके ठीक पूर्व वाला 'इ' उपधा है। मुद् में अन्तिम वर्ण 'द्' है, उसके ठीक पूर्व वाला 'उ' उपधा है। वृष् में अन्तिम वर्ण ष् है, उसके ठीक पूर्व वाला ऋ उपधा है।

किसी भी हलन्त धातु को देखते ही यह जान लेना चाहिये कि उसमें उपधा क्या है ?

ऐसे धातु जिनकी उपधा में लघु 'अ' हो वे धातु अदुपध धातु कहलाते हैं। जैसे - हन्, अज् आदि। जिनकी उपधा में लघु 'इ' हो वे धातु इदुपध धातु कहलाते हैं। जैसे - भिद्, छिद्, चित्, लिख् आदि। जिनकी उपधा में लघु 'उ' हो वे धातु उदुपध धातु कहलाते हैं। जैसे - मुद्, क्षुद्, बुध्, आदि। जिनकी उपधा में लघु 'ऋ' हो वे धातु ऋदुपध धातु कहलाते हैं। जैसे - वृष्, कृष्, मृश्, आदि।

सेट् इदुपध, उदुपध, ऋदुपध धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

पुगन्तलघूपधस्य च - कित्, ङित्, गित् से भिन्न सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातु की उपधा में स्थित लघु इक् के स्थान पर गुण होता है। अर्थात् धातुओं की उपधा के लघु इ को 'ए', लघु उ को 'ओ, लघु ऋ को 'अर्' तथा लृ को अल् होता है। जैसे -

सेट् इदुपध धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के 'इ' को 'ए' गुण करके -

लिख्	+	इष्यति	-	लेख्	+	इष्यति	=	लेखिष्यति
मिद्	+	इष्यते	-	मेद्	+	इष्यते	=	मेदिष्यते
चित्	+	इष्यति	-	चेत्	+	इष्यति	=	चेतिष्यति आदि।

इसके अपवाद - कुटादि इदुपध डिप् धातु

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् - ध्यान रहे कि कुटादि धातुओं से परे आने वाले ञित्, णित् से भिन्न प्रत्यय ङित्वत् माने जाते हैं। अतः इनसे परे आने वाले स्य प्रत्यय के ङित्वत् होने के कारण, इनकी उपधा के 'इक्' को क्ङिति च सूत्र

से गुणनिषेध होता है। अतः डिप् + इष्यति = डिपिष्यति।

विज् धातु - विज इट् - तुदादि गण के विज् धातु से परे आने वाले सारे सेट् प्रत्यय ङित्वत् माने जाते हैं। अतः विज् धातु की उपधा के इक् को क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध होता है। जैसे - उद्विज् + इष्यति = उद्विजिष्यति।

सेट् उदुपध धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के 'उ' को 'ओ' गुण करके -

मुद् + इष्यते - मोद् + इष्यते = मोदिष्यते
प्लुष् + इष्यति - प्लुष् + इष्यति = प्लोषिष्यति

इसके अपवाद - कुटादि उदुपध धातु - 'गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्' सूत्र से 'स्य' के ङित्वत् होने के कारण कुटादि धातुओं की उपधा को गुणनिषेध होकर - कुट् + इष्यति = कुटिष्यति।

इसी प्रकार उपधा को गुण किये बिना पुट् कुच् गुज्, गुड्, छुर् स्फुट् मुट् त्रुट् तुट् चुट् छुट्, जुट् लुठ् कुड् पुड् घुट् तुड् थुड् स्थुड् स्फुर् स्फुल् स्फुड् चुड् व्रुड् क्रुड् गुर् इन कुटादि धातुओं के रूप बनाइये।

गुह् धातु - ऊदुपधाया गोहः - गुह् धातु की उपधा के 'उ' को गुण न होकर दीर्घ होता है, अजादि प्रत्यय परे होने पर।

गुह् + इष्यते - गूह् + इष्यते = गूहिष्यते।

सेट् ऋदुपध धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के 'ऋ' को 'अर्' गुण करके -

वृष् + इष्यति - वर्ष् + इष्यति = वर्षिष्यति
हृष् + इष्यति - हर्ष् + इष्यति = हर्षिष्यति

इसके अपवाद - कुटादि धातु -

'गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्' सूत्र से 'स्य' प्रत्यय के ङित्वत् होने के कारण कुटादि धातुओं की उपधा को गुणनिषेध होकर -

कृड् + इष्यति - कृड् + इष्यति = कृडिष्यति
मृड् + इष्यति - मृड् + इष्यति = मृडिष्यति

इदुपध, उदुपध, ऋदुपध को छोड़कर, शेष सेट् हलन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

पहिले कुछ विशिष्ट सेट् हलन्त धातुओं का विचार करें -

१. **ग्रह् धातु - ग्रहोऽलिटि दीर्घः** - ग्रह् धातु, से परे आने वाले इट् को दीर्घ होता है, लिट् को छोड़कर। ग्रह् + इष्यति - ग्रह् + ईष्यति = ग्रहीष्यति।

इसी प्रकार ग्रहीष्यतः, ग्रहीष्यन्ति आदि पूरे रूप बनाइये।

२. **व्यच् धातु - हम जानते हैं कि 'व्यचेः कुटादित्वमनसीति वक्तव्यम्'** इस वार्तिक से व्यच् धातु से परे आने वाले 'अस्' से भिन्न सारे प्रत्यय ङिद्वत् होते हैं।

फल यह होता है कि व्यच् धातु से परे आने वाला स्य प्रत्यय जब ङिद्वत् होता है, तब व्यच् धातु को **ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च** सूत्र से सम्प्रसारण हो जाता है। व्यच् के य' को सम्प्रसारण करके 'इ' होता है - व्यच् + इष्यति - विच् + इष्यति = विचिष्यति।

३. **अस् धातु - अस्तेर्भूः** - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अस् धातु को भू आदेश होता है। अस् + इष्यति - भू + इष्यति = भविष्यति।

४. **अज् धातु - अजेर्व्यघञपोः**- घञ्, अप् को छोड़कर शेष सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर 'अज्' धातु को 'वी' आदेश होता है।

अज् + इष्यति - वी + इष्यति - सार्वधातुकार्ध. से गुण होकर = वेष्यति।

५. **चक्ष् धातु - चक्षिङ् ख्याञ्**- सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर 'चक्ष्' धातु को 'ख्या' आदेश होता है। ख्या आदेश होने पर इसके रूप आकारान्त धातुओं के समान ख्या - ख्यास्यति आदि बनाइये।

शेष सेट् हलन्त धातु

इन्हें कुछ मत कीजिये। यथा -

वद्	+	इष्यति	-	वद्	+	इष्यति	=	वदिष्यति
मील्	+	इष्यति	-	मील्	+	इष्यति	=	मीलिष्यति
मूष्	+	इष्यति	-	मूष्	+	इष्यति	=	मूषिष्यति
वद्	+	इष्यति	-	वद्	+	इष्यति	=	वदिष्यति
पठ्	+	इष्यति	-	वद्	+	इष्यति	=	पठिष्यति आदि।

हलन्त अनिट् धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

अब हमारे सामने हलन्त अनिट् धातु बचे हैं, जिनकी संख्या १०२ गिनाई गई है, उनके रूप बनाना है। इनके सामने अनिट् स्य से बने हुए सकारादि

प्रत्यय ही बैठेंगे।

इनके अलावा ८ रधादि धातु, निर् + कुष् धातु तथा २३ ऊदित् धातु जो कि वेट् हैं, बचे हैं, उनके रूप भी बनाना है। इनके सामने सेट् तथा अनिट् में से कोई भी प्रत्यय बैठ सकते हैं।

इनके अलावा पृष्ठ ३५ - ३६ पृष्ठ पर दी हुई 'स्य' प्रत्यय की विशेष इडागम व्यवस्था को देखिये। वहाँ जिन धातुओं को जिस प्रकार इडागम करना कहा गया है, ठीक वैसे ही करें।

अत्यावश्यक - अनिट् प्रत्यय परे होने पर, यह ध्यान रखें कि जिन धातुओं के बीच में परसवर्ण होकर वर्ग के पञ्चमाक्षर आ गये हों, उन्हें आप वापस अनुस्वार बनाकर ही कार्य शुरू करें।

जैसे - भञ्ज् + स्यति को भंज् + स्यति बना लें / अञ्ज् + स्यति को अंज् + स्यति बना लें / सञ्ज् + स्यति को संज् + स्यति बना लें।

पहिले उन हलन्त अनिट् धातुओं के रूप दे रहे हैं, जिनके अन्त में वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ व्यञ्जन हैं। यह ध्यान रहे कि अङ्गकार्य करने के बाद ही सन्धिकार्य किये जायें।

धातु + प्रत्यय	अङ्गादि कार्य करने पर -	सन्धि कार्य करने पर बना हुआ धातुरूप

कवर्गान्त धातु

क् ख् ग् घ् को 'खरि च' सूत्र से चर्त्व करके 'क्' बनाइये तथा प्रत्यय के 'स्' को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

शक् + स्यति - शक् + ष्यति = शक्ष्यति

(प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ वर्णों को जब भी वर्ग का प्रथमाक्षर बनाया जाता है तब इसे चर्त्व करना कहा जाता है।)

चवर्गान्त धातु

अनिट् चकारान्त धातु - सकारादि प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्त में आने वाले 'च्' को चोः कुः सूत्र से 'क्' बनाइये। प्रत्यय के 'स्' को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से 'ष्' बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

पच् + स्यति - पक् + स्यति - पक् + ष्यति - पक्ष्यति

मुच् + स्यति - मोक् + स्यति - मोक् + ष्यति - मोक्ष्यति

रिच् + स्यति - रेक् + स्यति - रेक् + ष्यति - रेक्ष्यति
वच् + स्यति - वक् + स्यति - वक् + ष्यति - वक्ष्यति
विच् + स्यति - वेक् + स्यति - वेक् + ष्यति - वेक्ष्यति
सिच् + स्यति - सेक् + स्यति - सेक् + ष्यति - सेक्ष्यति

इसका अपवाद - वेट् व्रश्च् धातु -

यह धातु वेट् है। इडागम न होने पर व्रश्च् के रूप इस प्रकार बनाइये-

व्रश्च् + स्यति - 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - व्रच् + स्यति / अब अन्त में आने वाले 'च्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - व्रष् + स्यति/ 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - व्रक् + स्यति / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - व्रक् + ष्यति = व्रक्ष्यति।

इडागम होने पर व्रश्च् के रूप इस प्रकार बनाइये -

व्रश्च् + इष्यति = व्रश्चिष्यति।

अनिट् छकारान्त धातु - सकारादि प्रत्यय परे होने पर छकारान्त धातु के अन्त में आने वाले 'छ्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये। प्रच्छ् + स्यति - प्रष् + स्यति / उसके बाद 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाइयें। प्रक् + स्यति / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - प्रक् + ष्यति = प्रक्ष्यति।

अनिट् जकारान्त धातु - अन्त में आने वाले 'ज्' को पहिले 'चोः कुः' सूत्र से कुत्व करके 'ग्' बनाइये। उसके बाद उस 'ग्' को 'खरि च' सूत्र से उसी कवर्ग का प्रथमाक्षर 'क्' बनाइये। प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाइये। यदि धातु में अनुस्वार हो तब सबसे अन्त में 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' से उस अनुस्वार को परसवर्ण कीजिये।

त्यज् + स्यति - त्यग् + स्यति - त्यक् + ष्यति - त्यक्ष्यति
निज् + स्यति - नेग् + स्यति - नेक् + ष्यति - नेक्ष्यति
भज् + स्यति - भग् + स्यति - भक् + ष्यति - भक्ष्यति
भञ्ज् + स्यति - भंग् + स्यति - भङ्क् + ष्यति - भङ्क्ष्यति
भुज् + स्यति - भोग् + स्यति - भोक् + ष्यति - भोक्ष्यति
रुज् + स्यति - रोग् + स्यति - रोक् + ष्यति - रोक्ष्यति

रञ्ज् + स्यति - रंग् + स्यति - रङ्क् + ष्यति - रङ्क्ष्यति
विज् + स्यति - वेग् + स्यति - वेक् + ष्यति - वेक्ष्यति
स्वञ्ज् + स्यते - स्वंग् + स्यते - स्वङ्क् + ष्यते - स्वङ्क्ष्यते
सञ्ज् + स्यति - संग् + स्यति - सङ्क् + ष्यति - सङ्क्ष्यति
यज् + स्यति - यग् + स्यति - यक् + ष्यति - यक्ष्यति
युज् + स्यति - योग् + स्यति - योक् + ष्यति - योक्ष्यति

विशेष जकारान्त मस्ज् धातु -

मस्जिनशोर्झलि - मस्ज् तथा नश् धातु को झलादि प्रत्यय अर्थात् अनिट् स्य प्रत्यय, परे होने पर नुम् का आगम होता है। मस्ज् + स्यति - मंस्ज् + स्यति / 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - मंज् + स्यति / ज् को चोः कुः से कुत्व करके - मंग् + स्यति / ग् को खरि च से चर्त्व करके - मंक् + स्यति / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - मंक् + ष्यति = मंक्ष्यति / अनुस्वार को 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' से परसवर्ण करके = मंङ्क्ष्यति।

विशेष जकारान्त सृज् धातु -

सृजिदृशोर्झल्यमकिति - सृज् तथा दृश् इन दो अनिट् ऋदुपध धातुओं को झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर अम् का आगम होता है। अम् का आगम करके इनकी उपधा के ऋ को र बनाइये।

सृज् + स्यति - स्रज् + स्यति = स्रक्ष्यति।

विशेष जकारान्त भ्रस्ज् धातु -

भ्रस्जो रोपधयोः रमन्यतरस्याम् - आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर भ्रस्ज् धातु के 'र्' तथा उपधा के स्थान पर, विकल्प से 'रम्' आगम होता है।

'रम्' आगम होकर भ्रस्ज् को भर्ज् हो जाता है - भ्रस्ज् + स्यति - भर्ज् + स्यति = भर्क्ष्यति।

भ्रस्ज् के स्थान पर भ्रस्ज् ही रहने पर - भ्रस्ज् + स्यति - 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - भ्रज् + स्यति = भ्रक्ष्यति।

वेट् अञ्ज् धातु -

इडागम न होने पर - अञ्ज् + स्यति = अङ्क्ष्यति।

इडागम होने पर - अञ्ज् + इष्यति = अञ्जिष्यति।

वेट् मृज् धातु - मृजेर्वृद्धिः - मृज् धातु के इक् के स्थान पर वृद्धि होती है।

इडागम न होने पर - मृज् + स्यति - मार्ज् + स्यति / अब अन्त में आने वाले 'ज्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - मार्ष् + स्यति / 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - मार्क् + स्यति / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्ययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - मार्क् + ष्यति = मार्क्ष्यति।

इडागम होने पर - मृज् + इष्यति / वृद्धि करके = मार्जिष्यति।

तवर्गान्त धातु

सकारादि प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्त में आने वाले, त् थ् द् ध् को 'खरि च' सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर त् बनाइये प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये।

अनिट् दकारान्त धातु -

अद्	+	स्यति	-	अद्	+	स्यति	-	अत्	+	स्यति	-	अत्स्यति
क्षुद्	+	स्यति	-	क्षोद्	+	स्यति	-	क्षोत्	+	स्यति	-	क्षोत्स्यति
खिद्	+	स्यति	-	खेद्	+	स्यति	-	खेत्	+	स्यति	-	खेत्स्यति
छिद्	+	स्यति	-	छेद्	+	स्यति	-	छेत्	+	स्यति	-	छेत्स्यति
तुद्	+	स्यति	-	तोद्	+	स्यति	-	तोत्	+	स्यति	-	तोत्स्यति
नुद्	+	स्यति	-	नोद्	+	स्यति	-	नोत्	+	स्यति	-	नोत्स्यति
पद्	+	स्यते	-	पद्	+	स्यते	-	पत्	+	स्यते	-	पत्स्यते
भिद्	+	स्यति	-	भेद्	+	स्यति	-	भेत्	+	स्यति	-	भेत्स्यति
विद्	+	स्यते	-	वेद्	+	स्यते	-	वेत्	+	स्यते	-	वेत्स्यते
विद्	+	स्यते	-	वेद्	+	स्यते	=	वेत्	+	स्यते	-	वेत्स्यते
सद्	+	स्यति	-	सद्	+	स्यति	-	सत्	+	स्यति	-	सत्स्यति
शद्	+	स्यति	-	शद्	+	स्यति	-	शत्	+	स्यति	-	शत्स्यति
स्विद्	+	स्यति	-	स्वेद्	+	स्यति	-	स्वेत्	+	स्यति	-	स्वेत्स्यति
स्कन्द्	+	स्यते	-	स्कन्द्	+	स्यते	-	स्कन्त्	+	स्यते	-	स्कन्त्स्यते
हद्	+	स्यते	-	हद्	+	स्यते	-	हत्	+	स्यते	-	हत्स्यते

अनिट् धकारान्त धातु -

क्रुध्	+	स्यति	-	क्रोध्	+	स्यति	-	क्रोत्	+	स्यति	=	क्रोत्स्यति
क्षुध्	+	स्यति	-	क्षोध्	+	स्यति	-	क्षोत्	+	स्यति	=	क्षोत्स्यति
युध्	+	स्यते	-	योध्	+	स्यते	-	योत्	+	स्यते	=	योत्स्यते
रुध्	+	स्यति	-	रोध्	+	स्यति	-	रोत्	+	स्यति	=	रोत्स्यति
राध्	+	स्यति	-	राध्	+	स्यति	-	रात्	+	स्यति	=	रात्स्यति
व्यध्	+	स्यति	-	व्यध्	+	स्यति	-	व्यत्	+	स्यति	=	व्यत्स्यति
साध्	+	स्यति	-	साध्	+	स्यति	-	सात्	+	स्यति	=	सात्स्यति
शुध्	+	स्यति	-	शोध्	+	स्यति	-	शोत्	+	स्यति	=	शोत्स्यति
सिध्	+	स्यति	-	सेध्	+	स्यति	-	सेत्	+	स्यति	=	सेत्स्यति

विशेष अनिट् धकारान्त बुध्, बन्ध् धातु -

जिन धातुओं के आदि में 'ज' को छोड़कर वर्ग का कोई सा भी तृतीयाक्षर हो, तथा अन्त में वर्ग का चतुर्थाक्षर हो, उस धातु के आदि में स्थित तृतीयाक्षर (बश्) को, सकारादि प्रत्यय परे होने पर 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर (भष्) बना दीजिये। उसके बाद इनके अन्तिम 'ध्' को 'खरि च' सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर 'त्' बनाइये। जैसे -

बुध्	+	स्यते	-	भोध्	+	स्यते	-	भोत्	+	स्यते	=	भोत्स्यते
बन्ध्	+	स्यति	-	भन्ध्	+	स्यति	-	भन्त्	+	स्यति	=	भन्त्स्यति

अनिट् नकारान्त धातु -

अपदान्त 'न्' को 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से अनुस्वार बनाइये। प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये।

मन्	+	स्यते	-	मन्	+	स्यते	-	मं	+	स्यते	=	मंस्यते

वेट् तवर्गान्त धातु - कृत्, चृत्, छृद्, तृद्, नृत् धातु -

सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृदनृतः - कृत्, चृत्, छृद्, तृद्, नृत् इन ५ धातुओं से परे आने वाले सेट् सकारादि आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है। अतः इनसे सेट् तथा अनिट् दोनों प्रकार के प्रत्यय लगाइये, तो इनके रूप इस प्रकार बनेंगे -

कृत्	+	स्यति	-	कर्तिष्यति	/	कर्त्स्यति
चृत्	+	स्यति	-	चर्तिष्यति	/	चर्त्स्यति

छृद्	+	स्यति	-	छर्दिष्यति	/	छत्स्र्यति
तृद्	+	स्यति	-	तर्दिष्यति	/	तत्स्र्यति
नृत्	+	स्यति	-	नर्तिष्यति	/	नत्स्र्यति

वृत्, वृध्, शृध्, स्यन्द् धातु -

न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः - वृत्, वृध्, शृध्, स्यन्द् ये धातु यद्यपि आत्मनेपदी हैं किन्तु सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ये धातु परस्मैपदी हो जाते हैं।

जब ये धातु परस्मैपदी हो जाते हैं तब इनसे परे आने वाले सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय को इडागम नहीं होता है। अतः इनसे परस्मैपद में अनिट् प्रत्यय लगाइये तथा आत्मनेपद में सेट् प्रत्यय लगाइये। यथा -

		परस्मैपद		आत्मनेपद
वृत्	-	वत्स्र्यति	/	वर्तिष्यते
शृध्	-	शत्स्र्यति	/	शर्धिष्यते
वृध्	-	वत्स्र्यति	/	वर्धिष्यते
स्यन्द्	-	स्यन्त्स्यति	/	स्यन्दिष्यते

वेट् धकारान्त षिध् धातु - इडागम न होकर - सेत्स्यति / इडागम होकर - सेधिष्यति।

वेट् धकारान्त रध् धातु - इडागम न होकर - रत्स्यति / इडागम होकर - रधिष्यति।

वेट् क्लिद् धातु - इससे इडागम न होने पर - क्लेत्स्यति / इडागम होने पर - क्लेदिष्यति बनाइये।

पवर्गान्त धातु

अनिट् पकारान्त धातु - प्, फ्, ब्, भ्, को 'खरि च' सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर प् बनाइये। प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये।

आप्	+	स्यति	-	आप्	+	स्यति	=	आप्स्यति
छुप्	+	स्यति	-	छोप्	+	स्यति	=	छोप्स्यति
क्षुप्	+	स्यति	-	क्षोप्	+	स्यति	=	क्षोप्स्यति
तप्	+	स्यति	-	तप्	+	स्यति	=	तप्स्यति
तिप्	+	स्यते	-	तेप्	+	स्यते	=	तेप्स्यते

लिप् + स्यति - लेप् + स्यति = लेप्स्यति
लुप् + स्यति - लोप् + स्यति = लोप्स्यति
वप् + स्यति - वप् + स्यति = वप्स्यति
शप् + स्यति - शप् + स्यति = शप्स्यति
स्वप् + स्यति - स्वप् + स्यति = स्वप्स्यति

विशेष अनिट् पकारान्त सृप् धातु -

अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् - अनिट् ऋदुपध धातुओं को झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर विकल्प से अम् का आगम होता है।

अनिट् स्य प्रत्यय झलादि अकित् है। सृप्, स्पृश्, मृश्, कृष् धातु अनिट् ऋदुपध हैं। तृप्, दृप् धातु वेट् ऋदुपध हैं।

अनिट् स्य प्रत्यय परे होने पर, अम् का आगम करके इनकी उपधा के 'ऋ' को 'र' बनाइये।

अम् का आगम होने पर - सृप् + स्यति - स्रप् + स्यति = स्रप्स्यति।

अम् का आगम न होने पर इसकी उपधा के ऋ को 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से गुण करके अर् बनाइये। सृप् + स्यति - सर्प् + स्यति = सर्प्स्यति।

अनिट् भकारान्त धातु -

यभ् + स्यति - यप् + स्यति = यप्स्यति
रभ् + स्यते - रप् + स्यते = रप्स्यते
लभ् + स्यते - लप् + स्यते = लप्स्यते

अनिट् मकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले न्, म्, को 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से अनुस्वार बनाइये।

नम् + स्यति - नम् + स्यति - नं + स्यति = नंस्यति
यम् + स्यति - यम् + स्यति - यं + स्यति = यंस्यति
रम् + स्यते - रम् + स्यते - रं + स्यते = रंस्यते
संगम् + स्यते - संगम् + स्यते - संगं + स्यते = संगंस्यते

वेट् पवर्गान्त धातु -

दिवादिगण के वेट् तृप्, दृप् धातु -

अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् - अनिट् ऋदुपध धातुओं को झलादि

अकित् प्रत्यय परे होने पर विकल्प से अम् का आगम होता है।

अनिट् स्य प्रत्यय झलादि अकित् है। तृप्, दृप् धातु वेट् ऋदुपध हैं। अनिट् स्य प्रत्यय परे होने पर, अम् का आगम करके इनकी उपधा के 'ऋ' को 'र' बनाइये।

ध्यान रहे कि सेट् 'स्य' प्रत्यय परे होने पर अम् का आगम कदापि न किया जाय। इस प्रकार इनके तीन रूप बनेंगे -

तृप् + स्यति - अम् का आगम करके तथा अनिट् प्रत्यय लगाकर - त्रप् + स्यति = त्रप्स्यति।

तृप् + स्यति - अम् का आगम न करके, पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के ऋ को गुण करके तथा अनिट् प्रत्यय लगाकर - तर्प् + स्यति = तर्प्स्यति।

तृप् + इष्यति - अम् का आगम न करके पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के ऋ को गुण करके तथा सेट् प्रत्यय लगाकर - तर्प् + इष्यति = तर्पिष्यति। ठीक इसी प्रकार दृप् धातु से द्रप्स्यति / दर्प्स्यति / दर्पिष्यति बनाइये।

वेट् त्रप् धातु - इससे इडागम न होने पर - त्रप्स्यते / इडागम होने पर - त्रपिष्यते बनाइये।

वेट् गुपू धातु - इसे 'आयादय आर्धधातुके वा' सूत्र से स्वार्थ में 'आय' प्रत्यय विकल्प से होता है - गुप् + आय - गोपाय। 'आय' लग जाने पर, यह धातु अनेकाच् हो जाने से सेट् हो जाता है।

'आय' प्रत्यय लगाकर, सेट् प्रत्यय लगने पर - गुप् + आय - गोपाय + इष्यति / अतो लोपः से 'अ' का लोप होकर - गोपाय् + इष्यति = गोपायिष्यति।

'आय' प्रत्यय न लगाकर, सेट् प्रत्यय लगने पर - गुप् - गोप् + इष्यति = गोपिष्यति / 'आय' प्रत्यय न लगाकर, अनिट् प्रत्यय लगने पर - गुप् - गोप् + स्यति = गोप्स्यति।

वेट् आत्मनेपदी कृपू धातु -

कृपो रो लः - कृप् धातु के 'ऋ' के स्थान पर 'लृ' आदेश होता है - कृप् - क्लृप् / क्लृप् + इष्यते - पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके - कल्प् + इष्यते = कल्पिष्यते / इडागम न होने पर - कल्प् + स्यते = कल्प्स्यते।

वेट् क्षम् धातु - इडागम न होने पर - क्षंस्यते / इडागम होने पर क्षमिष्यते।

ऊष्मान्त धातु

अनिट् शकारान्त धातु - सकारादि प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले श्, को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये। इस 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाइये तथा प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

क्रुश् + स्यति - क्रोष् + स्यति - क्रोक् + ष्यति = क्रोक्ष्यति
दंश् + स्यति - दंष् + स्यति - दंक् + ष्यति = दंक्ष्यति
दिश् + स्यति - देष् + स्यति - देक् + ष्यति = देक्ष्यति
रिश् + स्यति - रेष् + स्यति - रेक् + ष्यति = रेक्ष्यति
रुश् + स्यति - रोष् + स्यति - रोक् + ष्यति = रोक्ष्यति
लिश् + स्यति - लेष् + स्यति - लेक् + ष्यति = लेक्ष्यति
विश् + स्यति - वेष् + स्यति - वेक् + ष्यति = वेक्ष्यति

विशेष शकारान्त - दृश् धातु -

सृजिदृशोर्झल्यमकिति - सृज् तथा दृश् इन दो अनिट् ऋदुपध धातुओं को झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर अम् का आगम होता है। अम् का आगम करके इनकी उपधा के ऋ को र बनाइये।

दृश् + स्यति = द्रष् + स्यति - द्रक् + ष्यति = द्रक्ष्यति।

विशेष शकारान्त - स्पृश्, मृश् धातु -

अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् - अनिट् ऋदुपध धातुओं को झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर, विकल्प से अम् का आगम होकर, इनकी उपधा के 'ऋ' को 'र' होता है।

अनिट् स्य प्रत्यय झलादि अकित् है। सृप्, तृप्; दृप्, स्पृश्, मृश्, कृष्, धातु अनिट् ऋदुपध हैं।

इनमें से सृप्, तृप्, दृप् धातु पकारान्त वर्ग में बतला चुके हैं। स्पृश्, मृश् धातु, यहाँ बतला रहे हैं।

अम् का आगम होने पर - मृश् + स्यति - म्रश् + स्यति / 'श्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये - म्रष् + स्यति / इस 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाइये - म्रक् + स्यति / प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये - म्रक् + ष्यति / क् + ष् को

मिलाकर क्ष् बनाइये - म्रक्ष्यति।

अम् का आगम न होने पर इन धातुओं की उपधा के 'लघु ऋ' को 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से गुण करके अर् बनाइये।

मृश् + स्यति - मर्श् + स्यति = मर्क्ष्यति।

इसी प्रकार स्पृश् धातु से स्प्रक्ष्यति / स्पर्क्ष्यति बनाइये।

वेट् अश्, क्लिश् धातु -

इडागम न होने पर - अक्ष्यति / इडागम होने पर - अशिष्यति। क्लिशू धातु से - इडागम न होने पर - क्लेक्ष्यति / इडागम न होने पर - क्लेशिष्यति।

वेट् नश् धातु -

मस्जिनशोर्झलि - मस्ज् तथा नश् धातु से परे होने आने वाले झलादि प्रत्ययों को नुम् का आगम होता है - नश् + स्यति - नंश् + स्यति /

अब श् को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - नंष् + स्यति / 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - नंक् + स्यति / प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाकर - नंक् + ष्यति = नंक्ष्यति।

ध्यान रहे कि यदि हम नश् धातु से सेट् 'इष्यति' प्रत्यय लगायेंगे, तब यह नुमागम नहीं होगा। नश् + इष्यति = नशिष्यति।

अनिट् षकारान्त धातु -

सकारादि प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले ष् को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाइये। प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

त्विष् + स्यति - त्वेक् + स्यति - त्वेक् + ष्यति - त्वेक्ष्यति
तुष् + स्यति - तोक् + स्यति - तोक् + ष्यति - तोक्ष्यति
द्विष् + स्यति - द्वेक् + स्यति - द्वेक् + ष्यति - द्वेक्ष्यति
दुष् + स्यति - दोक् + स्यति - दोक् + ष्यति - दोक्ष्यति
पुष् + स्यति - पोक् + स्यति - पोक् + ष्यति - पोक्ष्यति
पिष् + स्यति - पेक् + स्यति - पेक् + ष्यति - पेक्ष्यति
विष् + स्यति - वेक् + स्यति - वेक् + ष्यति - वेक्ष्यति
शिष् + स्यति - शेक् + स्यति - शेक् + ष्यति - शेक्ष्यति
शुष् + स्यति - शोक् + स्यति - शोक् + ष्यति - शोक्ष्यति

शिलष् + स्यति - श्लेक् + स्यति - श्लेक् + ष्यति - श्लेक्ष्यति

विशेष षकारान्त कृष् धातु -

अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् सूत्र से झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर विकल्प से अम् का आगम होने पर - कृष् - क्रष् - क्रक्ष्यति।

अम् का आगम न होने पर उपधा के 'लघु ऋ' को 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से गुण करके - कृष् - कर्ष् - कर्क्ष्यति।

वेट् षकारान्त निर् उपसर्गपूर्वक कुष् धातु -

इडागम होने पर - निष्कुष् + इष्यति = निष्कोषिष्यति

इडागम न होने पर - निष्कुष् + स्यति = निष्कोक्ष्यति

वेट् षकारान्त अक्षू, तक्षू, त्वक्षू धातु -

इडागम न होने पर - अक्ष् + स्यति - 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'क्' का लोप करके - अष् + स्यति / 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाइये - अक् + स्यति / प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये। अक् + ष्यति / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये = अक्ष्यति / इडागम होने पर अक्ष् + इष्यति = अक्षिष्यति।

इसी प्रकार तक्ष् से तक्ष्यति, तक्षिष्यति / त्वक्ष् से त्वक्ष्यति, त्वक्षिष्यति बनाइये।

अनिट् सकारान्त धातु -

स् के बाद सकारादि प्रत्यय आने पर विचार कीजिये कि वह प्रत्यय यदि सार्वधातुक है तब तो आप कुछ मत कीजिये। यथा - आस् + से = आस्से।

यदि सकारादि प्रत्यय आर्धधातुक है तब आप सः स्यार्धधातुके सूत्र से अङ्ग के अन्तिम स् को त् बना दीजिये। यथा -

वस् + स्यति - वत् + स्यति = वत्स्यति

घस् + स्यति - घत् + स्यति = घत्स्यति

अनिट् हकारान्त धातु - हकारान्त धातुओं के चार वर्ग बनाइये -

१. अनिट् गकारादि हकारान्त धातु - इन धातुओं के बाद सकारादि प्रत्यय आने पर, इन धातुओं के अन्तिम 'ह्' को, 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाइये - गाह् + स्यते - गाढ् + स्यते / अब धातु के आदि में जो वर्ग का तृतीयाक्षर 'ग' है, उसे **'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः'** सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर

'घ' बना दीजिये - घाढ् + स्यते / अब 'षढोः कः सि' सूत्र से, 'ढ्' को 'क्' बनाइये प्रत्यय के स् को ष् बनाइये। प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये। जैसे -

इडागम न होने पर -

गाह्	+	स्यते	-	गाढ्	+	स्यते	-	घाक्	+	ष्यते	-	घाक्ष्यते
गुह्	+	स्यते	-	गुढ्	+	स्यते	-	घोक्	+	ष्यते	-	घोक्ष्यते
गृह्	+	स्यते	-	गृढ्	+	स्यते	-	घर्क्	+	ष्यते	-	घर्क्ष्यते

ध्यान दें कि आदि के तृतीयाक्षर 'बश्' अर्थात् द, ब, ग को तभी चतुर्थाक्षर ध, भ, घ अर्थात् 'भष्' बनाइये जब स्य प्रत्यय अनिट् हो।

जब स्य प्रत्यय सेट् होगा, तब धातु के आदि में स्थित द, ब, ग को कभी भी वर्ग के चतुर्थाक्षर ध, भ, घ नहीं होंगे। अतः इनके रूप इस प्रकार बनेंगे-

इडागम होने पर -

गाह्	+	इष्यते	-	गाह्	+	इष्यते	-	गाह्	+	इष्यते	-	गाहिष्यते
गुह्	+	इष्यते	-	गूह्	+	इष्यते	-	गूह्	+	इष्यते	-	गूहिष्यते
गृह्	+	इष्यते	-	गर्ह्	+	इष्यते	-	गर्ह्	+	इष्यते	-	गर्हिष्यते

२. अनिट् दकारादि हकारान्त धातु, जैसे - दुह्, दिह्, द्रुह् आदि -

इनके अन्तिम ह् को 'दादेर्धातोर्घः' सूत्र से घ् बनाइये। दुह् - दोह् + स्यति - दोघ् + स्यति / 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से धातु के 'आदि द' को उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर 'ध्' बनाइये - दोघ् + स्यति - धोघ् + स्यति / 'खरि च' सूत्र से घ् को चर्त्व कीजिये - धोक् + स्यति / प्रत्यय के स् को षत्व करके - धोक् + ष्यति = धोक्ष्यति।

दुह्	-	दोघ्	+	स्यति	-	धोक्	+	ष्यति	=	धोक्ष्यति
दह्	-	दघ्	+	स्यति	-	धक्	+	ष्यति	=	धक्ष्यति
दिह्	-	देघ्	+	स्यति	-	धेक्	+	ष्यति	=	धेक्ष्यति
द्रुह्	-	द्रोघ्	+	स्यति	-	ध्रोक्	+	ष्यति	=	ध्रोक्ष्यति

३. नह् धातु - नहो धः - नह् धातु के ह् को ध् होता है, झल् परे होने पर तथा पदान्त में। इस सूत्र से नह् के अन्तिम 'ह्' को 'ध्' बनाइये। ध् को खरि च से चर्त्व करके त् बनाइये। प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये-

नह्	+	स्यति	-	नध्	+	स्यति	-	नत्	+	स्यति	=	नत्स्यति

४. इन आठ हकारान्त धातुओं से बचे हुए हकारान्त धातु -

इनके बाद सकारादि प्रत्यय आने पर इनके अन्तिम 'ह्' को हो ढः सूत्र से ढ् बनाकर, षढोः कः सि सूत्र से 'क्' बनाइये। प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

रुह्	+	स्यति	-	रोढ्	+	स्यति	-	रोक्	+	ष्यति	-	रोक्ष्यति
लिह्	+	स्यति	-	लेढ्	+	स्यति	-	लेक्	+	ष्यति	-	लेक्ष्यति
मिह्	+	स्यति	-	मेढ्	+	स्यति	-	मेक्	+	ष्यति	-	मेक्ष्यति
वह्	+	स्यति	-	वढ्	+	स्यति	-	वक्	+	ष्यति	-	वक्ष्यति

वेट् हकारान्त धातु -

इडागम न होने पर -

द्रुह्	+	स्यति	-	ध्रोढ्	+	स्यति	-	ध्रोक्	+	ष्यति	=	ध्रोक्ष्यति
मुह्	+	स्यति	-	मोढ्	+	स्यति	-	मोक्	+	ष्यति	=	मोक्ष्यति
स्निह्	+	स्यति	-	स्नेढ्	+	स्यति	-	स्नेक्	+	ष्यति	=	स्नेक्ष्यति
स्नुह्	+	स्यति	-	स्नोढ्	+	स्यति	-	स्नोक्	+	ष्यति	=	स्नोक्ष्यति
तृह्	+	स्यति	-	तर्ढ्	+	स्यति	-	तर्क्	+	ष्यति	=	तर्क्ष्यति
स्तृह्	+	स्यति	-	स्तर्ढ्	+	स्यति	-	स्तर्क्	+	ष्यति	=	स्तर्क्ष्यति
बृह्	+	स्यति	-	बर्ढ्	+	स्यति	-	बर्क्	+	ष्यति	=	बर्क्ष्यति
तृंह्	+	स्यति	-	तृंढ्	+	स्यति	-	तृंक्	+	ष्यति	=	तृङ्क्ष्यति

इडागम होने पर -

द्रुह्	+	इष्यति	=	द्रोहिष्यति
मुह्	+	इष्यति	=	मोहिष्यति
स्निह्	+	इष्यति	=	स्नेहिष्यति
स्नुह्	+	इष्यति	=	स्नोहिष्यति
तृह्	+	इष्यति	=	तर्हिष्यति
स्तृह्	+	इष्यति	=	स्तर्हिष्यति
बृह्	+	इष्यति	=	बर्हिष्यति
तृंह्	+	इष्यति	=	तृंहिष्यति

यह भ्वादि से क्र्यादिगण तक के धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

५. चुरादिगण के धातु तथा णिजन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

चुरादिगण के प्रत्येक धातु से कोई भी प्रत्यय लगाने के पहिले स्वार्थिक णिच् प्रत्यय लगा देना चाहिये। णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद ही चुरादिगण के धातुओं में लृट् लकार के प्रत्यय लगाना चाहिये। जैसे - चुर् + णिच् = चोरि।

इसी प्रकार जब प्रेरणा अर्थ अर्थात् प्रयोजक व्यापार वाच्य हो तब किसी भी धातु से णिच् प्रत्यय लगा देना चाहिये। यहाँ भी णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद ही धातु से अन्य कोई प्रत्यय लगाना चाहिये।

इसका अर्थ यह हुआ कि यहाँ हमें दो कार्य करना पड़ते हैं -

१. धातु + णिच् को जोड़कर णिजन्त धातु बनाना।

२. णिजन्त धातु में लृट् लकार के प्रत्यय लगाना।

देखिये कि धातु + णिच् को जोड़ने के बाद ये जो णिजन्त धातु बनते हैं, ये सदा अनेकाच् इकारान्त धातु होते हैं। अनेकाच् होने के कारण ये सेट् ही होते हैं। इस प्रकार सारे णिजन्त धातु सेट् इकारान्त ही होते हैं। अतः इनके लृट् लकार के रूप उसी विधि से बनाइये जिस विधि से सेट् इकारान्त शी, डी, श्वि, श्रि आदि धातुओं के रूप बनाना पीछे बतलाया गया है।

अर्थात् इन धातुओं के अन्तिम 'इ' को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके 'ए' बनाइये - चोरि + इष्यति / चोरे + इष्यति / उसके बाद एचोऽयवायावः सूत्र से इस 'ए' को अयादेश करके 'अय्' बनाइये - चोरय् + इष्यति = चोरयिष्यति।

इसी प्रकार - चि + णिच् = चायि / चायि + इष्यति - चायय् + इष्यति = चाययिष्यति। इसी प्रकार सारे णिजन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाइये।

अब प्रसङ्गवश धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की संक्षिप्त विधि बतला रहे हैं। णिच् प्रत्यय लगाने की विस्तृत विधि णिजन्त प्रकरण में देखें -

आकारान्त धातुओं में णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -

अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ - ऋ धातु, ह्री धातु, ब्ली धातु री धातु, क्नूय् धातु, क्ष्मायी धातु तथा सभी आकारान्त धातुओं का पुक् को आगम होता है, णि परे होने पर।

जितने भी आकारान्त धातु हैं, उन्हें णिच् प्रत्यय परे होने पर, इस सूत्र

से पुक् का आगम कर दीजिए। णिच् प्रत्यय में ण्, च् की इत् संज्ञा करके 'इ' शेष बचाइये, तथा पुक् में उ, क्, की इत् संज्ञा करके प् शेष बचाइये।

दा + णिच् - दा + पुक् + इ - दापि = दापयिष्यति।
धा + णिच् - धा + पुक् + इ - धापि = धापयिष्यति।

एजन्त धातुओं में णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -

आदेच उपदेशेऽशिति - शित् से भिन्न प्रत्यय परे होने पर एजन्त अर्थात् ए, ओ, ऐ, औ से अन्त होने वाले धातुओं के अन्तिम एच् को आ आदेश होता है। यथा - ग्लै - ग्ला / ध्यै - ध्या आदि।

अतः अब ए ओ ऐ औ से अन्त होने वाले धातु भी आकारान्त बन गये। इसलिये णिच् प्रत्यय परे होने पर इन्हें भी आकारान्त मानकर '**अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ**' सूत्र से पुक् (प्) का आगम कर दीजिए -

ध्यै - ध्या - ध्यापि = ध्यापयिष्यति।
म्लै - म्ला - म्लापि = म्लापयिष्यति।

पुगागम के अपवाद - शो, छो, षो, ह्वे, व्ये, वे, पा धातु -

शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक् - शो - शा / छो - छा / सो - सा / ह्वे - ह्वा / व्ये - व्या / वे - वा / और पा इन सात आकारान्त धातुओं को पुक् (प्) का आगम न होकर युक् (य्) का आगम होता है -

शो - शा + युक् + णिच् - शायि = शाययिष्यति।
छो - छा + युक् + णिच् - छायि = छाययिष्यति।
सो - सा + युक् + णिच् - सायि = साययिष्यति।
ह्वे - ह्वा + युक् + णिच् - ह्वायि = ह्वाययिष्यति।
व्ये - व्या + युक् + णिच् - व्यायि = व्याययिष्यति।
वे - वा + युक् + णिच् - वायि = वाययिष्यति।
पा - पा + युक् + णिच् - पायि = पाययिष्यति।

पा रक्षणे धातु - लुगागमस्तु तस्य वक्तव्यः (वा.) - ध्यान दीजिये कि 'पा पाने' धातु को णिच् परे होने पर, युक् का आगम होता है किन्तु 'पा रक्षणे' धातु को लुक् का आगम होता है।

पा - पा + लुक् + णिच् - पालि = पालयिष्यति।

वा धातु - वो विधूनने जुक् - वा धातु का अर्थ यदि हवा झलना,

कँपाना हो तो उसे जुक् का आगम होता है -

वा - वा + जुक् + णिच् - वाजि = वाजयिष्यति।

ला धातु - लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहनिपातने - स्नेहनिपातन अर्थात् घी पिघलाना अर्थ में, ला धातु को लुक् का आगम विकल्प से होता है।

लुक् का आगम होने पर -

ला - ला + लुक् + णिच् - लालि = लालयिष्यति।

लुक् का आगम न होने पर 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये -

ला - ला + पुक् + णिच् - लापि = लापयिष्यति।

ली धातु इकारान्त वर्ग में बतला रहे हैं।

इकारान्त धातुओं से णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -

इनके अन्तिम इ, ई को णिच् परे होने पर अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके ऐ बनाइये तथा एचोऽयवायावः सूत्र से आय् आदेश कीजिये -

नी + णिच् - नै + इ - नाय् + इ - नायि = नाययिष्यति।

इसके अपवाद - वी धातु - प्रजने वीयतेः - इसका अर्थ यदि प्रजनन हो, तो इसे 'आ' अन्तादेश होता है।

प्रजनन अर्थ में - इस सूत्र से इसे 'आ' आदेश कीजिये और आकारान्त होने के कारण 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये -

वी - वा + पुक् + णिच् - वापि = वापयिष्यति।

प्रजनन अर्थ न होने पर - वी + णिच् / अचो ञ्णिति सूत्र से इ को वृद्धि करके - वै + इ / एचोऽयवायावः सूत्र से आव् आदेश करके - वाय् + इ - वायि = वाययिष्यति।

स्मि धातु - नित्यं स्मयतेः - स्मि धातु के अन्तिम इ को 'आ' अन्तादेश होता है। इस सूत्र से इसे 'आ' आदेश कीजिये और आकारान्त होने के कारण 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये -

विस्मि + णिच् - वि + स्मा + पुक् + णिच् - विस्मापि = विस्मापयिष्यति।

क्री, जि, अधि + इ धातु - क्रीङ्जीनां णौ - क्री, जि, अधि + इ धातु, इनके अन्तिम इ को 'आ' अन्तादेश होता है। इस सूत्र से इसे 'आ' आदेश

कीजिये और आकारान्त होने के कारण 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये -

क्री - क्रा + पुक् + णिच् - क्रापि = क्रापयिष्यति।
जि - जा + पुक् + णिच् - जापि = जापयिष्यति।
अधि + इ - अध्या + पुक् + णिच् - अध्यापि = अध्यापयिष्यति।

चि धातु - चिस्फुरोर्णौ - चि धातु तथा स्फुर् धातु के एच् के स्थान पर विकल्प से 'आ'होता है।

'आ' आदेश होने पर - चि + णिच् / अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके - चै + इ / चिस्फुरोर्णौ सूत्र से ऐ के स्थान पर 'आ' आदेश करके - चा + इ / आकारान्त होने के कारण 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से इसे पुक् का आगम करके - चाप् + इ - चापि = चापयिष्यति।

'आ' आदेश न होने पर - चि + णिच् / अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके चै + इ / एचोऽयवायावः सूत्र से आय् आदेश करके - चाय् + इ = चायि = चाययिष्यति।

ध्यान दीजिये कि 'चि' धातु दो हैं। एक स्वादिगण में तथा दूसरा चुरादिगण में।

चुरादिगण का चि धातु 'नान्ये मितोऽहेतौ' इस गणसूत्र से मित् होता है। अतः इससे जब पूर्ववत् चापि, चायि बन जायें तब इन्हें मितां ह्रस्वः सूत्र से ह्रस्व करके चपि, चयि बनाइये।

चापि - चपि = चपयिष्यति / चायि - चयि = चययिष्यति

स्फुर् धातु आगे बतलायेंगे।

भी धातु - बिभेतेर्हेतुभये - भी धातु के अन्त को विकल्प से 'आ' आदेश होता है, यदि प्रयोजक कर्ता से भय हो तो।

भीस्म्योर्हेतुभये - प्रयोजक कर्ता से भय होने पर, भी धातु तथा स्मि धातु से आत्मनेपद होता है।

भी धातु को 'आ' आदेश होने पर - इसे 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये -

भी - भा + णिच् + पुक् - भापि = भापयिष्यते।

भी धातु को 'आ' आदेश न होने पर -

भियो हेतुभये षुक् - जब कर्ता से भय हो, और आत्व न हो तब, 'भी' धातु को षुक् का आगम होता है।

भी - भी + णिच् + षुक् - भीषि = भीषयिष्यते।

अन्य किसी से भय होने पर -

यदि कर्ता से भय न होकर अन्य किसी से भय हो, तब धातु के अन्त को न तो 'आ' होता है, न पुक् का आगम होता है, न ही षुक् का आगम होता है। तब भी + णिच् / अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके भै + इ / एचोऽयवायाव: सूत्र से आय् आदेश करके - भाय् + इ = भायि = भाययिष्यति बनता है।

'कुञ्चिकया एनं भाययिष्यति' में डराने वाले से भय नहीं है, अपितु कुञ्चिका से भय है।

प्री धातु - धूञ्प्रीञोर्नुग्वक्तव्य: (वा.) - प्री, धू धातुओं को नुक् का आगम होता है।

प्री - प्री + नुक् + णिच् - प्रीणि = प्रीणयिष्यति

धू धातु उकारान्त वर्ग में बतला रहे हैं।

ली धातु - लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहनिपातने - ली धातु को घी बिलोने अर्थ में विकल्प से नुक् का आगम होता है। नुक् का आगम होने पर-

ली - ली + नुक् + णिच् - लीनि = लीनयिष्यति

विभाषा लीयते: - जब भी 'ली' धातु को गुण होकर 'ए' हो, तब उस 'ए' को विकल्प से 'आ' आदेश होता है।

नुक् का आगम न होने पर, विभाषा लीयते: से ली को 'आ' अन्तादेश करके 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये -

ली - ला + पुक् + णिच् = लापि - लापयिष्यति

नुक् का आगम न होने पर तथा 'आ' अन्तादेश न होने पर ई को अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके एचोऽयवायाव: सूत्र से आय् आदेश कीजिये -

ली + णिच् - लै + इ - लाय् + इ = लायि = लाययिष्यति

ह्री, ब्ली, री, धातु - इन्हें 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये तथा पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण कीजिये -

ह्री - ह्री + पुक् + णिच् - ह्रेपि = ह्रेपयिष्यति

ब्ली - ब्ली + पुक् + णिच् - ब्लेपि = ब्लेपयिष्यति

री - री + पुक् + णिच् - रेपि = रेपयिष्यति

इण् तथा इक् धातु - णौ गमिरबोधने - अबोधन अर्थ वाले इण् धातु को गम् आदेश होता है - इण् + णिच् - गम् + णिच् - गमि = गमयिष्यति।

बोधन अर्थ में गम् आदेश न होने पर - बोधन अर्थ में प्रति उपसर्ग पूर्वक 'इ' धातु से णिच् लगाने पर - प्रति + इ + णिच् / अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके - प्रति + ऐ + णिच् / एचोऽयवायाव: सूत्र से आय् आदेश करके - प्रति + आय् + इ / इको यणचि से यण् सन्धि करके - प्रत्याय् + इ = प्रत्यायि = प्रत्याययिष्यति।

इण्वदिक: - इण् धातु के समान इक् धातु को भी गम् आदेश होता है - इक् - गम् + णिच् - गमि = गमयिष्यति।

उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं से णिच् प्रत्यय कैसे लगायें - अचो ञ्णिति सूत्र से उ, ऊ को वृद्धि करके औ बनाइये तथा एचोऽयवायाव: सूत्र से आव् आदेश कीजिये -

भू + णिच् - भौ + इ - भाव् + इ + भावि = भावयिष्यति
लू + णिच् - लौ + इ - लाव् + इ + लावि = लावयिष्यति
पू + णिच् - पौ + इ - पाव् + इ + पावि = पावयिष्यति
द्रु + णिच् - द्रौ + इ - द्राव् + इ + द्रावि = द्रावयिष्यति

इसके अपवाद - धू धातु - धूञ्प्रीञोर्नुग्वक्तव्य: (वा.) - प्री, धू धातुओं को नुक् का आगम होता है।

धू - धू + नुक् + णिच् - धूनि = धूनयिष्यति

ऋकारान्त, ॠकारान्त धातुओं से णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -

इनके अन्तिम ऋ, ॠ को अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके आर् बनाइये-

कृ + णिच् - कार् + इ - कारि = कारयिष्यति
हृ + णिच् - हार् + इ - हारि = हारयिष्यति
तॄ + णिच् - तार् + इ - तारि = तारयिष्यति

इसके अपवाद -

१. जागृ धातु - जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु - जहाँ वृद्धि प्राप्त हो, अथवा जहाँ गुण, वृद्धि का निषेध प्राप्त हो, वहाँ जागृ धातु के अन्तिम ऋ को गुण ही होता है। जागृ + णिच् - जागर् + इ - जागरि = जागरयिष्यति

२. **दॄ, नॄ, जॄ धातु** – इनके अन्तिम ऋ, ॠ को अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके आर् बनाइये और मितां ह्रस्वः सूत्र से उसे ह्रस्व कर दीजिये। यथा–

दॄ + णिच् - दार् + इ - दारि - दरि = दरयिष्यति
नॄ + णिच् - नार् + इ - नारि - नरि = नरयिष्यति
जॄ + णिच् - जार् + इ - जारि - जरि = जरयिष्यति

३. **स्मृ धातु** – जब इसका अर्थ आध्यान अर्थात् चिन्तन हो तब मितां ह्रस्वः सूत्र से इसे ह्रस्व कर दीजिये। यथा -

स्मृ + णिच् - स्मार् + इ - स्मारि - स्मरि = स्मरयिष्यति

चिन्तन अर्थ न होने पर, मितां ह्रस्वः सूत्र से इसे ह्रस्व मत कीजिये-

स्मृ + णिच् - स्मार् + इ - स्मारि - स्मारि = स्मारयिष्यति

४. **ऋ धातु** – इसे 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये तथा पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण कीजिये -

ऋ + णिच् - अर् + पुक् + णिच् - अर्पि = अर्पयिष्यति

यह अजन्त धातुओं में णिच्' लगाने का विचार पूर्ण हुआ।

अब हम हलन्त धातुओं से णिच् प्रत्यय लगायें –

पहिले हम अपवादों का विचार करके उनके रूप बना लें -

णिच् प्रत्यय परे होने पर –

१. **स्फाय् धातु – स्फायो वः** – स्फाय् धातु को स्फाव् आदेश होता है।
स्फाय् + णिच् - स्फावि = स्फावयिष्यति।

२. **शद् धातु – शदेरगतौ तः** – शद् धातु को शत् आदेश होता है।
शद् + णिच् - शाति = शातयिष्यति।

३. **रुह् धातु – रुहः पोऽन्यतरस्याम्** – रुह् धातु के ह् को विकल्प से 'प्' आदेश होता है। 'प्' आदेश न होने पर - रुह् + णिच् - रोहि = रोहयिष्यति।

'प्' आदेश होने पर - रुह् + णिच् - रोपि = रोपयिष्यति।

४. **रध्, जभ् धातु – रधिजभोरचि** – रध्, जभ् धातुओं को नुम् का आगम होता है। रध् + णिच् - रन्धि = रन्धयिष्यति / जभ् + णिच् - जम्भि = जम्भयिष्यति।

५. **लभ् धातु – लभेश्च** – लभ् धातु को नुम् का आगम होता है।
लभ् + णिच् - लम्भि = लम्भयिष्यति।

६. रभ् धातु - रभेरशब्लिटो: - रभ् धातु को नुम् का आगम होता है। रभ् + णिच् - रम्भि = रम्भयिष्यति।

७. दुष् धातु - दोषो णौ / वा चित्तविरागे - दुष् धातु की उपधा को विकल्प से 'ऊ' आदेश होता है, चित्तविकार अर्थ होने पर। दुष् + णिच् - दूषि = दूषयिष्यति। चित्तविकार अर्थ न होने पर दोषि = दोषयिष्यति बनाइये।

८. सिध् धातु - सिध्यतेरपारलौकिके - सिध् धातु के 'एच्' को पारलौकिक ज्ञानविशेष से भिन्न अर्थ में 'आ' आदेश होता है। यथा -

भोजन बनाने या जाने अर्थ में - सिध् + णिच् - पुगन्तलघूपधस्य च से गुण करके - सेध् + इ / ए को 'आ' करके - साध् + इ - साधि = साधयिष्यति। **तपस्या अर्थ में** - सिध् + णिच् - पुगन्तलघूपधस्य च से गुण करके - सेध् + इ - सेधि = सेधयिष्यति।

९. स्फुर् धातु - चिस्फुरोर्णौ - स्फुर् धातु के 'एच्' को विकल्प से 'आ' आदेश होता है।

'आ' आदेश होने पर - स्फुर् + णिच् / पुगन्तलघूपधस्य च से गुण करके - स्फार् + णिच् - स्फारि = स्फारयिष्यति।

'आ' आदेश न होने पर - स्फोरि = स्फोरयिष्यति।

१०. क्नूय् धातु - 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये तथा पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण कीजिये - क्नूय् + णिच् - क्नोपि = क्नोपयिष्यति।

११. हन् धातु - 'हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु' सूत्र से हन् धातु के 'ह' को कुत्व करके 'घ' बनाइये - हन् + णिच् - घन् + इ / अत उपधाया: सूत्र से 'अ' को वृद्धि करके - घान् + इ / 'हनस्तोऽचिण्णलो:' सूत्र से न् को त् करके - घाति = घातयिष्यति बनाइये।

१२. कृत् धातु - उपधायाश्च - उपधा के दीर्घ ॠ को 'इ' आदेश होता है, सभी प्रत्यय परे होने पर।

यहाँ ॠ के स्थान पर 'इ' होना कहा गया है, अत: 'इ' के स्थान पर उरण् रपर: से 'इर्' होगा - कृत् + णिच् - किर्त् + इ / तथा **'उपधायाञ्च'** सूत्र से उसे दीर्घ होगा - कीर्त् + इ - कीर्ति = कीर्तयिष्यति।

१३. अदन्त धातु - चुरादि गण में १८५१ (कथ) से लेकर १९४३ (तुत्थ)

तक के धातु अदन्त धातु कहलाते हैं। इनकी उपधा को कुछ मत कीजिये।

कथ् + णिच् = कथि = कथयिष्यति
गुण् + णिच् = गुणि = गुणयिष्यति
मृग् + णिच् = मृगि = मृगयिष्यते

मित् धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाना

घटादयो मितः - धातुपाठ में ८७० से ९२७ तक धातुओं का घटादि अन्तर्गण है। घटादि अन्तर्गण के ये धातु मित् धातु कहलाते हैं। आगे हलन्त धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाना बतला रहे हैं। उसे देखिये और उसी विधि से इन मित् धातुओं में भी णिच् प्रत्यय लगाइये। उसके बाद इन मित् धातुओं की उपधा में यदि 'अ' दिखे तो उसको मितां ह्रस्वः सूत्र से ह्रस्व अवश्य कर दीजिये-

घट् + णिच् - घाट् + इ - घाटि - ह्रस्व करके घटि = घटयिष्यति
प्रस् + णिच् - प्रास् + इ - प्रासि - ह्रस्व करके प्रसि = प्रसयिष्यति
व्यथ् + णिच् - व्याथ् + इ - व्याथि - ह्रस्व करके व्यथि = व्यथयिष्यति

नान्ये मितोऽहेतौ - चुरादिगण के ज्ञप्, यम्, चह्, रह्, बल्, चिञ्, ये धातु भी मित् कहलाते हैं। इनमें भी णिच् प्रत्यय लगने के बाद इन मित् धातुओं की उपधा के 'अ' को मितां ह्रस्वः सूत्र से ह्रस्व कर दीजिये -

ज्ञप् + णिच् - ज्ञाप् + इ - ज्ञापि - ह्रस्व करके ज्ञपि = ज्ञपयिष्यति
यम् + णिच् - याम् + इ - यामि - ह्रस्व करके यमि = यमयिष्यति
चह् + णिच् - चाह् + इ - चाहि - ह्रस्व करके चहि = चहयिष्यति
रह् + णिच् - राह् + इ - राहि - ह्रस्व करके रहि = रहयिष्यति
बल् + णिच् - बाल् + इ - बालि - ह्रस्व करके बलि = बलयिष्यति

चि धातु से चययिष्यति तथा चपयिष्यति अजन्त धातुओं में बतलाये जा चुके हैं।

शेष हलन्त धातुओं में इस प्रकार णिच् प्रत्यय लगाइये -

अब जो हलन्त धातु बचे उनके ५ वर्ग बनाइये - अदुपध, इदुपध, उदुपध ऋदुपध तथा शेष। इनमें इस प्रकार णिच् प्रत्यय लगाइये -

१. मित् धातुओं से बचे हुए अदुपध हलन्त धातु -

अत उपधायाः - अदुपध धातुओं की उपधा के 'अ' को वृद्धि होती है ञित् अथवा णित् प्रत्यय परे होने पर। अतः अदुपध धातुओं की उपधा के 'अ' को वृद्धि करके आ बनाइये। पच् + णिच् - पाच् + इ = पाचि = पाचयिष्यति।

इसी प्रकार पत् से पाति, पठ् से पाठि, वद् से वादि, नट् से नाटि आदि।

२. इदुपध हलन्त धातु -

पुगन्तलघूपधस्य च - जिनकी उपधा में लघु इ, लघु उ, लघु ऋ हैं, ऐसे लघु इगुपध धातुओं की उपधा के 'लघु इक्' को पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण होता है। इस सूत्र से उपधा के लघु 'इ' को 'ए' गुण करके -

लिख् + णिच् - लेख् + इ = लेखि = लेखयिष्यति
छिद् + णिच् - छेद् + इ = छेदि = छेदयिष्यति

३. उदुपध हलन्त धातु - पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के लघु 'उ' को 'ओ' गुण करके -

मुद् + णिच् - मोद् + इ = मोदि = मोदयिष्यति
बुध् + णिच् - बोध् + इ = बोधि = बोधयिष्यति

४. ऋदुपध हलन्त धातु - पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के लघु 'ऋ' को 'अर्' गुण करके -

वृष् + णिच् - वर्ष् + इ = वर्षि = वर्षयिष्यति
कृष् + णिच् - कर्ष् + इ = कर्षि = कर्षयिष्यति

५. शेष हलन्त धातु - इनके अलावा जितने भी हलन्त धातु बचे, उनमें बिना कुछ किये णिच् प्रत्यय जोड़ दीजिये -

बुक्क् + णिच् - बुक्क् + इ = बुक्कि = बुक्कयिष्यति
एध् + णिच् - एध् + इ = एधि = एधयिष्यति आदि।

यह सारे धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि पूर्ण हुई।

ध्यान रहे कि चुरादिगण के धातुओं में लृट् लकार के प्रत्यय सीधे न जोड़ दिये जायें। णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद ही इनमें लृट् लकार के प्रत्यय लगाइये, किन्तु चुरादि गण के आधृषीय धातुओं में विकल्प से णिच् लगाइये।

सन्नन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

सारे सन्नन्त धातुओं के अन्त में सदा 'अ' ही होता है अर्थात् वे सदा अदन्त ही होते हैं।

अतो लोपः - धातुओं के अन्त में आने वाले 'अ' का लोप होता है कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर।

लृट् लकार का स्य प्रत्यय भी आर्धधातुक प्रत्यय है। अतः इसके परे

होने पर अतो लोप: सूत्र से सन्नन्त धातुओं के 'अ' का लोप कीजिये। यथा -

जिगमिष + इष्यति / 'अ' का लोप करके - जिगमिष् + इष्यति = जिगमिषिष्यति।

सारे सन्नन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप इसी प्रकार बनाइये।

यङन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि

सारे यङन्त धातुओं के अन्त में सदा 'अ' ही होता है अर्थात् वे सदा अदन्त ही होते हैं।

यङ् के पूर्व में अच् होने पर लृट् लकार के प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

अतो लोप: - धातुओं के अन्त में आने वाले 'अ' का लोप होता है कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर।

लृट्. लकार के प्रत्यय परे होने पर अतो लोप: सूत्र से यङन्त धातुओं के अन्तिम 'अ' का लोप कीजिये। यथा - नेनीय + इष्यति / अतो लोप: से अन्तिम अ का लोप करके - नेनीय् + इष्यति = नेनीयिष्यति / लोलूय + इष्यति - लोलूयिष्यति / बोभूय + इष्यति - बोभूयिष्यति आदि बनाइये।

यङ् के पूर्व में हल् होने पर लृट् लकार के प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

यस्य हल: - हल् के बाद आने वाले 'य' का लोप होता है, आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर।

देखिये कि यङ् के पूर्व में यदि हल् हो तब यस्य हल: सूत्र से य का लोप करके इस प्रकार रूप बनाइये -

बाभ्रश्य + इष्यति / यस्य हल: से अन्तिम य का लोप करके - बाभ्रश् + इष्यति = बाभ्रशिष्यति / नेनिज्य + इष्यति / यस्य हल: से अन्तिम य का लोप करके - नेनिज् + इष्यति = नेनिजिष्यति।

इसी प्रकार वेविध्य = वेविधिष्यति / मोमुद्य = मोमुदिष्यति आदि बनाइये।

सारे, यङन्त धातुओं के लृट् लकार के रूप इसी प्रकार बनाइये। यह समस्त धातुओं के लृट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।



चतुर्थ पाठ

समस्त धातुओं के लृङ् लकार के धातुरूप बनाने की विधि

लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ – यदि अच्छी वर्षा होगी, तो अच्छा अन्न होगा। सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् सुभिक्षमभविष्यत्। मेरे पास रहोगे तो घी से खाओगे। भवान् घृतेन अभोक्ष्यत् यदि मत्समीपमासिष्यत्। इस अर्थ को क्रियातिपत्ति कहते हैं। इस क्रियातिपत्ति अर्थ में धातुओं से लृङ् लकार के प्रत्यय लगते हैं।

हम लङ् लकार के प्रत्यय जानते ही हैं। लङ् लकार के इन प्रत्ययों के आदि में ही स्य जोड़ देने से, लृङ् लकार के प्रत्यय, बन जाते हैं।

लङ् लकार के प्रत्यय इस प्रकार हैं –

	परस्मैपदी प्रत्यय			**आत्मनेपदी प्रत्यय**		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	त्	ताम्	अन्	त	इताम्	अन्त
म. पु.	स्(:)	तम्	त	थाः	इथाम्	ध्वम्
उ. पु.	अम्	व	म	इ	वहि	महि

इन लङ् लकार के प्रत्ययों के आदि में स्य जोड़ दीजिये तो लृङ् लकार के प्रत्यय इस प्रकार बन जायेंगे –

अनिट् धातुओं से लगने वाले लृङ् लकार के अनिट् प्रत्यय

	परस्मैपदी सेट् प्रत्यय			**आत्मनेपदी सेट् प्रत्यय**		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	स्यत्	स्यताम्	स्यन्	स्यत	स्येताम्	स्यन्त
म. पु.	स्यः	स्यतम्	स्यत	स्यथाः	स्येथाम्	स्यध्वम्
उ. पु.	स्यम्	स्याव	स्याम	स्ये	स्यावहि	स्यामहि

लृङ् लकार के इन सारे प्रत्ययों के आदि में 'इट्' नहीं बैठा है। आदि में इट् के न बैठे रहने के कारण ये प्रत्यय अनिट् प्रत्यय कहलाते हैं। जब धातु अनिट् हो, तभी उसमें ये प्रत्यय लगाइये।

अब इन्हीं अनिट् प्रत्ययों में इट् (इ) जोड़ दीजिये तो लृङ् लकार के सेट् प्रत्यय इस प्रकार बन जायेंगे -

सेट् धातुओं से लगने वाले लृङ् लकार के सेट् प्रत्यय

	परस्मैपदी सेट् प्रत्यय			**आत्मनेपदी सेट् प्रत्यय**		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	इष्यत्	इष्यताम्	इष्यन्	इष्यत	इष्येताम्	इष्यन्त
म. पु.	इष्यः	इष्यतम्	इष्यत	इष्यथाः	इष्येथाम्	इष्यध्वम्
उ. पु.	इष्यम्	इष्याव	इष्याम	इष्ये	इष्यावहि	इष्यामहि

लृङ् लकार के इन सारे प्रत्ययों के आदि में इट् बैठा है। आदि में इट् के बैठे रहने के कारण ये प्रत्यय सेट् प्रत्यय कहलाते हैं। जब धातु सेट् हो, तब उसमें ये 'सेट्' प्रत्यय लगाइये।

लृङ् लकार के ये सारे के सारे ३६ प्रत्यय 'स्य' प्रत्यय से बने हुए हैं। अतः हम इन सारे प्रत्ययों को स्य प्रत्यय ही कहेंगे। इन प्रत्ययों को धातुओं में लगाने से लृङ् लकार के धातुरूप बन जाते हैं।

धातुओं में इन सारे प्रत्ययों को लगाने की प्रक्रिया ठीक वही है जो कि हमने अभी धातुओं से लृट् लकार के प्रत्ययों को लगाने में पढ़ी है। वही इडागम की व्यवस्था है, वे ही अङ्गकार्य की विधियाँ हैं। अतः इसकी प्रक्रिया हम अलग से नहीं बतलायेंगे।

केवल दो अन्तर हैं, जो बतला रहे हैं -

१. लृट् लकार के प्रत्यय परे होने पर अङ्ग को अट्, आट् के आगम नहीं होते हैं किन्तु लृङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर अङ्ग को अट्, आट् के आगम होते हैं।

अङ्ग को अट्, आट् के आगम इस प्रकार होते हैं -

लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः - लुङ्, लङ्, लृङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर हलादि अङ्गों को अट् का आगम होता है। जैसे - पठ् + इष्यत् / अ + पठ् + इष्यत् = अपठिष्यत्।

आडजादीनाम् - लुङ्, लङ्, लृङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर अजादि अङ्गों को आट् का आगम होता है। जैसे - ईक्ष् + इष्यत / आ + ईक्ष् + इष्यत = ऐक्षिष्यत।

आट्श्च – आट् से अच् परे होने पर पूर्व पर के स्थान पर एक वृद्धि आदेश होता है। वृद्धि एकादेश इस प्रकार होता है –

आ	+	अ, आ	=	आ
आ	+	इ, ई	=	ऐ
आ	+	उ, ऊ	=	औ
आ	+	ऋ, ॠ	=	आर्
आ	+	ए, ऐ	=	ऐ

२. **विभाषा लुङ्लृङोः** – लृट् लकार के प्रत्यय परे होने पर, इङ् धातु को गाङ् आदेश नहीं होता है, किन्तु लुङ्, लृङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर, इङ् धातु को विकल्प से गाङ् आदेश होता है।

अधि + इ + स्यत / गाङ् आदेश होकर – अध्यगा + स्यत /

'गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्' सूत्र से ञित् णित् से भिन्न प्रत्यय के ङित्वत् होने के कारण 'घुमास्थागापाजहातिसां हलि' सूत्र से 'आ' को 'ई' आदेश करके – अध्यगी + स्यत / आदेशप्रत्यययोः सूत्र से प्रत्यय के 'स्' को 'ष्' करके – अध्यगीष्यत।

गाङ् आदेश होने पर इङ् धातु के रूप इस प्रकार बने –

प्र. पु.	अध्यगीष्यत	अध्यगीष्येताम्	अध्यगीष्यन्त
म. पु.	अध्यगीष्यथाः	अध्यगीष्येथाम्	अध्यगीष्यध्वम्
उ. पु.	अध्यगीष्ये	अध्यगीष्यावहि	अध्यगीष्यामहि

इङ् धातु को गाङ् आदेश न होने पर रूप इस प्रकार बने –

प्र. पु.	अध्यैष्यत	अध्यैष्येताम्	अध्यैष्यन्त
म. पु.	अध्यैष्यथाः	अध्यैष्येथाम्	अध्यैष्यध्वम्
उ. पु.	अध्यैष्ये	अध्यैष्यावहि	अध्यैष्यामहि

शेष व्यवस्था बिल्कुल लृट् लकार के समान ही है।

अब कुछ सेट् परस्मैपदी धातुओं के लृङ् लकार के रूप बनायें –

इकारादि इङ्ख् धातु –

प्र. पु.	ऐङ्खिष्यत्	ऐङ्खिष्यताम्	ऐङ्खिष्यन्
म. पु.	ऐङ्खिष्यः	ऐङ्खिष्यतम्	ऐङ्खिष्यत
उ. पु.	ऐङ्खिष्यम्	ऐङ्खिष्याव	ऐङ्खिष्याम

उकारादि उज्झ् धातु -

प्र. पु.	औज्झिष्यत्	औज्झिष्यताम्	औज्झिष्यन्
म. पु.	औज्झिष्यः	औज्झिष्यतम्	औज्झिष्यत
उ. पु.	औज्झिष्यम्	औज्झिष्याव	औज्झिष्याम

ऋकारादि ऋच्छ् धातु -

प्र. पु.	आर्च्छिष्यत्	आर्च्छिष्यताम्	आर्च्छिष्यन्
म. पु.	आर्च्छिष्यः	आर्च्छिष्यतम्	आर्च्छिष्यत
उ. पु.	आर्च्छिष्यम्	आर्च्छिष्याव	आर्च्छिष्याम

अब कुछ सेट् आत्मनेपदी धातुओं के लृङ् लकार के रूप बनायें -

ईकारादि ईक्ष् धातु -

प्र. पु.	ऐक्षिष्यत	ऐक्षिष्येताम्	ऐक्षिष्यन्त
म. पु.	ऐक्षिष्यथाः	ऐक्षिष्येथाम्	ऐक्षिष्यध्वम्
उ. पु.	ऐक्षिष्ये	ऐक्षिष्यावहि	ऐक्षिष्यामहि

ऊकारादि ऊह् धातु -

प्र. पु.	औहिष्यत	औहिष्येताम्	औहिष्यन्त
म. पु.	औहिष्यथाः	औहिष्येथाम्	औहिष्यध्वम्
उ. पु.	औहिष्ये	औहिष्यावहि	औहिष्यामहि

एकारादि एध् धातु -

प्र. पु.	ऐधिष्यत	ऐधिष्येताम्	ऐधिष्यन्त
म. पु.	ऐधिष्यथाः	ऐधिष्येथाम्	ऐधिष्यध्वम्
उ. पु.	ऐधिष्ये	ऐधिष्यावहि	ऐधिष्यामहि

इसी प्रकार लृट् लकार के धातुरूपों का अनुसरण करके सारे धातुओं के लृङ् लकार के धातुरूप बना डालिये। जैसे - लृट् लकार का रूप लीजिये पास्यति / अब इसमें से लृट् लकार का ति प्रत्यय हटा दीजिये और उसके स्थान पर लृङ् लकार का त् प्रत्यय जोड़ दीजिये, तो बना पास्यत्। अब इसमें अट् का आगम कीजिये तो बना - अपास्यत्। यही लृङ् लकार का रूप है।

इसी विधि से सारे धातुओं के लृङ् लकार के धातुरूप बना डालिये। यह सारे धातुओं के लृङ् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।



पञ्चम पाठ

समस्त धातुओं के आर्धधातुक लेट् लकार के रूप बनाने की विधि

लेट् लकार - लेट् लकार दो प्रकार का होता है। सार्वधातुक लेट् तथा आर्धधातुक लेट्। दोनों लेट् के अर्थ समान ही हैं।

पृष्ठ ४१९ से ४२१ पर लेट् के अर्थ तथा लेट् लकार के प्रत्यय बनाने की विधि दी है। उसे वहीं देखिये।

सिब्बहुलं लेटि - सार्वधातुक लेट् लकार के प्रत्ययों में ही, सिप् (स्), लगा देने से आर्धधातुक लेट् लकार के प्रत्यय बन जाते हैं।

चूँकि सिप् (स्), प्रत्यय आर्धधातुक है, वही इन सबके आदि में बैठता है, अतः सिप् (स्) से बने हुए ये सारे प्रत्यय आर्धधातुक प्रत्यय कहलाते हैं। ये इस प्रकार हैं -

सिप् + अट् = 'स' लगाकर बने हुए आर्धधातुक
लेट् लकार के अनिट् प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्र. पु.	सति	सतः	सन्ति	सते	सैते	सन्ते
	सत्	-	सन्	सतै	-	सन्तै
	सद्					
म. पु.	ससि	सथः	सथ	ससे	सैथे	सध्वे
	सः	-	-	ससै	-	सध्वै
उ. पु.	समि	सवः	समः	से	सवहे	समहे
	सम्	सव	सम	सै	सवहै	समहै

ये प्रत्यय अनिट् धातुओं से लगाये जाते हैं। इन्हें याद कर लीजिये, इन्हीं से आगे के प्रत्यय बनते जायेंगे। जैसे - इन्हीं प्रत्ययों के 'अट्' को 'आट्' बना दीजिये अर्थात् 'स' को 'सा' बना दीजिये, तो ये प्रत्यय इस प्रकार बने -

सिप् + आट् = 'सा' लगाकर बने हुए आर्धधातुक लेट् लकार के अनिट् प्रत्यय

प्र. पु.	साति	सातः	सान्ति	साते	सैते	सान्ते
	सात्	-	सान्	सातै	-	सान्तै
	साद्	-	-			
म. पु.	सासि	साथः	साथ	सासे	सैथे	साध्वे
	साः	-	-	सासै	-	साध्वै
उ. पु.	सामि	सावः	सामः	से	सावहे	सामहे
	साम्	साव	साम	सै	सावहै	सामहै

ये प्रत्यय भी अनिट् धातुओं से लगाये जाते हैं।

सेट् धातुओं से लगाने के लिये अब इन्हीं प्रत्ययों में इट् (इ) जोड़ दीजिये तो यही प्रत्यय इस प्रकार बन जायेंगे -

इट् + सिप् + अट् = 'इष' लगाकर बने हुए आर्धधातुक लेट् लकार के सेट् प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	इषति	इषतः	इषन्ति	इषते	इषैते	इषन्ते
	इषत्	-	इषन्	इषतै	-	इषन्तै
	इषद्	-	-			
म. पु.	इषसि	इषथः	इषथ	इषसे	इषैथे	इषध्वे
	इषः	-	-	इषसै	-	इषध्वै
उ. पु.	इषमि	इषवः	इषमः	इषे	इषवहे	इषमहे
	इषम्	इषव	इषम	इषै	इषवहै	इषमहै

इट् + सिप् + आट् = 'इषा' लगाकर बने हुए आर्धधातुक लेट् लकार के सेट् प्रत्यय

प्र. पु.	इषाति	इषातः	इषान्ति	इषाते	इषैते	इषान्ते
	इषात्	-	इषान्	इषातै	-	इषान्तै
	इषाद्	-	-			
म. पु.	इषासि	इषाथः	इषाथ	इषासे	इषैथे	इषाध्वे

	इषा:	–	–	इषासै	–	इषाध्वै
उ. पु.	इषामि	इषाव:	इषाम:	इषे	इषावहे	इषामहे
	इषाम्	इषाव	इषाम	इषै	इषावहै	इषामहै

आर्धधातुक लेट् लकार के प्रत्यय तैयार हो गये हैं। अब धातु + प्रत्यय को जोड़कर आर्धधातुक लेट् लकार के रूप बनाना है। परन्तु यहाँ यह सावधानी रखना चाहिये कि जैसे हम, लोक में व्यवहार को देखकर, अनन्त शब्दराशि बनाने के लिये स्वतन्त्र हैं, वैसी स्वतन्त्रता वेद में नहीं है, क्योंकि वेद में हम एक भी शब्द घटा या बढ़ा सकने के लिये स्वतन्त्र नहीं है। वेद में हमें जितने शब्द मिलते हैं, उतने ही शब्दों के रूप व्याकरणशास्त्र से निष्पन्न करने का हमें अधिकार है। उससे अधिक वैदिक शब्द बनाने का हमें अधिकार नहीं है।

तथापि हमें यहाँ लेट् लकार के रूप बनाना सीखना है, अत: हम प्रक्रिया समझने के लिये कुछ प्रयोग आपको बनाकर बतलायेंगे। उन्हें देखकर आप सभी धातुओं के लेट् लकार के रूप बनाने का अभ्यास कीजिये परन्तु इसका अर्थ यह नहीं हुआ, कि आप उन सभी के रूप बना डालें और उनका प्रयोग करने लगें।

अत: लोक में हम शास्त्र को देखकर शब्द बनायें और वेद में जो शब्द जैसा दिखे, उस शब्द को देखकर ही शास्त्र का उपयोग करें।

आर्धधातुक लेट् लकार के धातुरूप बनाने की दो विधियाँ हैं। उन्हें क्रमश: बतला रहे हैं।

१. लृट् लकार के समान लेट् लकार के रूप बनाने की विधि

सिप् (स्) से बने हुए, आर्धधातुक लेट् लकार के प्रत्यय बिल्कुल लृट् लकार के 'स्य' प्रत्यय के समान ही हैं। अत: इनके परे होने पर वही अतिदेश विधि होगी, वही धात्वादेश होंगे, वही अङ्गकार्य होंगे तथा ऋकारान्त धातु और हन् धातु को छोड़कर, वही इडागम विधि भी होगी। अत: जिस धातु का जैसा रूप लृट् लकार में बना है, उस धातु का ठीक वैसा ही रूप लेट् लकार में बनेगा, यह जानिये।

अत: लृट् लकार के धातुरूपों का अनुसरण करके ही, हम लेट् लकार के धातुरूप बनाना बतला रहे हैं, परन्तु ध्यान दीजिये कि जो उदाहरण हम समझाने के लिये दे रहे हैं, वे वेद में न मिलने से सर्वथा काल्पनिक हैं।

ऌट् लकार के धातुरूपों का अनुसरण करके, सारे धातुओं के आर्धधातुक लेट् लकार के रूप इस प्रकार बनाइये। जैसे -

ऌट् लकार का रूप लीजिये, पास्यति / अब इसमें से ऌट् लकार का 'स्य' प्रत्यय हटा दीजिये और उसके स्थान पर आर्धधातुक लेट् लकार का 'स' प्रत्यय बैठा दीजिये। अर्थात् 'य' के स्थान पर 'अ' बैठा दीजिये, तो बनेगा - पासति। जानिये कि यही पा धातु के लेट् लकार का रूप है।

ऌट् लकार का रूप लीजिये, पठिष्यति / अब इसमें 'य' के स्थान पर 'अ' बैठा दीजिये, तो बना पठिषति। यही लेट् लकार का रूप है।

ऌट् लकार का रूप लीजिये, स्वङ्क्ष्यति / अब इसमें 'य' के स्थान पर 'अ' बैठा दीजिये, तो बना स्वङ्क्षति। यही लेट् लकार का रूप है।

ऌट् लकार का रूप लीजिये, गुष्यति / अब इसमें 'य' के स्थान पर 'अ' बैठा दीजिये, तो बना गुषति। यही लेट् लकार का रूप है।

अब लृट् लकार का पाठ खोलिये। उसमें जिस जिस धातु का जो भी रूप लृट् लकार में बनाकर दिया है, उसे पढ़ते जाइये, और उसमें से 'य' के स्थान पर 'अ' को बैठाते जाइये। इसी विधि से सारे धातुओं के, आर्धधातुक लेट् लकार के धातुरूप बना डालिये।

स्य और सिप् की इडागम विधि में केवल एक अन्तर है

स्य और सिप् की इडागम विधि में केवल यह अन्तर हैं, कि जहाँ 'स्य' प्रत्यय परे होने पर 'ऋद्धनोः स्ये' सूत्र से, ह्रस्व ऋकारान्त धातु तथा हन् धातु सेट् हो जाते हैं, वहाँ 'सिप्' प्रत्यय परे होने पर, ये ह्रस्व ऋकारान्त धातु तथा हन् धातु सेट् नहीं होते, अनिट् ही रहते हैं। अतः -

ऋकारान्त 'कृ' धातु से परे आने वाले 'स्य' प्रत्यय को लृट् लकार में इडागम होकर करिष्यति बनता है। किन्तु आर्धधातुक लेट् लकार में इडागम न होकर कर्क्षीति ही बनेगा।

'हन्' धातु से परे आने वाले 'स्य' प्रत्यय को ऌट् लकार में इडागम होकर हनिष्यति बनता है। किन्तु आर्धधातुक लेट् लकार में इडागम न होकर हंसति ही बनेगा।

ऋकारान्त तथा हन् धातु को छोड़कर, शेष धातुओं के रूप बिल्कुल लृट् लकार के समान ही बनेंगे। अतः लृट् लकार की प्रक्रिया का सम्यक् अभ्यास

करके, उसी के अनुकरण से आर्धधातुक लेट् लकार के रूप बनाइये।

एक परस्मैपदी तथा एक आत्मनेपदी धातु के पूरे रूप बनाकर देखिये-

इट् + सिप् + अट् लगाकर बने हुए लेट् लकार के सेट् प्रत्यय

	परस्मैपदी भू धातु			आत्मनेपदी एध् धातु		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	भविषति	भविषतः	भविषन्ति	एधिषते	एधिषैते	एधिषन्ते
	भविषत्	-	भविषन्	एधिषतै	-	एधिषन्तै
	भविषद्	-	-			
म. पु.	भविषसि	भविषथः	भविषथ	एधिषसे	एधिषैथे	एधिषध्वे
	भविषः	-	-	एधिषसै	-	एधिषध्वै
उ. पु.	भविषमि	भविषवः	भविषमः	एधिषे	एधिषवहे	एधिषमहे
	भविषम्	भविषव	भविषम	एधिषै	एधिषवहै	एधिषमहै

इट् + सिप् + आट् लगाकर बने हुए लेट् लकार के सेट् प्रत्यय

प्र. पु.	भविषाति	भविषातः	भविषान्ति	एधिषाते	एधिषैते	एधिषान्ते
	भविषात्	-	भविषान्	एधिषातै	-	एधिषान्तै
	भविषाद्	-	-			
म. पु.	भविषासि	भविषाथः	भविषाथ	एधिषासे	एधिषैथे	एधिषाध्वे
	भविषाः	-	-	एधिषासै	-	एधिषाध्वै
उ. पु.	भविषामि	भविषावः	भविषामः	एधिषे	एधिषावहे	एधिषामहे
	भविषाम्	भविषाव	भविषाम	एधिषै	एधिषावहै	एधिषामहै

यह आर्धधातुक लेट् लकार के रूप बनाने की प्रथम विधि पूर्ण हुई। अब आर्धधातुक लेट् लकार के रूप बनाने की दूसरी विधि बतलाते हैं।

२. सिप् प्रत्यय को णिद्वत् मानकर लेट् लकार के रूप बनाने की विधि

सिब्बहुलं णिद् वक्तव्यः (वार्तिक) - समस्त धातुओं से परे आने वाला सिप् प्रत्यय, विकल्प से णिद्वत् होता है। अर्थात् णित् न होते हुए भी, णित् जैसा मान लिया जाता है।

हम जानते हैं कि अङ्गकार्य करने के लिये, प्रत्यय की सही पहिचान करना, सबसे आवश्यक है। जहाँ यह सिप् प्रत्यय णित् जैसा मान लिया जाये,

वहाँ जानिये कि यह 'सिप् प्रत्यय' 'णित् आर्धधातुक प्रत्यय' है।

'णित् आर्धधातुक प्रत्यय' परे होने पर सारे धातुरूप इसी प्रकार बनते हैं, जैसे कि अभी बतलाये गये। केवल दो प्रकार के धातुओं के रूपों में अन्तर पड़ेगा, जो इस प्रकार हैं-

(१) अजन्त धातु + णिद्वत् सिप् प्रत्यय

अचो ञ्णिति - अजन्त अङ्ग को वृद्धि होती है, ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। यथा -

भू + इषति - भौ + इषति = भाविषति
भू + इषाति - भौ + इषाति = भाविषाति
तृ + इषति - तार् + इषति = तारिषति
तार् + इषाति - तार् + इषाति = तारिषाति, आदि।

(२) अदुपध हलन्त धातु + णिद्वत् सिप् प्रत्यय

अत उपधायाः - अदुपध हलन्त धातुओं की उपधा के 'अ' को वृद्धि होती है, ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। जैसे -

पठ् + इषति - पाठ् + इषति = पाठिषति
पठ् + इषाति - पाठ् + इषाति = पाठिषाति आदि।

शेष धातुओं के रूप उसी प्रकार बनाइये, जैसे कि अभी बतलाये गये हैं। जैसे - लिख् + इषति = लेखिषति / मुद् + इषति = मोदिषति / फक्क् + इषति = फक्किषति / एध् + इषाते = एधिषाते आदि।

उदाहरण के लिये एक धातु के रूप बनाकर देखें -

इट् + सिप् + अट् लगाकर बने हुए लेट् लकार के णिद्वत् सेट् प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	तारिषति	तारिषतः	तारिषन्ति	पाविषते	पाविषैते	पाविषन्ते
	तारिषत्	-	तारिषन्	पाविषतै	-	पाविषन्तै
	तारिषद्	-	-			
म. पु.	तारिषसि	तारिषथः	तारिषथ	पाविषसे	पाविषैथे	पाविषध्वे
	तारिषः	-	-	पाविषसै	-	पाविषध्वै

उ. पु.	तारिषमि	तारिषवः	तारिषमः	पाविषे	पाविषवहे	पाविषमहे
	तारिषम्	तारिषव	तारिषम	पाविषै	पाविषवहै	पाविषमहै

इट् + सिप् + आट् लगाकर बने हुए लेट्
लकार के सेट् प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	तारिषाति	तारिषातः	तारिषान्ति	पाविषाते	पाविषैते	पाविषान्ते
	तारिषात्	-	तारिषान्	पाविषातै	-	पाविषान्तै
	तारिषाद्	-	-			
म. पु.	तारिषासि	तारिषाथः	तारिषाथ	पाविषासे	पाविषैथे	पाविषाध्वे
	तारिषाः	-	-	पाविषासै	-	पाविषाध्वै
उ. पु.	तारिषामि	तारिषावः	तारिषामः	पाविषे	पाविषावहे	पाविषामहे
	तारिषाम्	तारिषाव	तारिषाम	पाविषै	पाविषावहै	पाविषामहै

अनिट् 'सिप्' प्रत्यय परे होने पर भी, वे सभी अङ्गकार्य कीजिये, जो कार्य अनिट् 'स्य' प्रत्यय परे होने पर, कहे गये हैं। उसके बाद सकारादि प्रत्ययों को जोड़ने की जो विधि, लृट् लकार में बतलाई गई है, उसी विधि से इन अनिट् सिप् प्रत्ययों को जोड़िये। वेद के जोषिषत्, तारिषत्, मन्दिषत्, आदि जो भी प्रयोग मिलें, उन्हें इसी प्रक्रिया से सिद्ध कीजिये।

हमने लेट् लकार बनाने की पाणिनीय विधि बतलाई, परन्तु ध्यान रहे कि वेद में लेट् लकार में बने हुए जो शब्द आपको दिखें, उन्हें ही आप इस प्रक्रिया से बनायें, लोक के समान सारे रूप न बना डालें क्योंकि वेद में एक भी शब्द घटाने या बढ़ाने के लिये हम स्वतन्त्र नहीं हैं।

हमने जो रूप दिये हैं, वे केवल प्रक्रिया समझाने के लिये दिये हैं।

यह समस्त धातुओं के लेट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।



षष्ठ पाठ

समस्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के धातुरूप बनाने की विधि

आशिषि लिङ्लोटौ - आशी: का अर्थ होता है - अप्राप्त को पाने की इच्छा, न कि आशीर्वाद देना। यथा - आयुष्यं भूयात् - आयु बढ़े। शत्रुः म्रियात् - शत्रु मरे। ये दोनों ही इच्छाएँ अप्राप्त को पाने की हैं। अत: दोनों में ही आशीर्लिङ् लकार का प्रयोग होता है, केवल सदिच्छा में ही नहीं।

आशीर्लिङ् लकार के प्रत्यय इस प्रकार हैं -

	परस्मैपद			**आत्मनेपद**		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	यात्	यास्ताम	यासु:	सीष्ट	सीयास्ताम्	सीरन्
म.पु.	या:	यास्तम्	यास्त	सीष्ठा:	सीयास्थाम्	सीध्वम्
उ.पु.	यासम्	यास्व	यास्म	सीय	सीवहि	सीमहि

लिङाशिषि - आशीर्लिङ् लकार के सारे प्रत्यय आर्धधातुक ही होते हैं।

आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर धात्वादेश -

कुछ धातु ऐसे हैं, जिनकी आकृति आर्धधातुक प्रत्ययों के परे होने पर सर्वथा बदल जाती है। आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाते समय इन्हें याद रखें -

अस्तेर्भूः - आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अस् धातु को 'भू' आदेश हो जाता है। अस् + यात् = भूयात्

चक्षिङः ख्याञ् - आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर चक्ष् धातु को 'ख्या' आदेश हो जाता है। चक्ष् + यात् = ख्यायात्

अजेर्व्यघञपो: - घञ् तथा अप् प्रत्ययों को छोड़कर, शेष आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, अज् धातु को वी आदेश होता है। अज् + यात् = वीयात्।

ब्रुवो वचिः - आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ब्रू धातु को 'वच्' आदेश होता है। ब्रू + यात् = उच्यात्।

हनो वध लिङि –आशीर्लिङ् के प्रत्यय परे होने पर, हन् धातु को 'वध' आदेश होता है। हन् + यात् = वध्यात्।

आदेच उपदेशेऽशिति – एजन्त धातुओं के अन्तिम ए, ओ, ऐ, औ को 'आ' आदेश होता है, अशित् प्रत्यय परे होने पर। जैसे ग्लै - ग्ला, म्लै - म्ला, ध्यै - ध्या, धे - धा, गै - गा, षो - सा, शो - शा, दो - दा, छो - छा आदि।

आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी तथा आत्मनेपदी रूप बनाने की प्रक्रिया सर्वथा पृथक् पृथक् है। अतः इन्हें अलग अलग ही सीखना पड़ता है। अतः हम पहिले परस्मैपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनायें -

आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने की विधि

किदाशिषि – यासुट् से बने हुए आशीर्लिङ् लकार के ये सारे प्रत्यय कित् न होते हुए भी इस सूत्र से 'कित्' जैसे मान लिये जाते हैं।

यह निश्चय करके ही, अब हम आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी प्रत्ययों को धातुओं में जोड़ें।

पहिले हम भ्वादि से क्र्यादिगण तक के धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनायेंगे। उसके बाद चुरादिगण के धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनायेंगे। अतः धातुओं के इस प्रकार वर्ग बनायें -

१. सम्प्रसारणी धातु।

२. नलोपी धातु।

३. सम्प्रसारणी तथा नलोपी धातुओं से बचे हुए अजन्त धातु

४. सम्प्रसारणी तथा नलोपी धांतुओं से बचे हुए हलन्त धातु।

५. चुरादिगण के धातु।

१. सम्प्रसारणी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने की विधि

वचिस्वपियजादीनाम् किति – वच्, स्वप्, यज्, वप्, वह्, वस्, वद्, वेञ्, ह्वेञ्, श्वि, व्येञ्, धातुओं को सम्प्रसारण होता है, कित् प्रत्यय परे होने पर।

ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च – ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज् इन धातुओं को सम्प्रसारण होता है कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर।

इन दोनों सूत्र को मिलाकर, कुल धातु १९ ही हैं, क्योंकि वेञ् तथा

वय् धातु वस्तुतः एक ही हैं।

परस्मैपद के सारे प्रत्यय यासुट् से बने हैं तथा 'किदाशिषि' सूत्र से ये सारे के सारे कित् हैं। जब प्रत्यय कित् होता है, तब इन १९ सम्प्रसारणी धातुओं को सम्प्रसारण होता है।

सम्प्रसारण क्या होता है -

इग्यणः सम्प्रसारणम् - य् व् र् ल् को इ, उ, ऋ, लृ हो जाना, सम्प्रसारण होना कहलाता है। ये जो १९ सम्प्रसारणी धातु हैं, उन्हें यासुट् से बने हुए परस्मैपद के सारे कित् प्रत्यय परे होने पर, सम्प्रसारण करके उनके य् व् र् ल् को क्रमशः इ, उ, ऋ, लृ बना दें।

न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् - किन्तु जिन धातुओं में व् य् दोनों ही हों, वहाँ जो बाद में हो, उसको ही सम्प्रसारण होता है, पूर्व वाले को नहीं। जैसे व्यध् में, 'य' को सम्प्रसारण होता है, 'व्' को नहीं।

सम्प्रसारणाच्च - जब भी य् व् र् ल् को सम्प्रसारण होता है, तब सम्प्रसारण के बाद में जो भी वर्ण होता है, उसे पूर्वरूप हो जाता है।

पूर्वरूप - पूर्वरूप का अर्थ होता है पूर्व के वर्ण में मिल जाना तथा दिखाई न पड़ना। जैसे -

वप् में तीन वर्ण हैं - व् अ प्। इनमें से व् को सम्प्रसारण करके जब हम 'उ' बनाते हैं, तब, उ अ प् यह बनता है। यहाँ सम्प्रसारण 'उ' है, उसके बाद जो 'अ' है उस 'अ' को इस सूत्र से पूर्वरूप होकर बनता है - उप्।

व्यच् में चार वर्ण हैं - व् य् अ च्। इनमें से य् को सम्प्रसारण करके जब हम 'इ' बनाते हैं तब, व् इ अ च् यह बनता है। यहाँ सम्प्रसारण 'इ' है, उसके बाद जो 'अ' है, उस 'अ' को इस सूत्र से पूर्वरूप होकर बनता है - व् इ च् = विच्।

स्वप् में चार वर्ण हैं - स् व् अ प्। इनमें से 'व्' को सम्प्रसारण करके जब हम 'उ' बनाते हैं तब, स् उ अ प् यह बनता है। यहाँ सम्प्रसारण 'उ' है, उसके बाद जो 'अ' है, उस 'अ' को इस सूत्र से पूर्वरूप होकर बनता है - स् उ प् = सुप्।

'यासुट् से बने हुए कित् प्रत्यय' परे होने पर, इन सम्प्रसारणी धातुओं को, बहुत सावधानी से इस प्रकार सम्प्रसारण कर लेना चाहिये -

वेञ्	=	उ	ग्रह्	=	गृह्	व्ये	=	वि
व्यध्	=	विध्	ह्वे	=	हु	वश्	=	उश्
श्वि	=	शु	व्यच्	=	विच्	ज्या	=	जि
व्रश्च्	=	वृश्च्	वच्	=	उच्	भ्रस्ज्	=	भृज्ज्
स्वप्	=	सुप्	वह्	=	उह्	यज्	=	इज्
वद्	=	उद्	वप्	=	उप्	प्रच्छ्	=	पृच्छ्
वस्	=	उष्						

अब इनमें से उन धातुओं को देखिये, जिनके अन्त में सम्प्रसारण होने के बाद 'अच्' है। जैसे - वेञ् - उ / व्ये - वी / ह्वे - हु / श्वि - शु / ज्या - जि। इनके रूप इस प्रकार बनाइये -

अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः - कृत् तथा सार्वधातुक से भिन्न, कित्, ङित्, यकारादि प्रत्यय परे होने पर, अङ्ग के अन्तिम अच् को दीर्घ होता है।

देखिये कि यासुट् से बने ये यकारादि प्रत्यय 'किदाशिषि' सूत्र से कित् हो गये हैं। ये न तो कृत् प्रत्यय हैं, न ही सार्वधातुक प्रत्यय हैं। अतः इनके परे होने पर अङ्ग के अन्त में आने वाले इ, ई, को दीर्घ करके ई, तथा उ,ऊ को दीर्घ करके ऊ बना दीजिये।

वेञ् + यात् - उ + यात् = ऊयात् / व्ये + यात् - वि + यात् = वीयात् / ह्वे + यात् - हु + यात् = हूयात् / श्वि + यात् - शु + यात् = शूयात् / ज्या + यात् - जि + यात् = जीयात्। वेञ् धातु के पूरे रूप -

प्र. पु.	ऊयात्	ऊयास्ताम्	ऊयासुः
म. पु.	ऊयाः	ऊयास्तम्	ऊयास्त
उ. पु.	ऊयासम्	ऊयास्व	ऊयास्म

इसी प्रकार इन सभी के रूप बना लीजिये।

अब उन धातुओं को देखिये, जिनके अन्त में सम्प्रसारण होने के बाद 'हल्' है। इनमें सम्प्रसारण के बाद प्रत्यय को ज्यों का त्यों जोड़ दीजिये -

वच्	-	उच्	-	उच्यात्	स्वप्	-	सुप्	-	सुप्यात्
यज्	-	इज्	-	इज्यात्	वप्	-	उप्	-	उप्यात्
वह्	-	उह्	-	उह्यात्	वस्	-	उष्	-	उष्यात्
वद्	-	उद्	-	उद्यात्	ग्रह	-	गृह्	-	गृह्यात्

व्यध्	-	विध्	-	विध्यात्	वश्	-	उश्	- उश्यात्
व्यच्	-	विच्	-	विच्यात्	व्रश्च्	-	वृश्च्	- वृश्च्यात्
प्रच्छ्	-	पृच्छ्	-	पृच्छ्यात्	भ्रज्ज्	-	भृस्ज्	- भृज्ज्यात्

आशीर्लिङ् लकार के सारे परस्मैपदी प्रत्यय लगाकर, इनके रूप इसी प्रकार बना लीजिये।

२. अनिदित् धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने की विधि

अनिदित् धातु - धातुपाठ में जिन धातुओं की उपधा में आपको वर्ग का पञ्चमाक्षर या अनुस्वार बना हुआ 'न्' दिखे, ऐसे धातु 'इ' की इत्संज्ञा न होने से 'अनिदित् धातु' कहलाते हैं। जैसे - अञ्चु, इङ्ख्, तुम्फ्, भ्रंश् आदि।

अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति - ऐसे अनिदित् धातुओं से परे जब कित् या ङित् प्रत्यय आता है, तब अनिदित् धातुओं की उपधा के नकार का लोप हो जाता है। हमने ऐसे अनिदित् हलन्त धातु, धातुपाठ में अलग से दे दिये हैं तथा यहाँ प्रकरणवश इकट्ठे करके पुनः दे रहे हैं। ये इस प्रकार हैं -

स्कन्द्	स्रंस्	ध्वंस्	भ्रंस्	भ्रंश्	स्रंभ्	मन्थ्	ग्रन्थ्	श्रन्थ्
कुन्थ्	शुन्ध्	कुञ्च्	क्रुञ्च्	लुञ्च्	म्रुञ्च्	म्लुञ्च्	ग्लुञ्च्	वञ्च्
चञ्च्	त्वञ्च्	तञ्च्	श्रम्भ्	दम्भ्	षृम्भ्	हम्म्	शंस्	कुंस्
रञ्ज्	स्यन्द्	भञ्ज्	बन्ध्	अञ्च्	अञ्ज्	उन्द्	इन्ध्	त्रुम्प्
त्रुम्फ्	तृम्फ्	तुम्फ्	दृम्फ्	ऋम्फ्	गुम्फ्	उम्भ्	शुम्भ्	तुम्प्
तृन्ह्	बुन्द्	दंश्	सञ्ज्	ष्वञ्ज्	= ५०			

ध्यान रहे कि इनमें से जो धातु परस्मैपदी हैं, केवल उन्हीं से, यासुट् से बने हुए परस्मैपदी प्रत्यय लगेंगे और इन यासुट् से बने हुए परस्मैपदी कित् प्रत्ययों के परे होने पर, इन अनिदित् धातुओं के 'न्' का इस प्रकार लोप होगा-

मन्थ् - मथ्यात्	शुन्ध् - शुध्यात्	कुञ्च् - कुच्यात्	क्रुञ्च् - क्रुच्यात्
लुञ्च् - लुच्यात्	अञ्च् - अच्यात्	वञ्च् - वच्यात्	चञ्च् - चच्यात्
तञ्च् - तच्यात्	त्वञ्च् - त्वच्यात्	म्रुञ्च् - म्रुच्यात्	म्लुञ्च् - म्लुच्यात्
ग्लुञ्च् - ग्लुच्यात्	श्रम्भ् - श्रभ्यात्	त्रुम्प् - त्रुप्यात्	त्रुम्फ् - त्रुफ्यात्
षृम्भ् - सृभ्यात्	शुम्भ् - शुभ्यात्	हम्म् - हम्यात्	शंस् - शस्यात्
बुन्द् - बुद्यात्	रञ्ज् - रज्यात्	कुंस् - कुस्यात्	भ्रंश् - भ्रश्यात्

दम्भ् - दभ्यात्	तृम्फ् - तृफ्यात्	तुम्फ् - तुफ्यात्	तुम्प् - तुप्यात्
तृंह् - तृंह्यात्	ऋम्फ् - ऋफ्यात्	गुम्फ् - गुफ्यात्	उम्भ् - उभ्यात्
उन्द् - उद्यात्	भञ्ज् - भज्यात्	अञ्ज् - अज्यात्	बन्ध् - बध्यात्
श्रन्थ् - श्रथ्यात्	ग्रन्थ् - ग्रथ्यात्	कुन्थ् - कुथ्यात्	दृम्फ् - दृफ्यात्
दंश् - दश्यात्	षञ्ज् - सज्यात्		

विशेष - ध्यान रहे कि जो 'इदित्' धातु हैं, उनकी उपधा के 'न्' का लोप इस सूत्र से कभी नहीं होगा - नन्द् + यात् = नन्द्यात् आदि।

३. सम्प्रसारणी तथा नलोपी धातुओं से बचे हुए अजन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने की विधि

इनका इस प्रकार वर्गीकरण करें - आकारान्त तथा एजन्त धातु / इकारान्त धातु / उकारान्त धातु / ऋकारान्त धातु / ॠकारान्त धातु।

आकारान्त तथा एजन्त धातु - अब धातुपाठ के सारे आकारान्त धातुओं को अपने सामने रखिये। सारे एजन्त धातुओं को भी **'आदेच उपदेशेऽशिति'** सूत्र से आकारान्त बनाकर अपने सामने रख लीजिये।

इन आकारान्त धातुओं के अब तीन वर्ग बनाइये -

१. बारह आकारान्त धातु - एर्लिङि - दो - दा / डुधाञ् - धा / देङ् - दा / धेट् - धा / डुदाञ् - दा / दाण् - दा / ये छह दा, धा धातु 'दाधाघ्वदाप्' सूत्र से 'घु' कहलाते हैं। घुसंज्ञक इन छह धातुओं के तथा मा, स्था, गा, पा पाने (भ्वादिगण), हा, सा (षो), इन छह धातुओं के अर्थात् कुल १२ धातुओं के 'आ' को कित्, ङित् प्रत्यय प्रत्यय परे होने पर, 'ए' आदेश होता है।

जैसे - दा + यात् = देयात्। दा धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

प्र. पु.	देयात्	देयास्ताम्	देयासु:
म. पु.	देया:	देयास्तम्	देयास्त
उ. पु.	देयासम्	देयास्व	देयास्म

इसी प्रकार धा + यात् = धेयात् / मा + यात् = मेयात् / स्था + यात् = स्थेयात् / गा + यात् = गेयात् / पा + यात् = पेयात् / हा + यात् = हेयात् / सा + यात् = सेयात् आदि बनाइये।

ध्यान रहे कि अदादिगण के 'पा' धातु को 'ए' नहीं होगा। इससे

'पायात्' ही बनेगा।

२. संयोगपूर्व आकारान्त धातु - वाऽन्यस्य संयोगादेः - इन धातुओं के अलावा जितने भी आकारान्त धातु बचे, उनके आ के पूर्व में यदि दो व्यञ्जनों का संयोग हो, तब धातु के अन्तिम 'आ' को विकल्प से 'ए' बनाइये।

घ्रा, ध्मा, म्ना, ष्णा, श्रा, द्रा, प्सा, ख्या, प्रा, ज्या, ज्ञा, आदि आकारान्त धातुओं के आ के पूर्व में, दो व्यञ्जनों का संयोग है।

इनके अन्तिम 'आ' को विकल्प से ए बनाइये - ग्ला + यात् = ग्लेयात्, ग्लायात् / श्रा + यात् = श्रेयात्, श्रायात् / घ्रा + यात् = घ्रेयात्, घायात्, आदि।

पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

ग्लायात् / ग्लेयात्	ग्लायास्ताम् / ग्लेयास्ताम्	ग्लायासुः / ग्लेयासुः
ग्लायाः / ग्लेयाः	ग्लायास्तम् / ग्लेयास्तम्	ग्लायास्त / ग्लेयास्त
ग्लायासम् / ग्लेयासम्	ग्लायास्व / ग्लेयास्व	ग्लायास्म / ग्लेयास्म

सारे संयोगपूर्व आकारान्त धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाइये।

३. शेष आकारान्त धातु - इन दोनों सूत्रों में कहे गये धातुओं के अलावा जितने भी आकारान्त धातु बचे उन्हें कुछ मत कीजिये। उन्हें प्रत्ययों में ज्यों का त्यों जोड़ दीजिये। जैसे - वा + यात् = वायात् / पा + यात् = पायात् / भा + यात् = भायात् आदि। पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

प्र. पु.	वायात्	वायास्ताम्	वायासुः
म. पु.	वायाः	वायास्तम्	वायास्त
उ. पु.	वायासम्	वायास्व	वायास्म

यह आकारान्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त धातु -

पृष्ठ ९० पर '**अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः**' सूत्र है। इस सूत्र से इनके अन्तिम इ, ई, को ई / अन्तिम उ, ऊ को ऊ / बना दीजिये। यथा - जि + यात् = जीयात् / हु + यात् = हूयात् / भू + यात् = भूयात्।

इसके अपवाद - ब्रू धातु - 'ब्रू' धातु को ब्रुवो वचिः सूत्र से 'वच्' आदेश कीजिये - ब्रू + यात् - वच् + यात् - उच् + यात् = उच्यात्।

ऋकारान्त धातु -

रिङ्शयग्लिङ्क्षु - ऋकारान्त धातुओं के अन्तिम 'ऋ' के स्थान पर रिङ् (रि) आदेश होता है, श, यक् तथा लिङ् लकार के यकारादि प्रत्यय परे होने पर। जैसे - कृ + यात् / ऋ को रिङ् करके क् रिङ् यात् / ङ् की इत् संज्ञा करके क् रि यात् = क्रियात्। इसी प्रकार हृ से ह्रियात्, भृ से भ्रियात्, सृ से स्त्रियात्।

इसके अपवाद - ऋ धातु तथा संयोगपूर्व ऋकारान्त धातु

गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः - यदि धातु के अन्त में ह्रस्व ऋ हो, तथा उस ऋ के पूर्व में, दो व्यञ्जनों का संयोग हो, तो ऐसे संयोगपूर्व ऋकारान्त धातु को तथा ऋ धातु को गुण अर्थात् 'अर्' हो जाता है, श, यक् तथा आशीर्लिङ् लकार के यकारादि प्रत्यय परे होने पर। यथा -

ऋ + यात् - अर् + यात् = अर्यात्।

ऋ धातु के पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

प्र. पु.	अर्यात्	अर्यास्ताम्	अर्यासुः
म. पु.	अर्याः	अर्यास्तम्	अर्यास्त
उ. पु.	अर्यासम्	अर्यास्व	अर्यास्म

इसी प्रकार संयोगपूर्व ऋकारान्त धातुओं को भी 'गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः' सूत्र से गुण कीजिये। स्मृ - स्मर्यात् / स्वृ - स्वर्यात् / स्पृ - स्पर्यात् / स्तृ - स्तर्यात् / ध्वृ - ध्वर्यात् / ह्वृ - ह्वर्यात् आदि।

जागृ धातु - जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु - जहाँ वृद्धि प्राप्त हो, अथवा जहाँ गुण, वृद्धि का निषेध प्राप्त हो, वहाँ जागृ धातु को गुण ही होता है, वि, चिण्, णल्, तथा ङित् से भिन्न प्रत्यय परे होने पर। जागृ + यात् - जागर् + यात् = जागर्यात् आदि। पूरे रूप 'ऋ' धातु के समान ही बनाइये।

दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के दो वर्ग बनाइये -

१. वे दीर्घ ॠकारान्त धातु, जिनमें दीर्घ 'ॠ' के पूर्व में आने वाला वर्ण ओष्ठ्य न हो, अर्थात् पवर्ग, वकार न हो। जैसे - तॄ, गॄ, कॄ, जॄ, शॄ आदि।

ॠत इद् धातोः - ऐसे धातुओं के अन्त में आने वाले दीर्घ 'ॠ' को 'इ' आदेश होता है, कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर।

उरण् रपरः - जब भी किसी सूत्र से ऋ, ॠ के स्थान पर, अ, इ, या उ होना कहा जाये तब उन्हें अ, इ, या उ, न होकर अर्, इर्, उर् होते हैं।

यथा - तॄ + यात् / ति + यात् / तिर् + यात्।

हलि च - यदि धातु के अन्त में र् या व् हो और उपधा में इक् हो तो उस इक् को दीर्घ हो जाता है, हल् परे रहने पर। तिर् + यात् - तीर् + यात् - तीर्यात्। इसी प्रकार - दॄ - दीर्यात् / गॄ + यात् - गीर्यात् बनाइये।

तॄ धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

प्र. पु.	तीर्यात्	तीर्यास्ताम्	तीर्यासुः
म. पु.	तीर्याः	तीर्यास्तम्	तीर्यास्त
उ. पु.	तीर्यासम्	तीर्यास्व	तीर्यास्म

२. वे दीर्घ ॠकारान्त धातु, जिनमें दीर्घ ॠ के पूर्व में आने वाला वर्ण ओष्ठ्य हो, अर्थात् पवर्ग या वकार हो। जैसे - पॄ, वॄ, भॄ आदि।

उदोष्ठ्यपूर्वस्य - धातु के अन्त में आने वाले दीर्घ 'ॠ' को 'उ' आदेश होता है, कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर। यदि उस दीर्घ ॠ के पूर्व में आने वाला वर्ण ओष्ठ्य हो अर्थात् पवर्ग या व् हो तो।

यथा - पॄ + यात् - पुर् + यात्। अब हलि च सूत्र से उपधा के 'उ' को दीर्घ करके - पूर् + यात् = पूर्यात्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

प्र. पु.	पूर्यात्	पूर्यास्ताम्	पूर्यासुः
म. पु.	पूर्याः	पूर्यास्तम्	पूर्यास्त
उ. पु.	पूर्यासम्	पूर्यास्व	पूर्यास्म

इसी प्रकार - वॄ - वूर्यात् / भॄ - भूर्यात् / आदि बनाइये। यह अजन्त धातुओं के परस्मैपदी आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

४. सम्प्रसारणी तथा नलोपी धातुओं से बचे हुए हलन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने की विधि

सम्प्रसारणी हलन्त तथा नलोपी हलन्त धातुओं के रूप हमने बनाये। अब शेष हलन्त धातुओं के रूप बनायें।

अस्, चक्ष्, अज्, हन् धातु - ध्यान रहे कि आशीर्लिङ् लकार के सारे प्रत्यय आर्धधातुक हैं। अतः इनके परे होने पर, 'अस्' धातु को अस्तेर्भूः सूत्र से 'भू' आदेश हो जाता है - अस् + यात् = भूयात्। चक्षिङः ख्याञ् सूत्र से 'चक्ष्' धातु को 'ख्या' आदेश हो जाता है - चक्ष् + यात् = ख्यायात्। अजेर्व्यघञपोः सूत्र से 'अज्' धातु को 'वी' आदेश हो जाता है - अज् + यात् = वीयात्। हनो

वध लिङि सूत्र से 'हन्' धातु को 'वध्' आदेश हो जाता है - हन् + यात् = वध्यात्।

शेष धातु - क्ङिति च - कित्, ङित् अथवा गित्, प्रत्यय परे होने पर, इक् के स्थान पर प्राप्त होने वाले गुण, वृद्धि कार्य नहीं होते।

अतः सम्प्रसारणी धातु, नलोपी धातु तथा अस्, चक्ष्, अज्, हन् से बचे हुए हलन्त धातुओं को प्रत्ययों में ज्यों का त्यों जोड़ दीजिये, बस। जैसे - पठ् + यात् = पठ्यात् / नन्द् + यात् = नन्द्यात् / लिख् + यात् = लिख्यात् आदि।

५. चुरादिगण के तथा णिजन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने की विधि

चुरादिगण के धातुओं में पहिले स्वार्थिक णिच् प्रत्यय लगाकर ही उनमें कोई भी अन्य प्रत्यय लगाया जाता है। अतः ध्यान रहे कि चुरादिगण के धातुओं में किसी भी लकार के प्रत्यय सीधे न जोड़ दिये जायें।

इसी प्रकार जब प्रेरणा अर्थ अर्थात् प्रयोजक व्यापार वाच्य हो तब किसी भी धातु से पहिले णिच् प्रत्यय लगा देना चाहिये। यहाँ भी णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद ही धातु से अन्य कोई प्रत्यय लगाना चाहिये।

इसका अर्थ यह हुआ कि यहाँ हमें दो कार्य करना पड़ते हैं -

१. धातु + णिच् को जोड़कर णिजन्त धातु बनाना।

२. णिजन्त धातु में आशीर्लिङ् लकार के प्रत्यय लगाना।

धातु से णिच् प्रत्यय लगाने की विस्तृत विधि, हमने णिजन्त पाठ में दी है, तथा संक्षिप्त विधि लट् लकार में ६५ से ७४ पृष्ठ पर दी है, अतः उसे दोबारा नहीं बतलायेंगे। उसे वहीं देखिये।

धातुओं में णिच् को जोडकर आप पायेंगे कि धातु + णिच् को जोड़ने के बाद जो णिजन्त धातु बनेंगे, इनके अन्त में सदा 'णिच्' प्रत्यय का 'इ' रहेगा। जैसे - चुर् + णिच् - चोरि आदि।

णेरनिटि - अनिडादि आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर इस 'णिच्' प्रत्यय का लोप होता है। यथा चोरि + यात् - चोर् + यात् = चोर्यात्।

इसी प्रकार सारे णिजन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाइये। यह आशीर्लिङ् के परस्मैपदी प्रत्ययों को लगाकर धातुरूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के धातुरूप बनाने की विधि

अनिट् आत्मनेपदी प्रत्यय

प्र.पु.	सीष्ट	सीयास्ताम्	सीरन्
म.पु.	सीष्ठाः	सीयास्थाम्	सीध्वम्
उ.पु.	सीय	सीवहि	सीमहि

इन सारे प्रत्ययों के आदि में इट् नहीं बैठा है। आदि में इट् के न बैठे रहने के कारण, ये प्रत्यय अनिट् प्रत्यय हैं। वस्तुतः धातु दो प्रकार के होते हैं। सेट् तथा अनिट्। जब धातु अनिट् आत्मनेपदी हो, तभी उसमें ये प्रत्यय लगाइये तथा जब धातु सेट् हो तब इन्हीं अनिट् प्रत्ययों में इट् (इ) जोड़कर, सीष्ट आदि को, इस प्रकार इषीष्ट आदि बना दीजिये -

सेट् आत्मनेपदी प्रत्यय

प्र.पु.	इषीष्ट	इषीयास्ताम्	इषीरन्
म.पु.	इषीष्ठाः	इषीयास्थाम्	इषीध्वम्
उ.पु.	इषीय	इषीवहि	इषीमहि

इन सारे प्रत्ययों के आदि में इट् बैठा है। आदि में इट् के बैठे रहने के कारण ये प्रत्यय सेट् प्रत्यय कहलाते हैं। जब धातु सेट् आत्मनेपदी हो, तभी उसमें ये प्रत्यय लगाइये।

ये सारे के सारे ३६ प्रत्यय 'सीयुट्' प्रत्यय से बने हुए हैं। अतः हम इन सारे सेट्, अनिट्, प्रत्ययों को सीयुट् प्रत्यय ही कहेंगे।

धातुओं में किसी भी प्रत्यय को लगाने के कार्य को हमें खण्ड खण्ड में ही सीखना चाहिये। पूरा धातुरूप एक साथ बना लेने का प्रयास नहीं करना चाहिये।

धातुओं में 'सीयुट्' प्रत्यय लगाकर धातुरूप बनाने का भी जो कार्य होता है उसके अनेक खण्ड होते हैं। ये खण्ड इस प्रकार हैं -

धात्वादेश, इडागम विधि, अतिदेश, अङ्गकार्य, षत्व विधि, ढत्वविधि तथा सन्धि। इन्हें हम एक एक करके जानें -

धात्वादेश

आशीर्लिङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर होने वाले धात्वादेश हमने

इसी अध्याय के प्रारम्भ ८७ - ८८ पृष्ठ पर दिये हैं। उन्हें वहीं देखिये।

इडागम विधि

किन धातुओं से हम सेट् प्रत्यय लगायें और किन धातुओं से अनिट् प्रत्यय लगायें, यह जानने के लिये, सेट् अनिट् धातुओं को पहिचानना आवश्यक है। इन्हें पहिचानने की विधि हमने इसी ग्रन्थ के द्वितीय पाठ में २७ - ३४ पृष्ठ पर सोदाहरण बतलाई है। यहाँ पुनः संक्षेप में बतला रहे हैं।

विशेष - ध्यान रहे कि अनेकाच् धातु सेट् ही होते हैं।

उपदेशावस्था में एकाच् अर्थात् एक स्वर वाले एकाच् धातु ही अनिट् हो सकते हैं, किन्तु सब के सब एकाच् धातु नहीं। इनमें भी, जो एकाच् धातु अनुदात्त हों, वे ही अनिट् हो सकते हैं। एकाच् तो हम देखकर पहिचान लेंगे, किन्तु अनुदात्त कैसे पहिचानेंगे, इसके लिये इन अनिट् धातुओं को पहिचानने की विधि बतला रहे हैं। इन अनिट् धातुओं से ही आप अनिट् प्रत्यय लगाइये।

अब हम एकाच् धातुओं के अन्तिम वर्ण को क्रम से रखकर, धातुओं का सेट्, अनिट् विभाजन दे रहे हैं, इन्हें याद करके जानिये कि कौन से धातु सेट् हैं और कौन से अनिट्।

सेट् तथा अनिट् अजन्त धातुओं को पहिचानने की विधि

१. **एकाच् आकारान्त धातु** - सारे एकाच् आकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं। अनेकाच् होने से 'दरिद्रा' धातु सेट् है।

२. **एकाच् ह्रस्व इकारान्त धातु** - इनमें श्वि, श्रि धातु सेट् होते हैं तथा इनके अलावा, शेष सारे एकाच् ह्रस्व इकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं।

३. **एकाच् दीर्घ ईकारान्त धातु** - इनमें डीङ्, शीङ् धातु सेट् होते हैं तथा इनके अलावा, शेष सारे एकाच् दीर्घ ईकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं।

४. **एकाच् ह्रस्व उकारान्त धातु** - इनमें स्नु, नु, क्षु, यु, रु, क्ष्णु ये ६ धातु सेट् होते हैं तथा इन ६ को छोड़कर, शेष सारे एकाच् उकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं।

५. **एकाच् दीर्घ ऊकारान्त धातु** - ये सब के सब सेट् होते हैं।

६. **एकाच् ह्रस्व ऋकारान्त धातु** - वृङ्, वृञ् को छोड़कर, शेष सारे एकाच् ह्रस्व ऋकारान्त धातु अनिट् होते हैं। अनेकाच् होने से 'जागृ' सेट् है।

७. **एकाच् दीर्घ ॠकारान्त धातु** - ये सभी सेट् होते हैं।

८. **एजन्त धातु** - अर्थात् ए, ओ, ऐ, औ, से अन्त होने वाले सारे धातु। ये सभी अनिट् ही होते हैं तथा ये धातु आर्धधातुक प्रत्यय परे रहने पर **आदेच उपदेशेऽशिति** सूत्र से आकारान्त बन जाते हैं। जैसे - गै = गा, धे = धा, ग्लै = ग्ला, ध्यै = ध्या आदि।

यह एकाच् अजन्त धातुओं में से सेट् तथा अनिट् धातुओं को अलग अलग पहिचानने की विधि पूर्ण हुई। अब एकाच् हलन्त धातुओं में से, सेट् तथा अनिट् धातुओं को कैसे अलग अलग पहिचाना जाये, यह विधि बतला रहे हैं।

सेट् तथा अनिट् हलन्त धातुओं को पहिचानने की विधि - नीचे १०२ हलन्त एकाच् धातु दिये जा रहे हैं। ये सब उपदेशावस्था में एकाच् तथा अनुदात्त होने के कारण अनिट् हैं। इनके अतिरिक्त जो भी एकाच् हलन्त धातु आप पाएँगे, वे सब सेट् ही होंगे, यह जानना चाहिए।

१. **एकाच् ककारान्त धातुओं में** - शक्, यह १ धातु ही अनिट् होता है। शेष सारे ककारान्त धातु सेट् होते हैं।

२. **एकाच् चकारान्त धातुओं में** - पच्, मुच्, रिच्, वच्, विच्, सिच्, ये ६ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे चकारान्त धातु सेट् होते हैं।

३. **एकाच् छकारान्त धातुओं में** - प्रच्छ्, यह १ धातु अनिट् होता है। शेष सारे छकारान्त धातु सेट् होते हैं।

४. **एकाच् जकारान्त धातुओं में** - त्यज्, निजिर्, भज्, भञ्ज्, भुज्, भ्रस्ज्, मस्ज्, यज्, युज्, रुज्, रञ्ज्, विजिर् (रुधादि), स्वञ्ज्, सञ्ज्, सृज् - ये १५ धातु अनिट् होते हैं। शेष सभी जकारान्त धातु सेट् होते हैं।

५. **एकाच् दकारान्त धातुओं में** - अद्, क्षुद्, खिद्, छिद्, तुद्, नुद्, पद् (दिवादिगण), भिद्, विद् (दिवादिगण), विद् (रुधादिगण), शद्, सद्, स्विद्, स्कन्द्, और हद् ये १५ धातु अनिट् होते हैं। शेष सभी दकारान्त धातु सेट् होते हैं।

विशेष - दिवादिगण तथा रुधादिगण के विद् धातु अनिट् होते हैं और अदादिगण तथा तुदादिगण के विद् धातु सेट् होते हैं।

६. **एकाच् धकारान्त धातुओं में** - क्रुध्, क्षुध्, बुध् (दिवादिगण), बन्ध्, युध्, रुध्, राध्, व्यध्, साध्, शुध्, सिध् (दिवादिगण) ये ११ धातु अनिट् होते हैं। शेष सभी धकारान्त धातु सेट् होते हैं।

विशेष - ध्यान दीजिये कि बुध् धातु दो हैं। इनमें से भ्वादिगण का बुध् धातु सेट् होता है। दिवादिगण का बुध् धातु अनिट् होता है।

७. **एकाच् नकारान्त धातुओं में** - मन् (दिवादिगण) तथा हन्, ये २ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे नकारान्त धातु सेट् होते हैं।

८. **एकाच् पकारान्त धातुओं में** - आप्, छुप्, क्षिप्, तप्, तिप्, तृप् (दिवादिगण), दृप् (दिवादिगण), लिप्, लुप्, वप्, शप्, स्वप्, सृप्, ये १३ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे पकारान्त धातु सेट् होते हैं।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि तृप् धातु तीन हैं। इनमें से स्वादिगण तथा तुदादिगण के तृप् धातु सेट् हैं। दिवादिगण का तृप् धातु वेट् है।

९. **एकाच् भकारान्त धातुओं में** - यभ्, रभ्, लभ्, ये ३ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे भकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१०. **एकाच् मकारान्त धातुओं में** - गम्, नम्, यम्, रम्, ये ४ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे मकारान्त धातु सेट् होते हैं।

११. **एकाच् शकारान्त धातुओं में** - क्रुश्, दंश्, दिश्, दृश्, मृश्, रिश्, रुश्, लिश्, विश्, स्पृश्, ये १० धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे शकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१२. **एकाच् षकारान्त धातुओं में** - कृष्, त्विष्, तुष्, द्विष्, दुष्, पुष् (दिवादि गण), पिष्, विष्, शिष्, शुष्, श्लिष् (दिवादिगण), ये ११ धातु अनिट् होते हैं। शेष सभी षकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१३. **एकाच् सकारान्त धातुओं में** - वस्, घस्, ये २ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे सकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१४. **एकाच् हकारान्त धातुओं में** - दह्, दिह्, दुह्, नह्, मिह्, रुह्, लिह्, वह्, ये ८ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे हकारान्त धातु सेट् होते हैं।

सेट्, अनिट् के अलावा कुछ धातु वेट् भी होते हैं। वे इस प्रकार हैं-

वेट् धातु

स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा - स्वृ धातु, अदादिगण का सू धातु, दिवादिगण का सू धातु, स्वादि तथा क्र्यादिगण का धूञ् धातु तथा सारे ऊदित् धातुओं से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

ऊदित् धातु - 'ऊदित्' का अर्थ होता है, ऐसे धातु जिनमें 'ऊ' की इत् संज्ञा हुई हो। धातुपाठ में पढ़े गये सारे 'ऊदित् धातु' इस प्रकार हैं -

अक्षू	तक्षू	त्वक्षू	गृहू	मृजू	अशू	वृहू	तृन्हू
क्षमू	क्लिदू	अञ्जू	क्लिशू	षिधू	त्रपूष्	क्षमूष्	गाहू
गुहू	स्यन्दू	कृपू	गुपू	ओव्रश्चू	तृहू	स्तृहू	तञ्चू।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि स्वादि, क्र्यादि तथा चुरादिगण में धूञ् कम्पने धातु हैं। तुदादिगण में धू विधूनने धातु है। इनमें से स्वादिगण तथा क्र्यादिगण के धूञ् कम्पने धातु ही वेट् होते हैं। इनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है। तुदादिगण का धू विधूनने धातु तथा चुरादिगण का धूञ् कम्पने धातु सेट् होता है। इनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को नित्य इडागम होता है।

रधादिभ्यश्च - रध्, नश्, तृप्, दृप्, द्रुह्, मुह्, स्निह्, स्नुह्, ये ८ धातु वेट् होते हैं। इन आठ धातुओं से परे आने वाले सेट् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

निरः कुषः - निर् उपसर्गपूर्वक कुष् धातु से परे आने वाले सेट् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम हाता है।

इस प्रकार ३६ धातु वेट् हैं। इन ३६ वेट् धातुओं से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि जहाँ एक आकृति के अनेक धातु हैं, वहाँ हमने स्पष्ट निर्देश करके कोष्ठक में उस गण का नाम लिख दिया है जिस गण का धातु अनिट् होता है।

इससे यह जानना चाहिये कि जिसका नाम नहीं लिखा है वह सेट् ही है। इन अनिट् और वेट् धातुओं के अलावा जितने भी हलन्त धातु हैं वे सब के सब सेट् ही हैं, यह जानना चाहिये।

यह सेट्, अनिट् तथा वेट् धातुओं को पहिचानने की औत्सर्गिक अर्थात् सामान्य व्यवस्था है।

अब सीयुट् प्रत्यय के लिये विशेष इडागम व्यवस्था बतला रहे हैं -

लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु - वृङ्, वृञ् धातु तथा दीर्घ ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाले आत्मनेपद संज्ञक सीयुट् तथा सिच् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम

होता है।

ऋतश्च संयोगादेः - संयोगादि ऋदन्त धातुओं से परे आने वाले आत्मनेपद संज्ञक सीयुट् और सिच् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है।

इसे कण्ठस्थ कर लीजिये। इसी से आप निर्णय कर सकेंगे कि किन धातुओं से आपको सेट् प्रत्यय लगाना है तथा किन धातुओं से अनिट्।

अतिदेश

देखिये कि सीयुट् प्रत्यय न तो कित् है, न गित्, न ङित्। तथापि कुछ सूत्रों के प्रभाव से यह सीयुट् प्रत्यय, कहीं कित् जैसा और कहीं ङित् जैसा मान लिया जाता है। यह मानने का कार्य जिन सूत्रों के कारण होता है, उन सूत्रों को हम अतिदेश सूत्र कहते हैं।

ये सूत्र हम आगे स्थान स्थान पर बतलाते चलेंगे। उन्हें ध्यान में रखकर ही सीयुट् प्रत्यय परे होने पर होने वाले अङ्गकार्यों का विचार करें।

सामान्य अङ्गकार्य

धातु में 'सीयुट् प्रत्यय' जोड़ते समय हमारी दृष्टि में तीन बातें एकदम स्पष्ट होना चाहिये।

१. जिस धातु में हम प्रत्यय जोड़ रहे हैं, वह धातु सेट् है या अनिट् या वेट्? कहीं ऐसा तो नहीं है कि सीयुट् प्रत्यय को देखकर कोई अनिट् धातु सेट् हो गया हो, या कोई सेट् धातु वेट् हो गया हो। यह स्पष्ट ज्ञान होने पर ही इट् के आगम का निर्णय कीजिये।

२. सीयुट् प्रत्यय को देखकर कहीं किसी धातु को धात्वादेश होकर धातु की आकृति तो नहीं बदल रही है ?

३. कहीं किसी अतिदेश सूत्र के प्रभाव से यह सीयुट् प्रत्यय कित्, ङित् जैसा तो नहीं मान लिया गया है ? अब अङ्गकार्य बतला रहे हैं -

जब सीयुट् प्रत्यय कित्, ङित् न हो, तब इस प्रकार से अङ्गकार्य कीजिये

सार्वधातुकार्धधातुकयोः - धातु के अन्त में आने वाले इक् को गुण होता है, कित्, ङित्, गित्, ञित्, णित्, से भिन्न, सार्वधातुक अथवा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। गुण होने का अर्थ होता है - इ, ई के स्थान पर ए, उ, ऊ के स्थान पर ओ. ऋ. ॠ के स्थान पर अर् हो जाना। जैसे -

शी + इषीष्ट - शे + इषीष्ट - शय् + इषीष्ट = शयिषीष्ट

पुगन्तलघूपधस्य च - धातु की उपधा में स्थित लघु इक् के स्थान पर गुण होता है, कित्, ङित्, गित् से भिन्न सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। जैसे -

मिद् + इषीष्ट - मिद् + इषीष्ट = मेदिषीष्ट
मुद् + इषीष्ट - मोद् + इषीष्ट = मोदिषीष्ट
वृत् + इषीष्ट - वर्त् + इषीष्ट = वर्तिषीष्ट

जब सीयुट् प्रत्यय कित्, ङित् हो, तब इस प्रकार से अङ्गकार्य कीजिये

कृ + सीष्ट / इसे देखिये। यहाँ 'उश्च' सूत्र से सीयुट् प्रत्यय कित् न होते हुए भी कित् जैसा हो जाता है। 'उश्च' सूत्र आगे बतलायेंगे।

भिद् + सीष्ट / इसे देखिये। यहाँ 'लिङ्सिचावात्मनेपदेषु' सूत्र से सीयुट् प्रत्यय कित् न होते हुए भी कित् जैसा हो जाता है। 'लिङ्सिचावात्मनेपदेषु' सूत्र आगे बतलायेंगे।

क्ङिति च - यदि सार्वधातुक अथवा आर्धधातुक प्रत्यय कित्, ङित्, गित् हो, तब, धातुओं के अन्त में आने वाले इक् को न तो 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण होता है, और न ही उपधा में स्थित लघु इक् को 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से गुण होता है। अतः इन दोनों में ही गुण नहीं होगा।

कृ + सीष्ट = कृषीष्ट / भिद् + सीष्ट = भित्सीष्ट

विशेष अङ्गकार्य विशेष स्थलों पर बतलाये जायेंगे।

सकारादि प्रत्ययों को जोड़ने के लिये षत्व विधि का जानना आवश्यक है, अतः अब षत्वविधि बतला रहे हैं। इसे यहीं हृदयङ्गम कर लें।

षत्व विधि

आदेशप्रत्यययोः - इण् प्रत्याहार अर्थात् इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल तथा कवर्ग के बाद आने वाले आदेश के सकार को तथा प्रत्यय के 'स' को 'ष' आदेश होता है। जैसे -

नी + सीष्ट - ने + षीष्ट = नेषीष्ट / कु + सीष्ट = कुषीष्ट / आदि में इण् प्रत्याहार के बाद में आने वाले प्रत्यय के 'स' को 'ष' हो गया है।

वक् + सीष्ट - वक् + षीष्ट = वक्षीष्ट में कवर्ग के बाद में आने वाले प्रत्यय के 'स' को 'ष' हो गया है।

आशीर्लिङ् लकार के लिये ढत्व विधि

इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात् - जिस अङ्ग के अन्त में 'इण्' है, ऐसे इण्णन्त अङ्ग से परे आने वाले आशीर्लिङ् लकार के 'षीध्वम्' प्रत्यय के 'ध्' के स्थान तथा लुङ् लकार के ध्वम् प्रत्यय के 'ध्' के स्थान पर, लिट् लकार के ध्वे प्रत्यय के 'ध्' के स्थान पर 'ढ्' आदेश होता है।

विभाषेटः - किन्तु इण्णन्त अङ्ग से परे यदि इट् हो, तब उस इट् से परे आने वाले, इन प्रत्ययों के 'ध्' के स्थान पर विकल्प से 'ढ्' आदेश होता है। इन सूत्रों का निष्कृष्टार्थ इस प्रकार है -

इण् प्रत्याहार का अर्थ है - इउण् / ऋऌक् / एओङ् / ऐऔच् / हयवरट् / लण् / अर्थात् - इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल।

१. जब अङ्ग के अन्त में 'इण्' हो, और उस 'इण्' के बाद 'इट्' न हो, तब उनसे परे आने वाले 'षीध्वम्' के 'ध्' को 'इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात्' सूत्र से नित्य 'ढ्' होता है। जैसे - कु + षीध्वम् = कुषीढ्वम् / कृ + षीध्वम् = कृषीढ्वम् / ने + षीध्वम् = नेषीढ्वम् / च्यो + षीध्वम् = च्योषीढ्वम् / आस्तीर् + षीध्वम् = आस्तीर्षीढ्वम् आदि।

विशेष - अनिट् हकारान्त धातु - अनिट् हकारान्त धातुओं के 'ह्' को चूँकि 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' होकर 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' हो जाता है। अतः ये हकारान्त धातु इण्णन्त होकर भी इण्णन्त नहीं रह जाते हैं।

इसलिये हकारान्त अनिट् धातुओं के इण्णन्त होने के बाद भी इनसे परे आने वाले 'षीध्वम्' के 'ध् को कभी भी 'ढ्' नहीं होता। वह् + षीध्वम् - वढ् + षीध्वम् - वक् + षीध्वम् = वक्षीध्वम् / गाह् + षीध्वम् - गाढ् + षीध्वम् - घाक् + षीध्वम् = घाक्षीध्वम् आदि।

२. जब अङ्ग के अन्त में 'इण्' हो, और उस 'इण्' के बाद 'इट्' हो, तब उनसे परे आने वाले 'षीध्वम्' के 'ध्' को 'विभाषेटः' सूत्र से विकल्प से 'ढ्' होता है। जैसे - शी + इट् + षीध्वम् = शयिषीढ्वम् - शयिषीध्वम् / लू + इट् + षीध्वम् = लविषीढ्वम् - लविषीध्वम् / अय् + इट् + षीध्वम् = अयिषीढ्वम् - अयिषीध्वम् / आस्तर् + इट् + षीध्वम् = आस्तरिषीढ्वम् - आस्तरिषीध्वम् आदि।

३. इण्णन्त से भिन्न जो धातु उनसे परे आने वाले 'षीध्वम्' के 'ध्' को 'ध्' ही रहता है। जैसे - पच् + षीध्वम् = पक्षीध्वम् / मुद् + षीध्वम् = मोदिषीध्वम् कम्प् + षीध्वम् = कम्पिषीध्वम् / एध् + षीध्वम् = एधिषीध्वम्।

आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने के लिये इन सारी विधियों को जानना आवश्यक है। अतः इन सारी विधियों को बुद्धिस्थ करके ही हम आगे चलें।

अब हम धातुओं का वर्गीकरण करें और इस क्रम से धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाना सीखें -

१. सारे अजन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के आत्मनेपदी रूप बनाने की विधि

आकारान्त तथा एजन्त धातु -

आकारान्त सारे धातु अनिट् ही होते हैं। इनसे अनिट् प्रत्यय लगाइये।

आकारान्त धातुओं के अन्तिम आ को कुछ मत कीजिये - दा + सीष्ट - दा + सीष्ट = दासीष्ट। एक धातु के पूरे रूप बनाकर देखें -

दासीष्ट	दासीयास्ताम्	दासीरन्
दासीष्ठाः	दासीयास्थाम्	दासीध्वम्
दासीय	दासीवहि	दासीमहि

आदेच उपदेशेऽशिति - एजन्त धातुओं के अन्तिम ए, ओ, ऐ, औ को आ आदेश होता है, शित् प्रत्यय परे न होने पर। जैसे - वेञ् - वा + सीष्ट = वासीष्ट, आदि।

अतः एजन्त धातुओं के अन्तिम ए, ओ, ऐ, औ को 'आ' बनाकर, इनके रूप भी आकारान्त धातुओं के समान ही बनाइये।

अनिट् इकारान्त / ईकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि

नी + सीष्ट / धातु के अन्तिम इ, ई को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके 'ए' बनाइये। ने + सीष्ट / उसके बाद 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से प्रत्यय के 'स' को षत्व करके 'ष' बनाइये - नेषीष्ट।

नी + सीध्वम् / ने + सीध्वम् / प्रत्यय के 'स' को षत्व करके - ने + षीध्वम् / यहाँ इण् के बाद 'षीध्वम्' का 'ध्' है। इसे 'इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात्' सूत्र से 'ढत्व' करके - नेषीढ्वम्। पूरे रूप इस प्रकार हैं -

नेषीष्ट	नेषीयास्ताम्	नेषीरन्
नेषीष्ठाः	नेषीयास्थाम्	नेषीढ्वम्
नेषीय	नेषीवहि	नेषीमहि

इसी प्रकार सारे अनिट् इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के रूप बनाइये।

इसके अपवाद - 'ली धातु' - विभाषा लीयतेः - जब 'ली' धातु को 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण होकर 'ए' होता है, तब लीङ् धातु के उस अन्तिम 'ए' को विकल्प से 'आ' आदेश होता है।

ला आदेश न होने पर - ली + सीष्ट - ले + सीष्ट = लेषीष्ट।

ला आदेश होने पर - ला + सीष्ट = लासीष्ट।

सेट् इकारान्त / ईकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि -

धातु के अन्तिम इ / ई को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से 'ए' गुण करके एचोऽयवायावः सूत्र से 'ए' को 'अय्' आदेश कीजिये -

श्रि + इषीष्ट - श्रे + इषीष्ट - श्रय् + इषीष्ट = श्रयिषीष्ट
शी + इषीष्ट - शे + इषीष्ट - शय् + इषीष्ट = शयिषीष्ट

सेट् इकारान्त 'श्रि' धातु के पूरे रूप इस प्रकार हैं -

श्रयिषीष्ट	श्रयिषीयास्ताम्	श्रयिषीरन्
श्रयिषीष्ठाः	श्रयिषीयास्थाम्	श्रयिषीढ्वम् / श्रयिषीध्वम्
श्रयिषीय	श्रयिषीवहि	श्रयिषीमहि

ठीक इसी प्रकार शी धातु से शयिषीष्ट आदि बनाइये।

अनिट् उकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि

धातु के अन्तिम उ, ऊ को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके 'ओ' बनाइये और आदेशप्रत्यययोः सूत्र से प्रत्यय के 'स' को षत्व करके 'ष' बनाइये - च्यु + सीष्ट - च्यो + सीष्ट = च्योषीष्ट।

इसके पूरे रूप इस प्रकार हैं -

च्योषीष्ट	च्योषीयास्ताम्	च्योषीरन्
च्योषीष्ठाः	च्योषीयास्थाम्	च्योषीढ्वम्
च्योषीय	च्योषीवहि	च्योषीमहि

इसके अपवाद - कुङ् धातु -

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् - गाङ् धातु तथा कुटादि धातुओं से परे आने वाले, ञित् णित् से भिन्न, सारे प्रत्यय, ङित्वत् मान लिये जाते हैं।

सीयुट् प्रत्यय भी ञित् णित् से भिन्न है, अतः इनसे परे आने पर, सीयुट् प्रत्यय ङित्वत् होता है। इसके लगने पर वे ही अङ्गकार्य होंगे, जो अङ्गकार्य ङित् प्रत्यय लगने पर किये जाते हैं। जैसे - कु + सीष्ट / क्ङिति च सूत्र से गुण निषेध करके - कुषीष्ट। पूरे रूप इस प्रकार बंने -

कुषीष्ट	कुषीयास्ताम्	कुषीरन्
कुषीष्ठाः	कुषीयास्थाम्	कुषीढ्वम्
कुषीय	कुषीवहि	कुषीमहि

सेट् उकारान्त / ऊकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि -

धातु के अन्तिम उ / ऊ को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से 'ओ' गुण करके, एचोऽयवायावः सूत्र से 'ओ' को 'अव्' आदेश कीजिये -

पू + इषीष्ट - पो + इषीष्ट - पव् + इषीष्ट = पविषीष्ट

सेट् ऊकारान्त 'पू' धातु के पूरे रूप इस प्रकार हैं -

पविषीष्ट	पविषीयास्ताम्	पविषीरन्
पविषीष्ठाः	पविषीयास्थाम्	पविषीढ्वम् / पविषीध्वम्
पविषीय	पविषीवहि	पविषीमहि

ऊर्णु धातु के लिये विशेष - ऊर्णु धातु उभयपदी है, तथा सेट् है।

विभाषोर्णोः - इससे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्यय विकल्प से ङित्वत् माने जाते हैं। अतः इससे परे आने वाला 'सीयुट्' प्रत्यय विकल्प से, ङित्वत् होता है। इसके ङित्वत् होने से वे ही अङ्गकार्य होते हैं, जो अङ्गकार्य ङित् प्रत्यय लगने पर किये जाते हैं।

'सीयुट्' प्रत्यय के ङिद्वत् न होने पर, 'पविषीष्ट' के समान ही -

ऊर्णविषीष्ट	ऊर्णविषीयास्ताम्	ऊर्णविषीरन्
ऊर्णविषीष्ठाः	ऊर्णविषीयास्थाम्	ऊर्णविषीढ्वम् / ऊर्णविषीध्वम्
ऊर्णविषीय	ऊर्णविषीवहि	ऊर्णविषीमहि

'सीयुट्' प्रत्यय के ङिद्वत् होने पर -

ऊर्णु धातु को क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध कीजिये। जैसे - ऊर्णु + इषीष्ट - गुण न होकर - ऊर्णु + इषीष्ट ही रहेगा।

अब प्रश्न उठेगा कि जब ऊर्णु को गुण नहीं होगा, तब इसे 'इषीष्ट' में जोड़ा कैसे जायेगा, क्योंकि यहाँ तो 'उ' इस अच् के बाद तो 'इ' यह अच् ही आ रहा है। इसकी व्यवस्था यह है कि जब भी अङ्ग को गुण का निषेध होता है, तब अङ्ग के अन्तिम इ को इयङ् (इय्) अन्तिम उ को उवङ् (उव्) आदेश होते हैं। इसके लिये सूत्र है -

अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ - अजादि कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर अङ्ग के अन्तिम इ को इयङ् (इय्) अन्तिम उ को उवङ् (उव्) होता है। जैसे - ऊर्णु + इषीष्ट - ऊर्णुव् + इषीष्ट = ऊर्णुविषीष्ट।

'सीयुट्' प्रत्यय के ङिद्वत् होने पर, इसके पूरे रूप इस प्रकार बने-

ऊर्णुविषीष्ट	ऊर्णुविषीयास्ताम्	ऊर्णुविषीरन्
ऊर्णुविषीष्ठाः	ऊर्णुविषीयास्थाम्	ऊर्णुविषीढ्वम् / ऊर्णुविषीध्वम्
ऊर्णुविषीय	ऊर्णुविषीवहि	ऊर्णुविषीमहि

अनिट् ह्रस्व ऋकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि

इडागम तथा कित्वातिदेश के आधार पर ऋकारान्त धातुओं के रूप तीन वर्गों में बनाइये -

१. वृङ्, वृञ् आत्मनेपदी धातु -

इडागम व्यवस्था - 'लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु' सूत्र से वृङ्, वृञ् धातुओं से परे आने वाले सीयुट् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है।

अतिदेश - उश्च - ह्रस्व ऋकारान्त अनिट् आत्मनेपदी धातुओं से परे आने वाले अनिट् सीयुट् तथा सिच् प्रत्यय कित्वत् माने जाते हैं।

तात्पर्य यह है कि ह्रस्व ऋकारान्त अनिट् आत्मनेपदी धातुओं से परे आने वाले सीयुट् प्रत्यय को जब इडागम होता है तब यह प्रत्यय कित् नहीं होता। और जब इडागम नहीं होता है, तब यह प्रत्यय कित् होता है।

इडागम करके, प्रत्यय के कित् न होने पर - धातु के अन्तिम ऋ / ॠ को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से 'अर्' गुण करके - वृ + इषीष्ट - वर् + इषीष्ट = वरिषीष्ट। इडागम होने पर पूरे रूप इस प्रकार बने -

वरिषीष्ट	वरिषीयास्ताम्	वरिषीरन्
वरिषीष्ठाः	वरिषीयास्थाम्	वरिषीढ्वम् / वरिषीध्वम्
वरिषीय	वरिषीवहि	वरिषीमहि

इडागम न करके प्रत्यय के कित् होने पर - अनिट् सीयुट् प्रत्यय को 'उश्च' सूत्र से कित्वत् मानने के कारण, 'क्ङिति च' सूत्र से इक् के स्थान पर गुण नहीं होता। जैसे - वृ + सीष्ट/ गुण निषेध करके, आदेशप्रत्यययोः सूत्र से प्रत्यय के स को षत्व करके = वृषीष्ट। पूरे रूप इस प्रकार बने -

वृषीष्ट	वृषीयास्ताम्	वृषीरन्
वृषीष्ठाः	वृषीयास्थाम्	वृषीढ्वम्
वृषीय	वृषीवहि	वृषीमहि

२. संयोगादि ॠकारान्त आत्मनेपदी धातु - 'ॠतश्च संयोगादेः' सूत्र से संयोगादि ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाले सीयुट् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है। ध्यान रहे कि कोई भी संयोगादि ॠकारान्त धातु आत्मनेपदी नहीं है, अतः परस्मैपदी धातु के ही भाववाच्य अथवा कर्मवाच्य का उदाहरण दे रहे हैं।

इडागम करके, प्रत्यय के कित् न होने पर - स्मृ + इषीष्ट / 'ॠ' को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - स्मरिषीष्ट बनाइये।

इडागम न करके, प्रत्यय के कित् होने पर - 'उश्च' सूत्र से प्रत्यय के कित् होने के कारण 'ॠ' को 'क्ङिति च' सूत्र से गुण निषेध करके, आदेशप्रत्यययोः सूत्र से प्रत्यय के 'स' को षत्व करके - स्मृषीष्ट बनाइये।

३. शेष ॠकारान्त आत्मनेपदी धातु -

शेष ॠकारान्त आत्मनेपदी धातुओं को इडागम नहीं होता - अतः 'उश्च' सूत्र से सीयुट् प्रत्यय के कित्वत् होने के कारण 'स्मृषीष्ट' के समान ही कृ + सीष्ट = कृषीष्ट आदि बनाइये।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्
कृषीष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीढ्वम्
कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि

इसी प्रकार सारे अनिट् ॠकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के रूप बनाइये।

दीर्घ ॠकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि

दीर्घ ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाले सीयुट् प्रत्यय को **'लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु'** सूत्र से विकल्प से इडागम होता है।

इडागम न होने पर - 'उश्च' सूत्र से ऋकारान्त धातुओं से परे आने वाले अनिट् सीयुट् प्रत्यय को कित्वत् मानकर 'क्ङिति च' सूत्र से गुण निषेध कीजिये - आस्तॄ + सीष्ट = आस्तॄ + सीष्ट /

'ॠत इद् धातोः' सूत्र से धातुओं के अन्त में आने वाले 'ॠ' के स्थान पर 'इर्' आदेश कीजिये - आस्तॄ + सीष्ट - आस्तिर् + सीष्ट /

अब देखिये, कि इसकी उपधा में 'इ' है तथा अन्त में 'र्' है और र् के बाद हल् है। अतः **'हलि च'** सूत्र से इनकी उपधा के 'इक्' को दीर्घ कीजिये - आस्तिर् + सीष्ट - आस्तीर् + सीष्ट = आस्तीर्षीष्ट।

इडागम न होने पर इसके पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

आस्तीर्षीष्ट	आस्तीर्षीयास्ताम्	आस्तीर्षीरन्
आस्तीर्षीष्ठाः	आस्तीर्षीयास्थाम्	आस्तीर्षीढ्वम्
आस्तीर्षीय	आस्तीर्षीवहि	आस्तीर्षीमहि

इडागम होने पर - धातु के अन्तिम ऋ / ॠ को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से 'अर्' गुण करके - आस्तॄ + इषीष्ट - आस्तर् + इषीष्ट = आस्तरिषीष्ट।

इडागम होने पर इसके पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

आस्तरिषीष्ट	आस्तरिषीयास्ताम्	आस्तरिषीरन्
आस्तरिषीष्ठाः	आस्तरिषीयास्थाम्	आस्तरिषीढ्वम् / आस्तरिषीध्वम्
आस्तरिषीय	आस्तरिषीवहि	आस्तरिषीमहि

यह अजन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के धातुरूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

२. सेट् हलन्त आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि

अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा - किसी भी शब्द के अन्तिम वर्ण के ठीक पहिले वाला वर्ण उपधा कहलाता है। जैसे चित् में अन्तिम वर्ण त् है, उसके ठीक पूर्व वाला 'इ' उपधा है। मुद् में अन्तिम वर्ण 'द्' है, उसके ठीक पूर्व वाला 'उ' उपधा

है। वृष् में अन्तिम वर्ण ष् है, उसके ठीक पूर्व वाला ऋ उपधा है।

इस प्रकार किसी भी हलन्त धातु को देखते ही यह जान लेना चाहिये कि उसमें उपधा क्या है ? अब हम सेट् हलन्त धातुओं के रूप इस क्रम से बनायें--

सेट् इगुपध धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि

जिनकी उपधा में लघु इ, लघु उ, लघु ऋ होते हैं, उन्हें इगुपध धातु कहते हैं।

पुगन्तलघूपधस्य च – धातु की उपधा में स्थित लघु इक् के स्थान पर गुण होता है, कित्, ङित्, गित् से भिन्न सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। अर्थात् सेट् हलन्त धातु की उपधा के लघु इ को ए / उपधा के लघु उ को ओ / उपधा के लघु ऋ को अर् बनाइये। जैसे -

मिद् + इषीष्ट - मिद् + इषीष्ट = मेदिषीष्ट
मुद् + इषीष्ट - मोद् + इषीष्ट = मोदिषीष्ट
वृत् + इषीष्ट - वर्त् + इषीष्ट = वर्तिषीष्ट

इसके अपवाद –

१. **विज् धातु - विज इट्** - तुदादि गण के विज् धातु से परे आने वाले सारे सेट् प्रत्यय ङित्वत् माने जाते हैं।

अतः सीयुट् प्रत्यय परे होने पर विज् धातु की उपधा को 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से गुण न करके 'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध कीजिये -

उद्विज् + इषीष्ट - उद्विज् + इषीष्ट = उद्विजिषीष्ट।

२. **गुर् धातु - गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्** - गुर् धातु कुटादि है। इससे परे आने वाले, ञित् णित् से भिन्न, सारे प्रत्यय, ङित्वत् मान लिये जाते हैं। अतः इससे परे आने वाला सीयुट् प्रत्यय ङित्वत् होगा।

क्ङिति च – कित्, ङित्, गित् प्रत्यय परे होने पर, धातुओं के अन्त में आने वाले इक् को न तो 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण होता है, और न ही उपधा में स्थित लघु इक् को 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से गुण होता है। जैसे - गुर् + इषीष्ट - गुर् + इषीष्ट = गुरिषीष्ट।

३. **गुह् धातु - ऊदुपधाया गोहः** - गुह् धातु की उपधा के 'उ' को दीर्घ होता है अजादि प्रत्यय परे होने पर। इस सूत्र से अजादि प्रत्यय परे होने

पर गुह् धातु की उपधा के उ को गुण न करके दीर्घ कीजिये -

गुह् + इषीष्ट - गूह् + इषीष्ट = गूहिषीष्ट।

इगुपध से बचे हुए सेट् हलन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि

इदुपध, उदुपध, ऋदुपध धातुओं को, छोड़कर, अब जितने भी हलन्त धातु बचे, उन्हें आप ज्यों का त्यों रहने दें, उनमें कोई परिवर्तन न करें। यथा-

क्लीब्	+	इषीष्ट	- क्लीब्	+	इषीष्ट	=	क्लीबिषीष्ट
पूय्	+	इषीष्ट	- पूय्	+	इषीष्ट	=	पूयिषीष्ट
बाध्	+	इषीष्ट	- बाध्	+	इषीष्ट	=	बाधिषीष्ट
एध्	+	इषीष्ट	- एध्	+	इषीष्ट	=	एधिषीष्ट

इसके अपवाद -

ग्रह् धातु - ग्रहोऽलिटि दीर्घः - ग्रह् धातु से परे आने वाले इट् को दीर्घ होता है, लिट् से भिन्न परे होने पर। ग्रह् + इषीष्ट = 'ग्रहोऽलिटि दीर्घः' इस सूत्र से इट् को दीर्घ करके ग्रह् + ईषीष्ट= ग्रहीषीष्ट।

यह सेट् हलन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के धातुरूप बनाने की विधि पूर्ण हुई। अब अनिट् हलन्त तथा वेट् हलन्त आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनायें -

३. अनिट् तथा वेट् हलन्त आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि

अब हमारे सामने १०२ हलन्त अनिट् धातु बचे हैं, इनमें से जो आत्मनेपदी धातु हैं, केवल उन्हीं में ये 'सीयुट्' से बने हुए अनिट् प्रत्यय लगेंगे। ये धातु इस प्रकार हैं -

रिच्	मुच्	विच्	सिच्	निज्	भुज्	विज्	युज्	दिश्
विष्	खिद्	छिद्	तुद्	भिद्	बुध्	युध्	रुध्	तिप्
लिप्	गृह्	गुह्	दिह्	दुह्	त्विष्	रञ्ज्	स्वञ्ज्	पच्
भज्	यज्	पद्	हद्	बन्ध्	मन्	रभ्	लभ्	वह

सं + गम्।

इनके अलावा जो वेट् धातु हैं, उनमें से भी जो आत्मनेपदी धातु हैं, उनसे ये 'सीयुट्' से बने हुए अनिट् प्रत्यय विकल्प से लग सकते हैं। ये धातु

इस प्रकार हैं -

गृहू क्षमू त्रपूष् क्षमूष् गाहू गुहू स्यन्दू कृपू

लिङ्सिचावात्मनेपदेषु - इन अनिट् हलन्त आत्मनेपदी धातुओं में से जिन धातुओं की उपधा में इक् है, और इक् के बाद हल् है, ऐसे अनिट् आत्मनेपदी धातुओं से परे जब अनिट् सीयुट् प्रत्यय आता है, तब उसे कित्वत् मान लिया जाता है।

कित्वत् होने पर इनकी उपधा को 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से प्राप्त होने वाला गुण न होकर 'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध होता है।

हमने धातुओं से 'सीयुट्' प्रत्यय परे होने पर होने वाले, प्रमुख अङ्गकार्य बतला दिये हैं। अतः अब हम अङ्गकार्य तथा सन्धिकार्य करके इन हलन्त अनिट् तथा हलन्त वेट् धातुओं के रूप दे रहे हैं।

परन्तु ध्यान रहे कि इन सारे अङ्गकार्यों के हो चुकने के बाद ही, सन्धिकार्य किये जायें।

हलन्त अनिट् / वेट् आत्मनेपदी धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप

कवर्गान्त धातु

चूँकि कोई भी अनिट् कवर्गान्त धातु आत्मनेपदी नहीं है, अतः शक् धातु के आशीर्लिङ् लकार का रूप भावकर्म में दे रहे हैं -

अनिट् ककारान्त धातु - सकारादि प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्त में आने वाले क्, ख्, ग्, घ्, को, 'खरि च' सूत्र से कवर्ग का प्रथमाक्षर 'क्' बनाइये। प्रत्यय के 'स्' को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से 'ष्' बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

धातु + प्रत्यय	अङ्गादि कार्य करने पर -	सन्धि कार्य करने पर बना हुआ धातुरूप
शक् + सीष्ट -	शक् + सीष्ट -	शक् + षीष्ट - शक्षीष्ट

चवर्गान्त धातु

अनिट् चकारान्त धातु - सकारादि प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्त में आने वाले च्, छ्, ज्, झ् को पहिले 'चोः कुः' सूत्र से कुत्व करके, क्, ख्, ग्, घ्, बनाइये। उसके बाद उस क्, ख्, ग्, घ्, को, 'खरि च' सूत्र से कवर्ग

का प्रथमाक्षर 'क्' बनाइये। प्रत्यय के 'स्' को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से 'ष्' बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

अनिट् चकारान्त धातु -

रिच् + सीष्ट - रिक् + सीष्ट - रिक् + षीष्ट = रिक्षीष्ट
मुच् + सीष्ट - मुक् + सीष्ट - मुक् + षीष्ट = मुक्षीष्ट
विच् + सीष्ट - विक् + सीष्ट - विक् + षीष्ट = विक्षीष्ट
सिच् + सीष्ट - सिक् + सीष्ट - सिक् + षीष्ट = सिक्षीष्ट
पच् + सीष्ट - पक् + सीष्ट - पक् + षीष्ट = पक्षीष्ट

अनिट् जकारान्त धातु -

निज् + सीष्ट - निग् + सीष्ट - निक् + षीष्ट = निक्षीष्ट
भुज् + सीष्ट - भुग् + सीष्ट - भुक् + षीष्ट = भुक्षीष्ट
विज् + सीष्ट - विग् + सीष्ट - विक् + षीष्ट = विक्षीष्ट
युज् + सीष्ट - युग् + सीष्ट - युक् + षीष्ट = युक्षीष्ट

अत्यावश्यक - अनिट् प्रत्यय परे होने पर, यह ध्यान रखें कि जिन धातुओं के बीच में वर्ग के पञ्चमाक्षर हों, उन्हें आप पहिले 'न्' बना लें। उसके बाद उस 'न्' को नश्चापदान्तस्य झलि सूत्र से अनुस्वार बना लें। जैसे - रञ्ज् + सीष्ट - रन्ज् + सीष्ट - रंज् + सीष्ट / भञ्ज् + सीष्ट - भंज् + सीष्ट/ स्वञ्ज् + सीष्ट - स्वंज् + सीष्ट आदि। उसके बाद ही सन्धि करें।

रञ्ज् + सीष्ट - रंग् + सीष्ट - रंक् + षीष्ट = रङ्क्षीष्ट
स्वञ्ज् + सीष्ट - स्वंग् + सीष्ट - स्वंक् + षीष्ट = स्वङ्क्षीष्ट
भज् + सीष्ट - भग् + सीष्ट - भक् + षीष्ट = भक्षीष्ट
यज् + सीष्ट - यग् + सीष्ट - यक् + षीष्ट = यक्षीष्ट

तवर्गान्त धातु

सकारादि प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्त में आने वाले, त् थ् द् ध् को 'खरि च' सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर त् बनाइये। प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये।

अनिट् दकारान्त धातु -

खिद् + सीष्ट - खिद् + सीष्ट - खित् + सीष्ट = खित्सीष्ट
छिद् + सीष्ट - छिद् + सीष्ट = छित् + सीष्ट = छित्सीष्ट

पद् + सीष्ट - पद् + सीष्ट - पत् + सीष्ट = पत्सीष्ट
हद् + सीष्ट - हद् + सीष्ट - हत् + सीष्ट = हत्सीष्ट
तुद् + सीष्ट - तुद् + सीष्ट - तुत् + सीष्ट = तुत्सीष्ट
भिद् + सीष्ट - भिद् + सीष्ट - भित् + सीष्ट = भित्सीष्ट

अनिट् धकारान्त धातु -

युध् + सीष्ट - युध् + सीष्ट - युत् + सीष्ट = युत्सीष्ट
रुध् + सीष्ट - रुध् + सीष्ट - रुत् + सीष्ट = रुत्सीष्ट

विशेष अनिट् धकारान्त धातु -

बुध्, बन्ध् धातु - जिन धातुओं के आदि में 'ज' को छोड़कर वर्ग का कोई सा भी तृतीयाक्षर हो, तथा अन्त में वर्ग का चतुर्थाक्षर हो, उस धातु के आदि में स्थित तृतीयाक्षर को, **'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः'** सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर बना दीजिये। उसके बाद इनके अन्तिम 'ध्' को 'खरि च' सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर 'त्' बनाइये। जैसे -

बुध् + सीष्ट - भुध् + सीष्ट - भुत् + सीष्ट = भुत्सीष्ट

अनिट् नकारान्त धातु -

अपदान्त 'न्' को 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से अनुस्वार बनाइये। प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये।

मन् + सीष्ट - मं + सीष्ट = मंसीष्ट

पवर्गान्त धातु

प्, फ्, ब्, भ्, को 'खरि च' सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर प् बनाइये। प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये।

अनिट् पकारान्त धातु -

तिप् + सीष्ट - तिप् + सीष्ट = तिप्सीष्ट
लिप् + सीष्ट - लिप् + सीष्ट = लिप्सीष्ट

अनिट् भकारान्त धातु -

रभ् + सीष्ट - रप् + सीष्ट = रप्सीष्ट
लभ् + सीष्ट - लप् + सीष्ट = लप्सीष्ट

अनिट् मकारान्त धातु -

अपदान्त 'म्' को 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से अनुस्वार बनाइये।

प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये।

रम् + सीष्ट - रं + सीष्ट = रंसीष्ट

विशेष अनिट् मकारान्त गम् धातु -

समो गम्यृच्छिप्रच्छिस्वरत्यर्तिश्रुविदिभ्यः - सम् उपसर्गपूर्वक अकर्मक गम् धातु, तथा ऋच्छ्, प्रच्छ्, स्वृ, ऋ, श्रु, विद् धातुओं से आत्मनेपद होता है। जैसे - सङ्गच्छते (साथ साथ चलता है), समृच्छते (प्राप्त होता है।) आदि।

वा गमः - जब गम् धातु आत्मनेपदी होता है तब उससे परे आने वाले अनिट् सीयुट् तथा सिच् प्रत्यय विकल्प से कित्वत् मान लिये जाते हैं।

जब गम् से परे आने वाला अनिट् सीयुट् प्रत्यय कित्वत् मान लिया जाता है तब -

अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति सूत्र से गम् के अनुनासिक म् का लोप होता है।

संगम् + सीष्ट - संग + सीष्ट = संगसीष्ट

जब गम् से परे आने वाला अनिट् सीयुट् प्रत्यय कित्वत् नहीं माना जाता है, तब अनुनासिक म् का लोप भी नहीं होता।

संगम् + सीष्ट = संगम् + सीष्ट = संगं + सीष्ट = संगंसीष्ट

अनिट् शकारान्त धातु -

सकारादि प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले श्, को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये। इस 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाइये तथा प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

दिश् + सीष्ट - दिष् + सीष्ट - दिक् + षीष्ट = दिक्षीष्ट

अनिट् षकारान्त धातु -

सकारादि प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले ष् को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाइये। प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

त्विष् + सीष्ट - त्विष् + सीष्ट - त्विक् + षीष्ट = त्विक्षीष्ट

विष् + सीष्ट - विष् + सीष्ट - विक् + षीष्ट = विक्षीष्ट

हकारान्त धातु - इनके तीन वर्ग बनाइये -

१. गकारादि हकारान्त धातु - इन धातुओं के बाद सकारादि प्रत्यय आने पर, इन धातुओं के अन्तिम 'ह्' को, 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाइये - गाह् + सीष्ट - गाढ् + सीष्ट / अब धातु के आदि में जो वर्ग का तृतीयाक्षर 'ग' है, उसे **'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः'** सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर 'घ' बना दीजिये - घाढ् + सीष्ट / अब 'षढोः कः सि' सूत्र से, 'ढ्' को 'क्' बनाइये। प्रत्यय के स् को ष् बनाइये। जैसे -

गाह् + सीष्ट - घाढ् + सीष्ट - घाक् + षीष्ट = घाक्षीष्ट
गृह् + सीष्ट - घृढ् + सीष्ट - घृक् + षीष्ट = घृक्षीष्ट
गुह् + सीष्ट - घुढ् + सीष्ट - घुक् + षीष्ट = घुक्षीष्ट

विशेष - गाह् और गृह्, गुह् धातु वेट् हैं इसलिये उनसे सेट् प्रत्यय लगाकर गाहिषीष्ट, गर्हिषीष्ट, गूहिषीष्ट भी बना सकते हैं, यह ध्यान रखें।

२. दकारादि हकारान्त धातु, जैसे - दुह्, दिह् आदि -

इनके ह् को **'दादेर्धातोर्घः'** सूत्र से घ् बनाइये। दुह् + सीष्ट - दुघ् + सीष्ट / **'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः'** सूत्र से धातु के 'आदि द' को उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर 'ध्' बनाइये - दुघ् + सीष्ट - धुघ् + सीष्ट / **'खरि च'** सूत्र से घ् को चर्त्व कीजिये - धुक् + सीष्ट = धुक्षीष्ट।

दिह् + सीष्ट - धिघ् + सीष्ट - धिक् + षीष्ट = धिक्षीष्ट
दुह् + सीष्ट - धुघ् + सीष्ट - धुक् + षीष्ट = धुक्षीष्ट

३. शेष हकारान्त धातु - दकारादि हकारान्त तथा गकारादि हकारान्त को छोड़कर, अब जो हकारान्त धातु बचे, उनके बाद सकारादि प्रत्यय आने पर इनके अन्तिम 'ह्' को 'हो ढः' सूत्र से ढ् बनाकर, 'षढोः कः सि' सूत्र से, क् बनाइये। प्रत्यय के स् को ष् बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

वह् + सीष्ट - वढ् + सीष्ट - वक् + षीष्ट = वक्षीष्ट

यह भ्वादि से क्र्यादिगण तक के धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई। अब चुरादिगण के तथा अन्य प्रत्ययान्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि बतला रहे हैं -

चुरादिगण के धातुओं तथा णिजन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि

चुरादिगण के धातुओं में पहिले स्वार्थिक णिच् प्रत्यय लगाकर ही उनमें

कोई भी अन्य प्रत्यय लगाया जाता है। अतः ध्यान रहे कि चुरादिगण के धातुओं में किसी भी लकार के प्रत्यय सीधे न जोड़ दिये जायें।

इसी प्रकार जब प्रेरणा अर्थ अर्थात् प्रयोजक व्यापार वाच्य हो तब किसी भी धातु से पहिले णिच् प्रत्यय लगा देना चाहिये। यहाँ भी णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद ही धातु से अन्य कोई प्रत्यय लगाना चाहिये।

इसका अर्थ यह हुआ कि यहाँ हमें दो कार्य करना पड़ते हैं -

१. धातु + णिच् को जोड़कर णिजन्त धातु बनाना।

२. णिजन्त धातु में आशीर्लिङ् लकार के प्रत्यय लगाना।

धातु से णिच् प्रत्यय लगाने की विस्तृत विधि, हमने णिजन्त पाठ में दी है, तथा संक्षिप्त विधि लट् लकार में ६५ से ७४ पृष्ठ पर दी है, अतः उसे दोबारा नहीं बतलायेंगे। उसे वहीं देखिये।

धातुओं में णिच् को जोडकर आप पायेंगे कि धातु + णिच् को जोड़ने के बाद जो णिजन्त धातु बनेंगे, ये सदा 'अनेकाच् इकारान्त' ही होंगे। अनेकाच् होने के कारण ये सेट् होंगे। अतः इनके रूप 'सेट् अनेकाच् इकारान्त' धातुओं के समान ही बनेंगे। जैसे - चुर् + णिच् - चोरि / चोरि + इषीष्ट - **सार्वधातुकार्धधातुकयोः** सूत्र से गुण करके - चोरे + इषीष्ट / **एचोऽयवायावः** सूत्र से इस 'ए' को अयादेश करके - चोरय् + इषीष्ट = चोरयिषीष्ट।

इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

चोरयिषीष्ट	चोरयिषीयास्ताम्	चोरयिषीरन्
चोरयिषीष्ठाः	चोरयिषीयास्थाम्	चोरयिषीध्वम्
चोरयिषीय	चोरयिषीवहि	चोरयिषीमहि

इसी प्रकार सारे णिजन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाइये।

सन्नन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि

धातु से सन् प्रत्यय लगाने की विस्तृत विधि, हमने सन्नन्त पाठ में दी है, उसे वहीं देखिये। सारे सन्नन्त धातुओं के अन्त में सदा 'अ' ही होता है अर्थात् वे सदा अदन्त ही होते हैं।

अतो लोपः - धातुओं के अन्त में आने वाले 'अ' का लोप होता है कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर।

आशीर्लिङ् लकार के सीयुट् प्रत्यय से बने हुए प्रत्यय परे होने पर **अतो**

लोपः सूत्र से सन्नन्त धातुओं के 'अ' का लोप कीजिये। यथा - बिबाधिष + इषीष्ट / 'अ' का लोप करके - बिबाधिष् + इषीष्ट = बिबाधिषिषीष्ट। सारे सन्नन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप इसी प्रकार बनाइये।

यङन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि

धातुओं से यङ् प्रत्यय लगाने की विस्तृत विधि, हमने यङन्त पाठ में दी है, उसे वहीं देखिये। सारे यङन्त धातुओं के अन्त में सदा 'अ' ही होता है अर्थात् वे सदा अदन्त ही होते हैं।

यङ् के पूर्व में अच् होने पर आशीर्लिङ् लकार के प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

अतो लोपः - धातुओं के अन्त में आने वाले 'अ' का लोप होता है कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर।

आशीर्लिङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर 'अतो लोपः' सूत्र से यङन्त धातुओं के अन्तिम 'अ' का लोप कीजिये। यथा - नेनीय + इषीष्ट / अतो लोपः से अन्तिम अ का लोप करके - नेनीय् + इषीष्ट = नेनीयिषीष्ट, आदि बनाइये।

यङ् के पूर्व में हल् होने पर आशीर्लिङ् लकार के प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

यस्य हलः - हल् से उत्तर आने वाले 'य' का लोप होता है, आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर।

देखिये कि यङ् के पूर्व में यदि हल् हो तब 'यस्य हलः' सूत्र से 'य' का लोप करके इस प्रकार रूप बनाइये - बाभ्रश्य + इषीष्ट / यस्य हलः से अन्तिम य का लोप करके - बाभ्रश् + इषीष्ट = बाभ्रशिषीष्ट।

नेनिज्य + इषीष्ट / यस्य हलः से अन्तिम य का लोप करके - नेनिज् + इषीष्ट = नेनिजिषीष्ट।

इसी प्रकार वेविध्य = वेविधिषीष्ट / मोमुद्य = मोमुदिषीष्ट आदि बनाइये।

सारे यङन्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप इसी प्रकार बनाइये।

यह समस्त धातुओं के आशीर्लिङ् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।



सप्तम पाठ

समस्त धातुओं के लुट् लकार के धातुरूप बनाने की विधि

अनद्यतने लुट् - न विद्यते अद्यतनं यस्मिन्। जिस काल में अद्यतन काल शामिल न हो, उसे अनद्यतन काल कहते हैं।

बीती हुई रात्रि के अन्तिम प्रहर से लेकर आने वाली रात्रि के प्रथम प्रहर तक का काल अद्यतन काल कहलाता है। यह काल जिसमें सम्मिलित न हो उसे अनद्यतन काल कहते हैं। ऐसे अनद्यतन भविष्यत् काल में लुट् लकार के प्रत्यय लगाये जाते हैं। जैसे -

देवदत्तः श्वः कर्ता। श्वः भोक्ता। देवदत्त कल करेगा, कल खायेगा आदि।

ध्यान दीजिये कि धातु दो प्रकार के होते हैं। सेट् तथा अनिट्। ये आगे बतलाये जा रहे हैं।

चूँकि धातु दो प्रकार के होते हैं, अतः प्रत्यय भी दो प्रकार के होते हैं। सेट् तथा अनिट्। लुट् लकार के ये प्रत्यय बतलाये जा रहे हैं।

जब धातु अनिट् हो तब उसके लुट् लकार के रूप बनाने के लिये अनिट् प्रत्यय ही लगाइये -

अनिट् धातुओं से लगने वाले लुट् लकार के अनिट् प्रत्यय

	परस्मैपदी अनिट् प्रत्यय			**आत्मनेपदी अनिट् प्रत्यय**		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ता	तारौ	तारः	ता	तारौ	तारः
म. पु.	तासि	तास्थः	तास्थ	तासे	तासाथे	ताध्वे
उ. पु.	तास्मि	तास्वः	तास्मः	ताहे	तास्वहे	तास्महे

इनके आदि में इट् के न बैठे रहने के कारण, लुट् लकार के ये प्रत्यय अनिट् प्रत्यय हैं। जब धातु अनिट् हो, तभी उसमें ये प्रत्यय लगाइये।

जब धातु सेट् हो तब इन्हीं अनिट् प्रत्ययों के आदि में इट् (इ) जोड़ दीजिये। अर्थात् 'ता' आदि को 'इता' आदि बना दीजिये। जैसे -

सेट् धातुओं से लगने वाले लुट् लकार के सेट् प्रत्यय

	परस्मैपदी सेट् प्रत्यय			आत्मनेपदी सेट् प्रत्यय		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	इता	इतारौ	इतारः	इता	इतारौ	इतारः
म. पु.	इतासि	इतास्थः	इतास्थ	इतासे	इतासाथे	इताध्वे
उ. पु.	इतास्मि	इतास्वः	इतास्मः	इताहे	इतास्वहे	इतास्महे

लुट् लकार के इन सारे प्रत्ययों के आदि में इट् = इ, बैठा है। आदि में इट् के बैठे रहने के कारण ये प्रत्यय सेट् प्रत्यय कहलाते हैं। जब धातु सेट् हो तभी उसमें ये प्रत्यय लगाइये।

लुट् लकार के ये सारे के सारे ३६ प्रत्यय 'तास्' प्रत्यय से बने हुए हैं। अतः हम इन सारे प्रत्ययों को तास् प्रत्यय ही कहेंगे। इन प्रत्ययों को धातुओं में लगाने से लुट् लकार के धातुरूप बन जाते हैं।

धातुओं में 'तास्' प्रत्यय लगाकर धातुरूप बनाने का भी जो कार्य होता है उसके अनेक खण्ड होते हैं। ये खण्ड इस प्रकार हैं -

इडागम विधि, धात्वादेश, अतिदेश, अङ्गकार्य, तथा सन्धि। इन्हें हम एक एक करके जानेंगे -

इडागम विधि

किस धातु से सेट् प्रत्यय लगें और किस धातु से अनिट् प्रत्यय लगें, यह जानने के लिये, सेट् अनिट् धातु पहिचानने की विधि जानना आवश्यक है। इस विधि को हम विस्तार से इडागम प्रकरण में बतला चुके हैं, वहीं देखें। सुविधा के लिये यहाँ पुनः संक्षेप में बतला रहे हैं।

विशेष - ध्यान रहे कि अनेकाच् धातु सेट् ही होते हैं।

उपदेशावस्था में एकाच् अर्थात् एक स्वर वाले एकाच् धातु ही अनिट् हो सकते हैं, किन्तु सब के सब एकाच् धातु नहीं। इनमें भी, जो एकाच् धातु अनुदात्त हों, वे ही अनिट् हो सकते हैं। एकाच् तो हम देखकर पहिचान लेंगे, किन्तु अनुदात्त कैसे पहिचानेंगे, इसके लिये इन अनिट् धातुओं को पहिचानने की विधि बतला रहे हैं। इन अनिट् धातुओं से ही आप अनिट् प्रत्यय लगाइये।

अब हम एकाच् धातुओं के अन्तिम वर्ण को क्रम से रखकर, धातुओं का सेट्, अनिट् विभाजन दे रहे हैं, इन्हें याद करके जानिये कि कौन से धातु सेट्

हैं और कौन से अनिट्।

सेट् तथा अनिट् अजन्त धातुओं को पहिचानने की विधि

१. एकाच् आकारान्त धातु - सारे एकाच् आकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं। (अनेकाच् होने से दरिद्रा धातु सेट् होता है।)

२. एकाच् ह्रस्व इकारान्त धातु - इनमें श्वि, श्रि धातु सेट् होते हैं तथा इनके अलावा, शेष सारे एकाच् ह्रस्व इकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं।

३. एकाच् दीर्घ ईकारान्त धातु - इनमें डीङ्, शीङ् धातु सेट् होते हैं तथा इनके अलावा, शेष सारे एकाच् दीर्घ ईकारान्त धातु अनिट् होते हैं।

४. एकाच् ह्रस्व उकारान्त धातु - इनमें स्नु, नु, क्षु, यु, रु, क्ष्णु ये छह धातु सेट् होते हैं तथा इन ६ को छोड़कर, शेष सारे एकाच् उकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं।

५. एकाच् दीर्घ ऊकारान्त धातु - इनमें सू, धू, वेट् होते हैं, शेष सारे एकाच् ऊकारान्त धातु सेट् ही होते हैं।

६. एकाच् ह्रस्व ऋकारान्त धातु - इनमें वृङ्, वृञ् सेट् होते हैं। स्वृ धातु वेट् होता है। शेष सारे एकाच् ह्रस्व ऋकारान्त धातु अनिट् होते हैं। अनेकाच् होने से 'जागृ' धातु सेट् है।

७. एकाच् दीर्घ ॠकारान्त धातु - ये सभी सेट् होते हैं।

८. एजन्त धातु - जिनके अन्त में ए, ओ, ऐ, औ, हों, उन्हें एजन्त धातु कहते हैं। ये धातु आर्धधातुक प्रत्यय परे रहने पर 'आदेच उपदेशेऽशिति' सूत्र से आकारान्त बन जाते हैं। जैसे - गै = गा, धे = धा, ग्लै = ग्ला, ध्यै = ध्या आदि। ये सभी अनिट् ही होते हैं।

यह एकाच् अजन्त धातुओं में से सेट् तथा अनिट् धातुओं को अलग अलग पहिचानने की विधि पूर्ण हुई। अब एकाच् हलन्त धातुओं में से, सेट् तथा अनिट् धातुओं को कैसे अलग अलग पहिचाना जाये, यह विधि बतला रहे हैं।

सेट् तथा अनिट् हलन्त धातुओं को पहिचानने की विधि

नीचे १०२ हलन्त एकाच् धातु दिये जा रहे हैं। ये सब उपदेशावस्था में एकाच् तथा अनुदात्त होने के कारण अनिट् हैं। इनके अतिरिक्त जो भी एकाच् हलन्त धातु आप पाएँगे, वे सब सेट् ही होंगे, यह जानना चाहिए।

१. एकाच् ककारान्त धातुओं में - स्वादिगण का शक्लृ शक्तौ, यह १ धातु ही अनिट् होता है। शक् + ता = शक्ता। शेष सारे ककारान्त धातु सेट् होते हैं। अत: दिवादिगण का शक् धातु सेट् है।

२. **एकाच् चकारान्त धातुओं में** - पच्, मुच्, रिच्, वच्, विच्, सिच्, ये ६ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे चकारान्त धातु सेट् होते हैं।

३. **एकाच् छकारान्त धातुओं में** - प्रच्छ्, यह १ धातु अनिट् होता है। शेष सारे छकारान्त धातु सेट् होते हैं।

४. **एकाच् जकारान्त धातुओं में** - त्यज्, निजिर्, भज्, भञ्ज्, भुज्, भ्रस्ज्, मस्ज्, यज्, युज्, रुज्, रञ्ज्, विजिर् (रुधादि), स्वञ्ज्, सञ्ज्, सृज् - ये १५ धातु अनिट् होते हैं। शेष सभी जकारान्त धातु सेट् होते हैं।

५. **एकाच् दकारान्त धातुओं में** - अद्, क्षुद्, खिद्, छिद्, तुद्, नुद्, पद् (दिवादिगण), भिद्, विद् (दिवादिगण), विद् (रुधादिगण), शद्, सद्, स्विद्, स्कन्द्, और हद् ये १५ धातु अनिट् होते हैं। शेष सभी दकारान्त धातु सेट् होते हैं।

विशेष - दिवादिगण तथा रुधादिगण के विद् धातु अनिट् होते हैं और अदादिगण तथा तुदादिगण के विद् धातु सेट् होते हैं।

६. **एकाच् धकारान्त धातुओं में** - क्रुध्, क्षुध्, बुध् (दिवादिगण), बन्ध्, युध्, रुध्, राध्, व्यध्, साध्, शुध्, सिध् (दिवादिगण) ये ११ धातु अनिट् होते हैं। शेष सभी धकारान्त धातु सेट् होते हैं।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि बुध् धातु दो हैं। इनमें से भ्वादिगण का बुध् धातु सेट् होता है। दिवादिगण का बुध् धातु अनिट् होता है।

७. **एकाच् नकारान्त धातुओं में** - मन् (दिवादिगण) तथा हन्, ये २ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे नकारान्त धातु सेट् होते हैं।

८. **एकाच् पकारान्त धातुओं में** - आप्, छुप्, क्षिप्, तप्, तिप्, तृप् (दिवादिगण), दृप् (दिवादिगण), लिप्, लुप्, वप्, शप्, स्वप्, सृप्, ये १३ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे पकारान्त धातु सेट् होते हैं।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि तृप् धातु तीन हैं। इनमें से स्वादिगण तथा तुदादिगण के तृप् धातु सेट् होते हैं। दिवादिगण का तृप् धातु वेट् होता है।

९. **एकाच् भकारान्त धातुओं में** - यभ्, रभ्, लभ्, ये ३ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे भकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१०. एकाच् मकारान्त धातुओं में - गम्, नम्, यम्, रम्, ये ४ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे मकारान्त धातु सेट् होते हैं।

११. एकाच् शकारान्त धातुओं में - क्रुश्, दंश्, दिश्, दृश्, मृश्, रिश्, रुश्, लिश्, विश्, स्पृश्, ये १० धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे शकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१२. एकाच् षकारान्त धातुओं में - कृष्, त्विष्, तुष्, द्विष्, दुष्, पुष् (दिवादि गण), पिष्, विष्, शिष्, शुष्, श्लिष् (दिवादिगण), ये ११ धातु अनिट् होते हैं। शेष सभी षकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१३. एकाच् सकारान्त धातुओं में - वस्, घस्, ये २ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे सकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१४. एकाच् हकारान्त धातुओं में - दह्, दिह्, दुह्, नह्, मिह्, रुह्, लिह्, वह्, ये ८ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे हकारान्त धातु सेट् होते हैं।

सेट्, अनिट् के अलावा कुछ धातु वेट् भी होते हैं, जिनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को भी विकल्प से इट् का आगम होता है।

ये वेट् धातु इस प्रकार हैं -

वेट् धातु

स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा - स्वृ धातु, अदादिगण का सू धातु, दिवादिगण का सू धातु, स्वादि तथा क्र्यादिगण का धूञ् धातु तथा सारे ऊदित् धातुओं से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

ऊदित् धातु - 'ऊदित्' का अर्थ होता है, ऐसे धातु जिनमें 'ऊ' की इत् संज्ञा हुई हो। धातुपाठ में पढ़े गये सारे 'ऊदित् धातु' इस प्रकार हैं -

अक्षू	तक्षू	त्वक्षू	गृहू	मृजू	अशू	वृहू	तृन्हू
क्षमू	क्लिदू	अञ्जू	क्लिशू	षिधू	त्रपूष्	क्षमूष्	गाहू
गुहू	स्यन्दू	कृपू	गुपू	ओव्रश्चू	तृहू	स्तृहू	तञ्चू

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि स्वादि, क्र्यादि तथा चुरादिगण में धूञ् कम्पने धातु हैं। तुदादिगण में धू विधूनने धातु है। इनमें से स्वादिगण तथा क्र्यादिगण के धूञ् कम्पने धातु ही वेट् होते हैं। इनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है। तुदादिगण का धू विधूनने धातु

तथा चुरादिगण का धूञ् कम्पने धातु सेट् होता है। इनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को नित्य इडागम होता है।

रधादिभ्यश्च - रध्, नश्, तृप्, दृप्, द्रुह्, मुह्, स्निह्, स्नुह्, ये ८ धातु वेट् होते हैं। इन आठ धातुओं से परे आने वाले सेट् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

निरः कुषः - निर् उपसर्गपूर्वक कुष् धातु से परे आने वाले सेट् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम हाता है।

इस प्रकार ३६ धातु वेट् हैं। इन ३६ वेट् धातुओं से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि जहाँ एक आकृति के अनेक धातु हैं, वहाँ हमने स्पष्ट निर्देश करके कोष्ठक में उस गण का नाम लिख दिया है जिस गण का धातु अनिट् होता है। इससे यह जानना चाहिये कि जिसका नाम नहीं लिखा है वह सेट् ही है। इन अनिट् और वेट् धातुओं के अलावा जितने भी हलन्त धातु हैं वे सब के सब सेट् ही हैं, यह जानना चाहिये।

यह सेट्, अनिट् तथा वेट् धातुओं को पहिचानने की औत्सर्गिक अर्थात् मूलभूत सामान्य व्यवस्था है। इसे कण्ठस्थ कर लीजिये।

उसके अलावा तास् प्रत्यय के इडागम के लिये ये विशेष विधियाँ बतलाई जा रही हैं, इन्हें भी ध्यान रखें -

तास् प्रत्यय के लिये विशेष इडागम व्यवस्था

क्लृप् (कल्प् - कल्पते) यह धातु यद्यपि आत्मनेपदी है किन्तु **'लुटि च क्लृपः'** सूत्र से यह स्य, सन् और तास् प्रत्यय परे होने पर विकल्प से परस्मैपदी हो जाता है।

तासि च क्लृपः - क्लृप् धातु से परे आने वाले परस्मैपदसंज्ञक 'तास्' प्रत्यय को तथा परस्मैपदसंज्ञक सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय को इडागम नहीं होता।

केवल आत्मनेपदी 'तास्' प्रत्यय को तथा आत्मनेपदी सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय को इडागम होता है।

परस्मैपद में इडागम न होकर - कल्प्ता / आत्मनेपद में इडागम होकर - कल्पिता।

तीषसहलुभरुषरिषः - दिवादिगण के इष् धातु तथा सह्, लुभ्, रुष्, रिष्

इन ५ धातुओं से परे आने वाले तकारादि आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

इष् - एष्टा / एषिता रुष् - रोष्टा / रोषिता
सह् - सहिता / सोढा रिष् - रेष्टा / रेषिता
लुभ् - लोभिता / लोब्धा

जब भी लुट् लकार के तास् प्रत्यय से बने हुए प्रत्यय लगाकर कोई भी धातुरूप आप बनायें तब औत्सर्गिक इडागम व्यवस्था के साथ इन अपवादों को देखकर ही कार्य प्रारम्भ करें।

धात्वादेश

यदि प्रत्यय आर्धधातुक है, तो नीचे कहे जाने वाले धातुओं के स्थान पर इस प्रकार आदेश (परिवर्तन) कीजिये -

अस्तेर्भूः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अस् धातु को भू आदेश होता है।

ब्रुवो वचिः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ब्रू धातु को वच् आदेश होता है।

चक्षिङ् ख्याञ् - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर चक्ष् धातु को ख्या आदेश होता है।

अजेर्व्यघञपोः - घञ्, अप् को छोड़कर शेष सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अज् धातु को वी आदेश होता है।

आदेच उपदेशेऽशिति - शित् प्रत्यय परे न रहने पर, सारे एजन्त अर्थात् ए, ऐ, ओ, औ से अन्त होने वाले धातुओं को 'आ' अन्तादेश होता है।

जैसे - ग्लै - ग्ला, म्लै - म्ला, ध्यै - ध्या, शो - शा, सो - सा, वे - वा छो - छा आदि। इन्हें याद रखें।

अतिदेश

धातु से प्रत्यय लगने पर धातु का नाम अङ्ग हो जाता है। प्रत्यय लगने पर, धातु पर प्रत्यय का जो प्रभाव पड़ता है, उस प्रभाव का नाम ही अङ्गकार्य होता है। अङ्गकार्य कैसा हो, यह प्रत्यय पर ही निर्भर है। जैसा प्रत्यय होगा वैसा ही अङ्गकार्य होगा।

अङ्गकार्य करने के लिये प्रत्यय की सही पहिचान सबसे आवश्यक

है। यदि प्रत्यय कित्, गित् या ङित् होगा, तो अङ्गकार्य अलग प्रकार का होगा। यदि प्रत्यय कित्, गित्, ङित्, नहीं होगा, तो अङ्गकार्य अलग प्रकार का होगा। देखिये कि तास् प्रत्यय न तो कित् है, न गित्, न ङित्। तथापि कुछ सूत्रों के प्रभाव से यह तास् प्रत्यय, कहीं ङित् जैसा मान लिया जाता है। जहाँ यह ङित् जैसा मान लिया जाता है, वहाँ वे कार्य किये जाते हैं, जो कार्य ङित् प्रत्यय परे होने पर किये जाते हैं। जहाँ यह ङित् जैसा नहीं माना जाता, वहाँ यह जैसा है, वैसा ही रहता है।

यह मानने का कार्य जिन सूत्रों के कारण होता है, उन सूत्रों को हम अतिदेश सूत्र कहते हैं। ये सूत्र इस प्रकार हैं -

अतिदेश सूत्र

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् - 'इङ्' धातु के स्थान पर होने वाले 'गाङ्' धातु से, तथा तुदादिगण के अन्तर्गत जो कुट् से लेकर कुङ् तक ३६ धातुओं का कुटादिगण है, उस कुटादिगण में आने वाले धातुओं से परे आने वाले, ञित् णित् से भिन्न, सारे प्रत्यय, ङित्वत् मान लिये जाते हैं।

कुटादि धातु इस प्रकार हैं-

कुट्	कड्	डिप्	पुट्	कुच्	गुज्	गुड्	छुर्	स्फुट्
मुट्	त्रुट्	तुट्	चुट्	छुट्	जुट्	लुट्	कुड्	पुड्
घुट्	तुड्	थुड्	स्थुड्	स्फुर्	स्फुल्	स्फुड्	चुड्	व्रुड्
क्रुड्	गुर्	कृड्	मृड्	नू	धू	गु	ध्रु	कु = ३६

'तास्' प्रत्यय भी ञित् णित् से भिन्न प्रत्यय है, अतः यह जब गाङ् या कुटादि धातुओं के बाद आता है, तब इसे ङित् प्रत्यय जैसा मान लिया जाता है।

विज इट् - तुदादि गण के विज् धातु से परे आने वाले सारे सेट् प्रत्यय ङित्वत् माने जाते हैं।

व्यचेः कुटादित्वमनसीति वक्तव्यम् (वार्तिक) - व्यच् धातु से परे आने वाले 'अस्' से भिन्न सारे प्रत्यय ङिद्वत् होते हैं।

विभाषोर्णोः - ऊर्णु धातु से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्यय विकल्प से ङित्वत् माने जाते हैं।

इन अतिदेशों को सदा ध्यान में रखकर ही कोई भी अङ्गकार्य करें। ये अङ्गकार्य आगे बतलाये जा रहे हैं।

सामान्य अङ्गकार्य

धातु में 'तास् प्रत्यय' जोड़ते समय हमारी दृष्टि में तीन बातें एकदम स्पष्ट होना चाहिये।

१. जिस धातु में हम प्रत्यय जोड़ रहे हैं, वह धातु सेट् है या अनिट् या वेट्? कहीं ऐसा तो नहीं है कि तास् प्रत्यय को देखकर कोई अनिट् धातु सेट् हो गया हो, या कोई सेट् धातु वेट् हो गया हो। यह स्पष्ट ज्ञान होने पर ही इट् के आगम का निर्णय कीजिये।

२. तास् प्रत्यय को देखकर कहीं किसी धातु को धात्वादेश होकर धातु की आकृति तो नहीं बदल रही है ? ये धात्वादेश हम आगे बतलाते चलेंगे।

३. कहीं किसी अतिदेश सूत्र के प्रभाव से यह तास् प्रत्यय कित् जैसा अथवा कहीं ङित् जैसा तो नहीं मान लिया गया है ? इन तीन निर्णयों पर ही हमारे सारे अङ्गकार्य आधारित होंगे। अब अङ्गकार्य बतला रहे हैं -

सार्वधातुकार्धधातुकयोः - धातु के अन्त में आने वाले इक् को गुण होता है, कित्, ङित्, गित्, ञित्, णित्, से भिन्न, सार्वधातुक अथवा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। गुण होने का अर्थ होता है - इ, ई के स्थान पर ए, उ, ऊ के स्थान पर ओ, ऋ, ॠ के स्थान पर अर् तथा ऌ के स्थान पर अल् हो जाना। जैसे - नी - ने - नेता, हु - हो - होता, स्वृ - स्वर् - स्वर्ता आदि।

ध्यान रहे कि यदि गुण करने के बाद, अजादि प्रत्यय परे हो, तब **एचोऽयवायावः** सूत्र से ए को अय् तथा ओ को अव्, ऐसी अयादि सन्धि अवश्य की जाये। जैसे -

शी + इता - शे + इता - शय् + इता = शयिता
यु + इता - यो + इता - यव् + इता = यविता

पुगन्तलघूपधस्य च - धातु की उपधा में स्थित लघु इक् के स्थान पर गुण होता है, कित्, ङित्, गित् से भिन्न सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। जैसे - लिख् - लेख् - लेखिता / मिद् - मेद् - मेदिता / वृष् - वर्ष् - वर्षिता, क्लृप् - कल्पिता आदि।

क्ङिति च - यदि सार्वधातुक अथवा आर्धधातुक प्रत्यय कित्, ङित्, गित् हो, तब, धातुओं के अन्त में आने वाले इक् को न तो 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण होता है, और न ही उपधा में स्थित लघु इक् को 'पुगन्तलघूपधस्य

च' सूत्र से गुण होता है।

हम जानते हैं कि कुटादिगण के धातुओं से परे आने वाला तथा विज् धातु से परे आने वाला तास् प्रत्यय, ङिद्वत् होता है। अतः इन ३६ कुटादि धातु + १ विज् धातु = ३७ धातुओं के बाद, 'तास्' प्रत्यय आने पर इन ३७ धातुओं को कभी गुण मत कीजिये।

जैसे - डिप् - डिपिता / पुट् - पुटिता / स्फुर् - स्फुरिता / कृड् - कृडिता / गु - गुता / कु - कुता / उद्विज् - उद्विजिता, आदि।

ऊर्णु धातु से परे आने वाला तास् प्रत्यय, विकल्प से ङिद्वत् होता है। अतः इसके बाद 'तास् ' प्रत्यय आने पर ऊर्णु धातु को विकल्प से गुण कीजिये। जैसे - ऊर्णु + इता - गुण होकर - ऊर्णो + इता = ऊर्णविता / गुण न होकर - ऊर्णु + इता ही रहेगा।

अब प्रश्न उठेगा कि जब ऊर्णु को गुण नहीं होगा, तब इसे इता में जोड़ा कैसे जायेगा, क्योंकि यहाँ तो 'उ' इस अच् के बाद तो 'इ' यह अच् ही आ रहा है।

इसकी व्यवस्था यह है कि जब भी इगन्त अङ्ग को गुण का निषेध होता है, तब अङ्ग के अन्तिम इ को इयङ् (इय्) अन्तिम उ को उवङ् (उव्) आदेश होते हैं। इसके लिये सूत्र है -

अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ - अजादि कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर अङ्ग के अन्तिम इ को इयङ् (इय्) अन्तिम उ को उवङ् (उव्) होता है।

जैसे - नू + इता - नुव् + इता - नुविता, धू + इता - धुव् + इता - धुविता, ऊर्णु + इता - ऊर्णुव् + इता - ऊर्णुविता।

व्यचेः कुटादित्वमनसीति वक्तव्यम् - व्यच् धातु से परे आने वाले 'अस्' से भिन्न सारे प्रत्यय ङिद्वत् होते हैं। फल यह होता है कि व्यच् धातु से परे आने वाले तास् प्रत्यय के ङिद्वत् होने के कारण, व्यच् धातु को सम्प्रसारण हो जाता है। सम्प्रसारण करने वाला सूत्र है -

ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च - ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज् इन धातुओं को सम्प्रसारण होता है कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर।

अतः ङित् प्रत्यय परे होने पर व्यच् के य' को सम्प्रसारण करके 'इ' होता

है - व्यच् + इता - विच् + इता = विचिता।

इन अङ्गकार्यों को यहीं बुद्धिस्थ करके ही लुट् लकार के रूप बनायें।

पहिले हम भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के धातुओं के लुट् लकार के रूप बनायेंगे। णिच् प्रत्ययान्त चुरादिगण के धातुओं के रूप बाद में बनायेंगे।

ध्यान रहे कि अनिट् धातुओं से 'अनिट् प्रत्यय' अर्थात् ता, तारौ, तारः, आदि ही लगाये जायें तथा सेट् धातुओं से 'सेट् प्रत्यय' अर्थात् इता, इतारौ, इतारः, आदि ही लगाये जायें।

अब हम भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के धातुओं का वर्गीकरण करें और इस क्रम से धातुओं के रूप बनायें -

१. भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे अजन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि।

२. भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे सेट् हलन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि।

३. भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के सारे अनिट् हलन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि।

४. चुरादिगण के धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि।

५. सन्नन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि।

६. यङन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि।

१. सारे अजन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

अजन्त धातुओं के इस प्रकार वर्ग बनायें - आकारान्त तथा एजन्त धातु, इकारान्त धातु, ईकारान्त धातु, उकारान्त धातु, ऊकारान्त धातु, ऋकारान्त धातु, ॠकारान्त धातु।

आकारान्त तथा एजन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

दरिद्रा धातु - अनेकाच् होने से यह सेट् है। अतः दरिद्रा + इता / 'दरिद्रातेरार्धधातुके विवक्षिते आलोपो वाच्यः' इस वार्तिक से आ का लोप करके - दरिद्र् + इता = दरिद्रिता।

शेष आकारान्त धातु - इसके अलावा सारे एकाच् आकारान्त धातु अनिट् हैं। अतः इनसे 'अनिट् प्रत्यय' ही लगाइये - पा + ता = पाता।

एजन्त धातु -

आदेच उपदेशेऽशिति- अशित् प्रत्यय परे होने पर सारे एजन्त धातुओं को 'आ' अन्तादेश होता है। जैसे - ग्लै - ग्ला, म्लै - म्ला, ध्यै - ध्या, शो - शा, सो - सा, वे - वा छो - छा आदि। सारे एजन्त धातु भी अनिट् ही होते हैं। अब इनके रूप आकारान्त धातुओं के समान ही बनाइये।

धे	+	ता	-	धा	+	ता	=	धाता
ध्यै	+	ता	-	ध्या	+	ता	=	ध्याता
शो	+	ता	-	शा	+	ता	=	शाता
गै	+	ता	-	गा	+	ता	=	गाता, आदि।

उदाहरणार्थ वेञ् - वा धातु के पूरे रूप

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	वाता	वातारौ	वातारः	वाता	वातारौ	वातारः
म. पु.	वातासि	वातास्थः	वातास्थ	वातासे	वातासाथे	वाताध्वे
उ. पु.	वातास्मि	वातास्वः	वातास्मः	वाताहे	वातास्वहे	वातास्महे

विशेष - आगे हम केवल प्रथमपुरुष एकवचन का रूप बनाकर देंगे। लुट् लकार के अन्य प्रत्यय लगाकर, शेष रूप उसी के समान बना लीजिये।

सेट् इकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

हम जानते हैं कि एकाच् इकारान्त धातुओं में श्रि, श्वि, ये दो धातु ही सेट् होते हैं। अतः इनमें सेट् प्रत्यय ही लगाइये।

श्रि + इता / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - श्रे + इता / एचोऽयवायावः सूत्र से इस 'ए' को अयादेश करके - श्रय् + इता = श्रयिता। इसी प्रकार श्वि + इता से श्वयिता बनाइये।

सेट् ईकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

हम जानते हैं कि एकाच् ईकारान्त धातुओं में शीङ्, डीङ्, ये दो धातु ही सेट् होते हैं। अतः इनमें सेट् प्रत्यय ही लगाइये।

शी + इता - शे + इता / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - शे + इता / एचोऽयवायावः सूत्र से इस 'ए' को अयादेश करके - शय् + इता = शयिता। इसी प्रकार डी + इता से डयिता बनाइये।

- शे + इता / एचोऽयवायाव: सूत्र से इस 'ए' को अयादेश करके - शय् + इता = शयिता। इसी प्रकार डी + इता से डयिता बनाइये।

इसके अपवाद - दीधी, वेवी धातु - अनेकाच् होने से ये सेट् हैं।

दीधीवेवीटाम् - दीधी और वेवी धातुओं के इक् के स्थान पर कोई भी गुण या वृद्धि कार्य नहीं होते।

यीवर्णयोर्दीधीवेव्यो: - यकारादि और इकारादि प्रत्यय परे होने पर दीधी, वेवी धातुओं के 'ई' का लोप होता है।

दीधी + इता - दीध् + इता = दीधिता
वेवी + इता - वेव् + इता = वेविता

अनिट् इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

श्रि, श्वि, शीङ्, डीङ्, को छोड़कर सारे एकाच् इकारान्त, ईकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं, अत: अत: इनमें अनिट् प्रत्यय ही लगाइये। धातु के अन्तिम इ, ई को **सार्वधातुकार्धधातुकयो:** सूत्र से गुण करके ए बनाइये -

जि + ता - जे + ता = जेता
नी + ता - ने + ता = नेता
अधि + इ + ता - अध्ये + ता = अध्येता

इसी प्रकार सारे इकारान्त, ईकारान्त अनिट् धातुओं के रूप, चि - चेता आदि बनाइये।

इसके अपवाद - 'ली धातु' - विभाषा लीयते: - जब भी 'ली' धातु को गुण होकर 'ए' होता है, तब उस 'ए' को विकल्प से 'आ' आदेश होता है। ली - ले - ला - लाता। 'आ' आदेश न होने पर - पूर्ववत् 'लेता' ही बनेगा।

सेट् उकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

उकारान्त धातुओं में यु, रु, नु, स्नु, क्षु, क्ष्णु, ये ६ धातु ही सेट् होते हैं, अत: इनमें सेट् प्रत्यय ही लगाइये। यु + इता / सार्वधातुकार्धधातुकयो: सूत्र से गुण करके - यो + इता। एचोऽयवायाव: सूत्र से इस ओ को अवादेश करके - यव् + इता = यविता। इन छह सेट् धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाइये -

	गुण करके	अवादेश करके
नु + इता -	नो + इता -	नव् + इता = नविता
रु + इता -	रो + इता -	रव् + इता = रविता

स्नु + इता - स्नो + इता - स्नव् + इता = स्नविता
क्षु + इता - क्षो + इता - क्षव् + इता = क्षविता
क्ष्णु + इता - क्ष्णो + इता - क्ष्णव् + इता = क्ष्णविता

इसका अपवाद - ऊर्णु धातु - ध्यान रहे कि ऊर्णु धातु से परे आने वाला तास् प्रत्यय 'विभाषोर्णोः' सूत्र से विकल्प से ङिद्वत् होता है।

क्ङिति च - यदि सार्वधातुक अथवा आर्धधातुक प्रत्यय कित्, ङित्, या गित् हो, तब न तो अङ्गों के अन्त में आने वाले इक् को गुण होता है और न ही उपधा में स्थित लघु इक् को गुण होता है। जैसे - गु + ता = गुता / ध्रु + ता = ध्रुता / कु + ता = कुता / ऊर्णु + इता = ऊर्णु + इता। अतः -

ङिद्वत् होने पर - ऊर्णु धातु को 'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध करके अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से उवङ् ही कीजिये -
ऊर्णु + इता - ऊर्णुव् + इता = ऊर्णुविता

ङिद्वत् न होने पर - ऊर्णु धातु को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके यविता के समान ही ऊर्णविता बनाइये।

अनिट् उकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

इनके अलावा शेष उकारान्त धातु अनिट् होते हैं, अतः इनमें अनिट् प्रत्यय ही लगाइये।

धातु के अन्तिम उ ऊ को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके ओ बनाइये - हु + ता - हो + ता = होता।

इसके अपवाद - कुटादि धातु

गु धातु / ध्रु धातु / कुङ् धातु - ये कुटादि धातु हैं तथा अनिट् हैं। अतः इनसे अनिट् प्रत्यय लगाइये। इनसे परे आने वाला 'ता' प्रत्यय 'गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्' सूत्र से ङित्वत् होगा। अतः 'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध होकर इनके रूप इस प्रकार बनेंगे - गु + ता = गुता / ध्रु + ता = ध्रुता / कु + ता = कुता आदि।

सेट् ऊकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

ऊकारान्त धातुओं में, सारे धू धातु, अदादिगण का सू धातु, दिवादिगण का सू धातु, ये वेट् हैं। शेष सारे ऊकारान्त धातु सेट् ही हैं। अनिट् ऊकारान्त धातु कोई भी नहीं है। ध्यान रहे कि सेट् धातुओं से 'सेट् प्रत्यय' ही लगाये जायें। वेट् धातुओं से कोई से भी प्रत्यय लगाये जा सकते हैं।

पू + इता / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - पो + इता / एचोऽयवायावः सूत्र से इस 'ओ' को अवादेश करके - पव् + इता - पविता।

इसके अपवाद -

कुटादि ऊकारान्त धातु - चूँकि कुटादि धातुओं से परे आने वाला तास् प्रत्यय गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् सूत्र से ङिद्वत् होता है, अतः तास् प्रत्यय परे होने पर नू, धू, इन कुटादि धातुओं को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण न करके अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से उवङ् ही कीजिये -

नू	+	इता	-	नुव्	+	इता	=	नुविता
धू	+	इता	-	धुव्	+	इता	=	धुविता

ब्रू धातु - ब्रुवो वचिः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर 'ब्रू' धातु को 'वच्' आदेश होता है - वच् + ता = वक्ता। इसके रूप बनाने की विधि अनिट् हलन्त धातुओं में देखिये।

वेट् ऊकारान्त धू धातु, अदादिगण का सू धातु,
तथा दिवादिगण का सू धातु

सेट् प्रत्यय लगने पर					अनिट् प्रत्यय लगने पर				
सू	+	ता	=	सोता	सू	+	इता	=	सविता
धू	+	ता	=	धोता	धू	+	इता	=	धविता

ऋकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

घ्यान रहे कि ऋकारान्त धातुओं में वृङ्, वृङ् धातु सेट् होते हैं, स्वृ धातु वेट् होता है। शेष ह्रस्व ऋकारान्त धातु अनिट् होते हैं।

सेट् वृङ्, वृञ् धातु

इनमें सेट् प्रत्यय लगाइये। तास् प्रत्यय परे होने पर, धातुओं के अन्तिम ऋ को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके अर् बनाइये - वृ + इता - वर् + इता -

वृतो वा - वृङ् धातु, वृञ् धातु, तथा सारे ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाले, इट् को विकल्प से दीर्घ होता है। अतः वृङ् धातु, वृञ् धातु, तथा सारे दीर्घ ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाले 'इट्' को विकल्प से दीर्घ कर दीजिये।

वृ	+ इता	-	वर्	+	इता	=	वरिता	/	वरीता
वृ	+ इता	-	वर्	+	इता	=	वरिता	/	वरीता

वेट् ऋकारान्त स्वृ धातु

यह वेट् है। अतः इसमें सेट् अनिट्, दोनों ही प्रत्यय लग सकते हैं।

सेट् प्रत्यय लगने पर - स्वृ + इता / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - स्वर् +इता = स्वरिता।

अनिट् प्रत्यय लगने पर - स्वृ + ता / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - स्वर् + ता = स्वर्ता।

अनिट् ऋकारान्त धातु

सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके -

कृ	+	ता	-	कर्	+	ता	= कर्ता
धृ	+	ता	-	धर्	+	ता	= धर्ता
भृ	+	ता	-	भर्	+	ता	= भर्ता

दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

ध्यान रहे कि दीर्घ ॠकारान्त सारे धातु तो सेट् ही होते हैं। अतः दीर्घ ॠकारान्त धातुओं में, सेट् प्रत्यय ही लगाइये। इन प्रत्ययों के परे होने पर, इन धातुओं के अन्तिम ॠ को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके अर् बनाइये तथा ऊपर कहे गये 'वृतो वा' सूत्र से सारे दीर्घ ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाले 'इट्' को विकल्प से दीर्घ कर दीजिये। जैसे -

तॄ	+ इता	-	तर्	+	इता	= तरिता	/	तरीता
शॄ	+ इता	-	शर्	+	इता	= शरिता	/	शरीता
जॄ	+ इता	-	जर्	+	इता	= जरिता	/	जरीता
गॄ	+ इता	-	गर्	+	इता	= गरिता	/	गरीता आदि।

यह अजन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

हलन्त धातुओं के रूप बनाने के लिये पहिले हम उपधा को जानें -

अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा - किसी भी शब्द के अन्तिम वर्ण के ठीक पहिले वाला वर्ण उपधा कहलाता है। जैसे चित् में अन्तिम वर्ण त् है, उसके ठीक पूर्व वाला 'इ' उपधा है। मुद् में अन्तिम वर्ण 'द्' है, उसके ठीक पूर्व वाला 'उ' उपधा है। वृष् में अन्तिम वर्ण ष् है, उसके ठीक पूर्व वाला ऋ उपधा है।

इस प्रकार किसी भी हलन्त धातु को देखते ही यह जान लेना चाहिये कि उसमें उपधा क्या है ?

ऐसे धातु जिनकी उपधा में लघु 'अ' हो वे धातु अदुपध धातु कहलाते हैं। जैसे - हन्, अज् आदि। जिनकी उपधा में लघु 'इ' हो वे धातु इदुपध धातु कहलाते हैं। जैसे - भिद्, छिद्, चित्, लिख् आदि। जिनकी उपधा में लघु 'उ' हो वे धातु उदुपध धातु कहलाते हैं। जैसे - मुद्, क्षुद्, बुध्, आदि। जिनकी उपधा में लघु 'ऋ' हो वे धातु ऋदुपध धातु कहलाते हैं। जैसे - वृष्, कृष्, मृश्, आदि।

अब हम हलन्त धातुओं के रूप बनायें -

२. सेट् हलन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

सेट् इदुपध, उदुपध, ऋदुपध धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

पुगन्तलघूपधस्य च - धातु की उपधा में स्थित लघु इक् के स्थान पर गुण होता है, कित्, ङित्, गित् से भिन्न सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर।

'ता' प्रत्यय परे होने पर, इस सूत्र से, धातुओं की उपधा के लघु इ को 'ए', लघु उ को 'ओ, लघु ऋ को 'अर्' तथा लृ को 'अल्' बनाइये। जैसे -

सेट् इदुपध धातु

पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके -

लिख् + इता - लेख् + इता = लेखिता
मिद् + इता - मेद् + इता = मेदिता
चित् + इता - चेत् + इता = चेतिता आदि।

इसके अपवाद -

कुटादि इदुपध डिप् धातु

ध्यान रहे कि कुटादि धातुओं से परे आने वाला ता प्रत्यय गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् सूत्र से ङिद्वत् होता है। अतः तास् प्रत्यय परे होने पर कुटादि धातुओं की उपधा को 'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध होगा -

डिप् + इता - डिप् + इता = डिपिता।

विज् धातु -

ध्यान रहे कि विज् धातु से परे आने वाला ता प्रत्यय **विज इट्** सूत्र से ङिद्वत् होता है। अतः ता प्रत्यय परे होने पर विज् धातु की उपधा को 'क्ङिति

च' सूत्र से गुणनिषेध होगा -

उद्विज् + इता - उद्विज् + इता = उद्विजिता

सेट् उदुपध धातु

पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके -

मुद् + इता - मोद् + इता = मोदिता

प्लुष् + इता - प्लोष् + इता = प्लोषिता

इसके अपवाद -

कुटादि धातु - ध्यान रहे कि कुटादि धातुओं से परे आने वाला तास् प्रत्यय गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् सूत्र से ङिद्वत् होता है। अतः इसके परे होने पर कुटादि धातुओं की उपधा को 'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध होगा -

कुट् + इता - कुट् + इता = कुटिता

इसी प्रकार उपधा को गुण किये बिना पुट्, कुच्, गुज्, गुड्, छुर्, स्फुट्, मुट्; त्रुट्, तुट्, चुट्, छुट्, जुट्, लुठ्, कुड्, पुड्, घुट्, तुड्, थुड्, स्थुड्, स्फुर्, स्फुल्, स्फुड्, चुड्, व्रुड्, क्रुड्, गुर् इन कुटादि धातुओं के रूप बनाइये।

गुह् धातु -

· **ऊदुपधाया गोहः** - गुह् धातु की उपधा के 'उ' को दीर्घ होता है, अजादि प्रत्यय परे होने पर। इस सूत्र से अजादि प्रत्यय परे होने पर गुह् धातु की उपधा के उ को गुण न करके दीर्घ कीजिये -

गुह् + इता - गूह् + इता = गूहिता

सेट् ऋदुपध धातु

पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके -

वृष् + इता - वर्ष् + इता = वर्षिता

हृष् + इता - हर्ष् + इता = हर्षिता

इसके अपवाद -

कुटादि धातु - ध्यान रहे कि कुटादि धातुओं से परे आने वाला ता प्रत्यय **गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्** सूत्र से ङिद्वत् होता है। अतः ता प्रत्यय परे होने पर कुटादि धातुओं की उपधा को 'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध होगा -

कृड् + इता - कृड् + इता = कृडिता

मृड् + इता - मृड् + इता = मृडिता

इदुपध, उदुपध, ऋदुपध को छोड़कर, शेष सेट् हलन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

पहिले कुछ विशिष्ट सेंट् हलन्त धातुओं का विचार करें -

ग्रह् धातु - ग्रहोऽलिटि दीर्घः - ग्रह् धातु, से परे आने वाले इट् को नित्य दीर्घ होता है - ग्रह् + इता = ग्रहीता आदि।

व्यच् धातु - हम जानते हैं कि 'व्यचेः कुटादित्वमनसीति वक्तव्यम्' इस वार्तिक से व्यच् धातु से परे आने वाले 'अस्' से भिन्न सारे प्रत्यय ङिद्वत् होते हैं।

फल यह होता है कि व्यच् धातु से परे आने वाला ता प्रत्यय जब ङिद्वत् होता है, तब व्यच् धातु को ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च सूत्र से सम्प्रसारण हो जाता है। व्यच् के 'य' को सम्प्रसारण करके 'इ' होता है - व्यच् + इता - विच् + इता = विचिता।

अस् धातु - अस्तेर्भूः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अस् धातु को भू आदेश होता है। अस् + इता - भू + इता - भो + इता = भविता।

अज् धातु - अजेर्व्यघञपोः- घञ्, अप् को छोड़कर शेष सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर 'अज्' धातु को 'वी' आदेश होता है।

अज् + ता - वी + ता - वे + ता = वेता।

चक्ष् धातु - चक्षिङ् ख्याञ्- सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर 'चक्ष्' धातु को 'ख्या' आदेश होता है।

अतः ता से बने हुए लुट् लकार के प्रत्यय परे होने पर चक्ष् धातु के स्थान पर ख्या आदेश कीजिये और इसके रूप भी आकारान्त के समान ख्या + ता - ख्याता आदि बनाइये।

शेष सेट् हलन्त धातु

इन्हें कुछ मत कीजिये। यथा -

वद्	+	इता	- वद्	+	इता	=	वदिता
मील्	+	इता	- मील्	+	इता	=	मीलिता
मूष्	+	इता	- मूष्	+	इता	=	मूषिता
पठ्	+	इता	- वद्	+	इता	=	पठिता आदि।

अब हम अनिट् तथा वेट् हलन्त धातुओं के रूप बनायें।

४. हलन्त वेट् तथा हलन्त अनिट् धातुओं के, लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

अब हमारे सामने हलन्त अनिट् धातु बचे हैं, जिनकी संख्या १०२ गिनाई गई है, उनके रूप बनाना है। इनके सामने अनिट् तास् से बने हुए तकारादि प्रत्यय ही बैठेंगे।

इनके अलावा ८ रधादि धातु, निर् + कुष् धातु तथा २३ ऊदित् धातु जो कि वेट् हैं, बचे हैं, उनके रूप भी बनाना है। इनके सामने सेट् तथा अनिट् में से कोई भी प्रत्यय बैठ सकते हैं।

'तास्' प्रत्यय परे होने पर होने वाले, प्रमुख अङ्गकार्य बतलाये जा चुके हैं। ध्यान रहे कि सारे अङ्गकार्यों के हो चुकने के बाद ही, सन्धिकार्य किये जायें। अब हम अङ्गकार्य तथा सन्धिकार्य करके इन हलन्त अनिट् तथा वेट् धातुओं के रूप दे रहे हैं।

अत्यावश्यक - अनिट् प्रत्यय परे होने पर, यह ध्यान रखें कि जिन धातुओं के बीच में वर्ग के पञ्चमाक्षर हों, उन्हें आप पहिले अनुस्वार बना लें, उसके बाद ही आगे कहे जाने वाले कार्य शुरू करें। जैसे - भञ्ज् + ता - भंज् + ता / अञ्ज् + ता - अंज् + ता / सञ्ज् + ता - संज् + ता आदि।

हलन्त अनिट् धातुओं के रूप

पहिले उन हलन्त अनिट् धातुओं के रूप दे रहे हैं, जिनके अन्त में वर्ग के प्रथम, द्वितीय अथवा तृतीय व्यञ्जन हैं -

धातु + प्रत्यय	अङ्गादि कार्य करने पर -	सन्धि कार्य करने पर बना हुआ धातुरूप

कवर्गान्त धातु

तकारादि प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्त में आने वाले क् ख् ग् को 'खरि च' सूत्र से उसी कवर्ग का प्रथमाक्षर क् बनाइये।

शक् + ता - शक् + ता - शक् + ता = शक्ता

चवर्गान्त धातु

अनिट् चकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्त में आने वाले 'च्' को पहिले 'चोः कुः' सूत्र से कुत्व करके 'क्' बनाइये। उसके बाद उस 'क्' को 'खरि च'

सूत्र से पुनः उसी कवर्ग का प्रथमाक्षर क् ही बना दीजिये।

पच्	+	ता	-	पच्	+	ता	-	पक्	+ ता	=	पक्ता
मुच्	+	ता	-	मोच्	+	ता	-	मोक्	+ ता	=	मोक्ता
रिच्	+	ता	-	रेच्	+	ता	-	रेक्	+ ता	=	रेक्ता
वच्	+	ता	-	वच्	+	ता	-	वक्	+ ता	=	वक्ता
विच्	+	ता	-	वेच्	+	ता	-	वेक्	+ ता	=	वेक्ता
सिच्	+	ता	-	सेच्	+	ता	-	सेक्	+ ता	=	सेक्ता

इसके अपवाद - वेट् व्रश्च् धातु -

यह धातु वेट् है। इडागम न होने पर व्रश्च् के रूप इस प्रकार बनाइये-

व्रश्च् + ता - 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - व्रच् + ता / अब अन्त में आने वाले 'च्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - व्रष् + ता / प्रत्यय के 'त' को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'ट' बनाकर - व्रष् + टा = व्रष्टा।

इडागम होने पर व्रश्च् के रूप इस प्रकार बनाइये -

व्रश्च् + इता = व्रश्चिता

अनिट् छकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर छकारान्त धातु के अन्त में आने वाले 'छ्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये। उसके बाद प्रत्यय के 'त' को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'ट' बनाइये।

प्रच्छ्	+	ता	-	प्रष्	+	ता	-	प्रष्	+ टा	=	प्रष्टा

अनिट् जकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्त में आने वाले 'ज्' को पहिले 'चोः कुः' सूत्र से कुत्व करके 'ग्' बनाइये। उसके बाद उस 'ग्' को 'खरि च' सूत्र से उसी कवर्ग का प्रथमाक्षर 'क्' बनाइये।

त्यज्	+	ता	-	त्यग्	+	ता	-	त्यक्	+ ता	=	त्यक्ता
निज्	+	ता	-	नेग्	+	ता	-	नेक्	+ ता	=	नेक्ता
भज्	+	ता	-	भग्	+	ता	-	भक्	+ ता	=	भक्ता
भञ्ज्	+	ता	-	भंग्	+	ता	-	भंक्	+ ता	=	भङ्क्ता
भुज्	+	ता	-	भोग्	+	ता	-	भोक्	+ ता	=	भोक्ता

रुज्	+	ता	-	रोग्	+	ता	-	रोक्	+	ता	=	रोक्ता
रञ्ज्	+	ता	-	रंग्	+	ता	-	रङ्क्	+	ता	=	रङ्क्ता
विज्	+	ता	-	वेग्	+	ता	-	वेक्	+	ता	=	वेक्ता
स्वञ्ज्	+	ता	-	स्वंग्	+	ता	-	स्वंक्	+	ता	=	स्वङ्क्ता
सञ्ज्	+	ता	-	संग्	+	ता	-	संक्	+	ता	=	सङ्क्ता
युज्	+	ता	-	योग्	+	ता	-	योक्	+	ता	=	योक्ता

विशेष जकारान्त मस्ज् धातु -

मस्जिनशोर्झलि - मस्ज् तथा नश् धातु को झलादि प्रत्यय अर्थात् अनिट् तास् प्रत्यय, परे होने पर नुम् का आगम होता है। मस्ज् + ता - मंस्ज् + ता / 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - मंज् + ता / ज् को चोः कुः से कुत्व करके - मंग् + ता / ग् को खरि च से चर्त्व करके - मंक् + ता / अनुस्वार को 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' से परसवर्ण करके = मंङ्क्ता।

विशेष जकारान्त सृज् धातु -

सृजिदृशोर्झल्यमकिति - सृज् तथा दृश्, इन दो अनिट् ऋदुपध धातुओं को झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर अम् का आगम होता है।

अम् का आगम करके इनकी उपधा के ऋ को र बनाइये। सृज् + ता - स्रज् + ता / उसके बाद धातु के अन्त में आने वाले 'ज्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये - स्रष् + ता / उसके बाद 'त' को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'ट' बनाइये - स्रष् + टा = स्रष्टा।

विशेष जकारान्त भ्रस्ज् धातु -

भ्रस्जो रोपधयोः रमन्यतरस्याम् - आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर भ्रस्ज् धातु के 'र्' तथा उपधा के 'स्' के स्थान पर, विकल्प से 'रम्=र्' का आगम होता है। भ् र् अ स् ज् = भ् अ र् ज् = भर्ज्।

भ्रस्ज् + ता - भर्ज् + ता / 'ज्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये - भर्ष् + ता / उसके बाद प्रत्यय के 'त' को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'ट' बनाइये - भर्ष् + टा = भर्ष्टा।

विकल्प से भ्रस्ज् के स्थान पर भ्रस्ज् ही रहने पर - भ्रस्ज् + ता - 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - भ्रज्

+ ता / धातु के अन्त में आने वाले 'ज्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - भ्रष् + ता / प्रत्यय के 'त' को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'ट' बनाकर - भ्रष्टा।

वेट् अञ्ज् धातु -

इडागम न होने पर - धातु के अन्त में आने वाले 'ज्' को 'चोः कुः' सूत्र से कुत्व 'ग्' करके, 'खरि च' सूत्र से उसे कवर्ग का प्रथमाक्षर क् बनाइये।

अञ्ज् + ता - अंग् + ता - अंक् + ता = अङ्क्ता

इडागम होने पर - अञ्ज्+ इता = अञ्जिता

वेट् मृज् धातु - इडागम न होने पर -

मृजेर्वृद्धिः - मृज् धातुरूप जो अङ्ग, उसके इक् के स्थान पर वृद्धि होती है। मृज् + ता - मार्ज् + ता।

'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ज्' को 'ष्' बनाकर - मार्ज् + ता - मार्ष् + ता / प्रत्यय के 'त' को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से ष्टुत्व करके - मार्ष् + टा = मार्ष्टा।

इडागम होने पर - मृज् + इता - मार्ज् + इता = मार्जिता।

तवर्गान्त धातु

अनिट् दकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्त में आने वाले, त् थ् द् ध् को 'खरि च' सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर त् बनाइये।

अद्	+	ता	-	अद्	+	ता	-	अत्	+ ता	=	अत्ता
क्षुद्	+	ता	-	क्षोद्	+	ता	-	क्षोत्	+ ता	=	क्षोत्ता
खिद्	+	ता	-	खेद्	+	ता	-	खेत्	+ ता	=	खेत्ता
छिद्	+	ता	-	छेद्	+	ता	-	छेत्	+ ता	=	छेत्ता
तुद्	+	ता	-	तोद्	+	ता	-	तोत्	+ ता	=	तोत्ता
नुद्	+	ता	-	नोद्	+	ता	-	नोत्	+ ता	=	नोत्ता
पद्	+	ता	-	पद्	+	ता	-	पत्	+ ता	=	पत्ता
भिद्	+	ता	-	भेद्	+	ता	-	भेत्	+ ता	=	भेत्ता
विद्	+	ता	-	वेद्	+	ता	-	वेत्	+ ता	=	वेत्ता
सद्	+	ता	-	सद्	+	ता	-	सत्	+ ता	=	सत्ता

शद्	+	ता	-	शद्	+	ता	-	शत्	+	ता	=	शत्ता
स्विद्	+	ता	-	स्वेद्	+	ता	-	स्वेत्	+	ता	=	स्वेत्ता
स्कन्द्	+	ता	-	स्कन्द्	+	ता	-	स्कन्त्	+	ता	=	स्कन्त्ता
हद्	+	ता	-	हद्	+	ता	-	हत्	+	ता	=	हत्ता

वेट् क्लिद्, स्यन्द् धातु - इडागम न होने पर - क्लेत्ता / इडागम होने पर - क्लेदिता बनाइये। स्यन्द् धातु से इडागम न होने पर - स्यन्त्ता / इडागम होने पर - स्यन्दिता बनाइये।

अनिट् नकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले न्, म्, को 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से अनुस्वार बनाइये। उसके बाद 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' सूत्र से परसवर्ण करके उस अनुस्वार को न् बनाइये -

मन्	+	ता	-	मं	+	ता	-	मन्	+	ता	=	मन्ता
हन्	+	ता	-	हं	+	ता	-	हन्	+	ता	=	हन्ता

पवर्गान्त धातु

अनिट् पकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर, प् फ् ब् को 'खरि च' सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर प् बनाइये।

आप्	+	ता	-	आप्	+	ता	-	आप्	+	ता	=	आप्ता
छुप्	+	ता	-	छोप्	+	ता	-	छोप्	+	ता	=	छोप्ता
क्षुप्	+	ता	-	क्षोप्	+	ता	-	क्षोप्	+	ता	=	क्षोप्ता
तप्	+	ता	-	तप्	+	ता	-	तप्	+	ता	=	तप्ता
तिप्	+	ता	-	तेप्	+	ता	-	तेप्	+	ता	=	तेप्ता
लिप्	+	ता	-	लेप्	+	ता	-	लेप्	+	ता	=	लेप्ता
लुप्	+	ता	-	लोप्	+	ता	-	लोप्	+	ता	=	लोप्ता
वप्	+	ता	-	वप्	+	ता	-	वप्	+	ता	=	वप्ता
शप्	+	ता	-	शप्	+	ता	-	शप्	+	ता	=	शप्ता
स्वप्	+	ता	-	स्वप्	+	ता	-	स्वप्	+	ता	=	स्वप्ता

इसके अपवाद - सृप् धातु -

अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् - अनिट् ऋदुपध धातुओं को झलादि

अकित् प्रत्यय परे होने पर विकल्प से अम् का आगम होता है।

अनिट् तास् प्रत्यय झलादि अकित् है। सृप्, स्पृश्, मृश्, कृष् धातु अनिट् ऋदुपध हैं। तृप्, दृप् धातु वेट् ऋदुपध हैं। अनिट् तास् प्रत्यय परे होने पर, अम् का आगम करके इनकी उपधा के 'ऋ' को 'र' बनाइये।

अम् का आगम होने पर - सृप् + ता - स्रप् + ता = स्रप्ता।

अम् का आगम न होने पर इसकी उपधा के ऋ को 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से गुण करके अर् बनाइये। सृप् + ता - सर्प् + ता = सर्प्ता।

वेट् त्रप् धातु - इससे इडागम न होने पर - त्रप्ता / इडागम होने पर - त्रपिता बनाइये।

दिवादिगण के वेट् तृप्, दृप् धातु -

अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् - अनिट् ऋदुपध धातुओं को, झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर, विकल्प से अम् का आगम होता है।

ध्यान रहे कि सेट् 'ता' प्रत्यय परे होने पर अम् का आगम कदापि न किया जाय। इस प्रकार इनके तीन रूप बनेंगे -

तृप् + ता - अम् का आगम करके तथा अनिट् प्रत्यय लगाकर - त्रप् + ता = त्रप्ता।

तृप् + ता - अम् का आगम न करके, पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के ऋ को गुण करके तथा अनिट् प्रत्यय लगाकर - तर्प् + ता = तर्प्ता।

तृप् + इता - अम् का आगम न करके पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के ऋ को गुण करके तथा सेट् प्रत्यय लगाकर - तर्प् + इता = तर्पिता।

ठीक इसी प्रकार दृप् धातु से द्रप्ता / दर्प्ता / दर्पिता बनाइये।

गुपू धातु - इसे 'आयादय आर्धधातुके वा' सूत्र से स्वार्थ में 'आय' प्रत्यय विकल्प से होता है - गुप् + आय - गोपाय। 'आय' लग जाने पर, यह धातु अनेकाच् हो जाने से सेट् हो जाता है।

'आय' प्रत्यय लगाकर, सेट् प्रत्यय लगने पर - गुप् + आय - गोपाय + इता / अतो लोपः से 'अ' का लोप होकर - गोपाय् + इता = गोपायिता।

'आय' प्रत्यय न लगाकर, सेट् प्रत्यय लगने पर - गुप् - गोप् + इता = गोपिता / 'आय' प्रत्यय न लगाकर, अनिट् प्रत्यय लगने पर - गुप् - गोप् + ता = गोप्ता।

वेट् कृपू धातु - कृपो रो लः - कृप् के 'ऋ' के स्थान पर 'लृ' आदेश होता है - कृप् - क्लृप्।

लुटि च क्लृपः - 'तास्' से बने हुए लुट् लकार के प्रत्यय परे होने पर, 'स्य' से बने हुए लृट् लकार के प्रत्यय परे होने पर तथा सन् प्रत्यय परे होने पर, क्लृप् धातु से विकल्प से परस्मैपद के प्रत्यय लगते हैं।

तासि च क्लृपः - क्लृप् धातु से परे आने वाले परस्मैपदसंज्ञक 'तास्' को तथा परस्मैपदसंज्ञक सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय को इडागम नहीं होता है। केवल आत्मनेपद में इडागम होता है।

परस्मैपद में - कृपू - क्लृप् + ता - पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके - कल्प् + ता = कल्प्ता।

आत्मनेपद में - कृपू - क्लृप् + इता - पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके - कल्प् + इता = कल्पिता।

अनिट् मकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले न्, म्, को 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से अनुस्वार बनाइये। उसके बाद 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' सूत्र से परसवर्ण करके उस अनुस्वार को न् बनाइये -

नम्	+	ता	-	नं	+	ता	-	नन्	+ ता	=	नन्ता
यम्	+	ता	-	यमं	+	ता	-	यन्	+ ता	=	यन्ता
रम्	+	ता	-	रं	+	ता	-	रन्	+ ता	=	रन्ता
गम्	+	ता	-	गं	+	ता	-	गन्	+ ता	=	गन्ता

वेट् क्षम् धातु - इडागम न होने पर - क्षन्ता / इडागम होने पर क्षमिता।

ऊष्मान्त धातु

अनिट् शकारान्त धातु - तकारादि प्रत्यय परे होने पर 'श्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये। उसके बाद प्रत्यय के 'त' को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'ट' बनाइये।

क्रुश्	+	ता	-	क्रोष्	+	ता	-	क्रोष्	+ टा	=	क्रोष्टा
दंश्	+	ता	-	दंष्	+	ता	-	दंष्	+ टा	=	दंष्टा
दिश्	+	ता	-	देष्	+	ता	-	देष्	+ टा	=	देष्टा

रिश्	+	ता	-	रेष्	+	ता	-	रेष्	+	टा	=	रेष्टा
रुश्	+	ता	-	रोष्	+	ता	-	रोष्	+	टा	=	रोष्टा
लिश्	+	ता	-	लेष्	+	ता	-	लेष्	+	टा	=	लेष्टा
विश्	+	ता	-	वेष्	+	ता	-	वेष्	+	टा	=	वेष्टा

विशेष शकारान्त - दृश् धातु -

सृजिदृशोर्झल्यमकिति - सृज् तथा दृश्, इन दो अनिट् ऋदुपध धातुओं को झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर अम् का आगम होता है। अम् का आगम करके इनकी उपधा के ऋ को र बनाइये। दृश् + ता - द्रश् + ता / उसके बाद धातु के अन्त में आने वाले 'श्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये - द्रष् + ता / उसके बाद प्रत्यय के 'त' को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से ष्टुत्व करके 'ट' बनाइये - द्रष् + टा = द्रष्टा।

विशेष शकारान्त - स्पृश्, मृश् धातु -

अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् - ऋदुपध धातुओं को झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर विकल्प से अम् का आगम होता है।

अनिट् तास् प्रत्यय झलादि अकित् है। सृप्, स्पृश्, मृश्, कृष् धातु अनिट् ऋदुपध हैं। तृप्, दृप् धातु वेट् ऋदुपध हैं। अनिट् तास् प्रत्यय परे होने पर, अम् का आगम करके इनकी उपधा के 'ऋ' को 'र' बनाइये।

सृप्, तृप्, दृप् धातु पकारान्त वर्ग में बतला चुके हैं। स्पृश्, मृश् धातु, यहाँ बतला रहे हैं।

अम् का आगम होने पर - मृश् + ता - अम् का आगम करके - म्रश् + ता / 'श्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - म्रष् + ता / प्रत्यय के 'त' को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से ष्टुत्व करके - म्रष् + टा = म्रष्टा।

अम् का आगम न होने पर - इन धातुओं की उपधा के 'लघु ऋ' को 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से गुण करके अर् बनाइये।

मृश् + ता - मर्श् + ता / 'श्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - मर्ष् + ता / प्रत्यय के 'त' को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से ष्टुत्व करके - मर्ष् + टा = मर्ष्टा।

इसी प्रकार स्पृश् धातु से स्प्रष्टा / स्पर्ष्टा बनाइये।

वेट् अशू, क्लिशू धातु -

इडागम न होने पर - अष्टा / इडागम होने पर - अशिता। क्लिशू धातु से इडागम न होने पर - क्लेष्टा / इडागम होने पर - क्लेशिता।

वेट् नश् धातु - मस्जिनशोर्झलि - मस्ज् तथा नश् धातु से परे आने वाले झलादि प्रत्ययों को नुम् का आगम होता है -

नश् + ता - नंश् + ता - नंष् + टा = नंष्टा

ध्यान रहे कि यदि हम नश् धातु से सेट् 'इता' प्रत्यय लगायेंगे, तब यह नुमागम नहीं होगा। नश् + इता = नशिता।

अनिट् षकारान्त धातु -

षकारान्त धातु से तकारादि प्रत्यय परे होने पर प्रत्यय के 'त' को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'ट' बनाइये।

त्विष्	+	ता	-	त्वेष्	+	ता	-	त्वेष् + टा	=	त्वेष्टा
तुष्	+	ता	-	तोष्	+	ता	-	तोष् + टा	=	तोष्टा
द्विष्	+	ता	-	द्वेष्	+	ता	-	द्वेष् + टा	=	द्वेष्टा
दुष्	+	ता	-	दोष्	+	ता	-	दोष् + टा	=	दोष्टा
पुष्	+	ता	-	पोष्	+	ता	-	पोष् + टा	=	पोष्टा
पिष्	+	ता	-	पेष्	+	ता	-	पेष् + टा	=	पेष्टा
विष्	+	ता	-	वेष्	+	ता	-	वेष् + टा	=	वेष्टा
शिष्	+	ता	-	शेष्	+	ता	-	शेष् + टा	=	शेष्टा
शुष्	+	ता	-	शोष्	+	ता	-	शोष् + टा	=	शोष्टा
श्लिष्	+	ता	-	श्लेष्	+	ता	-	श्लेष् + टा	=	श्लेष्टा

विशेष षकारान्त धातु -

कृष् धातु - अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् सूत्र से झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर विकल्प से अम् का आगम होने पर - कृष् - क्रष् - क्रष्टा।

अम् का आगम न होने पर उपधा के 'लघु ऋ' को 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से गुण करकें - कृष् - कर्ष् - कर्ष्टा।

वेट् इष्, रुष्, रिष् धातु - 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से गुण करके - इष् से एष्टा - एषिता / रुष् से रोष्टा - रोषिता / रिष् से रेष्टा - रेषिता बनाइये।

वेट् निर् उपसर्गपूर्वक कुष् धातु -

इडागम न होने पर - निष्कोष्टा / इडागम होने पर - निष्कोषिता

वेट् अक्षू, तक्षू, त्वक्षू, धातु -

इडागम न होने पर - अक्ष् + ता - 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'क्' का लोप करके - अष् + ता / 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से ष्टुत्व करके - अष् + ता = अष्टा। इडागम होने पर अक्ष् + ता = अक्षिता।

इसी प्रकार तक्ष् से तष्टा - तक्षिता / त्वक्ष् से त्वष्टा - त्वक्षिता।

अनिट् सकारान्त धातु -

स् के बाद तकारादि प्रत्यय आने पर कुछ मत कीजिये।

वस् + ता = वस्ता / घस् + ता = घस्ता

हकारान्त धातु - झलादि प्रत्यय अर्थात् तकारादि, थकारादि, सकारादि प्रत्यय परे होने पर हकारान्त धातुओं के पाँच वर्ग बनाइये -

१. नह् धातु - नह् धातु के ह् को नहो धः सूत्र से ध् बनाइये। नह् + ता - नध् + ता / अब देखिये कि धातु के अन्त में वर्ग का चतुर्थाक्षर 'ध्' आ गया है, अतः आप ऐसे धातुओं के बाद में आने वाले -

१. प्रत्यय के त, थ को झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से ध बना दीजिये - नध् + ता = नध् + धा -

२. और धातु के अन्त में बैठे हुए वर्ग के चतुर्थाक्षर ध् को झलां जश् झशि सूत्र से जश्त्व करके उसी वर्ग का तृतीयाक्षर द् बनाइये। नध् + धा - नद् + धा = नद्धा।

२. दकारादि हकारान्त धातु, जैसे - दुह्, दिह् आदि -

इनके 'ह्' को 'दादेर्धातोर्घः' सूत्र से घ् बनाइये - दुह् - दोह् + ता - दोघ् + ता / प्रत्यय के 'त' को झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से 'ध' करके - दोघ् + धा / अब धातु के अन्त में बैठे हुए वर्ग के चतुर्थाक्षर 'घ्' को झलां जश् झशि सूत्र से जश्त्व करके, उसी वर्ग का तृतीयाक्षर 'ग्' बनाइये - दोघ् + धा = दोग्धा। इसी प्रकार - दिह् - देह् + ता = देग्धा बनाइये।

३. द्रुह् ,मुह् ,स्नुह्, स्निह् धातु - ये चारों धातु वेट् हैं।

इडागम न होने पर -

इन चार धातुओं के 'ह्' को 'वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्' सूत्र से विकल्प से

ढ् तथा 'घ्' होते हैं, झल् परे होने पर।

'ह्' को 'घ्' बनाने पर -

द्रुह् + ता - द्रोघ् + ता / प्रत्यय के 'त' को झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से 'ध' करके - द्रोघ् + धा / झलां जश् झशि सूत्र से 'घ्' को जश्त्व करके, उसी वर्ग का तृतीयाक्षर 'ग्' बनाकर - द्रोग् + धा = द्रोग्धा।

इसी प्रकार मुह् + ता - मोग्धा / स्नुह् + ता = स्नोग्धा / स्निह् + ता = स्नेग्धा बनाइये।

'ह्' को 'ढ्' बनाने पर -

द्रोह् + ता - द्रोढ् + ता / प्रत्यय के त को **झषस्तथोर्धोऽधः** सूत्र से 'ध' करके - द्रोढ् + धा / ष्टुना ष्टुः से प्रत्यय के ध् को ष्टुत्व करके द्रोढ् + ढा - ढो ढे लोपः से पूर्व ढकार का लोप करके द्रो + ढा = द्रोढा।

इसी प्रकार - मुह् से मोढा / स्नुह् से स्नोढा / स्निह् से स्नेढा, बनाइये।

इडागम होने पर -

द्रुह्	+	इता	-	द्रोह्	+	इता	=	द्रोहिता
मुह्	+	इता	-	मोह्	+	इता	=	मोहिता
स्निह्	+	इता	-	स्नेह्	+	इता	=	स्नेहिता
स्नुह्	+	इता	-	स्नोह्	+	इता	=	स्नोहिता

४. **वह्, सह् धातु** - सह् वह्, इन दो धातुओं के 'ह्' को 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाने के बाद पूर्व 'ढ्' का 'ढो ढे लोपः' सूत्र से लोप कर दीजिये। उसके बाद इनके 'अ' के स्थान पर 'सहिवहोरोदवर्णस्य' सूत्र से 'ओ' आदेश कीजिये।

वह् + ता - ह् को ढ् बनाने पर - वढ् + ता - प्रत्यय के 'त' को झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से 'ध्' करके - वढ् + धा - ष्टुना ष्टुः से प्रत्यय के 'ध्' को ष्टुत्व करके - वढ् + ढा - 'ढो ढे लोपः' से पूर्व ढकार का लोप करके - व + ढा - अब 'सहिवहोरोदवर्णस्य' सूत्र से लुप्त ढकार के पूर्ववर्ती 'अ' को 'ओ' बनाकर 'वोढा' बनाइये।

ध्यान दें कि 'वह्' धातु अनिट् है। अतः इससे केवल वोढा ही बनेगा। 'सह्' धातु वेट् है, अतः इससे इडागम न होने पर इसी प्रकार सोढा बनेगा और इडागम होने पर - सह् + इता = सहिता भी बनेगा।

५. **शेष हकारान्त धातु** - इन धातुओं के अलावा जितने भी हकारान्त

धातु बचे, उनके 'ह्' को 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाइये - रुह् - रोह् + ता - रोढ् + ता /

प्रत्यय के त को झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से 'ध' करके - रोढ् + धा / ष्टुना ष्टुः से प्रत्यय के ध् को ष्टुत्व करके रोढ् + ढा / ढो ढे लोपः से पूर्व ढकार का लोप करके रो + ढा = रोढा।

रुह् + ता - रोढ् + धा - रोढ् + ढा = रोढा
लिह् + ता - लेढ् + धा - लेढ् + ढा = लेढा
मिह् + ता - मेढ् + धा - मेढ् + ढा = मेढा

इसी प्रकार -

तृह् + ता - तर्ढ् + धा - तर्ढ् + ढा = तर्ढा
स्तृह् + ता - स्तर्ढ् + धा - स्तर्ढ् + ढा = स्तर्ढा
बृह् + ता - बर्ढ् + धा - बर्ढ् + ढा = बर्ढा
तृंह् + ता - तृंढ् + धा - तृंढ् + ढा = तृण्ढा
गुह् + ता - गोढ् + धा - गोढ् + ढा = गोढा
गृह् + ता - गर्ढ् + धा - गर्ढ् + ढा = गर्ढा
गाह् + ता - गाढ् + धा - गाढ् + ढा = गाढा

ये धातु वेट् हैं, इनसे सेट् प्रत्यय भी लग सकते हैं।

तृह् + इता - तर्ह् + इता = तर्हिता
स्तृह् + इता - स्तर्ह् + इता = स्तर्हिता
बृह् + इता - बर्ह् + इता = बर्हिता
तृंह् + इता - तृंह् + इता = तृंहिता
गृह् + इता - गर्ह् + इता = गर्हिता
गाह् + इता - गाह् + इता = गाहिता

गुह् धातु - अनिट् प्रत्यय परे होने पर हमने गुह् + ता = गोढा बनाया है। किन्तु सेट् प्रत्यय परे होने पर -

ऊदुपधाया गोहः - गुह् धातु की उपधा के 'उ' को दीर्घ होता है, अजादि प्रत्यय परे होने पर। इस सूत्र से अजादि 'इता' प्रत्यय परे होने पर गुह् धातु की उपधा के उ को गुण न करके दीर्घ कीजिये -

गुह् + इता - गूह् + इता = गूहिता

अब उन अनिट् धातुओं के रूप दे रहे हैं, जिनके अन्त में वर्ग के चतुर्थ व्यञ्जन हैं -

धातु के अन्त में वर्ग का चतुर्थाक्षर होने पर -

१. प्रत्यय के त, थ को झषस्तथोर्धोऽध: सूत्र से ध बना दीजिये -

२. और धातु के अन्त में बैठे हुए वर्ग के चतुर्थाक्षर को झलां जश् झशि सूत्र से जश्त्व करके उसी वर्ग का तृतीयाक्षर बनाइये। जैसे -

अनिट् धकारान्त धातु -

क्रुध्	+	ता	-	क्रोध्	+	धा	-	क्रोद्	+	धा	=	क्रोद्धा
क्षुध्	+	ता	-	क्षोध्	+	धा	-	क्षोद्	+	धा	=	क्षोद्धा
युध्	+	ता	-	योध्	+	धा	-	योद्	+	धा	=	योद्धा
रुध्	+	ता	-	रोध्	+	धा	-	रोद्	+	धा	=	रोद्धा
राध्	+	ता	-	राध्	+	धा	-	राद्	+	धा	=	राद्धा
व्यध्	+	ता	-	व्यध्	+	धा	-	व्यद्	+	धा	=	व्यद्धा
साध्	+	ता	-	साध्	+	धा	-	साद्	+	धा	=	साद्धा
शुध्	+	ता	-	शोध्	+	धा	-	शोद्	+	धा	=	शोद्धा
सिध्	+	ता	-	सेध्	+	धा	-	सेद्	+	धा	=	सेद्धा
बुध्	+	ता	-	बोध्	+	धा	-	बोद्	+	धा	=	बोद्धा
बन्ध्	+	ता	-	बन्ध्	+	धा	-	बन्द्	+	धा	=	बन्द्धा

वेट् धकारान्त षिध् धातु - इडागम न होकर - सेद्धा / इडागम होकर - सेधिता।

अनिट् भकारान्त धातु -

यभ्	+	ता	-	यभ्	+	धा	-	यब्	+	धा	=	यब्धा
रभ्	+	ता	-	रभ्	+	धा	-	रब्	+	धा	=	रब्धा
लभ्	+	ता	-	लभ्	+	धा	-	लब्	+	धा	=	लब्धा

वेट् भकारान्त लुभ् धातु - इडागम न होकर - लोब्धा / इडागम होकर - लोभिता।

यह भ्वादि से क्र्यादिगण तक के सेट् धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई। अब चुरादिगण के तथा अन्य प्रत्ययान्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि बतला रहे हैं -

५. चुरादिगण के धातु तथा णिजन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि -

चुरादिगण के प्रत्येक धातु से कोई भी प्रत्यय लगाने के पहिले स्वार्थिक णिच् प्रत्यय लगा देना चाहिये। णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद ही चुरादिगण के धातुओं में कोई भी प्रत्यय लगाना चाहिये। जैसे - चुर् + णिच् = चोरि।

इसी प्रकार जब प्रेरणा अर्थ अर्थात् प्रयोजक व्यापार वाच्य हो तब किसी भी धातु से पहिले णिच् प्रत्यय लगा देना चाहिये। जैसे - पठ् + णिच् = पाठि। यहाँ भी णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद ही धातु से अन्य कोई प्रत्यय लगाना चाहिये।

इसका अर्थ यह हुआ कि यहाँ हमें दो कार्य करना पड़ते हैं -

१. धातु + णिच् को जोड़कर णिजन्त धातु बनाना।

२. णिजन्त धातु में लुट् लकार के प्रत्यय लगाना।

देखिये कि धातु + णिच् को जोड़ने के बाद ये जो णिजन्त धातु बनते हैं, ये सदा अनेकाच् इकारान्त धातु होते हैं। अनेकाच् होने के कारण ये सेट् ही होते हैं। अत: इनके लुट् लकार के रूप उसी विधि से बनाइये, जिस विधि से सेट् इकारान्त धातुओं के रूप बनाना पीछे बतलाया गया है।

अर्थात् लुट् लकार के प्रत्यय लगने पर, इन धातुओं के अन्तिम इ को **सार्वधातुकार्धधातुकयो:** सूत्र से गुण करके ए बनाइये - चोरि + इता / चोरे + इता / उसके बाद **एचोऽयवायाव:** सूत्र से इस ए को अयादेश करके अय् बनाइये - चोरय् + इता = चोरयिता।

धातु से णिच् प्रत्यय लगाने की विस्तृत विधि, हमने णिजन्त पाठ में दी है, तथा संक्षिप्त विधि लृट् लकार में दी है, अत: उसे दोबारा नहीं बतलायेंगे। उसे वहीं देखिये। **इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -**

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितार:	चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितार:
म. पु.	चोरयितासि	चोरयितास्थ:	चोरयितास्थ	चोरयितासे	चोरयितासाथे	चोरयिताध्वे
उ. पु.	चोरयितास्मि	चोरयितास्व:	चोरयितास्म:	चोरयिताहे	चोरयितास्वहे	चोरयितास्महे

सन्नन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

धातु से सन् प्रत्यय लगाने की विस्तृत विधि, हमने सन्नन्त पाठ में दी है, उसे वहीं देखिये। सारे सन्नन्त धातुओं के अन्त में सदा 'अ' ही होता है अर्थात्

वे सदा अदन्त ही होते हैं।

अतो लोपः - धातुओं के अन्त में आने वाले 'अ' का लोप होता है कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। लुट् लकार के तास् प्रत्यय से बने हुए प्रत्यय परे होने पर **अतो लोपः** सूत्र से सन्नन्त धातुओं के 'अ' का लोप कीजिये। यथा-

जिगमिष + इता / 'अ' का लोप करके - जिगमिष् + इता = जिगमिषिता। सारे सन्नन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप इसी प्रकार बनाइये।

यङन्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि

धातु से यङ् प्रत्यय लगाने की विस्तृत विधि, हमने यङन्त पाठ में दी है, उसे वहीं देखिये। सारे यङन्त धातुओं के अन्त में सदा 'अ' ही होता है अर्थात् वे सदा अदन्त ही होते हैं।

यङ् के पूर्व में अच् होने पर लुट् लकार के प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

अतो लोपः - धातुओं के अन्त में आने वाले 'अ' का लोप होता है कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर।

अतः लुट् लकार के प्रत्यय परे होने पर 'अतो लोपः' सूत्र से यङन्त धातुओं के अन्तिम 'अ' का लोप कीजिये। यथा - नेनीय + इता / अतो लोपः से अन्तिम अ का लोप करके - नेनीय् + इता = नेनीयिता / लोलूय + इता - लोलूयिता / बोभूय + इता - बोभूयिता, आदि बनाइये।

यङ् के पूर्व में हल् होने पर लुट् लकार के प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

यस्य हलः - हल् के बाद आने वाले 'य' का लोप होता है, आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। देखिये कि यङ् के पूर्व में यदि हल् हो तब 'यस्य हलः' सूत्र से 'य' का लोप करके इस प्रकार रूप बनाइये -

बाभ्रश्य + इता / यस्य हलः से अन्तिम य का लोप करके - बाभ्रश् + इता = बाभ्रशिता।

नेनिज्य + इता / यस्य हलः से अन्तिम य का लोप करके - नेनिज् + इता = नेनिजिता। इसी प्रकार वेविध्य = वेविधिता / मोमुद्य = मोमुदिता।

इस प्रकार समस्त धातुओं के लुट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।



अष्टम पाठ

समस्त धातुओं के लुङ् लकार के धातुरूप बनाने की विधि

लुङ् - सामान्य भूत अर्थ में लुङ् लकार का प्रयोग किया जाता है। जैसे - देवदत्तः अभूत् - देवदत्त हुआ आदि।

लुङ् लकार के अलावा सारे लकारों में एक ही प्रकार के प्रत्यय होते हैं, जो कि सारे धातुओं से लगाये जाते हैं। जैसे - लृट् लकार के प्रत्यय हैं - स्यति, स्यतः, स्यन्ति आदि। यदि हमें किसी भी धातु का लृट् लकार का रूप बनाना है तो हमें ये ही प्रत्यय लगाना पड़ेंगे। जैसे पा - पास्यति, पास्यतः, पास्यन्ति / नी - नेष्यति, नेष्यति नेष्यन्ति / हु - होष्यति, होष्यतः, होष्यन्ति आदि।

किन्तु लुङ् लकार में ऐसा नहीं होता। लुङ् लकार के प्रत्यय १२ प्रकार के होते हैं। लुङ् लकार ही एक ऐसा लकार है, जिसके रूप बनाने के लिये, अलग अलग प्रकार के धातुओं से, अलग अलग प्रकार के प्रत्यय लगाये जाते हैं।

लुङ् लकार के ये १२ प्रकार के प्रत्यय, छह प्रकार के प्रत्ययों से बनकर, सेट् अनिट्, परस्मैपद, आत्मनेपद के भेद से बारह प्रकार के हो जाते है।

ये प्रत्यय बतलाये जा रहे हैं -

लुङ् लकार के बारह प्रकार के प्रत्यय

लुङ् लकार के प्रथम प्रकार के सिच् का लुक् करके बने हुए प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद
प्र. पु.	त्	ताम्	अन् (उः)	सिच् का लुक् करके बने हुए ये
म. पु.	स् (:)	तम्	त	प्रत्यय आत्मनेपद में नहीं होते।
उ. पु.	अम्	व	म	

वस्तुतः लुङ् लकार के ये प्रत्यय सार्वधातुक हैं।

लुङ् लकार के द्वितीय प्रकार के, धातु को सक् का आगम करके सक् + इट् + सिच् से बने हुए प्रत्यय

प्र. पु.	सीत्	सिष्टाम्	सिषुः	धातु को सक् का आगम करके
म. पु.	सीः	सिष्टम्	सिष्ट	इट् + सिच् से बने हुए ये प्रत्यय

उ. पु.	सिषम्	सिष्व	सिष्म	भी आत्मनेपद में नहीं होते।		

सिच् से प्रारम्भ होने के कारण लुङ् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

लुङ् लकार के तृतीय, चतुर्थ प्रकार के अङ् से बने हुए प्रत्यय

प्र. पु.	अत्	अताम्	अन्	अत	एताम्	अन्त
म. पु.	अः	अतम्	अत	अथाः	एथाम्	अध्वम्
उ. पु.	अम्	आव	आम	ए	आवहि	आमहि

अङ् से प्रारम्भ होने के कारण लुङ् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

लुङ् लकार के पञ्चम, षष्ठ प्रकार के चङ् से बने हुए प्रत्यय

प्र. पु.	अत्	अताम्	अन्	अत	एताम्	अन्त
म. पु.	अः	अतम्	अत	अथाः	एथाम्	अध्वम्
उ. पु.	अम्	आव	आम	ए	आवहि	आमहि

चङ् से प्रारम्भ होने के कारण लुङ् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं। चङ् परे होने पर धातु को द्वित्व होता है, अङ् परे होने पर नहीं होता है।

लुङ् लकार के सप्तम, अष्टम प्रकार के क्स से बने हुए प्रत्यय

प्र. पु.	सत्	सताम्	सन्	सत	साताम्	सन्त
म. पु.	सः	सतम्	सत	सथाः	साथाम्	सध्वम्
उ. पु.	सम्	साव	साम	सि	सावहि	सामहि

क्स से प्रारम्भ होने के कारण लुङ् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

लुङ् लकार के नवम, दशम प्रकार के केवल सिच् बने हुए प्रत्यय

प्र. पु.	सीत्	स्ताम्	सुः	स्त	साताम्	सत
म. पु.	सीः	स्तम्	स्त	स्थाः	साथाम्	ध्वम्
उ. पु.	सम्	स्व	स्म	सि	स्वहि	स्महि

सिच् से प्रारम्भ होने के कारण लुङ् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

लुङ् लकार के एकादश, द्वादश प्रकार के इट् + सिच् से बने हुए प्रत्यय

प्र. पु.	ईत्	इष्टाम्	इषुः	इष्ट	इषाताम्	इषत
म. पु.	ईः	इष्टम्	इष्ट	इष्ठाः	इषाथाम्	इढ्वम्
उ. पु.	इषम्	इष्व	इष्म	इषि	इष्वहि	इष्महि

इट् + सिच् से बने हुए लुङ् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

देखिये कि लुङ् लकार के ये प्रत्यय, सिज्लुक्, सक् + सिच्, अङ्, चङ्, क्स, सिच्, इन छह प्रकार के प्रत्ययों से ही बने हैं, किन्तु सेट् अनिट्, परस्मैपद, आत्मनेपद के भेद से ये बारह प्रकार के हो गये हैं।

अब हम इन प्रत्ययों से लुङ् लकार के धातुरूप बनायें -

धातुओं में ये प्रत्यय लगाकर लुङ् लकार के धातुरूप बनाने का जो कार्य होता है उसके अनेक खण्ड होते हैं। ये खण्ड इस प्रकार हैं -

धात्वादेश, इडागम विधि, अतिदेश, अङ्गकार्य तथा सन्धि। इन्हें हम एक एक करके जानेंगे -

धात्वादेश

लुङ्सनोर्घस्लृ - लुङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर, तथा सन् प्रत्यय परे होने पर अद् धातु को घस्लृ आदेश होता है।

लुङि च / आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् - लुङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर हन् धातु को वध आदेश होता है, किन्तु आत्मनेपदी प्रत्यय परे होने पर यह वध आदेश विकल्प से होता है।

अस्तेर्भूः - आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, अस् धातु को भू आदेश होता है।

ब्रुवो वचिः - आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, ब्रू धातु को वच् आदेश होता है।

अजेर्व्यघञपोः - घञ्, अप् से भिन्न आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, अज् धातु को वी आदेश होता है।

चक्षिङः ख्याञ् - आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, चक्षिङ् धातु को ख्या आदेश होता है।

इणो गा लुङि - लुङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर, इण् धातु को गा आदेश होता है।

विभाषा लुङ्लृङोः - लुङ् तथा लृङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर, इङ् धातु को विकल्प से गाङ् आदेश होता है।

आदेच उपदेशऽशिति - शित् प्रत्यय परे न रहने पर, एजन्त धातुओं के एच् को आ आदेश होता है -

मेङ्	-	मा	रै	-	रा	वेञ्	-	वा
स्त्यै	-	स्त्या	व्येञ्	-	व्या	ष्ट्यै	-	स्त्या
ह्वेञ्	-	ह्वा	खै	-	खा	त्रैङ्	-	त्रा
क्षै	-	क्षा	ग्लै	-	ग्ला	जै	-	जा
म्लै	-	म्ला	षै	-	सा	द्यै	-	द्या
कै	-	का	द्रै	-	द्रा	गै	-	गा
शै	-	शा	ध्यै	-	ध्या	श्रै	-	श्रा

पै	-	पा	ओवै	-	वा	ष्टै	-	स्ता
ष्णै	-	स्ना	प्यैङ्	-	प्या	श्यैङ्	-	श्या
शो	-	शा	छो	-	छा	षो	-	सा
धै	-	धा	देङ्	-	दा	दैप्	-	दा
धेट्	-	धा	दो	-	दा = ३५			

ये धातु एजन्त थे, पर लुङ् लकार के अशित् प्रत्यय परे होने पर ये आकारान्त बन गये हैं। यह लुङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर होने वाले धात्वादेशों का विचार पूर्ण हुआ।

कुल आकारान्त धातु - धातुपाठ में जो मूलतः आकारान्त धातु हैं, वे इस प्रकार हैं - पा पाने, पा रक्षणे, घ्रा, ध्मा, ष्ठा, म्ना, गाङ्, या, वा, मा, ष्णा, श्रा, द्रा, प्सा, रा, ला, ख्या, प्रा, मा, दरिद्रा, माङ्, ओहाङ्, ओहाक्, गा, ज्या, ज्ञा, डुदाञ्, दाण्, दाप्, डुधाञ् = ३०।

इनके अलावा ये ३५ एजन्त धातु हैं, जो कि लुङ् लकार के अशित् प्रत्यय परे होने पर आकारान्त बन गये हैं। अदादिगण का जो चक्षिङ् धातु है उसे भी चक्षिङः ख्याञ् सूत्र से ख्या आदेश हो गया है / इण् धातु को इणो गा लुङि सूत्र से गा आदेश हो गया है / इङ् धातु को विकल्प से गाङ् आदेश हुआ है। इन सभी को मिलाकर आकारान्त धातुओं की संख्या कुल ६८ हो गयी है।

अत्यावश्यक

लुङ् लकार प्रत्यय १२ प्रकार के हैं। लुङ् लकार के रूप बनाने में सबसे पहिले हमें यह निर्णय करना चाहिये कि हम जिस धातु के लुङ् लकार के रूप बनाना चाह रहे हैं, उससे लुङ् लकार के किस प्रत्यय का प्रयोग किया जाये ? अतः लुङ् लकार के रूप बनाने का यह कार्य हम दो हिस्सों में करेंगे।

१. प्रत्येक प्रत्यय को सामने रखकर पहले हम यह निर्णय करेंगे कि ये प्रत्यय किन किन धातुओं से लगाये जायेंगे।

२. उसके बाद हम यह प्रक्रिया बतलायेंगे कि उन धातुओं से ये प्रत्यय किस प्रकार लगाये जायेंगे। अब हम अट्, आट् आगम करना सीखें -

लुङ् लकार के अङ्गों को अट्, आट् का आगम

लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः - लुङ्, लङ्, लृङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर हलादि धातुओं को अट् का आगम होता है। अट् में ट् की इत् संज्ञा होकर 'अ' शेष बचता है।

आद्यन्तौ टकितौ - टित् आगम जिसे भी होता है, उसके आदि में बैठता

है। कित् आगम जिसे भी होता है, उसके अन्त में बैठता है। यह 'अट्' टित् आगम है। अतः यह हलादि धातु के आदि में बैठेगा। जैसे - गम् + अत् / अट् + गम् + अत् / अ + गम् + अत् = अगमत्।

आडजादीनाम् - यदि धातु 'अच्' से प्रारम्भ हो रहा हो अर्थात् अजादि हो, जैसे - इच्छ, उक्ष, अत आदि, तब उन धातुओं को अट् (अ) का आगम न होकर आट् (आ) का आगम होता है। यह 'आट्' भी टित् आगम है। अतः यह भी आदि में ही बैठेगा। यथा -

अत्	=	आ	+	अत्
इङ्ख्	=	आ	+	इङ्ख्
उक्ष्	=	आ	+	उक्ष्
ऋच्छ्	=	आ	+	ऋच्छ्
एध्	=	आ	+	एध्
ओख्	=	आ	+	ओख् आदि।

अब इनकी सन्धि कैसे करें ?

यहाँ आ + अत में, न तो **'अकः सवर्ण दीर्घः'** सूत्र से दीर्घ होता है, न ही, आ + इङ्ख् / आ + उक्ष् / आ + ऋच्छ, में **'आद् गुणः'** सूत्र से गुण होता है, अपितु यहाँ **'आटश्च'** सूत्र से वृद्धि ही होती है।

आटश्च - आट् के बाद अच् आने पर पूर्व पर के स्थान पर एक वृद्धि आदेश ही होता, है दीर्घ, गुण आदि नहीं। वृद्धि इस प्रकार होती है -

आ	+	अ, आ	=	आ	-	आ + अत्	=	आत्
आ	+	इ, ई	=	ऐ	-	आ + इङ्ख्	=	ऐङ्ख्
आ	+	उ, ऊ	=	औ	-	आ + उक्ष्	=	औक्ष्
आ	+	ऋ, ॠ	=	आर्	-	आ + ऋच्छ्	=	आर्च्छ्
आ	+	ए	=	ऐ	-	आ + एध्	=	ऐध्
आ	+	ओ	=	औ	-	आ + ओख्	=	औख्

इस प्रकार लुङ्, लङ्, लृङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर, हलादि धातुओं को 'अट्' का तथा अजादि धातुओं को 'आट्' का आगम अवश्य करें। **पर ध्यान रहे कि सारा धातुरूप बन जाने के बाद ही ये आगम किये जायें।**

न माङ्योगे - लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः तथा आडजादीनाम् सूत्रों से लुङ्, लङ्, लृङ् परे होने पर, अङ्ग को जो अट् आट् के आगम कहे गये हैं, वे माङ् (मा) का योग होने पर नहीं होते। यथा -

लुङ् - मा भवान् कार्षीत् / मा भवान् हार्षीत् / मा भवान् ईहिष्ट।

ध्यान दें कि जिन धातुओं से जो प्रत्यय कहे गये हैं, उनसे वे ही होंगे, किन्तु जिन धातुओं से कोई प्रत्यय नहीं कहा गया है, उनसे सिच् से बने हुए प्रत्यय (क्रमाङ्क ११, १२) ही होंगे, क्योंकि लुङ् लकार में ये ही औत्सर्गिक हैं।

लुङ् लकार के प्रथम प्रकार के सिज्लुक् प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद
प्र. पु.	त्	ताम्	अन् (उः)	सिच् का लुक् करके बने हुए ये
म. पु.	स् (:)	तम्	त	प्रत्यय आत्मनेपद में नहीं होते।
उ. पु.	अम्	व	म	

ये प्रत्यय सिच् प्रत्यय का लुक् करके बने हैं अतः इनका नाम सिज्लुक् प्रत्यय है। ये केवल परस्मैपद में ही होते हैं। आत्मनेपदी धातु से कभी भी ये प्रत्यय नहीं लगाये जाते हैं। ये प्रत्यय सार्वधातुक हैं, तथापि इनके परे होने पर धातुओं से शप् आदि विकरण इसलिये नहीं होते कि शप् को बाधित करके यहाँ सिच् विकरण हो चुका है।

अब विचार कीजिये कि ये प्रत्यय किन किन धातुओं से लगेंगे।

गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु - गा, स्था, घु, पा, तथा भू धातु से लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये परस्मैपद में ये सिज्लुक् वाले प्रत्यय लगाये जाते हैं। इस सूत्र का तात्पर्य इस प्रकार है -

१. ऊपर कहे गये सारे आकारान्त धातुओं को देखिये। इनमें ४ गा धातु हैं - गै (गा) / गाङ् (गा) / गा / तथा इण् गतौ का आदेश गा। इन ४ गा धातुओं में से जो इण् का आदेश गा है, उस गा धातु के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये परस्मैपद में ये सिज्लुक् वाले प्रत्यय लगाये जाते हैं। शेष तीन गा धातुओं से नहीं।

२. स्था धातु एक ही है। इससे भी लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये परस्मैपद में ये सिज्लुक् वाले प्रत्यय लगाये जाते हैं।

३. ऊपर कहे गये सारे आकारान्त धातुओं को देखिये। इनमें ६ दा धातु हैं तथा २ धा धातु हैं। इस प्रकार दारूप तथा धारूप कुल ८ धातु हैं।

इनमें से दैप्, दाप् धातुओं को छोड़ दीजिये तो ये जो ६ धातु बचे -

दो	-	दा	दाण्	-	दा
देङ्	-	दा	धेट्	-	धा
डुदाञ्	-	दा	डुधाञ्	-	धा = ६

इन छह की 'दाधाध्वदाप्' सूत्र से घुसंज्ञा होती है। इन ६ घुसंज्ञक धातुओं

में से 'धेट्' को छोड़ दीजिये, तो जो पाँच घुसंज्ञक धातु बचे, उनके लुङ् लकार परस्मैपदी रूप बनाने के लिये ये सिज्लुक् वाले प्रत्यय लगाये जाते हैं।

४. इसी प्रकार ऊपर देखिये, पा धातु भी तीन हैं। पै - पा / पा रक्षणे / तथा पा पाने। इनमें से जो भ्वादिगण का 'पा पाने' धातु है उसी के लुङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने के लिये ये सिज्लुक् वाले प्रत्यय लगाये जाते हैं। शेष दो 'पा' धातुओं से नहीं।

५. भू धातु के लुङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने के लिये ये सिज्लुक् वाले प्रत्यय लगाये जाते हैं।

इस प्रकार कुल ९ धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये परस्मैपद में ये सिज्लुक् वाले प्रत्यय नित्य लगाये जाते हैं।

विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः - घ्रा, धेट् (धा) शा, छा, सा इन ५ आकारान्त धातुओं से लुङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने के लिये ये सिज्लुक् प्रत्यय तथा सक् + इट् + सिच् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लगते है।

इस प्रकार ९ धातुओं से लुङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने के लिये ये सिज्लुक् वाले प्रत्यय नित्य लगाये जाते हैं तथा घ्रा, धेट् (धा) शा, छा, सा इन ५ धातुओं से लुङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने के लिये ये सिज्लुक् वाले प्रत्यय भी लग सकते हैं तथा सक् + इट् + सिच् से बने हुए प्रत्यय भी लग सकते हैं।

अभी तक हमने विचार किया कि इन सिज्लुक् प्रत्ययों को किन किन धातुओं में लगाते हैं।

अब विचार करें कि इन प्रत्ययों को इन धातुओं में कैसे लगाते हैं ? देखिये कि इन १४ धातुओं में से भू धातु को छोड़कर शेष १३ धातु आकारान्त ही हैं। पहिले इन १३ आकारान्त धातुओं में लुङ् लकार के प्रत्ययों को जोड़ने की विधि बतला रहे हैं।

आकारान्त धातु + लुङ् लकार के सिज्लुक् प्रत्यय

उः, स् तथा अम् प्रत्ययों को छोड़कर जो शेष ६ प्रत्यय हैं, उन्हें इन धातुओं में बिना किसी परिवर्तन के ज्यों का त्यों जोड़ दीजिये। जैसे -

अगा	+	त्	=	अगात्
अगा	+	ताम्	=	अगाताम्
अगा	+	तम्	=	अगातम्
अगा	+	त	=	अगात

अगा	+	व	=	अगाव
अगा	+	म	=	अगाम

अगा + स् / ससजुषो रुः सूत्र से स् को रु आदेश होकर अगारु / खरवसानयोर्विसर्जनीयः सूत्र से रु को विसर्ग होकर - अगाः।

अगा + अम् / अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ सन्धि करके - अगाम्।

उस्यपदान्तात् - अपदान्त 'आ' से उस् परे होने पर 'आ' को पररूप आदेश होता है। यथा - अगा + उः / 'आ' को पररूप होकर - अग् + उः = अगुः। धातुओं में उः प्रत्यय लगाकर रूप इस प्रकार बने -

अस्था	+	उः	=	अस्थ्	+	उः	=	अस्थुः
अपा	+	उः	=	अप्	+	उः	=	अपुः
अदा	+	उः	=	अद्	+	उः	=	अदुः
अधा	+	उः	=	अध्	+	उः	=	अधुः
अशा	+	उः	=	अश्	+	उः	=	अशुः
अच्छा	+	उः	=	अच्छ्	+	उः	=	अच्छुः
असा	+	उः	=	अस्	+	उः	=	असुः

अच्छुः कैसे बना - छे च - 'छ' परे होने पर, ह्रस्व को तुक् का आगम होता है। अ + छा / अ + त् + छा / स्तोः श्चुना श्चुः से त् को श्चुत्व करके - अच् + छा - अच्छा / अच्छा + उः / आ को पररूप करके - अच्छुः।

इन आकारान्त धातुओं के रूप इसी प्रकार बनेंगे। ध्यान रहे कि धातु से पूर्व लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र से अट् (अ) का आगम अवश्य होगा।

इनमें से एक 'पा' धातु के पूरे रूप दे रहे हैं -

अपात्	अपाताम्	अपुः
अपाः	अपातम्	अपात
अपाम्	अपाव	अपाम

परस्मैपद के ये सिज्लुक् वाले प्रत्यय लगाकर इन गा, स्था, घुसंज्ञक पाँच दा, धा, पा, तथा घ्रा, धेट् (धा) शा, छा, सा इन १३ धातुओं के लुङ् लकार के रूप इसी प्रकार बनाइये।

इनमें से घ्रा, धेट् (धा) शा, छा, सा धातुओं से परस्मैपद में, विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः सूत्र से सक् + इट् + सिच् से बने हुए प्रत्यय भी लग सकते हैं। इनके लगने पर बिना कुछ किये, प्रत्ययों को जोड़ दीजिये। यथा - अघ्रा + सीत् = अघ्रासीत् आदि।

अघ्रासीत्	अघ्रासिष्टाम्	अघ्रासिषुः
अघ्रासीः	अघ्रासिष्टम्	अघ्रासिष्ट
अघ्रासिषम्	अघ्रासिष्व	अघ्रासिष्म

इसी प्रकार धेट् (धा) शा, छा, सा के रूप बनाइये।

भू धातु के रूप बनाने की विशेष विधि -

ध्यान रहे कि भू धातु से भी लुङ् लकार में यही प्रत्यय लगाये जाते हैं, किन्तु भू धातु से उः प्रत्यय न लगकर अन् प्रत्यय लगता है। अब देखिये कि इन प्रत्ययों में दो प्रत्यय अजादि हैं - अन् तथा अम्।

भुवो वुग्लुङ्लिटोः - अजादि प्रत्यय परे होने पर अर्थात् अन् तथा अम् परे होने पर भू धातु को वुक् = व् का आगम होता है। यथा -

अभू + अम् / अभू + वुक् + अम् / अभू + व् + अम् = अभूवम्।

अभू + अन् / अभू + वुक् + अन् / अभू + व् + अन् = अभूवन्।

भूसुवोस्तिङि - भू, सू धातुओं को सार्वधातुक तिङ् प्रत्यय परे होने पर गुण नहीं होता है। अभू + त् - अभूत् / अभू + ताम् - अभूताम् आदि।

भू धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
अभूः	अभूतम्	अभूत
अभूवम्	अभूव	अभूम

हमने गा, स्था, घुसंज्ञक तीन दा, दो धा, पा, घ्रा, धेट् (धा) शा, छा, सा तथा भू, इन १४ धातुओं के लुङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाना सीखा।

लुङ् लकार के द्वितीय प्रकार के, धातु को सक् का आगम करके सक् + इट् + सिच् से बने हुए प्रत्यय

प्र. पु.	सीत्	सिष्टाम्	सिषुः	सक् + इट् + सिच् से बने हुए
म. पु.	सीः	सिष्टम्	सिष्ट	ये प्रत्यय आत्मनेपद में नहीं
उ. पु.	सिषम्	सिष्व	सिष्म	होते।

इन्हें किन धातुओं में लगायें ?

यमरमनमातां सक् च -

१. हमने इणादेश गा, पा पाने, स्था, तथा पाँच घुसंज्ञक दा, धा धातु, इन आठ आकारान्त धातुओं के लुङ् लकार के परस्मैपदी रूप बनाने के लिये, सिज्लुक् प्रत्यय लगाये हैं।

२. आगे ख्या, ह्वा, इन दो आकारान्त धातुओं से हम अङ् प्रत्यय लगायेंगे।

इन १० आकारान्त धातुओं को छोड़कर अब जितने भी आकारान्त धातु बचे हैं, उन्हें सामने रख लीजिये। उनमें से जो भी परस्मैपदी धातु हैं, उनके लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये ये सक् + इट् + सिच् से बने हुए परस्मैपदी प्रत्यय लगाइये। आकारान्त धातुओं में ये प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

आकारान्त धातुओं में बिना कुछ किये इन प्रत्ययों में जोड़ दीजिये। जैसे - अया + सीत् = अयासीत् आदि।

या धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अयासीत्	अयासिष्टाम्	अयासिषुः
अयासीः	अयासिष्टम्	अयासिष्ट
अयासिषम्	अयासिष्व	अयासिष्म

इसी प्रकार रा, ला, भा, आदि आकारान्त परस्मैपदी धातुओं के रूप बनाइये।

परन्तु ध्यान रहे कि यदि आकारान्त धातु आत्मनेपदी हो, तब उससे ये प्रत्यय बिल्कुल मत लगाइये, अपितु उससे आगे कहे जाने वाले केवल सिच् से बने हुए प्रत्यय लगाइये।

हलन्त धातुओं में केवल यम्, रम्, नम् इन तीन धातुओं से परस्मैपद में, ये सक् + सिच् से बने हुए प्रत्यय लगाइये।

यम्, रम्, नम् धातुओं में ये प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

नश्चापदान्तस्य झलि - अपदान्त न्, म् को अनुस्वार होता है झल् परे होने पर। अतः इस सूत्र से यम्, रम्, नम् धातुओं के म् को अनुस्वार होकर यं, रं, नं बन जायेगा।

यम् धातु के रूप इस प्रकार बने -

अयंसीत्	अयंसिष्टाम्	अयंसिषुः
अयंसीः	अयंसिष्टम्	अयंसिष्ट
अयंसिषम्	अयंसिष्व	अयंसिष्म

नम् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अनंसीत्	अनंसिष्टाम्	अनंसिषुः
अनंसीः	अनंसिष्टम्	अनंसिष्ट
अनंसिषम्	अनंसिष्व	अनंसिष्म

व्याङ्परिभ्यो रमः - यद्यपि रम् धातु आत्मनेपदी है तथापि वि तथा आ उपसर्ग से युक्त होने पर यह रम् धातु परस्मैपदी हो जाता है।

अत: जब यह वि तथा आ उपसर्ग से युक्त हाकर परस्मैपदी हो, तभी इसमें ये सक् + सिच् से बने हुए प्रत्यय लगाइये।

ध्यान रहे कि अडागम या आडागम सदा उपसर्ग के बाद और धातु के पहिले ही होता है। यथा - वि + अ + रम् + सीत् = व्यरंसीत् -

रम् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

व्यरंसीत्	व्यरंसिष्टाम्	व्यरंसिषु:
व्यरंसी:	व्यरंसिष्टम्	व्यरंसिष्ट
व्यरंसिषम्	व्यरंसिष्व	व्यरंसिष्म

परन्तु ध्यान रहे कि जब रम् धातु आत्मनेपदी हो, तब इनसे ये प्रत्यय बिल्कुल मत लगाइये, अपितु आगे कहे जाने वाले केवल सिच् से बने हुए प्रत्यय लगाइये। रम् - अरंस्त।

लुङ् लकार के तृतीय, चतुर्थ प्रकार के अङ् से बने हुए प्रत्यय

प्र. पु.	अत्	अताम्	अन्	अत	एताम्	अन्त
म. पु.	अ:	अतम्	अत	अथा:	एथाम्	अध्वम्
उ. पु.	अम्	आव	आम	ए	आवहि	आमहि

पहिले हम यह विचार करें कि अङ् से बने हुए ये प्रत्यय हमें किन किन धातुओं से लगाना चाहिये ?

१. **अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्** - असु क्षेपणे, वच परिभाषणे तथा ख्या प्रकथने, इन तीन धातुओं से लुङ् लकार में अङ् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

वच् धातु - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि एक वच परिभाषणे, परस्मैपदी धातु है, इससे लुङ् लकार में अङ् से बने हुए केवल परस्मैपदी प्रत्यय लगेंगे।

एक ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि धातु है, जो कि उभयपदी है। इस धातु को आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ब्रुवो वचि: सूत्र से वच् आदेश होता है। चूँकि यह धातु उभयपदी है अत: इससे लुङ् लकार में अङ् से बने हुए उभयपदी प्रत्यय लग सकते हैं।

असु क्षेपणे धातु - यह परस्मैपदी है किन्तु 'उपसर्गादस्त्यूह्योर्वावचनम्' इस वार्तिक से यह धातु उपसर्ग लगने पर आत्मनेपदी भी हो जाता है। अत: इससे दोनों पदों के प्रत्यय लग सकते हैं।

असु धातु जब सोपसर्ग होगा तब उसमें अङ् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय लगेंगे तो पर्यास्थत आदि रूप बनेंगे और जब असु धातु अनुपसर्ग होगा

तब उसमें अङ् से बने हुए परस्मैपदी प्रत्यय लगेंगे तो आस्थत् आदि रूप बनेंगे।

कैसे बनेंगे, यह आगे बताया जा रहा है। अभी हम केवल यह विचार कर रहे हैं कि ये अङ् से बने हुए प्रत्यय हमें किन किन धातुओं से लगाना चाहिये?

ख्या धातु - ख्या प्रकथने यह धातु अदादिगण का है, इससे लुङ् लकार में अङ् से बने हुए ये प्रत्यय लगते हैं तथा जो अदादिगण का चक्षिङ् धातु है उसे जब आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर चक्षिङः ख्याञ् सूत्र से ख्या आदेश होता है, तब उससे भी लुङ् लकार में ये अङ् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।।

२. **लिपिसिचिह्वश्च** - लिप उपदेहे, षिच क्षरणे, तथा ह्वेञ् स्पर्धायाम् इन तीन धातुओं से भी लुङ् लकार में अङ् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

३. **आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्** - लिप्, षिच् तथा ह्वे ये तीनों धातु उभयपदी हैं। इनके लिये व्यवस्था यह है कि ये जब परस्मैपद में हों तब इनसे अङ् से बने प्रत्यय लगते है।

किन्तु यदि इन धातुओं का आत्मनेपद में प्रयोग करना हो तब इनसे अङ् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय भी लग सकते हैं तथा सिच् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय जो अन्त में दिये जा रहे हैं, वे भी लग सकते हैं।

४. **पुषादिद्युताद्यॢदितः परस्मैपदेषु** - पुषादि, द्युतादि तथा ॡदित् धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये परस्मैपद में अङ् से बने हुए प्रत्ययों को लगाया जाता है। ध्यान रहे कि आत्मनेपद में इन प्रत्ययों को न लगाकर सिच् से बने हुए प्रत्ययों को ही लगाया जाता है।

पुषादिगण के धातु -

दिवादिगण का धातुपाठ देखिये। इसमें एक पुषादि अन्तर्गण है जो पुष पुष्टौ (११०७) से लेकर ष्णिह प्रीतौ (११६८) तक है। इन पुषादि धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये परस्मैपद में इन अङ् से बने हुए प्रत्ययों को लगाया जाता है।

ये पुषादि धातु इस प्रकार हैं -

शक	मदी	रध	णभ	क्लमु	क्षमु	तमु	दमु	भ्रमु
शमु	श्रमु	णश	असु	जसु	तसु	दसु	वसु	यसु
मसी	क्लिदू	क्ष्विदा	मिदा	ष्विदा	षिधु	डिप	रिष	श्लिष
बिस	ष्णिह	उच	लुट	क्रुध	क्षुध	शुध	कुप	गुप
युप	रुप	लुप	क्षुभ	तुभ	लुभ	तुष	दुष	पुष
शुष	प्लुष	रुष	व्युष	बुस	मुस	द्रुह	मुह	ष्णुह

ऋधु कृश गृधु तृप् दृप भृशु वृश तृषा हृष
कुंस भ्रंशु।

पुषादि अन्तर्गण के तृप्, दृप् धातुओं के लिये विशेष -

स्पृशमृशकृषतृपदृपां सिज्वा वक्तव्यः - पुषादि अन्तर्गण के धातुओं में से जो तृप्, दृप् धातु हैं, इनसे अङ् और सिच् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लग सकते हैं।

पुषादि अन्तर्गण के श्लिष् धातु के लिये विशेष -

श्लिष आलिङ्गने - पुषादि अन्तर्गण में श्लिष् धातु है। जब इसका अर्थ आलिङ्गन करना नहीं होता है, अपितु चिपकना आदि होता है, तब इससे अङ् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं। जब इसका अर्थ आलिङ्गन करना होता है, तब इससे क्स से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

द्युतादिगण के धातु -

अब भ्वादिगण का धातुपाठ देखिये। इसमें एक द्युतादि अन्तर्गण है। जो द्युत दीप्तौ (८५६) से लेकर कृपू सामर्थ्ये (८६९) तक है।

इन धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये परस्मैपद में इन अङ् से बने हुए प्रत्ययों को लगाया जाता है। आत्मनेपद में सिच् से बने हुए प्रत्ययों को ही लगाया जाता है। ये द्युतादि धातु इस प्रकार हैं -

णभ श्विता मिदा ष्विदा रुच घुट रुट लुट लुठ
द्युत क्षुभ तुभ शुभ वृतु वृधु श्रृधु स्यन्दू कृपू
स्रंभु भ्रंशु ध्वंसु भ्रंसु स्रंसु।

कुल ऌदित् धातु इस प्रकार हैं -

शक्लृ पत्लृ शद्लृ षद्लृ गम्लृ घस्लृ विद्लृ शिष्लृ पिष्लृ
विष्लृ मुच्लृ लुप्लृ कृप्लृ आप्लृ = १४

इन ऌदित् धातुओं में जो धातु परस्मैपदी है उनसे ही अङ् प्रत्यय लगेगा, जो आत्मनेपदी है उनमें सिच् ही लगेगा।

५. **सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च** - सृ धातु, शास् धातु तथा ऋ धातु के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये भी इन अङ् से बने हुए प्रत्ययों को लगाते हैं।

'ऋ' धातु के लिये विशेष -

समो गम्यृच्छिप्रच्छिस्वरत्यर्तिश्रुविदिभ्यः - सम् उपसर्गपूर्वक गम् धातु, ऋच्छ् धातु, प्रच्छ् धातु, ऋ धातु, श्रु धातु तथा विद् धातु, जब अकर्मक होते हैं, तब इनसे आत्मनेपदी प्रत्यय होते हैं। सकर्मक होने पर परस्मैपदी प्रत्यय होते हैं। अतः ऋ धातु जब परस्मैपदी होता है, तब इसमें अङ् से बने हुए परस्मैपद के

प्रत्यय लगते हैं किन्तु जब यह आत्मनेपदी होता है, तब इसमें अङ् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय लगते हैं।

६. **इरितो वा** - पूरे धातुपाठ में जिन धातुओं में इर् की इत् संज्ञा हुई है वे धातु इरित् धातु हैं। इन इरित् धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये ये अङ् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लगाये जाते हैं। अर्थात् हम चाहें तो अङ् से बने हुए प्रत्यय लगायें, चाहें तो अन्त में कहे हुए सिच् से बने हुए प्रत्यय लगायें। धातुपाठ के कुल इरित् धातु इस प्रकार हैं -

च्युतिर् श्चुतिर् श्च्युतिर् स्फुटिर् घुषिर् तुहिर् दुहिर् उहिर्
स्कन्दिर् दृशिर् बुधिर् णिजिर् विजिर् शुचिर् रुधिर् भिदिर्
छिदिर् क्षुदिर् उच्छृदिर् उतृदिर् रिचिर् विचिर् युजिर्

दृश् धातु के लिये विशेष - न दृशः - इरित् धातुओं में से जो दृश् धातु है, इससे अङ् और सिच् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लग सकते हैं।

७. **जृस्तन्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च** - जॄष् वयोहानौ, म्रुचु, म्लुचु गत्यर्थौ, ग्रुचु ग्लुचु स्तेयकरणे, ग्लुञ्चु गतौ, टुओश्वि गतिवृद्ध्योः इन धातुओं से तथा स्तन्भु धातु जो धातुपाठ में न होकर इस सूत्र में होने के कारण सौत्र धातु है, उससे, लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये ये अङ् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लगाये जाते हैं।

अर्थात् हम चाहें तो अङ् से बने हुए प्रत्यय लगायें, चाहें तो अन्त में कहे हुए सिच् से बने हुए प्रत्यय लगायें।

८. **कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि** - कृ, मृ, दृ, रुह् इन धातुओं से वेद में लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये अङ् प्रत्यय का प्रयोग होता है।

अतः ध्यान रहे कि लोक में अर्थात् संस्कृत भाषा में यदि इन धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाना हो तो अङ् का प्रयोग न करके यथाविहित प्रत्ययों का प्रयोग करें। लोक में कृ, मृ, दृ, धातुओं से सिच् से बने हुए तथा रुह् धातु से क्स से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

इन ८ सूत्रों के द्वारा हमने यह जाना कि किन किन धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये इन अङ् से बने हुए प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

अब हमें यह जानना है कि इन धातुओं में अङ् से बने हुए प्रत्ययों को कैसे जोड़ा जाये ? जब भी किसी प्रत्यय को किसी भी अङ्ग में जोड़ना हो तो हमारा प्रथम विचार यही होना चाहिये कि वह प्रत्यय किस प्रकार है ? सार्वधातुक

है या आर्धधातुक है ?

यदि वह प्रत्यय आर्धधातुक है तो पुन: विचार कीजिये कि वह कित् ङित् है, या ञित् णित् है या इनसे भिन्न है। हम पाते हैं कि ङ् की इत् संज्ञा होने के कारण अङ् प्रत्यय ङित् आर्धधातुक प्रत्यय है। अब हम इन धातुओं का वर्गीकरण करके इनमें अङ् से बने हुए प्रत्यय लगायें।

१. आकारान्त ख्या, ह्वा धातु + अङ् से बने हुए प्रत्यय

आतो लोप इटि च – आकारान्त अङ्ग के आ का लोप होता है, कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर तथा इट् परे होने पर। यथा –

अख्या	+	अत्	=	अख्य्	+	अत्	=	अख्यत्
अह्वा	+	अत्	=	अह्व्	+	अत्	=	अह्वत्

ख्या धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने –

अख्यत्	अख्यताम्	अख्यन्
अख्य:	अख्यतम्	अख्यत
अख्यम्	अख्याव	अख्याम

ह्वेञ् – ह्वा धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने –

अह्वत्	अह्वताम्	अह्वन्
अह्व:	अह्वतम्	अह्वत
अह्वम्	अह्वाव	अह्वाम

२. अनिदित् धातु + अङ् से बने हुए प्रत्यय

धातुपाठ में जिन धातुओं की उपधा में 'न्' होता है, उन्हें अनिदित् धातु कहते हैं। अब इन धातुओं को देखिये, जिनसे ये अङ् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं। इनमें ये स्रंस्, ध्वंस्, भ्रंस्, स्रंभ्, कुंस्, भ्रंश्, स्कन्द्, बुन्द्, स्तन्भ्, ग्लुञ्च् ये १० धातु अनिदित् धातु हैं क्योंकि इनकी उपधा में 'न्' है।

अनिदितां हल उपधाया: क्ङिति – अनिदित् धातुओं की उपधा के न् का लोप होता है, कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर। यथा –

अस्रंस्	+	अत्	=	अस्रसत्	/	अध्वंस्	+	अत्	=	अध्वसत्।
अस्रंभ्	+	अत्	=	अस्रभत्	/	अकुंस्	+	अत्	=	अकुसत्।
अभ्रंश्	+	अत्	=	अभ्रशत्	/	अस्कन्द्	+	अत्	=	अस्कदत्।
अबुन्द्	+	अत्	=	अबुदत्	/	अस्तम्भ्	+	अत्	=	अस्तभत्।
अग्लुञ्च्	+	अत्	=	अग्लुचत्	/					

स्रंस् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने –

अत्रसत्	अत्रसताम्	अत्रसन्
अत्रसः	अत्रसतम्	अत्रसत
अत्रसम्	अत्रसाव	अत्रसाम

इसी प्रकार इन दसों अनिदित् धातुओं के रूप बनाइये।

३. ऋकारान्त धातु + अङ् से बने हुए प्रत्यय

ऋदृशोऽङि गुणः - यद्यपि ङित् प्रत्यय परे होने पर क्ङिति च सूत्र गुण निषेध कर देता है, तथापि अङ् प्रत्यय परे होने पर ऋकारान्त धातुओं को और दृश् धातु को गुण हो जाता है -

अ + सृ + अत् = असर् + अत् = असरत्।
आ + ऋ + अत् = आर् + अत् = आरत्।
अ + जृ + अत् = अजर् + अत् = अजरत्।
अ + दृ + अत् = अदर् + अत् = अदरत्।
अ + कृ + अत् = अकर् + अत् = अकरत्।
अ + मृ + अत् = अमर् + अत् = अमरत्।

ध्यान रहे कि यह गुण केवल इन्हीं धातुओं के लिये है। अन्य जो भी धातु बचे हैं उन्हें अङ् प्रत्यय परे होने पर गुण कदापि नहीं होगा।

सृ धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

असरत्	असरताम्	असरन्
असरः	असरतम्	असरत
असरम्	असराव	असराम

इसी प्रकार ऋ, जृ, दृ, कृ इन ऋकारान्त धातुओं के रूप बनाइये। परन्तु यह ध्यान रहे कि जो कृ धातु से अकरत्, मृ से अमरत्, दृ से अदरत् रूप बनाये हैं, ये वैदिक हैं, लोक में अर्थात् संस्कृत में इनका प्रयोग कदापि न करें।

लोक में अर्थात् संस्कृत में तो इन धातुओं से आगे कहे जाने वाले सिच् से बने हुए प्रत्यय ही लगेंगे।

ऋ धातु -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
आरत्	आरताम्	आरन्	समरत	समरेताम्	समरन्त
आरः	आरतम्	आरत	समरथाः	समरेथाम्	समरध्वम्
आरम्	आराव	आराम	समरे	समरावहि	समरामहि

विशेष - 'समो गम्यृच्छिप्रच्छिस्वरत्यर्तिश्रुविदिभ्यः पृष्ठ १६४' सूत्र से अकर्मक ऋ धातु से आत्मनेपद हुआ है तथा 'बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि' सूत्र

से आत्मनेपदी रूपों में आट् आगम का निषेध हुआ है।

४. दृश् धातु + अङ् से बने हुए प्रत्यय

ऋदृशोऽङि गुणः से गुण करके, अदृश् + अत् - अदर्श् + अत् - अदर्शत् आदि। दृश् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अदर्शत्	अदर्शताम्	अदर्शन्
अदर्शः	अदर्शतम्	अदर्शत
अदर्शम्	अदर्शाव	अदर्शाम

५. वच् धातु + अङ् से बने हुए प्रत्यय

वच उम् - वच् धातु को उम् का आगम होता है, अङ् परे होने पर।

उम् में म् की इत् संज्ञा होने से उम् आगम मित् है और जो मित् आगम होता है वह मिदचोऽन्त्यात्परः सूत्र से अन्तिम अच् के बाद ही बैठता है।

अव + उम् + च् / अव + उ + च् / आद्गुणः से गुण होकर - अवोच् + अत् = अवोचत्, ऐसा रूप बनेगा।

ध्यान रहे कि वच परिभाषणे धातु परस्मैपदी है और ब्रू धातु उभयपदी है। अतः ब्रू धातु के स्थान पर जब ब्रुवो वचिः सूत्र से वच् आदेश होता है तब वह भी उभयपदी होता है।

अतः वच परिभाषणे से केवल परस्मैपद के प्रत्यय ही लगायें और ब्रुवो वचिः वाले वच् से दोनों पदों के। तो दोनों पदों में इसके रूप इस प्रकार बनेंगे-

	परस्मैपद			आत्मनेपद	
अवोचत्	अवोचताम्	अवोचन्त	अवोचत	अवोचेताम्	अवोचन्त
अवोचः	अवोचतम्	अवोचत	अवोचथाः	अवोचेथाम्	अवोचध्वम्
अवोचम्	अवोचाव	अवोचाम	अवोचे	अवोचावहि	अवोचामहि

६. शास् धातु + अङ् से बने हुए प्रत्यय

शास् धातु - शास इदङ्हलोः - शास् धातु के 'आ' को 'इ' होता है अङ् परे होने पर तथा हलादि कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर। अशास् + अत् - अशिस् + अत् -

शासिवसिघसीनाम् च - शास्, वस्, घस् धातुओं के इण् तथा कवर्ग के बाद आने वाले स् को ष् होता है। अशिस् + अत् = अशिषत्।

शास् धातु के पूरे परस्मैपदी रूप इस प्रकार बने -

अशिषत्	अशिषताम्	अशिषन्
अशिषः	अशिषतम्	अशिषत
अशिषम्	अशिषाव	अशिषाम

७. नश् धातु + अङ् से बने हुए प्रत्यय

'नशिमन्योरलिट्येत्वं वक्तव्यम्' - इस वार्तिक से नश् धातु को विकल्प से एत्व होकर अनेशत् भी बनता है। न होने पर अनशत्।

८. श्वि धातु + अङ् से बने हुए प्रत्यय

श्वि धातु - श्वयतेरः - श्वि धातु के इ को अ आदेश होता है अङ् प्रत्यय परे होने पर। अश्वि + अत् / अश्व + अत् / अतो गुणे सूत्र से पररूप होकर - अश्व् + अत् = अश्वत् रूप बनेगा।

श्वि धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अश्वत्	अश्वताम्	अश्वन्
अश्वः	अश्वतम्	अश्वत
अश्वम्	अश्वाव	अश्वाम

९. अस् धातु + अङ् से बने हुए प्रत्यय

अस्यतेस्थुक् - अस् धातु को थुक् का आगम होता है, अङ् परे होने पर। आ + अस् + अत् / आ + अस् + थुक् + अत् / आस् + थ् + अत् = आस्थत्। अस् धातु के पूरे परस्मैपदी रूप इस प्रकार बने -

आस्थत्	आस्थताम्	आस्थन्
आस्थः	आस्थतम्	आस्थत
आस्थम्	आस्थाव	आस्थाम

उपसर्गादस्त्यूह्योर्वावचनम् - इस वार्तिक से यह अस् धातु उपसर्ग लगने पर आत्मनेपदी भी हो जाता है -

पर्यास्थत	पर्यास्थेताम्	पर्यास्थन्त
पर्यास्थथाः	पर्यास्थेथाम्	पर्यास्थध्वम्
पर्यास्थे	पर्यास्थावहि	पर्यास्थामहि

१०. पत् धातु + अङ् से बने हुए प्रत्यय

पतः पुम् - पत् धातु को पुम् का आगम होता है अङ् परे होने पर। ध्यान रहे कि पुम् मित् आगम है अतः यह 'प' के बाद बैठेगा। अपत् + अत् / अप + पुम् + अत् / अप + प् + त् + अत् = अपप्तत्।

इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

अपप्तत्	अपप्तताम्	अपप्तन्
अपप्तः	अपप्ततम्	अपप्तत
अपप्तम्	अपप्ताव	अपप्ताम

११. शेष धातु + अङ् से बने हुए प्रत्यय

अङ् से बने हुए प्रत्यय लगने पर जिन धातुओं में जो कुछ परिवर्तन होना था, उनका हमने विचार कर लिया। अब जो भी धातु बचे, जिनमें हमें

अङ् प्रत्यय लगाना है, उनमें आप धातु + प्रत्यय को जोड़ दीजिये, बस। जैसे-

लिप्	-	अलिप्	+	अत्	=	अलिपत्
सिच्	-	असिच्	+	अत्	=	असिचत्
वृत्	-	अवृत्	+	अत्	=	अवृतत्
वृध्	-	अवृध्	+	अत्	=	अवृधत्
रुह्	-	अरुह्	+	अत्	=	अरुहत् आदि।

अब किसी भी एक धातु के रूप बनाकर देख लीजिये, उसी के समान बने हुए शेष सारे धातुओं के लुङ् लकार के रूप बना डालिये।

उदाहरण के लिये सिच् धातु के रूप -

असिचत्	असिचताम्	असिचन्	असिचत	असिचेताम्	असिचन्त
असिचः	असिचतम्	असिचत	असिचथाः	असिचेथाम्	असिचध्वम्
असिचम्	असिचाव	असिचाम	असिचे	असिचावहि	असिचामहि

विशेष ध्यातव्य - लिप्, सिच् तथा ह्वे धातु -

पीछे हमने आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् सूत्र पढ़ा है, इसके अनुसार लिप्, सिच् तथा ह्वे ये तीनों धातु उभयपदी धातु हैं। ये जब परस्मैपद में हों, तब इनसे अङ् से बने प्रत्यय ही लगते है।

किन्तु यदि इन धातुओं का आत्मनेपद में प्रयोग करना हो तब इनसे अङ् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय भी लग सकते हैं तथा सिच् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय जो अन्त में दिये जा रहे हैं, वे भी लग सकते हैं।

सिच् से बने हुए प्रत्ययों को लगाने की विधि आगे बतलाई जायेगी।

परस्मैपद	आत्मनेपद
अलिपत्	अलिपत / अलिप्त
असिचत्	असिचत / असिक्त
अह्वत्	अह्वत / अह्वास्त

द्युतादि धातु - यद्यपि द्युतादि धातु सारे के सारे आत्मनेपदी हैं तथापि 'द्युद्भ्यो लुङि' सूत्र कहता है कि ये सारे धातु लुङ् लकार में विकल्प से परस्मैपदी हो जायें। जब ये धातु परस्मैपदी होंगे, तब इनसे अङ् से बने हुए परस्मैपदी प्रत्यय लगेंगे - द्युत् - अद्युतत् / वृत् - अवृतत् आदि ।

परन्तु जब ये आत्मनेपदी होंगे, तब इनसे आगे कहे जाने वाले सिच् से बने हुए प्रत्यय ही लगेंगे। इस प्रकार अङ् प्रत्यय लगाते समय हमें पहले पद का विचार अवश्य कर लेना चाहिये।

इरितो वा सूत्र कहता है कि इरित् धातुओं से अङ् प्रत्यय विकल्प से लगता है। अत: जब अङ् प्रत्यय न लगे तब इनसे यथानिर्दिष्ट प्रत्यय ही लगाइये।

लुङ् लकार के पञ्चम तथा षष्ठ प्रकार के चङ् से बने हुए प्रत्यय

धातुओं से चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाना अत्यन्त जटिल कार्य है। इसे खण्ड खण्ड में ही सीखा जा सकता है। अत: हम इसे बनाने की विधि खण्ड खण्ड में ही बतला रहे हैं।

पहले हम विचार करें कि चङ् से बने हुए प्रत्यय किन किन धातुओं से लगते हैं।

णिश्रिद्रुस्रुभ्य: कर्तरि चङ् - सारे ण्यन्त धातुओं से तथा श्रि, द्रु तथा स्रु धातुओं से (णिच् के बिना भी) लुङ् लकार में चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाये जाते हैं। इसका स्पष्टार्थ इस प्रकार है -

१. चुरादिगण के सारे धातुओं से स्वार्थ में णिच् प्रत्यय लगाया जाता है, अत: चुरादिगण के सारे धातु ण्यन्त हैं।

किसी भी गण के किसी भी धातु में जब प्रेरणा अर्थ की वृद्धि हो जाती है, जैसे - करना - कराना / देखना - दिखाना / जाना - भेजना / लिखना - लिखाना / खाना - खिलाना आदि, तब इस प्रेरणा अर्थ को बतलाने के लिये किसी भी गण के किसी भी धातु से णिच् प्रत्यय लगाया जा सकता है। जैसे -

पठ्	-	पढ़ना	पठ्	+	णिच्	=	पढ़ाना
गम्	-	जाना	गम्	+	णिच्	=	भेजना
कृ	-	करना	कृ	+	णिच्	=	कराना
दृश्	-	देखना	दृश्	+	णिच्	=	दिखाना
वृध्	-	बढ़ना	वृध्	+	णिच्	=	बढ़ाना

ऐसे ण्यन्त धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये उनमें चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाये जाते हैं।

२. 'कमेर्णिङ्' सूत्र से कम् धातु से स्वार्थ में णिङ् प्रत्यय लगता है। अत: कम् + णिङ्, इस ण्यन्त धातु से भी लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये 'णिश्रिद्रुस्रुभ्य: कर्तरि चङ्' सूत्र से चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाये जाते हैं।

३. श्रि, द्रु तथा स्रु धातुओं से (णिच् लगने पर और णिच् के बिना भी) लुङ् लकार में चङ् से बने हुए प्रत्यय ही लगाये जाते हैं।

आयादय आर्धधातुके वा - आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ये णिङ्

आदि प्रत्यय, विकल्प से लगते हैं। लुङ् लकार आर्धधातुक लकार है, अतः लुङ् लकार में कम् धातु से यह णिङ् प्रत्यय विकल्प से लगेगा।

कमेश्च्लेश्चङ् वाच्यः - कम् धातु से जब 'णिङ्' प्रत्यय न भी लगा हो, तब भी इसके लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये, इससे चङ् से बने हुए प्रत्यय ही लगाये जाते हैं।

विभाषा धेट्श्व्योः - धेट् पाने तथा टुओश्वि गतिवृद्ध्योः, इन दो धातुओं से लुङ् लकार में विकल्प से चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाये जाते हैं।

हम पढ़ चुके हैं कि विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः सूत्र से धेट् धातु से सिज्लुक् वाले प्रत्यय तथा सक् + सिच् प्रत्यय विकल्प से लगते हैं। यह सूत्र धेट् धातु से चङ् प्रत्यय का विकल्प करता है। इस प्रकार धेट् धातु से तीन प्रत्यय हुए।

१. सिज्लुक्	२. सक्	३. चङ्
अधात्	अधासीत्	अदधत्

हम पढ़ चुके हैं कि जृस्तन्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च सूत्र से श्वि धातु से विकल्प से अङ् प्रत्यय तथा सिच् प्रत्यय होते हैं। इस सूत्र से विकल्प से चङ् प्रत्यय होता है तो श्वि धातु से भी तीन प्रत्यय सिद्ध हुए ।

१. अङ्	२. चङ्	३. सिच्
अश्वत्	अशिश्वयत्	अश्वयीत्

गुपेश्छन्दसि - गुप् धातु से वेद में विकल्प से चङ् तथा सिच् प्रत्यय लगते हैं। इमान्नो मित्रावरुणौ गृहानजूगुपतम् / अगौप्तम् / अगोपिष्टम् / अगोपायिष्टम्। लोक में गुप् धातु से चङ् प्रत्यय नहीं लगता, केवल सिच् प्रत्यय ही लगता है।

नोनयतिध्वनयत्येलयत्यर्दयतिभ्यः - वेद में ऊन्, ध्वन्, इल्, अर्द्, इन चार धातुओं से णिच् प्रत्यय परे होने पर भी, सिच् प्रत्यय होता है, किन्तु लोक में इन धातुओं से णिच् प्रत्यय परे होने पर चङ् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं -

		वेद में	लोक में
ऊन्	-	औनयीत्	औननत्
ध्वन्	-	अध्वनीत्	अदिध्वनत्
इल्	-	ऐलयीत्	ऐलिलत्
अर्द्	-	आर्दीत्	आर्दिदत्

निष्कर्ष -

१. जिन धातुओं के अन्त में णिच्, णिङ् प्रत्यय होते हैं, उन ण्यन्त धातुओं

से लुङ् लकार में चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाये जाते हैं।

२. श्रि, द्रु, स्रु, धेट्, श्वि, गुप्, कम् इन सात धातुओं से णिच् लगने पर अथवा णिच् प्रत्यय लगे बिना, दोनों ही स्थितियों में लुङ् लकार में चङ् से बने हुए प्रत्यय ही लगाये जाते हैं। किन्तु दोनों ही स्थितियों में प्रक्रिया अलग अलग होती है।

३. धेट् धातु से सिज्लुक् प्रत्यय, सक् + इट् + सिच् से बने हुए प्रत्यय तथा चङ् प्रत्यय, ये तीन प्रत्यय विकल्प से लगते हैं।

४. श्वि धातु से विकल्प से अङ्, सिच् तथा चङ् प्रत्यय, ये तीन प्रत्यय विकल्प से लगते है।

धातुओं में चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाने की विधि

चङ् से बने हुए प्रत्यय इस प्रकार हैं -

प्र. पु.	अत्	अताम्	अन्	अत	एताम्	अन्त
म. पु.	अः	अतम्	अत	अथाः	एथाम्	अध्वम्
उ. पु.	अम्	आव	आम	ए	आवहि	आमहि

इन सारे प्रत्ययों के आदि में जो 'अ' दिख रहा है, वह 'चङ्' ही है। चङ् में च्, ङ् की इत् संज्ञा होकर 'अ' शेष बचता है। अतः चङ् तथा अङ् से बने प्रत्यय एक समान दिखते हैं।

धातुओं में इन प्रत्ययों को लगाने का कार्य हम तीन हिस्सों में सीखेंगे।

१. हलादि ण्यन्त धातुओं में चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाने की विधि।

२. श्रि, द्रु, स्रु, धेट्, श्वि, गुप्, कम् इन सात अण्यन्त धातुओं में चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाने की विधि।

३. अजादि ण्यन्त धातुओं में चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाने की विधि।

हलादि ण्यन्त धातुओं में चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाने की विधि

हलादि धातुओं में चङ् से बने हुए प्रत्ययों को इस क्रम से लगाइये -

१. धातु को द्वित्व कीजिये।

२. अभ्यासकार्य कीजिये।

३. अडागम कीजिये।

४. इसके बाद णिच् प्रत्यय परे होने पर होने वाले अङ्गकार्य करके णेरनिटि सूत्र से 'णिच्' प्रत्यय का लोप कर दीजिये।

५. इसके बाद जिन धातुओं की उपधा में दीर्घ स्वर दिखे, उसे ह्रस्व

कर दीजिये। (अपवादों को छोड़कर)

६. इसके बाद यदि अभ्यास के अन्तिम 'अ' को 'इ' करना, अथवा अभ्यास के अन्तिम 'उ' को 'इ' करना, तथा अभ्यास के अन्तिम 'ह्रस्व स्वर' को 'दीर्घ' करना, प्राप्त हो, तो उसे कीजिये। (अपवादों को छोड़कर)

अब ये कार्य क्रमशः बतलाये जा रहे हैं -

क्रमाङ्क १. हलादि धातुओं को द्वित्व करने की विधि

ध्यान दें कि चङ् और अङ् से बने हुए प्रत्यय यद्यपि एक जैसे हैं, तथापि अङ् से बने प्रत्ययों के लगने पर धातु को द्वित्व नहीं होता और चङ् से बने प्रत्ययों के लगने पर धातु को द्वित्व हो जाता है। यही दोनों का अन्तर है।

विशेष - चङ् प्रत्यय लगने पर हमारे सामने धातु + णिच् + चङ् से बने हुए ये प्रत्यय, ये तीन खण्ड होते हैं। प्रश्न होता है कि पहिले हम धातु + णिच् को जोड़ दें, अथवा पहिले धातु को 'चङि' सूत्र से द्वित्व करें।

इसके लिये व्यवस्था यह है कि -

१. जब धातु अजादि होता है अर्थात् अच् से प्रारम्भ होता है, तब णिच् प्रत्यय को धातु में जोड़ने के बाद धातु को द्वित्व करते हैं।

२. जब धातु हलादि होता है अर्थात् हल् से प्रारम्भ होता है, तब 'णिच्' प्रत्यय को जोड़े बिना, उसे अलग रखकर ही धातु को द्वित्व कर देते हैं।

हलादि धातुओं को द्वित्व करने की विधि

अब हम चङ् से बने हुए इन प्रत्ययों में से प्रथम पुरुष एकवचन के एक प्रत्यय को 'अत्' को लेकर आगे की पूरी प्रक्रिया बतलायेंगे। उसी के समान अन्य सारे रूप बना लीजिये।

चङि / एकाचो द्वे प्रथमस्य - चङ् परे होने पर हलादि अनभ्यास धातु के प्रथम अवयव एकाच् को द्वित्व होता है। वृक्षप्रचलनन्यायेन पूरे के पूरे एकाच् हलादि धातु को 'चङि' सूत्र से द्वित्व हो जाता है। जैसे -

लिख्	+	णिच्	+	अत्	=	लिख् लिख्	+	णिच् +	अत्
मील्	+	णिच्	+	अत्	=	मील् मील्	+	णिच् +	अत्
कम्	+	णिच्	+	अत्	=	कम् कम्	+	णिच् +	अत्
नम्	+	णिच्	+	अत्	=	नम् नम्	+	णिच् +	अत्
वृध्	+	णिच्	+	अत्	=	वृध् वृध्	+	णिच् +	अत्
क्रुध्	+	णिच्	+	अत्	=	क्रुध् क्रुध्	+	णिच् +	अत्
श्रि	+	णिच्	+	अत्	=	श्रि श्रि	+	णिच् +	अत्
द्रु	+	णिच्	+	अत्	=	द्रु द्रु	+	णिच् +	अत्

स्रु + णिच् + अत् = स्रु स्रु + णिच् + अत्
धा + णिच् + अत् = धा धा + णिच् + अत्
गुप् + णिच् + अत् = गुप् गुप् + णिच् + अत्

अनेकाच् हलादि धातु के केवल प्रथम अवयव एकाच् को द्वित्व होता है। यथा चकास् - चचकास्। जागृ - जाजागृ।

विशेष हलादि धातु -

१. **स्वापेश्चडि** - ण्यन्त स्वप् धातु के लिये यहाँ यह ध्यान रखना चाहिये कि इससे चङ् प्रत्यय परे होने पर, इसे पहिले सम्प्रसारण होकर सुप् बनता है, उसके बाद उस सुप् को द्वित्व होकर सुप् सुप् + अत् बनता है।

२. **णौ च संश्चङो:** - सन् अथवा चङ् प्रत्यय परे होने पर, ण्यन्त श्वि धातु को विकल्प से सम्प्रसारण होता है। अत: एक बार तो इसे सम्प्रसारण होकर 'शु' बनता है, और इस 'शु' को द्वित्व होकर शु शु + अत् बनता है, और एक बार सम्प्रसारण न होकर श्वि ही रहता है, और इस 'श्वि' को द्वित्व होकर श्वि श्वि + अत् बनता है।

३. **ह्व: संप्रसारणम्** - ण्यन्त ह्वे - ह्वा धातु से, चङ् प्रत्यय परे होने पर पहिले सम्प्रसारण होकर उसे हु बनता है, उसके बाद में उसे द्वित्व होकर हु हु + अत् बनता है। द्वित्व करते समय ये तीनों सूत्र अवश्य याद रखें।

अभ्यास संज्ञा

पूर्वोऽभ्यास: - द्वित्व प्रकरण में जब भी जिस भी धातु को द्वित्व होता है, उसमें पूर्व वाले का नाम अभ्यास होता है। जैसे -

लिख् - लिख् लिख् में पूर्व वाला लिख् / भू - भू भू में पूर्व वाला भू / वद् - वद् वद् में पूर्व वाला वद् / पठ् - पठ् पठ् में पूर्व वाला पठ् अभ्यास हैं। द्वित्व करने के बाद हमें इस प्रकार अभ्यासकार्य करना चाहिये -

क्रमाङ्क २. अभ्यासकार्य

१. **हलादि: शेष:** - अभ्यास का आदि हल् शेष बचता है, अनादि हलों का लोप हो जाता है।

जैसे - पठ् पठ् को देखिये, इसमें पूर्व वाला 'पठ्' अभ्यास है, इस अभ्यास में पहिला हल् प् है तथा पहिला अच् अ है, इन्हें मिलाकर बना 'प'। इसे बचा लीजिये तथा शेष का हलादि: शेष: से लोप कर दीजिये, तो बनेगा - पपठ्।

ज्ञा ज्ञा को देखिये, इसमें पूर्व वाला ज्ञा अभ्यास है, इस अभ्यास में पहिला हल् ज् है तथा पहिला अच् आ है, इन्हें मिलाकर बना 'जा'। इसे बचा लीजिये तथा शेष का हलादि: शेष: से लोप कर दीजिये, तो बनेगा - जाज्ञा।

इसी प्रकार कुछ धातुओं को द्वित्व करके देखिये तथा अभ्यास के पहिले हल्, पहिले अच् को बचा लीजिये और शेष का लोप कर दीजिये -

पठ्	-	पठ् पठ्	प पठ्	+	णिच्	+	अत्
कम्	-	कम् कम्	क कम्	+	णिच्	+	अत्
वद्	-	वद् वद्	व वद्	+	णिच्	+	अत्
लिख्	-	लिख् लिख्	लि लिख्	+	णिच्	+	अत्
खाद्	-	खाद् खाद्	खा खाद्	+	णिच्	+	अत्
मूष्	-	मूष् मूष्	मू मूष्	+	णिच्	+	अत्
भुज्	-	भुज् भुज्	भु भुज्	+	णिच्	+	अत्
भूष्	-	भूष् भूष्	भू भूष्	+	णिच्	+	अत्
मील्	-	मील् मील्	मी मील्	+	णिच्	+	अत्
वृष्	-	वृष् वृष्	वृ वृष्	+	णिच्	+	अत्
नी	-	नी नी	नी नी	+	णिच्	+	अत्
भू	-	भू भू	भू भू	+	णिच्	+	अत्
ज्ञा	-	ज्ञा ज्ञा	जा ज्ञा	+	णिच्	+	अत्

हलादि: शेष: के अपवाद -

शर्पूर्वा: खय: - यदि ऐसे हलादि धातु हों जिनके आदि में स्, श्, या ष् हों तथा उन स्, श्, या ष् के बाद किसी भी वर्ग का प्रथम या द्वितीय अक्षर हो, जैसे स्था, स्फुल्, स्तभ्, स्तम्भ, स्पर्ध्, स्पृश्, श्च्युत् आदि में है, तब इन धातुओं के अभ्यासों में से द्वितीय हल् तथा प्रथम अच् को मिलाकर जो भी अक्षर बने उसे बचा लीजिये। और शेष का शर्पूर्वा: खय: से लोप कर दीजिये। इसे करके देखिये। जैसे - स्पर्ध् - स्पर्ध् स्पर्ध् को देखिये।

यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में पवर्ग का प्रथम अक्षर प् है, अत: इस अभ्यास के द्वितीय हल् प् तथा प्रथम अच् अ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'प' को बचा लीजिये। और शेष का शर्पूर्वा: खय: से लोप कर दीजिये। स्पर्ध् - स्पर्ध् स्पर्ध् को पस्पर्ध्।

इसी प्रकार - स्था - स्था स्था को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में तवर्ग का द्वितीय अक्षर थ् है, अत: इस अभ्यास के द्वितीय हल् थ् तथा प्रथम अच् आ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'था' को बचा लीजिये। और शेष का शर्पूर्वा: खय: से लोप कर दीजिये - स्था - स्था स्था को थास्था।

इसी प्रकार - स्तम्भ् - स्तम्भ् स्तम्भ् को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि

में स् है, उस स् के बाद में तवर्ग का प्रथम अक्षर त् है, अतः इस अभ्यास के द्वितीय हल् त् तथा प्रथम अच् अ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'त' को बचा लीजिये। और शेष का हलादिः शेषः से लोप कर दीजिये - स्तम्भ् - स्तम्भ् स्तम्भ् को तस्तम्भ्।

इसी प्रकार - स्फुल् - स्फुल् स्फुल् को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में पवर्ग का द्वितीय अक्षर फ् है, अतः इस अभ्यास के द्वितीय हल् फ् तथा प्रथम अच् उ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'फु' को बचा लीजिये। और शेष का हलादिः शेषः से लोप कर दीजिये - स्फुल् को फुस्फुल्।

इसी प्रकार - श्च्युत् - श्च्युत् श्च्युत् को देखिये।

यहाँ अभ्यास के आदि में श् है, उस श् के बाद में चवर्ग का प्रथम अक्षर च् है, अतः इस अभ्यास के द्वितीय हल् च् तथा प्रथम अच् उ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'चु' को बचा लीजिये। और शेष का हलादिः शेषः से लोप कर दीजिये। श्च्युत् को चुश्च्युत्। ऐसे धातु इस प्रकार हैं -

स्पर्ध्	-	पस्पर्ध्	+	णिच्	+	अत्
स्कुन्द्	-	कुस्कुन्द्	+	णिच्	+	अत्
स्पन्द्	-	पस्पन्द्	+	णिच्	+	अत्
स्तुच्	-	तुस्तुच्	+	णिच्	+	अत्
स्फूर्ज्	-	फुस्फूर्ज्	+	णिच्	+	अत्
स्फुट्	-	फुस्फुट्	+	णिच्	+	अत्
स्तम्भ्	-	तस्तम्भ्	+	णिच्	+	अत्
स्कम्भ्	-	कस्कम्भ्	+	णिच्	+	अत्
स्तुभ्	-	तुस्तुभ्	+	णिच्	+	अत्
स्खद्	-	खस्खद्	+	णिच्	+	अत्
स्खल्	-	खस्खल्	+	णिच्	+	अत्
स्थल्	-	थस्थल्	+	णिच्	+	अत्
स्पश्	-	पस्पश्	+	णिच्	+	अत्
स्कन्द्	-	कस्कन्द्	+	णिच्	+	अत्
स्तिघ्	-	तिस्तिघ्	+	णिच्	+	अत्
स्थुड्	-	थुस्थुड्	+	णिच्	+	अत्
स्फुर्	-	फुस्फुर्	+	णिच्	+	अत्
स्फुल्	-	फुस्फुल्	+	णिच्	+	अत्
स्फुड्	-	फुस्फुड्	+	णिच्	+	अत्
स्फुड्	-	फुस्फुड्	+	णिच्	+	अत्

स्फिट्ट	-	फिस्फिट्ट	+	णिच्	+	अत्
स्तुप्	-	तुस्तुप्	+	णिच्	+	अत्
स्तन्	-	तस्तन्	+	णिच्	+	अत्
स्तेन्	-	तेस्तेन्	+	णिच्	+	अत्
स्तोम	-	तोस्तोम्	+	णिच्	+	अत्
स्कु	-	कुस्कु	+	णिच्	+	अत्
स्तॄ	-	तॄस्तॄ	+	णिच्	+	अत्
स्तु	-	तुस्तु	+	णिच्	+	अत्
ष्ठिव्	-	ठिष्ठिव्	+	णिच्	+	अत्
स्ता	-	तास्ता	+	णिच्	+	अत्
स्था	-	थास्था	+	णिच्	+	अत्
स्त्या	-	तास्त्या	+	णिच्	+	अत्

२. **ह्रस्वः** - धातु को द्वित्व तथा हलादिः शेषः करने के बाद देखिये कि जो अभ्यास है उसमें यदि दीर्घ स्वर है तो उसे ह्रस्व हो जाता है।

जैसे - खाद् - खा खाद् में पूर्व वाले 'खा' का नाम अभ्यास है, उसे ह्रस्व होकर 'ख खाद्' बन जायेगा।

इसी प्रकार मील् - मी मील् को मि मील्, भूष् - भू भूष् को भु भूष्, भू - भू भू को भु भू आदि बनाइये। ह्रस्व इस प्रकार होते हैं -

आ का ह्रस्व	अ	-	यथा	-	खा खाद्	-	ख खाद्
ई का ह्रस्व	इ	-	यथा	-	नीनी	-	निनी
ऊ का ह्रस्व	उ	-	यथा	-	भू भू	-	भु भू
ॠ का ह्रस्व	ऋ	-	यथा	-	तॄ तॄ	-	तृ तॄ
ए का ह्रस्व	इ	-	यथा	-	से सेव्	-	सि सेव्
ओ का ह्रस्व	उ	-	यथा	-	गो गोष्ट्	-	गु गोष्ट्
औ का ह्रस्व	उ	-	यथा	-	ढौ ढौक्	-	ढु ढौक्

३. **उरत्** - अभ्यास के ऋ, ॠ के स्थान पर 'अ' आदेश होता है। (जो कि 'उरण् रपरः' सूत्र की सहायता से रपर होकर 'अर्' हो जाता है।)

अतः अभ्यास के अन्त में आने वाले ऋ, ॠ हो, को इस सूत्र से अर् बनाइये, बाद में हलादिः शेषः से र् का लोप करके अर् को अ बना दीजिये।

ऋकारान्त अभ्यास के कुछ उदाहरण देखिये -

वृष् - वृष् वृष् - वृवृष् - वर् वृष् - व वृष्

कृष्	-	कृष् कृष्	-	कृकृष्	-	कर् कृष्	-	क कृष्
वृत्	-	वृत् वृत्	-	वृ वृत्	-	वर् वृत्	-	व वृत्
हृ	-	हृ हृ	-	हृ हृ	-	हर् हृ	-	ह हृ
कृ	-	कृ कृ	-	कृ कृ		कर् कृ	-	क कृ
भृ	-	भृ भृ	-	भृ भृ		भर् भृ	-	भ भृ
तृ	-	तृ तृ	-	तृ तृ		तर् तृ	-	त तृ

४. **कुहोश्चुः** - अभ्यास के कवर्ग तथा हकार को चवर्ग आदेश होता है। (अतः में यदि कवर्ग का कोई वर्ण हो, तो इस सूत्र से अभ्यास के उस कवर्ग के वर्ण को आप चवर्ग का वर्ण बना दीजिये। घ्यान रहे कि वर्ण का क्रमाङ्क वही रहे - जैसे क को च / ख को छ / ग को ज / घ को झ। यदि अभ्यास में 'ह' हो तो उस 'ह' को 'ज' बना दीजिये। इसे चुत्व करना कहते हैं।

५. **अभ्यासे चर्च** - अभ्यास के झश् को जश् और खय् को चर् आदेश होते हैं। (अतः यदि अभ्यास में वर्ग का चतुर्थाक्षर हो तो उसे आप उसी वर्ग का तृतीयाक्षर बना दीजिये, इसे जश्त्व करना कहते हैं। यदि अभ्यास में वर्ग का द्वितीयाक्षर हो, तो उसे आप उसी वर्ग का प्रथमाक्षर बना दीजिये। इसे चर्त्व करना कहते हैं।) इन सभी के उदाहरण -

कृ	-	कृ कृ	-	कर् कृ	-	क कृ	-	च कृ
खन्	-	खन् खन्	-	ख खन्	-	छ खन्	-	च खन्
गम्	-	गम् गम्	-	ग गम्	-	ज गम्	-	ज गम्
घृ	-	घृ घृ	-	घर् घृ	-	झ घृ	-	ज घृ
हृ	-	हृ हृ	-	हर् हृ	-	ज हृ	-	ज हृ
हस्	-	हस् हस्	-	ह हस्	-	ज हस्	-	ज हस्
ग्रह्	-	ग्रह् ग्रह्	-	ग ग्रह्	-	ज ग्रह्	-	ज ग्रह्
भुज्	-	भुज् भुज्	-	भु भुज्	-	बु भुज्	-	बुभुज्
फल्	-	फल् फल्	-	फ फल्	-	प फल्	-	पफल्
ढौक्	-	ढौक् ढौक्	-	ढु ढौक्	-	डु ढौक्	-	डुढौक्
थुड्	-	थुड् थुड्	-	थु थुड्	-	तु थुड्	-	तु थुड्
धृ	-	धृ धृ	-	धर् धृ	-	ध धृ	-	द धृ
झर्झ्	-	झर्झ् झर्झ्	-	झ झर्झ्	-	ज झर्झ्	-	ज झर्झ्
भ्रज्ज्	-	भ्रज्ज् भ्रज्ज्	-	भ भ्रज्ज्	-	ब भ्रज्ज्	-	ब भ्रज्ज्
भू	-	भू भू	-	भु भू	-	बु भू	-	बु भू आदि।

अभ्यासाच्च - अभ्यास से परे जो हन् धातु का हकार उसे कवर्गादेश होकर घ् हो जाता है। जैसे -

हन् - हन् हन् - ह हन् - ज हन् - ज घन्

हमने देखा कि अभ्यास में रहने वाले कवर्ग के सारे व्यञ्जनों में तथा अन्य वर्गों के केवल दूसरे, चौथे व्यञ्जनों में, तथा हकार में ही ये ऊपर कहे हुए परिवर्तन होते हैं। यदि अभ्यास में दूसरे, चौथे व्यञ्जनों कवर्ग और हकार के अलावा कोई भी व्यञ्जन हैं तब आप उन्हें कुछ मत कीजिये। जैसे -

चल् - च चल् - च चल् / जप् - ज जप् - ज जप्
टीक् - टि टीक् - टि टीक् / डी - डि डी - डि डी
तॄ - त तॄ - त तॄ / दल् - द दल् - द दल्
नम् - न नम् - न नम् / पत् - प पत् - प पत्
बाध् - ब बाध् - ब बाध् / मील् - मि मील् - मि मील्
यम् - य यम् - य यम् / वृध् - व वृध् - व वृध्
रम् - र रम् - र रम् / लप् - ल लप् - ल लप्
शास् - श शास् - श शास् / सृ - स सृ - स सृ

यह धातुओं के द्वित्व तथा अभ्यासकार्य की विधि पूर्ण हुई। धातु को द्वित्व होने पर अभ्यास को ये कार्य तो होंगे ही अतः इन्हें कण्ठस्थ कर लें।

क्रमाङ्क ३. अडागम

लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः - लुङ्, लङ्, लृङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर हलादि अङ्ग को अट् (अ) का आगम होता है।

अतः द्वित्वाभ्यासकार्य कर चुकने के बाद, अब हलादि अङ्ग को इस सूत्र से अट् (अ) का आगम कर दीजिये, जैसे -

बु भू + णिच् + अत् = अ बु भू + णिच् + अत्
व वृष् + णिच् + अत् = अ व वृष् + णिच् + अत्
ज घट् + णिच् + अत् = अ ज घट् + णिच् + अत्
सि षिध् + णिच् + अत् = अ सि षिध् + णिच् + अत्
य यम् + णिच् + अत् = अ य यम् + णिच् + अत्
व वृध् + णिच् + अत् = अ व वृध् + णिच् + अत् आदि।

द्वित्व तथा अभ्यास कार्य करके अडागम कर चुकने के बाद अब धातु में णिच् प्रत्यय परे होने वाले कार्य करें। उसके बाद णिच् का लोप कर दें।

क्रमाङ्क ३. हलादि धातुओं में णिच् को जोड़ना,

उसके बाद णिच् का लोप करना

णेरनिटि - अनिडादि आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर 'णि' का लोप हो जाता है। चाहे वह 'णि', णिच् प्रत्यय का हो चाहे णिङ् प्रत्यय का।

देखिये कि द्वित्व तथा अभ्यासादि कार्य करने के बाद अब हमारे सामने अट् + अभ्यास + धातु + णिच् + चङ् से बने हुए प्रत्यय, ये पाँच खण्ड हैं।

इन्हें हमें जोड़ना है। यह कार्य क्रमशः ही होगा।

सबसे पहिले आप णिच् प्रत्यय परे होने पर धातु को जो भी कार्य प्राप्त हों, उन्हें कर लें। उसके बाद णेरनिटि सूत्र से णिच् प्रत्यय का लोप कर दें।

आकारान्त धातुओं से णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -

अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ - ऋ धातु, ह्री धातु, ब्ली ध ातु री धातु, क्नूय् धातु, क्ष्मायी धातु तथा सभी आकारान्त धातुओं को पुक् को आगम होता है। इस सूत्र से आकारान्त धातुओं को पुक् का आगम करके 'णेरनिटि' सूत्र से णिच् प्रत्यय का लोप कर दें।

अ ज ज्ञा + णिच् + अत् - अ जज्ञा + पुक् + णिच् + अत् = अ जज्ञाप् + अत्
अ त स्था + णिच् + अत् - अ त स्था + पुक् + णिच् + अत् = अ तस्थाप् + अत्
अ द दा + णिच् + अत् - अ द दा + पुक् + णिच् + अत् = अ ददाप् + अत्
अ द धा + णिच् + अत् - अ द धा + पुक् + णिच् + अत् = अ दधाप् + अत्

पुगागम के अपवाद - शो, छो, षो, ह्वे, व्ये, वे, पा धातु -

शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक् - शो - शा / छो - छा / सो - सा / ह्वे - ह्वा / व्ये - व्या / वे - वा / और पा इन सात आकारान्त धातुओं को पुक् (प्) का आगम न होकर युक् (य्) का आगम होता है -

अ श शा + णिच् + अत् - अ श शा + युक् + णिच् + अत् = अ शशाय् + अत्
अ च छा + णिच् + अत् - अ च छा + युक् + णिच् + अत् = अ चच्छाय् + अत्
अ स सा + णिच् + अत् - अ स सा + युक् + णिच् + अत् = अ स साय् + अत्
अ व व्या + णिच् + अत् - अ व व्या + युक् + णिच् + अत् = अ व व्याय् + अत्
अ व वा + णिच् + अत् - अ व वा + युक् + णिच् + अत् = अ व वाय् + अत्
अ प पा + णिच् + अत् - अ प पा + युक् + णिच् + अत् = अ प पाय् + अत्

पा रक्षणे धातु - लुगागमस्तु तस्य वक्तव्यः (वा.) - पा रक्षणे धातु को लुक् का आगम होता है। ध्यान दीजिये कि पा पाने धातु को युक् का आगम होता है किन्तु पा रक्षणे धातु को लुक् का आगम होता है।

अ प पा + णिच् + अत् - अ प पा + लुक् + णिच् + अत् = अ प पाल् + अत्

वा धातु - वो विधूनने जुक् - वा धातु का अर्थ यदि हवा झलना,

कँपाना हो तो उसे जुक् का आगम होता है -

अ व वा + णिच् + अत् - अ व वा + जुक् + णिच् + अत् = अ व वाज् + अत्

ला धातु - लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहनिपातने - स्नेहनिपातन अर्थात् घी पिघलाना आदि अर्थ में, ला धातु को लुक् का आगम विकल्प से होता है। लुक् का आगम होने पर -

अ ल ला + णिच् + अत् - अ ल ला + लुक् + णिच् + अत् = अ ल लाल् + अत्

पुक् का आगम होने पर -

अ ल ला + णिच् + अत् - अ ल ला + पुक् + णिच् + अत् = अ ल लाप् + अत्

यह आकारान्त धातुओं का विचार हुआ।

इकारान्त, ईकारान्त धातुओं से णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -

इनके अन्तिम इ, ई को णिच् परे होने पर अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके ऐ बनाइये तथा एचोऽयवायावः सूत्र से आय् आदेश कीजिये -

अ लि ली + णिच् + अत् - अ लिलै + णिच् + अत् = अ लिलाय् + अत्
अ श्रि श्री + णिच् + अत् - अ श्रिश्रै + णिच् + अत् = अ श्रिश्राय् + अत्
अ शि श्वि + णिच् + अत् - अ शिश्वै + णिच् + अत् = अ शिश्वाय् + अत
अ बि भी + णिच् + अत् - अ बिभै + णिच् + अत् = अ बिभाय् + अत्
अ चि ची + णिच् + अत् - अ चिचै + णिच् + अत् = अ चिचाय् + अत्

इसके अपवाद - वी धातु - प्रजने वीयतेः - इसका अर्थ यदि प्रजनन हो, तो इसे 'आ' अन्तादेश होता है। इस सूत्र से इसे 'आ' आदेश कीजिये और आकारान्त होने के कारण 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये - वी - वा - अ व वा + णिच् + अत् / अ व वा + पुक् + णिच् + अत् = अ व वाप् + अत्।

स्मि धातु - नित्यं स्मयतेः - स्मि धातु के अन्तिम 'इ' को 'आ' अन्तादेश होता है। इस सूत्र से इसे 'आ' आदेश कीजिये और आकारान्त होने के कारण 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये -

स्मि - स्मा - अ सस्मा + णिच् + अत् / अ सस्मा + पुक् + णिच् + अत् / अ सस्माप् + अत्।

क्री, जि धातु - क्रीङ्जीनां णौ - क्री, जि, इङ् धातुओं के अन्तिम इ को 'आ' अन्तादेश होता है। इस सूत्र से इसे 'आ' आदेश कीजिये और आकारान्त होने के कारण 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये - क्री - क्रा - अ च क्रा + णिच् + अत् / अ च क्रा + पुक् + णिच् + अत् / अ चक्राप् + अत्।

जि - जा - अ ज जा + णिच् + अत् / अ ज जा + पुक् + णिच्

+ अत् / अ जजाप् + अत्। इङ् धातु को, अजादि धातुओं में बतलायेंगे।

चि धातु - चिस्फुरोर्णौ - चि धातु तथा स्फुर् धातु के अन्त को विकल्प से 'आ' अन्तादेश होता है। इस सूत्र से 'आ' आदेश करके आकारान्त होने के कारण 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये।

'आ' अन्तादेश होने पर - चि - चा - अ च चा + णिच् + अत् / अ चचा + पुक् + णिच् + अत् / अ चचाप् + अत्।

'आ' अन्तादेश न होने पर - चि - अ चिची - अ चिचै + णिच् + अत् / अ चिचाय् + अत्।

भी धातु - बिभेतेर्हेतुभये - भी धातु के अन्त को विकल्प से 'आ' आदेश होता है, यदि प्रयोजक कर्ता से भय हो तो।

भी धातु को 'आ' आदेश होने पर -

इसे 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये - भी - अ बिभी + णिच् + अत् / अ बिभा + पुक् + णिच् + अत् / अ बिभाप् + अत्।

भी धातु को 'आ' आदेश न होने पर -

भियो हेतुभये षुक् - जब कर्ता से भय हो, और आत्व न हो तब, 'भी' धातु को षुक् का आगम होता है। भी - अ बिभी + णिच् + अत् / अ बि भी + षुक् + णिच् + अत् / अ बिभीष् + अत्।

अन्य किसी से भय होने पर - न तो 'आ' होता है, न पुक् का आगम होता है, न ही षुक् का आगम होता है। तब अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर - बि - भी - अ बि भै + णिच् + अत् / अ बिभाय् + अत्

प्री धातु - धूञ्प्रीञोर्नुग्वक्तव्यः (वा.) - प्री, धू धातुओं को नुक् का आगम होता है - प्री - अ पिप्री + णिच् + अत् / अ पिप्री + नुक् + णिच् + अत् = अ पिप्रीण् + अत्।

ली धातु - लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहनिपातने - ली धातु को घी बिलोने अर्थ में विकल्प से नुक् का आगम होता है - ली - अ लिली + णिच् + अत् / अ लिली + नुक् + णिच् + अत् = अ लिलीन् + अत्।

विभाषा लीयतेः - जब भी 'ली' धातु को गुण या वृद्धि होकर 'ए' 'ए' होते हैं, तब उन ए, ऐ को विकल्प से 'आ' आदेश होकर 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम होता है - ली - अलि ली + णिच् + अत् / अ लिलै + णिच् + अत् / अ लिला + पुक् + णिच् + अत् / अ लिलाप् + णिच् + अत् = अ लिलाप् + अत्।

ह्री, ब्ली, री, धातु - इन्हें 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र

से पुक् का आगम कीजिये तथा पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण कीजिये -
अ जिह्री + णिच् + अत् - अ जिह्री + पुक् + णिच् + अत् = अ जिह्रेप् + अत्
अ बिब्ली + णिच् + अत् - अ बिब्ली + पुक् + णिच् + अत् = अ बिब्लेप् + अत्
अ रिरी + णिच् + अत् - अ रिरी + पुक् + णिच् + अत् = अ रिरेप् + अत्

उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं से णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -

इनके अन्तिम उ, ऊ को णिच् परे होने पर अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके औ बनाइये तथा एचोऽयवायावः सूत्र से आव् आदेश कीजिये -
भू - अ बुभू - अ बुभौ + णिच् + अत् - अ बुभाव् + अत्
लू - अ लुलू - अ लुलौ + णिच् + अत् - अ लुलाव् + अत्
पू - अ पुपू - अ पुपौ + णिच् + अत् - अ पुपाव् + अत्
द्रु - अ दुद्रु - अ दुद्रौ + णिच् + अत् - अ दुद्राव् + अत्
स्रु - अ सुस्रु - अ सुस्रौ + णिच् + अत् - अ सुस्राव् + अत्

इसके अपवाद - धू धातु - धूञ्प्रीञोर्नुग्वक्तव्यः (वा.) - प्री, धू धातुओं को नुक् का आगम होता है।
अ दुधू + णिच् + अत् - अ दु धू + नुक् + णिच् + अत् = अ दुधून् + अत्

ऋकारान्त, ॠकारान्त धातुओं से णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -
इनके अन्तिम ऋ, ॠ को अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके आर् बनाइये -
कृ - अ चकृ + णिच् + अत् - अ चकार् + अत्
भृ - अ बभृ + णिच् + अत् - अ बभार् + अत्
तॄ - अ ततॄ + णिच् + अत् - अ ततार् + अत् आदि।

इसके अपवाद -

१. **जागृ धातु** - 'जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु' सूत्र से ऋ को गुण करके -
जागृ - अ जजागृ + णिच् + अत् - अ जजागर् + अत्

२. **दॄ, नॄ धातु** - इनके अन्तिम ॠ को अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके आर् बनाइये। उसके बाद मितां ह्रस्वः सूत्र से उसे ह्रस्व कर दीजिये। यथा-
दॄ - अ ददॄ + णिच् + अत् - अ ददर् + अत्

३. **स्मृ धातु** - जब इसका अर्थ आध्यान अर्थात् चिन्तन हो तब 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि करने के बाद इसे मितां ह्रस्वः सूत्र से इसे ह्रस्व कर दीजिये -
स्मृ - अ सस्मृ + णिच् + अत् - अ सस्मर् + अत्

ऋ धातु को अजादि धातुओं में देखिये।

यह अजन्त धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने का विचार पूर्ण हुआ।

हलन्त धातुओं से णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -

पहिले हम अपवादों का विचार करके उनके रूप बना लें -

णिच् प्रत्यय परे होने पर -

१. **स्फाय् धातु -**

स्फायो वः - स्फाय् धातु को स्फाव् आदेश होता है।

स्फाय् - अ पस्फाय् + णिच् + अत् - अ पस्फाव् + अत्

२. **शद् धातु - शदेरगतौ तः** - शद् धातु को शत् आदेश होता है।

'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा के अ को वृद्धि करके -

शद् - अ शशद् + णिच् + अत् - अ शशात् + अत्

३. **रुह् धातु - रुहः पोऽन्यतरस्याम्** - रुह् धातु के ह् को विकल्प से 'प्' आदेश होता है।

'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा के इक् को गुण करके -

'प्' आदेश होने पर -

रुह् - अ रुरुह् + णिच् + अत् - अ रुरोप् + अत्

'प्' आदेश न होने पर -

रुह् - अ रुरुह् + णिच् + अत् - अ रुरोह् + अत्

४. **रध्, जभ् धातु - रधिजभोरचि** - रध्, जभ् धातुओं को नुम् का आगम होता है, अजादि प्रत्यय परे होने पर।

रध् - अ ररध् + णिच् + अत् - अ ररन्ध् + अत्

जभ् - अ जजभ् + णिच् + अत् - अ जजम्भ् + अत्

५. **लभ् धातु - लभेश्च** - लभ् धातु को नुम् का आगम होता है।

लभ् - अ ललभ् + णिच् + अत् - अ ललम्भ् + अत्

६. **रभ् धातु - रभेरशब्लिटोः** - रभ् धातु को नुम् का आगम होता है, शप् लिट् से भिन्न अजादि प्रत्यय परे होने पर।

रभ् - अ ररभ् + णिच् + अत् - अ ररम्भ् + अत्

७. **दुष् धातु - वा चित्तविरागे** - दुष् धातु की उपधा को 'ऊ' आदेश होता है, चित्तविकार अर्थ होने पर।

चित्तविकार अर्थ होने पर -

दुष् - अ दुदुष् + णिच् + अत् - अ दुदूष् + अत्

चित्तविकार अर्थ न होने पर -

'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा के इक् को गुण करके -

दुष् - अ दुदुष् + णिच् + अत् - अ दुदोष् + अत्

८. **सिध् धातु - सिध्यतेरपारलौकिके** - सिध् धातु के 'इ' को भोजन पकाने अर्थ में 'आ' आदेश होता है।

भोजन पकाने अर्थ में सिध् के इ को 'आ' आदेश होकर -

साध् - अ ससाध् + णिच् + अत् - अ ससाध् + अत्

तपस्या अर्थ में 'आ' आदेश न होकर -

सिध् - अ सिषिध् + णिच् + अत् - अ सिषेध् + अत्

९. **स्फुर् धातु - चिस्फुरोर्णौ** - स्फुर् धातु के 'उ' को विकल्प से 'आ' आदेश होता है।

'आ' आदेश होने पर -

स्फार् - अ पस्फार् + णिच् + अत् - अ पस्फार् + अत्

'आ' आदेश न होने पर -

स्फुर् - अ पुस्फुर् + णिच् + अत् - अ पुस्फोर् + अत्

१०. **क्नूय् धातु** - 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम करके 'लोपो व्योर्वलि' सूत्र से यकार का लोप करके पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से ऊकार को गुण कीजिये -

क्नूय् - अ चुक्नूय् पुक् + णिच् + अत् = अ चुक्नोप् + अत्

११. **हन् धातु** - 'हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु' सूत्र से हन् धातु के 'ह' को कुत्व करके 'घ' बनाइये - अ + हन् + णिच् + अत् - अ + जघन् + णिच् + अत् / 'अत उपधायाः' सूत्र से 'अ' को वृद्धि करके - अ + जघान् + णिच् + अत् / 'हनस्तोऽचिण्णलोः' सूत्र से न् को त् करके - अ + जघात् + णिच् + अत् / 'णेरनिटि' सूत्र से णिच् का लोप करके - अ + जघात् + अत्।

अग्लोपी धातुओं में णिच् प्रत्यय कैसे लगायें ?

अग्लोपी धातु - चुरादि गण में १८५१ (कथ) से लेकर १९४३ (तुत्थ) तक के धातु अदन्त धातु हैं। आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर इनके 'अ' का 'अतो लोपः' सूत्र से लोप होने के कारण, ये धातु 'अग्लोपी धातु' कहलाते हैं। इनके अलावा जब किसी अन्य धातु के अ, आ का भी लोप होता है, तब वे धातु भी अग्लोपी धातु कहलाते हैं। यहाँ अचः परस्मिन् पूर्वविधौ सूत्र से स्थानिवद्भाव हो जाने के कारण इनकी उपधा को कुछ भी न करें। यथा -

कथ् - अ चकथ् + णिच् + अत् = अ चकथ् + अत्

मित् धातुओं में णिच् प्रत्यय कैसे लगायें ?

धातुपाठ देखिये। इसमें ८७० से ९२७ तक धातुओं का घटादि अन्तर्गण

है। घटादि अन्तर्गण के ये धातु मित् धातु कहलाते हैं। इनके अलावा चुरादिगण के ज्ञप, यम, चह, रह, बल, चिञ् ये छह धातु भी मित् धातु कहलाते हैं।

णिच् परे होने पर इन मित् धातुओं की उपधा को यदि किसी सूत्र से दीर्घ हो भी जाये, तो उसे मितां ह्रस्वः सूत्र से ह्रस्व कर दें।

घट् - अ जघट् + णिच् + अत् = अ जघट् + अत्

शेष हलन्त धातु - अब इन हलन्त धातुओं के अलावा जो हलन्त धातु बचे हैं उनका विचार करते हैं।

अदुपध धातु - उपधा के ह्रस्व अ को अत उपधायाः सूत्र से वृद्धि करके आ बनाइये -

वद् - अ ववद् + णिच् + अत् = अ ववाद् + अत्
गद् - अ जगद् + णिच् + अत् = अ जगाद् + अत्
कम् - अ चकम् + णिच् + अत् = अ चकाम् + अत्

इदुपध धातु - उपधा के लघु इ को पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके ए बनाइये -

लिख् - अ लिलिख् + णिच् + अत् = अ लिलेख् + अत्

उदुपध धातु - उपधा के लघु उ को पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके ओ बनाइये -

मुद् - अ मुमुद् + णिच् + अत् = अ मुमोद् + अत्
गुप् - अ जुगुप् + णिच् + अत् = अ जुगोप् + अत्

ऋदुपध धातु - उपधा के लघु ऋ को पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके अर् बनाइये -

वृष् - अ ववृष् + णिच् + अत् = अ ववर्ष् + अत्

अब देखिये कि हमारे सामने अट् + अभ्यास + धातु + चङ् से बने हुए प्रत्यय, ये चार खण्ड हैं।

अब आगे के कार्यों के लिये हमें, लघु, गुरु तथा अग्लोपी धातु, इन तीन शब्दों को बहुत अच्छे से समझना चाहिये। इन्हें समझे बिना यदि हम आगे प्रवेश करेंगे तो हमें कुछ भी समझ में नहीं आयेगा।

अग्लोपी धातु अभी बतलाये गये। अब गुरु, लघु संज्ञाएँ बतला रहे हैं।

लघु, गुरु संज्ञाएँ

ह्रस्वं लघु - अ, इ, उ, ऋ, ऌ ये लघु स्वर हैं।

संयोगे गुरु / दीर्घं च - आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ, दीर्घ स्वर हैं। इनके अलावा,लघु स्वरों के बाद यदि दो या दो से अधिक व्यञ्जनों का संयोग आ जाये तो उस लघु स्वर को भी हम गुरु मान लेते हैं, जिसके आगे संयोग

आ रहा है। जैसे -

बिभ्रज् - यहाँ बि लघु दिख रहा है, किन्तु इसके बाद भ् + र् का संयोग है, अतः यह 'बि' गुरु है।

भक्ष्, रक्ष्, तक्ष् - यहाँ भ, र, त, लघु दिख रहे हैं, किन्तु इनके बाद क् + ष् का संयोग 'क्ष्' आया है अतः ये भ, र, त गुरु हैं। भुञ्ज्, युञ्ज् को देखिये। यहाँ भु, यु लघु दिख रहे हैं, किन्तु इनके बाद ञ् + ज् का संयोग आया है अतः ये भु, यु गुरु हैं।

४. चङ्परक णिच् परे होने पर, होने वाले अङ्गकार्य
(धातु की उपधा को ह्रस्व करना)

धातु + णिच् के बीच होने वाले अङ्ग कार्य करके णिच् का लोप कर चुकने के बाद, अब आप अब अपनी दृष्टि केवल धातु की उपधा पर रखिये, क्योंकि उसी में हमें अब कार्य करना है।

देखिये कि अभी हमने णिजन्त धातुओं को द्वित्व किया है। इन सभी में जो चङ् प्रत्यय है, वह णिच् से परे है। अतः इसे 'चङ्परक णिच् प्रत्यय' कहते हैं। चङ्परक णिच् प्रत्यय का धातुओं पर कैसा प्रभाव पड़ता है, इसका हम अब विचार करें।

णौ चङि उपधाया ह्रस्वः - धातु की उपधा में रहने वाले दीर्घ स्वर को ह्रस्व हो जाता है, चङ्परक णिच् प्रत्यय परे होने पर। अब कुछ उदाहरणों से समझिये कि यह ह्रस्व किस प्रकार होता है -

आ का ह्रस्व अ होता है, यथा -

अ च कार्	+	अत्	=	अ च कर्	+	अत्
अ प पाठ्	+	अत्	=	अ प पठ्	+	अत्
अ र रास्	+	अत्	=	अ र रस्	+	अत्
अ नि नाय्	+	अत्	=	अ नि नय्	+	अत्

ई का ह्रस्व इ होता है, यथा -

अ मि मील्	+	अत्	=	अ मि मिल्	+	अत्

ऊ का ह्रस्व होता है, यथा -

अ बु भाव्	+	अत्	=	अ बु भव्	+	अत्
अ पु पाव्	+	अत्	=	अ पु पव्	+	अत्

ए का ह्रस्व इ होता है, यथा -

अ लि लेख्	+	अत्	=	अ लि लिख्	+	अत्

अ सि षेध् + अत् = अ सि षिध् + अत्

ओ का ह्रस्व उ होता है, यथा -

अ जु गोम् + अत् = अ जु गुम् + अत्
अ दु दोष् + अत् = अ दु दुष् + अत्
अ चु चोर् + अत् = अ चु चुर् + अत
अ मु मोद् + अत् = अ मु मुद् + अत्

किन धातुओं की उपधा को ह्रस्व नहीं होता ?

चुरादिगण में कथ वाक्यप्रबन्धे (१८५१) से तुत्थ संवरणे (१९४३) तक जो धातु हैं, वे धातु अग्लोपी धातु कहलाते हैं। अन्यत्र भी जहाँ 'अ', आ' का लोप होता है वे धातु भी अग्लोपी धातु कहलाते हैं।

नाग्लोपिशास्वृदिताम् -

१. इन अग्लोपी धातुओं की उपधा को,

२. शास् धातु की उपधा को,

३. तथा जिनमें ऋ की इत् संज्ञा हुई है, ऐसे ऋदित् धातुओं की उपधा को, चङ्परक णिच् प्रत्यय परे होने पर कभी भी ह्रस्व नहीं होता है।

अत्यावश्यक - जहाँ धातु की उपधा में दीर्घ स्वर हो, और उसे ह्रस्व न करना हो, वहाँ जानिये कि धातुरूप तैयार हो चुका है। उसमें अब कुछ भी करना बाकी नहीं है। अत: वहाँ धातु + प्रत्यय को जोड़कर धातुरूप तैयार करते चलिये। जैसे -

अग्लोपी धातुओं की उपधा के दीर्घ स्वर को ह्रस्व नहीं होता। अत: इनके धातुरूपों को तैयार जानिये -

अ ब भाम् + अत् = अबभामत्
अ स सार् + अत् = अससारत् आदि।

शास् धातु की उपधा को ह्रस्व नहीं होता। अत: धातुरूप तैयार जानिये -

अ श शास् + अत् = अशशासत्

याचृ, बाधृ आदि ऋदित् धातुओं की उपधा को ह्रस्व नहीं होता। अत: इनके धातुरूपों को तैयार जानिये -

अ य याच् + अत् = अययाचत्
अ ब बाध् + अत् = अबबाधत्

भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडामन्यतरस्याम् - भ्राज्, भास्, भाष्,

दीप्, जीव्, मील्, पीड्, धातुओं की उपधा को विकल्प से ह्रस्व होता है, चङ्परक णिच् प्रत्यय परे होने पर।

उपधा को ह्रस्व न होने पर –

अब भ्राज् + अत् = अबभ्राजत्
अब भास् + अत् = अबभासत्
अब भाष् + अत् = अबभाषत्
अदि दीप् + अत् = अदिदीपत्
अ जिजीव् + अत् = अजिजीवत्
अ मिमील् + अत् = अमिमीलत्
अ पिपीड् + अत् = अपिपीडत्

जब अभ्यास के अन्तिम स्वर तथा धातु के प्रथम स्वर में से दोनों, अथवा एक भी स्वर लघु हो, तब आप रुके रहिये। धातु + प्रत्यय को मत जोड़िये, क्योंकि ऐसे धातुओं में आगे अभी और कार्य बाकी हैं।

अतः उपधा को ह्रस्व होने पर –

अब भ्राज् + अत् = अब भ्रज् + अत्
अब भास् + अत् = अ बभस् + अत्
अब भाष् + अत् = अब भष् + अत्
अदि दीप् + अत् = अदि दिप् + अत्
अ जिजीव् + अत् = अजि जिव् + अत्
अ मिमील् + अत् = अमि मिल् + अत्
अ पिपीड् + अत् = अपि पिड् + अत्

लोपः पिबतेरीच्चाभ्यासस्य – पा धातु की उपधा का लोप होता है, तथा अभ्यास को ई होता है, चङ्परक णिच् प्रत्यय परे होने पर। उपधा के 'आ' का लोप करके और अभ्यास के 'पा' को 'पी' करके – पा – अ प पाय् + अत् = अ पी प्य + अत्

तिष्ठतेरित् – स्था धातु से णिच् लगने पर पुक् का आगम करके बना हुआ जो स्थाप् धातु, उस स्थाप् धातु की उपधा को 'इ' होता है, चङ्परक णिच् परे होने पर। अ त स्थाप् + णिच् + अत् = अ त स्थिप् + अत् /

जिघ्रतेर्वा – घ्रा धातु से णिच् लगने पर पुक् का आगम करके बना हुआ जो घ्राप्, उस घ्राप् धातु की उपधा को विकल्प से 'इ' आदेश होता है, चङ्परक णिच् परे होने पर – अ ज घ्राप् + णिच् + अत् = अ ज घ्रिप् + अत्

उर्ऋत् - जिन धातुओं की उपधा में ऋ होता है, उन धातुओं की उपधा के 'ऋ' के स्थान पर विकल्प से 'ऋ' ही होता है, चङ्परक णिच् प्रत्यय परे होने पर। अर्थात् एक बार ऋ रहेगा - अ व वृध् + णिच् + अत् = अ व वृध् + णिच् + अत् / तथा एक बार गुण होकर अर् बन जायेगा - अ व वृध् + णिच् + अत् = अ व वर्ध् + णिच् + अत्।

सन्वद्भाव तथा उसके बाद होने वाले कार्य

ये सारे कार्य कर चुकने के बाद, अब आप अभ्यास के बाद जो धातु है, उसके प्रथम अक्षर को ही देखिये।

सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे - देखिये कि यदि अभ्यास के ठीक बाद वाला अक्षर लघु हो और धातु अग्लोपी न हो, तथा धातु से परे चङ्परक णिच् प्रत्यय हो, तब उस धातु के अभ्यास में वे सभी कार्य किये जाते हैं, जो कार्य सन् प्रत्यय परे रहने पर, अभ्यास को किये जाते हैं।

अब हम विचार करें कि वे कौन से कार्य हैं, जो सन् प्रत्यय परे होने पर अभ्यास को किये जाते हैं ? वे कार्य इस प्रकार हैं।

अभ्यास के अन्तिम 'अ' को 'इ' बनाना -

सन्यतः -

१. यदि अभ्यास के अन्त में 'अ' हो,

२. और उसके बाद आने वाला अक्षर लघु हो तथा -

३. धातु अग्लोपी न हो,

ये तीनों बातें मिल रही हों, तो अभ्यास के अन्तिम 'अ' को 'इ' हो जाता है, चङ्परक णिच् प्रत्यय परे होने पर तथा सन् प्रत्यय परे होने पर। जैसे -

अच कर्	+	अत्	=	अचि कर्	+	अत्
अप पठ्	+	अत्	=	अपि पठ्	+	अत्
अप पच्	+	अत्	=	अपि पच्	+	अत्
अज गम्	+	अत्	=	अजि गम्	+	अत्
अज हर्	+	अत्	=	अजि हर्	+	अत्
अव वृध्	+	अत्	=	अवि वृध्	+	अत्
अच कृष्	+	अत्	=	अचि कृष्	+	अत्
अब भ्रज्	+	अत्	=	अबि भ्रज्	+	अत्
अब भस्	+	अत्	=	अबि भस्	+	अत्
अब भष्	+	अत्	=	अबि भष्	+	अत्

अत स्थिप् + अत् = अति ष्ठिप् + अत्
अज घ्रिप् + अत् = अजि घ्रिप् + अत् आदि।

ध्यान दीजिये कि इन सभी के अभ्यास के अन्त में 'अ' है, अभ्यास के बाद का अक्षर लघु है, तथा ये धातु अग्लोपी नहीं है, अतः अभ्यास के अन्तिम 'अ' को 'इ' हो गया है।

यदि अभ्यास के बाद का अक्षर लघु न हो, तब आप अभ्यास के अन्तिम 'अ' को 'इ' कदापि मत बनाइये। जैसे -

अय याच् + अत् = अययाचत्
अब बाध् + अत् = अबबाधत्
अब भ्राज् + अत् = अबभ्राजत्
अब भास् + अत् = अबभासत्

इन सब में अभ्यास के बाद वाला अक्षर लघु न होकर गुरु है। अतः इनके अभ्यास के 'अ' को 'इ' नहीं होगा, ये सब ऐसे ही रहेंगे। इसी प्रकार -

अ र रक्ष् + अत् = अररक्षत्
अ त तक्ष् + अत् = अततक्षत्

यहाँ क्ष् इस संयुक्ताक्षर के कारण र, त गुरु हैं, लघु नहीं, अतः अभ्यास के र, त, को रि, ति, नहीं होगा।

यदि धातु अग्लोपी हो तब भी आप अभ्यास के 'अ' को 'इ' कदापि मत बनाइये, भले ही उसके बाद का अक्षर लघु ही क्यों न हो। जैसे -

अ च कथ् + णिच् + अत् = अचकथत्

यहाँ अभ्यास के बाद वाला अक्षर 'क' लघु है तब भी अभ्यास के 'अ' को 'इ' नहीं हुआ है, क्योंकि कथ् धातु अग्लोपी है। हम जानते हैं कि चुरादिगण के कथ वाक्यप्रबन्धे (१८५१) से लेकर तुत्थ संवरणे (१९४३) तक के धातु अग्लोपी हैं। अतः इनके अभ्यास के 'अ' को कभी भी सन्यतः सूत्र से 'इ' नहीं होगा।

सन्यतः के अपवाद -

अत्स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तृस्पशाम् - स्मृ, दृ, त्वर्, प्रथ्, म्रद्, स्तृ, स्पश्, इन धातुओं के अभ्यास को न तो 'इ' होगा और न ही दीर्घ होगा, अपितु इन्हें 'अ' ही रहेगा। जैसे -

स्मृ - अ स स्मर् + अत् = असस्मरत्
दृ - अ द दर् + अत् = अददरत्
त्वर् - अ त त्वर् + अत् = अतत्वरत्

प्रथ् - अ प प्रथ् + अत् = अपप्रथत्
म्रद् - अ म म्रद् + अत् = अमम्रदत्
स्तॄ - अ त स्तर् + अत् = अतस्तरत्
स्पश् - अ प स्पश् + अत् = अपस्पशत्

विभाषा वेष्टिचेष्ट्योः - वेष्ट्, चेष्ट्, धातुओं के अभ्यास को विकल्प से 'अ' आदेश होता है -

वेष्ट् - अ विवेष्ट् + अत् = अविवेष्टत्
वेष्ट् - अ विवेष्ट् + अत् = अववेष्टत्
चेष्ट् - अ चि चेष्ट् + अत् = अचिचेष्टत्
चेष्ट् - अ चि चेष्ट् + अत् = अचचेष्टत्

ई च गणः - गण् धातु यद्यपि अग्लोपी है, तो भी उसके अभ्यास के 'अ' को 'ई' भी होता है तथा उसे दीर्घ भी होता है -

गण् - अ ज गण् + अत् = अजीगणत्

अभ्यास के अन्तिम लघु स्वर को दीर्घ बनाना -

दीर्घो लघोः - अभी तक जो भी कार्य किये, उन्हें कर चुकने के बाद देखिये कि यदि -

१. अभ्यास का अन्तिम अक्षर लघु हो / २. उसके बाद वाला अक्षर भी लघु हो तथा / ३. धातु अग्लोपी न हो,

तो अभ्यास के अन्त में आने वाले लघु स्वर को दीर्घ हो जाता है, चङ् परक णिच् प्रत्यय परे होने पर। कुछ उदाहरण देखें -

अ चि कर् + अत् = अ ची कर् + अत् = अचीकरत्
अ पि पिड् + अत् = अ पी पिड् + अत् = अपीपिडत्
अ दि दिप् + अत् = अ दी दिप् + अत् = अदीदिपत्
अ पि पठ् + अत् = अ पी पठ् + अत् = अपीपठत्
अ जि हर् + अत् = अ जी हर् + अत् = अजीहरत्

स्पष्ट है कि अभ्यास के अन्तिम अक्षर तथा अभ्यास के बाद वाले अक्षर, इन दोनों में से यदि एक भी अक्षर गुरु होता है, तो 'दीर्घो लघोः' सूत्र से कभी भी अभ्यास को दीर्घ नहीं होता।

यथा - अबि भ्रज् + अत् को देखिये । यहाँ भ्र यह भ + र् का संयोग है। अतः उसका पूर्ववर्ती अभ्यास 'बि' गुरु है, लघु नहीं। गुरु होने के कारण इसे कभी भी दीर्घ नहीं होगा। यह बिभ्रज् + अत् = अबिभ्रजत् ही रहेगा।

इसी प्रकार अतिष्ठिप् + अत् = अतिष्ठिपत् ही रहेगा क्योंकि इसके अभ्यास का अन्तिम अक्षर भी गुरु है।

इसी प्रकार यदि अभ्यास का अन्तिम अक्षर तो लघु हो, किन्तु अभ्यास के बाद वाला अक्षर गुरु हो तब भी अभ्यास को कभी दीर्घ नहीं होगा। जैसे -

अ पि पीड् + अत् = अ पि पीड् + अत् = अपिपीडत्
अ दि दीप् + अत् = अ दि दीप् + अत् = अदिदीपत्
अ ब भास् + अत् = अ ब भास् + अत् = अबभासत्
अ य याच् + अत् = अ य याच् + अत् = अययाचत्
अ ब बाघ् + अत् = अ ब बाघ् + अत् = अबबाघत्

भ्राज्, भास्, भाष्, दीप्, जीव्, मील्, पीड्, धातु -

जब 'भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडामन्यतरस्याम्' सूत्र से इन धातुओं की उपधा को ह्रस्व होगा, तब इन धातुओं के आदि में लघु अक्षर मिलेगा, अतः तब इनके अभ्यास को 'सन्यतः' सूत्र से इत्व भी होगा और 'दीर्घो लघोः' सूत्र से दीर्घ भी होगा -

अ बभाज् + अत् = अब भजत् - अ बीभज् + अत् = अबीभजत्
अ बभास् + अत् = अब भसत् - अ बीभस् + अत् = अबीभसत्
अ बभाष् + अत् = अब भषत् - अ बीभष् + अत् = अबीभषत्
अ दिदीप् + अत् = अदि दिपत् - अ दीदिप् + अत् = अदीदिपत्
अ जिजीव् + अत् = अजि जिवत् - अ जीजिव् + अत् = अजीजिवत्
अ मिमील् + अत् = अमि मिलत् - अ मीमिल् + अत् = अमीमिलत्
अ पिपीड् + अत् = अपि पिडत् - अ पीपिड् + अत् = अपीपिडत्

जब इनकी उपधा को ह्रस्व नहीं होगा तब इन धातुओं के आदि में लघु अक्षर नहीं मिलेगा, तब इनके अभ्यास को इत्व, दीर्घ नहीं होंगे।

अ बभाज् + अत् = अबभाजत्
अ बभास् + अत् = अबभासत्
अ बभाष् + अत् = अबभाषत्
अ दिदीप् + अत् = अदिदीपत्
अ जिजीव् + अत् = अजिजीवत्
अ मिमील् + अत् = अमिमीलत्
अ पिपीड् + अत् = अपिपीडत्

अभ्यास के अन्तिम 'उ' को 'इ' बनाना -

ओः पुयण्ज्यपरे - यदि अभ्यास के अन्त में 'उ' हो, और उस 'उ' के बाद पवर्ग, यण् या जकार हों, तथा उन पवर्ग, यण्, जकार के बाद अवर्ण हो तब अभ्यास के अन्तिम 'उ' को 'इ' आदेश हो जाता है, चङ् परक णिच् प्रत्यय परे होने पर तथा सन् प्रत्यय परे होने पर। हमने जाना कि अभ्यास के 'उ' को 'इ' बनाने के लिये इतनी बातें होना चाहिये -

१. अभ्यास के अन्त में 'उ' हो,

२. उसके बाद का अक्षर पवर्ग, यण् या जकार हो,

३. तथा इन पवर्ग, यण् या जकार के बाद 'अ' हो ।

ये तीनों बातें मिलें, तभी आप अभ्यास के 'उ' को 'इ' बनाइये और दीर्घो लघोः सूत्र से उस 'इ' को दीर्घ कर दीजिये। यथा-

अ पु पव्	+	अत्	=	अ पि पव्	+	अत्	=	अपीपवत्
अ बु भव्	+	अत्	=	अ बि भव्	+	अत्	=	अबीभवत्
अ यु यव्	+	अत्	=	अ यि यव्	+	अत्	=	अयीयवत्
अ लु लव्	+	अत्	=	अ लि लव्	+	अत्	=	अलीलवत्
अ रु रव्	+	अत्	=	अ रि रव्	+	अत्	=	अरीरवत्
अ जु जव्	+	अत्	=	अ जि जव्	+	अत्	=	अजीजवत्

इनमें अभ्यास के अन्त में 'उ' है, उसके बाद का अक्षर पवर्ग, यण् या जकार है, तथा इन पवर्ग, यण् या जकार के बाद 'अ' है, अतः अभ्यास के 'उ' को 'इ' आदेश हुआ है तथा दीर्घो लघोः सूत्र से उस 'इ' को दीर्घ हुआ है।

स्रवति शृणोति द्रवति प्रवति प्लवति च्यवतीनां वा - इतने धातुओं के अभ्यास के 'उ' को विकल्प से 'इ' आदेश होता है। अर्थात् एक बार 'इ' होता है, एक बार 'उ' ही रहता है, चङ् परक णिच् प्रत्यय परे होने पर तथा सन् प्रत्यय परे होने पर।

स्रु	-	अ सुस्रव्	+	अत्	=	असुस्रवत्
		अ सि स्रव्	+	अत्	=	असिस्रवत्
श्रु	-	अ शु श्रव्	+	अत्	=	अशुश्रवत्
		अ शि श्रव्	+	अत्	=	अशिश्रवत्
द्रु	-	अ दु द्रव्	+	अत्	=	अदुद्रवत्
		अ द्रि द्रव्	+	अत्	=	अद्रिद्रवत्
प्रु	-	अ पु प्रव्	+	अत्	=	अपुप्रवत्
		अ पि प्रव	+	अत्	=	अपिप्रवत्

प्लु	-	अ पु प्लव्	+	अत्	=	अपुप्लवत्
		अ पि प्लव्	+	अत्	=	अपिप्लवत्
च्यु	-	अ चु च्यव्	+	अत्	=	अचुच्यवत्
		अ चि च्यव्	+	अत्	=	अचिच्यवत्

चङ् परक णिच् प्रत्यय का किस किस धातु के अभ्यास पर क्या क्या प्रभाव पड़ेगा, यह पूरा विचार हमने कर लिया। अब हम एक भू धातु को लेकर देखें कि अभी तक हमने क्या क्या किया-

१. भू धातु को द्वित्व करके - भू भू + णिच् + अत्
२. अडागम करके - अ बु भू + णिच् + अत्
३. अभ्यास को ह्रस्व करके - अ भु भू + णिच् + अत्
४. अभ्यास को चर्त्व करके - अ बु भू + णिच् + अत्
५. णिच्परक अङ्गकार्य करके
तथा णिच् का लोप करके - अ बु भाव् + अत्
६. धातु की उपधा को ह्रस्व करके - अ बु भव् + अत्
७. अभ्यास के उ को इ बनाकर - अ बि भव् + अत्
८. अभ्यास के 'इ' को दीर्घ करके - अ बी भव् + अत् = अबीभवत्

णिचश्च - सारे णिजन्त धातु उभयपदी होते हैं। अतः 'णिच्' से बने हुए धातुओं में दोनों पदों के प्रत्यय लगाये जा सकते हैं। जैसे ण्यन्त भू धातु-

परस्मैपद			**आत्मनेपद**		
अबीभवत्	अबीभवेताम्	अबीभवन्	अबीभवत	अबीभवेताम्	अबीभवन्त
अबीभवः	अबीभवेतम्	अबीभवेत	अबीभवथाः	अबीभवेथाम्	अबीभवध्वम्
अबीभवम्	अबीभवाव	अबीभवाम	अबीभवे	अबीभवावहि	अबीभवामहि

अण्यन्त हलादि धातुओं में चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाने की विधि

हम जानते हैं कि श्रि, द्रु, स्रु, धेट्, श्वि, गुप्, कम् इन सात धातुओं से णिच् न लगने पर भी लुङ् लकार में चङ् से बने हुए प्रत्यय ही लगाये जाते हैं। णिच् न लगने पर इनसे चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाने की प्रक्रिया इस प्रकार होती है -

ये हलादि धातु हैं। इनको 'चङि' सूत्र से पूर्ववत् द्वित्व करके, अभ्यासकार्य करके लुङ्लङ्लृङक्ष्वडुदात्तः सूत्र से अट् (अ) का आगम कर दीजिये -

श्रि - श्रि श्रि - शिश्रि - अशिश्रि + अत्

द्रु	-	द्रु द्रु	-	दुद्रु	-	अदुद्रु	+	अत्
स्रु	-	स्रु स्रु	-	सुस्रु	-	असुस्रु	+	अत्
धा	-	धा धा	-	दधा	-	अदधा	+	अत्
श्वि	-	श्वि श्वि	-	शिश्वि	-	अशिश्वि	+	अत्
गुप्	-	गुप् गुप्	-	जुगुप्	-	अजुगुप्	+	अत्
कम्	-	कम् कम्	-	चकम्	-	अचकम्	+	अत्

धा धातु + चङ् से बने हुए प्रत्यय

चङ् से बने हुए प्रत्ययों के प्रारम्भ में जो 'अ' दिख रहा है वह चङ् ही है। चङ् में ङ् की इत् संज्ञा होने से यह ङित् आर्धधातुक प्रत्यय है।

आतो लोप इटि च - कित् ङित् आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अङ्ग के अन्तिम आ का लोप होता है। जैसे - धा - द्वित्वादि करके दधा - अदधा - अदधा + अत् - अदध् + अत् = अदधत् आदि।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
अदधत्	अदधताम्	अदधन्	अदधत	अदधेताम्	अदधन्त
अदधः	अदधतम्	अदधत	अदधथाः	अदधेथाम्	अदधध्वम्
अदधम्	अदधाव	अदधाम	अदधे	अदधावहि	अदधामहि

ध्यान रहे कि जब इसी धा धातु में णिच् प्रत्यय लगाकर, ण्यन्त बनाकर, चङ् लगाते हैं, तब णिच् परे होने पर इन्हें 'पुक् का आगम' करके, अदीधपत् बनता है।

श्रि धातु + चङ् से बने हुए प्रत्यय

श्रि - द्वित्वादि करके - शिश्रि - अशिश्रि -

अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ - कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्तिम इ, ई, को इयङ् = इय् तथा अन्तिम उ, ऊ को उवङ् = उव्, आदेश होते हैं।

श्रि	-	अशिश्रि	+	अत्	=	अशिश्रिय्	+ अत्	=	अशिश्रियत्
श्वि	-	अशिश्वि	+	अत्	=	अशिश्विय्	+ अत्	=	अशिश्वियत्।

परस्मैपद			आत्मनेपद		
अशिश्रियत्	अशिश्रियताम्	अशिश्रियन्	अशिश्रियत	अशिश्रियेताम्	अशिश्रियन्त
अशिश्रियः	अशिश्रियतम्	अशिश्रियत	अशिश्रियथाः	अशिश्रियेथाम्	अशिश्रियध्वम्
अशिश्रियम्	अशिश्रियाव	अशिश्रियाम	अशिश्रिये	अशिश्रियावहि	अशिश्रियामहि

ध्यान रहे कि जब इनसे णिच् प्रत्यय लगाकर, चङ् लगाते हैं, तब इसे 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से इयङ् नहीं होता। तब णिच् परे होने पर इसे 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि करके - अशिश्राय् / 'णौ चङि उपधाया ह्रस्वः' सूत्र से ह्रस्व करके - अशिश्रय् + त् = अशिश्रयत् बनता है।

श्वि धातु + चङ् से बने हुए प्रत्यय

श्वि धातु - श्वि - शिश्वि - अशिश्वि + अत् / इयङ् आदेश होकर - अशिश्विय् + अत् - अशिश्वियत् । ध्यान रहे कि श्वि धातु केवल परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

अशिश्वियत्	अशिश्वियताम्	अशिश्वियन्
अशिश्वियः	अशिश्वियतम्	अशिश्वियत
अशिश्वियम्	अशिश्वियाव	अशिश्वियाम

ध्यान रहे कि ण्यन्त श्वि धातु को 'णौ च संश्चङोः' सूत्र से विकल्प से सम्प्रसारण होता है।

अतः एक बार इसे सम्प्रसारण होकर 'शु' बनता है, और इस 'शु' को द्वित्व होकर शु शु + अत् - अशूशवत् बनता है, और एक बार सम्प्रसारण न होकर श्वि ही रहता है, और इस 'श्वि' को द्वित्व होकर श्वि श्वि + अत् - अशिश्वयत् बनता है।

उकारान्त स्रु, द्रु धातु + चङ् से बने हुए प्रत्यय

स्रु - सुस्रु - असुस्रु / द्रु - दुद्रु - अदुद्रु / ये उकारान्त हैं। इनमें चङ् से बने हुए इन प्रत्ययों को इस प्रकार जोड़िये -

अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ - कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्तिम इ, ई, को इयङ् = इय् तथा अन्तिम उ, ऊ को उवङ् = उव्, आदेश होते हैं। द्रु - अदुद्रु + अत् - अदुद्रुव् + अत् = अदुद्रुवत् आदि।

यह धातु केवल परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

अदुद्रुवत्	अदुद्रुवताम्	अदुद्रुवन्
अदुद्रुवः	अदुद्रुवतम्	अदुद्रुवत
अदुद्रुवम्	अदुद्रुवाव	अदुद्रुवाम

ध्यान रहे कि जब इसी में णिच् लगाकर ण्यन्त बनाकर, चङ् लगाते हैं, तब णिच् परे होने पर गुण होकर इससे अदुद्रवत् / अदिद्रवत् बनता है।

इसी प्रकार स्रु धातु -

असुस्रुवत्	असुस्रुवताम्	असुस्रुवन्

असुस्रुवः	असुस्रुवतम्	असुस्रुवत
असुस्रुवम्	असुस्रुवाव	सुस्रुवाम

ध्यान रहे कि जब इसी में णिच् लगाकर ण्यन्त बनाकर, चङ् लगाते हैं, तब णिच् परे होने पर गुण होकर इससे असुस्रवत् / असिस्रवत् बनता है।

आत्मनेपदी कम् धातु + चङ् से बने हुए प्रत्यय

कम् - चकम् - अचकम् / हलन्त धातुओं में कुछ भी न करके धातु + प्रत्यय को सीधे जोड़ दीजिये।

अचकमत	अचकमेताम्	अचकमन्त
अचकमथाः	अचकमेथाम्	अचकमध्वम्
अचकमे	अचकमावहि	अचकमामहि

ध्यान रहे कि जब कम् धातु में णिच् लगाकर ण्यन्त बनाकर, चङ् लगाते हैं, तब णिच् परे होने पर सन्वद्भाव होकर अभ्यास को इत्व तथा दीर्घ होकर इससे, अचीकम् + अत - अचीकमत बनता है।

अजादि ण्यन्त धातुओं में चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाने की विधि

अजादि ण्यन्त धातुओं में चङ् से बने हुए प्रत्यय लगाने का प्रक्रिया क्रम इस प्रकार है -

१. अजादि धातुओं को द्वित्व करने की विधि

अजादेर्द्वितीयस्य / चङि - चङ् परे होने पर हलादि अनभ्यास धातु के प्रथम अवयव एकाच् को द्वित्व होता है और अजादि धातु के द्वितीय अवयव एकाच् को द्वित्व होता है। यथा -

अट् + णिच् = आटि - इसमें द्वितीय अवयव एकाच् है 'टि', इसे द्वित्व होकर - आटिटि। ओख् + णिच् = ओखि - द्वितीय अवयव एकाच् को है 'खि', इस द्वित्व करके - ओखिखि। ऊह् + णिच् = ऊहि - इसमें द्वितीय अवयव एकाच् है 'हि', इसे द्वित्व होकर - ऊहिहि। अभ्र् + णिच् = अभ्रि - द्वितीय अवयव एकाच् भ्रि को द्वित्व होकर - अभ्रिभ्रि। ईक्ष् + णिच् = ईक्षि - द्वितीय अवयव एकाच् 'क्षि' को द्वित्व होकर - ईक्षिक्षि। उज्झ् + णिच् = उज्झि - द्वितीय अवयव एकाच् 'ज्झि', को द्वित्व होकर - उज्झि ज्झि। अट्ट् + णिच् = आट्टि - द्वितीय अवयव एकाच् 'ट्टि' को द्वित्व होकर - आट्टि ट्टि।

न न्द्राः संयोगादयः - यदि द्वितीय अवयव एकाच् के आदि में ऐसा संयोग हो जिसके आदि में न्, द्, र् हों, तो इन न्, द्, र् को छोड़कर बचे हुए द्वितीय

अवयव एकाच् को द्वित्व होता है। यथा - ऋष् + णिच् = अर्षि। इसमें द्वितीय अवयव एकाच् है र्षि। इसमें र् को छोड़कर केवल षि को द्वित्व होगा - अर्षिषि। इसी प्रकार अर्चि में केवल चि को द्वित्व होगा - अर्चिचि, अर्पि में र् को छोड़कर केवल पि को द्वित्व होगा - अर्पिपि। ईर्क्ष्य् + णिच् = ईर्क्ष्यि, में र् को छोड़कर केवल क्ष्यि को द्वित्व होगा - ईर्क्ष्यि क्ष्यि।

उन्दि में न् को छोड़कर केवल दि को द्वित्व होगा - उन्दिदि। अड्डि में द् को छोड़कर केवल डि को द्वित्व होगा - अड्डिडि।

बकारस्याप्ययं प्रतिषेधः - यदि द्वितीय अवयव एकाच् के आदि में ऐसा संयोग हो जिसके आदि में ब् हो, तो इस ब् को छोड़कर बचे हुए द्वितीय अवयव एकाच् को द्वित्व होता है। उब्ज् + णिच् = उब्जि - उब्जिजि।

(इस सूत्र से सम्बन्धित वार्तिक काशिका में एक साथ देख लें।)

णौ चङि उपधाया ह्रस्वः - धातु की उपधा में रहने वाले दीर्घ स्वर को ह्रस्व हो जाता है, चङ्परक णिच् प्रत्यय परे होने पर।

अतः यदि धातु अजादि हो, और उसकी उपधा में गुरु स्वर हो, तो उस गुरु स्वर को 'णौ चङि उपधाया ह्रस्वः' सूत्र से ह्रस्व कीजिये। जैसे - एध् + णिच् + अत् - इध् + णिच् + अत् = इधि + अत्। अब इसे द्वित्व करके - इधिधि + अत्।

नाग्लोपिशास्वृदिताम् - अग्लोपी धातु, शास् धातु और ऋदित् धातुओं की उपधा में रहने वाले दीर्घ स्वर को ह्रस्व नहीं होता है, चङ्परक णिच् प्रत्यय परे होने पर। अययाचत्, अशशासत्।

पूर्वोऽभ्यासः - द्वित्व प्रकरण में जब भी जिस भी धातु को द्वित्व होता है, उसमें पूर्व वाले का नाम अभ्यास होता है।

२. अभ्यासकार्य

१. **हलादिः शेष** - अभ्यास का आदि हल् शेष बचता है और अनादि हलों का लोप हो जाता है। यथा - ईक्षि - ईक्षि क्षि - ईकिक्षि। उज्झि ज्झि - उजि ज्झि। अभ्रि - अभ्रिभ्रि - अभि भ्रि। आट्टि ट्टि - आटिट्टि।

२. **कुहोश्चुः** - अभ्यास के कवर्ग और हकार के स्थान पर चवर्ग आदेश होता है। (इसे ही चुत्व करना कहते हैं।)

अभ्यास को देखिये। यदि अभ्यास में कवर्ग का कोई वर्ण हो, तो इस सूत्र से अभ्यास के उस कवर्ग के वर्ण को आप उसी क्रम से चवर्ग का वर्ण बना दीजिये। यदि अभ्यास में 'ह' हो तो उसे 'ज' बना दीजिये।

यथा - ईकिक्षि - ईचिक्षि। ऊहिहि - ऊजिहि। ओखिखि - ओछिखि।

३. **अभ्यासे चर्च** - अभ्यास के झश् को जश् और खय् को चर् आदेश होते हैं।

अतः यदि अभ्यास में वर्ग के चतुर्थाक्षर अर्थात् झ, भ, घ, ढ, ध हों, तो उन्हें उसी वर्ग का तृतीयाक्षर अर्थात् ज, ब, ग, ड, द बना दीजिये, इसे जश्त्व करना कहते हैं। यथा - इधि - इधि धि - इदि धि। अभि भ्रि - अबिभ्रि।

यदि अभ्यास में वर्ग के द्वितीयाक्षर अर्थात् ख, फ, छ, ठ, थ हों, तो उन्हें उसी वर्ग का प्रथमाक्षर अर्थात् क, च, ट, त, प, बना दीजिये, इसे चर्त्व करना कहते हैं। यथा - ऋम्फिफि - ऋम्पिफि। ओखिखि - ओछिखि - ओचिखि।

३. णिलोप

णेरनिटि - अनिडादि आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर णि का लोप होता है। यथा - ओचिखि + अत् = ओचिख् + अत्। इदिधि + अत् = इदिध् + अत्। ऋम्पिफि + अत् = ऋम्पिफ् + अत्। उन्दिदि + अत् = उन्दिद् + अत्।

४. आडागम

इसके बाद 'आडजादीनाम्' सूत्र से लुङ्, लङ्, लृङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर अजादि अङ्ग को आट् (आ) का आगम कीजिये।

ध्यान रहे कि आट् + धातु के प्रथम अच् के बीच 'आटश्च' सूत्र से वृद्धि सन्धि ही कीजिये, गुण नहीं। वृद्धि इस प्रकार कीजिये -

आ + अ, आ = आ - आ + आटिट् + अत् = आटिटत्
आ + ई, ई = ऐ - आ + इञ्चिख् + अत् = ऐञ्चिखत्
आ + उ, ऊ = औ - आ + उन्दिद् + अत् = औन्दिदत्
आ + ऋ, ऋ = आर् - आ + ऋज्जिज् + अत् = आर्षिषत्
आ + ए, ऐ = ऐ - आ + एषिष् + अत् = ऐषिषत्
आ + ओ, औ = औ - आ + ओचिख् + अत् = औचिखत्

अजादि णिजन्त धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने का यही क्रम है। इनमें से जो कार्य प्राप्त न हो, उसे छोड़कर अगला कार्य करते जाना चाहिये।

अब हम अजादि णिजन्त धातुओं का वर्गीकरण करके उनमें चङ् से बने हुए प्रत्यय लगायें। ध्यान रहे कि क्रम यही रहे।

अजन्त अजादि धातु - इण् तथा इक् -

इ + णिच् + अत् / अचो ञ्णिति से वृद्धि करके - ऐ + इ + अत् / एचोऽयवायावः से आय् आदेश करके - आय् + इ + अत् - आयि + अत्

/ अब इसके द्वितीय अवयव एकाच् 'यि' को द्वित्व करके - आयियि + अत् / अब णेरनिटि सूत्र से 'णिच्' प्रत्यय का लोप करके - आयिय् + अत् / आडजादीनाम् सूत्र से आडागम करके तथा वृद्धि करके - आयियत्।

इस धातु का प्रयोग प्रति उपसर्ग के साथ होता है - प्रति + आयियत् = प्रत्यायियत्।

णौ गमिरबोधने / इण्वदिकः - बोध (ज्ञान) अर्थ वाले इण् धातु को णिच् प्रत्यय परे होने पर गम् आदेश होता है। णिच् प्रत्यय परे होने पर, इक् धातु को भी गम् आदेश होता है। अबोध अर्थ मे गम् आदेश होने पर अजीगमत् बनता है। इसे बनाने की विधि हलादि धातुओं में बतलाई जा चुकी है।

अधि + इङ् धातु - क्रीङ्जीनां णौ सूत्र से इङ् धातु को 'आ' बनाकर अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ सूत्र से पुक् का आगम करके द्वित्व कीजिये।

इ + णिच् + अत् / आ + णिच् + अत् / पुक् का आगम करके - आ + पुक् + णिच् + अत् / आप् + इ + अत् - आपि + अत् / द्वितीय अवयव एकाच् 'पि' को द्वित्व करके - आपिपि + अत् / णेरनिटि सूत्र से 'णिच्' का लोप करके - आपिप् + अत् / आडजादीनाम् से आडागम करके - आपिपत्।

इस धातु का प्रयोग अधि उपसर्ग के साथ होता है - अधि + आपिपत् = अध्यापिपत्।

उ धातु - उ + णिच् + अत् / अचो ञ्णिति से वृद्धि करके - औ + इ + अत् / एचोऽयवायावः सूत्र से औ को आव् आदेश करके - आव् + इ + अत् - आवि / अब इसके द्वितीय अवयव एकाच् 'वि' को द्वित्व करके - आविवि + अत् / अब णेरनिटि सूत्र से 'णिच्' प्रत्यय का लोप करके - आविव् + अत् / आडजादीनाम् सूत्र से आडागम करके तथा वृद्धि करके - आवित्त्।

ऋ धातु - इसे 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये तथा पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण कीजिये -

ऋ + णिच् + अत् - ऋ + पुक् + णिच् + अत् / गुण करके - अर् + प् + इ + अत् - अर्पि + अत् / द्वितीय अवयव एकाच् 'पि' को द्वित्व करके - अर्पिपि + अत् / णेरनिटि से 'णिच्' का लोप करके - अर्पिप् + अत् / आडजादीनाम् से आडागम करके तथा वृद्धि करके - आर्पिपत्।

अदुपध अजादि धातु -

अत उपधायाः - अदुपध हलन्त धातुओं की उपधा के 'अ' को वृद्धि होती है, ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। जैसे -

अट् + णिच् + अत् - आट् + इ + अत् - आटि + अत् / इसके द्वितीय अवयव एकाच् 'टि' को द्वित्व करके - आटिटि + अत् / अब णेरनिटि सूत्र से 'णिच्' प्रत्यय का लोप करके - आटिट् + अत् / आडजादीनाम् सूत्र से आडागम करके तथा वृद्धि करके - आटिटत्।

इसी प्रकार - अत् धातु से आतितत् बनाइये।

इगुपध अजादि धातु -

पुगन्तलघूपधस्य च - कित्, ङित्, से भिन्न, सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अङ्ग की उपधा के लघु इक् को गुण होता है अर्थात् उपधा के लघु इ को ए / लघु उ को ओ / लघु ऋ को अर् / ऐसा गुण होता है।

यथा - ऋध् + णिच् + अत् / पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके - अर्धि + अत् / द्वितीय अवयव एकाच् 'धि' को द्वित्व करके - अर्धिधि + अत् / अभ्यास को अभ्यासे चर्च से चर्त्व करके - अर्दिधि + अत् / अब णेरनिटि सूत्र से 'णिच्' प्रत्यय का लोप करके - अर्दिध् + अत् / आडजादीनाम् सूत्र से आडागम करके तथा वृद्धि करके - आर्दिधत्।

उख् + णिच् + अत् / पुगन्तलघूपधस्य च से गुण करके - ओख् + इ + अत् - ओखि + अत् / द्वितीय अवयव एकाच् 'खि' को द्वित्वाभ्यासकार्य करके - ओखिखि + अत् - ओचिखि + अत् / णेरनिटि से 'णिच्' का लोप करके - ओचिख् + अत् / आडजादीनाम् से आडागम करके - औचिखत्।

इष् + णिच् + अत् / पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके - एष् + इ + अत् - एषि + अत् / द्वितीय अवयव एकाच् 'षि' को द्वित्व करके - एषिषि + अत् / अब णेरनिटि सूत्र से 'णिच्' प्रत्यय का लोप करके - एषिष् + अत् / आडजादीनाम् सूत्र से आडागम करके तथा वृद्धि करके - ऐषिषत्।

शेष अजादि धातु -

ओणृ धातु - ओण् + अत् / देखिये कि यह धातु ऋदित् है अतः 'नाग्लोपिशास्वृदिताम्' सूत्र से इसकी उपधा को ह्रस्व का निषेध हो जायेगा। अतः उपधाह्रस्व को छोड़ दीजिये और आगे के कार्य कीजिये -

ओण् + णिच् + अत् / ओण् + इ + अत् - ओणि / णि को द्वित्वादि करके - ओणिणि + अत् / णिच् का लोप करके - ओणिण् + अत् / आडजादीनाम् सूत्र से आडागम करके तथा वृद्धि करके = औणिणत्।

इसी प्रकार - उज्झ् से औज्जिझत्। अभ्र् से आबिभ्रत्।

ईक्ष् धातु - ईक्ष् + णिच् - ईक्षि - ईक्षिक्षि। इसमें पूर्व क्षि की अभ्यास

संज्ञा है। क्ष् में क् + ष् इन दो व्यञ्जनों का संयोग है। 'हलादि: शेष:' सूत्र से अभ्यास के आदि हल् क् को बचा लीजिये और ष् का लोप कर दीजिये। ईक्षिक्षि - ईकिक्षि - 'कुहोश्चु:' से चुत्व करके - ईचिक्षि - ईचिक्ष् - ऐचिक्षत्। इसी प्रकार - उक्ष् + णिच् - उक्षि - उकिक्षि - उचिक्ष् - औचिक्षत् आदि।

यह लुङ् लकार के चङ् से बने हुए प्रत्ययों को लगाने की विधि पूर्ण हुई।

लुङ् लकार के सप्तम, अष्टम प्रकार के क्स से बने हुए प्रत्यय

सत्	सताम्	सन्	सत	साताम्	सन्त
स:	सतम्	सत	सथा:	साथाम्	सध्वम्
सम्	साव	साम	सि	सावहि	सामहि

पहिले हमारा विचार यह होना चाहिये कि ये 'क्स' से बने हुए प्रत्यय किन किन धातुओं से लगाये जायें। इसके लिये सूत्र हैं -

शल इगुपधादनिट: क्स: - जो धातु अनिट् हों, साथ ही जिनके अन्त में शल् अर्थात् श, ष्, स्, ह् हों, तथा जिनकी उपधा में इक् अर्थात् इ, उ, ऋ हों, उन्हें 'अनिट् शलन्त इगुपध' धातु कहते हैं। ऐसे शलन्त इगुपध अनिट् धातुओं से लुङ् लकार में, ये क्स से बने हुए प्रत्यय लगाये जाते हैं।

जैसे - दुह् धातु को देखिये, यह धातु शलन्त इगुपध अनिट् धातु है, अत: इससे लुङ् लकार में, ये क्स से बने हुए प्रत्यय लगाये जाते हैं।

इस प्रकार सारे प्रत्ययों के बँटवारे के बाद, अनिट् धातुओं में से कुल १७ धातु इस 'क्स' प्रत्यय के हिस्से में आते हैं। वे इस प्रकार हैं -

क्रुश्, दिश्, मृश्, रिश्, रुश्, लिश्, विश्, स्पृश्, कृष्, त्विष्, द्विष्, श्लिष्, मिह् रुह्, लिह्, दिह्, दुह् = १७

श्लिष आलिङ्गने - इन १७ धातुओं में से भी, श्लिष् धातु का अर्थ जब आलिङ्गन करना होता है, तब तो उससे क्स से बने हुए प्रत्यय लगते हैं, तथा जब इसका अर्थ चिपकना होता है, तब उससे अङ् से बने हुए प्रत्यय ही लगते हैं, यह ध्यान रखना चाहिये।

न दृश: - दृश् धातु शलन्त इगुपध अनिट् धातु है, तो भी इससे लुङ् लकार में क्स से बने हुए प्रत्यय नहीं लगाये जाते हैं। इससे विकल्प से अङ् से बने हुए और सिच् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं। अदर्शत्, अद्राक्षीत्।

स्पृशकृषमृशतृपदृपां सिज्वा वक्तव्य: (वार्तिक) - स्पृश्, मृश्, कृष् इन शलन्त इगुपध धातुओं मे क्स और सिच् दोनों ही प्रत्यय विकल्प से लगते हैं।

अतः यह जानिये कि १४ शलन्त इगुपध धातुओं से क्स, तथा ३ शलन्त इगुपध धातुओं से क्स और सिच् दोनों ही प्रत्यय लग सकते हैं।

इनके अलावा गृहू, बृहू, तृहू, स्तृहू, गुहू ये वेट् धातु भी, शलन्त इगुपध हैं। जब ये अनिट् होते हैं, तब इनसे क्स से बने हुए प्रत्यय लगाये जाते हैं। सेट् होने पर, तब इनसे 'सिच्' से बने हुए प्रत्यय ही लगाये जाते हैं।

परन्तु ध्यान रहे कि परस्मैपदी धातुओं से परस्मैपदी तथा आत्मनेपदी धातुओं से आत्मनेपदी प्रत्यय ही लगाये जायें।

क्स से बने हुए सकारादि प्रत्ययों को धातुओं में कैसे जोड़ें ?

१. ध्यान रहे कि 'क्' की इत् संज्ञा होने से, यह प्रत्यय कित् है। अतः इसके लगने पर धातु की उपधा को 'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध कीजिये।

२. धातुओं के आदि में लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र से अडागम अवश्य कीजिये। अब इन सारे धातुओं को क्स से बने हुए सकारादि प्रत्ययों में जोड़िये।

सकारादि प्रत्ययों को शकारान्त धातुओं में इस प्रकार जोड़िये -

शकारान्त धातु - धातु के अन्तिम 'श्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयज - राजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये - अदिश् + सत् - अदिष् + सत् / उसके बाद 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाइये - अदिक् + सत् / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाइये - अदिक् + षत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये = अदिक्षत्। **पूरे रूप इस प्रकार बने -**

परस्मैपद			आत्मनेपद		
अदिक्षत्	अदिक्षताम्	अदिक्षन्	अदिक्षत	अदिक्षाताम्	अदिक्षन्त
अदिक्षः	अदिक्षतम्	अदिक्षत	अदिक्षथाः	अदिक्षाथाम्	अदिक्षध्वम्
अदिक्षम्	अदिक्षाव	अदिक्षाम	अदिक्षि	अदिक्षावहि	अदिक्षामहि

इसी प्रकार - क्रुश् से अक्रुक्षत् / मृश् से अमृक्षत् / रिश् से अरिक्षत् / रुश् से अरुक्षत् / लिश् से अलिक्षत् / विश् से अविक्षत् / स्पश् से अस्पृक्षत् आदि बनाइये।

षकारान्त धातु - 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाइये - अकृष् + सत् - अकृक् + सत् / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाइये - अकृक् + षत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये - अकृक्षत्।

षकारान्त 'त्विष्' धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
अत्विक्षत्	अत्विक्षताम्	अत्विक्षन्	अत्विक्षत	अत्विक्षाताम्	अत्विक्षन्त

अत्विक्षः	अत्विक्षतम्	अत्विक्षत	अत्विक्षथाः	अत्विक्षाथाम्	अत्विक्षध्वम्
अत्विक्षम्	अत्विक्षाव	अत्विक्षाम	अत्विक्षि	अत्विक्षावहि	अत्विक्षामहि

इसी प्रकार द्विष् से अद्विक्षत् / श्लिष् से अश्लिक्षत् / बनाइये।

हकारान्त धातु - इनके तीन वर्ग बनाइये -

१. मिह्, रुह् धातु - 'ह्' को 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाइये - अमिह् + सत् - अमिढ् + सत् / 'ढ्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाइये - अमिढ् + सत् - अमिक् + सत् / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाइये - अमिक् + षत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये - अमिक्षत्।

इसी प्रकार रुह् से अरुक्षत् / तृहू से अतृक्षत् / स्तृहू से अस्तृक्षत् आदि।

२. दुह्, दिह्, लिह्, गुह् धातु -

लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये - दुह्, दिह्, लिह्, गुह् धातुओं के बाद आने वाले 'क्स' प्रत्यय के अन्तिम 'अ' का लोप विकल्प से होता है।

अतः क्स से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्ययों में से उन प्रत्ययों को देखिये, जिन प्रत्ययों में 'स' के बाद दन्त्य वर्ण है, जैसे - सत / सथाः / सध्वम् / सावहि। ये प्रत्यय यदि दुह्, दिह्, लिह्, गुह् धातुओं के बाद आते हैं, तो इन प्रत्ययों के 'स' के बाद आने वाले 'अ' का लोप विकल्प से होता है। उसके बाद इनके स् का भी लोप होकर ये प्रत्यय विकल्प से, त / थाः / ध्वम्, वहि, भी बन जाते हैं। अब ये प्रत्यय सकारादि, तकारादि, थकारादि, धकारादि, वकारादि हैं। इन्हें धातुओं में जोड़ने की विधि सन्धिप्रकरण में देखिये।

दुह् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अधुक्षत्	अधुक्षताम्	अधुक्षन्	अधुक्षत	अधुक्षाताम्	अधुक्षन्त
			अदुग्ध	-	-
अधुक्षः	अधुक्षतम्	अधुक्षत	अधुक्षथाः	अधुक्षाथाम्	अधुक्षध्वम्
			अदुग्धाः	-	अधुग्ध्वम्
अधुक्षम्	अधुक्षाव	अधुक्षाम	अधुक्षि	अधुक्षावहि	अधुक्षामहि
			-	अदुह्वहि	-

इसी प्रकार दिह् के रूप बनाइये।

लिह् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अलिक्षत्	अलिक्षताम्	अलिक्षन्	अलिक्षत	अलिक्षाताम्	अलिक्षन्त
			अलीढ	-	-
अलिक्षः	अलिक्षतम्	अलिक्षत	अलिक्षथाः	अलिक्षाथाम्	अलिक्षध्वम्
			अलीढाः	-	अलीढ्ध्वम्

अलिक्षम्	अलिक्षाव	अलिक्षाम	अलिक्षि	अलिक्षावहि	अलिक्षामहि
			-	अलिह्वहि	-

गुह् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अघुक्षत्	अघुक्षताम्	अघुक्षन्	अघुक्षत	अघुक्षाताम्	अघुक्षन्त
			अगूढ	-	-
अघुक्षः	अघुक्षतम्	अघुक्षत	अघुक्षथाः	अघुक्षाथाम्	अघुक्षध्वम्
			अगूढाः	-	अघूढ्वम्
अघुक्षम्	अघुक्षाव	अघुक्षाम	अघुक्षि	अघुक्षावहि	अघुक्षामहि
			-	अगुह्वहि	-

बृह् (परस्मैपदी) धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अभृक्षत्	अभृक्षताम्	अभृक्षन्
अभृक्षः	अभृक्षतम्	अभृक्षत
अभृक्षम्	अभृक्षाव	अभृक्षाम

यह लुङ् लकार के क्स से बने हुए प्रत्यय लगाने की विधि पूर्ण हुई।

लुङ् लकार के नवम, दशम प्रकार के अनिट् सिच् से बने हुए प्रत्यय

परस्मैपद			आत्मनेपद		
सीत्	स्ताम्	सुः	स्त	साताम्	सत
सीः	स्तम्	स्त	स्थाः	साथाम्	ध्वम्
सम्	स्व	स्म	सि	स्वहि	स्महि

लुङ् लकार के एकादश, द्वादश प्रकार के सेट् सिच् से बने हुए प्रत्यय

ईत्	इष्टाम्	इषुः	इष्ट	इषाताम्	इषत
ईः	इष्टम्	इष्ट	इष्ठाः	इषाथाम्	इढ्वम्
इषम्	इष्व	इष्म	इषि	इष्वहि	इष्महि

इन प्रत्ययों को किन धातुओं से लगायें -

अभी तक लुङ् लकार के जो भी प्रत्यय कहे गये हैं, वे सभी अपवाद प्रत्यय हैं, सिच् प्रत्यय उत्सर्ग है।

अतः अभी तक जिन जिन धातुओं से लुङ् लकार के जो जो प्रत्यय कहे गये हैं, उन धातुओं अलावा अब जो भी धातु बच गये हैं, उन धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये सिच् प्रत्यय से बने हुए ये प्रत्यय लगाना

चाहिये। किन्तु ध्यान रहे कि अनिट् धातुओं से अनिट् सिच् वाले प्रत्यय लगाना चाहिये और सेट् धातुओं से सेट् सिच् वाले प्रत्यय लगाना चाहिये।

इसके लिये आवश्यक है कि हम सेट् अनिट् धातुओं को अलग अलग पहिचानें -

इडागम विधि

किसी भी धातु में किसी भी प्रत्यय को जोड़कर धातुरूप बनाने पहिले कुछ विचार करना अत्यावश्यक होता है -

पहिला विचार यह करना चाहिये कि प्रत्यय सार्वधातुक है या आर्धधातुक।

आर्धधातुकं शेषः - तिङ् शित् प्रत्ययों से भिन्न होने के कारण यह 'सिच्' प्रत्यय आर्धधातुक प्रत्यय है, यह जानिये।

आर्धधातुकस्येड् वलादेः - वलादि आर्धधातुक प्रत्यय को इट् = इ का आगम होता है। 'सिच्' प्रत्यय वलादि होने के कारण सेट् आर्धधातुक प्रत्यय है, अतः इसे इडागम होना चाहिये।

किन्तु केवल प्रत्यय के सेट् होने से ही प्रत्यय को इडागम नहीं हो जाता। यदि प्रत्यय सेट् है तो फिर यहाँ हमें यह विचार करना चाहिये कि क्या वह धातु भी सेट् है जिससे यह सेट् प्रत्यय लगाया गया है ? यदि धातु भी सेट् हो, तभी उस धातु से लगे हुए सेट् प्रत्यय को इडागम कीजिये। यदि धातु अनिट् हो तब उस धातु से लगे हुए सेट् प्रत्यय को भी इडागम मत कीजिये। इसी का नाम इडागम विचार है।

इसका अर्थ यह हुआ कि जब धातु सेट् हो, तब उसमें ऊपर कहे गये इडागम करके बने हुए सेट् प्रत्यय लगाना है। जब धातु अनिट् हो तब उसमें ऊपर कहे गये इडागम से रहित अनिट् प्रत्यय लगाना है।

अतः अब सेट् अनिट् धातु पहिचानने की विधि बतला रहे हैं।

जिन धातुओं में एक से अधिक अच् होते हैं, ऐसे अनेकाच् धातु सेट् ही होते हैं, जैसे - जागृ, चकास्, दरिद्रा, दीधी, वेवी, आदि। जब किसी एकाच् धातु में, णिच् आदि कोई भी प्रत्यय लगाकर उसे अनेकाच् बना दिया जाता है, तब वह एकाच् धातु भी अनेकाच् हो जाने से सेट् हो जाता है, जैसे - कृ धातु अनिट् है, किन्तु जब णिच् प्रत्यय लगकर, यह कृ + णिच् - कारि बन जाता है, तब यह अनेकाच् हो जाने से सेट् हो जाता है। इस प्रकार सारे प्रत्ययान्त धातु अनेकाच् हो जाने से सेट् ही होते हैं।

उपदेशावस्था में एकाच् अर्थात् एक स्वर वाले जो धातु हैं, वे ही अनिट्

हो सकते हैं, किन्तु सब के सब एकाच् धातु नहीं। इनमें भी, जो एकाच् धातु अनुदात्त हों, वे ही अनिट् हो सकते हैं।

एकाच् तो हम देखकर पहिचान लेंगे, किन्तु अनुदात्त कैसे पहिचानेंगे, इसके लिये इन अनिट् धातुओं को पहिचानने की विधि बतला रहे हैं। इन अनिट् धातुओं से ही आप अनिट् प्रत्यय लगाइये।

अब हम एकाच् धातुओं के अन्तिम वर्ण को क्रम से रखकर, धातुओं का सेट्, अनिट् विभाजन दे रहे हैं, इन्हें याद करके जानिये कि कौन से धातु सेट् हैं और कौन से अनिट्।

सेट् तथा अनिट् अजन्त धातुओं को पहिचानने की विधि

१. **एकाच् आकारान्त धातु** - सारे एकाच् आकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं। अनेकाच् होने से दरिद्रा धातु सेट् है।

२. **एकाच् ह्रस्व इकारान्त धातु** - इनमें श्वि, श्रि धातु सेट् होते हैं। इन दो के अलावा, शेष सारे एकाच् ह्रस्व इकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं।

३. **एकाच् दीर्घ ईकारान्त धातु** - इनमें डीङ्, शीङ् धातु सेट् होते हैं। शेष सारे एकाच् दीर्घ ईकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं।

४. **एकाच् ह्रस्व उकारान्त धातु** - इनमें स्नु, नु, क्षु, यु (अदादिगण), रु, क्ष्णु ये ६ धातु सेट् होते हैं तथा इन ६ को छोड़कर, शेष सारे एकाच् उकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं।

५. **एकाच् दीर्घ ऊकारान्त धातु** - ये सब के सब सेट् होते हैं।

६. **एकाच् ह्रस्व ऋकारान्त धातु** - वृङ्, वृञ् को छोड़कर, शेष सारे एकाच् ह्रस्व ऋकारान्त धातु अनिट् होते हैं। अनेकाच् होने से 'जागृ' सेट् है।

७. **एकाच् दीर्घ ॠकारान्त धातु** - ये सभी सेट् होते हैं।

८. **एजन्त धातु** - अर्थात् ए, ओ, ऐ, औ, से अन्त होने वाले सारे धातु। ये सभी अनिट् ही होते हैं तथा ये धातु आर्धधातुक प्रत्यय परे रहने पर **आदेच उपदेशेऽशिति** सूत्र से आकारान्त बन जाते हैं। जैसे - गै = गा, धे = धा, ग्लै = ग्ला, ध्यै = ध्या आदि।

यह एकाच् अजन्त धातुओं में से सेट् तथा अनिट् धातुओं को अलग अलग पहिचानने की विधि पूर्ण हुई।

अब एकाच् हलन्त धातुओं में से, सेट् तथा अनिट् धातुओं को कैसे अलग अलग पहिचाना जाये, यह विधि बतला रहे हैं।

सेट् तथा अनिट् हलन्त धातुओं को पहिचानने की विधि

नीचे १०२ हलन्त एकाच् धातु दिये जा रहे हैं। ये सब उपदेशावस्था

में एकाच् तथा अनुदात्त होने के कारण अनिट् हैं। इनके अतिरिक्त जो भी एकाच् हलन्त धातु आप पाएँगे, वे सब सेट् ही होंगे, यह जानना चाहिए।

१. **एकाच् ककारान्त धातुओं में** - शक्लृ, यह १ धातु ही अनिट् होता है। शेष सारे ककारान्त धातु सेट् होते हैं।

२. **एकाच् चकारान्त धातुओं में** - पच्, मुच्, रिच्, वच्, विच्, सिच्, ये ६ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे चकारान्त धातु सेट् होते हैं।

३. **एकाच् छकारान्त धातुओं में** - प्रच्छ्, यह १ धातु अनिट् होता है। शेष सारे छकारान्त धातु सेट् होते हैं।

४. **एकाच् जकारान्त धातुओं में** - त्यज्, निजिर्, भज्, भञ्ज्, भुज्, भ्रस्ज्, मस्ज्, यज्, युज्, रुज्, रञ्ज्, विजिर् (रुधादि), स्वञ्ज्, सञ्ज्, सृज् - ये १५ धातु अनिट् होते हैं। शेष सभी जकारान्त धातु सेट् होते हैं।

५. **एकाच् दकारान्त धातुओं में** - अद्, क्षुद्, खिद्, छिद्, तुद्, नुद्, पद् (दिवादिगण), भिद्, विद् (दिवादिगण), विद् (रुधादिगण), शद्, सद्, स्विद्, स्कन्द्, और हद् ये १५ धातु अनिट् होते हैं। शेष सभी दकारान्त धातु सेट् हैं।

विशेष - दिवादिगण तथा रुधादिगण के विद् धातु अनिट् होते हैं और अदादिगण तथा तुदादिगण के विद् धातु सेट् होते हैं।

६. **एकाच् धकारान्त धातुओं में** - क्रुध्, क्षुध्, बुध् (दिवादिगण), बन्ध्, युध्, रुध्, राध्, व्यध्, साध्, शुध्, सिध् (दिवादिगण) ये ११ धातु अनिट् होते हैं। शेष सभी धकारान्त धातु सेट् होते हैं।

विशेष - ध्यान दीजिये कि बुध् धातु दो हैं। इनमें से भ्वादिगण का बुध् धातु सेट् होता है। दिवादिगण का बुध् धातु अनिट् होता है।

७. **एकाच् नकारान्त धातुओं में** - मन् (दिवादिगण) तथा हन्, ये २ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे नकारान्त धातु सेट् होते हैं।

८. **एकाच् पकारान्त धातुओं में** - आप्, छुप्, क्षिप्, तप्, तिप्, तृप् (दिवादिगण), दृप् (दिवादिगण), लिप्, लुप्, वप्, शप्, स्वप्, सृप्, ये १३ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे पकारान्त धातु सेट् होते हैं।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि तृप् धातु तीन हैं। इनमें से स्वादिगण तथा तुदादिगण के तृप् धातु सेट् होते हैं। दिवादिगण का तृप् धातु वेट् होता है।

९. **एकाच् भकारान्त धातुओं में** - यभ्, रभ्, लभ्, ये ३ धातु अनिट्

होते हैं। शेष सारे भकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१०. एकाच् मकारान्त धातुओं में - गम्, नम्, यम्, रम्, ये ४ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे मकारान्त धातु सेट् होते हैं।

११. एकाच् शकारान्त धातुओं में - क्रुश्, दंश्, दिश्, दृश्, मृश्, रिश्, रुश्, लिश्, विश्, स्पृश्, ये १० धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे शकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१२. एकाच् षकारान्त धातुओं में - कृष्, त्विष्, तुष्, द्विष्, दुष्, पुष् (दिवादि गण), पिष्, विष्, शिष्, शुष्, श्लिष् (दिवादिगण), ये ११ धातु अनिट् होते हैं। शेष सभी षकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१३. एकाच् सकारान्त धातुओं में - वस्, घस्, ये २ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे सकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१४. एकाच् हकारान्त धातुओं में - दह्, दिह्, दुह्, नह्, मिह्, रुह्, लिह्, वह्, ये ८ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे हकारान्त धातु सेट् होते हैं।

अब वेट् धातु बतला रहे हैं, जिनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को भी विकल्प से इट् का आगम होता है - वेट् धातु इस प्रकार हैं -

वेट् धातु

स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा - स्वृ धातु, अदादिगण का सू धातु, दिवादिगण का सू धातु, स्वादि तथा क्र्यादिगण का धूञ् धातु तथा सारे ऊदित् धातुओं से आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

ऊदित् धातु - 'ऊदित्' का अर्थ होता है, ऐसे धातु जिनमें 'ऊ' की इत् संज्ञा हुई हो। धातुपाठ में पढ़े गये सारे 'ऊदित् धातु' इस प्रकार हैं -

अक्षू	तक्षू	त्वक्षू	तञ्चू	ओव्रश्चू	अञ्जू	मृजू	क्लिदू
स्यन्दू	षिधू	गुपू	त्रपूष्	कृपू	क्षमू	क्षमूष्	अशू
क्लिशू	गाहू	गुहू	गृहू	तृहू	तृन्हू	स्तृहू	वृहू।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि स्वादि, क्र्यादि तथा चुरादिगण में धूञ् कम्पने धातु हैं। तुदादिगण में धू विधूनने धातु है। इनमें से स्वादिगण तथा क्र्यादिगण के धूञ् कम्पने धातु ही वेट् होते हैं। इनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है। तुदादिगण का धू विधूनने धातु तथा चुरादिगण का धूञ् कम्पने धातु सेट् होता है। इनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को नित्य इडागम होता है।

रधादिभ्यश्च - रध्, नश्, तृप्, दृप्, द्रुह्, मुह्, स्निह्, स्नुह्, ये ८ धातु

वेट् होते हैं। इन आठ धातुओं से परे आने वाले सेट् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

निरः कुषः - निर् उपसर्गपूर्वक कुष् धातु से परे आने वाले सेट् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम हाता है।

इस प्रकार ३६ धातु वेट् हैं। इन ३६ वेट् धातुओं से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि जहाँ एक आकृति के अनेक धातु हैं, वहाँ हमने स्पष्ट निर्देश करके कोष्ठक में उस गण का नाम लिख दिया है जिस गण का धातु अनिट् होता है।

इससे यह जानना चाहिये कि जिसका नाम नहीं लिखा है वह सेट् ही है। इन अनिट् और वेट् धातुओं के अलावा जितने भी हलन्त धातु हैं वे सब के सब सेट् ही हैं, यह जानना चाहिये।

यह सेट्, अनिट् तथा वेट् धातुओं को पहिचानने की तथा सेट् अनिट् प्रत्ययों को पहिचानने की औत्सर्गिक अर्थात् सामान्य व्यवस्था है। इसे कण्ठस्थ कर लीजिये। इसके अलावा 'सिच्' प्रत्यय के इडागम के लिये ये विशेष विधियाँ बतलाई जा रही हैं। इन्हें भी ध्यान रखें -

सिच् प्रत्यय के लिये विशेष इडागम व्यवस्था

लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु - वृङ्, वृञ् धातु तथा दीर्घ ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाले आत्मनेपद संज्ञक सीयुट् तथा सिच् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

आत्मनेपद -	वृङ्	-	अवृत / अवरिष्ट
	वृञ्	-	अवृत / अवरिष्ट
	स्तॄ	-	आस्तीर्ष्ट / आस्तरिष्ट।

परस्मैपद में नित्य इडागम होकर अस्तारीत् आदि प्रयोग बनेंगे।

ऋतश्च संयोगादेः - संयोगादि ऋदन्त धातुओं से परे आने वाले आत्मनेपद संज्ञक सीयुट् और सिच् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है।

आत्मनेपद , -	ध्वृ	-	अध्वृषाताम् / अध्वरिषाताम्
	स्मृ	-	अस्मृषाताम् / अस्मरिषाताम्

स्नुक्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते - स्नु और क्रम् ये दोनों धातु यद्यपि सेट् हैं किन्तु इनके लिये ऐसी व्यवस्था है कि इनसे परे परस्मैपदी सेट् प्रत्यय आने पर ही इन्हें इडागम होता है और आत्मनेपदी सेट् प्रत्यय आने पर इन्हें इडागम

नहीं होता। (ध्यान रहे कि भावकर्म, कर्मकर्तृ और कर्मव्यतिहार, ये आत्मनेपद के निमित्त हैं, इनमें इडागम नही होता है।)

परस्मैपद		**आत्मनेपद**
स्नु	-	प्रस्नावीत् / प्रस्नोष्ट
क्रम्	-	प्रक्रमीत् / प्रक्रंस्त

अञ्जेः सिचि - अञ्जू धातु यद्यपि ऊदित् होने से वेट् है तथापि इससे परे आने वाले सिच् प्रत्यय को नित्य इडागम होता है। अञ्जू - आञ्जीत्

स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु - स्तु, सु, धूञ् धातुओं से परे आने वाले परस्मैपदसंज्ञक सिच् प्रत्यय को नित्य इडागम होता है। यद्यपि स्तु, सु, धातु अनिट् हैं तथा धूञ् धातु वेट् है, किन्तु यहाँ सिच् प्रत्यय परे होने पर ये तीनों सेट् हो जाते हैं - स्तु - अस्तावीत् / सु - असावीत् / धूञ् - अधावीत्।

आत्मनेपद में यथाविहित व्यवस्था होगी - अर्थात् स्तु, सु अनिट् ही रहेंगे - अस्तोष्ट / असोष्ट। धूञ् वेट् ही रहेगा - अधोष्ट / अधविष्ट।

ज़ब भी सिच् प्रत्यय लगाकर कोई भी धातुरूप आप बनायें, तब औत्सर्गिक इडागम व्यवस्था के साथ इन अपवादों को देखकर ही कार्य शुरू करें।

इसी से आप निर्णय कर पायेंगे, कि किन धातुओं से आपको सेट् प्रत्यय लगाना है तथा किन धातुओं से अनिट्।

अब हम यह विचार करें कि सिच् से बने हुए ये प्रत्यय किन किन धातुओं से लगाये जायें ?

वे अजन्त धातु जिनसे सिच् से बने हुए प्रत्यय लगाना है

१. आकारान्त तथा एजन्त धातु -

जो एजन्त अर्थात् ए, ऐ, ओ, औ से अन्त होने वाले धातु हैं, उनके अन्तिम एच् को **आदेच उपदेशेऽशिति** सूत्र से आ बना दीजिये और उन्हें भी आकारान्त मान लीजिये। अब आकारान्त तथा एजन्त धातुओं का एक साथ विचार कीजिये -

आकारान्त धातु जब परस्मैपदी होते हैं, तब उनसे, सिज्लुक् / सक् + सिच् अथवा अङ् से बने हुए प्रत्यय ही लगते हैं, जिनका विचार उनके प्रसङ्ग में किया जा चुका है।

अतः जानिये कि जब आकारान्त तथा एजन्त धातु आत्मनेपदी होते हैं, तब उनसे सिच् से बने हुए अनिट् प्रत्यय लगाये जाते हैं - दा - अदित / धा - अधित /

आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् - केवल एक आकारान्त धातु ह्वे (ह्वा) धातु ऐसा है, जिससे आत्मनेपद में सिच् से बने हुए प्रत्यय तथा अङ् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लगते हैं। अह्वत / अह्वास्त।

२. इकारान्त, ईकारान्त धातु

इनमें श्वि धातु से अङ्, चङ् और सिच् ये तीन प्रत्यय लग सकते हैं - अश्वत्, अशिश्वियत् तथा अश्वयीत्। श्रि धातु से केवल चङ् लगता है - अशिश्रियत्। शेष इकारान्त धातुओं से सिच् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

३. उकारान्त, ऊकारान्त धातु - इनमें भू धातु से सिज्लुक् कहा गया है। द्रु, स्रु से चङ् कहा गया है। इन तीन को छोड़कर सारे उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं से सिच् प्रत्यय ही लगेगा।

४. ऋकारान्त, ॠकारान्त धातु - सृ धातु से तथा ऋ धातु से अङ् प्रत्यय कहा गया है। जॄ से विकल्प से अङ् और सिच् कहे गये हैं। कॄ, मॄ, दॄ से केवल वेद में अङ् कहा है, अतः सृ, ऋ के अलावा सारे ऋकारान्त, ॠकारान्त धातुओं से लोक में, ये सिच् से बने हुए प्रत्यय ही लगेंगे।

अब हम यह विचार करें कि सिच् से बने हुए ये प्रत्यय किन किन हलन्त धातुओं से लगाये जायें ?

वे हलन्त धातु जिनसे सिच् से बने हुए प्रत्यय लगाना है

इसके लिये पहिले उन धातुओं का विचार कर लें, जिनसे दूसरे प्रत्यय कहे जा चुके हैं -

१. क्रुश्, दिश्, रिश्, रुश्, लिश्, विश्, त्विष्, द्विष्, श्लिष्, दिह्, दुह्, मिह् रुह्, लिह्, इन चौदह शलन्त इगुपध धातओं से क्स से बने हुए प्रत्यय ही लगते हैं।

२. लिप्, सिच्, इन दो हलन्त धातुओं से परस्मैपद में अङ् से बने हुए प्रत्यय कहे गये हैं। अतः आत्मनेपद में सिच् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

३. यम्, रम्, नम्, इन तीन हलन्त धातुओं से परस्मैपद में सक् + सिच् से बने हुए प्रत्यय कहे गये हैं। अतः आत्मनेपद में सिच् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

४. स्पृश्, मृश्, कृष् इन शलन्त इगुपध धातुओं से क्स और सिच् दोनों ही प्रत्यय विकल्प से लग सकते हैं।

५. दिवादिगण के अन्तर्गत पुष् से गृध् तक, जो ६५ धातुओं का पुषादि अन्तर्गण है, उन पुषादि धातुओं से अङ् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

तृप्, दृप् ये दोनों धातु भी पुषादि अन्तर्गण में आते हैं, तथापि इनसे अङ् और सिच् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लग सकते हैं।

अत: यह जानिये कि ६३ पुषादि धातुओं से अङ्, तथा २ पुषादि धातुओं से अङ् और सिच् दोनों ही प्रत्यय लग सकते हैं।

६. भ्वादि गण के भीतर द्युत दीप्तौ से कृपू सामर्थ्ये तक जो २२ धातुओं का द्युतादि अन्तर्गण है, उनसे परस्मैपद में केवल अङ् प्रत्यय लगता है। आत्मनेपद में सिच् प्रत्यय लगता है।

७. अस्, वच्, शास् इन तीन धातुओं से केवल अङ् प्रत्यय लगता है।

८. १४ लृदित् धातु हैं, उन लृदित् धातुओं से भी केवल अङ् प्रत्यय लगता है।

९. २३ इरित धातु हैं। इनसे भी केवल अङ् प्रत्यय लगता है।

१०. म्रुचु, म्लुचु गत्यर्थौ, ग्रुचु, ग्लुचु स्तेयकरणे, ग्लञ्चु गतौ, तथा स्तन्भु धातु से, लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये अङ् से बने हुए प्रत्यय विकल्प से लगाये जाते हैं। अत: इनसे एक पक्ष में अङ् से बने हुए प्रत्यय तथा द्वितीय पक्ष में सिच् से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

११. रुह् धातु से वेद में लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये अङ् प्रत्यय का प्रयोग होता है तथा लोक में रुह् धातु के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये सिच् प्रत्यय का प्रयोग होता है।

ये कुल १५१ धातु हैं। इन १५१ हलन्त धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये ऊपर कहा हुआ विचार कीजिये। शेष हलन्त धातुओं से लुङ् लकार में सिच् से बने हुए प्रत्यय ही लगाइये।

हमने यह निर्धारण किया कि सिच् से बने हुए लुङ् लकार के प्रत्यय किन किन धातुओं से लगाये जायें। तथापि हमें यह ध्यान रखना पड़ेगा कि यहाँ जो दो प्रकार के प्रत्यय दिये गये हैं, उनमें से जो सेट् प्रत्यय हैं वे सेट् धातुओं से ही लगाये जायें तथा जो अनिट् प्रत्यय हैं, वे अनिट् धातुओं से ही लगाये जायें।

परस्मैपदी प्रत्यय, परस्मैपदी धातुओं से लगाये जायें तथा आत्मनेपदी प्रत्यय आत्मनेपदी धातुओं से लगाये जायें।

अत: सिच् प्रत्यय लगाते समय इडागम व्यवस्था को खोलकर सामने अवश्य रख लें।

अब हमारे सामने स्पष्ट चित्र है कि हमें किस धातु से, इनमें से कौन

सा प्रत्यय लगाना है। यह निर्णय हो जाने के बाद हम निर्णय करेंगे कि धातुओं से ये सिच् से बने हुए प्रत्यय कैसे लगाये जायें ?

अतिदेश

धातु में प्रत्यय को जोड़ने पर, धातु पर प्रत्यय का जो प्रभाव पड़ता है, उसे हम अङ्गकार्य कहते हैं। कोई भी अङ्गकार्य करने के पहिले हमें अतिदेश को जान लेना जरूरी हैं। लोक में भी ऐसा होता है कि जब गुरुजी न हों, तब उनके स्थान में गुरुपुत्र को गुरु जैसा मान लिया जाता है।

इसी प्रकार शास्त्र में भी अनेक जगह ऐसा करना पड़ता है, कि जो जैसा नहीं होता, उसे वैसा मान लेना पड़ता है। जो जैसा नहीं है, उसे वैसा मान लेने को ही अतिदेश कहते हैं।

हम देख रहे हैं कि सिच् प्रत्यय न तो कित् है, न ही ङित् है, तथापि इसे कभी कित् जैसा और कभी ङित् जैसा मान लिया जाता है, और उनके परे होने पर वे ही अङ्गकार्य किये जाते हैं, जो अङ्गकार्य कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर किये जाते हैं।

जो प्रत्यय कित्, ङित् नहीं हैं, उन्हें कित्, ङित् मानने का कार्य जिन सूत्रों के कारण होता है, उन सूत्रों को हम अतिदेश सूत्र कहते हैं।

कोई भी अङ्गकार्य सीखने के पहिले, इन अतिदेश सूत्रों को जानना अत्यावश्यक है। ये इस प्रकार हैं -

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् - गाङ् धातु से तथा तुदादिगण के अन्तर्गत जो कुट् से लेकर कुङ् तक ३५ धातुओं का कुटादिगण है, उस कुटादिगण में आने वाले धातुओं से, परे आने वाले ञित् णित् से भिन्न प्रत्यय ङित्वत् मान लिये जाते हैं।

सिच् प्रत्यय भी ञित् णित् से भिन्न प्रत्यय है, अत: यह जब गाङ् या कुटादि धातुओं के बाद आता है, तब इसे ङित् प्रत्यय जैसा मान लिया जाता है।

तब इसके लगने पर वे ही अङ्ग कार्य होते हैं, जो अङ्ग कार्य ङित् प्रत्यय लगने पर किये जाते हैं। अध्यगीष्ट, अकुटीत्।

(गाङ् धातु का अर्थ है, विभाषा लुङ्लृङो: सूत्र से लुङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर 'इङ्' धातु के स्थान पर होने वाला गाङ् आदेश।)

विज इट् - तुदादि गण के विज् धातु से परे आने वाले सारे सेट् प्रत्यय ङित्वत् माने जाते हैं - उद्विजिष्ट।

विभाषोर्णोः - ऊर्णु धातु से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्यय विकल्प से ङित्वत् माने जाते हैं - और्णवीत् / और्णुवीत्

लिङ्सिचावात्मनेपदेषु - ऐसे अनिट् हलन्त धातु; जिनमें इक् के बाद हल् हो, उनसे परे आने वाले अनिट् सिच् प्रत्यय और अनिट् सीयुट् प्रत्यय कित्वत् माने जाते है।

जो १०२ अनिट् हलन्त धातु हैं, उन्हें देखिये। साथ ही जो वेट् हलन्त धातु हैं, उन्हें भी देखिये। उनमें से ऐसे आत्मनेपदी या उभयपदी धातुओं को निकालिये, जिनकी उपधा में इक् हो। ऐसे धातु हम नीचे दे रहे हैं।

बुध्	-	आत्मनेपदी	छिद्	-	उभयपदी	रुध्	-	उभयपदी
तिप्	-	आत्मनेपदी	तुद्	-	उभयपदी	सिच्	-	उभयपदी
युध्	-	आत्मनेपदी	भिद्	-	उभयपदी	युज्	-	उभयपदी
खिद्	-	आत्मनेपदी	विद्	-	उभयपदी	क्षुद्	-	उभयपदी
विज्	-	आत्मनेपदी	लिप्	-	उभयपदी	भुज्	-	उभयपदी
रिच्	-	उभयपदी	विच्	-	उभयपदी	निज्	-	उभयपदी
भुज्	-	उभयपदी = १८						

इन १८ धातुओं से परे जब अनिट् सिच् प्रत्यय आता है तब उसे कित्वत् मान लिया जाता है।

ध्यान रहे कि जो धातु इनमें उभयपदी हैं, वे जब आत्मनेपद में प्रयुक्त होंगे, तभी उनसे परे आने वाले सिच् प्रत्यय को कित्वत् माना जायेगा। जब वे परस्मैपद में प्रयुक्त होंगे तब सिच् प्रत्यय कित्वत् नहीं माना जायेगा।

सारे ह्रस्व ऋकारान्त धातु अनिट् होते हैं। वृङ् वृञ् यहाँ वेट् होते हैं।

उश्च - ह्रस्व ऋकारान्त धातुओं से परे आने वाला आत्मनेपदी अनिट् सिच् प्रत्यय कित्वत् माना जाता है। कृ - अकृत / हृ - अहृत। ऋकारान्त आत्मनेपदी या उभयपदी धातुओं की संख्या १२ है। ये धातु इस प्रकार है -

कृञ् डुकृञ् धृङ् धृञ् पृङ् भृञ् डुभृञ् मृङ् वृङ्
वृञ् स्तृ हृञ् = १२

ध्यान रहे कि परस्मैपद में प्रयुक्त होने वाले ऋकारान्त धातु से परे आने वाला अनिट् सिच्, कभी भी कित्वत् नहीं होगा।

वा गमः - गम् धातु जब सम् उपसर्ग के साथ प्रयुक्त होता है तब वह '**समो गम्यृच्छिप्रच्छिस्वरत्यर्तिश्रुविदिभ्यः**' सूत्र से आत्मनेपदी होता है। जब वह

आत्मनेपदी होता है तब उससे परे आने वाला अनिट् सिच् प्रत्यय विकल्प से कित्वत् मान लिया जाता है। समगत, समगंस्त।

हनः सिच् - हन् धातु से परे आने वाला अनिट् आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय कित्वत् माना जाता है। आहन् + स्त = आहत।

यमो गन्धने - यम् धातु का अर्थ जब सूचित करना हो, तब उससे परे आने वाला अनिट् आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय, कितवत् माना जाता है। उदायत, उदायसाताम् आदि।

सूचन अर्थ न होने पर यह कितवत् नहीं होता। उदायस्त कूपाद् उदकम्।

विभाषोपयमने - जब यम् धातु का अर्थ विवाह करना हो, तब उससे परे आने वाला अनिट् आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय विकल्प से कित् होता है।

स्थाघ्वोरिच्च - स्था धातु तथा घुसंज्ञक धातुओं से परे आने वाला अनिट् आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय कित्वत् होता है तथा सिच् परे होने पर इन धातुओं के आ के स्थान पर 'इ' ऐसा आदेश भी होता है। यथा उपास्थित, अदित, अधित।

विशेष - स्था धातु यद्यपि परस्मैपदी है, किन्तु स्थाघ्वोरिच्च, समवप्रविभ्यः स्थः, प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च, उदोऽनूर्ध्वकर्मणि, उपान्मन्त्रकरणे, अकर्मकाच्च, इन सूत्रों से वह कुछ उपसर्गों के साथ, अथवा कुछ विशिष्ट अर्थों में आत्मनेपदी हो जाता है। जब यह आत्मनेपदी हो जाता है, तभी इससे परे आने वाला अनिट् आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय कित्वत् माना जाता है

इसके अलावा घुसंज्ञक जो छह दा धा धातु हैं अर्थात् देङ्, दो, दाण्, डुदाञ्, धेट्, डुधाञ्, इन धातुओं से परे आने वाला अनिट् आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय भी कित्वत् मान लिया जाता है। साथ ही जब यह सिच् प्रत्यय कितवत् होता है, तब इन सात धातुओं के आ को 'इ' ऐसा आदेश भी हो जाता है।

इतने अतिदेशों को याद करके ही हमें सिच् प्रत्यय के रूप बनाने में प्रवृत्त होना चाहिये।

अब कुल मिलाकर देखिये कि ३६ कुटादिगण के धातु, १९ ऐसे अनिट् आत्मनेपदी धातु जिनमें इक् के बाद हल् आया है, इङादेश गाङ् धातु, विज् धातु, ऊर्णु धातु, १२ ऋकारान्त आत्मनेपदी तथा उभयपदी धातु, आत्मनेपदी गम्, हन् यम्, धातु तथा आत्मनेपदी स्था और घुसंज्ञक धातु, इस प्रकार कुल ७९ धातुओं से परे आने वाले सिच् प्रत्यय को इन सूत्रों ने कित्वत् या ङित्वत् बनाया है।

इनके लुङ् लकार बनाने के लिये, ये जो सिच् से बने हुए प्रत्यय इनके

सामने आयेंगे वे कित्वत् या ङित्वत् होंगे। अतः इनके लगने पर हमें बहुत अधिक सावधानी रखकर वे ही अङ्गकार्य करना चाहिये जो कार्य कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर किये जाते हैं।

लुङ् लकार के रूप बनाते समय इन अतिदेशों की लगातार आवश्यकता पड़ती रहेगी। अतः इन्हें यहीं बुद्धिस्थ कर लें। आगे हम स्थान स्थान पर आपको इनका स्मरण दिलाते चलेंगे।

अब हम धातुओं के अलग अलग खण्ड बनाकर सिच् प्रत्यय लगाने का विचार करें। इससे सरलता होगी। पहिले आत्मनेपदी धातुओं के रूप इस क्रम से बनायें।

आत्मनेपदी धातुओं के चार वर्ग -

१. अजन्त सेट् आत्मनेपदी धातु

२. हलन्त सेट् आत्मनेपदी धातु

३. अजन्त अनिट् आत्मनेपदी धातु

४. हलन्त अनिट् आत्मनेपदी धातु

१. अजन्त सेट् आत्मनेपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

अजन्त धातुओं का पाँच हिस्सों में विभाजन कर लीजिये - आकारान्त तथा एजन्त धातु / इकारान्त, ईकारान्त धातु / उकारान्त, ऊकारान्त धातु / ऋकारान्त, ॠकारान्त धातु।

लुङ् लकार के सिच् से बने हुए सेट् आत्मनेपदी प्रत्यय

इष्ट	इषाताम्	इषत
इष्ठाः	इषाथाम्	इढ्वम्
इषि	इष्वहि	इष्महि

अब हम इन प्रत्ययों से सेट् आत्मनेपदी धातुओं के धातुरूप बनायें।

दीधी, वेवी धातु - अ + दीधी + इष्ट / 'यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः' सूत्र से इसके अन्तिम ई का लोप करके अदीध् + इष्ट = अदीधिष्ट।

इसी प्रकार अ + वेवी + इष्ट = अवेविष्ट।

शेष इकारान्त ईकारान्त सेट् धातु - इनके अन्तिम इ, ई को 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण करके 'ए' बनाइये और चूँकि उस ए के बाद अच् है, अतः 'एचोऽयावायावः' सूत्र से उस 'ए' को 'अय्' बनाइये - अ + शी + इष्ट = अ शे + इष्ट - अशय् + इष्ट = अशयिष्ट

अ + डी + इष्ट = अ डे + इष्ट = अडय् + इष्ट = अडयिष्ट।

'इङ् अध्ययने' - अधि + आ + इ + इष्ट / 'आटश्च' सूत्र से वृद्धि करके अधि + ऐष्ट = अध्यैष्ट। इस धातु को 'विभाषा लुङ्लृङो:' सूत्र से विकल्प से गाङ् आदेश होता है। गाङ् के रूप आकारान्त वर्ग में देखें।

सूत्रों के अर्थ इस प्रकार हैं -

सार्वधातुकार्धधातुकयो: - कित्, ङित्, ञित्, णित् से भिन्न सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, इगन्त अङ्ग को गुण होता है, अर्थात् अङ्ग के अन्त में आने वाले - इ - ई को ए / उ - ऊ को ओ / ऋ - ॠ को अर् / ऐसे गुण आदेश होते हैं।

एचोऽयवायाव: -एच् के स्थान पर क्रमश: अय्, अव्, आय्, आव् आदेश होते हैं, अच् परे होने पर।

शी धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत
अशयिष्ठा:	अशयिषाथाम्	अशयिढ्वम्
अशयिषि	अशयिष्वहि	अशयिष्महि

इसी प्रकार डी धातु के रूप बनाइये।

उकारान्त, ऊकारान्त धातु - 'सार्वधातुकार्धधातुकयो:' सूत्र से, इनके अन्तिम उ, ऊ को गुण करके 'ओ' बनाइये और चूँकि उस ओ के बाद अच् है, अत: 'एचोऽयावायाव:' सूत्र से उस 'ओ' को 'अव्' बना दीजिये -

अ पू + इष्ट - अ पो + इष्ट - अपव् + इष्ट = अपविष्ट।

पू धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अपविष्ट	अपविषाताम्	अपविषत
अपविष्ठा:	अपविषाथाम्	अपविढ्वम्
अपविषि	अपविष्वहि	अपविष्महि

ऋकारान्त ॠकारान्त धातु - 'सार्वधातुकार्धधातुकयो:' सूत्र से, इनके अन्तिम ऋ, ॠ को गुण करके अर् बना दीजिये -

अ वृ + इष्ट - अवर् + इष्ट = अवरिष्ट

अ स्तॄ + इष्ट - अस्तर् + इष्ट = अस्तरिष्ट

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अस्तरिष्ट	अस्तरिषाताम्	अस्तरिषत
अस्तरिष्ठा:	अस्तरिषाथाम्	अस्तरिढ्वम्

अस्तरिषि अस्तरिष्वहि अस्तरिष्महि

यह अजन्त सेट् आत्मनेपदी धातुओं का विचार पूर्ण हुआ।

२. हलन्त सेट् आत्मनेपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

इनमें से पहले हम कुछ विशेष सेट् आत्मनेपदी हलन्त धातुओं का विचार करते हैं। उसके बाद हम शेष हलन्त धातुओं के लिये सामान्य विधि बतलायेंगे।

विशेष हलन्त सेट् आत्मनेपदी धातु

हलन्त आत्मनेपदी धातुओं में से पहिले इन ९ धातुओं के रूप बनाइये-

तनादि धातु - तनादि गण के तन् (१४६३) से मन् (१४७१) तक ९ धातुओं को देखिये। इनका नाम तनादि धातु है। ये सारे के सारे धातु सेट् हैं तथा उभयपदी हैं। अतः इनसे दोनों पदों के प्रत्यय लगाये जा सकते हैं। इन्हें लगाने में कुछ विशेष कार्य करना पड़ते हैं, अतः इनके लिये विशेष विधियाँ बतला रहे हैं।

ध्यान रहे कि आत्मनेपद के ये इष्ट, इषाताम्, इषत, आदि प्रत्यय इट् + सिच् = इस्, से प्रारम्भ हो रहे हैं।

तनादिभ्यस्तथासोः - तनादि गण के धातुओं से परे जब आत्मनेपद के इष्ट और इष्ठाः प्रत्यय आते हैं तब इन दोनों प्रत्ययों में स्थित, इट् + सिच् = इस् का, विकल्प से लोप हो जाता है।

इट् + स् = 'इस्' का लोप हो जाने पर, इन प्रत्ययों में, ष्टुना ष्टुः सूत्र से ष्टुत्व होकर जो त को ट, तथा थाः को ठाः हुआ था, वह भी निवृत्त हो जाता है। इस प्रकार इष्ट को त / इष्ठाः को थाः, हो जाते हैं। जैसे -

अतन् + इष्ट / इस् का लोप होकर - अतन् + त

'अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति' से तन् के अन्तिम अनुनासिक वर्ण का लोप होकर - अत + त = अतत।

इसी प्रकार अतन् + इष्ठाः / इस् का लोप होकर अतन् + थाः

'अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति' से तन् के अन्तिम अनुनासिक वर्ण का लोप होकर - अत + थाः = अतथाः।

चूँकि यह लोप विकल्प से होता है अतः लोप न होने पर अतन् + इष्ट = अतनिष्ट तथा अतन् + इष्ठाः = अतनिष्ठाः रूप भी बनेंगे।

शेष प्रत्ययों की व्यवस्था वही रहेगी। जो अभी तक बतलायी जा चुकी है। तन् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अतत / अतनिष्ट		अतनिषाताम्	अतनिषत
अतथाः / अतनिष्ठाः		अतनिषाथाम्	अतनिढ्वम्
अतनिषि		अतनिष्वहि	अतनिष्महि

इसी प्रकार मन् वन् के रूप बनाइये।

सन् धातु – सन् धातु के न् का लोप नहीं होता है अपितु **'जनसनखनां-सञ्झलोः'** सूत्र से इसके न् को आ हो जाता है।

असन् + इष्ट / तनादिभ्यस्तथासोः सूत्र से इस् का लोप होकर - असन् + त / जनसनखनां सञ्झलोः सूत्र से न् को आ होकर - असा + त = असात।

इ + सिच् = इस्, का लोप न होने पर असन् + इष्ट = असनिष्ट

इसी प्रकार असन् + इष्ठाः / इस् का लोप होकर - असन् + थाः / सन् के न् को आ होकर असा + थाः = असाथाः / इस् का लोप न होने पर - असन् + इष्ठाः = असनिष्ठाः।

सन् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

असात / असनिष्ट		असनिषाताम्	असनिषत
असाथाः / असनिष्ठाः		असनिषाथाम्	असनिढ्वम्
असनिषि		असनिष्वहि	असनिष्महि

क्षण् धातु – अक्षण् + इष्ट / तनादिभ्यस्तथासोः सूत्र से इस् का लोप होकर = अक्षण् + त / अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति से न् का लोप होने पर - अक्ष + त = अक्षत।

इस् का लोप न होने पर अक्षण् + इष्ट = अक्षणिष्ट।

इसी प्रकार अक्षण् + इष्ठाः / इस् का लोप होकर अक्षण् + थाः / न् का लोप होने पर - अक्ष + थाः = अक्षथाः।

इस् का लोप न होने पर - अक्षण् + इष्ट = अक्षणिष्ट, अक्षण् + इष्ठाः = अक्षणिष्ठाः। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अक्षत / अक्षणिष्ट		अक्षणिषाताम्	अक्षणिषत
अक्षथाः / अक्षणिष्ठाः		अक्षणिषाथाम्	अक्षणिढ्वम्
अक्षणिषि		अक्षणिष्वहि	अक्षणिष्महि

क्षिण् धातु - अक्षिण् + इष्ट / तनादिभ्यस्तथासोः सूत्र से इस् का लोप होकर = अक्षिण् + त / अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति से न् का लोप होने पर अक्षि + त = अक्षित।

इसी प्रकार अक्षिण् + इष्ठाः / इस् का लोप होकर अक्षिण् + थाः / न् का लोप होने पर - अक्षि + थाः = अक्षिथाः।

ध्यान रहे कि सिच् प्रत्यय आर्धधातुक प्रत्यय है। जब इसका लोप हो जाता है तब जो त, थाः बचते हैं, वे अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने के कारण 'सार्वधातुकमपित्' सूत्र से ङिद्वत् होते हैं, अतः उनके परे रहने पर अङ्ग की उपधा को 'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध हो जाता है।

सिच् प्रत्यय का लोप नहीं होने पर, अङ्ग की उपधा को पुगन्तलघूपधस्य च से होने वाला गुण हो जाता है। अतः 'इस्', का लोप न होने पर -
अक्षिण् + इष्ट / गुण होकर - अक्षेण् + इष्ट = अक्षेणिष्ट।
अक्षिण् + इष्ठाः / गुण होकर - अक्षेण् + इष्ठाः = अक्षेणिष्ठाः।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अक्षित / अक्षेणिष्ट	अक्षेणिषाताम्	अक्षेणिषत
अक्षिथाः / अक्षेणिष्ठाः	अक्षेणिषाथाम्	अक्षेणिढ्वम्
अक्षेणिषि	अक्षेणिष्वहि	अक्षेणिष्महि

ऋण् धातु - आ + ऋण् + इष्ट / तनादिभ्यस्तथासोः सूत्र से इस् का लोप करके - आ + ऋण् + त / आटश्च से वृद्धि करके - आर्ण् + त।

अब अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति से अन्तिम अनुनासिक वर्ण का लोप होकर - आर् + त = आर्त।

इसी प्रकार - आ + ऋण् + इष्ठाः / तनादिभ्यस्तथासोः सूत्र से इस् का लोप करके - आ + ऋण् + थाः / आटश्च से वृद्धि करके - आर्ण् + थाः। अब अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति से अन्तिम अनुनासिक वर्ण का लोप करके - आर् + थाः = आर्थाः।

लोप आदि न होने पर आर्णिष्ट, आर्णिष्ठाः रूप बनते हैं।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

आर्त / आर्णिष्ट	आर्णिषाताम्	आर्णिषत
आर्थाः / आर्णिष्ठाः	आर्णिषाथाम्	आर्णिढ्वम्
आर्णिषि	आार्णिष्वहि	आर्णिष्महि

तृण् तथा घृण् धातु - पूर्ववत् तनादिभ्यस्तथासोः सूत्र से इस् का लोप होकर तथा अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति से अन्तिम अनुनासिक वर्ण का लोप होकर - अतृत, अतृथाः रूप बनते हैं। लोप आदि न होने पर पुगन्तलघूपधस्य च से उपधा को गुण करके अतर्णिष्ट /

अतर्णिष्ठाः रूप बनते है। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अतृत / अतर्णिष्ट	अतर्णिषाताम्	अतर्णिषत
अतृथाः / अतर्णिष्ठाः	अतर्णिषाथाम्	अतर्णिढ्वम्
अतर्णिषि	अतर्णिष्वहि	अतर्णिष्महि

ठीक इसी प्रकार घृण् धातु के भी रूप बनेंगे।

यह तनादिगण के ९ धातुओं के धातुरूप बनाने की विधि पूर्ण हुई। ये धातु उभयपदी हैं। इनके परस्मैपदी रूप बनाने की विधि परस्मैपद में देखें।

दीप्, जन्, बुध्, पूरी, तायृ, ओप्यायी धातु - ये धातु सेट् आत्मनेपदी हैं।

दीपजनबुधपूरीतायिप्यायिभ्योऽन्यतरस्याम् - इन धातुओं से लुङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में विकल्प से चिण् प्रत्यय होता है। चिण् प्रत्यय में च्, ण् की इत् संज्ञा करके, 'इ' शेष बचता है।

चिणो लुक् - चिण् से परे आने वाले लुङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन के 'त अर्थात् इष्ट' प्रत्यय का लोप हो जाता है।

अब इन धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनायें। इनमें 'बुध्' धातु अनिट् धातु है, अतः इसके रूप बनाने की प्रक्रिंया हम अनिट् प्रकरण में बतलायेंगे।

दीप्, जन्, पूरी, ताय्, ओप्यायी, धातु सेट् हैं, इसके रूप बनाने की प्रक्रिया हम यहाँ बतला रहे हैं - अदीप् + इष्ट / चिण् करके - अदीप् + चिण् + इष्ट / इष्ट का लोप करके - अदीप् + चिण् - अदीप् + इ = अदीपि।

चिण् न होने पर अदीपिष्ट बनेगा। पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

अदीपि / अदीपिष्ट	अदीपिषाताम्	अदीपिषत
अदीपिष्ठाः	अदीपिषाथाम्	अदीपिढ्वम्
अदीपिषि	अदीपिष्वहि	अदीपिष्महि

जन् धातु - ठीक इसी प्रकार -

अजनि / अजनिष्ट	अजनिषाताम्	अजनिषत
अजनिष्ठाः	अजनिषाथाम्	अजनिढ्वम्
अजनिषि	अजनिष्वहि	अजनिष्महि

इसी प्रकार ताय्, तथा प्याय् धातु के भी रूप बनाइये।

इन ९ धातुओं के अलावा जितने भी हलन्त सेट् आत्मनेपदी धातु बचें, उनके चार वर्ग बनाइये। इदुपध, उदुपध, ऋदुपध तथा शेष। इनके लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि बतला रहे हैं।

१. **इदुपध धातु - 'पुगन्तलघूपधस्य च'** सूत्र से इदुपध धातुओं की उपधा के लघु इ को गुण करके ए बनाइये - अ मिद् + इष्ट = अमेदिष्ट।

पुगन्तलघूपधस्य च - कित्, ङित्, से भिन्न, सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अङ्ग की उपधा के लघु इक् को गुण होता है अर्थात् उपधा के लघु इ को ए / लघु उ को ओ / लघु ऋ को अर् / होता है।

अमेदिष्ट	अमेदिषाताम्	अमेदिषत
अमेदिष्ठाः	अमेदिषाथाम्	अमेदिढ्वम्
अमेदिषि	अमेदिष्वहि	अमेदिष्महि

इसके अपवाद -

विज इट् - तुदादि गण के विज् धातु से परे आने वाले सारे सेट् प्रत्यय ङित्वत् माने जाते हैं।

ङित्वत् होने के कारण यहाँ इक् को गुण का निषेध होगा। अतः इसमें गुण किये बिना प्रत्यय सीधे जोड़ दिये जायेंगे।

यह विज् धातु आत्मनेपदी है। इसका प्रयोग उद् उपसर्ग के साथ होता है। यथा - उद् + विज् + इष्ट / गुणनिषेध होकर = उद्विजिष्ट।

इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

उद्विजिष्ट	उद्विजिषाताम्	उद्विजिषत
उद्विजिष्ठाः	उद्विजिषाथाम्	उद्विजिढ्वम्
उद्विजिषि	उद्विजिष्वहि	उद्विजिष्महि

उदुपध धातु - उदुपध धातुओं की उपधा के लघु उ को **पुगन्तलघूपधस्य च** सूत्र से गुण करके ओ बनाइये - अमुद् + इष्ट = अमोदिष्ट।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अमोदिष्ट	अमोदिषाताम्	अमोदिषत
अमोदिष्ठाः	अमोदिषाथाम्	अमोदिढ्वम्
अमोदिषि	अमोदिष्वहि	अमोदिष्महि

ऋदुपध धातु - ऋदुपध धातुओं की उपधा के लघु ऋ को **पुगन्तलघूपधस्य च** सूत्र से गुण करके अर् बनाइये - अ वृध् + इष्ट = अवर्धिष्ट।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अवर्धिष्ट	अवर्धिषाताम्	अवर्धिषत
अवर्धिष्ठाः	अवर्धिषाथाम्	अवर्धिढ्वम्
अवर्धिषि	अवर्धिष्वहि	अवर्धिष्महि

हमने जाना कि - उपधा के - लघु इ को ए, लघु उ को ओ, लघु ऋ को अर् होगा। ध्यान रहे कि यदि उपधा में दीर्घ स्वर हो, तब कदापि गुण न करें - अ शीक् + इष्ट = अशीकिष्ट।

शेष धातु - शेष धातुओं को कुछ मत कीजिये, क्योंकि न तो इनके अन्त में इक् है, न ही इनकी उपधा में लघु इक् है। यथा -

अभाषिष्ट	अभाषिषाताम्	अभाषिषत
अभाषिष्ठाः	अभाषिषाथाम्	अभाषिढ्वम्
अभाषिषि	अभाषिष्वहि	अभाषिष्महि

यह हलन्त सेट् आत्मनेपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने का विचार पूर्ण हुआ। अब अजन्त अनिट् आत्मनेपदी धातुओं का विचार करते हैं।

३. अजन्त अनिट् आत्मनेपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

लुङ् लकार के अनिट् सिच् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय

स्त	साताम्	सत
स्थाः	साथाम्	ध्वम्
सि	स्वहि	स्महि

अनिट् धातुओं के रूप बनाने के पूर्व हम ये चार विधियाँ पढ़ें -

सलोप विधि

झलो झलि - झल् के बाद आने वाले 'स्' का लोप होता है, झल् परे होने पर। अरिच् + स्त = अरिच् + त / अरिच् + स्थाः = अरिच् + थाः।

ह्रस्वादङ्गात् - ह्रस्वान्त अङ्ग के बाद आने वाले 'स्' का लोप होता है, झल् परे होने पर। अकृ + स्त = अकृ + त / अकृ + स्थाः = अकृ + थाः, आदि। अनिट् धातुओं के रूप बनाते समय इन सूत्रों का ध्यान अवश्य रखें।

षत्व विधि

अनै + सीत् = अनैषीत् / अहौ + सीत् = अहौषीत् / अध्यगी + स्त = अध्यगीष्ट / आदि में प्रत्यय का 'स्', 'ष्' बन गया है। यह क्यों ?

आदेशप्रत्यययोः - इण् प्रत्याहार तथा कवर्ग के बाद आने वाले, आदेश के सकार को तथा प्रत्यय के सकार को षकार आदेश होता है।

इण् प्रत्याहार का अर्थ है इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र्, ल, तथा कवर्ग का अर्थ है क्, ख्, ग्, घ्, ङ्।

तात्पर्य वस्तुत: यह है कि जिस भी प्रत्यय के 'स' के पूर्व 'अ, आ' के अलावा कोई भी स्वर होगा, अथवा ह, य, व, र्, ल तथा कवर्ग में से कोई व्यञ्जन होगा, उस प्रत्यय के स् को ष् बन जायेगा, चाहे वह सकार, सिच् प्रत्यय का हो, चाहे से, स्य, स्व, सि, आदि किसी भी प्रत्यय का क्यों न हो।

ष्टुत्व विधि

ष्टुना ष्टु: - सकार तवर्ग के स्थान पर षकार टवर्ग होता है, षकार टवर्ग के योग में। इसका तात्पर्य यह है कि -

स्, त्, थ्, द्, ध्, न्, के साथ ष्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, का योग होने पर स्, त्, थ्, द्, ध्, न्, के स्थान पर क्रमश: ष्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, आदेश होते हैं। यथा - स्त = ष्ट / स्था: = ष्ठा:।

अध्यगी + स्त / आदेशप्रत्यययो: से प्रत्यय के 'स्' को षत्व करके - अध्यगी + ष्त / ष्टुना ष्टु: से 'त' को ष्टुत्व करके - अध्यगी + ष्ट = अध्यगीष्ट।

अध्यगी + स्था: / आदेशप्रत्यययो: से प्रत्यय के 'स्' को षत्व करके - अध्यगी + ष्था: / ष्टुना ष्टु: से 'थ' को ष्टुत्व करके - अध्यगी + ष्ठा: = अध्यगीष्ठा:।

लुङ् लकार के लिये ढत्व विधि

इण: षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात् - जिस अङ्ग के अन्त में 'इण्' है, ऐसे इण्णन्त अङ्ग से परे आने वाले आशीर्लिङ् लकार के 'षीध्वम्' प्रत्यय के 'ध्' के स्थान पर, लुङ् लकार के ध्वम् प्रत्यय के 'ध्' के स्थान पर, तथा लिट् लकार के ध्वे प्रत्यय के 'ध्' के स्थान पर 'ढ्' आदेश होता है।

इसका तात्पर्य इस प्रकार है -

इण् प्रत्याहार का अर्थ है - इउण् / ऋऌक् / एओङ् / ऐऔच् / हयवरट् / लण् / अर्थात् - इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल।

१. अनिट् धातुओं के अन्त में जब 'इण्' हो, तब उनसे परे आने वाले लुङ् लकार के 'ध्वम्' के 'ध्' को 'इण: षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात्' सूत्र से नित्य 'ढ्' होता है। जैसे - अध्यगी + ध्वम् = अध्यगीढ्वम् / अकृ + ध्वम् = अकृढ्वम् / अने + ध्वम् = अनेढ्वम् / अच्यो + ध्वम् = अच्योढ्वम् / अगाह् + ध्वम् = अघाढ्वम् / अवह् + ध्वम् = अवोढ्वम् आदि।

२. जब अनिट् धातुओं के अन्त में इण् न हो, तब 'ध्वम्' के 'ध्' को 'ध्' ही रहता है। जैसे - अपच् + ध्वम् = अपग्ध्वम् / अयज् + ध्वम् = अयग्ध्वम् / अतुद् + ध्वम् = अतुद्ध्वम् आदि।

(**विशेष** - सेट् धातुओं से परे आने वाले लुङ् लकार के ध्वम् प्रत्यय के 'ध्' को नित्य 'ढ्' होता है। अत: सेट् धातुओं से लुङ् लकार में 'इढ्वम्' प्रत्यय ही लगाइये।)

इन सारी विधियों को बुद्धिस्थ करके ही अब अनिट् आत्मनेपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप इस क्रम से बनायें -

आकारान्त तथा एजन्त धातु / इकारान्त, ईकारान्त धातु / उकारान्त, ऊकारान्त धातु / ऋकारान्त, ॠकारान्त धातु।

आकारान्त तथा एजन्त अनिट् आत्मनेपदी धातु -

आदेच उपदेशेऽशिति - सारे एजन्त धातु अशित् प्रत्यय परे रहने पर आकारान्त हो जाते हैं। जैसे - दे - दा / दो - दा / धे - धा आदि। अत: आकारान्त तथा एजन्त धातुओं का विचार एक साथ करते हैं।

इन आकारान्त तथा एजन्त आत्मनेपदी धातुओं के रूप इस प्रकार बनाइये - धातु के अन्तिम 'आ' को कुछ मत कीजिये - अ मा + स्त = अमास्त। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अमास्त	अमासाताम्	अमासत
अमास्था:	अमासाथाम्	अमाध्वम्
अमासि	अमास्वहि	अमास्महि

इसके अपवाद -

१. **गाङ् धातु** - इसका प्रयोग अधि उपसर्ग के साथ होता है।

अभी हमने अतिदेश सूत्रों में **गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्** सूत्र पढ़ा है। इसके अनुसार गाङ् धातु से परे आने वाला सिच् प्रत्यय ङित्वत् होता है।

ङित्वत् होने से इस गा धातु के 'आ' को **घुमास्थागापाजहातिसां हलि** सूत्र से 'ई' हो जाता है। जैसे - अधि + गा + स्त - अधि + अगी + स्त / प्रत्यय के स् को **आदेशप्रत्यययो: सूत्र से** षत्व होकर - अधि + अगी + ष्त / ष्टुना ष्टु: से ष्टुत्व होकर - अधि + अगी + ष्ट = अध्यगीष्ट।

अध्यगी + साताम् को देखिये। यहाँ 'ई' के बाद आने वाले प्रत्यय के 'स' को 'आदेशप्रत्यययो:' सूत्र से 'ष' आदेश होकर अध्यगीषाताम् बनता है।

अध्यगी + ध्वम् को देखिये। यहाँ अङ्ग के अन्त में ई है उसके बाद

जो 'ध्' है वह लुङ् लकार का है अतः इसे 'इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात्' से 'ढ्' आदेश होकर अध्यगीढ्वम् बनता है।

गाङ् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अध्यगीष्ट	अध्यगीषाताम्	अध्यगीषत
अध्यगीष्ठाः	अध्यगीषाथाम्	अध्यगीढ्वम्
अध्यगीषि	अध्यगीष्वहि	अध्यगीष्महि

२. स्था धातु तथा घुसंज्ञक दा, धा धातु -

दाधाघ्वदाप् - आकारान्त तथा एजन्त धातुओं में से दाप्, दैप् को छोड़कर सारे दारूप तथा सारे धारूप धातुओं की अर्थात् देङ् - आत्मनेपदी, दो - परस्मैपदी, दाण् - परस्मैपदी, डुदाञ् उभयपदी, धेट् - परस्मैपदी, डुधाञ् - उभयपदी, इन धातुओं की 'घु' संज्ञा होती है।

स्थाघ्वोरिच्च - स्था धातु तथा घुसंज्ञक दा, धा धातुओं से परे आने वाला सिच् प्रत्यय कितवत् माना जाता है। साथ ही जब सिच् प्रत्यय कितवत् मान लिया जाता है, तब स्था तथा घुसंज्ञक दा, धा धातुओं के आ को 'इ' ऐसा आदेश भी हो जाता है - जैसे - अदा + स्त - अदि + स्त आदि।

ह्रस्वादङ्गात् - ह्रस्वान्त अङ्ग के बाद आने वाले 'स्' का लोप होता है, झल् परे होने पर। अदि + स्त - अदि + त आदि।

अदा	+	स्त	=	अदि	+	त	=	अदित
अदा	+	साताम्	=	अदि	+	साताम्	=	अदिषाताम्
अदा	+	सत	=	अदि	+	सत	=	अदिषत
अदा	+	स्थाः	=	अदि	+	थाः	=	अदिथाः
अदा	+	साथाम्	=	अदि	+	साथाम्	=	अदिषाथाम्
अदा	+	ध्वम्	=	अदि	+	ध्वम्	=	अदिढ्वम्
अदा	+	सि	=	अदि	+	सि	=	अदिषि
अदा	+	स्वहि	=	अदि	+	स्वहि	=	अदिष्वहि
अदा	+	स्महि	=	अदि	+	स्महि	=	अदिष्महि

आत्मनेपदी घुसंज्ञक 'दा' धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अदित	अदिषाताम्	अदिषत
अदिथाः	अदिषाथाम्	अदिढ्वम्
अदिषि	अदिष्वहि	अदिष्महि

इसी प्रकार आत्मनेपदी घुसंज्ञक 'धा' धातु के रूप बनाइये -

अधित	अधिषाताम्	अधिषत
अधिथाः	अधिषाथाम्	अधिढ्वम्
अधिषि	अधिष्वहि	अधिष्महि

स्था धातु 'आ' उपसर्ग के साथ आत्मनेपदी होता है। इसके रूप भी इसी प्रकार बनाइये।

आस्थित	आस्थिषाताम्	आस्थिषत
आस्थिथाः	आस्थिषाथाम्	आस्थिढ्वम्
आस्थिषि	आस्थिष्वहि	आस्थिष्महि

इकारान्त, ईकारान्त अनिट् आत्मनेपदी धातु - इनके अन्तिम इ, ई को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण कीजिये - अनी - स्त - अने + स्त / षत्व, ष्टुत्व करके = अनेष्ट।

अनी + ध्वम् - अने + ध्वम् - इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात् सूत्र से ढत्व करके = अनेढ्वम्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अनेष्ट	अनेषाताम्	अनेषत
अनेष्ठाः	अनेषाथाम्	अनेढ्वम्
अनेषि	अनेष्वहि	अनेष्महि

सारे इकारान्त, ईकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाइये।

इसके अपवाद - 'लीङ् धातु' - विभाषा लीयतेः - जब भी 'ली' धातु को गुण होकर 'ए' हो, तब उस लीङ् धातु के अन्त को विकल्प से 'आ' आदेश होता है। अली + स्त - अले + स्त - अला + स्त = अलास्त।

ला आदेश न होने पर - पूर्ववत् अलेष्ट ही बनेगा।

उकारान्त, ऊकारान्त अनिट् आत्मनेपदी धातु - इनके अन्तिम उ, ऊ को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से 'ओ' गुण कीजिये = अच्यु + स्त - अच्यो + स्त / षत्व, ष्टुत्व करके = अच्योष्ट।

अच्यु + ध्वम् - इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात् सूत्र से ढत्व करके = अच्योढ्वम्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अच्योष्ट	अच्योषाताम्	अच्योषत
अच्योष्ठाः	अच्योषाथाम्	अच्योढ्वम्
अच्योषि	अच्योष्वहि	अच्योष्महि

सारे उकारान्त, ऊकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाइये।

इसके अपवाद - कुङ् धातु -

कुङ् धातु कुटादिगण में आता है। अतः इससे परे आने वाला सिच् प्रत्यय 'गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्' सूत्र से ङिद्वत् माना जाता है।

अकु + स्त - ह्रस्वादङ्गात् से स् का लोप होकर = अकु + त / क्ङिति च से गुणनिषेध होकर = अकुत। इसी प्रकार अकु + स्थाः = अकुथाः।

सकारादि प्रत्ययों के 'स' को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से षत्व होकर - अकु + साताम् = अकुषाताम्।

अकु + ध्वम् - ध्वम् प्रत्यय के 'ध्' को इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात् सूत्र से ढत्व होकर - अकुढ्वम्। कु धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अकुत	अकुषाताम्	अकुषत
अकुथाः	अकुषाथाम्	अकुढ्वम्
अकुषि	अकुष्वहि	अकुष्महि

ऋकारान्त अनिट् आत्मनेपदी धातु -

अब हम ऋवर्णान्त अनिट् आत्मनेपदी धातुओं का विचार करें।

उश्च - अनिट् आत्मनेपदी ऋवर्णान्त धातुओं से परे आने वाले आत्मनेपदी झलादि लिङ्, सिच् प्रत्यय कित्वत् होते हैं।

ऐसे ऋकारान्त आत्मनेपदी धातु इस प्रकार हैं -

कृञ् डुकृञ् धृङ् धृञ् पृङ् भृञ् डुभृञ् मृङ् वृङ्
वृञ् स्तृ हृञ् = १२

चूँकि ये धातु भी ह्रस्वान्त हैं, और इनसे परे आने वाला 'सिच्' प्रत्यय कित्वत् है, अतः इनके रूप बिल्कुल 'कु' धातु के समान ही बनाइये -

अकृ + स्त = अकृत / अकृ + स्थाः = अकृथाः / अकृ + साताम् = अकृषाताम् / अकृ + ध्वम् = अकृढ्वम् आदि।

अकृत	अकृषाताम्	अकृषत
अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृढ्वम्
अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि

इसी प्रकार सारे अनिट् आत्मनेपदी ह्रस्व ऋकारान्त धातुओं के रूप बनाइये -

मृ -	अमृत / अमृथाः	हृ -	अहृत / अहृथाः
धृ -	अधृत / अधृथाः	भृ -	अभृत / अभृथाः
स्तृ -	अस्तृत / अस्तृथाः	वृ -	अवृत / अवृथाः

दृ - अदृत / अदृथाः पृ - अपृत / अपृथाः आदि।

यह अनिट् आत्मनेपदी प्रत्यय परे रहने पर सारे अजन्त धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने का विचार पूर्ण हुआ।

४. हलन्त अनिट् आत्मनेपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

२०९ - २१४ पृष्ठ पर बतलाई गई इडागम व्यवस्था को खोलकर सामने रख लें। इसमें हम पाते हैं कि यद्यपि हलन्त धातुओं में कुल १०२ धातु अनिट् हैं किन्तु इनमें से ४१ धातुओं से, हम सक् + सिच्, अङ्, चङ्, क्स आदि से बने हुए प्रत्यय लगा चुके हैं। अतः अब ६१ अनिट् हलन्त धातु ही बचे हैं।

उन बचे हुए ६१ अनिट् हलन्त धातुओं में से भी यदि परस्मैपदी धातुओं को अलग कर दें तो कुल ३६ धातु बचते हैं, जो या तो आत्मनेपदी हैं या उभयपदी हैं। ये ३६ धातु इस प्रकार हैं -

हलन्त आत्मनेपदी अनिट् धातु

पद् हद् विद् (दिवादिगण) विद् (रुधादिगण) मन् रभ् लभ्
रम् खिद् तिप् बुध् युध् स्वञ्ज् = १३

हलन्त उभयपदी अनिट् धातु

पच् यज् भज् वप् शप् नह् वह् रिच् विच् सिच्
निज् विज् छिद् भिद् क्षिप् लिप् मुच् युज् क्षुद् तुद्
रुध् रञ्ज् भ्रस्ज् = २३

इन ३६ धातुओं से, ये सिच् से बने हुए आत्मनेपदी अनिट् प्रत्यय लगेंगे।

हलन्त आत्मनेपदी वेट् धातु

अब इडागम व्यवस्था में देखिये कि इसमें २३ वेट् धातु भी हैं। इनमें से भी कुछ धातुओं से अङ्, क्स आदि से बने हुए प्रत्यय लग जाते हैं तथा कुछ परस्मैपदी हैं। इस प्रकार इनमें से कुल तीन वेट् धातु बचते हैं जिनसे एक बार सिंच् से बने हुए सेट् प्रत्यय लगेंगे तथा एक बार सिच् से बने हुए अनिट् प्रत्यय लगेंगे। ये तीन धातु इस प्रकार हैं - त्रपूष्, क्षमूष्, गाहू।

इस प्रकार कुल ३९ धातु ऐसे हैं, जिनसे हमें सिच् से बने हुए अनिट् आत्मनेपदी प्रत्यय लगाना है।

धातुपाठ के अन्त मे दिये हुए 'धातुओं के पद निर्णय' को देखिये। उसे पढ़कर हम जानते हैं, कि कुछ स्थितियों में परस्मैपदी धातु भी आत्मनेपदी हो जाते हैं। जैसे - आङ् उपसर्ग के साथ यम् धातु, सम् उपसर्ग के साथ गम् धातु

आत्मनेपदी हो जाते हैं। ऐसे अनिट् धातुओं से भी हम सिच् से बने हुए अनिट् प्रत्यय लगायेंगे।

अब हम इन अनिट् हलन्त धातुओं के तीन वर्ग बनाकर इनके लुङ् लकार के रूप बनायें।

१. गम्, हन्, यम् धातु / २.रम् मन् क्षम् धातु / ३. शेष धातु।

१. गम्, हन्, यम् धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

गम् धातु - 'समो गम्यृच्छिप्रच्छिस्वरत्यर्तिश्रुविदिभ्यः' सूत्र से, सम् उपसर्गपूर्वक अकर्मक गम् धातु, से आत्मनेपद होता है।

वा गमः - जब गम् धातु आत्मनेपदी होता है तब उससे परे आने वाला अनिट् सिच् प्रत्यय, विकल्प से कित्वत् मान लिया जाता है।

आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय के कित्वत् होने पर -

क्ङिति च - कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर इक् के स्थान पर गुण वृद्धि कार्य नहीं होते।

अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति - झलादि कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर, गम्, रम्, नम्, यम्, हन् धातु, दिवादिगण के मन् धातु तथा तनादिगण के तनु, षणु, क्षणु, क्षिणु, ऋणु, तृणु, घृणु, वनु मनु धातुओं के अनुनासिक का लोप होता है।

सम् + अ + गम् + स्त / 'वा गमः' सूत्र से आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय के कित्वत् होने से 'अनुदातोपदेश.' सूत्र से म् का लोप होकर - सम् + अ + ग + स्त / अब ह्रस्वादङ्गात् से स् का लोप होकर = समगत।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

समगत	समगसाताम्	समगसत
समगथाः	समगसाथाम्	समगध्वम्
समगसि	समगस्वहि	समगस्महि

आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय के कित्वत् न होने पर -

म् का लोप नहीं होगा - सम् + अ + गम् + स्त / 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से म् को अनुस्वार बनाकर - सम् + अ + गं + स्त = समगंस्त।

सम् + अ + गम् + ध्वम् / नश्चापदान्तस्य झलि सूत्र से 'म्' को अनुस्वार करके तथा अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः सूत्र से अनुस्वार को परसवर्ण करके = समगन्ध्वम्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

समगंस्त	समगंसाताम्	समगंसत

समगंस्थाः	समगंसाथाम्	समगन्ध्वम्
समगंसि	समगंस्वहि	समगंस्महि

यम् धातु - **'आङो यमहनः'** सूत्र से आङ् उपसर्गपूर्वक अकर्मक यम् धातु से आत्मनेपद होता है।

'उपाद्यमः स्वकरणे' सूत्र से उप उपसर्गपूर्वक यम् धातु से स्वकरण = पाणिग्रहण के अर्थ में आत्मनेपद होता है।

यमो गन्धने - यम् धातु का अर्थ जब सूचित करना हो तब उससे परे आने वाला अनिट् आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय, कितवत् माना जाता है।

विभाषोपयमने - जब उप + यम् धातु का अर्थ विवाह करना हो, तब उससे परे आने वाला अनिट् आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय, विकल्प से कित् माना जाता है। क्रमशः उदाहरण -

उद् + आ + अ + यम् + स्त / प्रत्यय के कित्वत् होने से, अनुदातोपदेश. सूत्र से म् का लोप होने पर - उद् + आ + अ + य + स्त / ह्रस्वादङ्गात् से स् का लोप होकर = उदायत।

उदायम्	+	स्त	=	उदाय	+	त	=	उदायत
उदायम्	+	साताम्	=	उदाय	+	साताम्	=	उदायसाताम्
उदायम्	+	सत	=	उदाय	+	सत	=	उदायसत
उदायम्	+	स्थाः	=	उदाय	+	थाः	=	उदायथाः
उदायम्	+	साथाम्	=	उदाय	+	साथाम्	=	उदायसाथाम्
उदायम्	+	ध्वम्	=	उदाय	+	ध्वम्	=	उदायध्वम्
उदायम्	+	सि	=	उदाय	+	सि	=	उदायसि
उदायम्	+	स्वहि	=	उदाय	+	स्वहि	=	उदायस्वहि
उदायम्	+	स्महि	=	उदाय	+	स्महि	=	उदायस्महि

पूरे रूप इस प्रकार बने -

उदायत	उदायसाताम्	उदायसत
उदायथाः	उदायसाथाम्	उदायध्वम्
उदायसि	उदायस्वहि	उदायस्महि

उप उपसर्गपूर्वक यम् धातु - यहाँ 'विभाषोपयमने' सूत्र से आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय विकल्प से कित्वत् होता है।

आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय के कित्वत् होने पर -

उप + अ + यम् + स्त / अनुदातोपदेश. सूत्र से म् का लोप होने पर - उप + अ + य + स्त / ह्रस्वादङ्गात् से स् का लोप होकर = उपायत।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

उपायत	उपायसाताम्	उपायसत
उपायथाः	उपायसाथाम्	उपायध्वम्
उपायसि	उपायस्वहि	उपायस्महि

आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय के कित्वत् न होने पर -

म् का लोप नहीं होगा - उप + अ + यम् + स्त / 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से म् को अनुस्वार बनाकर - उप + अ + यं + स्त = उपायंस्त।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

उपायंस्त	उपायंसाताम्	उपायंसत
उपायंस्थाः	उपायंसाथाम्	उपायन्ध्वम्
उपायंसि	उपायंस्वहि	उपायंस्महि

हन् धातु -'आङो यमहनः' सूत्र से आङ् उपसर्गपूर्वक अकर्मक हन् धातु से आत्मनेपद होता है।

आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् - लुङ् लकार के आत्मनेपदी प्रत्यय परे होने पर हन् धातु को विकल्प से 'वध' आदेश होता है।

हनः सिच् - जब हन् धातु आत्मनेपदी होता है तब उससे परे आने वाला अनिट् सिच् प्रत्यय, नित्य कित्वत् माना जाता है।

आङ् + अ + हन् + स्त / अनुदातोपदेश. सूत्र से न् का लोप होने पर - आ + अ + ह + स्त / ह्रस्वादङ्गात् से स् का लोप होकर = आहत।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

आहत	आहसाताम्	आहसत
आहथाः	आहसाथाम्	आहध्वम्
आहसि	आहस्वहि	आहस्महि

'वध' आदेश होने पर इससे सेट् प्रत्यय लगेंगे -

आवध + इष्ट - 'अतो लोपः' सूत्र से 'अ' का लोप होकर - आवध् + इष्ट = आवधिष्ट आदि।

ध्यान रहे कि 'आ' उपसर्ग न लगने पर यह हन् धातु परस्मैपदी ही रहता है - अवधीत्।

२. रम् मन् क्षम्, इन मकारान्त नकारान्त धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

अ + रम् + स्त / 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से म् को अनुस्वार

बनाकर - अ + रं + स्त = अरंस्त। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अरंस्त	अरंसाताम्	अरंसत
अरंस्थाः	अरंसाथाम्	अरन्ध्वम्
अरंसि	अरंस्वहि	अरंस्महि

इसी प्रकार मन् से अमंस्त और क्षम् से अक्षंस्त आदि बनाइये।

३. शेष अनिट् आत्मनेपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

सलोपविधि - पृष्ठ २२७ पर दिये हुए सलोप को देखें। तदनुसार 'झलो झलि' सूत्र से झल् के बाद आने वाले स् का लोप करें, झल् परे होने पर।

यथा - अरिच् + स्त - स् का लोप होकर = अरिच् + त / अरिच् + स्थाः - स् का लोप होकर = अरिच् + थाः।

अब देखिये कि 'स्' का लोप हो जाने से ये प्रत्यय तकारादि, थकारादि हो गये हैं। इस प्रकार अब ये प्रत्यय चार प्रकार के हो गये - सकारादि, तकारादि, थकारादि तथा धकारादि।

विशेष - अब हम जान चुके हैं कि जब ये स्त / स्थाः प्रत्यय झलन्त धातु के बाद आते हैं तब इनके आदि में स्थित सिच् के स् का **'झलो झलि'** सूत्र से लोप हो जाता है, और जब ये प्रत्यय ह्रस्वान्त अङ्ग के बाद आते हैं तब इनके आदि में स्थित 'स्' का **'ह्रस्वादङ्गात्'** सूत्र से लोप हो जाता है।

अब हम कुछ सूत्रों के अर्थों का पुनः स्मरण करें -

लिङ्सिचावात्मनेपदेषु - ऐसे अनिट् हलन्त धातु, जिनमें इक् के बाद हल् हो, उनसे परे आने वाले अनिट् सिच् प्रत्यय और अनिट् सीयुट् प्रत्यय कित्वत् माने जाते है। ऐसे धातु हम नीचे दे रहे हैं।

बुध्	-	आत्मनेपदी	छिद्	-	उभयपदी	रुध्	-	उभयपदी
तिप्	-	आत्मनेपदी	तुद्	-	उभयपदी	सिच्	-	उभयपदी
युध्	-	आत्मनेपदी	भिद्	-	उभयपदी	युज्	-	उभयपदी
खिद्	-	आत्मनेपदी	विद्	-	उभयपदी	क्षुद्	-	उभयपदी
विज्	-	आत्मनेपदी	लिप्	-	उभयपदी	भुज्	-	उभयपदी
रिच्	-	उभयपदी	विच्	-	उभयपदी	निज्	-	उभयपदी
भुज्	-	उभयपदी = १८						

अत्यावश्यक - इन १८ धातुओं से परे जब अनिट् आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय आये, तब उसे कित्वत् मानकर कित् प्रयुक्त कार्य कीजिये और इनके

अलावा जो यज्, स्वञ्ज्, वप् आदि अनिट् धातु आयें, उनसे परे आने वाले अनिट् आत्मनेपदी सिच् प्रत्यय को कित्वत् न मानकर कित् प्रयुक्त कार्य मत कीजिये।

क्ङिति च - कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर इक् के स्थान पर गुण वृद्धि कार्य नहीं होते। अरिच् + स्त = अरिच् + त।

यहाँ **'पुगन्तलघूपधस्य च'** सूत्र से प्राप्त होने वाले गुण का, **'क्ङिति च'** सूत्र से निषेध होता है।

चोः कुः - झल् परे होने पर अर्थात् तकारादि / थकारादि / धकारादि / सकारादि प्रत्यय परे होने पर तथा पदान्त में चवर्ग को कवर्ग होता है।

अरिच् + त - अरिक् + त = अरिक्त।

झलां जश् झशि - झल् के स्थान पर जश् होता है झश् परे होने पर। अतः यदि प्रत्यय धकारादि है तो उसके पूर्व का वर्ण जश् अर्थात् उसी वर्ग का तृतीयाक्षर बन जाता है। अरिक् + ध्वम् - अरिग् + ध्वम् = अरिग्ध्वम्।

खरि च - झल् को चर् होता है, खर् परे होने पर। अर्थात् यदि प्रत्यय, वर्ग के प्रथम या द्वितीय अक्षर से प्रारम्भ हो रहा हो, तो उसके पूर्व का वर्ण, अपने ही वर्ग का प्रथमाक्षर हो जाता है। अनिग् + त = अनिक्त।

अब हम इन धातुओं के लुङ् लकार के आत्मनेपदी रूप बनायें।

चकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर - झलो झलि से स् का लोप करके - अरिच् + स्त - अरिच् + त / चोः कुः सूत्र से चवर्ग को कवर्ग बनाकर - अरिक् + त = अरिक्त।

थकारादि प्रत्यय परे होने पर - ठीक इसी प्रकार - अरिच् + स्थाः = अरिक्थाः।

धकारादि प्रत्यय परे होने पर - अरिच् + ध्वम् / चोः कुः सूत्र से चवर्ग 'च्' को कवर्ग 'क्' बनाकर - अरिक् + ध्वम् / झलां जश् झशि से 'क्' को जश्त्व 'ग्' करके = अरिग्ध्वम्।

सकारादि प्रत्यय परे होने पर - अरिच् + साताम् - चोः कुः सूत्र से चवर्ग को कवर्ग बनाकर - अरिक् + साताम् / आदेशप्रत्यययोः से प्रत्यय के 'स' को 'ष' बनाकर - अरिक् + षाताम् / क् + ष् = क्ष् बनाकर अरिक्षाताम्।

इसी विधि से सारे सकारादि प्रत्ययों को जोड़िये। चकारान्त 'रिच्' धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अरिक्त	अरिक्षाताम्	अरिक्षत

अरिक्था:	अरिक्षाथाम्	अरिग्ध्वम्
अरिक्षि	अरिक्ष्वहि	अरिक्ष्महि

अनिट् चकारान्त आत्मनेपदी धातुओं में इसी विधि से सारे प्रत्ययों को जोड़कर - विच् - अविक्त, सिच् - असिक्त, पच् - अपक्त, आदि रूप बनाइये।

जकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर - अनिज् + स्त - झलो झलि सूत्र से स् का लोप करके - अनिज् + त / चो: कु: सूत्र से चवर्ग के तृतीयाक्षर 'ज्' को कवर्ग का तृतीयाक्षर 'ग्' बनाकर - अनिग् + त / खरि च सूत्र से 'ग्' को चर्त्व करके 'क्' बनाकर - अनिक् + त = अनिक्त।

थकारादि प्रत्यय परे होने पर - ठीक इसी प्रकार - अनिज् + स्था: = अनिक्था:।

धकारादि प्रत्यय परे होने पर - अनिज् + ध्वम् / चो: कु: सूत्र से चवर्ग के तृतीयाक्षर 'ज्' को कवर्ग का तृतीयाक्षर 'ग्' बनाकर - अनिग् + ध्वम् = अनिग्ध्वम्।

सकारादि प्रत्यय परे होने पर - अनिज् + साताम् / चो: कु: सूत्र से चवर्ग के तृतीयाक्षर 'ज्' को कवर्ग का तृतीयाक्षर 'ग्' बनाकर - अनिग् + साताम् / खरि च सूत्र से 'ग्' को चर्त्व करके 'क्' बनाकर - अनिक् + साताम् / आदेशप्रत्यययो: से प्रत्यय के 'स' को 'ष' बनाकर - अनिक् + षाताम् / क् + ष् = क्ष् बनाकर = अनिक्षाताम्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अनिक्त	अनिक्षाताम्	अनिक्षत
अनिक्था:	अनिक्षाथाम्	अनिग्ध्वम्
अनिक्षि	अनिक्ष्वहि	अनिक्ष्महि

अनिट् जकारान्त आत्मनेपदी धातुओं में इसी विधि से सारे प्रत्ययों को जोड़कर - भुज् - अभुक्त / युज् - अयुक्त / विज् - अविक्त / स्वञ्ज् - अस्वङ्क्त / आदि रूप बनाइये।

इसके अपवाद - यज् धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर - अयज् + स्त - झलो झलि सूत्र से स् का लोप करके - अयज् + त / व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां ष: सूत्र से 'ज्' को 'ष्' बनाकर - अयष् + त / ष्टुना ष्टु: से 'त' को ष्टुत्व करके = अयष्ट।

थकारादि प्रत्यय परे होने पर - ठीक इसी प्रकार - अयज् + स्था: = अयष्ठा:।

धकारादि प्रत्यय परे होने पर - अयज् + ध्वम् / व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयज-राजभ्राजच्छशां षः सूत्र से 'ज्' को 'ष्' बनाकर - अयष् + ध्वम् / झलां जश् झशि सूत्र से ष् को जश्त्व 'ड्' करके - अयड् + ध्वम् / ष्टुना ष्टुः से ष्टुत्व करके - अयड् + ढ्वम् = अयड्ढ्वम्।

सकारादि प्रत्यय परे होने पर - अयज् + साताम् / व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयज राजभ्राजच्छशां षः सूत्र से 'ज्' को 'ष्' बनाकर - अयष् + साताम् / षढोः कः सि सूत्र से 'ष्' को 'क्' बनाकर - अयक् + साताम् / आदेशप्रत्यययोः से प्रत्यय के 'स' को 'ष' बनाकर - अयक् + षाताम् / क् + ष् = क्ष् बनाकर = अयक्षाताम्। इसी विधि से सारे सकारादि प्रत्ययों को जोड़िये।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अयष्ट	अयक्षाताम्	अयक्षत
अयष्ठाः	अयक्षाथाम्	अयड्ध्वम्
अयक्षि	अयक्ष्वहि	अयक्ष्महि

भ्रस्ज् धातु -

भ्रस्जो रोपधयोः रमन्यतरस्याम् - आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर भ्रस्ज् धातु के 'र्' तथा उपधा के स् के स्थान पर, विकल्प से 'रम्' होता है।

भ्रस्ज् धातु के 'र्' तथा उपधा के स् के स्थान पर 'रम्' आदेश होकर भ् अ रम् ज् / रम् में अम् की इत् संज्ञा होकर - भ् अ र् ज् = भर्ज्।

रम् होकर भर्ज् बनने पर - अभर्ज् + स्त / झलो झलि सूत्र से स् का लोप करके - अभर्ज् + त / व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः सूत्र से 'ज्' को 'ष्' बनाकर - अभर्ष् + त / ष्टुना ष्टुः से 'त' को ष्टुत्व करके = अभर्ष्ट। शेष प्रक्रिया पूर्ववत्।

जकारान्त 'भ्रस्ज् - भर्ज्' धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अभर्ष्ट	अभर्क्षाताम्	अभर्क्षत
अभर्ष्ठाः	अभर्क्षाथाम्	अभड्ढ्र्वम्
अभर्क्षि	अभर्क्ष्वहि	अभर्क्ष्महि

रम् न होकर भ्रस्ज् ही रहने पर -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर - अभ्रस्ज् + स्त - झलो झलि से स् का लोप करके - अभ्रस्ज् + त / 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - अभ्रज् + त / व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयज-राजभ्राजच्छशां षः सूत्र से 'ज्' को 'ष्' बनाकर - अभ्रष् + त / ष्टुना ष्टुः से 'त' को ष्टुत्व करके = अभ्रष्ट।

थकारादि प्रत्यय परे होने पर - ठीक इसी प्रकार - अभ्रस्ज् + स्थाः - अभ्रष्ठाः ।

धकारादि प्रत्यय परे होने पर - व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां - षः सूत्र से 'ज्' को 'ष्' बनाकर - अभ्रज् + ध्वम् - अभ्रष् + ध्वम् / झलां जश् झशि से ष् को जश्त्व करके - अभ्रड् + ध्वम् / ष्टुना ष्टुः से 'त' को ष्टुत्व करके - अभ्रड् + ढ्वम् = अभ्रड्ढ्वम् ।

सकारादि प्रत्यय परे होने पर - अभ्रस्ज् + साताम् / 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - अभ्रज् + साताम् / व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः सूत्र से 'ज्' को 'ष्' बनाकर - अभ्रष् + साताम् / षढोः कः सि सूत्र से 'ढ्' को 'क्' बनाकर - अभ्रक् + साताम् / आदेशप्रत्यययोः से प्रत्यय के 'स' को 'ष' बनाकर - अभ्रक् + षाताम् / क् + ष् = क्ष् बनाकर = अभ्रक्षाताम् ।

जकारान्त 'भ्रस्ज् - भ्रज्' धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अभ्रष्ट	अभ्रक्षाताम्	अभ्रक्षत
अभ्रष्ठाः	अभ्रक्षाथाम्	अभ्रड्ढ्वम्
अभ्रक्षि	अभ्रक्ष्वहि	अभ्रक्ष्महि

दकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर - अतुद् + स्त / झलो झलि से स् का लोप करके - अतुद् + त - खरि च सूत्र से 'द्' को चर्त्व 'त्' करके - अतुत् + त = अतुत्त ।

थकारादि प्रत्यय परे होने पर - ठीक इसी प्रकार - अतुद् + स्थाः = अतुत्थाः ।

धकारादि प्रत्यय परे होने पर - अतुद् + ध्वम् / झलां जश् झशि से जश्त्व करके - अतुद्ध्वम् ।

सकारादि प्रत्यय परे होने पर - ठीक इसी प्रकार - अतुद् + साताम् = अतुत्साताम् । दकारान्त 'तुद्' धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अतुत्त	अतुत्साताम्	अतुत्सत
अतुत्थाः	अतुत्साथाम्	अतुद्ध्वम्
अतुत्सि	अतुत्स्वहि	अतुत्स्महि

अनिट् दकारान्त आत्मनेपदी धातुओं में इसी विधि से सारे प्रत्ययों को जोड़कर - विद् - अवित्त / छिद् - अच्छित्त / खिद् - अखित्त / भिद् - अभित्त / क्षुद् - अक्षुत्त / हद् - अहत्त आदि बनाइये ।

इसका अपवाद - दकारान्त पद् धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर -

चिण् ते पदः - पद् धातु से चिण् होता है, 'त' प्रत्यय परे होने पर। चिण् में च्, ण् की इत् संज्ञा करके इ शेष बचता है - अपद् + स्त / अपद् + चिण् + त / अपद् + इ + त / अब 'अत उपधायाः' से उपधा के अ को वृद्धि करके - अपाद् + इ + त -

चिणो लुक् - चिण् से परे आने वाले 'त' प्रत्यय का लोप होता है। अपाद् + इ + त / त का लोप करके = अपादि। शेष रूप पूर्ववत्।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अपादि	अपत्साताम्	अपत्सत
अपत्थाः	अपत्साथाम्	अपद्ध्वम्
अपत्सि	अपत्स्वहि	अपत्स्महि

धकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर - अयुध् + स्त / झलो झलि से स् का लोप करके - अयुध् + त / झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' बनाकर - अयुध् + ध / झलां जश् झशि सूत्र से 'ध्' को जश्त्व 'द्' करके - अयुद्ध।

थकारादि प्रत्यय परे होने पर - ठीक इसी प्रकार - अयुध् + स्थाः = अयुद्धाः।

धकारादि प्रत्यय परे होने पर - अयुध् + ध्वम् - झलां जश् झशि सूत्र से 'ध्' के स्थान पर, उसी तवर्ग का तृतीयाक्षर जश् 'द्' बनाकर - अयुद् + ध्वम् = अयुद्ध्वम्।

सकारादि प्रत्यय परे होने पर - अयुध् + साताम् / खरि च सूत्र से 'ध्' को चर्त्व करके अर्थात् उसी वर्ग का प्रथमाक्षर 'त्' बनाकर - अयुत् + साताम् = अयुत्साताम्। इसी विधि से सारे सकारादि प्रत्ययों को जोड़िये।

धकारान्त 'युध्' धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अयुद्ध	अयुत्साताम्	अयुत्सत
अयुद्धाः	अयुत्साथाम्	अयुद्ध्वम्
अयुत्सि	अयुत्स्वहि	अयुत्स्महि

अनिट् धकारान्त आत्मनेपदी धातुओं में इसी विधि से सारे प्रत्ययों को जोड़कर - रुध् - अरुद्ध आदि बनाइये।

इसका अपवाद - बुध् धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर - अबुध् + स्त - झलो झलि से स् का लोप करके - अबुध् + त -

दीपजनबुधपूरीतायिप्यायिभ्योऽन्यतरस्याम् - दीप्, जन्, बुध्, पूरी, तायृ, ओप्यायी, ये धातु आत्मनेपदी हैं। इनसे 'त' प्रत्यय परे होने पर विकल्प से चिण् प्रत्यय होता है तथा जो लुङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का 'त' प्रत्यय है उसका चिणो लुक् सूत्र से लोप हो जाता है।

अबुध् + त - अबुध् + चिण् + त / चिण् में च्, ण् की इत् संज्ञा करके इ शेष बचता है - अबुध् + इ + त /

अब 'पुगन्तलघूपधस्य च' से उपधा के 'उ' को गुण करके - अबोध् + इ + त / 'चिणो लुक्' सूत्र से त का लोप करके = अबोधि।

चिण् न होने पर - अबुध् + स्त / झलो झलि से स् का लोप करके - अबुध् + त / झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' बनाकर - अबुध् + ध / झलां जश् झशि सूत्र से 'ध्' को जश्त्व 'द्' करके - अबुद्ध।

थकारादि प्रत्यय परे होने पर - अबुध् + स्थाः / झलो झलि से स् का लोप करके - अबुध् + थाः / झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से प्रत्यय के 'थ' को 'ध' बनाकर - अबुध् + धाः / झलां जश् झशि सूत्र से 'ध्' को जश्त्व 'द्' करके - अबुद्धाः।

धकारादि प्रत्यय परे होने पर - अबुध् + ध्वम् / एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः सूत्र से 'ब' को उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर 'भ' बनाकर - अभुध् + ध्वम् / झलां जश् झशि सूत्र से 'ध्' के स्थान पर, उसी तवर्ग का तृतीयाक्षर जश् 'द्' बनाकर - अभुद् + ध्वम् = अभुद्ध्वम्।

सकारादि प्रत्यय परे होने पर - अबुध् + साताम् - सकारादि प्रत्यय परे होने पर इसके आदि में जो वर्ग का तृतीयाक्षर 'ब' है, उसे 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर 'भ' बना दीजिये। अभुध् + साताम् / अब अन्तिम 'ध्' को खरि च सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर 'त्' बनाइये। अभुत् + साताम् = अभुत्साताम्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अबोधि / अबुद्ध	अभुत्साताम्	अभुत्सत
अबुद्धाः	अभुत्साथाम्	अभुद्ध्वम्
अभुत्सि	अभुत्स्वहि	अभुत्स्महि

पकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर - अतिप् + स्त / झलो झलि से स्

का लोप करके - अतिप् + त / अब 'खरि च' सूत्र से चर्त्व करके 'प्' के स्थान पर 'प्' ही कीजिये - अतिप्त।

थकारादि प्रत्यय परे होने पर - ठीक इसी प्रकार - अतिप् + स्था: = अतिप्था:।

धकारादि प्रत्यय परे होने पर - अतिप् + ध्वम् - झलां जश् झशि सूत्र से 'प्' के स्थान पर, उसी तवर्ग का तृतीयाक्षर जश् 'ब्' बनाकर - अतिब्ध्वम्।

सकारादि प्रत्यय परे होने पर - अतिप् + साताम् / खरि च सूत्र से 'प्' को चर्त्व 'प्' करके - अतिप् + साताम् = अतिप्साताम्। इसी विधि से सारे सकारादि प्रत्ययों को जोड़िये। तकारान्त 'तिप्' धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने-

अतिप्त	अतिप्साताम्	अतिप्सत
अतिप्था:	अतिप्साथाम्	अतिब्ध्वम्
अतिप्सि	अतिप्स्वहि	अतिप्स्महि

अनिट् पकारान्त आत्मनेपदी धातुओं में इसी विधि से सारे प्रत्ययों को जोड़कर - शप् - अशप्त / लिप् - अलिप्त / वप् - अवप्त / क्षिप् - अक्षिप्त / त्रप् - अत्रप्त आदि बनाइये।

त्रप् धातु चूँकि वेट् है अत: इससे सेट् प्रत्यय लगाकर अत्रपिष्ट भी बनेगा।

भकारान्त धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर - अलभ् + स्त / झलो झलि से स् का लोप करके - अलभ् + त / झषस्तथोर्धोऽध: सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' बनाकर - अलभ् + ध / झलां जश् झशि सूत्र से 'भ्' को जश्त्व 'ब्' करके - अलब्ध।

थकारादि प्रत्यय परे होने पर - ठीक इसी प्रकार - अलभ् + स्था: = अलब्धा:।

धकारादि प्रत्यय परे होने पर - अलभ् + ध्वम् - झलां जश् झशि सूत्र से 'भ्' के स्थान पर, उसी तवर्ग का तृतीयाक्षर जश् 'ब्' बनाकर - अलब् + ध्वम् = अलब्ध्वम्।

सकारादि प्रत्यय परे होने पर - अलभ् + साताम् / खरि च सूत्र से 'भ्' को चर्त्व करके, उसी वर्ग का प्रथमाक्षर 'प्' बनाकर - अलप् + साताम् = अलप्साताम्।

इसी विधि से सारे सकारादि प्रत्ययों को जोड़िये। भकारान्त 'लभ्' धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अलब्ध	अलप्साताम्	अलप्सत
अलब्धाः	अलप्साथाम्	अलब्ध्वम्
अलप्सि	अलप्स्वहि	अलप्स्महि

अनिट् भकारान्त आत्मनेपदी धातुओं में इसी विधि से सारे प्रत्ययों को जोड़कर - रभ् - अरब्ध आदि बनाइये।

हकारान्त नह् धातु -

तकारादि, थकारादि प्रत्यय परे होने पर -

अनह् + स्त / झलो झलि से स् का लोप करके - अनह् + त /

नहो धः - नह् धातु के ह् को ध् आदेश होता है, झल् परे होने पर तथा पदान्त में। अनह् + त - अनध् + त / अब झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से प्रत्यय के त को ध बनाकर - अनध् + ध / ध् को झलां जश् झशि सूत्र से द् बनाकर - अनद् + ध = अनद्ध।

ठीक इसी प्रकार - अनह् + स्थाः = अनद्धाः /

अनह् + ध्वम् / नहो धः सूत्र से नह् धातु के ह् को ध् करके - अनध् + ध्वम् / ध् को झलां जश् झशि सूत्र से द् बनाकर - अनद् + ध्वम् = अनद्ध्वम्।

सकारादि प्रत्यय परे होने पर -

अनह् + साताम् / नहो धः सूत्र से नह् धातु के ह् को ध् आदेश करके - अनध् + साताम् / 'ध्' को खरि च सूत्र से 'त्' बनाकर - अनत् + साताम् = अनत्साताम्। हकारान्त नह् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अनद्ध	अनत्साताम्	अनत्सत
अनद्धाः	अनत्साथाम्	अनद्ध्वम्
अनत्सि	अनत्स्वहि	अनत्स्महि

वह् धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर -

अवह् + स्त - झलो झलि से स् का लोप करके - अवह् + त /

हो ढः - ह् को ढ् आदेश होता है झल् परे होने पर तथा पदान्त में। अवह् + त - अवढ् + त / झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से प्रत्यय के त को ध बनाकर - अवढ् + ध / प्रत्यय के ध को ष्टुना ष्टुः सूत्र से ढ बनाकर - अवढ् + ढ / ढो ढे लोपः सूत्र से पूर्व ढ् का लोप करके अव + ढ / सहिवहोरोदवर्णस्य सूत्र से वह् के अ को ओ बनाकर = अवोढ।

थकारादि प्रत्यय परे होने पर - ठीक अवोढ के समान - अवह् + था: = अवोढा: ।

धकारादि प्रत्यय परे होने पर - अवह् + ध्वम् / हो ढः सूत्र से ह् को ढ् बनाकर - अवढ् + ध्वम् / 'ध्' को 'ष्टुना ष्टु:' सूत्र से 'ढ्' बनाकर - अवढ् + ढ्वम् / ढो ढे लोपः सूत्र से पूर्व ढ् का लोप करके अव + ढ्वम् / सहिवहोरोदवर्णस्य सूत्र से वह् के 'अ' को 'ओ' बनाकर = अवोढ्वम् ।

सकारादि प्रत्यय परे होने पर - अवह् + साताम् / हो ढः से ह् को ढ् आदेश करके - अवढ् + साताम् - षढोः कः सि से ढ् को क् बनाकर - अवक् + साताम् / आदेशप्रत्यययोः से प्रत्यय के 'स' को 'ष' बनाकर - अवक् + षाताम् / क् + ष् = क्ष् बनाकर = अवक्षाताम् । पूरे रूप इस प्रकार बने-

अवोढ	अवक्षाताम्	अवक्षत
अवोढा:	अवक्षाथाम्	अवोढ्वम्
अवक्षि	अवक्ष्वहि	अवक्ष्महि

गाह् धातु -

तकारादि प्रत्यय परे होने पर - अगाह् + स्त / झलो झलि से स् का लोप करके - अगाह् + त / हो ढः सूत्र से ह् को ढ् बनाकर - अगाढ् + त / झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से प्रत्यय के त को ध बनाकर - अगाढ् + ध / प्रत्यय के ध् को ष्टुना ष्टुः सूत्र से ढ् बनाकर - अगाढ् + ढ / ढो ढे लोपः सूत्र से पूर्व ढ् का लोप करके अगा + ढ = अगाढ ।

थकारादि प्रत्यय परे होने पर - पूर्ववत् अगाह् + स्था: = अगाढा: ।

धकारादि प्रत्यय परे होने पर - अगाह् + ध्वम् / हो ढः सूत्र से ह् को ढ् बनाकर - अगाढ् + ध्वम् / 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से बश् को षष्भाव करके - अघाढ् + ध्वम् / 'ध्' को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'ढ्' बनाकर - अघाढ् + ढ्वम् / ढो ढे लोपः सूत्र से पूर्व ढ् का लोप करके अघा + ढ्वम् = अघाढ्वम् ।

सकारादि प्रत्यय परे होने पर - अगाह् + साताम् - 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से 'ग' को उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर 'घ' बनाकर - अघाढ् + साताम् / 'ढ्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - अघाक् + साताम्/ आदेशप्रत्यययोः से प्रत्यय के 'स' को 'ष' बनाकर - अघाक् + षाताम् / क् + ष् = क्ष् बनाकर = अघाक्षाताम् । पूरे रूप इस प्रकार बने-

अगाढ	अघाक्षाताम्	अघाक्षत

अगाढा:	अघाक्षाथाम्	अगाढ्वम्
अघाक्षि	अघाक्ष्वहि	अघाक्ष्महि

गाह् धातु चूँकि वेट् है अतः इससे सेट् प्रत्यय लगाकर अगाहिष्ट भी बनेगा। यह हलन्त अनिट् आत्मनेपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई। अब परस्मैपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनायें -

परस्मैपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

प्रत्यय लगाने के पूर्व यहाँ दो विचार करना अत्यावश्यक है।

१. **धातुओं का निर्णय** - २१४ से २१६ पृष्ठ पर देखकर यह स्पष्ट निर्धारण कीजिये, कि सिच् से बने हुए लुङ् लकार के परस्मैपदी प्रत्यय किन किन धातुओं से लगाये जायें।

२. **इडागम का निर्णय** - २०९ से २१४ पृष्ठ पर देखकर यह स्पष्ट निर्धारण कीजिये, कि किन धातुओं से सेट् प्रत्यय लगाये जायें, तथा किन ध ातुओं से अनिट् प्रत्यय लगाये जायें। परस्मैपदी प्रत्यय इस प्रकार हैं -

लुङ् लकार के सिच् बने हुए अनिट् परस्मैपदी प्रत्यय

सीत्	स्ताम्	सु:
सी:	स्तम्	स्त
सम्	स्व	स्म

लुङ् लकार के इट् + सिच् बने हुए सेट् परस्मैपदी प्रत्यय

ईत्	इष्टाम्	इषु:
ई:	इष्टम्	इष्ट
इषम्	इष्व	इष्म

अब हम परस्मैपदी धातुओं का इस प्रकार पाँच खण्डों में विभाजन करके, उनके लुङ् लकार के रूप बनायें -

१. कुटादि परस्मैपदी धातु।

२. कुटादि धातुओं से बचे हुए, अजन्त अनिट् परस्मैपदी धातु।

३. कुटादि धातुओं से बचे हुए, अजन्त सेट् परस्मैपदी धातु।

४. कुटादि धातुओं से बचे हुए, हलन्त अनिट् परस्मैपदी धातु।

५. कुटादि धातुओं से बचे हुए, हलन्त सेट् परस्मैपदी धातु।

अब हम क्रमशः इनके रूप बनायें -

१. कुटादि परस्मैपदी धातुओं के रूप बनाने की विधि

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् - गाङ् धातु से तथा तुदादिगण के अन्तर्गत जो कुट् से लेकर कुङ् तक ३६ धातुओं का कुटादिगण है, उस कुटादिगण में आने वाले धातुओं से परे आने वाला ञित् णित् से भिन्न प्रत्यय ङित्वत् मान लिया जाता है। कुटादि धातु इस प्रकार हैं -

कु	गु	ध्रु	नू	धू	कड्	डिप्	कुच्	गुज्
कुट्	घुट्	चुट्	छुट्	जुट्	तुट्	पुट्	मुट्	त्रुट्
लुट्	स्फुट्	कुड्	क्रुड्	गुड्	चुड्	तुड्	थुड्	पुड्
व्रुड्	स्थुड्	स्फुड्	गुर्	छुर्	स्फुर्	स्फुल्	कृड्	मृड्।

इनमें से कुङ् धातु आत्मनेपदी है, इसका विचार उकारान्त अनिट् आत्मनेपदी धातुओं में २३१ पृष्ठ पर किया जा चुका है।

यहाँ हम परस्मैपदी कुटादि धातुओं का विचार करें। उनमें से भी पहिले कुट् से गुर् तक, ३१ हलन्त कुटादि धातुओं के रूप बनायें। ये सारे धातु परस्मैपदी धातु हैं तथा सेट् हैं। अतः इनसे सेट् परस्मैपदी प्रत्यय लगाइये।

अकुट् + ईत् - गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् सूत्र से प्रत्यय के ङित् होने के कारण 'क्ङिति च' सूत्र से इनके 'इक्' को गुणनिषेध करके, इनमें बिना किसी परिवर्तन के प्रत्यय सीधे जोड़ दीजिये - अकुट् + ईत् = अकुटीत् / अकुट् + इष्टाम् = अकुटिष्टाम्, आदि। इनके पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

अकुटीत्	अकुटिष्टाम्	अकुटिषुः
अकुटीः	अकुटिष्टम्	अकुटिष्ट
अकुटिषम्	अकुटिष्व	अकुटिष्म

कुट् से गुर् तक, ३१ हलन्त धातुओं के रूप इसी प्रकार बनायें।

णू, धू धातु - अब कुटादिगण के णू, धू धातुओं के रूप बनाइये। 'णो नः' सूत्र से णू को नू बना लीजिये।

ऊकारान्त सारे के सारे धातु सेट् ही होते हैं, अतः इनसे भी सेट् प्रत्यय ही लगाइये - अनू + ईत् / प्रत्यय के ङित्वत् होने के कारण 'क्ङिति च' सूत्र इनके इक् को गुणनिषेध करके, 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से 'ऊ' को 'उवङ्' आदेश करके - अनू + ईत् - अनुव् + ईत् = अनुवीत्।

'नू' धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अनुवीत्	अनुविष्टाम्	अनुविषुः
अनुवीः	अनुविष्टम्	अनुविष्ट

अनुविषम्	अनुविष्व	अनुविष्म

'धू' धातु के पूरे रूप भी ठीक इसी प्रकार बने -

अधुवीत्	अधुविष्टाम्	अधुविषुः
अधुवीः	अधुविष्टम्	अधुविष्ट
अधुविषम्	अधुविष्व	अधुविष्म

गु, ध्रु धातु - ये धातु अनिट् हैं। इनमें अनिट् प्रत्यय ही लगाइये। प्रत्यय के 'स' को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से षत्व कीजिये।

अगु	+	सीत्	=	अगुषीत्
अगु	+	सुः	=	अगुषुः
अगु	+	सीः	=	अगुषीः
अगु	+	सम्	=	अगुषम्
अगु	+	स्व	=	अगुष्व
अगु	+	स्म	=	अगुष्म

अगु + स्ताम् - 'ह्रस्वादङ्गात्' सूत्र से प्रत्यय के स् का लोप करके - अगु + ताम् = अगुताम्। इसी प्रकार -

अगु	+	स्तम्	=	अगु	+	तम्	=	अगुतम्
अगु	+	स्त	=	अगु	+	त	=	अगुत

'गु' धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अगुषीत्	अगुताम्	अगुषुः
अगुषीः	अगुतम्	अगुत
अगुषम्	अगुष्व	अगुष्म

ठीक इसी प्रकार से ध्रु के रूप बनाइये।

अध्रुषीत्	अध्रुताम्	अध्रुषुः
अध्रुषीः	अध्रुतम्	अध्रुत
अध्रुषम्	अध्रुष्व	अध्रुष्म

हमने कुटादिगण के ३५ धातुओं के रूप बना लिये हैं।

२. कुटादिगण के धातुओं से बचे हुए, अजन्त अनिट् परस्मैपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

अजन्त परस्मैपदी धातुओं के रूप बनाने के लिये पहिले हम इस सूत्र का अर्थ अच्छी तरह बुद्धिस्थ कर लें -

सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु - इगन्त अङ्ग को वृद्धि होती है, सेट् तथा

अनिट् परस्मैपदसंज्ञक सिच् प्रत्यय परे होने पर।

वृद्धि होने का अर्थ है - इ, को ऐ हो जाना / उ को औ हो जाना / ऋ को आर् हो जाना।

इस सूत्र का उपयोग सेट्, अनिट् दोनों ही प्रकार के, अजन्त परस्मैपदी धातुओं में कीजिये। अब हम अजन्त अनिट् परस्मैपदी धातुओं के रूप बनायें-

आकारान्त परस्मैपदी धातुओं से चूँकि 'सक् + इट् + सिच्' से बने हुए प्रत्यय लगते हैं, अतः हम इकारान्त से प्रारम्भ कर रहे हैं।

इकारान्त अनिट् धातु - अ जि + सीत् / सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु से वृद्धि होकर - अ जै + सीत् / आदेशप्रत्यययोः से षत्व होकर - अ जै + षीत् = अजैषीत्। पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

अजैषीत्	अजैष्टाम्	अजैषुः
अजैषीः	अजैष्टम्	अजैष्ट
अजैषम्	अजैष्व	अजैष्म

ईकारान्त अनिट् धातु - अनी + सीत् / सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु से वृद्धि होकर - अनै + सीत्, आदेशप्रत्यययोः से षत्व होकर - अनै + षीत् = अनैषीत्। पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

अनैषीत्	अनैष्टाम्	अनैषुः
अनैषीः	अनैष्टम्	अनैष्ट
अनैषम्	अनैष्व	अनैष्म

उकारान्त अनिट् धातु - अ हु + सीत् / सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु से वृद्धि होकर - अहौ + सीत्, आदेशप्रत्यययोः से षत्व होकर - अहौ + षीत् = अहौषीत्। पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

अहौषीत्	अहौष्टाम्	अहौषुः
अहौषीः	अहौष्टम्	अहौष्ट
अहौषम्	अहौष्व	अहौष्म

(ध्यान रहे कि ऊकारान्त सारे धातु सेट् होते हैं।)

ऋकारान्त अनिट् धातु - अकृ + सीत् / सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु से वृद्धि होकर - अकार् + सीत् / आदेशप्रत्यययोः से षत्व होकर - अकार् + षीत् = अकार्षीत्। पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः
अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट

अकार्षम् अकार्ष्व अकार्ष्म

यह सारे अजन्त अनिट् परस्मैपदी धातुओं के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

३. कुटादिगण के धातुओं से बचे हुए, अजन्त सेट् परस्मैपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

आकारान्त सेट् धातु - आकारान्त धातुओं में, केवल एक 'दरिद्रा' धातु अनेकाच् होने से सेट् है। दरिद्रा + ईत् -

दरिद्रातेरार्धधातुके विवक्षिते आल्लोपो वाच्यः - दरिद्रा धातु से आर्धधातुक प्रत्यय विवक्षित होने पर दरिद्रा के 'आ' का लोप होता है।

लुङि वा - लुङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर यह लोप विकल्प से होता है। अदरिद्रा + ईत् - अदरिद्र् + ईत् = अदरिद्रीत्। इसी प्रकार शेष रूप बनाइये।

दरिद्रा के 'आ' का लोप होने पर पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

अदरिद्रीत्	अदरिद्रिष्टाम्	अदरिद्रिषुः
अदरिद्रीः	अदरिद्रिष्टम्	अदरिद्रिष्ट
अदरिद्रिषम्	अदरिद्रिष्व	अदरिद्रिष्म

दरिद्रा के 'आ' का लोप न होने पर -

'सक् + इट् + सिच्' से बने हुए प्रत्यय लगते हैं। अदरिद्रा + सीत् - अदरिद्रा + सीत् = अदरिद्रासीत्। इसी प्रकार शेष रूप बनाइये।

अदरिद्रासीत्	अदरिद्रासिष्टाम्	अदरिद्रासिषुः
अदरिद्रासीः	अदरिद्रासिष्टम्	अदरिद्रासिष्ट
अदरिद्रासिषम्	अदरिद्रासिष्व	अदरिद्रासिष्म

इकारान्त सेट् धातु - इकारान्त धातुओं में, केवल श्वि, श्रि, ये दो धातु ही सेट् होते हैं। इनमें से श्रि धातु से 'चङ् से बने हुए प्रत्यय' लगाये जाते हैं, जो कि बतलाये जा चुके हैं। श्वि धातु बतला रहे हैं।

श्वि धातु - ध्यान रहे कि श्वि धातु से 'अङ् से बने हुए प्रत्यय', 'चङ् से बने हुए प्रत्यय' तथा 'सिच् से बने हुए प्रत्यय' लगते हैं।

अङ् लगाकर हम अश्वत् बना चुके हैं। चङ् लगाकर अण्यन्त श्वि धातु से अशिश्वियत् बना चुके हैं तथा ण्यन्त श्वि धातु से अशिश्वयत् बना चुके हैं। अब सेट् सिच् प्रत्यय लगाकर रूप बनायें।

ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम् - हकारान्त, मकारान्त यकारान्त,

क्षण्, श्वस्, जागृ, ण्यन्त श्वि और एदित् धातुओं के अच् को वृद्धि नहीं होती है, इडादि परस्मैपद संज्ञक सिच् प्रत्यय परे होने पर।

अतः इसे वृद्धि न होकर सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण होता है। श्वि - अश्वि + ईत् / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - अश्वे + ईत्। एचोऽयवायावः से अय् आदेश करके - अश्वयीत्।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अश्वयीत्	अश्वयिष्टाम्	अश्वयिषुः
अश्वयीः	अश्वयिष्टम्	अश्वयिष्ट
अश्वयिषम्	अश्वयिष्व	अश्वयिष्म

उकारान्त सेट् धातु - नु - अनु + ईत् / 'सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु' सूत्र से वृद्धि करके - अनौ + ईत् / अब एचोऽयवायावः सूत्र से आव् आदेश करके - अनाव् + ईत् = अनावीत्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अनावीत्	अनाविष्टाम्	अनाविषुः
अनावीः	अनाविष्टम्	अनाविष्ट
अनाविषम्	अनाविष्व	अनाविष्म

इसके अपवाद -

ऊर्णु धातु - इसके तीन प्रकार के रूप बनते हैं। हमने अतिदेश सूत्रों में **'विभाषोर्णोः'** सूत्र पढ़ा है। इसके अनुसार ऊर्णु धातु से परे आने वाला इडादि प्रत्यय ङित्वत् होता है।

सारे सेट् परस्मैपदी प्रत्यय 'सिच्' से बने हुए हैं,। 'सिच्' से बने हुए होने के कारण, ये प्रत्यय **'विभाषोर्णोः'** सूत्र से ङित्वत् हो जाते हैं।

ङित् होने का फल यह होता है कि 'क्ङिति च' सूत्र से इगन्त अङ्ग को गुण का निषेध हो जाता है।

जब गुणनिषेध हो जाता है तब अजादि प्रत्यय परे होने पर 'अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से अङ्ग के अन्तिम इ, ई को इयङ् तथा उ, ऊ को उवङ् आदेश होते है।

ऊर्णु + ईत् / 'अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से उवङ् आदेश करके - ऊर्णुव् + ईत् ।

यह धातु अजादि है अतः इसे अट् का आगम न होकर आडजादीनाम् सूत्र से आट् का आगम होता है। आ + ऊर्णुव् + ईत् । अब आटश्च सूत्र से वृद्धि करके - और्णुव् + ईत् = और्णुवीत्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

और्णुवीत्	और्णुविष्टाम्	और्णुविषुः
और्णुवीः	और्णुविष्टम्	और्णुविष्ट
और्णुविषम्	और्णुविष्व	और्णुविष्म

ऊर्णोतेर्विभाषा - इडादि परस्मैपदसंज्ञक सिच् प्रत्यय परे होने पर, ऊर्णु धातु को विकल्प से गुण और वृद्धि होते हैं। अतः इसे एक बार गुण होगा तथा एक बार वृद्धि भी होगी।

गुण होने पर - आ + ऊर्णु + ईत् / गुण करके - आ + ऊर्णो + ईत् / एचोऽयवायावः से अव् आदेश करके - आ + ऊर्णव् + ईत् । अब आटश्च सूत्र से आ + ऊ को वृद्धि करके और्णवीत्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

और्णवीत्	और्णविष्टाम्	और्णविषुः
और्णवीः	और्णविष्टम्	और्णविष्ट
और्णविषम्	और्णविष्व	और्णविष्म

वृद्धि होने पर - आ + ऊर्णु + ईत्। वृद्धि करके - आ + ऊर्णौ + ईत् / एचोऽयवायावः से आव् आदेश करके - आ + ऊर्णाव् + ईत् । अब आटश्च सूत्र से आ + ऊ को वृद्धि करके और्णावीत्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

और्णावीत्	और्णाविष्टाम्	और्णाविषुः
और्णावीः	और्णाविष्टम्	और्णाविष्ट
और्णाविषम्	और्णाविष्व	और्णाविष्म

इस प्रकार ऊर्णु के रूप तीन प्रकार से बनते हैं। गुण करके, वृद्धि करके, तथा उवङ् करके।

ऊकारान्त सेट् धातु - पू - अपू + ईत् / 'सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु' सूत्र से वृद्धि करके - अपौ + ईत् / अब एचोऽयवायावः सूत्र से आव् आदेश करके - अपाव् + ईत् = अपावीत्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अपावीत्	अपाविष्टाम्	अपाविषुः
अपावीः	अपाविष्टम्	अपाविष्ट
अपाविषम्	अपाविष्व	अपाविष्म

ऋकारान्त सेट् धातु - वृञ् - अवृ + ईत् / 'सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु' सूत्र से वृद्धि करके - अवार् + ईत् = अवारीत्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अवारीत्	अवारिष्टाम्	अवारिषुः

अवारी:	अवारिष्टम्	अवारिष्ट
अवारिषम्	अवारिष्व	अवारिष्म

इसके अपवाद - जागृ धातु -

ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम् - हकारान्त, मकारान्त यकारान्त, क्षण्, श्वस्, जागृ, ण्यन्त श्वि और एदित् धातुओं के अच् को वृद्धि नहीं होती है, इडादि परस्मैपद संज्ञक सिच् प्रत्यय परे होने पर।

अतः इसे वृद्धि न होकर सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण ही होता है। जागृ - अजागृ + ईत् - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - अजागर् + ईत् = अजागरीत्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अजागरीत्	अजागरिष्टाम्	अजागरिषुः
अजागरीः	अजागरिष्टम्	अजागरिष्ट
अजागरिषम्	अजागरिष्व	अजागरिष्म

ॠकारान्त सेट् धातु - जॄ - अजॄ + ईत् / 'सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु' सूत्र से वृद्धि करके - अजार् + ईत् = अजारीत्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अजारीत्	अजारिष्टाम्	अजारिषुः
अजारीः	अजारिष्टम्	अजारिष्ट
अजारिषम्	अजारिष्व	अजारिष्म

यह सारे अजन्त परस्मैपदी धातुओं में सिच् से बने हुए प्रत्यय लगाकर, लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

४. कुटादि धातुओं से बचे हुए हलन्त अनिट् परस्मैपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

हलन्त धातुओं के रूप बनाने के पहिले अङ्गकार्यों का विचार कीजिये-

अङ्गकार्य

परस्मैपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये अष्टाध्यायी में ७.२.१ से लेकर ७.२.७ तक, सात सूत्र हैं। इनमें से दो सूत्र हम अजन्त धातुओं में पढ़ चुके हैं, तथापि तारतम्य के लिये यहाँ उन्हें भी दे रहे हैं, ताकि इन्हें एक साथ याद किया जा सके।

इनके अर्थ यहीं बुद्धिस्थ कर लें

१. **सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु** - इगन्त अङ्ग को वृद्धि होती है परस्मैपद संज्ञक सिच् प्रत्यय परे होने पर। वृद्धि होने का अर्थ है - इ, को ऐ हो जाना / उ को औ हो जाना / ऋ को आर् हो जाना।

इस सूत्र का उपयोग सेट्, अनिट् दोनों ही प्रकार के अजन्त परस्मैपदी धातुओं में कीजिये।

२. **अतो ल्रान्तस्य** - लान्त, रान्त धातुओं के लघु 'अ' को वृद्धि होती है, परस्मैपद संज्ञक सिच् प्रत्यय परे होने पर।

३. **वदव्रजहलन्तस्याचः** - वद्, व्रज् तथा हलन्त धातुओं के अच् को वृद्धि होती है, परस्मैपदसंज्ञक सिच् प्रत्यय परे होने पर।

इस सूत्र का उपयोग वद्, व्रज्, इन दो सेट् हलन्त परस्मैपदी धातु तथा सारे अनिट् हलन्त परस्मैपदी धातुओं में कीजिये।

४. **नेटि** - हलन्त सेट् धातुओं के अच् को वृद्धि न होकर पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण होता है, इडादि परस्मैपद संज्ञक सिच् प्रत्यय परे होने पर।

इस सूत्र का उपयोग सेट् हलन्त परस्मैपदी धातुओं में कीजिये।

५.**ह्मयन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम्** - हकारान्त, मकारान्त यकारान्त, क्षण्, श्वस्, जागृ, ण्यन्त श्वि और एदित् धातुओं के अच् को वृद्धि नहीं होती है, इडादि परस्मैपद संज्ञक सिच् प्रत्यय परे होने पर।

६. **ऊर्णोतेर्विभाषा** - ऊर्णु धातु को विकल्प से वृद्धि होती है, इडादि परस्मैपद संज्ञक सिच् प्रत्यय परे होने पर।

७. **अतो हलादेर्लघोः** - हलादि धातुओं के लघु अकार को विकल्प से वृद्धि होती है, इडादि परस्मैपद संज्ञक सिच् प्रत्यय परे होने पर।

इस सूत्र का उपयोग सेट् हलन्त परस्मैपदी धातुओं में कीजिये।

अब हम अनिट् हलन्त परस्मैपदी धातुओं के रूप बनायें -

जिन अनिट् हलन्त धातुओं में लुङ् लकार के सिच् से बने हुये अनिट् परस्मैपदी प्रत्यय लगाना है, वे धातु इस प्रकार हैं -

हलन्त अनिट् परस्मैपदी धातु

त्यज्	तप्	स्वप्	यभ्	वस्	दह्	भुज्	रुज्
नुद्	छुप्	तृप्	दृप्	सृज्	दृश्	मृश्	स्पृश्
कृष्	प्रच्छ्	भञ्ज्	सञ्ज्	मस्ज्	स्कन्द्	बन्ध्	दंश् = २४

हलन्त उभयपदी अनिट् धातु

पच्	भज्	यज्	वप्	शप्	नह्	वह्	रिच्	विच्	निज्
विज्	छिद्	भिद्	क्षिप्	युज्	क्षुद्	तुद्	रुध्	रञ्ज्	भ्रस्ज् = २०

हलन्त वेट् धातु

तृप्, दृप्, से एक पक्ष में सिच् से बने हुए अनिट् प्रत्यय लगेंगे। एक पक्ष में सिच् से बने हुए सेट् प्रत्यय लगेंगे, एक पक्ष में अङ् प्रत्यय लगेंगे।

निर् + कुष् - इससे इडागम होने पर सिच् से बने हुए प्रत्यय लगेंगे। इडागम न होने पर क्स से बने हुए प्रत्यय लगेंगे।

अक्षू, तक्षू, त्वक्षू, अशू, तृन्हू, षिधू, गुपू, ओव्रश्चू। इन आठ धातुओं से एक पक्ष में सिच् से बने हुए अनिट् प्रत्यय लगेंगे। एक पक्ष में सिच् से बने हुए सेट् प्रत्यय लगेंगे।

अब इनमें सिच् से बने हुए अनिट् परस्मैपदी प्रत्यय लगाकर इनके रूप बनायें -

प्रत्यय के स् का लोप

झलो झलि - झल् से परे आने वाले 'स्' का लोप होता है, झल् परे होने पर। तात्पर्य यह है कि जैसे आत्मनेपद के स्त, स्थाः, प्रत्ययों के स् का लोप किया था, उसी प्रकार झल् से परे आने वाले, परस्मैपद के स्ताम्, स्तम्, स्त, प्रत्ययों के स् का लोप हो जाता है।

अपच्	+	स्ताम्	=	अपच्	+	ताम्
अपच्	+	स्तम्	=	अपच्	+	तम्
अपच्	+	स्त	=	अपच्	+	त, आदि।

अब देखिये कि परस्मैपद के स्त, स्तम्, स्ताम्, ये ३ प्रत्यय तकारादि हो गये हैं। शेष सीत्, सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, ये ६ प्रत्यय सकारादि ही हैं।

इस प्रकार प्रत्ययों के सकारादि प्रत्यय तथा तकारादि प्रत्यय, ऐसे दो वर्ग करके, अब हम हलन्त अनिट् धातुओं के रूप क्रमशः बनायें।

ध्यान रहे कि हम, पहिले अङ्गकार्य करें, उसके बाद, स्त, स्तम्, स्ताम्, प्रत्ययों के 'स्' का लोप करें। उसके बाद सन्धि करके रूप बना लें।

अनिट् चकारान्त, पच्, रिच्, विच् धातु -

सकारादि प्रत्यय परे होने पर -

अपच् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अपाच् + सीत् / चोःकुः से कुत्व करके - अपाक् + सीत् / प्रत्यय के 'स्' को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से षत्व करके - अपाक् + षीत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाकर = अपाक्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

तकारादि प्रत्यय परे होने पर -

अपच् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अपाच् + स्ताम / झलो झलि से स् का लोप करके - अपाच् + ताम् / चोःकुः से कुत्व करके - अपाक् + ताम् = अपाक्ताम्।

इसी प्रकार - अपच् + स्तम् = अपाक्तम् / अपच् + स्त = अपाक्त / बनाइये। पच् के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अपाक्षीत्	अपाक्ताम्	अपाक्षुः
अपाक्षीः	अपाक्तम्	अपाक्त
अपाक्षम्	अपाक्ष्व	अपाक्ष्म

रिच्, विच्, धातु उभयपदी हैं। परस्मैपद में इन धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाइये -

अरिच्	+	सीत्	-	अरैच्	+	सीत्	-	अरैक्षीत्
अविच्	+	सीत्	-	अवैच्	+	सीत्	-	अवैक्षीत्

इनके आत्मनेदी रूप बनाने की प्रक्रिया, आत्मनेपद में बतलाई जा चुकी है। उसे वहीं देखें।

इसके अपवाद - वेट् व्रश्च् धातु - इससे, सेट् / वेट्, दोनों ही प्रत्यय लग सकते हैं -

इडागम न होने पर - सकारादि प्रत्यय परे होने पर -

अव्रश्च् + सीत् - वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अव्राश्च् + सीत् / 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - अव्राच् + सीत् / अब अन्त में आने वाले 'च्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयज-राजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अव्राष् + सीत् / 'अब 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - अव्राक् + सीत् / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अव्राक् + षीत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाकर = अव्राक्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

तकारादि प्रत्यय परे होने पर -

अव्रश्च् + स्ताम् - वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अव्राश्च् + स्ताम् / 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - अव्राच् + स्ताम् / अब अन्त में आने वाले 'च्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अव्राष् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अव्राष् + ताम् / 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'त' को ष्टुत्व करके - अव्राष् + टाम् = अव्राष्टाम्।

इसी प्रकार - अव्रश्च् + स्तम् = अव्राष्टम् / अव्रश्च् + स्त = अव्राष्ट / बनाइये।

ध्यान दें कि इडागम होने पर - अव्रश्च् + ईत् = अव्रश्चीत् आदि रूप बनेंगे। पूरे रूप इस प्रकार बने -

इडागम न होने पर			**इडागम होने पर**		
अव्राक्षीत्	अव्राष्टाम्	अव्राक्षुः	अव्रश्चीत्	अव्रश्चिष्टाम्	अव्रश्चिषुः
अव्राक्षीः	अव्राष्टम्	अव्राष्ट	अव्रश्चीः	अव्रश्चिष्टम्	अव्रश्चिष्ट
अव्राक्षम्	अव्राक्ष्व	अव्राक्ष्म	अव्रश्चिषम्	अव्रश्चिष्व	अव्रश्चिष्म

अनिट् छकारान्त प्रच्छ् धातु -

सकारादि प्रत्यय परे होने पर - अप्रच्छ् + सीत् - वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अप्राच्छ् + सीत् / अब अन्त में आने वाले 'च्छ्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अप्राष् + सीत् / 'अब 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - अप्राक् + सीत् / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अप्राक् + षीत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाकर = अप्राक्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

तकारादि प्रत्यय परे होने पर - अप्रच्छ् + स्ताम् - वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अप्राच्छ् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अप्राच्छ् + ताम् / अब अन्त में आने वाले 'च्छ्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अप्राष् + स्ताम् / 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'त' को ष्टुत्व करके - अप्राष् + टाम् = अप्राष्टाम्।

इसी प्रकार - अप्रच्छ् + स्तम् = अप्राष्टम् / अप्रच्छ् + स्त = अप्राष्ट / बनाइये। **पूरे रूप इस प्रकार बने -**

अप्राक्षीत्	अप्राष्टाम्	अप्राक्षुः
अप्राक्षीः	अप्राष्टम्	अप्राष्ट
अप्राक्षम्	अप्राक्ष्व	अप्राक्ष्म

अनिट् जकारान्त धातु -

सकारादि प्रत्यय परे होने पर - अत्यज् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अत्याज् + सीत् - चोःकुः से कुत्व करके - अत्याग् + सीत् / 'खरि च' सूत्र से 'ग्' को चर्त्व करके - अत्याक् + सीत् / प्रत्यय के 'स्' को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से षत्व करके - अत्याक् + षीत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाकर = अत्याक्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

तकारादि प्रत्यय परे होने पर - अत्यज् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अत्याज् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अत्याज् + ताम् / चोःकुः से कुत्व करके - अत्याग् + ताम् / 'खरि च' सूत्र से 'ग्' को चर्त्व करके - अत्याक् + ताम् = अत्याक्ताम्।

इसी प्रकार - अत्यज् + स्तम् = अत्याक्तम् / अत्यज् + स्त = अत्याक्त बनाइये। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अत्याक्षीत्	अत्याक्ताम्	अत्याक्षुः
अत्याक्षीः	अत्याक्तम्	अत्याक्त
अत्याक्षम्	अत्याक्ष्व	अत्याक्ष्म

इसी प्रकार सारे जकारान्त अनिट् परमैपदी धातुओं के रूप बनाइये-

अयुज्	+	सीत्	-	अयौज्	+	सीत्	-	अयौक्षीत्
अविज्	+	सीत्	-	अवैज्	+	सीत्	-	अवैक्षीत्
अनिज्	+	सीत्	-	अनैज्	+	सीत्	-	अनैक्षीत्
अरुज्	+	सीत्	-	अरौज्	+	सीत्	-	अरौक्षीत्
अभुज्	+	सीत्	-	अभौज्	+	सीत्	-	अभौक्षीत्
अयज्	+	सीत्	-	अयज्	+	सीत्	-	अयाक्षीत्
अभज्	+	सीत्	-	अभज्	+	सीत्	-	अभाक्षीत्
असञ्ज्	+	सीत्	-	असाञ्ज्	+	सीत्	-	असाङ्क्षीत्
अभञ्ज्	+	सीत्	-	अभाञ्ज्	+	सीत्	-	अभाङ्क्षीत्

अरञ्ज् + सीत् - अराञ्ज् + सीत् - अराङ्क्षीत्

इसके अपवाद -

वेट् मृज् धातु - इससे, सेट् / अनिट्, दोनों ही प्रत्यय लग सकते हैं। इडागम न होने पर, वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके, इसके रूप बिल्कुल ऊपर कहे गये, छकारान्त 'प्रच्छ्' धातु के समान ही बनाइये।

इडागम होने पर, इसे 'मृजेर्वृद्धिः' सूत्र से वृद्धि कीजिये।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

इडागम न होने पर			इडागम होने पर		
अमार्क्षीत्	अमार्ष्टाम्	अमार्क्षुः	अमार्जीत्	अमार्जिष्टाम्	अमार्जिषुः
अमार्क्षीः	अमार्ष्टम्	अमार्ष्ट	अमार्जीः	अमार्जिष्टम्	अमार्जिष्ट
अमार्क्षम्	अमार्क्ष्व	अमार्क्ष्म	अमार्जिषम्	अमार्जिष्व	अमार्जिष्म

अनिट् मज्ज् धातु - मस्जिनशोर्झलि - मस्ज् तथा नश् धातु को झलादि प्रत्यय अर्थात् अनिट् 'सिच्' प्रत्यय, परे होने पर नुम् का आगम होता है।

विशेष - इनमें से नश् धातु को होने वाला नुम् 'मिदचोऽन्त्यात्परः' सूत्र से अन्तिम अच् के बाद में होता है, किन्तु मस्ज् धातु को होने वाला नुम् 'मस्जेरन्त्यात्पूर्वो नुम् वाच्यः' इस वार्तिक से अन्तिम वर्ण के पूर्व में होता है।

अमस्ज् + सीत् - मस्जिनशोर्झलि से नुमागम करके - अमस्न्ज् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अमास्न्ज् + सीत् / स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - अमान्ज् + सीत् / चोःकुः से कुत्व करके - अमान्ग् + सीत् / 'खरि च' सूत्र से 'ग्' को चर्त्व करके - अमान्क् + सीत् / नश्चापदान्तस्य झलि से न् को अनुस्वार करके - अमांक् + सीत् / प्रत्यय के 'स्' को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से षत्व करके - अमांक् + षीत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाकर = अमांक्षीत् / अनुस्वार को 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' सूत्र से परसवर्ण करके - अमाङ्क्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अमंज् + स्ताम् / मस्जिनशोर्झलि से नुमागम करके - अमस्न्ज् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अमास्न्ज् + स्ताम् / झलो झलि से प्रत्यय के स् का लोप करके - अमास्न्ज् + ताम् / स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - अमान्ज् + ताम्

/ चोःकुः से कुत्व करके - अमान्ग् + ताम् / 'खरि च' सूत्र से 'ग्' को चर्त्व करके - अमान्क् + ताम् / नश्चापदान्तस्य झलि से न् को अनुस्वार करके - अमांक् + ताम् = अमांक्ताम्।

इसी प्रकार - अमंज् + स्तम् = अमांक्तम् / अमंज् + स्त = अमांक्त / बनाइये। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अमांक्षीत्	अमांक्ताम्	अमांक्षुः
अमांक्षीः	अमांक्तम्	अमांक्त
अमांक्षम्	अमांक्ष्व	अमांक्ष्म

अनिट् सृज् धातु -

सृजिदृशोर्झल्यमकिति - सृज् तथा दृश्, इन दो अनिट् ऋदुपध धातुओं को झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर अम् का आगम होता है।

अम् का आगम करके इनकी उपधा के ऋ को र बनाइये। असृज् + सीत् - अस्रज् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अस्राज् + सीत् / अब अन्त में आने वाले 'ज्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अस्राष् + सीत् / 'अब 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - अस्राक् + सीत् / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अस्राक् + षीत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाकर = अस्राक्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अस्रज् + स्ताम् - वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अस्राज् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अस्राज् + ताम् / अब अन्त में आने वाले 'ज्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अस्राष् + ताम् / 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'त' को ष्टुत्व करके - अस्राष् + टाम् = अस्राष्टाम्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अस्राक्षीत्	अस्राष्टाम्	अस्राक्षुः
अस्राक्षीः	अस्राष्टम्	अस्राष्ट
अस्राक्षम्	अस्राक्ष्व	अस्राक्ष्म

अनिट् भ्रस्ज् धातु -

भ्रस्जो रोपधयोः रमन्यतरस्याम् - आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर भ्रस्ज् धातु के 'र्' तथा उपधा के स्थान पर, विकल्प से 'रम्' होता है।

'रम्' होकर भ्रस्ज् को भर्ज् हो जाता है -

रम् होकर भर्ज् बनने पर - अभर्ज् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अभार्ज् + सीत् / व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः सूत्र से 'ज्' को 'ष्' बनाकर - अभार्ष् + सीत् / अब 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - अभार्क् + सीत् / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अभार्क् + षीत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाकर = अभार्क्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अभर्ज् + स्ताम् - वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अभार्ज् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अभार्ज् + ताम् / अब अन्त में आने वाले 'ज्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अभार्ष् + ताम् / 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'त' को ष्टुत्व करके - अभार्ष् + टाम् = अभार्ष्टाम्।

इसी प्रकार - अभर्ज् + स्तम् = अभार्ष्टम् / अभर्ज् + स्त = अभार्ष्ट।

रम् न होकर भ्रस्ज् को भ्रस्ज् ही रहने पर - अभ्रस्ज् + सीत् - वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अभ्रास्ज् + सीत् / स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - अभ्राज् + सीत् / अब अन्त में आने वाले 'ज्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अभ्राष् + सीत् / अब 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - अभ्राक् + सीत् / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अभ्राक् + षीत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाकर = अभ्राक्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अभ्रस्ज् + स्ताम् - वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अभ्रास्ज् + स्ताम् / झलो झलि से प्रत्यय के स् का लोप करके - अभ्रास्ज् + ताम् / स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - अभ्राज् + स्ताम् / अब अन्त में आने वाले 'ज्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां

षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अभ्राष् + ताम् / 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'त' को ष्टुत्व करके - अभ्राष् + टाम् = अभ्राष्टाम्।

इसी प्रकार - अभ्रस्ज् + स्तम् = अभ्राष्टम् / अभ्रस्ज् + स्त = अभ्राष्ट बनाइये। पूरे रूप इस प्रकार बने -

भ्रस्ज् को भ्रस्ज् ही रहने पर			**भ्रस्ज् को भर्ज् आदेश होने पर**		
अभ्राक्षीत्	अभ्राष्टाम्	अभ्राक्षुः	अभार्क्षीत्	अभार्ष्टाम्	अभार्क्षुः
अभ्राक्षीः	अभ्राष्टम्	अभ्राष्ट	अभार्क्षीः	अभार्ष्टम्	अभार्ष्ट
अभ्राक्षम्	अभ्राक्ष्व	अभ्राक्ष्म	अभार्क्षम्	अभार्क्ष्व	अभार्क्ष्म

अनिट् दकारान्त धातु - अभिद् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अभैद् + सीत् / 'खरि च' सूत्र से 'द्' को चर्त्व करके - अभैत् + सीत् = अभैत्सीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अभिद् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अभैद् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अभैद् + ताम् / 'खरि च' सूत्र से 'द्' को चर्त्व करके - अभैत् + ताम् = अभैत्ताम्।

इसी प्रकार - अभिद् + स्तम् = अभैत्तम् / अभिद् + स्त = अभैत्त बनाइये। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अभैत्सीत्	अभैत्ताम्	अभैत्सुः
अभैत्सीः	अभैत्तम्	अभैत्त
अभैत्सम्	अभैत्स्व	अभैत्स्म।

इसी प्रकार -

अक्षुद्	+	सीत्	-	अक्षौद्	+	सीत्	-	अक्षौत्सीत्
अस्कन्द्	+	सीत्	-	अस्कान्द्	+	सीत्	-	अस्कान्त्सीत्
अनुद्	+	सीत्	-	अनौद्	+	सीत्	-	अनौत्सीत्
अतुद्	+	सीत्	-	अतौद्	+	सीत्	-	अतौत्सीत्
अच्छिद्	+	सीत्	-	अच्छैद्	+	सीत्	-	अच्छैत्सीत्

अनिट् धकारान्त धातु -

अरुध् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अरौध् + सीत् / 'खरि च' सूत्र से 'ध्' को चर्त्व करके - अरौत् + सीत् = अरौत्सीत्।

सु:, सी:, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अरुध् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याच: से वृद्धि करके - अरौध् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अरौध् + ताम् / 'झषस्तथोर्धोऽध:' सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' बनाकर - अरौध् + धाम् / 'झलां जश् झशि' सूत्र से 'ध्' को जश्त्व करके - अरौद् + धाम् = अरौद्धाम्।

इसी प्रकार - अरुध् + स्तम् = अरौद्धम् / अरुध् + स्त = अरौद्ध / बनाइये। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अरौत्सीत्	अरौद्धाम्	अरौत्सु:
अरौत्सी:	अरौद्धम्	अरौद्ध
अरौत्सम्	अरौत्स्व	अरौत्स्म

इसके अपवाद -

बन्ध् धातु - जिन धातुओं के आदि में 'बश्' हो, तथा अन्त में 'भष्' हो, उस धातु के आदि में स्थित तृतीयाक्षर को, **'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वो:'** सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर होता है।

अबन्ध् + सीत् - वदव्रजहलन्तस्याच: से वृद्धि करके - अबान्ध् + सीत् / 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वो:' सूत्र से 'ब' को 'भ' बनाकर - अभान्ध् + सीत् / अन्तिम 'ध्' को 'खरि च' सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर 'त्' बनाकर - अभान्त् + सीत् = अभान्त्सीत्।

सु:, सी:, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अबन्ध् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याच: से वृद्धि करके - अबान्ध् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अबान्ध् + ताम् / 'झषस्तथोर्धोऽध:' सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' बनाकर - अबान्ध् + धाम् / 'झलां जश् झशि' सूत्र से 'ध्' को जश्त्व करके - अबान्द् + धाम् = अबान्द्धाम्।

इसी प्रकार - अबन्ध् + स्तम् = अबान्द्धम् / अबन्ध् + स्त = अबान्ध / बनाइये।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अभान्त्सीत्	अबान्द्धाम्	अभान्त्सु:
अभान्त्सी:	अबान्द्धम्	अबान्द्ध

अभान्तसम्	अभान्तस्व	अभान्तस्म

अनिट् पकारान्त धातु - अतप् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से वृद्धि करके - अताप् + सीत् = अताप्सीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अतप् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अताप् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अताप् + ताम् = अताप्ताम्।

इसी प्रकार - अतप् + स्तम् = अताप्तम् / अतप् + स्त = अताप्त / बनाइये। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अताप्सीत्	अताप्ताम्	अताप्सुः
अताप्सीः	अताप्तम्	अताप्त
अताप्सम्	अताप्स्व	अताप्स्म।

इसी प्रकार -

अक्षिप्	+	सीत्	-	अक्षैप्	+	सीत्	-	अक्षैप्सीत्
अच्छुप्	+	सीत्	-	अच्छौप्	+	सीत्	-	अच्छौप्सीत्
अस्वप्	+	सीत्	-	अस्वाप्	+	सीत्	-	अस्वाप्सीत्
अशप्	+	सीत्	-	अशाप्	+	सीत्	-	अशाप्सीत्
अवप्	+	सीत्	-	अवाप्	+	सीत्	-	अवाप्सीत्।

दिवादिगण के वेट् तृप्, दृप् धातु -

अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् - ऋदुपध अनिट् धातुओं को, झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर, विकल्प से अम् का आगम होता है।

अम् का आगम होने पर - अतृप् + सीत् - अत्रप् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से वृद्धि करके - अत्राप् + सीत् = अत्राप्सीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अत्रप् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अत्राप् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अत्राप् + ताम् = अत्राप्ताम्।

इसी प्रकार - अत्रप् + स्तम् = अत्राप्तम् / अत्रप् + स्त = अत्राप्त बनाइये।

अम् का आगम न होने पर - अतृप् + सीत् - वदव्रजहलन्तस्याचः

सूत्र से वृद्धि करके - अतार्प् + सीत् = अतार्प्सीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अतृप् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अतार्प् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अतार्प् + ताम् = अतार्प्ताम्।

इसी प्रकार - अतृप् + स्तम् = अतार्प्तम् / अतृप् + स्त = अतार्प्त बनाइये। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अमागम होने पर			**अमागम न होने पर**		
अत्राप्सीत्	अत्राप्ताम्	अत्राप्सुः	अतार्प्सीत्	अतार्प्ताम्	अतार्प्सुः
अत्राप्सीः	अत्राप्तम्	अत्राप्त	अतार्प्सीः	अतार्प्तम्	अतार्प्त
अत्राप्सम्	अत्राप्स्व	अत्राप्स्म	अतार्प्सम्	अतार्प्स्व	अतार्प्स्म

सेट् प्रत्यय लगने पर - ध्यान रहे कि सेट् प्रत्यय पर होने पर अम् का आगम कदापि न किया जाये - अतृप् + ईत् - पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा को गुण करके = अतर्पीत्।

अतर्पीत्	अतर्पिष्टाम्	अतर्पिषुः
अतर्पीः	अतर्पिष्टम्	अतर्पिष्ट
अतर्पिषम्	अतर्पिष्व	अतर्पिष्म

दृप् धातु के रूप ठीक इसी प्रकार बनाइये।

वेट् गुपू धातु - इसे 'आयादय आर्धधातुके वा' सूत्र से स्वार्थ में 'आय' प्रत्यय विकल्प से होता है।

'आय' प्रत्यय न लगने पर - अगुप् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अगौप्सीत्। सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अगुप् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अगौप् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अगौप् + ताम् = अगौप्ताम्।

इसी प्रकार - अगुप् + स्तम् = अगौप्तम् / अगुप् + स्त = अगौप्त बनाइये। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अगौप्सीत्	अगौप्ताम्	अगौप्सुः
अगौप्सीः	अगौप्तम्	अगौप्त
अगौप्सम्	अगौप्स्व	अगौप्स्म

'आय' प्रत्यय लगने पर - गुप् + आय - गोपाय / 'आय' लग जाने पर, यह धातु अनेकाच् हो जाने से सेट् हो जाता है। अतः इससे सेट् प्रत्यय लगेंगे - अगोपाय + ईत् / अतो लोपः से 'अ' का लोप होकर - अगोपाय् + ईत् = अगोपायीत् आदि।

अनिट् भकारान्त यभ् धातु - अयभ् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अयाभ् + सीत् / 'खरि च' सूत्र से 'भ्' को चर्त्व करके - अयाप् + सीत् = अयाप्सीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अयभ् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अयाभ् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अयाभ् + ताम् / 'झषस्तथोर्धोऽधः' सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' बनाकर - अयाभ् + धाम् / 'झलां जश् झशि' सूत्र से 'भ्' को जश्त्व करके - अयाब् + धाम् = अयाब्धाम्।

इसी प्रकार - अयभ् + स्तम् = अयाब्धम् / अयभ् + स्त = अयाब्ध।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अयाप्सीत्	अयाब्धाम्	अयाप्सुः
अयाप्सीः	अयाब्धम्	अयाब्ध
अयाप्सम्	अयाप्स्व	अयाप्स्म

अनिट् शकारान्त दंश् धातु -

अदंश् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से वृद्धि करके - अदांश् + सीत् / अब अन्त में आने वाले 'श्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अदांष् + सीत् / 'अब 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - अदांक् + सीत् / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्ययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अदांक् + षीत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाकर = अदांक्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अदंश् + स्ताम् - वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अदांश् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अदांश् + ताम् / अब अन्त में आने वाले 'श्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अदांष् + ताम् / 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'त' को ष्टुत्व करके - अदांष् +

टाम् = अदांष्टाम्। इसी प्रकार - अदंश् + स्तम् = अदांष्टम् / अदंश् + स्त = अदांष्ट।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अदांक्षीत्	अदांष्टाम्	अदांक्षुः
अदांक्षीः	अदांष्टम्	अदांष्ट
अदांक्षम्	अदांक्ष्व	अदांक्ष्म

इसके अपवाद - अनिट् दृश् धातु -

सृजिदृशोर्झल्यमकिति - सृज् तथा दृश्, इन दो अनिट् ऋदुपध धातुओं को झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर नित्य अम् का आगम होता है।

अम् का आगम करके इनकी उपधा के ऋ को र बनाइये। अदृश् + सीत् - अद्रश् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अद्राश् + सीत् / अन्त में आने वाले 'श्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अद्राष् + सीत् / 'अब 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - अद्राक् + सीत् /

प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अद्राक् + षीत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाकर = अद्राक्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अद्रश् + स्ताम् - वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अद्राश् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अद्राश् + ताम् /

अब अन्त में आने वाले 'श्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अद्राष् + ताम् / 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'त' को ष्टुत्व करके - अद्राष् + टाम् = अद्राष्टाम्। इसी प्रकार - अद्रश् + स्तम् = अद्राष्टम् / अद्रश् + स्त = अद्राष्ट।

अद्राक्षीत्	अद्राष्टाम्	अद्राक्षुः
अद्राक्षीः	अद्राष्टम्	अद्राष्ट
अद्राक्षम्	अद्राक्ष्व	अद्राक्ष्म

मृश्, स्पृश् धातु -

अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् - ऋदुपध अनिट् धातुओं को, झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर, विकल्प से अम् का आगम होता है।

अम् का आगम होने पर -

अमृश् + सीत् - अम्रश् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से वृद्धि करके - ठीक 'अद्राक्षीत्' के समान अम्राक्षीत् आदि रूप बनाइये।

अम् का आगम न होने पर -

अमृश् + सीत् - वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से वृद्धि करके - अमार्श् + सीत् / 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अमार्ष् + सीत् / 'अब 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - अमार्क् + सीत् / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अमार्क् + षीत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाकर अमार्क्षीत्।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अमागम न होने पर			**अमागम होने पर**		
अमार्क्षीत्	अमार्ष्टाम्	अमार्क्षुः	अम्राक्षीत्	अम्राष्टाम्	अम्राक्षुः
अमार्क्षीः	अमार्ष्टम्	अमार्ष्ट	अम्राक्षीः	अम्राष्टम्	अम्राष्ट
अमार्क्षम्	अमार्क्ष्व	अमार्क्ष्म	अम्राक्षम्	अम्राक्ष्व	अम्राक्ष्म

इसी प्रकार स्पृश् से अम् का आगम करके अस्प्राक्षीत् तथा अम् का आगम न करके अस्पार्क्षीत् आदि बनाइये।

वेट् शकारान्त अश् धातु -

इडागम न होने पर - अमार्क्षीत् के समान आक्षीत् / इडागम होने पर - आशीत् बनाइये।

अनिट् षकारान्त कृष् धातु -

अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् - ऋदुपध अनिट् धातुओं को, झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर, विकल्प से अम् का आगम होता है।

अम् का आगम होने पर - अकृष् + सीत् - अक्रष् + सीत् / वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से वृद्धि करके - 'अद्राक्षीत्' के समान अक्राक्षीत् बनाइये।

अम् का आगम न होने पर - अकृष् + सीत् - वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से वृद्धि करके - अकार्ष् + सीत् / अब 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - अकार्क् + सीत् / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अकार्क् + षीत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाकर= अकार्क्षीत्।

अमागम न होने पर			**अमागम होने पर**		
अकार्क्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्क्षुः	अक्राक्षीत्	अक्राष्टाम्	अक्राक्षुः
अकार्क्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट	अक्राक्षीः	अक्राष्टम्	अक्राष्ट

अकार्क्ष्म्	अकार्क्ष्व	अकार्क्ष्म	अक्राक्षम्	अक्राक्ष्व	अक्राक्ष्म

वेट् षकारान्त त्वक्ष्, तक्ष्, अक्ष् धातु -

इडागम न होने पर - अत्वक्ष् + सीत् - वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से वृद्धि करके - अत्वाक्ष् + सीत् / स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - अत्वाष् + सीत् /

अब 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - अत्वाष् + सीत् / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - अत्वाक् + षीत् / क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाकर अत्वाक्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अत्वक्ष् + स्ताम् - वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अत्वाक्ष् + स्ताम् / स्कोः संयोगाद्योरन्ते च सूत्र से धातु के संयोगादि 'क्' का लोप करके - अत्वष् + ताम् / झलो झलि से प्रत्यय के स् का लोप करके - अत्वाष् + ताम् / 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से 'त' को ष्टुत्व करके - अत्वाष् + टाम् = अत्वाष्टाम्।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अत्वाक्षीत्	अत्वाष्टाम्	अत्वाक्षुः
अत्वाक्षीः	अत्वाष्टम्	अत्वाष्ट
अत्वाक्षम्	अत्वाक्ष्व	अत्वाक्ष्म

इसी प्रकार तक्ष्, अक्ष् के रूप बनाइये।

इडागम होने पर - सीधे सेट् प्रत्यय जोड़कर अत्वक्ष् + ईत् = अत्वक्षीत्, आदि बनाइये।

अनिट् सकारान्त धातु - अवस् + सीत् - वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से वृद्धि करके - अवास् + सीत् / 'सः स्यार्धधातुके' सूत्र से 'स्' को 'त्' करके = अवात्सीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अवस् + स्ताम् - वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अवास् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अवास् + ताम् / 'सः स्यार्धधातुके' सूत्र से 'स्' को 'त्' करके - अवात् + ताम् = अवात्ताम्।

इसी प्रकार - अवस् + स्तम् = अवात्तम् / अवस् + स्त = अवात्त।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अवात्सीत्	अवात्ताम्	अवात्सुः
अवात्सीः	अवात्तम्	अवात्त
अवात्सम्	अवात्स्व	अवात्स्म

अनिट् हकारान्त धातुओं के चार वर्ग बनाइये -

१. **नह् धातु** - अनह् + सीत् - वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से वृद्धि करके - अनाह् + सीत् / अन्तिम 'ह्' को 'नहो धः' सूत्र से 'ध्' बनाकर - अनाध् + सीत् / 'खरि च' सूत्र से चर्त्व करके - अनात् + सीत् = अनात्सीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अनह् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अनाह् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अनाह् + ताम् / अन्तिम 'ह्' को 'नहो धः' सूत्र से 'ध्' बनाकर - अनाध् + ताम् / 'झषस्तथोर्धोऽधः' सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' बनाकर - अनाध् + धाम् / 'झलां जश् झशि' सूत्र से 'ध्' को जश्त्व करके - अनाद् + धाम् = अनाद्धाम्।

इसी प्रकार - अनह् + स्तम् = अनाद्धम् / अनह् + स्त = अनाद्ध / बनाइये। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अनात्सीत्	अनाद्धाम्	अनात्सुः
अनात्सीः	अनाद्धम्	अनाद्ध
अनात्सम्	अनात्स्व	अनात्स्म

२. **दह् धातु** - अदह् + सीत् - वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से वृद्धि करके - अदाह् + सीत् / अन्तिम 'ह्' को, 'दादेर्धातोर्घः' सूत्र से 'घ्' बनाकर - अदाघ् + सीत् / धातु के आदि में जो वर्ग का तृतीयाक्षर है, उसे 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर बनाकर - अधाघ् + सीत् / 'घ्' को 'खरि च' सूत्र से, 'क्' बनाकर - अधाक् + सीत् / प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाकर = अधाक्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अदह् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अदाह् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अदाह् + ताम् /

अन्तिम 'ह्' को 'दादेर्धातोर्घः' सूत्र से 'घ्' बनाकर - अदाघ् + ताम् / 'झषस्तथोर्धोऽधः' सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' बनाकर - अदाघ् + धाम् / 'झलां जश् झशि' सूत्र से 'ध्' को जश्त्व करके - अदाग् + धाम् = अदाग्धाम्।

इसी प्रकार - अदह् + स्तम् = अदाग्धम् / अदह् + स्त = अदाग्ध / बनाइये।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अधाक्षीत्	अदाग्धाम्	अधाक्षुः
अधाक्षीः	अदाग्धम्	अदाग्ध
अधाक्षम्	अधाक्ष्व	अधाक्ष्म

३. वह् धातु - अवह् + सीत् - वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से वृद्धि करके - अवाह् + सीत् / अन्तिम 'ह्' को, 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाकर - अवाढ् + सीत् / षढोः कः सि सूत्र से ढ् को क् बनाकर - अवाक् + सीत् / प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाकर = अवाक्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अवह् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अवाह् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अवाह् + ताम् / अन्तिम 'ह्' को, 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाकर - अवाढ् + ताम् / 'झषस्तथोर्धोऽधः' सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' बनाकर - अवाढ् + धाम् /

ष्टुना ष्टुः सूत्र से प्रत्यय के 'ध' को ष्टुत्व करके - अवाढ् + ढाम् / ढो ढे लोपः सूत्र से पूर्व 'ढ्' का लोप करके - अव + ढाम् / सहिवहोरोदवर्णस्य सूत्र से लुप्त ढकार के पूर्ववर्ती 'अ' को 'ओ' करके - अवोढाम्।

इसी प्रकार - अवह् + स्तम् = अवोढम् / अवह् + स्त = अवोढ / बनाइये। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अवाक्षीत्	अवोढाम्	अवाक्षुः
अवाक्षीः	अवोढम्	अवोढ
अवाक्षम्	अवाक्ष्व	अवाक्ष्म

वेट् तृंहू धातु -

अतृंह् + सीत् - वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से वृद्धि करके - अतांर्ह् + सीत् / अन्तिम 'ह्' को, 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाकर - अतांर्ढ् + सीत् / षढोः

कः सि सूत्र से ढ् को क् बनाकर - अतांर्क् + सीत् / प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाकर = अताङ्क्षीत्।

सुः, सीः, सम्, स्व, स्म, इन सकारादि प्रत्ययों के परे होने पर, ठीक इसी प्रकार रूप बनाइये।

अतृंह् + स्ताम् / वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि करके - अतांर्ह् + स्ताम् / झलो झलि से स् का लोप करके - अतांर्ह् + ताम् / अन्तिम 'ह्' को, 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाकर - अतांर्ढ् + ताम् /

'झषस्तथोर्धोऽधः' सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' बनाकर - अतांर्ढ् + धाम् / ष्टुना ष्टुः सूत्र से प्रत्यय के 'त' को ष्टुत्व करके - अतांर्ढ् + ढाम् / ढो ढे लोपः सूत्र से पूर्व 'ढ्' का लोप करके - अतांर् + ढाम् = अताण्ढाम्।

इसी प्रकार - अतृंह् + स्तम् = अताण्ढम् / अतृंह् + स्त = अताण्ढ / बनाइये। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अताङ्क्षीत्	अताण्ढाम्	अताङ्क्षुः
अताङ्क्षीः	अताण्ढम्	अताण्ढ
अताङ्क्षम्	अताङ्क्ष्व	अताङ्क्ष्म

शेष स्तृहू, तृहू, आदि हकारान्त अनिट् धातु इगुपध हैं, अतः उनसे 'क्स' से बने हुए प्रत्यय लगते हैं। विधि 'क्स' प्रत्यय में देखिये।

यह सारे हलन्त अनिट् परस्मैपदी धातुओं में सिच् से बने हुए प्रत्यय लगाकर, लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

५. कुटादि धातुओं से बचे हुए हलन्त सेट् परस्मैपदी धातुओं के लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

हलन्त सेट् परस्मैपदी धातुओं के तीन वर्ग बनाइये -

प्रथम वर्ग - ऐसे हलन्त सेट् परस्मैपदी धातु, जिनके आदि में हल् हो, अन्त में भी हल् हो, तथा जिनमें लघु 'अ' भी हो जैसे - पठ्, गद्, नद् आदि।

अतो हलादेर्लघोः - ऐसे हलादि, हलन्त, लघु अकारवान्, सेट् परस्मैपदी धातुओं के इस लघु 'अ' को विकल्प से वृद्धि होती है। अपठ् + ईत् = अपाठीत्, अपठीत् आदि। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अपाठीत् / अपठीत् अपाठिष्टाम् / अपठिष्टाम् अपाठिषुः / अपठिषुः

अपाठीः / अपठीः	अपाठिष्टम् / अपठिष्टम्	अपाठिष्ट / अपठिष्ट
अपाठिषम् / 'अपठिषम्	अपाठिष्व / अपठिष्व	अपाठिष्म / अपठिष्म

इसी प्रकार अगद् + ईत् = अगादीत्, अगदीत् आदि बनाइये।

इसके अपवाद -

१. **वद्, व्रज्, धातु** - ये दोनों धातु हलादि, हलन्त हैं, इनमें लघु अ भी है, किन्तु इन्हें 'वदव्रजहलन्तस्याचः' सूत्र से नित्य वृद्धि होती है। वद् + ईत् - अवादीत्। व्रज् + ईत् - अव्राजीत्। **वद् के पूरे रूप इस प्रकार बने -**

अवादीत्	अवादिष्टाम्	अवादिषुः
अवादीः	अवादिष्टम्	अवादिष्ट
अवादिषम्	अवादिष्व	अवादिष्म

व्रज् के पूरे रूप भी ठीक इसी प्रकार बने -

अव्राजीत्	अव्राजिष्टाम्	अव्राजिषुः
अव्राजीः	अव्राजिष्टम्	अव्राजिष्ट
अव्राजिषम्	अव्राजिष्व	अव्राजिष्म

(बहुत सावधानी रखिये कि केवल लघु 'अ' को विकल्प से वृद्धि होती है। यदि 'अ' गुरु हो तो उसे वृद्धि न की जाये - अरक्ष् + ईत् = अरक्षीत्)

२. **लान्त, रान्त धातु** - ऐसे हलादि हलन्त, लघु अकारवान्, सेट् परस्मैपदी धातु, जिनके अन्त में ल् या र् हो, उनके इस लघु 'अ' को 'अतो ल्रान्तस्य' सूत्र से नित्य वृद्धि होती है। त्सर् - अत्सर् + ईत् = अत्सारीत्

रान्त 'त्सर्' धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अत्सारीत्	अत्सारिष्टाम्	अत्सारिषुः
अत्सारीः	अत्सारिष्टम्	अत्सारिष्ट
अत्सारिषम्	अत्सारिष्व	अत्सारिष्म

लान्त 'ज्वल्' धातु के रूप भी ठीक इसी प्रकार बनेंगे -

अज्वालीत्	अज्वालिष्टाम्	अज्वालिषुः
अज्वालीः	अज्वालिष्टम्	अज्वालिष्ट
अज्वालिषम्	अज्वालिष्व	अज्वालिष्म

३. **हन् धातु - लुङि च** - लुङ् लकार के परस्मैपदी प्रत्यय परे होने पर हन् धातु को नित्य 'वध' आदेश होता है। ध्यान दें कि 'हन्' धातु तो अनिट् है, किन्तु उसके स्थान पर होने वाला 'वध' धातु अनेकाच् होने के कारण सेट् है। अतः इससे सेट् प्रत्यय लगते हैं।

हन् के स्थान पर होने वाला, यह 'वध' आदेश अदन्त होता है, हलन्त नहीं। इसके 'अ' का 'अतो लोपः' सूत्र से लोप कीजिये - अवध - ईत् - अवध् + ईत् = अवधीत्। शेष रूप भी इसी प्रकार बनाइये।

ध्यान दीजिये कि 'वध' आदेश के अदन्त होने के कारण यहाँ 'अतो हलादेर्लघोः' सूत्र से वृद्धि नहीं होती। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अवधीत्	अवधिष्टाम्	अवधिषुः
अवधीः	अवधिष्टम्	अवधिष्ट
अवधिषम्	अवधिष्व	अवधिष्म

३. हान्त, मान्त यान्त, क्षण्, श्वस् तथा एदित् धातु -

ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम् - हकारान्त, मकारान्त यकारान्त, क्षण्, श्वस्, जागृ, ण्यन्त श्वि और एदित् धातुओं के अच् को वृद्धि नहीं होती है, इडादि परस्मैपद संज्ञक सिच् प्रत्यय परे होने पर। अतः इनके 'अ' को कभी वृद्धि नहीं होती है।

हान्त धातु	-	ग्रह्	-	अग्रह्	+	ईत्	=	अग्रहीत्
मान्त धातु	-	स्यम्	-	अस्यम्	+	ईत्	=	अस्यमीत्
यान्त धातु	-	व्यय्	-	अव्यय्	+	ईत्	=	अव्ययीत्
क्षण् धातु	-	क्षण्	-	अक्षण्	+	ईत्	=	अक्षणीत्
श्वस् धातु	-	श्वस्	-	अश्वस्	+	ईत्	=	अश्वसीत्
एदित् कटे धातु	-	कट्	-	अकट्	+	ईत्	=	अकटीत्
एदित् कखे धातु	-	कख्	-	अकख्	+	ईत्	=	अकखीत्

द्वितीय वर्ग - लघु इगुपध सेट् हलन्त परस्मैपदी धातु -

नेटि - हलन्त सेट् धातुओं के अच् को वृद्धि नहीं होती, इडादि परस्मैपद संज्ञक सिच् प्रत्यय परे होने पर।

अतः वृद्धि का निषेध हो जाने पर, जिनकी उपधा में लघु इ, लघु उ, लघु ऋ है, उन्हें **पुगन्तलघूपधस्य च** सूत्र से गुण कीजिये।

इदुपध धातु - दिव् - अदिव् + ईत् - अदेव् + ईत् ।

पूरे रूप इस प्रक ार बने -

अदेवीत्	अदेविष्टाम्	अदेविषुः
अदेवीः	अदेविष्टम्	अदेविष्ट
अदेविषम्	अदेविष्व	अदेविष्म

उदुपध धातु - कुष् - अकुष् + ईत् - अकोष् + ईत् - अकोषीत्।

अकोषीत्	अकोषिष्टाम्	अकोषिषुः
अकोषीः	अकोषिष्टम्	अकोषिष्ट
अकोषिषम्	अकोषिष्व	अकोषिष्म

ऋदुपध धातु - वृष् - अवृष् + ईत् - अवर्ष् + ईत् = अवर्षीत्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अवर्षीत्	अवर्षिष्टाम्	अवर्षिषुः
अवर्षीः	अवर्षिष्टम्	अवर्षिष्ट
अवर्षिषम्	अवर्षिष्व	अवर्षिष्म

तृतीय वर्ग - शेष सेट् हलन्त परस्मैपदी धातु - ऊपर कहे गये सारे हलन्त धातुओं से बचे हुए जो धातु हैं, उन्हें कुछ भी नहीं होता। यथा -

फक्क्	-	अफक्क्	+	ईत्	=	अफक्कीत्
व्रश्च्	-	अव्रश्च्	+	ईत्	=	अव्रश्चीत्
रक्ष्	-	अरक्ष्	+	ईत्	=	अरक्षीत्
तक्ष्	-	अतक्ष्	+	ईत्	=	अतक्षीत्
बुक्क्	-	अबुक्क्	+	ईत्	=	अबुक्कीत्

विशेष - ध्यान दीजिये कि रक्ष्, तक्ष्, आदि धातुओं का 'अ' लघु नहीं है, क्योंकि -

संयोगे गुरु - ह्रस्व अ, इ, उ, ऋ, ऌ, के बाद यदि कोई संयुक्त व्यञ्जन आया हो, तो ये लघु स्वर ही गुरु कहलाने लगते हैं। जैसे -

रक्ष् - इसमें ह्रस्व अ के बाद क् + ष् का संयोग है। इसलिये इस संयोग के पूर्व में स्थित ह्रस्व 'अ' अब 'गुरु' कहलायेगा। **व्रश्च्** - इसमें ह्रस्व 'अ' के बाद श् + च् का संयोग है। इसलिये इस संयोग के पूर्व में स्थित ह्रस्व 'अ' अब 'गुरु' कहलायेगा।

गुरु होने के कारण इस 'अ' को अतो हलादेर्लघोः सूत्र से वृद्धि नहीं होती। अरक्षीत् / अतक्षीत् आदि।

वेद में ण्यन्त धातुओं के लिये विशेष -

नोनयतिध्वनयत्येलयत्यर्दयतिभ्यः - हम जानते हैं कि लोक में सारे ण्यन्त धातुओं से लुङ् लकार में चङ् प्रत्यय लगाया जाता है। किन्तु वेद में ण्यन्त ऊन्, ध्वन्, इल् धातुओं से सिच् प्रत्यय लगता है। शेष ण्यन्त धातुओं से लोक

के समान चङ् प्रत्यय ही लगता है।

ऊन् + णिच् = ऊनि / आ + ऊनि = औनि / औनि + ईत् - सार्वधातुकार्धधातुकयो: सूत्र से गुण करके - औनये + ईत् / एचोऽयवायाव: सूत्र से अय् आदेश करके - औनय् + ईत् = औनयीत्। पूरे रूप इस प्रकार बने-

औनयीत्	औनयिष्टाम्	औनयिषु:
औनयी:	औनयिष्टम्	औनयिष्ट
औनयिषम्	औनयिष्व	औनयिष्म

इल् + णिच् = एलि / आ + एलि = ऐलि / ऐलि + ईत् - सार्वधातुकार्धधातुकयो: सूत्र से गुण करके - ऐले + ईत् / एचोऽयवायाव: सूत्र से अय् आदेश करके - ऐलय् + ईत् = ऐलयीत्।

पूरे रूप इस प्रकार बने-

ऐलयीत्	ऐलयिष्टाम्	ऐलयिषु:
ऐलयी:	ऐलयिष्टम्	ऐलयिष्ट
ऐलयिषम्	ऐलयिष्व	ऐलयिष्म

ध्वन् + णिच् = ध्वनि / अ + ध्वनि = अध्वनि / अध्वनि + ईत् - सार्वधातुकार्धधातुकयो: सूत्र से गुण करके - अध्वने + ईत् / एचोऽयवायाव: सूत्र से अय् आदेश करके - अध्वनय् + ईत् = अध्वनयीत्।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अध्वनयीत्	अध्वनयिष्टाम्	अध्वनयिषु:
अध्वनयी:	अध्वनयिष्टम्	अध्वनयिष्ट
अध्वनयिषम्	अध्वनयिष्व	अध्वनयिष्म

वेद में, इन धातुओं के अलावा, सारे ण्यन्त धातुओं से, लुङ् लकार में चङ् प्रत्यय ही लगेगा।

लोक में लुङ् लकार में, सारे ण्यन्त धातुओं से चङ् प्रत्यय ही लगेगा।

इस प्रकार हमने खण्ड खण्ड करके, सारे धातुओं में सिच् से बने हुए लुङ् लकार के प्रत्यय लगाने की विधि सीख ली।

इसके साथ ही लुङ् लकार के सारे प्रत्ययों को लगाने की विधि भी पूर्ण हुई।



नवम पाठ

समस्त धातुओं के लिट् लकार के धातुरूप बनाने की विधि

परोक्षे लिट् - परोक्ष का अर्थ होता है - अक्षण: पर: । जो काल हमारी इन्द्रियों से न देखा गया हो, जैसे - रामो बभूव। राम हुए थे। ऐसे काल के लिये हमें लिट् लकार के प्रत्ययों का प्रयोग करना चाहिये।

लिट् लकार के प्रत्यय

परस्मैपद			आत्मनेपद		
णल् (अ)	अतु:	उ:	ए	आते	इरे
थल् (थ)	अथु:	अ	से	आथे	ध्वे
णल् (अ)	व	म	ए	वहे	महे

लिट् च - लिट् लकार में लगने वाले सारे प्रत्यय आर्धधातुक होते हैं। अत: ये पूरे १८ प्रत्यय आर्धधातुक ही हैं, यह जानिये।

जब भी कोई धातुरूप बनता है, तो उसमें अनेक कार्य होते हैं। जैसे - ब्रू धातु के लिट् लकार के रूप 'उवचिथ' को देखिये। इसमें 'ब्रू' धातु को 'वच्' आदेश हुआ है। इस कार्य का नाम धात्वादेश है। वच् धातु को जो 'वच् वच्' हुआ है, उसका नाम द्वित्व विधि है। उसके बाद पूर्व वाले अभ्यास के 'च्' का जो लोप हुआ है, तथा व् को जो उ हुआ है, इसका नाम अभ्यासकार्य है। उवच् + थ के बीच में जो 'इ' आकर बैठा है इसका नाम इडागम है।

वह् धातु के लिट् लकार के रूप 'उवोढ' को देखिये। इसमें वह् धातु को जो वह् वह् हुआ है। उसका नाम द्वित्व विधि है। उसके बाद, पूर्व वाले अभ्यास के 'ह्' का जो लोप हुआ है, तथा 'व' को जो सम्प्रसारण होकर 'उ' हुआ है, इसका नाम अभ्यासकार्य है। उवोह् + थ को मिलाकर जो 'उवोढ' बना है, इसका नाम सन्धिकार्य है।

लिलिख् + णल् - लिलेख में जो इकार को गुण हुआ है, इसका नाम

अङ्गकार्य है।

लिलिख् + अतुः - लिलिखतुः में जो इकार को गुण नहीं हुआ है, इसका नाम भी अङ्गकार्य है।

इस प्रकार एक धातुरूप को बनाने का जो कार्य होता है, उसके अनेक खण्ड होते हैं। इन खण्डों को हमें अलग अलग ही सीखना चाहिये। पूरा धातुरूप एक साथ बना लेने का प्रयास नहीं करना चाहिये।

लिट् लकार के धातुरूप बनाने के खण्ड, इस प्रकार होते हैं -

१. धात्वादेश / २. द्वित्व विचार करके द्वित्व करना या न करना / ३. अभ्यासकार्य / ४. इडागम विचार / ५. प्रत्ययों का स्वरूप निर्धारण करके अङ्गकार्य करना / ६. सन्धिकार्य। इनका क्रमशः विचार करें -

१. धात्वादेश

लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर अस्, ब्रू, चक्ष्, अज्, अद्, इङ्, प्याय्, श्वि, ह्वेञ् तथा एजन्त धातुओं की आकृति इस प्रकार बदल दीजिये -

अस्तेर्भूः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अस् धातु को भू आदेश होता है। आदेश का अर्थ होता है, जो शब्द बैठा है, उसके स्थान पर दूसरा शब्द लाकर बैठा देना। जैसे - अस् + लिट् लकार के प्रत्यय = भू + लिट् लकार के प्रत्यय। इसी प्रकार -

ब्रुवो वचिः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ब्रू धातु को वच् आदेश होता है। ब्रू = वच्।

वा लिटि - लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर चक्ष् धातु को विकल्प से ख्याञ् होता है। ख्या आदेश होने पर - चक्ष् = ख्याञ् / ख्याञ् आदेश न होने पर - चक्ष् = चक्ष्।

अजेर्व्यघञपोः - घञ्, अप् के अलावा शेष सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अज् धातु को वी आदेश होता है। अज् = वी।

लिट्यन्यतरस्याम् - लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर, अद् धातु को विकल्प से घस् आदेश होता है - घस् आदेश होने पर - अद् = घस् / घस् आदेश न होने पर - अद् = अद्।

वेञो वयिः - लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर, वेञ् धातु को विकल्प

से वय् आदेश होता है। वय् आदेश होने पर - वेञ् = वय्। वय् आदेश न होने पर आदेच उपदेशेऽशिति सूत्र से आकारादेश होकर - वेञ् = वा।

गाङ् लिटि - लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर, इङ् धातु को गाङ् आदेश होता है। इङ् = गा।

लिड्यङोश्च - लिट् लकार के प्रत्यय तथा यङ् प्रत्यय परे होने पर, प्याय् धातु को पी आदेश होता है। प्याय् = पी।

विभाषा श्वेः - लिट् लकार के प्रत्यय तथा यङ् प्रत्यय परे होने पर श्वि धातु को द्वित्व होने के पहिले ही विकल्प से सम्प्रसारण होता है।

श्वि - सम्प्रसारण होकर - शु / सम्प्रसारण न होने पर श्वि ही रहेगा।

अभ्यस्तस्य च - ह्वेञ् धातु को द्वित्व होने के पहिले ही नित्य सम्प्रसारण होता है। ह्वे - हु।

आदेच उपदेशेऽशिति - शित् प्रत्यय परे न रहने पर, सारे एजन्त धातुओं को 'आ' अन्तादेश होता है। लिट् लकार के सारे प्रत्यय अशित् प्रत्यय हैं। अतः इनके परे होने पर सारे एजन्त धातुओं को 'आ' अन्तादेश होता है। जैसे - ग्लै = ग्ला / म्लै = म्ला / ध्यै = ध्या / शो = शा / सो = सा / वे = वा / छो = छा, आदि।

इसके अपवाद - न व्यो लिटि - लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर व्येञ् धातु को 'आ' अन्तादेश नहीं होता। व्ये - व्ये।

इन धातुओं को इस प्रकार के आदेश (परिवर्तन) करके ही इनके लिट् लकार के रूप बनाइये। अस्, ब्रू, चक्ष्, अज्, अद्, इङ्, प्याय्, श्वि, ह्वेञ् तथा एजन्त, धातुओं के अलावा शेष धातुओं को ज्यों को त्यों ही रहने दीजिये। उनमें किसी प्रकार का आदेश (परिवर्तन) मत कीजिये।

किन धातुओं के रूप कैसे बनायें ?

भू - बभूव / गम् - जगाम / पठ् - पपाठ / आदि रूपों को देखिये। इन्हें लिट् लकार के प्रत्ययों के लगने पर द्वित्व हुआ है।

एध् - एधाञ्चक्रे, ऊह् - ऊहाम्बभूवे, चुर् - चोरयामास, आदि रूपों को देखिये। इन धातुओं को लिट् लकार के प्रत्ययों के लगने पर भी द्वित्व नहीं हुआ है। अपितु इन धातुओं से, आम् प्रत्यय लग गया है, और उसके लगने के

बाद, इन आमन्त धातुओं से कृ, भू, अस् धातु लगाकर, उन कृ, भू, अस् धातुओं को द्वित्व करके, उन द्वित्व किये कृ, भू, अस् धातुओं से, लिट् लकार के प्रत्यय लगे हैं।

अत: हमने जाना कि लिट् लकार के प्रत्ययों के लगने पर, सारे धातुओं को द्वित्व नहीं होता। कुछ को तो द्वित्व होता है तथा कुछ से आम् प्रत्यय लगने के बाद, उन धातुओं से कृ, भू, अस् धातुओं के लिट् लकार के प्रत्यय लगते हैं।

हम पहले हम यह विचार कर लें, कि लिट् लकार के प्रत्ययों के लगने पर, किन किन धातुओं को द्वित्व होता है तथा किनसे आम् प्रत्यय लगने के बाद, उन धातुओं से कृ, भू, अस् धातुओं के लिट् लकार के रूप लगते हैं।

लिट् लकार में किन किन धातुओं को द्वित्व नहीं होता ?

इसके लिये हम पहले एकाच्, अनेकाच् धातुओं को पहिचानें -

एकाच् अनेकाच् धातु पहिचानने की विधि -

ध्यान रखिये कि धातुओं के अनुबन्धों की इत् संज्ञा करने के बाद, जो धातु बचता है, उसमें यदि एक अच् हो, तो ही उसे एकाच् धातु समझना चाहिये। जैसे - डुपचष् पाके यह धातु है। देखने में तो इसमें तीन अच् हैं, किन्तु इसमें 'डु', चकारोत्तर 'अ' तथा 'ष्' की इत् संज्ञा होकर यह बचता है - 'पच्'। अब इसमें एक ही 'अच्' होने से यह एकाच् धातु है। इसी प्रकार वद्, पठ्, लिख्, खाद्, भुज्, आदि धातु, एकाच् धातु हैं।

धातुपाठ को देखने पर हम पाते हैं कि जागृ, ऊर्णु, दरिद्रा, चकासृ, दीधी तथा वेवी इन ६ धातुओं को छोड़कर भ्वादि से क्र्यादि गण के मध्य आने वाले सारे धातु एकाच् ही हैं, जैसे पठ्, लिख्, बुध् आदि।

भ्वादि से क्र्यादिगण के मध्य आने वाले ये जो एकाच् धातु हैं, उनमें भी यदि सन्, यङ् आदि कोई भी प्रत्यय लग जाता है, तो उस प्रत्यय के मिल जाने के कारण, ये धातु भी अनेकाच् हो जाते हैं। जैसे - पठ् + सन् = पिपठिष / पठ् + णिच् = पाठि / पठ् + यङ् = पापठ्य आदि। देखिये, पठ् धातु तो एकाच् था, परन्तु यङ् प्रत्यय लगने पर, अब यह अनेकाच् हो गया है।

चुरादिगण के प्रत्येक धातु में स्वार्थिक णिच् प्रत्यय लगा रहता है। णिच् प्रत्यय लगा रहने के कारण, चुरादिगण के सारे धातु अनेकाच् ही होते हैं, यह जानना चाहिये। जैसे - चुर् + णिच् = चोरि, गण् + णिच् = गणि, आदि।

अब हम विचार करें कि लिट् लकार में किन किन धातुओं को द्वित्व नहीं होता। इसके लिये सूत्र इस प्रकार हैं -

१. **कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि / कास्यनेकाच आम् वक्तव्यः** (वा) - लोक में अर्थात् भाषा में, लिट् परे होने पर, कास् धातु को, तथा जो भी अनेकाच् धातु हैं, जैसे - चकासृ, दीधी, वेवी, चुलुम्प, दरिद्रा, आदि उनको, तथा प्रत्यय लगाकर अनेकाच् बने हुए पाठि, पिपठिष, पापठ्य, आदि प्रत्ययान्त धातुओं को, लिट् परे होने पर, द्वित्व नहीं होता, अपितु इनसे आम् प्रत्यय लगता है।

सूत्र में चूँकि 'अमन्त्रे = वेद को छोड़कर' कहा है, अतः वेद में इन्हें द्वित्व ही होता है, आम् प्रत्यय नहीं होता है।

इसके अपवाद - ऊर्णोतेश्च प्रतिषेधो वक्तव्यः (वा.) - अनेकाच् धातुओं में ऊर्णु धातु को द्वित्व होता है, आम् प्रत्यय नहीं होता। प्रोर्णुनाव।

२. **इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः** - 'ऋच्छ्' धातु को छोड़कर जितने भी इजादि गुरुमान् धातु हैं, उन्हें भी लिट् लकार के प्रत्ययों के परे होने पर, द्वित्व नहीं होता, अपितु उनसे आम् प्रत्यय लगता है।

इजादि गुरुमान् धातु का अर्थ है - जिनके आदि में इच् अर्थात् 'अ' के अलावा कोई भी स्वर हो, तथा जिनमें गुरु वर्ण हो।

इजादि गुरुमान् धातु इस प्रकार हैं -

एध्	ओख्	एज्	ईज्	एठ्	ईट्	ऊठ्	ओण्	ईर्क्ष्य्
ईर्ष्य्	इन्व्	ईक्ष्	ईष्	उच्छ्	ईष्	ईह्	ऊह्	उक्ष्
ऊष्	एष्	ऊर्व्	ऊय्	इन्द्	इन्ख्	ईन्ख्	इङ्ग्	ऋज्ज्
उञ्छ्	उङ्ख्	ईर्	ईड्	ईश्	ईङ्	ऋम्फ्	उम्भ्	उब्ज्
उन्द्।								

इसके अपवाद - ऋच्छ् धातु भी इजादि गुरुमान् धातु है, किन्तु इससे आम् न होकर इसे द्वित्व ही होता है।

३. **दयायासश्च** - जो दय्, अय्, आस् धातु हैं, इन्हें भी लिट् लकार के प्रत्ययों के परे होने पर द्वित्व नहीं होता, अपितु आम् प्रत्यय लगता है।

४. **उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम्** - जागृ धातु, उष् धातु, विद् धातु, से लिट् लकार के प्रत्ययों के परे होने पर, विकल्प से आम् प्रत्यय लगता है।

जब आम् प्रत्यय नहीं लगता, तब द्वित्व होकर भी रूप बन सकते हैं -

जजागार, उवोष, विवेद। इन्हें बनाने की विधि इनके प्रसङ्ग में बतलायेंगे।

५. **भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च** - भी, ह्री, भृ, हु धातुओं से लिट् लकार के प्रत्ययों के परे होने पर, विकल्प से श्लुवद्भाव होता है।

अर्थात् वे सारे कार्य होते हैं जो श्लु प्रत्यय परे होने पर किये जाते हैं। अर्थात् इन्हें 'श्लौ' सूत्र से द्वित्व भी होता है तथा आम् प्रत्यय भी लगता है।

जब आम् प्रत्यय नहीं लगता तब द्वित्व हो सकता है - बिभाय, जिह्राय, बभार, जुहाव। इन्हें बनाने की विधि इनके प्रसङ्ग में बतलायेंगे।

अभी तक हमने उन सारे धातुओं का विचार किया, जिनसे लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर उन्हें द्वित्व नहीं होता, अपितु उनसे आम् प्रत्यय लगाकर कृ, भू अथवा अस् धातु के लिट् लकार के बने बनाये रूप लगा दिये जाते हैं।

धातुओं में, आम् प्रत्यय कैसे लगायें ?

अजन्त धातुओं में, आम् प्रत्यय लगाने की विधि

भी - बिभी + आम् - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - बिभे + आम् / एचोऽयवायावः सूत्र से अयादेश करके - बिभ् + अय् + आम् = बिभयाम्।

ह्री - जिह्री + आम् - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - जिह्रे + आम् / एचोऽयवायावः सूत्र से अयादेश करके - जिह्र् + अय् + आम् = जिह्रयाम्।

भृ - बिभृ + आम् / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके बिभर् + आम् = बिभराम्।

हु - जुहु + आम् / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - जुहो + आम्, एचोऽयवायावः सूत्र से अवादेश करके - जुहव् + अव् + आम् = जुहवाम्।

जागृ + आम् सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके जागर् + आम् = जागराम्।

णिजन्त धातु - चोरि + आम् - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - चोरे + आम्, एचोऽयवायावः सूत्र से अयादेश करके चोरय् + आम् = चोरयाम्।

गणि + आम् - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - गणे + आम्, एचोऽयवायावः सूत्र से अयादेश करके - गणय् + आम् = गणयाम्।

हलन्त धातुओं में आम् प्रत्यय लगाने की विधि

पुगन्तलघूपधस्य च - कित्, ङित्, से भिन्न, सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अङ्ग की उपधा के लघु इक् को गुण होता है अर्थात् उपधा

के लघु इ को ए / लघु उ को ओ / लघु ऋ को अर् / ऐसा गुण होता है।

यथा - उष् + आम् = ओष् + आम् - ओषाम्।

इसके अपवाद - 'उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम्' सूत्र में अदन्त विद धातु होने के कारण इसे गुण नहीं होता - विद + आम् / 'अतो लोपः' सूत्र से 'अ' का लोप करके - विद् + आम् = विदाम्।

जिनकी उपधा में लघु इक् न हो, ऐसे हलन्त धातुओं को भी कुछ नहीं होता -

दय्	+	आम्	=	दयाम्
एध्	+	आम्	=	एधाम्
ऋज्ज्	+	आम्	=	ऋज्जाम् आदि।

आमः - आम् से परे ओने वाले लकारप्रत्यय का लुक् होता है। यथा - चोरयाम् + लिट् = चोरयाम्। दयाम् + लिट् = दयाम्, आदि।

कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि - जिन धातुओं से आम् प्रत्यय लगता है, उन धातुओं से आम् प्रत्यय लगने के बाद लिट्परक कृ, भू, अस् धातुओं का अनुप्रयोग होता है।

अतः ध्यान रहे कि जिस भी धातु से हमने आम् प्रत्यय लगाया है, वह धातु जिस भी पद का है उसी पद के कृ, भू, अस्, धातु के लिट् लकार के रूप उन आमन्त धातुओं से लगा देना चाहिये।

अभी हम कृ, भू या अस् धातुओं के लिट् लकार के बने बनाए रूप दे रहे है। इन्हें बनाने की विधि आगे यथास्थान बतलायेंगे।

कृ धातु के लिट् लकार के रूप

परस्मैपद			आत्मनेपद		
चकार	चक्रतुः	चक्रुः	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
चकर्थ	चक्रथुः	चक्र	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
चकार, चकर	चकृव	चकृम	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे

अस् धातु के लिट् लकार के रूप

परस्मैपद			आत्मनेपद		
आस	आसतुः	आसुः	आसे	आसाते	आसिरे
आसिथ	आसथुः	आस	आसिषे	आसाथे	आसिध्वे
आस	आसिव	आसिम	आसे	आसिवहे	आसिमहे

भू धातु के लिट् लकार के रूप

परस्मैपद			आत्मनेपद		
बभूव	बभूवतुः	बभूवुः	बभूवे	बभूवाते	बभूविरे
बभूविथ	बभूवथुः	बभूव	बभूविषे	बभूवाथे	बभूविध्वे
बभूव	बभूविव	बभूविम	बभूवे	बभूविवहे	बभूविमहे

कृ धातु का अनुप्रयोग करके चुर् धातु के लिट् लकार के रूप -

परस्मैपद

चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चक्रतुः	चोरयाञ्चक्रुः
चोरयाञ्चकर्थ	चोरयाञ्चक्रथुः	चोरयाञ्चक्र
चोरयाञ्चकार / चोरयाञ्चकर	चोरयाञ्चकृव	चोरयाञ्चकृम

आत्मनेपद

चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चक्राते	चोरयाञ्चक्रिरे
चोरयाञ्चकृषे	चोरयाञ्चक्राथे	चोरयाञ्चकृढ्वे
चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चकृवहे	चोरयाञ्चकृमहे

भू धातु का अनुप्रयोग करके चुर् धातु के लिट् लकार के रूप -

परस्मैपद

चोरयाम्बभूव	चोरयाम्बभूवतुः	चोरयाम्बभूवुः
चोरयाम्बभूविथ	चोरयाम्बभूवथुः	चोरयाम्बभूव
चोरयाम्बभूव	चोरयाम्बभूविव	चोरयाम्बभूविम

आत्मनेपद

चोरयाम्बभूवे	चोरयाम्बभूवाते	चोरयाम्बभूविरे
चोरयाम्बभूविषे	चोरयाम्बभूवाथे	चोरयाम्बभूविध्वे
चोरयाम्बभूवे	चोरयाम्बभूविवहे	चोरयाम्बभूविमहे

अस् धातु का अनुप्रयोग करके चुर् धातु के लिट् लकार के रूप -

परस्मैपद

चोरयामास	चोरयामासतुः	चोरयामासुः
चोरयामासिथ	चोरयामासथुः	चोरयामास
चोरयामास	चोरयामासिव	चोरयामासिम

आत्मनेपद

चोरयामासे	चोरयामासाते	चोरयामासिरे
चोरयामासिषे	चोरयामासाथे	चोरयामासिध्वे
चोरयामासे	चोरयामासिवहे	चोरयामासिमहे

इसी प्रकार सारे आमन्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाइये।

अब हम उन धातुओं का विचार करें जिन्हें लिट् लकार में द्वित्व होता है

ऊपर जिन धातुओं से आम् प्रत्यय कहा गया है उन धातुओं को छोड़कर जो भी धातु शेष बचे, उन सब धातुओं को लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर द्वित्व होता है। द्वित्व करने वाला सूत्र है -

लिटि धातोरनभ्यासस्य - लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर, हलादि धातु के प्रथम अवयव एकाच् को द्वित्व होता है तथा अजादि धातु के द्वितीय अवयव एकाच् को द्वित्व होता है।

ध्यान रहे कि जिन धातुओं से लिट् लकार में आम् प्रत्यय नहीं लगता, उन सारे धातुओं को ही आप इन सूत्रों से द्वित्व कीजिये तथा द्वित्व करके, आगे कहे जाने वाले अभ्यासकार्य कीजिये।

अब हम धातुओं को द्वित्व करें -

द्वित्व करने की विधि भी हम तीन हिस्सों में बतलायेंगे -

१. हलादि धातुओं को द्वित्व करने की विधि

लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर हलादि धातुओं में से, वच्, स्वप्, यज्, वप्, वह्, वस्, वद्, व्येञ् ह्वेञ्, श्वि, ग्रह्, ज्या, वय् ,व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, भ्रस्ज्, प्रच्छ्, द्युत्, व्यथ्, इन २१ धातुओं को सम्प्रसारण होता है। अतः ये २१ धातु सम्प्रसारणी धातु कहलाते हैं।

इन २१ सम्प्रसारणी धातुओं के द्वित्व तथा अभ्यासकार्य की विधि सबसे अन्त में बतलायेंगे। इन्हें अभी छोड़ दीजिये।

अब इनसे बचे हुए वद्, पठ्, लिख्, खाद्, भुज्, आदि हलादि धातुओं को देखिये। इन हलादि धातुओं को द्वित्व करने की बतला रहे हैं।

इन्हें ऊपर कहे हुए **'लिटि धातोरनभ्यासस्य'** सूत्र से इस प्रकार पूरा

का पूरा द्वित्व कर कर दीजिये, अर्थात् एक धातु को दो बना दीजिये। यथा -

पठ्	को	पठ्	पठ्
वद्	को	वद्	वद्
गम्	को	गम्	गम्
नम्	को	नम्	नम्
लुभ्	को	लुभ्	लुभ्
लिख्	को	लिख्	लिख्
खाद्	को	खाद्	खाद्
मूष्	को	मूष्	मूष्
भुज्	को	भुज्	भुज्
ज्ञा	को	ज्ञा	ज्ञा
श्रि	को	श्रि	श्रि
द्रु	को	द्रु	द्रु
स्रु	को	स्रु	स्रु

भू धातु के लिये विशेष विधि -

भुवो वुग्लुङ्लिटोः - भू धातु को 'वुक्' का आगम होता है, लुङ् तथा लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर।

भू + लिट् लकार के प्रत्यय / 'वुक्' का आगम होकर - भूव् + लिट् लकार के प्रत्यय। 'वुक्' का आगम करने के बाद इसे द्वित्व करके -

भूव्	को	भूव्	भूव्

एजन्त धातुओं के लिये विशेष विधि -

एजन्त हलादि धातुओं में से व्येञ् तथा वेञ् धातु सम्प्रसारणी धातु हैं, इनकी विधि आगे बतला रहे हैं।

अतः इन दो को छोड़कर शेष एजन्त धातुओं को 'आदेच उपदेशेऽशिति' सूत्र से पहिले आत्व करके, तब द्वित्व कीजिये -

ग्लै	-	ग्ला	को	गा ग्ला
म्लै	-	म्ला	को	मा म्ला
ध्यै	-	ध्या	को	ध्या ध्या
शो	-	शा	को	शा शा

सो - सा को सा सा आदि।

पूर्वोऽभ्यासः - इस द्वित्व प्रकरण में जब भी जिस भी धातु को द्वित्व होता है, उसमें पूर्व वाले धातु का नाम अभ्यास होता है। यथा - नम् धातु को जब हमने नम् नम् बना दिया, तब पहिले वाले 'नम्' का नाम होगा अभ्यास।

इसी प्रकार गम् - गम् गम् में पूर्व वाला गम् / लुभ् - लुभ् लुभ् में पूर्व वाला लुभ् / श्रि - श्रि श्रि में पूर्व वाला श्रि, अभ्यास हैं यह जानिये।

द्वित्व करने के बाद हमें इस प्रकार अभ्यासकार्य करना चाहिये -

अभ्यासकार्य

१. हलादिः शेषः - अभ्यास में जो हल् आदि में है, वह आदि हल् शेष रहता है, तथा जो हल् आदि में नहीं हैं, उन हलों का लोप हो जाता है।

अब अभ्यास के धातुओं को देखिये, इनमें जो पहिला हल् तथा पहिला अच् है उसे बचा लीजिये, शेष का लोप कर दीजिये। जैसे - पठ् पठ् को देखिये, इसमें पूर्व वाला पठ् अभ्यास है, इस अभ्यास में पहिला हल् प् है तथा पहिला अच् अ है, इन्हें मिलाकर बना 'प'। इसे बचा लीजिये तथा शेष का **हलादिः शेषः** से लोप कर दीजिये, तो बनेगा - पपठ्। **'हलादिः शेषः'** सूत्र से, आदि हल् के अलावा, अन्य हलों का लोप कर देना अभ्यासकार्य है।

ज्ञा ज्ञा को देखिये, इसमें पूर्व वाला 'ज्ञा' अभ्यास है। इस अभ्यास में पहिला हल् 'ज्' है तथा पहिला अच् 'आ' है, इन्हें मिलाकर बना 'जा'। इसे बचा लीजिये तथा शेष का **हलादिः शेषः** से लोप कर दीजिये, तो बनेगा - जाज्ञा।

अब कुछ धातुओं को द्वित्व करके, अभ्यास के 'पहिले हल् + पहिले अच्' को बचाकर शेष का लोप करके देखिये -

पठ्	को	पठ् पठ्	प पठ्
वद्	को	वद् वद्	व वद्
लिख्	को	लिख् लिख्	लि लिख्
खाद्	को	खाद् खाद्	खा खाद्
मूष्	को	मूष् मूष्	मू मूष्
भुज्	को	भुज् भुज्	भु भुज्
भूष्	को	भूष् भूष्	भू भूष्
मील्	को	मील् मील्	मी मील्

नी	को	नी नी	नी नी
भूव्	को	भूव् भूव्	भू भूव्
ज्ञा	को	ज्ञा ज्ञा	जा ज्ञा
श्रि	को	श्रि श्रि	शि श्रि
द्रु	को	द्रु द्रु	दु द्रु
स्रु	को	स्रु स्रु	सु स्रु

हलादिः शेषः के अपवाद -

शर्पूर्वाः खयः - अभ्यास में शर् पूर्वक खय् शेष बचते है और अन्य हलों का लोप हो जाता है।

अतः यदि ऐसे हलादि धातु हों जिनके आदि में शर् अर्थात् स्, श्, ष् हों तथा उन स्, श्, ष् के बाद खय् अर्थात् किसी भी वर्ग का प्रथम या द्वितीय अक्षर हो, जैसे स्था, स्फुल्, स्तुभ्, स्तम्भ्, स्पर्ध्, स्पृश्, श्च्युत् आदि में है, तब इन धातुओं के अभ्यासों में से, द्वितीय हल् तथा प्रथम अच् को मिलाकर जो भी अक्षर बने उसे बचा लीजिये, और शेष का लोप कर दीजिये। इसे करके देखिये -

स्पर्ध् - स्पर्ध् स्पर्ध् को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में पवर्ग का प्रथम अक्षर प् है। अतः इस अभ्यास के द्वितीय हल् 'प्' तथा प्रथम अच् 'अ', इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'प' को बचा लीजिये। और शेष का **शर्पूर्वाः खयः** से लोप कर दीजिये - स्पर्ध् - स्पर्ध् स्पर्ध् को पस्पर्ध्।

स्था - स्था स्था को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में तवर्ग का द्वितीय अक्षर थ् है, अतः इस अभ्यास के द्वितीय हल् थ् तथा प्रथम अच् आ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'था' को बचा लीजिये। और शेष का **शर्पूर्वाः खयः** से लोप कर दीजिये - स्था - स्था स्था को थास्था।

स्तम्भ् - स्तम्भ् स्तम्भ् को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में तवर्ग का प्रथम अक्षर त् है, अतः इस अभ्यास के द्वितीय हल् त् तथा प्रथम अच् अ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'त' को बचा लीजिये। और शेष का **शर्पूर्वाः खयः** से लोप कर दीजिये - स्तम्भ् - स्तम्भ् स्तम्भ् को तस्तम्भ्।

स्फुल् स्फुल् को देखिये। इसमें अभ्यास के द्वितीय हल् त् तथा प्रथम अच् अ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'त' को बचा लीजिये। शेष का **शर्पूर्वाः खयः** से लोप करके - स्फुल् स्फुल् = पुस्फुल्।

श्च्युत् को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में श् है, उस श् के बाद में

चवर्ग का प्रथम अक्षर च् है। अतः इस अभ्यास के द्वितीय हल् च् तथा प्रथम अच् उ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'चु' को बचा लीजिये। और शेष का **शर्पूर्वाः खयः** से लोप कर दीजिये - श्च्युत् को चुश्च्युत्।

जिनमें स्, श्, या ष् के बाद, किसी भी वर्ग का प्रथम या द्वितीय अक्षर हो, ऐसे धातु इस प्रकार हैं -

स्पर्ध्	-	प स्पर्ध्	स्कुन्द्	-	कु स्कुन्द्
स्पन्द्	-	प स्पन्द्	स्तुच्	-	तु स्तुच्
स्फूर्ज्	-	फू स्फूर्ज्	स्फुट्	-	फु स्फुट्
स्तम्भ्	-	त स्तम्भ्	स्कम्भ्	-	क स्कम्भ्
स्तुभ्	-	तु स्तुभ्	स्खद्	-	ख स्खद्
स्खल्	-	ख स्खल्	स्थल्	-	थ स्थल्
स्पश्	-	प स्पश्	स्कन्द्	-	क स्कन्द्
स्तिघ्	-	ति स्तिघ्	स्थुड्	-	थु स्थुड्
स्फुर्	-	फु स्फुर्	स्फुल्	-	फु स्फुल्
स्फुड्	-	फु स्फुड्	स्फुड्	-	फु स्फुड्
स्फिट्ट्	-	फि स्फिट्ट्	स्तुप्	-	तु स्तुप्
स्तन्	-	त स्तन्	स्कु	-	कु स्कु
स्तॄ	-	तॄ स्तॄ	स्तु	-	तु स्तु
ष्ठिव्	-	ठि ष्ठिव्	स्ता	-	ता स्ता
स्था	-	था स्था	स्त्या	-	ता स्त्या।

२. **उरत्** - अभ्यास के अन्त में आने वाले, ऋ, ॠ, को 'अ' होता है। यह 'अ' उरण् रपरः सूत्र की सहायता से 'अर्' हो जाता है।

देखिये कि यदि किसी अभ्यास के अन्त में ऋ, ॠ, हों, जैसे - कृ - कृ कृ में है, तो ऐसे अभ्यासों के अन्तिम ऋ ,ॠ को इस सूत्र से अर् बनाइये और हलादिः शेषः सूत्र से 'र्' का लोप कर दीजिये। यथा -

हृ	-	हृ हृ	-	हर् हृ	-	ह हृ
कृ	-	कृ कृ	-	कर् कृ	-	क कृ
भृ	-	भृ भृ	-	भर् भृ	-	भ भृ
तृ	-	तृ तृ	-	तर् तृ	-	त तृ

यदि 'हलादि: शेष:' सूत्र से अभ्यास के हलों का लोप करने के बाद किसी अभ्यास के अन्त में ऋ, ॠ, आ गये हों, जैसे - वृत् - वृत् वृत् - वृ वृत् में है / तो ऐसे अभ्यासों के अन्तिम ऋ ,ॠ को भी इसी सूत्र से अर् बनाइये और हलादि: शेष: सूत्र से 'र्' का लोप कर दीजिये। यथा -

वृष्	-	वृष् वृष्	-	वृ वृष्	-	वर् वृष्	-	व वृष्
कृष्	-	कृष् कृष्	-	कृ कृष्	-	कर् कृष्	-	क कृष्
हृष्	-	हृष् हृष्	-	हृ हृष्	-	हर् हृष्	-	ह हृष्
वृत्	-	वृत् वृत्	-	वृ वृत्	-	वर् वृत्	-	व वृत्

३. **ह्रस्व:** - अभ्यास के दीर्घ स्वर को ह्रस्व होता है।

जैसे - खाद् - खा खाद् में पूर्व वाले 'खा' का नाम अभ्यास है, उसे ह्रस्व होकर ख खाद् बन जायेगा। इसी प्रकार मी मील् को मि मील् / भू भूष् को भु भूष् / भू भूव् को भु भूव् आदि बनाइये। ह्रस्व इस प्रकार होते हैं -

आ का ह्रस्व	अ	-	यथा	-	खा खाद्	-	ख खाद्
ई का ह्रस्व	इ	-	यथा	-	नी नी	-	नि नी
ऊ का ह्रस्व	उ	-	यथा	-	भू भूव्	-	भु भूव्
ए का ह्रस्व	इ	-	यथा	-	से सेव्	-	सि सेव्
ओ का ह्रस्व	उ	-	यथा	-	गो गोष्ट्	-	गु गोष्ट्
औ का ह्रस्व	उ	-	यथा	-	ढौ ढौक्	-	ढु ढौक्

४. **कुहोश्चु:** - अभ्यास के कवर्ग और हकार के स्थान पर चवर्ग आदेश होता है।

अत: अब अभ्यास को देखिये। उसमें स्थित कवर्ग के वर्ण को आप चवर्ग का वर्ण बना दीजिये। ध्यान रहे कि वर्ण का क्रमाङ्क वही रहे - जैसे क को च, ख को छ, ग को ज, घ को झ। यदि अभ्यास में ह हो तो उस ह को ज बना दीजिये। इसे 'चुत्व' करना कहते हैं। यथा -

कृ	कृ कृ	क कृ	च कृ
खन्	खन् खन्	ख खन्	छ खन्
गम्	गम् गम्	ग गम्	ज गम्
घृ	घृ घृ	घर् घृ	झ घृ
हृ	हृ हृ	ह हृ	ज हृ

हस्	हस् हस्	ह हस्	ज हस्
हन्	हन् हन्	ह हन्	ज हन्
ग्रह्	ग्रह् ग्रह्	ग ग्रह्	ज ग्रह्

अभ्यासाच्च - अभ्यास से परे जो हन् धातु का हकार, उसे कवर्गादेश होकर घ् हो जाता है। जैसे - हन् - जहन् - जघन्।

५. **अभ्यासे चर्च** - अभ्यास के झश् को जश् तथा खय् को चर् होता है।

अतः यदि अभ्यास में वर्ग का चतुर्थाक्षर हो, तो उसे उसी वर्ग का तृतीयाक्षर बना दीजिये, इसे जश्त्व करना कहते हैं, तथा यदि अभ्यास में वर्ग का द्वितीयाक्षर है तो उसे उसी वर्ग का प्रथमाक्षर बनाइये। इसे चर्त्व करना कहते हैं। उदाहरण-

चर्त्व		जश्त्व	
थु थुड्	तुं थुड्	भ भ्रज्ज्	ब भ्रज्ज्
छ खन्	च खन्	झ झर्झ्	ज झर्झ्
फ फल्	प फल्	ढु ढौक्	डु ढौक्
फ फण्	प फण्	भु भूव्	बु भूव् आदि।

भवतेरः - भू धातु के अभ्यास के 'उ' को 'अ' होता है। यथा - बुभूव् - बभूव्।

हमने देखा कि अभ्यास में रहने वाले कवर्ग के सारे व्यञ्जनों में तथा अन्य वर्गों के केवल दूसरे, चौथे व्यञ्जनों में, तथा हकार में ही, ये ऊपर कहे हुए परिवर्तन होते हैं। यदि अभ्यास में दूसरे, चौथे व्यञ्जनों, कवर्ग और हकार के अलावा कोई भी व्यञ्जन हैं, तब आप उन्हें कुछ मत कीजिये। जैसे -

चल्	-	च चल्	-	च चल्
जप्	-	ज जप्	-	ज जप्
टीक्	-	टि टीक्	-	टि टीक्
डी	-	डि डी	-	डि डी
तॄ	-	त तॄ	-	त तॄ
दल्	-	द दल्	-	द दल्
नम्	-	न नम्	-	न नम्
पत्	-	प पत्	-	प पत्
बाध्	-	ब बाध्	-	ब बाध्

मील्	-	मि मील्	-	मि मील्
यम्	-	य यम्	-	य यम्
वृध्	-	व वृध्	-	व वृध्
रम्	-	र रम्	-	र रम्
लप्	-	ल लप्	-	ल लप्
शास्	-	श शास्	-	श शास्
सृ	-	स सृ	-	स सृ

जिस अभ्यास के हलों में परिवर्तन होता है, उन अभ्यासों को सादेश अभ्यास कहा जाता है।

जिस अभ्यास के हलों में कोई परिवर्तन नहीं होता, उन अभ्यासों को अनादेश अभ्यास कहा जाता है।

यह हलादि धातुओं को द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करने की विधि पूर्ण हुई।

२. अजादि धातुओं को द्वित्व करने की विधि

एकाच् धातुओं में जो धातु अच् से शुरू हो रहे हैं जैसे इष्, उख्, अर्च्, अस्, अञ्ज्, अङ्ग्, अञ्च्, ऋच्छ् आदि, इन्हें पूर्ववत् लिटि धातोरनभ्यासस्य सूत्र से ही द्वित्व कीजिये। द्वित्व करने के बाद 'हलादिः शेषः' सूत्र से इनके सारे हलों का लोप करके, इनमें केवल प्रथम अच् को ही बचाइये। यथा -

इष्	इष् इष्	को	इ इष्
उख्	उख् उख्	को	उ उख्
ऋ	ऋ ऋ	को	ऋ ऋ
ऋच्छ्	ऋच्छ् ऋच्छ्	को	ऋ ऋच्छ्
अर्च्	अर्च् अर्च्	को	अ अर्च्
अत्	अत् अत्	को	अ अत्
अट्	अट् अट्	को	अ अट्
अञ्ज्	अञ्ज् अञ्ज्	को	अ अञ्ज्
अश्	अश् अश्	को	अ अश्

हम पढ़ चुके हैं कि अभ्यास के अन्त में यदि 'ऋ' हो तो **'उरत्'** सूत्र से अभ्यास के अन्तिम ऋ, ॠ को अर् बनाइये तथा बाद में 'हलादिः शेषः' सूत्र से र् का लोप करके अर् को 'अ' बनाइये।

ऋच्छ्	को	ऋ ऋच्छ्	अ ऋच्छ्
ऋ	को	ऋ ऋ	अ ऋ बना दीजिये।

अभ्यास के आदि 'अ' को दीर्घ करना –

अत आदेः – धातु को द्वित्वादि करने के बाद, यदि अभ्यास के आदि में 'अ' दिखे तो उसको दीर्घ कर दीजिये, चाहे वह अकारादि धातु का 'अ' हो, चाहे वह ऋकारादि धातु के अभ्यास का उरत् से बना हुआ 'अ' हो, यथा –

अत्	को	अ अत्	आ अत्
अट्	को	अ अट्	आ अट्
अर्च्	को	अ अर्च्	आ अर्च्
अञ्ज्	को	अ अञ्ज्	आ अञ्ज्
अङ्ग्	को	अ अङ्ग्	आ आङ्ग्

ऋकारादि धातु के अभ्यास के आदि में भी 'अ' ही होता है, अतः उसे भी दीर्घ कीजिये –

ऋच्छ्	को	ऋ ऋच्छ्	अ ऋच्छ्	आ ऋच्छ्
ऋ	को	ऋ ऋ	अ ऋ	आ ऋ

दीर्घ किये हुए अभ्यास के 'आ' के बाद वाले द्विहल् धातु को नुट् का आगम करना –

तस्मान्नुड् द्विहलः – अब दीर्घ करने के बाद देखिये कि अभ्यास के दीर्घ बनाये हुए 'आ' के बाद जिस धातु में दो हल् हों, उस धातु को नुट् का आगम कर दीजिये।

देखिये कि आ अर्च्, आ अञ्ज्, आ अङ्ग्, आ ऋच्छ्, आदि में दीर्घ बनाये हुए 'आ' के बाद दो हल् वाले धातु हैं। इस दो हल् वाले धातु को नुट् का आगम कर दीजिये। नुट् में 'उ' 'ट्' की इत् संज्ञा करके 'न्' शेष बचाइये। यथा –

अर्च्	अ अर्च्	आ अर्च्	आ	+ न्	+	अर्च्	=	आनर्च्
अञ्ज्	अ अञ्ज्	आ अञ्ज्	आ	+ न्	+	अञ्ज्	=	आनञ्ज्
अङ्ग्	अ अङ्ग्	आ आङ्ग्	आ	+ न्	+	अङ्ग्	=	आनङ्ग्
ऋच्छ्	ऋ ऋच्छ्	आ ऋच्छ्	आ	+ न्	+	ऋच्छ्	=	आनृच्छ्

विशेष – ऋ – ऋ ऋ – आ ऋ में, अभ्यास के दीर्घ बनाये हुए 'आ' के बाद दो अच् नहीं हैं, अतः इसे नुट् का आगम नहीं होगा। यह ऐसा ही रहेगा।

अश्नोतेश्च - अश् धातु में दो हल् नहीं हैं, तब भी इस धातु को नुट् का आगम होता है। यथा -

अश् अ अश् आ अश् आ + न् + अश् = आनश्

नुड्विधौ ऋकारैकदेशो रेफो हल्त्वेन गृह्यते - यद्यपि 'ऋ' अच् है, तथापि इसमें एक 'र्' की ध्वनि मिली हुई है।

नुट् करते समय इस 'र्' को हम हल् मान लेते हैं और ऐसे ऋकारघटित अजादि धातुओं को द्विहल् मानकर, इन्हें भी नुट् का आगम करते हैं। जैसे -

ऋज् - द्वित्व होकर - ऋज् ऋज् / हलादि: शेष: होकर - ऋ ऋज् / उरत् होकर - अर् ऋज् / पुन: हलादि: शेष: होकर - अ ऋज् / अत आदे: से अभ्यास के 'अ' को दीर्घ होकर - आ ऋज् / ऋकारघटित होने के कारण इसे द्विहल् मानकर, नुट् का आगम करके - आ न् ऋज् = आनृज्। इसी प्रकार ऋफ् से आनृफ् / ऋध् से आनृध् / ऋत् से आनृत् आदि बनाइये।

ऊर्णु धातु को द्वित्व करने की विधि -

अजादेर्द्वितीयस्य - अनेकाच् अजादि धातु के द्वितीय अवयव एकाच् को द्वित्व होता है।

ऊर्णु धातु को देखिये। यह अजादि अनेकाच् धातु है। इसका द्वितीय अवयव एकाच् है 'णु'। यह वास्तव में 'नु' ही है, जो कि र् से परे होने के कारण रषाभ्यां नो ण: सूत्र से णत्व होकर णु बन गया है। इसको द्वित्व होकर बनेगा 'ऊर्णुनु'।

जब भी धातु को द्वित्व होगा तब अभ्यास को इतने कार्य तो होंगे ही। अत: ये सामान्य कार्य हैं, इन्हें कण्ठस्थ करके ही आगे बढ़िये।

३. सम्प्रसारणी धातुओं को द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करने की विधि

इसके लिये पहिले सम्प्रसारण जानें -

इग्यण: सम्प्रसारणम् - य्, व्, र्, ल् को इ, उ, ऋ, लृ हो जाना सम्प्रसारण होना कहलाता है। जैसे - यज् - इज् / वच् - उच् / व्रश्च् - वृश्च् / आदि।

यहाँ यह जानना चाहिये कि -

न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् - जिन धातुओं में य्, व्, र्, ल् में से दो वर्ण हों, जैसे व्यथ्, व्रश्च् आदि में हैं, वहाँ जो बाद में हो, उसको ही सम्प्रसारण

करना चाहिये, पूर्व वाले को नहीं। अर्थात् व्रश्च् में र् को और व्यथ् में य् को सम्प्रसारण होता है, व् को नहीं।

लिटि वयो यः - लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर वय् धातु के 'य्' को सम्प्रसारण न होकर 'उ' को ही सम्प्रसारण होता है। वय् - उय्।

सम्प्रसारणाच्च - जब भी य् व् र् ल् को इ, उ, ऋ, लृ यह सम्प्रसारण होता है, तब सम्प्रसारण के बाद में जो भी वर्ण होता है, उसको पूर्वरूप होता है।

पूर्वरूप - पूर्वरूप का अर्थ होता है पूर्व के वर्ण में मिल जाना।

जैसे - वप् में तीन वर्ण हैं व् अ प्। इनमें से व् को सम्प्रसारण करके जब हम उ बनाते हैं तब - उ अ प् यह बनता है। यहाँ सम्प्रसारण उ है, उसके बाद जो 'अ' है, उस 'अ' को इस सूत्र से पूर्वरूप होकर बनता है - उप्

व्यच् में चार वर्ण हैं व् य् अ च्। इनमें से य् को सम्प्रसारण करके जब हम इ बनाते हैं तब - व् इ अ च् यह बनता है। यहाँ सम्प्रसारण 'इ' है, उसके बाद जो 'अ' है, उस अ को पूर्वरूप होकर बनता है - व् इ च् = विच्।

स्वप् में चार वर्ण हैं स् व् अ प्। इनमें से व् को सम्प्रसारण करके जब हम 'उ' बनाते हैं तब - स् उ अ प् यह बनता है। यहाँ सम्प्रसारण उ है, उसके बाद जो अ है उस अ को इस सूत्र से पूर्वरूप होकर बनता है - स् उ प् = सुप्।

हम सम्प्रसारण करना सीख चुके हैं। अब हम सम्प्रसारणी धातुओं को द्वित्व करें।

सम्प्रसारणी धातु - वच्, स्वप् तथा यज्, वप्, वह्, वस्, वद्, वेञ्, ह्वेञ्, श्वि, व्येञ्, ये ११ धातु 'वच्यादि धातु' कहलाते हैं। ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज्, ये ९ धातु 'ग्रह्यादि धातु' कहलाते हैं।

ये वच्यादि तथा ग्रह्यादि धातु सम्प्रसारणी हैं। अब हम इन वच्यादि तथा ग्रह्यादि धातुओं को द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करने की विधि जानें।

इन धातुओं को द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करने की विधि जानने के लिये पहिले लिट् लकार के प्रत्ययों को देखिये। ये प्रत्यय इस प्रकार हैं -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
णल् (अ)	अतुः	उः	ए	आते	इरे
थल् (थ)	अथुः	अ	से	आथे	ध्वे
णल् (अ)	व	म	ए	वहे	महे

अब इन प्रत्ययों के दो वर्ग बनाइये।

१. णल्, थल्, णल् प्रत्यय २. शेष १५ प्रत्यय

णल्, थल्, णल् प्रत्यय परे होने पर, सम्प्रसारणी धातुओं को द्वित्वाभ्यासकार्य करने की विधि

लिट् लकार के णल्, थल्, णल् प्रत्यय परे होने पर, वच्यादि तथा ग्रह्यादि धातुओं को पहिले 'लिटि धातोरनभ्यासस्य' सूत्र से द्वित्व कीजिये -

जैसे - वच् - वच् वच् / स्वप् - स्वप् स्वप् / यज् - यज् यज् / वप् - वप् वप् / व्रश्च् - व्रश्च् व्रश्च् आदि।

लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् - लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर, वच्यादि तथा ग्रह्यादि धातुओं के अभ्यास को सम्प्रसारण होता है। यथा -

वच् वच् - उच् वच् / स्वप् स्वप् - सुप् स्वप् / यज् यज् - इज् यज् / वप् वप् - उप् वप् / व्रश्च् - वृश्च् व्रश्च् आदि।

सम्प्रसारण करने के बाद ही 'हलादि: शेष:' सूत्र से अभ्यास के अनादि हलों का लोप कीजिये। उच् वच् - उवच् / सुप् स्वप् - सुष्वप् / इज् यज् - इयज् / उप् वप् - उवप् / वृश्च् व्रश्च् - वृ व्रश्च् आदि।

इन धातुओं को द्वित्व, सम्प्रसारण तथा अभ्यासकार्य इस प्रकार हुए -

धातु	**धातु को द्वित्व करके**	**अभ्यास को सम्प्रसारण करके**	**हलादि: शेष: सूत्र से अभ्यास के अनादि हलों का लोप करके**
वच्	वच् वच्	उच् वच्	उवच्
स्वप्	स्वप् स्वप्	सुप् स्वप्	सुष्वप्
यज्	यज् यज्	इज् यज्	इयज्
वप्	वप् वप्	उप् वप्	उवप्
वह्	वह् वह्	उह् वह्	उवह्
वस्	वस् वस्	उस् वस्	उवस्
व्यध्	व्यध् व्यध्	विध् व्यध्	विव्यध्
ज्या	ज्या ज्या	जि ज्या	जिज्या
व्येञ्	व्ये व्ये	वि व्ये	विव्ये
वद्	वद् वद्	उद् वद्	उवद्

व्यच्	व्यच् व्यच्	विच् व्यच्	विव्यच्
वश्	वश् वश्	उश् वश्	उवश्

वय् धातु - ध्यान रहे कि वस्तुतः वय् कोई धातु नहीं है। लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर, 'वेञो वयिः' सूत्र से वेञ् धातु को ही विकल्प से वय् आदेश हो जाता है। वय् - द्वित्व करके - वय् वय् / अभ्यास को सम्प्रसारण करके - उय् वय् / हलादिः शेषः करके - उवय्।

जब इसे वय् आदेश नहीं होता, तब इसे 'वेञः' सूत्र से सम्प्रसारण नहीं होता है, तब 'आदेच उपदेशेऽशिति' सूत्र से इसके ए को 'आ' आदेश होकर 'वा' बनता है, और इस 'वा' को द्वित्व होता है - वेञ् - वा - वा वा - ववा।

ग्रह् धातु - द्वित्व करके ग्रह् ग्रह् / 'लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्' सूत्र से अभ्यास को सम्प्रसारण करके गृह् ग्रह् / हलादिः शेषः करके गृ ग्रह् / उरत् से अभ्यास के 'ऋ' को अर् करके - गर् ग्रह् / पुनः हलादिः शेषः करके - ग ग्रह् / कुहोश्चुः से चुत्व करके - 'जग्रह्' बनता है।

अत्यावश्यक - इन धातुओं से ये सारे कार्य करके हमने जो भी धातु तैयार किये हैं, उन्हीं में लिट् लकार के णल्, थल्, णल् प्रत्यय लगाइये।

व्रश्च्, प्रच्छ् धातु - द्वित्व करके व्रश्च् व्रश्च् / **'लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्'** सूत्र से अभ्यास को सम्प्रसारण करके वृश्च् व्रश्च् / हलादिः शेषः करके वृ व्रश्च् / उरत् से अभ्यास के 'ऋ' को अर् करके - वर् व्रश्च् / पुनः हलादिः शेषः करके - व व्रश्च्। इसी प्रकार प्रच्छ् से पप्रच्छ् बनाइये।

भ्रज्ज् धातु - द्वित्व करके भ्रज्ज् भ्रज्ज् / **'लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्'** सूत्र से अभ्यास को सम्प्रसारण करके भृज्ज् भ्रज्ज् / हलादिः शेषः करके भृ भ्रज्ज् / उरत् से अभ्यास के 'ऋ' को अर् करके - भर् भ्रस्ज् / पुनः हलादिः शेषः करके - भ भ्रस्ज् / अभ्यासे चर्च से भ को जश्त्व करके - 'बभ्रज्ज्' बनता है।

श्वि धातु के लिये विशेष विधि -

विभाषा श्वेः - लिट् लकार के सारे प्रत्यय परे होने पर श्वि धातु को द्वित्व होने के पहिले ही विकल्प से सम्प्रसारण होता है।

श्वि - सम्प्रसारण होने पर - शु - अब द्वित्व होकर शुशु।

सम्प्रसारण न होने पर श्वि - श्वि श्वि - शिश्वि।

ह्वेञ् धातु के लिये विशेष विधि -

अभ्यस्तस्य च - लिट् लकार के सारे प्रत्यय परे होने पर ह्वेञ् धातु को द्वित्व होने के पहिले ही नित्य सम्प्रसारण होता है। ह्वे - हु - हु हु - जुहु।

व्यथ् धातु - व्यथो लिटि - लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर, द्वित्वादि करने के बाद, व्यथ् धातु के अभ्यास को सम्प्रसारण होता है।

व्यथ् - द्वित्व करके - व्यथ् व्यथ् / व्यथो लिटि सूत्र से अभ्यास को सम्प्रसारण करके - विथ् व्यथ् / 'हलादि: शेष:' सूत्र से अभ्यास के अनादि हलों का लोप करके - विव्यथ् /

द्युत् धातु, तथा ण्यन्त स्वप् धातु -

द्युतिस्वाप्यो: सम्प्रसारणम् - द्युत् धातु, तथा ण्यन्त स्वप् धातु के अभ्यास को सम्प्रसारण होता है।

द्युत् - द्वित्व करके - द्युत् द्युत् / द्युतिस्वाप्यो: सम्प्रसारणम् सूत्र से अभ्यास को सम्प्रसारण करके - दित् द्युत् / सम्प्रसारण करने के बाद 'हलादि: शेष:' सूत्र से अभ्यास के अनादि हलों का लोप करके - दिद्युत्।

शेष १५ प्रत्यय परे होने पर, इन धातुओं को द्वित्वाभ्यासकार्य करने की विधि

वचिस्वपियजादीनाम् किति - वच्यादि धातुओं को सम्प्रसारण होता है, कित् प्रत्यय परे होने पर।

ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च -
ग्रह्यादि धातुओं को सम्प्रसारण होता है कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर।

असंयोगाल्लिट् कित् - लिट् लकार के ये १५ अपित् लिट् प्रत्यय, जब असंयोगान्त धातुओं के बाद आते हैं, तब इन्हें कित् न होते हुए भी कित्वत् मान लिया जाता है।

देखिये कि वच्यादि तथा ग्रह्यादि धातुओं में से वच्, स्वप् तथा यज्, वप्, वह्, वस्, वद्, वेञ्, व्येञ्, ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, इन धातुओं के अन्त में संयोग नहीं है। अत: इन असंयोगान्त धातुओं के बाद आने वाले ये १५ अपित् लिट् प्रत्यय, कित्वत् हैं।

इन कित्वत् अपित् लिट् प्रत्ययों के परे होने पर इन धातुओं को पहिले सम्प्रसारण कीजिये, उसके बाद ही इन्हें द्वित्व करके अभ्यासकार्य कीजिये।

जैसे - वच् + अतु: - वचिस्वपियजादीनाम् किति सूत्र से सम्प्रसारण करके - उच् + अतु: / अब द्वित्व करके - उच् उच् + अतु: / हलादि शेष:

से च् का लोप करके - उ उच् + अतुः / सवर्ण दीर्घ सन्धि करके - ऊचतुः।

इसलिये णल्, थल्, णल्, इन पित् लिट् प्रत्ययों के लिये इन धातुओं से अलग अङ्ग बनते हैं तथा शेष १५ कित् लिट् प्रत्ययों के लिये अलग अङ्ग।

पित् लिट् प्रत्ययों में द्वित्व करके 'लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्' सूत्र से अभ्यास को सम्प्रसारण होता है और अपित् लिट् प्रत्ययों में धातु को सम्प्रसारण करके द्वित्व होता है। अतः दोनों प्रकार के प्रत्ययों के लिये अङ्ग इस प्रकार बने -

धातु		**णल्, थल्, णल्, प्रत्यय इनमें लगाइये**		**शेष १५ कित् लिट् प्रत्यय इनमें लगाइये**
वच्	-	उवच्	-	ऊच्
स्वप्	-	सुस्वप्	-	सुषुप्

आदेशप्रत्यययोः - इण् प्रत्याहार अर्थात् इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र्, ल्, तथा कवर्ग के बाद आने वाले आदेश के सकार को तथा प्रत्यय के सकार को षकार आदेश होता है। यथा - सुसुप् = सुषुप्।

यज्	-	इयज्	-	ईज्
वप्	-	उवप्	-	ऊप्
वह्	-	उवह्	-	ऊह्
वस्	-	उवस्	-	ऊष्

शासिवसिघसीनाञ्च - शास्, वस् घस् धातुओं के इण् और कवर्ग से परे आने वाले सकार को मूर्धन्य षकार आदेश होता है।

वस् धातु को सम्प्रसारण करके - उस्, द्वित्व और अभ्यासकार्य करके - ऊस्, बन जाने के बाद, स् को ष् आदेश करके ऊष्, बना है।

वद्	-	उवद्	-	ऊद्
व्यध्	-	विव्यध्	-	विविध्
ज्या	-	जिज्या	-	जिजि
व्येञ्	-	विव्ये	-	विवि
व्यच्	-	विव्यच्	-	विविच्
वश्	-	उवश्	-	ऊश्

वेञ् धातु - लिटि वयो यः - लिट् परे होने पर वय् के य् को सम्प्रसारण नहीं होता है।

वश्चास्यान्यतरस्यां किति - लिट् लकार के कित् प्रत्यय परे होने पर

वय् धातु के 'य्' को विकल्प से व् आदेश हो जाता है - उवय् - ऊय्, ऊव्।

वय् - उवय् - ऊय् / ऊव्
ग्रह् - जग्रह् - जगृह्

ह्वेञ्, श्वि, धातुओं को सभी लिट् प्रत्ययों में द्वित्व के पहिले ही सम्प्रसारण हो जाता है। अत: ये सभी प्रत्ययों में एक से रहते हैं। जैसे -

ह्वेञ् - जुहु - जुहु
श्वि - शुशु - शुशु
श्वि - शिश्वि - शिश्वि

व्रश्च्, प्रच्छ्, भज्ज् धातु संयोगान्त हैं। अत: इनसे परे आने वाले १५ अपित् लिट् प्रत्यय कित् नहीं होते। अत: इन धातुओं को सम्प्रसारण नहीं होता। इसलिये ये सभी प्रत्ययों में एक से ही रहते हैं। जैसे -

व्रश्च् - वव्रश्च् - वव्रश्च्
प्रच्छ् - पप्रच्छ् - पप्रच्छ्
भ्रस्ज् - बभ्रज्ज् - बभ्रज्ज्

द्युत्, व्यथ् धातु न तो वच्यादि हैं, न ही गृह्यादि। अत: इन धातुओं को सम्प्रसारण नहीं होता। इसलिये ये सभी प्रत्ययों में एक से ही रहते हैं। जैसे-

द्युत् - दिद्युत् - दिद्युत्
व्यथ् - विव्यथ् - विव्यथ्

यह २१ सम्प्रसारणी धातुओं को द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करने की विधि पूर्ण हुई। इन्हें याद कर लीजिये। इसके साथ ही सारे धातुओं को द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करने की विधि भी पूर्ण हुई।

सारे धातुओं का द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करने के बाद, अब इडागम का विचार करें -

लिट् लकार के प्रत्ययों की इडागम व्यवस्था

भगवान् पाणिनि ने अष्टाध्यायी में, सारी इडागम व्यवस्था के बीच में ही लिट् लकार की इडागम व्यवस्था के सूत्र दे दिये हैं। इनसे लिट् लकार की इडागम व्यवस्था समझना अत्यन्त कठिन है। अत: हमने यहाँ लिट् लकार की इस इडागम व्यवस्था को खण्ड खण्ड करके सुबोध्य बना दिया है।

पहिले पृष्ठ २९ - ३४ पर दी हुई औत्सर्गिक इडागम व्यवस्था को भली -भाँति हृदयङ्गम कर लें, उसके बाद ही इसे समझें।

इसके लिये लिट् लकार के प्रत्ययों को पुनः देखिये -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
णल् (अ)	अतुः	उः	ए	आते	इरे
थल् (थ)	अथुः	अ	से	आथे	ध्वे
णल् (अ)	व	म	ए	वहे	महे

लिट् च - लिट् लकार के ये सारे प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

ध्यान दें कि इस सूत्र से लिट् लकार में लगने वाले, सारे प्रत्यय आर्धधातुक हैं किन्तु इन १८ प्रत्ययों में से थल् (थ) व, म, से, ध्वे, वहे, महे, ये ७ प्रत्यय वल् प्रत्याहार से प्रारम्भ होने के कारण वलादि आर्धधातुक प्रत्यय हैं।

आर्धधातुकस्येड् वलादेः - वलादि आर्धधातुक प्रत्यय यदि सेट् धातुओं से लगते हैं, तो ही उन्हें इट् का आगम होता है।

अतः इस सूत्र के अनुसार भी थल् (थ) व, म, से, ध्वे, वहे, महे, इन सात वलादि प्रत्ययों को ही इडागम हो सकता है। शेष ११ प्रत्यय वलादि नहीं हैं, अतः इन्हें कभी भी इडागम नहीं हो सकता।

थल् (थ) व, म, से, ध्वे, वहे, महे, इन ७ प्रत्यय वलादि प्रत्ययों को भी तभी इडागम हो सकता है, जब वह धातु भी सेट् हो, जिससे ये लगे हैं।

जैसे - पुपू + थ / इसे देखिये। यहाँ प्रत्यय के पूर्व में आकर एक इट् (इ) बैठ जाता है। पुपू + थ - पुपू + इ + थ = पुपविथ आदि। जिन धातुओं से परे आने वाले प्रत्यय के पूर्व में, इट् बैठता है, उन्हें हम सेट् धातु कहते हैं।

चकृ + थ / इसे देखिये। यहाँ प्रत्यय के पूर्व में आकर इट् (इ) नहीं बैठता है। चकृ + थ = चकर्थ आदि। जिन धातुओं से परे आने वाले प्रत्यय के पूर्व में, इट् नहीं बैठता है, उन्हें हम अनिट् धातु कहते हैं।

ददा + थ / यहाँ प्रत्यय के पूर्व में आकर इट् (इ) विकल्प से बैठता है। ददा + थ = ददाथ / ददा + इट् + थ = ददिथ आदि। जिन धातुओं से परे आने वाले प्रत्यय के पूर्व में, इट् विकल्प से बैठता है, उन्हें हम वेट् धातु कहते हैं।

लिट् लकार के इन सातों प्रत्ययों की इडागम व्यवस्था को एक साथ समझने में बहुत उलझन है, अतः इसे हम खण्ड खण्ड करके बतला रहे हैं, जिससे कि यह सरलता से समझ में आ सके।

पहिले हम वे धातु बतला रहे हैं, जिनसे परे आने वाले, थल्, व, म, से, ध्वे, वहे, महे, इन सातों लिट् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है -

'सातों प्रत्ययों में वेट्' धातु

स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा -

धातुपाठ के ऐसे धातु देखिये, जिनमें 'ऊ' की इत् संज्ञा हुई हो, उन्हें ऊदित् धातु कहते हैं। ऐसे धातु २४ हैं। इन ऊदित् धातुओं से परे आने वाले, सारे सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

धातुपाठ में पढ़े गये सारे 'ऊदित् धातु' इस प्रकार हैं -

अक्षू	तक्षू	त्वक्षू	तञ्चू	ओव्रश्चू	अञ्जू	मृजू	क्लिदू
स्यन्दू	षिधू	गुपू	त्रपूष्	कृपू	क्षमू	क्षमूष्	अशू
क्लिशू	गाहू	गुहू	गृहू	तृहू	तृन्हू	स्तृहू	वृहू।

अतः इन ऊदित् धातुओं से परे आने वाले लिट् लकार के थल्, व, म, से, ध्वे, वहे, महे, इन सातों लिट् प्रत्ययों को विकल्प से इस प्रकार इडागम कीजिये-

अक्षू - आनष्ठ, आनक्षिथ / आनक्ष्व, आनक्षिव / आनक्ष्म, आनक्षिम।

अञ्जू - आनङ्क्थ, आनञ्जिथ / आनञ्ज्व, आनञ्जिव / आनञ्ज्म, आनञ्जिम।

अशू - आनक्षे, आनशिषे / आनड्ढ्वे, आनशिध्वे / आनश्वहे, आनशिवहे / आनश्महे, आनशिमहे।

क्लिदू - चिक्लेत्थ, चिक्लेदिथ / चिक्लिद्व, चिक्लिदिव / चिक्लिद्म, चिक्लिदिम।

क्लिशू - चिक्लेष्ठ, चिक्लेशिथ / चिक्लिश्व, चिक्लिशिव / चिक्लिश्म, चिक्लिशिम।

कृपू - चक्लृप्से, चक्लृपिषे / चक्लृब्ध्वे, चक्लृपिध्वे / चक्लृप्वहे, चक्लृपिवहे / चक्लृप्महे, चक्लृपिमहे।

क्षमूष् - चक्षंसे, चक्षमिषे / चक्षन्ध्वे, चक्षमिध्वे / चक्षण्वहे, चक्षमिवहे / चक्षण्महे, चक्षमिमहे।

क्षमू - चक्षन्थ, चक्षमिथ / चक्षण्व, चक्षमिव / चक्षण्म, चक्षमिम।

गुपू - जुगोप्थ, जुगोपिथ / जुगुप्व, जुगुपिव / जुगुप्म, जुगुपिम।

गृहू - जघृक्षे, जगृहिषे / जघृढ्वे, जगृहिध्वे / जगृह्वहे, जगृहिवहे / जगृह्महे, जगृहिमहे।

गाहू - जघाक्षे,जगाहिषे / जघाढ्वे, जगाहिध्वे / जगाह्वहे, जगाहिवहे / जगाह्महे, जगाहिमहे।

गुहू - जुघुक्षे, जुगूहिषे / जुघुढ्वे, जुगूहिध्वे / जुगुह्वहे, जुगूहिवहे / जुगुह्महे, जुगूहिमहे।

तक्षू - ततष्ठ, ततक्षिथ / ततक्ष्व, ततक्षिव / ततक्ष्म, ततक्षिम।

त्रपूष् - त्रेप्से, त्रेपिषे / त्रेब्ध्वे, त्रेपिध्वे / त्रेप्वहे, त्रेपिवहे / त्रेप्महे, त्रेपिमहे।

तृहू - ततर्ढ, ततर्हिथ / ततृह्व, ततृहिव / ततृह्म, ततृहिम।

त्वक्षू - तत्वष्ठ, तत्वक्षिथ / तत्वक्ष्व, तत्वक्षिव / तत्वक्ष्म, तत्वक्षिम।

तृन्हू - ततृण्ढ, ततृंहिथ / ततृंह्व, ततृंहिव / ततृंह्म, ततृंहिम

मृजू - ममार्ष्ठ, ममार्जिथ / ममृज्व, ममृजिव / ममृज्म, ममृजिम।

वृहू - ववर्ढ, ववर्हिथ / ववृह्व, ववृहिव / ववृह्म, ववृहिम

व्रश्चू - वव्रष्ठ, वव्रश्चिथ / वव्रश्च्व, वव्रश्चिव / वव्रश्च्म, वव्रश्चिम

स्तृहू - तस्तर्ढ, तस्तर्हिथ / तस्तृह्व, तस्तृहिव / तस्तृह्म, तस्तृहिम।

स्यन्दू - सस्यन्त्से, सस्यन्दिषे / सस्यन्द्ध्वे, सस्यन्दिध्वे / सस्यन्द्वहे, सस्यन्दिवहे / सस्यन्द्महे, सस्यन्दिमहे।

षिधू - सिषेद्ध, सिषेधिथ / सिषिध्व, सिषिधिव / सिषिध्म, सिषिधिम

रधादिभ्यश्च - रध्, नश्, तृप्, दृप्, द्रुह्, मुह्, स्निह्, स्नुह्, इन आठ रधादि धातुओं से परे आने वाले इन आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है। अतः इन सातों लिट् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम कीजिये। यथा -

तृप् - ततर्प्थ, ततर्पिथ, तत्रप्थ / ततृप्व, ततृपिव / ततृप्म, ततृपिम।

दृप् - ददर्प्थ, ददर्पिथ, दद्रप्थ / ददृप्व, ददृपिव / ददृप्म, ददृपिम—

द्रुह् - दुद्रोढ, दुद्रोग्ध, दुद्रोहिथ / दुद्रुह्व, दुद्रुहिव / दुद्रुह्म,, दुद्रुहिम।

मुह् - मुमोढ, मुमोग्ध, मुमोहिथ / मुमुह्व, मुमुहिव / मुमुह्म, मुमुहिम।

नश् - ननंष्ठ, नेशिथ / नेश्व, नेशिव / नेश्म, नेशिम।

रध् - ररद्ध, ररन्धिथ / ररन्ध्व, ररन्धिव / ररन्ध्म, ररन्धिम।

स्निह् - सिस्नेढ, सिस्नेग्ध, सिस्नेहिथ / सिस्निह्व, सिस्निहिव / सिस्निह्म, सिस्निहिम।

स्नुह् - सुस्नोढ, सुस्नोग्ध, सुस्नोहिथ / सुस्नुह्व, सुस्नुहिव / सुस्नुह्म, सुस्नुहिम।

निरः कुषः - निर् उपसर्गपूर्वक कुष् धातु से परे आने वाले इन सातों लिट् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है -

यथा - निश्चुकोष्ठ, निश्चुकोषिथ / निश्चुकुषिव, निश्चुकुष्व / निश्चुकुषिम, निश्चुकुष्म।

ये कुल ३३ धातु हैं। इनसे परे आने वाले लिट् लकार के थल्, व, म, से, ध्वे, वहे, महे, इन सातों लिट् प्रत्ययों को भी विकल्प से इडागम कीजिये।

अब हम वे धातु बतला रहे हैं, जिनसे परे आने वाले, थल्, व, म, से, ध्वे, वहे, महे, इन सातों लिट् प्रत्ययों को इडागम नहीं होता है -

'सातों प्रत्ययों में अनिट्' धातु

कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि - यह सूत्र इस प्रकार नियम करता है -

१. कृ, सृ, भृ, स्तु, द्रु, स्रु, श्रु, इन ७ क्रादि धातुओं से परे आने वाले थल्, व, म, से, ध्वे, वहे, महे, इन सातों सेट् लिट् प्रत्ययों को इडागम नहीं होता।

२. इनके अलावा सारे धातुओं से परे आने वाले इन सातों सेट् लिट् प्रत्ययों को इडागम होता है।

कृ धातु - चकर्थ, चकृव, चकृम, चकृषे, चकृढ्वे, चकृवहे, चकृमहे।

कृञोऽसुट इति वक्तव्यम् - सम् उपसर्ग के साथ कृ धातु को सुट् का आगम होता है। सुट् का आगम होने पर कृ धातु सेट् हो जाता है। संचस्करिथ, संचस्करिव, संचस्करिम, आदि।

सृ धातु - ससर्थ, ससृव, ससृम।
भृ धातु - बभर्थ, बभृव, बभृम बभृषे, बभृढ्वे, बभृवहे, बभृमहे।
स्तु धातु - तुष्टोथ, तुष्टुव, तुष्टुम।
द्रु धातु - दुद्रोथ, दुद्रुव, दुद्रुम।
स्रु धातु - सुस्रोथ, सुस्रुव, सुस्रुम।
श्रु धातु - शुश्रोथ, शुश्रुव, शुश्रुम

वृङ्, वृञ् धातु - लोक में इन वृङ्, वृञ् धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय को इडागम होता है, शेष छह प्रत्ययों को नहीं। ववरिथ, ववृव, ववृम, ववृषे, ववृढ्वे, ववृवहे, ववृमहे।

वेद में 'बभूथाततन्थजगृम्भववर्थेति निगमे' सूत्र से निपातन होकर थल् को भी इडागम नहीं होता है - ववर्थ, ववृव, ववृम, ववृषे, ववृढ्वे, ववृवहे, ववृमहे।

इन २४ ऊदित्, ८ रधादि, १ निष्कुष्, तथा ८ क्रादि = ४१ धातुओं से बचे हुए धातुओं की इडागम व्यवस्था

इन ४१ धातुओं को छोड़कर, अब जो भी धातु बचे, उनकी इडागम व्यवस्था हम सात प्रत्ययों के दो वर्ग करके समझें -

१. व, म, से, ध्वे, वहे, महे, इन छह लिट् प्रत्ययों की इडागम व्यवस्था। इनकी इडागम व्यवस्था को हम 'लिटि' कहकर बतलायेंगे।

२. थल् प्रत्यय की इडागम व्यवस्था। इसकी इडागम व्यवस्था को हम 'थलि' कहकर बतलायेंगे।

उक्त ४१ धातुओं से बचे हुए धातुओं की छह प्रत्ययों में इडागम व्यवस्था

देखिये कि ऊपर कहे हुए ४१ धातुओं से भिन्न जो भी धातु बचे हैं, उन धातुओं से परे आने वाले **व, म, से, ध्वे, वहे, महे,** इन छह लिट् प्रत्ययों को 'कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि' सूत्र में कहे हुए क्रादि नियम से नित्य इडागम होता है। अर्थात् ४१ धातुओं से बचे हुए सारे धातु इन छह लिट् प्रत्ययों में सेट् ही होते हैं। यथा -

मुच् - मुमुचिव, मुमुचिम, मुमुचिषे, मुमुचिध्वे, मुमुचिवहे, मुमुचिमहे।
वह् - ऊहिव, ऊहिम, ऊहिषे, ऊहिध्वे, ऊहिवहे, ऊहिमहे।

उक्त ४१ धातुओं से बचे हुए धातुओं की थल् प्रत्यय में इडागम व्यवस्था

इसके लिये तीन सूत्र हैं -

अचस्तास्वत्थल्यनिटो नित्यम् - २९ - ३४ पृष्ठ पर दी हुई औत्सर्गिक इडागम व्यवस्था में जो अजन्त धातु तास् प्रत्यय परे रहने पर अनिट् कहे गये हैं, वे धातु थल् प्रत्यय परे भी अनिट् ही होंगे।

उपदेशेऽत्वत: - औत्सर्गिक इडागम व्यवस्था में दिये हुए १०२ अनिट् हलन्त धातुओं में से जिन धातुओं में 'अ' है, उन्हें अत्वत् धातु कहते हैं। ऐसे अनिट् हलन्त अत्वत् परस्मैपदी धातु २८ हैं। इन अत्वत् अनिट् हलन्त परस्मैपदी धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय को इडागम नहीं होता है। जैसे -

ऋतो भारद्वाजस्य - किन्तु भारद्वाज आचार्य के मत में ऋकारान्त धातुओं के अलावा सारे धातु थल् प्रत्यय परे होने पर सेट् हो जायेंगे।

तात्पर्य यह कि अजन्त और अत्वत् धातु भारद्वाज के मत में थलि सेट् हैं और पाणिनि मत में थलि अनिट् हैं, तो उन्हें थलि वेट् मानना चाहिये।

इन तीनों सूत्रों के अर्थ को मिलाकर थल् प्रत्यय की इडागमव्यवस्था का निष्कृष्टार्थ इस प्रकार बनता है -

आकारान्त तथा एजन्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय की इडागम व्यवस्था -

१. 'व्येञ्' धातु से परे आने वाले थल् प्रत्यय को नित्य इडागम होता है। अर्थात् यह धातु 'थलि सेट्' होता है। यथा - व्ये - संविव्ययिथ।

२. व्येञ् धातु को छोड़कर शेष सारे के सारे आकारान्त तथा एजन्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है।

यथा - दा - ददाथ, ददिथ / ग्लै - जग्लाथ, जग्लिथ।

इकारान्त, ईकारान्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय की इडागम व्यवस्था -

१. श्वि, श्रि, इन दो धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय को नित्य इडागम होता है। यथा - श्वि - शिश्वयिथ / श्रि - शिश्रयिथ।

२. शेष इकारान्त,ईकारान्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है। चि - चिचेथ, चिचयिथ / नी - निनेथ, निनयिथ / क्री - चिक्रेथ, चिक्रयिथ।

उकारान्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय की इडागम व्यवस्था -

१. **यु, रु, नु, स्नु, क्षु, क्ष्णु धातु** - इन छह उकारान्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय को नित्य इडागम होता है। **यथा** - यु - युयविथ / रु - रुरविथ / नु - नुनविथ / स्नु - सुस्नविथ / क्षु - चुक्षविथ / क्ष्णु - चुक्ष्णविथ।

२. **शेष उकारान्त धातु** - इनको छोड़कर शेष उकारान्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है। हु - जुहोथ, जुहविथ।

ऊकारान्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय की इडागम व्यवस्था इस प्रकार है -

धूञ् धातु से परे आने वाले थल् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है। धू - दुधविथ, दुधोथ। इसके अलावा सारे ऊकारान्त धातुओं से परे आने

वाले थल् प्रत्यय को नित्य इडागम होता है। पू - पुपविथ / भू - बभूविथ / लू - लुलविथ / नू - नुनविथ।

ऋकारान्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय की इडागम व्यवस्था -

१. **ऋ धातु** - थल् प्रत्यय को नित्य इडागम होता है - आरिथ।

२. **स्वृ धातु** - इससे परे आने वाले थल् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है - सस्वर्थ, सस्वरिथ।

३. **शेष ऋकारान्त धातु** - अब जो ऋकारान्त धातु शेष बचते हैं, इनसे परे आने वाले थल् प्रत्यय को इडागम नहीं होता है। यथा -

हृ - जहर्थ / धृ - दधर्थ / स्मृ - सस्मर्थ / सृ - ससर्थ / भृ - बभर्थ / कृ - चकर्थ आदि। सुट् का आगम होने पर कृ धातु 'कृञोऽसुट इति वक्तव्यम्' इस वार्तिक से सेट् हो जाता है। संचस्करिथ।

ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय की इडागम व्यवस्था -

सारे ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय को नित्य इडागम होता है। तॄ - तेरिथ।

४१ धातुओं से बचे हुए हलन्त धातुओं के लिये थल् प्रत्यय की इडागम व्यवस्था के दो वर्ग हैं -

थलि वेट् हलन्त धातु -

उपदेशेऽत्वत: के निषेध और ऋतो भारद्वाजस्य के नियम को मिलाकर २८ अत्वत् अनिट् हलन्त परस्मैपदी धातुओं से परे आने वाले लिट् लकार के थल् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है -

शक्	+	थल्	-	शशक्थ	/	शेकिथ
पच्	+	थल्	-	पपक्थ	/	पेचिथ
वच्	+	थल्	-	उवक्थ	/	ऊचिथ
सञ्ज्	+	थल्	-	ससङ्क्थ	/	ससञ्जिथ
रञ्ज्	+	थल्	-	ररङ्क्थ	/	ररञ्जिथ
भज्	+	थल्	-	बभक्थ	/	भेजिथ
त्यज्	+	थल्	-	तत्यक्थ	/	तत्यजिथ
मज्ज्	+	थल्	-	ममङ्क्थ	/	ममज्जिथ

सद्	+	थल्	-	ससत्थ	/	सेदिथ
बन्ध्	+	थल्	-	बबन्ध	/	बबन्धिथ
व्यध्	+	थल्	-	विव्यद्ध	/	विव्यधिथ
तप्	+	थल्	-	ततप्थ	/	तेपिथ
वप्	+	थल्	-	उवप्थ	/	ऊपिथ
शप्	+	थल्	-	शशप्थ	/	शेपिथ
स्वप्	+	थल्	-	सुष्वप्थ	/	सुष्वपिथ
यभ्	+	थल्	-	ययब्थ	/	येभिथ
भ्रस्ज्	+	थल्	-	बभ्रष्ठ	/	बभ्रज्जिथ
यज्	+	थल्	-	इयष्ठ	/	इयजिथ
प्रच्छ्	+	थल्	-	पप्रष्ठ	/	पप्रच्छिथ
गम्	+	थल्	-	जगन्थ	/	जगमिथ
नम्	+	थल्	-	ननन्थ	/	नेमिथ
यम्	+	थल्	-	ययन्थ	/	येमिथ
हन्	+	थल्	-	जघन्थ	/	जघनिथ
दंश्	+	थल्	-	ददंष्ठ	/	ददंशिथ
वस्	+	थल्	-	उवस्थ	/	उवसिथ
वह्	+	थल्	-	उवोढ	/	ऊहिथ
दह्	+	थल्	-	ददग्ध	/	देहिथ
नह्	+	थल्	-	ननद्ध	/	नेहिथ

विभाषा सृजिदृशो: – इन २८ हलन्त धातुओं के अलावा सृज्, दृश् धातुओं से परे आने वाले, थल् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है।

दृश्	+ थल्	-	दद्रष्ठ	/ ददर्शिथ
सृज्	+ थल्	-	सस्रष्ठ	/ ससर्जिथ

इस प्रकार ये ३० धातु थल् प्रत्यय परे होने पर वेट् होते हैं।

अद् धातु –

अद् धातु को 'लिट्यन्यतरस्याम्' सूत्र से लिट् लकार में विकल्प से घस् आदेश होता है। यह धातु चूँकि लुट् लकार में नहीं है, अत: लिट् लकार के थल् प्रत्यय में यह सेट् होता है – जघसिथ।

इडत्यर्तिव्ययतीनाम् - अद् धातु यद्यपि अत्वत् अनिट् हलन्त है, किन्तु इस सूत्र से यह थल् प्रत्यय परे होने पर सेट् ही होता है - अद् + थल् = आदिथ।

वेञ् धातु - वेञ् धातु को लिट् लकार में 'वेञो वयिः' सूत्र से वय् आदेश होता है। यह धातु चूँकि लुट् लकार में नहीं हैं, अतः लिट् लकार के थल् प्रत्यय में यह सेट् ही होता है - उवयिथ।

थलि सेट् हलन्त धातु -

ऊपर कहे गये ३० हलन्त धातुओं को छोड़कर, अब जो भी हलन्त धातु बचे हैं, वे सारे धातु थल् प्रत्यय में सेट् ही होते हैं। यथा -

पेठिथ / गद् - जगदिथ / हस् - जहसिथ / रुद् - रुरोदिथ / अद् - उवदिथ आदि।

वेद के लिये विशेष - वेद में बभूथ, आततन्थ, जगृम्भ, ववर्थ बनते हैं।

यह हलन्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय की इडागम व्यवस्था पूर्ण हुई। इसके साथ ही सारे धातुओं से परे आने वाले लिट् लकार के प्रत्ययों की इडागम व्यवस्था पूर्ण हुई।

इसे यहीं याद कर लीजिये और धातुओं से परे आने वाले लिट् लकार के सातों सेट् प्रत्ययों को इसी के अनुसार इडागम कीजिये।

षत्व विधि

आदेशप्रत्यययोः - इण् प्रत्याहार तथा कवर्ग के बाद आने वाले आदेश के सकार को तथा प्रत्यय के सकार को षकार आदेश होता है। इण् प्रत्याहार का अर्थ है - इउण् / ऋऌक् / एओङ् / ऐऔच् / हयवरट् / लण् /

अर्थात् - इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल।

इनके बाद आने वाले प्रत्यय के सकार को षकार आदेश होता है। यथा - ददिसे = ददिषे / निन्यिसे = निन्यिषे आदि।

लिट् लकार के लिये ढत्व विधि

इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात् - जिस अङ्ग के अन्त में 'इण्' है, ऐसे इणन्त अङ्ग से परे आने वाले आशीर्लिङ् लकार के 'षीध्वम्' प्रत्यय के 'ध्' के स्थान तथा लुङ् लकार के ध्वम् प्रत्यय के 'ध्' के स्थान पर, लिट् लकार के ध्वे प्रत्यय के 'ध्' के स्थान पर 'ढ्' आदेश होता है।

विभाषेटः - किन्तु इणन्त अङ्ग से परे यदि इट् हो, तब उस इट् से

परे आने वाले, इन प्रत्ययों के 'ध्' के स्थान पर विकल्प से 'ढ्' आदेश होता है। इन सूत्रों का निष्कृष्टार्थ इस प्रकार है -

१. जब अङ्ग के अन्त में 'इण्' हो, और उस 'इण्' के बाद 'इट्' न हो, तब उनसे परे आने वाले षीध्वम् तथा 'ध्वे' के 'ध्' को 'इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात्' सूत्र से नित्य 'ढ्' होता है।

जैसे - चकृ + ध्वे = चकृढ्वे / बभृ + ध्वे = बभृढ्वे / ववृ + ध्वे = ववृढ्वे / जगाह् + ध्वे = जघाढ्वे ।

२. जब अङ्ग के अन्त में 'इण्' हो, और उस 'इण्' के बाद 'इट्' हो, तब उनसे परे आने वाले षीध्वम् तथा 'ध्वे' के 'ध्' को 'विभाषेटः' सूत्र से विकल्प से 'ढ्' होता है। जैसे - निनी + इट् + ध्वे = निन्यिढ्वे - निंन्यिध्वे /

लुलू + इट् + ध्वे = लुलुविढ्वे - लुलुविध्वे / शिशी + इट् + ध्वे = शिश्यिढ्वे - शिश्यिध्वे।

लिट् लकार के रूप बनाने के लिये इन सारी विधियों को जानना आवश्यक है। अतः इन सारी विधियों को बुद्धिस्थ करके ही हम आगे चलें।

प्रत्ययों के स्वरूप का निर्धारण करके अङ्गकार्य करना

अब हम द्वित्व करना सीख चुके हैं, अभ्यासकार्य करना सीख चुके हैं, षत्व, ढत्व विधि भी सीख चुके हैं। यह भी जान चुके हैं, कि किस धातु से परे आने वाले किस लिट् प्रत्यय को इडागम किया जाये और किस प्रत्यय को इडागम न किया जाये। अब अङ्गकार्य सीखें।

यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादिप्रत्ययेऽङ्गम् - जिससे भी प्रत्यय लगाया जाता है, उसका नाम अङ्ग हो जाता है। अतः जिस भी धातु से हम प्रत्यय लगायेंगे, उस प्रत्यय के परे रहने पर अब हम उस धातु को अङ्ग कहेंगे।

ध्यान दीजिये कि हमने धातु में लिट् लकार के प्रत्यय लगाकर, धातु को द्वित्व तथा अभ्यासकार्य किया है।

द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करने के बाद, अब धातु का जो रूप तैयार हुआ है, यही लिट् लकार के प्रत्ययों के लिये अङ्ग है। इसी में हमें लिट् लकार के प्रत्यय लगाना है। पुनः लिट् लकार के प्रत्यय देखिये।

लिट् लकार के इन १८ प्रत्ययों में से णल्, थल्, णल्, ये तीन प्रत्यय पित् लिट् प्रत्यय कहलाते हैं और शेष १५ प्रत्यय अपित् लिट् प्रत्यय कहलाते हैं।

१. प्रथम पुरुष का णल् प्रत्यय - इसमें चुटू से ण् की तथा हलन्त्यम् से ल् की इत् संज्ञा होकर 'अ' शेष बचता है। ण् की इत्संज्ञा होने से यह प्रत्यय 'णित्' है।

इस णित् णल् प्रत्यय के परे होने पर, इस प्रकार अङ्गकार्य कीजिये -

अचो ञ्णिति - अजन्त अङ्ग को वृद्धि होती है, ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। यथा -

निनी + णल् - निनै + अ = निनाय
पुपू + णल् - पुपौ + अ = पुपाव
चकृ + णल् - चकार् + अ = चकार आदि।

अत उपधायाः - अदुपध हलन्त धातुओं की उपधा के 'अ' को वृद्धि होती है, ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। जैसे -

पपठ् + णल् - पपाठ् + अ = पपाठ

पुगन्तलघूपधस्य च - कित्, ङित्, से भिन्न, सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अङ्ग की उपधा के लघु इक् को गुण होता है अर्थात् उपधा के लघु इ को ए / लघु उ को ओ / लघु ऋ को अर् / ऐसा गुण होता है।

बिभिद् + णल् - बिभेद् + अ = बिभेद
बुबुध् + णल् - बुबोध् + अ = बुबोध
चकृष् + णल् - चकर्ष् + अ = चकर्ष आदि।

शेष धातुओं की उपधा को कुछ नहीं होता है -

पफक्क् + णल् - पफक्क् + अ = पफक्क आदि।

२. उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय - इसमें भी चुटू से ण् की तथा हलन्त्यम् से ल् की इत् संज्ञा होकर 'अ' शेष बचता है। ण् की इत्संज्ञा होने से इसे भी 'णित्' होना चाहिये, किन्तु -

णलुत्तमो वा - जो उत्तम पुरुष एकवचन का णल् प्रत्यय है, वह णल् प्रत्यय विकल्प से णित् होता है। णित् होने पर तो पूर्ववत् अङ्गकार्य कीजिये।

किन्तु णित् न होने पर -

सार्वधातुकार्धधातुकयोः - इगन्त अङ्ग को गुण होता है, कित्, ङित्, ञित्, णित् से भिन्न सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। यथा -

निनी + णल् - निने + अ = निनय

पुपू + णल् - पुपो + अ = पुपव
चकृ + णल् - चकर् + अ = चकर आदि।

पुगन्तलघूपधस्य च - कित्, ङित्, से भिन्न, सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अङ्ग की उपधा के लघु इक् को गुण होता है अर्थात् उपधा के लघु इ को ए / लघु उ को ओ / लघु ऋ को अर् / ऐसा गुण होता है।

अतः णित् भिन्न णल् प्रत्यय परे होने पर भी -

बिभिद् + णल् - बिभेद् + अ = बिभेद
बुबुध् + णल् - बुबोध् + अ = बुबोध
चकृष् + णल् - चकर्ष् + अ = चकर्ष

३. थल् प्रत्यय - थल् प्रत्यय में हलन्त्यम् सूत्र से ल् की इत् संज्ञा होकर 'थ' शेष बचता है। यह प्रत्यय न तो ञित्, णित् है न कित्, ङित्। यह इन चारों से भिन्न है। थल् प्रत्यय परे होने पर भी इसी प्रकार कार्य कीजिये, क्योंकि यह भी णित्, कित् से भिन्न प्रत्यय है -

निनी + थल् = निनेथ / जुहु + थल् = जुहोथ / चकृ + थल् = चकर्थ आदि। इसी प्रकार -

बिभिद् + इट् + थल् - बिभेद् + इथ = बिभेदिथ
बुबुध् + इट् + थल् - बुबोध् + इथ = बुबोधिथ
चकृष् + इट् + थल् - चकर्ष् + इथ = चकर्षिथ

४. शेष १५ अपित् लिट् प्रत्यय -

ये १५ प्रत्यय अपित् लिट् प्रत्यय कित् न होते हुए भी कभी कभी कित् जैसे हो जाते हैं, और कभी नही होते। अतः हम पहिले यह निर्णय करें कि ये कब कित् जैसे होते हैं, और कब कित् जैसे नहीं होते।

इसके लिये पहिले हम संयोग को जानें -

संयोग किसे कहते हैं ?

ऐसे दो या दो से अधिक व्यञ्जन, जिनके बीच में कोई स्वर न आया हो, उनका नाम संयोग होता है। जैसे - इन्ध् में - न् + ध् का संयोग है। श्रन्थ् में - न् + थ् का संयोग है। व्रश्च् में - श् + च् का संयोग है। भ्रस्ज् में - स् + ज् का संयोग है। ध्वंस् में न् + स् का संयोग है।

जिन धातुओं के अन्त में संयोग होता है, उन्हें हम संयोगान्त धातु कहते

हैं। जैसे - व्रश्च्, भ्रस्ज्, प्रच्छ्, ध्वंस्, भ्रंश्, इन्ध्, श्रन्थ्, ग्रन्थ्, दम्भ्, स्वञ्ज्,आदि धातुओं को देखिये। इनके अन्त में संयोग है। अत: ये संयोगान्त धातु हैं।

ईन्धिभवतिभ्यां च

श्रन्थिग्रन्थिदम्भिस्वञ्जीनामिति वक्तव्यम् - (वार्तिक) - संयोगान्त धातुओं में से **इन्ध्, श्रन्थ्, ग्रन्थ्, दम्भ्, स्वञ्ज्**, ये पाँच संयोगान्त धातु ही ऐसे हैं, जिनसे परे आने वाले, ये १५ अपित् लिट् प्रत्यय, कित् न होते हुए भी कित् जैसे मान लिये जाते हैं।

इन अपित् लिट् प्रत्ययों के कित्वत् होने पर -

'अनिदितां हल उपधाया: क्ङिति' सूत्र से इन धातुओं के 'न्' का लोप होता है। जैसे - शश्रन्थ् + अतु: = श्रेथतु: / ददम्भ् + अतु: = देभतु: आदि।

जिन धातुओं के अन्त में संयोग नहीं होता है, उन्हें हम असंयोगान्त धातु कहते हैं। जैसे - लिख्, बुध्, दिश्, वृष्, कृष्, दा, पा, नी, पू, हु, कृ, वच्, स्वप्, यज्, वप्, वह्, आदि धातुओं को देखिये। इनके अन्त में संयोग नहीं है। अत: ये असंयोगान्त धातु हैं।

असंयोगाल्लिट् कित् - सारे असंयोगान्त धातुओं के बाद आने पर, ये अपित् लिट् प्रत्यय कित् न होते हुए भी कित्वत् मान लिये जाते हैं।

प्रत्ययों के कित्वत् होने पर -

१. सम्प्रसारणी धातुओं को सम्प्रसारण होता है - वप्, वह्, वस्, वद्, व्येञ्, धातुओं को वचिस्वपियजादीनाम् किति सूत्र से तथा, ग्रह्, ज्या, वय् ,व्यध्, वश्, व्यच्, धातुओं को ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च सूत्र से सम्प्रसारण होता है।

सम्प्रसारण होना हम ३०० - ३०२ पृष्ठों पर विस्तार से पढ़ चुके हैं।

२. गुणनिषेध होता है -

क्ङिति च - कित्, ङित्, गित् प्रत्यय परे होने पर न तो धातु के अन्तिम इक् को 'सार्वधातुकार्धधातुकयो:' सूत्र से होने वाला गुण होता है, न ही उपधा के लघु इक् को 'पुगन्तलघूपधस्य' च सूत्र से होने वाला गुण होता है। जैसे - निनी + अतु: - निन्यतु: / चकृ + अतु: - चक्रतु: आदि।

विशेष अङ्गकार्य विशेष अवसर पर बतलाये जायेंगे।

अब हमारे सामने इन १८ प्रत्ययों का स्वरूप स्पष्ट हो चुका है। जैसा

प्रत्यय होता है वैसे ही अङ्गकार्य होते हैं।

ध्यान रहे कि यदि धातु परस्मैपदी है तो परस्मैपद के प्रत्यय लगाइये, और यदि धातु आत्मनेपदी है तो आत्मनेपद के प्रत्यय लगाइये, यदि धातु उभयपदी है तो दानों में से किसी भी पद के प्रत्यय लगाइये।

अब हम धातुओं के लिट् लकार के सारे रूप इस क्रम से बनायें। आकारान्त धातु / इकारान्त धातु / ईकारान्त धातु / उकारान्त धातु / ऊकारान्त धातु / ऋकारान्त धातु / ॠकारान्त धातु।

आकारान्त तथा एजन्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

स्मरण रखिये कि २४ ऊदित्, ८ रधादि, १ निष्कुष्, तथा ८ क्रादि = ४० धातुओं को छोड़कर सारे धातुओं से परे आने वाले व, म, से, ध्वे, वहे, महे, इन छह लिट् प्रत्यय सेट् ही होते हैं। अत: हम अब केवल थल् प्रत्यय की इडागम व्यवस्था की याद दिलायेंगे। आकारान्त तथा एजन्त धातु 'थलि वेट्' होते हैं।

आकारान्त, एजन्त धातु + णल् प्रत्यय

पा - द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - पपा + णल् /

आत औ णल: - आकारान्त अङ्गों से परे आने वाले णल् प्रत्ययों को औ आदेश हो जाता है - पपा + औ / वृद्धिरेचि से वृद्धि होकर = पपौ।

इसी प्रकार -

धा - दधा + णल् - दधा + औ = दधौ
दा - ददा + णल् - ददा + औ = ददौ
मा - ममा + णल् - ममा + औ = ममौ

एजन्त धातु भी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर 'आदेश उपदेशेऽशिति' सूत्र से आकारान्त हो जाते हैं अत: इनके रूप भी ठीक आकारान्त धातुओं के समान ही बनाइये -

ग्लै - ग्ला - जग्ला = जग्लौ
ध्यै - ध्या - दध्या = दध्यौ आदि

यह आकारान्त तथा एजन्त अङ्गों में णल् प्रत्ययों को जोड़ने की विधि समाप्त हुई।

आकारान्त तथा एजन्त धातु + थल् प्रत्यय

थल् प्रत्यय को इडागम न होने पर - दा - ददा + थ = ददाथ

थल् प्रत्यय को इडागम होने पर - ददा + इ + थ

आतो लोप इटि च - आकारान्त धातु के अन्तिम 'आ' का लोप होता है, कित्, ङित् आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, तथा इट् परे होने पर।

अतः इट् परे होने पर 'आ' का लोप करके - ददा + इ + थ - दद् + इ + थ = ददिथ।

इस प्रकार थल् परे होने पर, ददाथ तथा ददिथ, ऐसे दो दो रूप बने।

इसी प्रकार सारे आकारान्त धातुओं से, ददाथ तथा ददिथ के समान ही, पा - पपा - पपाथ, पपिथ / धा - दधा - दधाथ, दधिथ आदि रूप बनाइये।

एजन्त धातुओं के 'एच्' को आदेच उपदेशेऽशिति सूत्र से 'आ' बनाकर इनके रूप भी इसी प्रकार बनाइये -

ध्यै	-	ध्या	=	दध्याथ,	दध्यिथ
म्लै	-	म्ला	=	मम्लाथ,	मम्लिथ
वेञ्	-	वा	=	ववाथ,	वविथ

आकारान्त, एजन्त धातु + लिट् लकार के शेष १५ प्रत्यय

ध्यान दीजिये कि इन १५ लिट् प्रत्ययों के परे होने पर इन प्रत्ययों के कित्त्व, अकित्त्व का विचार 'असंयोगाल्लिट् कित्' सूत्र से अवश्य करना है।

देखिये कि दा - ददा, यह असंयोगान्त अङ्ग है। अतः इससे परे आने वाले अपित् लिट् प्रत्यय 'असंयोगाल्लिट् कित्' सूत्र से कित्वत् होंगे। अतः 'आतो लोप इटि च' सूत्र से धातुओं के अन्तिम 'आ' का लोप करके -

दा	ददा	+	अतुः	-	दद्	+	अतुः	= ददतुः
दा	ददा	+	उः	-	दद्	+	उः	= ददुः
दा	ददा	+	अथुः	-	दद्	+	अथुः	= ददथुः
दा	ददा	+	अ	-	दद्	+	अ	= दद
दा	ददा	+	व	-	दद्	+	इ + व	= ददिव
दा	ददा	+	म	-	दद्	+	इ + म	= ददिम
दा	ददा	+	ए	-	दद्	+	ए	= ददे
दा	ददा	+	आते	-	दद्	+	आते	= ददाते
दा	ददा	+	इरे	-	दद्	+	इरे	= ददिरे

दा	ददा	+	इ + से	-	दद्	+	इ + से	= ददिषे
दा	ददा	+	आथे	-	दद्	+	आथे	= ददाथे
दा	ददा	+	इ + ध्वे	-	दद्	+	इ + ध्वे	= ददिध्वे
दा	ददा	+	ए	-	दद्	+	ए	= ददे
दा	ददा	+	वहे	-	दद्	+	इ + वहे	= ददिवहे
दा	ददा	+	महे	-	दद्	+	इ + महे	= ददिमहे

आकारान्त दा धातु के लिट् लकार के पूरे रूप इस प्रकार बने -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
ददौ	ददतुः	ददुः	ददे	ददाते	ददिरे
ददाथ / ददिथ	ददथुः	दद	ददिषे	ददाथे	ददिध्वे
ददौ	ददिव	ददिम	ददे	ददिवहे	ददिमहे

इसी प्रकार पा - पपा, भा - बभा, मा - ममा, वा - ववा, ला - लला आदि सारे आकारान्त तथा एजन्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाइये।

इसके अपवाद - १. वेञ् धातु -

वेञः - वेञ् धातु को लिट् परे होने पर सम्प्रसारण नहीं होता है।

अतः **'आदेच उपदेशेऽशिति'** सूत्र से वेञ् धातु को वा अन्तादेश करके - वा / द्वित्व तथा अभ्यास कार्य करके ववा। इसके रूप ठीक दा - ददा के समान ही बनाइये।

परस्मैपद			आत्मनेपद		
ववौ	ववतुः	ववुः	ववे	ववाते	वविरे
ववाथ / वविथ	ववथुः	वव	वविषे	ववाथे	वविध्वे
ववौ	वविव	वविम	ववे	वविवहे	वविमहे

इसकी सम्प्रसारण विधि विधि ३०१ - ३०२ पृष्ठों पर देखिये। जब इसे 'वेञो वयिः' सूत्र से वय् आदेश हो, तब णल्, थल्, णल् प्रत्यय 'उवय्' से लगाइये और शेष अपित् लिट् प्रत्यय ऊय्, ऊव् से लगाइये।

उवय् + उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय -

णल् प्रत्यय के णित् होने पर - अत उपधायाः सूत्र से उपधा के 'अ' को वृद्धि करके - उवाय् + अ = उवाय।

णल् प्रत्यय के णित् न होने पर - उवय् + णल् = उवय।

थल् प्रत्यय परे होने पर - उवय् + इट् + थल् = उवयिथ।

शेष १५ कित् लिट् प्रत्यय ऊय् / ऊव् में लगाइये - ऊय् + अतुः = ऊयतुः / ऊव् + अतुः = ऊवतुः। पूरे रूप इस प्रकार बने -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
उवाय	ऊयतुः	ऊयुः	ऊये	ऊयाते	ऊयिरे
	ऊवतुः	ऊवुः	ऊवे	ऊवाते	ऊविरे
उवयिथ	ऊयथुः	ऊय	ऊयिषे	ऊयाथे	ऊयिध्वे
	ऊवथुः	ऊव	ऊविषे	ऊवाथे	ऊविध्वे
उवाय / उवय	ऊयिव	ऊयिम	ऊये	ऊयिवहे	ऊयिमहे
	ऊविव	ऊविम	ऊवे	ऊविवहे	ऊविमहे

२. ज्या धातु - हम जानते हैं कि ज्या धातु को द्वित्वादि तथा अभ्यास को सम्प्रसारण करके 'जिज्या', ऐसा आकारान्त अङ्ग बनता है। अतः इसके रूप णल्, णल् प्रत्ययों में तो ददौ के ही समान जिज्यौ, तथा थल् प्रत्यय में ददिथ, ददाथ के समान जिज्याथ - जिज्यिथ, ही बनते हैं।

किन्तु १५ कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर इस जिज्या में धातु के 'य' को 'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' सूत्र से सम्प्रसारण होकर 'इ' हो जाता है और 'जिजि' यह इकारान्त अङ्ग बनता है। इन १५ प्रत्ययों को इकारान्त अङ्गों में जोड़ने की विधि इस प्रकार है -

एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य - यदि इकारान्त, ईकारान्त अङ्ग में अनेक अच् हों तथा उसके अन्तिम इ, ई के पूर्व में दो या दो से अधिक व्यञ्जनों का संयोग न हो, तब उस इ को यण् आदेश होता है, कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर। यथा -

ज्या - जिजि + अतुः - जिज्य् + अतुः = जिज्यतुः
ज्या - जिजि + उः - जिज्य् + उः = जिज्युः आदि।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

जिज्यौ	जिज्यतुः	जिज्युः
जिज्याथ / जिज्यिथ	जिज्यथुः	जिज्य
जिज्यौ	जिज्यिव	जिज्यिम

इस प्रकार यह धातु णल्, णल्, थल्, प्रत्यय परे होने पर आकारान्त

होता है। शेष १५ प्रत्यय परे होने पर यह धातु इकारान्त हो जाता है।

३. व्येञ् धातु - 'न व्यो लिटि' सूत्र से वेञ् धातु को लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर, आकार अन्तादेश नहीं होता है। इसलिये द्वित्वादि करके - व्ये - व्ये व्ये - विव्ये ऐसा अङ्ग बनता है। 'व्येञ्' धातु **'इडत्यर्तिव्ययतीनाम्'** सूत्र से लिट् लकार के सातों प्रत्ययों में सेट् ही होता है।

अत: इसके रूप इस प्रकार बनेंगे - विव्ये + प्रथम पुरुष का णल् प्रत्यय-

अचो ञ्णिति - अजन्त अङ्ग को वृद्धि होती है ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। विव्यै + अ / एचोऽयवायाव: सूत्र से आय् आदेश करके - विव्याय् + अ - विव्याय।

णलुत्तमो वा - उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय विकल्प से णित् होता है।

उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् होने पर - ठीक इसी प्रकार विव्याय बनाइये।

उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् न होने पर - व्ये - विव्ये + णल् (अ) एचोऽयवायाव: से अयादेश होकर - विव्यय् + अ = विव्यय, यह रूप भी बनता है। इस प्रकार उत्तम पुरुष में दो दो रूप बनते हैं - विव्याय / विव्यय।

विव्ये + इट् + थल् - एचोऽयवायाव: सूत्र से अय् आदेश करके विव्यय् + इ + थ - विव्ययिथ।

हम ३०१ पृष्ठ पर पढ़ चुके हैं कि, १५ कित् लिट् प्रत्यय 'विवि' से लगाये जाते हैं। अत: इन १५ कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर, 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' सूत्र से इ को यण् आदेश करके -

व्ये	- विवि +	अतु:	-	विव्य् + अतु:	=	विव्यतु:
व्ये	- विवि +	उ:	-	विव्य् + उ:	=	विव्यु: आदि।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
विव्याय	विव्यतु:	विव्यु:	विव्ये	विव्याते	विव्यिरे
विव्याथ / विव्ययिथ	विव्यथु:	विव्य	विव्यिषे	विव्याथे	विव्यिध्वे
विव्याय / विव्यय	विव्यिव	विव्यिम	विव्ये	विव्यिवहे	विव्यिमहे

४. दरिद्रा धातु - यह धातु सेट् है।

अनेकाच् होने के कारण दरिद्रा धातु के लिट् लकार के रूप आम् प्रत्यय

लगाकर **दरिद्राञ्चकार** आदि बनते हैं, किन्तु जब इससे आम् नहीं भी लगता है, तब द्वित्वादि करके इसके रूप इस प्रकार बनाये जाते हैं -

दरिद्रातेरार्धधातुके लोपो वक्तव्यः - सन्, ण्वुल् और ल्युट् से भिन्न सारे आर्धधातुक प्रत्यय विवक्षित होने पर दरिद्रा धातु के 'आ' का लोप होता है। (हम जानते हैं कि 'लिट् च' सूत्र से लिट् लकार के सारे प्रत्यय आर्धधातुक ही हैं। अतः इनके परे होने पर, दरिद्रा के आ का लोप कीजिये) -

दरिद्रा - द्वित्वादि होकर - ददरिद्रा / ददरिद्रा + णल् / ददरिद्र् + औ = ददरिद्रौ।

सारे प्रत्ययों में इसी प्रकार आ का लोप कीजिये। पूरे रूप इस प्रकार बने -

ददरिद्रौ	ददरिद्रतुः	ददरिद्रुः
ददरिद्रिथ	ददरिद्रथुः	ददरिद्र
ददरिद्रौ	ददरिद्रिव	ददरिद्रिम

५. ह्वेञ् धातु - इसे द्वित्व के पहले ही 'अभ्यासाच्च' सूत्र से सम्प्रसारण होकर हु बन जाता है। उसके बाद द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके जुहु बन जाता है। अब यह धातु उकारान्त हो गया है।

जुहु + प्रथम पुरुष का णल् प्रत्यय / अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर - जुहौ + अ / एचोऽयवायावः से आवादेश होकर - जुहाव् + अ = जुहाव।

उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् होने पर - इसी प्रकार जुहाव बनाइये।

उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् न होने पर - जुहु + णल् (अ) सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण होकर - जुहो + अ / एचोऽयवायावः से अवादेश होकर - जुहव् + अ = जुहव। जुहो + इ + थ /

थल् प्रत्यय को इडागम न होने पर - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - जुहो + थ = जुहोथ।

थल् प्रत्यय को इडागम होने पर - हु - जुहु + इट् + थल्, सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण करके जुहो + इ + थ / एचोऽयवायावः सूत्र से जुहो को अवादेश करके - जुहव् + इ + थ = जुहविथ।

जुहु + १५ कित् लिट् प्रत्यय -

अचि श्नु धातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ - अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर 'उ' के स्थान पर उवङ् आदेश होता है। यथा -

हु	जुहु	+	अतुः	-	जुहुव्	+	अतुः	=	जुहुवतुः
हु	जुहु	+	उः	-	जुहुव्	+	उः	=	जुहुवुः
हु	जुहु	+	अथुः	-	जुहुव्	+	अथुः	=	जुहुवथुः
हु	जुहु	+	अ	-	जुहुव्	+	अ	=	जुहुव
हु	जुहु	+	इ + व	-	जुहुव्	+	इ + व	=	जुहुविव
हु	जुहु	+	इ + म	-	जुहुव्	+	इ + म	=	जुहुविम
हु	जुहु	+	ए	-	जुहुव्	+	ए	=	जुहुवे
हु	जुहु	+	आते	-	जुहुव्	+	आते	=	जुहुवाते
हु	जुहु	+	इरे	-	जुहुव्	+	इरे	=	जुहुविरे
हु	जुहु	+	इ + से	-	जुहुव्	+	इ + से	=	जुहुविषे
हु	जुहु	+	आथे	-	जुहुव्	+	आथे	=	जुहुवाथे
हु	जुहु	+	इ + ध्वे	-	जुहुव्	+	इ + ध्वे	=	जुहुविध्वे
हु	जुहु	+	ए	-	जुहुव्	+	ए	=	जुहुवे
हु	जुहु	+	इ + वहे	-	जुहुव्	+	इ + वहे	=	जुहुविवहे
हु	जुहु	+	इ + महे	-	जुहुव्	+	इ + महे	=	जुहुविमहे

पूरे रूप इस प्रकार बने -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
जुहाव	जुहुवतुः	जुहुवुः	जुहुवे	जुहुवाते	जुहुविरे
जुहोथ / जुहविथ	जुहुवथुः	जुहुव	जुहुविषे	जुहुवाथे	जुहुविध्वे
जुहाव / जुहव	जुहुविव	जुहुविम	जुहुवे	जुहुविवहे	जुहुविमहे

यह आकारान्त तथा एजन्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

ध्यान रहे कि इकारान्त, ईकारान्त धातुओं में श्वि श्रि धातु सातों प्रत्ययों

में सेट् होते हैं। शेष इकारान्त, ईकारान्त धातु 'थलि वेट् लिटि सेट्' होते हैं।

इकारान्त, ईकारान्त धातु + प्रथम पुरुष का णल् प्रत्यय

नी - निनी + णल् (अ) /

अचो ञ्णिति - अजन्त अङ्गों को वृद्धि होती है ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर निनै + अ / 'एचोऽयवायावः' से ऐ को आय् आदेश होकर - निनाय् + अ = निनाय।

सारे इकारान्त ईकारान्त धातुओं में प्रथम पुरुष का णल् प्रत्यय लगाकर इसी प्रकार रूप बनेंगे।

इकारान्त, ईकारान्त धातु + उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय

णलुत्तमो वा - उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय विकल्प से णित् होता है।

उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् होने पर -

नी - निनी + णल् (अ) / अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर - निनै + अ / 'एचोऽयवायावः' से ऐ को आय् आदेश होकर - निनाय् + अ = निनाय।

उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् न होने पर -

नी - निनी + णल् (अ) / सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण होकर निने + अ / एचोऽयवायावः से अयादेश होकर - निनय् + अ = निनय / यह रूप भी बनता है।

इकारान्त, ईकारान्त धातुओं से उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय परे होने पर, इसी प्रकार वृद्धि करके निनाय, तथा गुण करके निनय, ऐसे दो दो रूप बनाइये।

इकारान्त ईकारान्त धातु + थल् प्रत्यय

थल् को इडागम न होने पर - नी - निनी + थल् 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से निनी को गुण करके - निने + थ = निनेथ।

थल् को इडागम होने पर - नी - निनी + इट् + थल् / 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण करके - निने + इ + थ / 'एचोयवायावः' सूत्र से निने को अयादेश करके - निनय् + इ + थ = निनयिथ।

यह इकारान्त ईकारान्त अङ्गों में थल् प्रत्यय जोड़ने की विधि पूर्ण हुई।

इकारान्त ईकारान्त धातुओं में १५ अपित् लिट् प्रत्यय जोड़ने के पूर्व पुनः विचार कीजिये कि -

असंयोगाल्लिट् कित् - असंयोगान्त अङ्गों से परे आने पर ये पूरे १५ अपित् लिट् प्रत्यय कितवत् होते हैं।

द्वित्वादि किये हुए निनी, चिचि, बिभी, चिक्री, शिश्वि, युयु, पुपू, चकृ, बभृ आदि स्वरान्त धातुओं को ध्यान से देखिये। इनके अन्त में न् + ई / च् + इ / भ् + ई / र् + ई / व् + इ / य् + उ / प् + उ / क् + ऋ / भ् + ऋ हैं। ये एक व्यञ्जन तथा एक स्वर हैं। अतः ये संयोग नहीं हैं क्योंकि संयोग दो या दो से अधिक व्यञ्जनों के एक साथ मिलने से बनता है। अतः सारे स्वरान्त धातु संयोगान्त न होकर असंयोगान्त ही होते हैं। इसलिये सारे स्वरान्त धातुओं से परे आने पर ये १५ अपित् लिट् प्रत्यय सदा कित्वत् ही होते हैं।

अतः इनके परे होने पर इगन्त अङ्गों को कभी भी गुण न होकर 'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध ही होता है। गुणनिषेध हो जाने पर इन्हें सन्धि करके प्रत्ययों में जोड़ दिया जाता है।

जोड़ने के लिये इकारान्त ईकारान्त धातुओं से बने हुए अङ्गों के दो वर्ग बना लीजिये।

इन निनी, चिचि, बिभी, चिक्री, शिश्वि आदि इकारान्त ईकारान्त धातुओं को पुनः ध्यान से देखिये। इनके अन्त में तो संयोग नहीं है किन्तु इनमें ये जो चिक्री, शिश्वि धातु हैं, इनके अन्तिम 'इ' के पूर्व में संयोग है। अतः ये धातु संयोगपूर्व इकारान्त हैं।

जो निनी, चिचि, बिभी आदि धातु हैं, इनके अन्तिम 'इ' के पूर्व में संयोग नहीं है। अतः ये धातु असंयोगपूर्व इकारान्त हैं। इन दोनों वर्ग के इकारान्त धातुओं में १५ अपित् लिट् प्रत्यय जोड़ने की विधि अलग अलग है -

१. असंयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त, ईकारान्त धातु + १५ अपित् लिट् प्रत्यय

एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य - यदि इकारान्त, ईकारान्त अङ्ग में अनेक अच् हों तथा उसके अन्तिम इ, ई के पूर्व में व्यञ्जनों का संयोग न हो, तब कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर, उस 'इ' को 'यण्' आदेश ही होता है। जैसे -

नी	निनी	+	अतुः	-	निन्य्	+	अतुः	= निन्यतुः
नी	निनी	+	उः	-	निन्य्	+	उः	= निन्युः
नी	निनी	+	अथुः	-	निन्य्	+	अथुः	= निन्यथुः

नी	निनी	+	अ	-	निन्य्	+	अ	=	निन्य
नी	निनी	+	इ + व	-	निन्य्	+	इ + व	=	निन्यिव
नी	निनी	+	इ + म	-	निन्य्	+	इ + म	=	निन्यिम
नी	निनी	+	ए	-	निन्य्	+	ए	=	निन्ये
नी	निनी	+	आते	-	निन्य्	+	आते	=	निन्याते
नी	निनी	+	इरे	-	निन्य्	+	इरे	=	निन्यिरे
नी	निनी	+	इ + से	-	निन्य्	+	इ + से	=	निन्यिषे
नी	निनी	+	आथे	-	निन्य्	+	आथे	=	निन्याथे
नी	निनी	+	इ + ध्वे	-	निन्य्	+	इ + ध्वे	=	निन्यिध्वे
नी	निनी	+	ए	-	निन्य्	+	ए	=	निन्ये
नी	निनी	+	इ + वहे	-	निन्य्	+	इ + वहे	=	निन्यिवहे
नी	निनी	+	इ + महे	-	निन्य्	+	इ + महे	=	निन्यिमहे

असंयोगपूर्व ईकारान्त नी धातु के लिट् लकार के पूरे रूप -

परस्मैपद			**आत्मनेपद**		
निनाय	निन्यतुः	निन्युः	निन्ये	निन्याते	निन्यिरे
निनेथ / निनयिथ	निन्यथुः	निन्य	निन्यिषे	निन्याथे	निन्यिध्वे
निनाय / निनय	निन्यिव	निन्यिम	निन्ये	निन्यिवहे	निन्यिमहे

सारे असंयोगपूर्व ईकारान्त धातुओं के लिट् लकार के रूप इसी प्रकार बनाइये।

२. संयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त, ईकारान्त धातु + १५ अपित् लिट् प्रत्यय

अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ -

यदि इकारान्त, ईकारान्त अङ्गों के अन्तिम इ, ई के पूर्व में व्यञ्जनों का संयोग हो, तब कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर, उस 'इ' 'ई' को 'इयङ्' आदेश होता है, कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर।

यथा क्री धातु को द्वित्वादि करके बना हुआ 'चिक्री' यह अनेकाच् है। इसमें जो अन्तिम 'ई' है, उसके पूर्व में क् + र् का संयोग है। अतः कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर इसे इयङ् होगा। जैसे -

क्री	चिक्री	+	अतुः	-	चिक्रिय्	+	अतुः	=	चिक्रियतुः
क्री	चिक्री	+	उः	-	चिक्रिय्	+	उः	=	चिक्रियुः
क्री	चिक्री	+	अथुः	-	चिक्रिय्	+	अथुः	=	चिक्रियथुः
क्री	चिक्री	+	अ	-	चिक्रिय्	+	अ	=	चिक्रिय
क्री	चिक्री	+	इ + व	-	चिक्रिय्	+	इ + व	=	चिक्रियिव
क्री	चिक्री	+	इ + म	-	चिक्रिय्	+	इ + म	=	चिक्रियिम
क्री	चिक्री	+	ए	-	चिक्रिय्	+	ए	=	चिक्रिये
क्री	चिक्री	+	आते	-	चिक्रिय्	+	आते	=	चिक्रियाते
क्री	चिक्री	+	इरे	-	चिक्रिय्	+	इरे	=	चिक्रियिरे
क्री	चिक्री	+	इ + से	-	चिक्रिय्	+	इ + से	=	चिक्रियिषे
क्री	चिक्री	+	आथे	-	चिक्रिय्	+	आथे	=	चिक्रियाथे
क्री	चिक्री	+	इ + ध्वे	-	चिक्रिय्	+	इ + ध्वे	=	चिक्रियिध्वे
क्री	चिक्री	+	ए	-	चिक्रिय्	+	ए	=	चिक्रिये
क्री	चिक्री	+	इ + वहे	-	चिक्रिय्	+	इ + वहे	=	चिक्रियिवहे
क्री	चिक्री	+	इ + महे	-	चिक्रिय्	+	इ + महे	=	चिक्रियिमहे

संयोगपूर्व ईकारान्त क्री धातु के लिट् लकार के पूरे रूप –

चिक्राय	चिक्रियतुः	चिक्रियुः	चिक्रिये	चिक्रियाते	चिक्रियिरे
चिक्रेथ / चिक्रयिथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय	चिक्रियिषे	चिक्रियाथे	चिक्रियिध्वे
चिक्राय / चिक्रय	चिक्रियिव	चिक्रियिम	चिक्रिये	चिक्रियिवहे	चिक्रियिमहे

शिव धातु – इसे 'विभाषा श्वेः' सूत्र से विकल्प से सम्प्रसारण होता है। जब इसे सम्प्रसारण नहीं होता है तब इसे द्वित्वादि होकर श्वि - शिश्वि बनता है। यह असंयोगपूर्व इकारान्त है। अतः इसके रूप 'क्री' के समान ही बनाइये। अन्तर यह है कि यह धातु थल् में केवल सेट् है।

श्वि धातु सेट् परस्मैपदी

शिश्वाय	शिश्वियतुः	शिश्वियुः
शिश्वयिथ	शिश्वियथुः	शिश्विय
शिश्वाय / शिश्वय	शिश्वियिव	शिश्वियिव

सारे संयोगपूर्व ईकारान्त धातुओं के लिट् लकार के रूप इसी प्रकार बनाइये।

जब श्वि धातु को सम्प्रसारण होकर 'शु' तथा द्वित्वादि होकर शुशु बनता है, तब यह धातु उकारान्त हो जाता है। तब इस श्वि - शुशु के रूप आगे दिये जाने वाले उकारान्त धातु - यु - युयु - के समान ही बनते हैं।

शुशाव	शुशुवतुः	शुशुवुः
शुशविथ	शुशुवथुः	शुशुव
शुशाव, शुशव	शुशुविव	शुशुविम

श्रि धातु - सेट् उभयपदी

इसके रूप ठीक क्री के समान ही बनाइये। अन्तर यह है कि यह धातु थल् में केवल सेट् है।

शिश्राय	शिश्रियतुः	शिश्रियुः	शिश्रिये	शिश्रियाते	शिश्रियिरे
शिश्रयिथ	शिश्रियथुः	शिश्रिय	शिश्रियिषे	शिश्रियाथे	शिश्रियिध्वे
शिश्राय / शिश्रय	शिश्रियिव	शिश्रियिम	शिश्रिये	शिश्रियिवहे	शिश्रियिमहे

इसके अपवाद -

१. **आत्मनेपदी दीङ् धातु - दीङो युडचि क्ङिति** - दीङ् धातु से परे आने वाले कित् ङित् प्रत्ययों को युट् का आगम होता है - दी - दिदी + ए - दिदी + युट् + ए / युट् में उ तथा ट् की इत् संज्ञा करके - दी - दिदी + य् + ए = दिदीये।

आत्मनेपदी ईकारान्त दी धातु के लिट् लकार के पूरे रूप -

दिदीये	दिदीयाते	दिदीयिरे
दिदीयिषे	दिदीयाथे	दिदीयिध्वे
दिदीये	दिदीयिवहे	दिदीयिमहे

२. **परस्मैपदी हि धातु - हेरचङि** - हि धातु के अभ्यास से उत्तरवर्ती हकार को कुत्व होता है, चङ् से भिन्न कोई भी प्रत्यय परे होने पर - हि - जिहि + लिट् लकार के प्रत्यय।

यहाँ अभ्यास है 'जि, उससे उत्तर जो 'हि' है, उसे कुत्व होकर 'घ' बनेगा तो जिहि को 'जिघि' हो जायेगा।

अब देखिये कि यह धातु असंयोगपूर्व इकारान्त है, अतः इसके रूप ठीक नी - निनी के समान बनेंगे।

जिघाय	जिघ्यतुः	जिघ्युः
जिघेथ / जिघयिथ	जिघ्यथुः	जिघ्य
जिघाय / जिघय	जिघ्यिव	जिघ्यिम

३. परस्मैपदी जि धातु - सन्लिटोर्जेः - सन् प्रत्यय परे होने पर तथा लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर जि धातु के अभ्यास के उत्तर में जो धातु का 'ज' है उसे कुत्व होकर 'ग्' होता है। जि - जिजि - जिगि

यह भी असंयोगपूर्व इकारान्त धातु है, अतः इसके रूप भी ठीक नी - निनी के समान बनेंगे। इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

जिगाय	जिग्यतुः	जिग्युः
जिगेथ / जिगयिथ	जिग्यथुः	जिग्य
जिगाय / जिगय	जिग्यिव	जिग्यिम

४. चि धातु - विभाषा चेः - सन् प्रत्यय परे होने पर तथा लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर चि धातु के अभ्यास के उत्तर में जो धातु का 'च' है उसे विकल्प ये कुत्व होकर 'क' होता है। चि - चिकि - चिचि।

यह भी असंयोगपूर्व इकारान्त अङ्ग है अतः इसके रूप भी ठीक नी - निनी के समान बनेंगे। कुत्व होने पर इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

चिकाय	चिक्यतुः	चिक्युः
चिकेथ / चिकयिथ	चिक्यथुः	चिक्य
चिकाय / चिकय	चिक्यिव	चिक्यिम

कुत्व न होने पर इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

चिचाय	चिच्यतुः	चिच्युः
चिचेथ / चिचयिथ	चिच्यथुः	चिच्य
चिचाय / चिचय	चिच्यिव	चिच्यिम

५. परस्मैपदी इण् धातु -

इण् धातु + प्रथम पुरुष का णल् प्रत्यय

इसे द्वित्व करके हमने इ इ बनाया है। अब इसके रूप इस प्रकार बनाइये-
इ इ + णल् / अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर - इ ऐ + अ /

अभ्यासस्यासवर्णे - अभ्यास के इ, उ को क्रमशः इयङ्, उवङ् आदेश होते हैं, असवर्ण अच् परे होने पर।

यहाँ देखिये कि अभ्यास है 'इ'। उससे परे असवर्ण अच् है 'ऐ'। अतः अभ्यास के 'इ' को 'अभ्यासस्यासवर्णे' से इयङ् (इय्) आदेश होकर - इय् + ऐ + अ / एचोऽयवायावः से 'ऐ' को आय् आदेश होकर - इ + आय् + अ = इयाय।

इण् धातु + उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय

णलुत्तमो वा - उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय विकल्प से णित् होता है।

उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् होने पर - इसी प्रकार इयाय बनाइये।

उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् न होने पर - इ - इ इ + णल् (अ) / सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण होकर - इ ए + अ / 'अभ्यासस्यासवर्णे' से अभ्यास के 'इ' को इयङ् (इय्) आदेश होकर - इय् + ए + अ / एचोऽयवायावः से ए को अयादेश होकर - इ अय् + अ = इयय। इस प्रकार उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय परे होने पर; इयाय, इयय, ऐसे दो दो रूप बनेंगे।

इण् धातु + थल् प्रत्यय

इडागम होने पर - इ - इ इ + इट् + थ / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण होकर - इ ए + इ + थ / 'अभ्यासस्यासवर्णे' से अभ्यास के 'इ' को इयङ् (इय्) आदेश होकर - इय् ए + इ + थ / एचोऽयवायावः सूत्र से ए के स्थान पर अयादेश होकर - इय् अय् + इ + थ = इययिथ।

इडागम न होने पर - इ इ + थ / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण होकर - इ ए + थ / 'अभ्यासस्यासवर्णे' से अभ्यास के 'इ' को इयङ् (इय्) आदेश होकर - इय् ए + थ = इयेथ।

इण् धातु + कित् लिट् प्रत्यय

इण् + इ इ + अतुः / प्रत्यय के 'कित्' होने के कारण, क्ङिति च सूत्र से गुण का निषेध करके - इ इ + अतुः।

ध्यान दीजिये कि गुण न होने के कारण यहाँ अभ्यास के बाद 'असवर्ण अच्' नहीं मिलता। अतः अभ्यास के 'इ' को इयङ् (इय्) आदेश भी नहीं होता।

इणो यण् - इण् धातु के 'इ' को यण् होता है, अजादि प्रत्यय परे होने पर। इ इ + अतुः - इ य् + अतुः।

दीर्घ इणः किति - इण् का जो अभ्यास, उसे दीर्घ होता है, कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर। इ य् + अतुः - ई य् + अतुः = ईयतुः।

इ इ	+	अतुः	-	ईय्	+	अतुः	=	ईयतुः
इ इ	+	उः	-	ईय्	+	उः	=	ईयुः
इ इ	+	अथुः	-	ईय्	+	अथुः	=	ईयथुः
इ इ	+	अ	-	ईय्	+	अ	=	ईय
इ इ	+	इ + व	-	ईय्	+	इ + व	=	ईयिव
इ इ	+	इ + म	-	ईय्	+	इ + म	=	ईयिम

इसके पूरे रूप इस प्रकार हैं -

इयाय	ईयतुः	ईयुः
इययिथ / इयेथ	ईयथुः	ईय
इयाय / इयय	ईयिव	ईयिम

६. आत्मनेपदी इङ् धातु -

गाङ् लिटि - लिट् परे होने पर, इङ् धातु को गाङ् आदेश होता है। 'गा' आदेश हो जाने पर, अब यह धातु आकारान्त हो गया है।

अतः जैसे दा के रूप - ददे, ददाते, ददिरे बनाये हैं, ठीक वैसे ही इसके रूप अधिजगे, अधिजगाते, अधिजगिरे आदि बनाइये। इसकी प्रक्रिया आकारान्त धातुओं के वर्ग में देखिये।

यह इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

उकारान्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

इनसे परे आने वाले लिट् प्रत्यय की इडागम व्यवस्था इस प्रकार है

१. यु, रु, नु, स्नु, क्षु, क्ष्णु, इन छह उकारान्त धातुओं से परे आने वाले सातों सेट् लिट् प्रत्ययों को नित्य इडागम होता है।

२. स्तु, द्रु, स्रु, श्रु, धातुओं से परे आने वाले थल्, व, म, से, ध्वे, वहे, महे, इन सातों सेट् लिट् प्रत्ययों को इडागम नहीं होता।

३. इन १० धातुओं को छोड़कर शेष उकारान्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय को विकल्प से तथा शेष प्रत्ययों को नित्य इडागम होता है।

उकारान्त धातु + प्रथम पुरुष का णल् प्रत्यय

यु युयु + णल् (अ) / अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर युयौ + अ /

एचोऽयवायाव: से औ को आव् आदेश होकर युयाव् + अ = युयाव।

उकारान्त धातु + उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय

णलुत्तमो वा - उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय विकल्प से णित् होता है।

उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् होने पर -

यु - युयु + णल् (अ) अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर - युयौ + अ / एचोऽयवायाव: से आवादेश होकर - युयाव् + अ = युयाव।

उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् न होने पर -

यु - युयु + णल् (अ) सार्वधातुकार्धधातुकयो: से गुण होकर - युयो + अ / एचोऽयवायाव: से अवादेश होकर - युयव् + अ = युयव /

इस प्रकार उत्तम पुरुष के णल् से युयाव, युयव, ऐसे दो दो रूप बनाइये।

उकारान्त धातु + थल् प्रत्यय

यु - युयु + इट् + थल् / सार्वधातुकार्धधातुकयो: से गुण होकर - युयो + इ + थ / एचोऽयवायाव: से अवादेश होकर - युयव् + इ + थ = युयविथ।

उकारान्त धातु + शेष अपित् लिट् प्रत्यय

असंयोगाल्लिट् कित् - असंयोगान्त अङ्गों से परे आने पर, ये पूरे १५ अपित् लिट् प्रत्यय कितवत् होते हैं। कित् होने पर -

अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ - कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर 'उ' के स्थान पर उवङ् आदेश होता है। यथा -

यु	युयु	+	अतु:	-	युयुव्	+	अतु:	= युयुवतु:
यु	युयु	+	उ:	-	युयुव्	+	उ:	= युयुवु:
यु	युयु	+	अथु:	-	युयुव्	+	अथु:	= युयुवथु:
यु	युयु	+	अ	-	युयुव्	+	अ	= युयुव
यु	युयु	+	इ + व	-	युयुव्	+	इ + व	= युयुविव
यु	युयु	+	इ + म	-	युयुव्	+	इ + म	= युयुविम

यु, रु, नु, स्नु, क्षु, क्ष्णु, इन छह उकारान्त सेट् धातुओं के पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

यु धातु			रु धातु		
युयाव	युयुवतु:	युयुवु:	रुराव	रुरुवतु:	रुरुवु:
युयविथ	युयुवथु:	युयुव	रुरविथ	रुरुवथु:	रुरुव

युयाव, युयव	युयुविव	युयुविम	रुराव, रुरव	रुरुविव	रुरुविम
	नु धातु			**स्नु धातु**	
नुनाव	नुनुवतुः	नुनुवुः	सुस्नाव	सुस्नुवतुः	सुस्नुवुः
नुनविथ	नुनुवथुः	नुनुव	सुस्नविथ	सुस्नुवथुः	सुस्नुव
नुनाव, नुनव	नुनुविव	नुनुविम	सुस्नाव, सुस्नव	सुस्नुविव	सुस्नुविम
	क्षु धातु			**क्ष्णु धातु**	
चुक्षाव	चुक्षुवतुः	चुक्षुवुः	चुक्ष्णाव	चुक्ष्णुवतुः	चुक्ष्णुवुः
चुक्षविथ	चुक्षुवथुः	चुक्षुव	चुक्ष्णविथ	चुक्ष्णुवथुः	चुक्ष्णुव
चुक्षाव, चुक्षव	चुक्षुविव	चुक्षुविम	चुक्ष्णाव, चुक्ष्णव	चुक्ष्णुविव	चुक्ष्णुविम

स्तु, द्रु, स्रु, श्रु इन चार उकारान्त अनिट् धातुओं के पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

	श्रु धातु			**द्रु धातु**	
शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः	दुद्राव	दुद्रुवतुः	दुद्रुवुः
शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव	दुद्रोथ	दुद्रुवथुः	दुद्रुव
शुश्राव, शुश्रव	शुश्रुव	शुश्रुम	दुद्राव, दुद्रव	दुद्रुव	दुद्रुम
	स्तु धातु			**स्रु धातु**	
तुष्टाव	तुष्टुवतुः	तुष्टुवुः	सुस्राव	सुस्रुवतुः	सुस्रुवुः
तुष्टोथ	तुष्टुवथुः	तुष्टुव	सुस्रोथ	सुस्रुवथुः	सुस्रुव
तुष्टाव, तुष्टव	तुष्टुव	तुष्टुम	सुस्राव, सुस्रव	सुस्रुव	सुस्रुम

शेष उकारान्त धातु - ध्यान रहे कि इन १० उकारान्त धातुओं से बचे हुए धातु थलि वेट् होते हैं। इनके रूप इस प्रकार बनाइये -

हु धातु - परस्मैपद

जुहाव	जुहुवतुः	जुहुवुः
जुहोथ / जुहविथ	जुहुवथुः	जुहुव
जुहाव / जुहव	जुहुविव	जुहुविम

इसके अपवाद -

१. **परस्मैपदी ऊर्णु धातु** - यह धातु अनेकाच् होने से सेट् है।

विभाषोर्णोः - ऊर्णु धातु से परे आने वाले इडादि प्रत्यय विकल्प से ङिद्वत् होते हैं। देखिये कि यह धातु परस्मैपदी है, और परस्मैपद में थल्, व,

म, इन तीन प्रत्ययों को इडागम होता है। अतः ये तीनों विकल्प से ङित्वत् होंगे।

इनके ङित्वत् होने पर - ऊर्णु - द्वित्वादि होकर - ऊर्णुनु / ऊर्णुनु + इ + थल् / प्रत्यय के ङित्वत् होने से अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से उवङ् आदेश करके - ऊर्णुनुव् + इ + थ = ऊर्णुनुविथ।

इनके ङित्वत् न होने पर - ऊर्णु - द्वित्वादि होकर - ऊर्णुनु / ऊर्णुनु + इ + थल् / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - ऊर्णुनो + इथ / अवादेश करके - ऊर्णुनव् + इथ = ऊर्णुनविथ।

शेष रूप पूर्ववत्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

ऊर्णुनाव	ऊर्णुनुवतुः	ऊर्णुनुवुः
ऊर्णुनविथ / ऊर्णुनुविथ	ऊर्णुनुवथुः	ऊर्णुनुव
ऊर्णुनाव, ऊर्णुनव	ऊर्णुनुविव	ऊर्णुनुविम
	ऊर्णुनविव	ऊर्णुनविम

२. च्युङ् धातु -

अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषेतित्याजाश्राताःश्रितमाशीराशीर्ताः -

लोक में तो अभी कही हुई विधि के अनुसार च्यु - चुच्यु - चुच्युविषे ही बनता है, किन्तु वेद में इसके अभ्यास को सम्प्रसारण होकर चिच्युषे बनता है। सारे उकारान्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

ऊकारान्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

धूञ् धातु से परे आने वाले थल् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है। इसके अलावा सारे ऊकारान्त धातुओं से परे आने वाले थल् प्रत्यय को नित्य इडागम होता है। सारे ऊकारान्त धातुओं के रूप भी उकारान्त धातुओं जैसे ही बनाइये।

परस्मैपद			आत्मनेपद		
पुपाव	पुपुवतुः	पुपुवुः	पुपुवे	पुपुवाते	पुपुविरे
पुपविथ	पुपुवथुः	पुपुव	पुपुविषे	पुपुवाथे	पुपुविध्वे
पुपाव / पुपव	पुपुविव	पुपुविम	पुपुवे	पुपुविवहे	पुपुविमहे

इसके अपवाद -

१. **धूञ् धातु** - इससे परे आने वाले थल् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है। अतः थल् प्रत्यय में दुधोथ / दुधविथ रूप बनते हैं। शेष रूप 'पू' जैसे।

इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

परस्मैपद			**आत्मनेपद**		
दुधाव	दुधुवतुः	दुधुवुः	दुधुवे	दुधुवाते	दुधुविरे
दुधोथ / दुधविथ	दुधुवथुः	दुधुव	दुधुविषे	दुधुवाथे	दुधुविढ्वे
दुधाव / दुधव	दुधुविव	दुधुविम	दुधुवे	दुधुविवहे	दुधुविमहे

२. भू धातु - द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके बभू -

पृष्ठ २८८, २९३ के अनुसार द्वित्व, अभ्यासकार्य आदि करके बभूव् बना लीजिये। लिट् लकार के प्रत्यय इस बभूव् में ही जोड़े जायेंगे -

भू	बभूव्	+	णल्	=	बभूव
भू	बभूव्	+	अतुः	=	बभूवतुः
भू	बभूव्	+	उः	=	बभूवुः
भू	बभूव्	+	इ + थल्	=	बभूविथ
भू	बभूव्	+	अथुः	=	बभूवथुः
भू	बभूव्	+	अ	=	बभूव
भू	बभूव्	+	णल्	=	बभूव
भू	बभूव्	+	इ + व	=	बभूविव
भू	बभूव्	+	इ + म	=	बभूविम

उकारान्त सेट् भू धातु के लिट् लकार के पूरे रूप इस प्रकार हैं -

बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
बभूव	बभूविव	बभूविम

३. ब्रू धातु - ब्रुवो वचिः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ब्रू धातु को वच् आदेश होता है। ब्रू = वच्। (वच् धातु सम्प्रसारणी है। इसे द्वित्वादि करके उवच् / ऊच् बनते हैं। यह विधि ३०१ - ३०२ पृष्ठ पर देखें। पित् प्रत्यय उवच् से लगायें और अपित् प्रत्यय ऊच् से लगायें।) इसके रूप इस प्रकार बने -

उवाच	ऊचतुः	ऊचुः
उवचिथ / उवक्थ	ऊचथुः	ऊच
उवाच / उवच	ऊचिव	ऊचिम

४. उङ् धातु - द्वित्वादि करके - उ उ + ए / अचि श्नुधातुभ्रुवां

य्वोरियङुवङौ से उवङ् करके - उ उव् + ए / अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ करके - ऊवे। इसके रूप इस प्रकार बनते हैं -

ऊवे	ऊवाते	ऊविरे
ऊविषे	ऊवाथे	ऊविध्वे
ऊवे	ऊविवहे	ऊविमहे

यह ऊकारान्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

ऋकारान्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

इनकी इडागम व्यवस्था इस प्रकार है -

१. **कृ, सृ, भृ धातु** - ये धातु 'थलि अनिट्, लिटि अनिट्' हैं।

२. **वृङ् वृञ् धातु** - वेद में ये धातु 'थलि अनिट्, लिटि अनिट्' हैं। लोक में ये धातु 'थलि सेट्, लिटि अनिट्' हैं।

३. **ऋ धातु** - यह धातु 'थलि सेट्, लिटि सेट्' है।

४. **स्वृ धातु** - यह धातु 'थलि वेट्, लिटि सेट्' है।

५. **जागृ धातु** - यह धातु 'थलि सेट्, लिटि सेट्' है।

६. **शेष ऋकारान्त धातु** - शेष धातु 'थलि अनिट्, लिटि सेट्' हैं।

१. कृ, सृ, भृ धातुओं के लिट् लकार के रूप -

ऋकारान्त धातु + प्रथम पुरुष का णल् प्रत्यय

कृ - द्वित्वादि करके - चकृ + णल् (अ) / अचो ञ्णिति से वृद्धि करके - चकार् + अ = चकार।

ऋकारान्त धातु + उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय

'णलुत्तमो वा' सूत्र से उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् होने पर - चकृ + णल् (अ) / अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर - चकार् + अ = चकार।

उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् न होने पर - चकृ + णल् (अ) / सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण होकर - चकर् + अ = चकर।

ऋकारान्त धातु + थल् प्रत्यय

चकृ + थ / सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण होकर - चकर् + थ = चकर्थ।

ऋकारान्त धातु + शेष अपित् लिट् प्रत्यय

ऋकारान्त धातु असंयोगान्त ही होंगे। अतः सारे ऋकारान्त धातुओं से परे आने पर ये १५ प्रत्यय 'असंयोगाल्लिट् कित्' सूत्र से सदा कितवत् ही होंगे।

अतः इनके परे होने पर 'क्ङिति च' से गुण नहीं होगा।

हलादि अपित् लिट् प्रत्यय -

चकृ	+	व	=	चकृव	चकृ	+ म	=	चकृम
चकृ	+	वहे	=	चकृवहे	चकृ	+ महे	=	चकृमहे

चकृ + से / '**आदेशप्रत्यययोः**' सूत्र से प्रत्यय के सकार को षकार आदेश करके - चकृषे।

चकृ + ध्वे को देखिये। ध् को 'इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात्' सूत्र से ढ् आदेश होकर चकृढ्वे।

अजादि अपित् लिट् प्रत्यय - क्ङिति च से गुण निषेध हो जाने के कारण, इनके परे होने पर 'इको यणचि' से यण् सन्धि होगी।

चकृ	+	अतुः	-	चक्र्	+	अतुः	=	चक्रतुः
चकृ	+	उः	-	चक्र्	+	उः	=	चक्रुः
चकृ	+	अथुः	-	चक्र्	+	अथुः	=	चक्रथुः
चकृ	+	अ	-	चक्र्	+	अ	=	चक्र
चकृ	+	ए	-	चक्र्	+	ए	=	चक्रे
चकृ	+	आते	-	चक्र्	+	आते	=	चक्राते
चकृ	+	इरे	-	चक्र्	+	इरे	=	चक्रिरे
चकृ	+	आथे	-	चक्र्	+	आथे	=	चक्राथे
चकृ	+	ए	-	चक्र्	+	ए	=	चक्रे

कृ धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
चकार	चक्रतुः	चक्रुः	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
चकर्थ	चक्रथुः	चक्र	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
चकार / चकर	चकृव	चकृम	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे

सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु - इसे 'सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे' सूत्र से सुट् का आगम होता है जो कि 'सुट् कात्पूर्वः' सूत्र से 'क' के पूर्व होता है। सम् + सुट् + कृ + लिट्। अब इस स्कृ को द्वित्व करके और 'शर्पूर्वाः खयः' सूत्र से अभ्यास के खय् को बचाकर सम् + चस्कृ बनाइये।

कृञो असुट इति वक्तव्यम् - लिट् लकार में सुट् से युक्त होने पर

कृ धातु से परे लिट् प्रत्ययों को इडागम होता है। अतः इसे इडागम करें -

देखिये कि अब यह संयोगपूर्वक ऋकारान्त अङ्ग है। अतः ३३८ पृष्ठ पर कहे गये 'ऋच्छत्यृताम्' सूत्र से इसे अपित् लिट् प्रत्ययों में गुण करें -

सञ्चस्कार	सञ्चस्करतुः	सञ्चस्करुः
सञ्चस्करिथ	सञ्चस्करथुः	सञ्चस्कर
सञ्चस्कार / सञ्चस्कर	सञ्चस्करिव	सञ्चस्करिम

भृ धातु के पूरे रूप अनिट् कृ के समान ही बनाइये -

बभार	बभ्रतुः	बभ्रुः	बभ्रे	बभ्राते	बभ्रिरे
बभर्थ	बभ्रथुः	बभ्र	बभृषे	बभ्राथे	बभृढ्वे
बभार / बभर	बभृव	बभृम	बभ्रे	बभृवहे	बभृमहे

इसी प्रकार सृ धातु के पूरे रूप बनाइये -

ससार	सस्रतुः	सस्रुः
ससर्थ	सस्रथुः	सस्र
ससार / ससर	ससृव	ससृम

२. वृङ्, वृञ् धातुओं के लिट् लकार के रूप

वृङ्, वृञ् धातु + थल् प्रत्यय

वृ धातु से लोक में इट् का आगम करके ववृ + इट् + थ = ववरिथ बनाइये। वेद में इट् का आगम न करके ववृ + थ = ववर्थ बनाइये।

थल् प्रत्यय के अलावा वृङ्, वृञ् धातुओं के शेष रूप 'कृ' के समान ही बनाइये। लोक में इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
ववार	वव्रतुः	वव्रुः	वव्रे	वव्राते	वव्रिरे
ववरिथ	वव्रथुः	वव्र	ववृषे	वव्राथे	ववृढ्वे
ववार / ववर	ववृव	ववृम	वव्रे	ववृवहे	ववृमहे

वेद में पूरे रूप इस प्रकार बने -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
ववार	वव्रतुः	वव्रुः	वव्रे	वव्राते	वव्रिरे
ववर्थ	वव्रथुः	वव्र	ववृषे	वव्राथे	ववृढ्वे
ववार / ववर	ववृव	ववृम	वव्रे	ववृवहे	ववृमहे

३. ऋ धातु के लिट् लकार के रूप - ऋ - द्वित्वादि करके - आऋ

/ आऋ + णल् - अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर - आ आर् + अ = आर।

आऋ + अतुः -

ऋच्छत्यृताम् - ऋच्छ् धातु को, ऋ धातु को तथा दीर्घ ॠकारान्त धातुओं को गुण होता है, 'कित्' लिट् प्रत्यय परे होने पर। यथा -

आऋ	+	अतुः	-	आ अर्	+	अतुः	=	आरतुः
आऋ	+	उः	-	आ अर्	+	उः	=	आरुः
आऋ	+	अथुः	-	आ अर्	+	अथुः	=	आरथुः
आऋ	+	अ	-	आ अर्	+	अ	=	आर

यह धातु 'थलि सेट् लिटि सेट्' है। अतः थल्, व, म को इडागम कीजिये-

आऋ	+	इथ	-	आ अर्	+	इथ	=	आरिथ
आऋ	+	इव	-	आ अर्	+	इव	=	आरिव
आऋ	+	इम	-	आ अर्	+	इम	=	आरिम

पूरे रूप इस प्रकार बने -

आर	आरतुः	आरुः
आरिथ	आरथुः	आर
आर	आरिव	आरिम

४. जागृ - द्वित्वादि करके - जजागृ धातु - प्रथमपुरुष के णल् से जजागृ + णल् = अचो ञ्णिति से वृद्धि करके - जजागार बनाइये।

उत्तमपुरुष के णल् के णित् होने पर - इसी प्रकार अचो ञ्णिति से वृद्धि करके - जजागार बनाइये।

उत्तमपुरुष के णल् के णित् न होने पर - सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण करके - जजागर बनाइये। थल् प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण करके - जजागरिथ बनाइये। शेष कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर 'जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु' सूत्र से गुण करके - जजागरतुः / जजागरुः आदि बनाइये।

जजागार	जजागरतुः	जजागरुः
जजागरिथ	जजागरथुः	जजागर
जजागार / जजागर	जजागरिव	जजागरिम

५. संयोगादि ऋकारान्त स्वृ धातु के लिट् लकार के रूप -

स्वृ - द्वित्वादि करके - सस्वृ / णल् प्रत्ययों के परे होने पर तो 'कृ'

के समान ही रूप बनाइये। प्रथमपुरुष के 'णल्' से स्वृ - सस्वार / उत्तमपुरुष के 'णल्' से स्वृ - सस्वर / सस्वार।

स्वृ धातु + थल् प्रत्यय

ध्यान रहे कि यह धातु 'थलि वेट्' 'लिटि सेट्' है।

इडागम होने पर - स्वृ - द्वित्वादि करके - सस्वृ + इट् + थल् / सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण होकर - सस्वरिथ।

इडागम न होने पर - स्वृ - द्वित्वादि करके - सस्वृ + थल् / सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण होकर - सस्वर्थ।

स्वृ धातु + शेष अपित् लिट् प्रत्यय

ऋतश्च संयोगादेर्गुणः - ऐसे धातु जिनके अन्त में ऋ हो तथा उस ऋ के पूर्व में संयोग हो तो उस ऋ को यण् न होकर गुण होता है कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर।

सस्वृ	+	अतुः	-	सस्वर्	+	अतुः	=	सस्वरतुः
सस्वृ	+	उः	-	सस्वर्	+	उः	=	सस्वरुः
सस्वृ	+	अथुः	-	सस्वर्	+	अथुः	=	सस्वरथुः
सस्वृ	+	अ	-	सस्वर्	+	अ	=	सस्वर
सस्वृ	+	इ + व	-	सस्वर्	+	इ + व	=	सस्वरिव
सस्वृ	+	इ + म	-	सस्वर्	+	इ + म	=	सस्वरिम

स्वृ धातु के पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

सस्वार	सस्वरतुः	सस्वरुः
सस्वरिथ / सस्वर्थ	सस्वरथुः	सस्वर
सस्वार / सस्वर	सस्वरिव	सस्वरिम

६. स्वृ से भिन्न, संयोगादि ऋकारान्त धातुओं के लिट् लकार के रूप-

ऋकारान्त धातुओं में से स्मृ, ह्वृ, स्वृ, ध्वृ, स्तृ, स्पृ, आदि धातु संयोगपूर्व ऋकारान्त धातु हैं। इनके रूप बिल्कुल 'स्वृ' धातु के ही समान बनाइये।

केवल इडागम व्यवस्था का सही ध्यान रखिये, क्योंकि अब जो ऋकारान्त धातु शेष बचे हैं, ये सारे के सारे धातु 'थलि अनिट्' होते हैं।

अतः स्मृ धातु के रूप इस प्रकार बनेंगे -

सस्मार	सस्मरतुः	सस्मरुः

सस्मर्थ	सस्मरथुः	सस्मर
सस्मार / सस्मर	सस्मरिव	सस्मरिम

इसी प्रकार स्वृ से भिन्न सारे संयोगादि ऋकारान्त धातुओं के रूप बनाइये।

७. असंयोगपूर्वक संयोगादि ऋकारान्त धातु -

इनके रूप बनाने की प्रक्रिया बिल्कुल 'कृ' के समान ही होगी। अन्तर केवल इडागम विधि में होगा। वह यह कि इनसे परे आने वाले लिट् प्रत्ययों को इडागम होगा, जो कि कृ धातु में नहीं हुआ था।

हृ - जहृ + इट् + व - इको यणचि सूत्र से यण् करके जह्रिव।
हृ - जहृ + इट् + म - इको यणचि सूत्र से यण् करके जह्रिम।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

जहार	जह्रतुः	जह्रुः	जह्रे	जह्राते	जह्रिरे
जहर्थ	जह्रथुः	जह्र	जह्रिषे	जह्राथे	जह्रिध्वे
जहार / जहर	जह्रिव	जह्रिम	जह्रे	जह्रिवहे	जह्रिमहे

ऋकारान्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

इडागम व्यवस्था - ध्यान रहे कि दीर्घ ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाले सातों लिट् प्रत्यय सेट् ही होते हैं।

सारे ॠकारान्त धातु + प्रथम पुरुष का णल् प्रत्यय

अचो ञ्णिति - अजन्त अङ्गों को वृद्धि होती है ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। शॄ - शशॄ + प्रथम पुरुष का णल् (अ) / अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर - शशार् + अ = शशार।

इसी प्रकार सारे दीर्घ ॠकारान्त धातुओं से तॄ - ततार / जॄ - जजार / दॄ - ददार / आदि बनाइये।

सारे ॠकारान्त धातु + उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय

शॄ - द्वित्वादि करके - शशॄ + उत्तम पुरुष का णल् (अ) / 'णलुत्तमो वा' से विकल्प से णित् होने पर, अचो ञ्णिति से वृद्धि करने पर - शशार् + अ = शशार। वृद्धि न करने पर -'सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण होकर - शशर्

+ अ = शशर।

इसी प्रकार सारे दीर्घ ॠकारान्त धातुओं से तॄ - ततार, ततर / जॄ - जजार, जजर / दॄ - ददार, ददर / आदि बनाइये।

णल् प्रत्यय में तो सारे ॠकारान्त धातुओं के रूप समान होते हैं परन्तु शेष प्रत्ययों में भेद होता है। **अतः अब इनके रूप हम चार वर्गों में बनायेंगे।**

१. तॄ धातु -

तॄ धातु + थल् प्रत्यय

तॄ + थ / द्वित्वादि करके - ततॄ + थ / इडागम करके - ततॄ + इट् + थ / सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण करके - ततर् + इ + थ।

तॄफलभजत्रपश्च - सेट् थल् प्रत्यय परे होने पर तथा १५ कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर, तॄ, फल्, भज्, त्रप्, इन धातुओं के अभ्यास को लोप हो जाता है, तथा धातु के 'अ' को 'ए' होता है।

ततर् + इ + थ - इसमें अभ्यास के 'त' का लोप करके तथा शेष 'तर्' के 'अ' को एत्व करके बनेगा - तेरिथ।

तॄ धातु + अपित् लिट् प्रत्यय

ॠच्छत्यॄताम् - ॠ धातु को तथा दीर्घ ॠकारान्त धातुओं को गुण होता है, कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर।

तॄ + अतुः / द्वित्वादि करके - ततॄ + अतुः / 'ॠच्छत्यॄताम्' से ॠ को गुण करके - ततर् + अतुः - 'तॄफलभजत्रपाम्' से अभ्यास का लोप तथा अ को एत्व करके, तेरतुः, बनाइये। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

ततार	तेरतुः	तेरुः
तेरिथ	तेरथुः	तेर
ततार / ततर	तेरिव	तेरिम

२. जॄ धातु - **ॠच्छत्यॄताम्** - ॠ धातु को तथा दीर्घ ॠकारान्त धातुओं को गुण होता है, कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर।

वा जॄभ्रमुत्रसाम् - सेट् थल् प्रत्यय परे होने पर तथा १५ कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर, जॄ, भ्रम्, त्रस्, इन धातुओं के अभ्यास का विकल्प से लोप हो जाता है, तथा धातु के अ को विकल्प से 'ए' होता है। यथा -

अभ्यास का लोप करके तथा अ को एत्व न करके - जजॄ + इट् +

थल् = जजर् + थल् - जजरिथ।

अभ्यास का लोप तथा 'अ' को एत्व करके - जेरिथ भी बनेगा ।

इसी प्रकार कित् लिट् प्रत्ययों में भी विकल्प से अभ्यासलोप तथा एत्व होंगे। अब हम इसके पूरे रूप बनायें -

एत्व तथा अभ्यासलोप करके			**एत्व तथा अभ्यासलोप न करके**		
जजार	जेरतुः	जेरुः	जजार	जजरतुः	जजरुः
जेरिथ	जेरथुः	जेर	जजरिथ	जजरथुः	जजर
जजार / जजर	जेरिव	जेरिम	जजार / जजर	जजरिव	जजरिम

३. शॄ, दॄ, पॄ धातु - हमने शॄ, दॄ, पॄ धातुओं को द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके शॄ को शशॄ, दॄ को ददॄ, तथा पॄ को पपॄ बनाया है।

'थल्' परे होने पर 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण कीजिये। शशॄ + इट् + थल् = शशरिथ।

'कित् लिट्' प्रत्यय परे होने पर 'ऋच्छत्यॄताम्' सूत्र से गुण कीजिये। शशॄ + अतुः - शशर् + अतुः -

न शसददवादिगुणानाम् - शस् धातु, वकारादि धातु तथा जिन्हें गुण होकर 'अ' हुआ है, ऐसे धातुओं के 'अ' को ए भी नहीं होता, न ही उनके अभ्यास का लोप होता है। शशर् + अतुः = शशरतुः।

शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा - शॄ, दॄ, पॄ धातुओं के अन्त को विकल्प से 'ह्रस्व ऋ' आदेश होता है, लिट् प्रत्यय परे होने पर। शॄ - शशॄ - ह्रस्व होकर शशृ / दॄ - ददॄ - ह्रस्व होकर ददृ / पॄ - पपॄ - ह्रस्व होकर पपृ।

जब इनको ह्रस्व हो जायेगा तो इनके रूप वैसे ही बनेंगे जैसे ह्रस्व ऋकारान्त धातु कृ - चकृ में, 'इको यणचि' से यण् करके बतलाये गये हैं।

शशृ + अतुः - 'इको यणचि' से यण् करके - शश्रतुः / शशृ + अ - शश्र आदि। अतः शॄ धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

ह्रस्व न होने पर			**ह्रस्व होने पर**		
शशार	शशरतुः	शशरुः	शशार	शश्रतुः	शश्रुः
शशरिथ	शशरथुः	शशर	शशरिथ	शश्रथुः	शश्र
शशार, शशर	शशरिव	शशरिम	शशार, शशर	शश्रिव	शश्रिम

दॄ धातु -

ददार	ददरतु:	ददरु:	ददार	दद्रतु:	दद्रु:
ददरिथ	ददरथु:	ददर	ददरिथ	दद्रथु:	दद्र
ददार, ददर	ददरिव	ददरिम	ददार, ददर	दद्रिव	दद्रिम

पॄ धातु -

पपार	पपरतु:	पपरु:	पपार	पप्रतु:	पप्रु:
पपरिथ	पपरथु:	पपर	पपरिथ	पप्रथु:	पप्र
पपार, पपर	पपरिव	पपरिम	पपार, पपर	पप्रिव	पप्रिम

४. तॄ, जॄ, शॄ, दॄ, पॄ, से बचे हुए शेष दीर्घ ॠकारान्त धातु -

इन्हें ह्रस्व नहीं होता। अत: इनके रूप ठीक उसी प्रकार बनाइये, जैसे 'शॄ' धातु के रूप अभी 'ह्रस्व न करके' बनाये हैं।

कॄ धातु -

चकार	चकरतु:	चकरु:
चकरिथ	चकरथु:	चकर
चकार / चकर	चकरिव	चकरिम

इसी प्रकार शेष सारे दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के रूप बनाइये।

यह सारे ॠकारान्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई। इसके साथ ही सारे अजन्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि भी पूर्ण हुई।

अब हम हलन्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनायें। हलन्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाते समय हमें धातु के अन्त्याक्षर + 'थल्' से 'ध्वे' प्रत्ययों में सन्धि करना पड़ेगी। अत: यहाँ संक्षेप में सन्धि बतला रहे हैं। सन्धियों को विस्तार से सन्धि के पाठ में देखिये।

सन्धि

थकारादि 'थल्' प्रत्यय परे होने पर

कवर्गान्त धातु के - क्, ख्, ग् को खरि च सूत्र से क् बनाइये तथा प्रत्यय के थ् को कुछ मत कीजिये - शशक् + थ - शशक्थ।

चवर्गान्त धातुओं के तीन वर्ग बनाइये -

१. व्रश्च्, भ्रस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज् धातु तथा छकारान्त, धातु – इन धातुओं के अन्तिम वर्ण के स्थान पर 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' कीजिये और 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से प्रत्यय के 'थ' को 'ठ' बनाइये -

वव्रश्च्	+	थ	=	वव्रष्ठ	बभ्रज्ज्	+	थ	=	बभ्रष्ठ
सस्रज्	+	थ	=	सस्रष्ठ	ममार्ज्	+	थ	=	ममार्ष्ठ
इयज्	+	थ	=	इयष्ठ	पप्रच्छ्	+	थ	=	पप्रष्ठ

व्रश्च् + थल् / इसमें 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोगादि सकार का लोप करके - व्रच् + थ / 'व्रश्चभ्रस्ज.' सूत्र से च् को ष् करके - व्रष् + थ/ 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से प्रत्यय के 'थ' को 'ठ' करके वव्रष्ठ बना है।

२. मस्ज् धातु – मस्जिनशोर्झलि सूत्र से इसे नुम् का आगम कीजिये। ज् को 'चोः कुः' सूत्र से क् बनाइये तथा प्रत्यय के थ को कुछ मत कीजिये -

मज्ज् + थल् - ममङ्क्थ

३. इनसे बचे हुए शेष चवर्गान्त धातु – इनके च्, छ्, ज् को 'चोः कुः' सूत्र से क्, ख्, ग् बनाइये। उसके बाद इस क्, ख्, ग् को 'खरि च' सूत्र से क् बनाइये तथा प्रत्यय के थ को कुछ मत कीजिये। यथा -

पपच्	+	थ	=	पपक्थ
ससञ्ज्	+	थ	=	ससङ्क्थ
ररञ्ज्	+	थ	=	ररङ्क्थ
बभज्	+	थ	=	बभक्थ
तत्यंज्	+	थ	=	तत्यक्थ
आनञ्ज्	+	थ	=	आनङ्क्थ

तवर्गान्त धातु के – अन्तिम त्, थ्, द् को खरि च सूत्र त् बनाइये। प्रत्यय के थ को कुछ मत कीजिये -

ससद्	+	थ	=	ससत्थ
चिक्लेद्	+	थ	=	चिक्लेत्थ

पवर्गान्त धातु के – अन्तिम प्, फ्, ब् को खरि च सूत्र से प् बनाइये। प्रत्यय के थ को कुछ मत कीजिये -

ततप्	+	थ	=	ततप्थ
शशप्	+	थ	=	शशप्थ

सुष्वप्	+	थ	=	सुष्वप्थ
जुगोप्	+	थ	=	जुगोप्थ
सुष्वप्	+	थ	=	सुष्वप्थ
ततर्प्	+	थ	=	ततर्प्थ

यह सभी वर्गों के प्रथम द्वितीय तृतीय वर्णों का विचार पूर्ण हुआ।

जब धातु के अन्त में वर्ग का चतुर्थाक्षर हो, तब आप ऐसे धातुओं के बाद में आने वाले -

१. प्रत्यय के थ को **'झषस्तथोर्धोऽधः'** सूत्र से ध बना दीजिये।

२. और धातु के अन्त में बैठे हुए, वर्ग के चतुर्थाक्षर को **'झलां जश् झशि'** सूत्र से उसी वर्ग का तृतीयाक्षर बना दीजिये।

बबन्ध्	+	थ	-	बबन्द्ध
विव्यध्	+	थ	=	विव्यद्ध
ययभ्	+	थ	-	ययब्ध
ररध्	+	थ	=	ररद्ध
सिषेध्	+	थ	=	सिषेद्ध,

यह चतुर्थाक्षरों का विचार पूर्ण हुआ।

नकारान्त, मकारान्त धातुओं के 'न्' 'म्' को 'न्' बनाइये।

जघन्	+	थ	=	जघन्थ
जगम्	+	थ	-	जगन्थ
ननम्	+	थ	-	ननन्थ
ययम्	+	थ	-	ययन्थ

शकारान्त धातु - शकारान्त धातुओं के 'श्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये और प्रत्यय के 'थ' को ष्टुना ष्टुः सूत्र से ठ बनाइये -

ददंश्	+	थ	=	ददंष्ठ
चिक्लेश्	+	थ	-	चिक्लेष्ठ

नश् धातु - मस्जिनशोर्झलि सूत्र से इसे नुम् का आगम कीजिये। शेष पूर्ववत्। ननंश् + थ = ननंष्ठ।

षकारान्त धातु - धातु के 'ष्' को कुछ मत कीजिये। केवल प्रत्यय के

'थ' को ष्टुना ष्टुः सूत्र से ष्टुत्व करके 'ठ' बनाइये।

निश्चुकोष् + थ - निश्चुकोष् + ठ = निष्चुकोष्ठ

यहाँ ध्यान रहे कि यदि ष् के पूर्व में क् हो तो उसका स्कोः संयोगाद्योरन्ते च सूत्र से लोप कर दें। उसके बाद धातुओं के 'ष्' को कुछ मत कीजिये। केवल प्रत्यय के 'थ' को ष्टुना ष्टुः सूत्र से ष्टुत्व करके 'ठ' बनाइये।

आनक्ष् + थ - आनष् + ठ = आनष्ठ
तत्वक्ष् + थ - तत्वष् + ठ = तत्वष्ठ
ततक्ष् + थ - ततष् + ठ = ततष्ठ

सकारान्त धातु - इन्हें कुछ भी मत कीजिये।

उवस् + थ = उवस्थ

हकारान्त धातुओं से थकारादि प्रत्यय परे होने पर, हकारान्त धातुओं के पाँच वर्ग बनाइये -

१. **नह् धातु** - नह् धातु के ह् को नहो धः सूत्र से ध् बनाइये। ननह् + थ - ननध् + थ / प्रत्यय के थ को **झषस्तथोर्धोऽधः** सूत्र से ध बना दीजिये - ननध् + थ - ननध् + ध / अब धातु के अन्त में बैठे हुए वर्ग के चतुर्थाक्षर ध् को **झलां जश् झशि** सूत्र से जश्त्व करके उसी वर्ग का द् तृतीयाक्षर बनाइये। ननध् + ध - ननद् + ध - ननध् + थ = ननद्ध।

२. **दह्, दिह् धातु** - इनके ह् को दादेर्धातोर्घः सूत्र से घ् बनाइये। ददह् + थ - ददघ् + थ / प्रत्यय के थ को **झषस्तथोर्धोऽधः** सूत्र से ध बनाइये - ददघ् + ध / अब धातु के अन्त में बैठे हुए वर्ग के चतुर्थाक्षर घ् को **झलां जश् झशि** सूत्र से जश्त्व करके उसी वर्ग का तृतीयाक्षर ग् बनाइये - ददग् + ध = ददग्ध। इसी प्रकार दिह् - दिदेह् + थ = दिदेग्ध।

३. **वह् धातु** - वह् धातु के 'ह्' को 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाइये। उवह् + थ - उवढ् + थ / प्रत्यय के थ को **झषस्तथोर्धोऽधः** सूत्र से ध बनाइये - उवढ् + ध / उसके बाद 'ध' को ष्टुना ष्टुः सूत्र से ष्टुत्व कीजिये - उवढ् + ढ / अब पूर्व ढ् का 'ढो ढे लोपः' सूत्र से लोप कर दीजिये - उवढ् + ढ - उव + ढ / उसके बाद लुप्त ढ् के पूर्ववर्ती 'अ' के स्थान पर 'सहिवहोरोदवर्णस्य' सूत्र से 'ओ' आदेश कीजिये - उव + ढ = उवोढ।

४. **द्रुह्, मुह्, स्नुह्, ष्णिह् धातु** - **वा द्रुहमुहस्नुहष्णिहाम्** - द्रुह्, मुह्,

स्नुह्, तथा ष्णिह् धातुओं के 'ह्' के स्थान पर विकल्प से 'घ्' तथा 'ढ्' होते हैं, झल् परे होने पर।

'ह्' के स्थान पर 'घ्' होने पर - द्रुह् - दुद्रोह् + थ - दुद्रोघ् + थ / झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' करके - दुद्रोघ् + ध / झलां जश् झशि सूत्र से 'घ्' के स्थान पर जश्त्व 'ग्' करके दुद्रोग् + ध = दुद्रोग्ध।

इसी प्रकार मुमोह् + थ = मुमोग्ध / सुस्नोह् + थ = सुस्नोग्ध / सिस्नेह् + थ = सिस्नेग्ध आदि बनाइये।

'ह्' के स्थान पर 'ढ्' होने पर - द्रुह् - दुद्रोह् + थ - दुद्रोढ् + थ / प्रत्यय के थ को **झषस्तथोर्धोऽधः** सूत्र से ध बनाकर - दुद्रोढ् + ध / प्रत्यय के 'ध' को ष्टुना ष्टुः सूत्र से ष्टुत्व करके - दुद्रोढ् + ढ / अब पूर्व ढ् का 'ढो ढे लोपः' सूत्र से लोप करके = दुद्रोढ।

इसी प्रकार मुमोह् + थ = मुमोढ / सुस्नोह् + थ = सुस्नोढ / सिस्नेह + थ = सिस्नेढ आदि बनाइये।

५. शेष हकारान्त धातु - शेष हकारान्त धातुओं के 'ह्' को 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' होता है। ततर्ह् + थ - ततर्ढ् + थ / प्रत्यय के थ को **झषस्तथोर्धोऽधः** सूत्र से ध बनाकर - ततर्ढ् + ध / प्रत्यय के 'ध' को ष्टुना ष्टुः सूत्र से ष्टुत्व करके - ततर्ढ् + ढ / अब पूर्व ढ् का 'ढो ढे लोपः' सूत्र से लोप करके - ततर् + ढ = ततर्ढ। इसी प्रकार ववर्ह् + थ = ववर्ढ / ततृंह् + थ = ततृण्ढ आदि बनाइये। यह हलन्त धातुओं में थकारादि प्रत्यय जोड़ने की विधि पूर्ण हुई।

सकारादि 'से' प्रत्यय परे होने पर

केवल वेट् आत्मनेपदी धातु ही इसके उदाहरण में मिलेंगे -

दकारान्त धातु - सकारादि प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्त में आने वाले, द् को 'खरि च' सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर त् बनाइये प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये। सस्यन्द् + से - सस्यन्त्से।

पकारान्त धातु - प् को 'खरि च' सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर प् बनाइये। प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये।

कृपू - चक्लृप् + से - चक्लृप्से। त्रपूष् - त्रेप् + से - त्रेप्से।

मकारान्त धातु - सकारादि प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले 'म्' को 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से अनुस्वार बनाइये। प्रत्यय के स् को

कुछ मत कीजिये। चक्षम् + से - चक्षंसे।

शकारान्त धातु - सकारादि प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले 'श्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये। अश् - आनश् + से - आनष् + से / इस 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाइये - आनक् + से / प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये - आनक् + षे। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये - आनक्षे।

हकारान्त धातु - बशादि हकारान्त धातुओं के बाद सकारादि प्रत्यय आने पर, इन धातुओं के अन्तिम 'ह्' को, 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाकर, धातु के आदि में जो वर्ग का तृतीयाक्षर है, उसे 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर बना दीजिये। 'ढ्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से, 'क्' बनाइये। उसके बाद प्रत्यय के स् को ष् बनाइये। जैसे -

गाह्	-	जगाढ्	+	से	-	जघाक्	+	षे	=	जघाक्षे
गुह्	-	जुगुढ्	+	से	-	जुघुक्	+	षे	=	जुघुक्षे
गृह्	-	जगृढ्	+	से	-	जघृक्	+	षे	=	जघृक्षे

धकारादि 'ध्वे' प्रत्यय परे होने पर

दकारान्त धातु - त् को 'झलां जश् झशि' सूत्र से उसी वर्ग का तृतीयाक्षर द् बनाइये। 'झरो झरि सवर्णे' सूत्र से पूर्व झर् का विकल्प से लोप कीजिये।

झर् का लोप होने पर - सस्यन्द् + ध्वे - सस्यन्ध्वे। लोप न होने पर - सस्यन्द् + ध्वे - सस्यन्द्ध्वे।

पकारान्त धातु - प् को 'झलां जश् झशि' सूत्र से उसी वर्ग का तृतीयाक्षर ब् बनाइये। प्रत्यय के ध् को कुछ मत कीजिये।

चक्लृप् + ध्वे - चक्लृब्ध्वे। त्रपूष् - त्रेप् + ध्वे - त्रेब्ध्वे।

मकारान्त धातु - धकारादि प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले म् को 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से अनुस्वार बनाइये। चक्षम् + ध्वे / चक्षं + ध्वे / अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः सूत्र से अनुस्वार को परसवर्ण करके - चक्षम् + ध्वे - चक्षन्ध्वे।

शकारान्त धातु - धकारादि प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले श् को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये।

आनश् + ध्वे - आनष् + ध्वे / इस 'ष्' को 'झलां जश् झशि' सूत्र

से 'ड्' बनाइये - आनड् + ध्वे / प्रत्यय के ध् को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से ढ् बनाइये। आनड् + ढ्वे - आनड्ढ्वे।

बशादि हकारान्त गाह्, गुह्, गृह् धातु -

इन धातुओं के बाद धकारादि प्रत्यय आने पर, इन धातुओं के अन्तिम 'ह्' को, 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाइये। गाह् - जगाह् + ध्वे - जगाढ् + ध्वे / धातु के आदि में जो वर्ग का तृतीयाक्षर 'ग' है, उसे 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर 'घ' बना दीजिये। जगाढ् + ध्वे - जघाढ् + ध्वे / प्रत्यय के ध् को 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से ढ् बनाइये। जघाढ् + ध्वे - जघाढ् + ढ्वे / पूर्व 'ढ्' का 'ढो ढे लोपः' सूत्र से, लोप कर दीजिये। जघाढ् + ढ्वे - जघाढ्वे।

इसी प्रकार जुगुह् + ध्वे - जुघुढ्वे / जगृह् + ध्वे - जघृढ्वे बनाइये। यह अनिट् 'थल्' 'से' 'ध्वे' प्रत्ययों को धातुओं में जोड़ने की विधि बतलाई।

यदि इन प्रत्ययों को इडागम हो जाये तब प्रत्यय अजादि हो जायेगा। तब कोई सन्धि न करें। जैसे - बबन्ध् + इ + थ = बबन्धिथ / जगाह् + इ + से = जगाहिषे / जगाह् + इ + ध्वे = जगाहिध्वे / सस्यन्द् + इ + से = सस्यन्दिषे / सस्यन्द् + इ + ध्वे = सस्यन्दिध्वे / दुद्रुह् + इ + व = दुद्रुहिव आदि।

लिट् लकार के शेष प्रत्यय परे होने पर भी कोई सन्धि न करें।

जैसे - दुद्रुह् + व = दुद्रुह्व / दुद्रुह् + म = दुद्रुह्म / इसी प्रकार जगृह्वहे, जगृह्महे आदि।

यह लिट् लकार के अनिट् धातुओं में प्रत्ययों को जोड़ने के लिये सन्धि करने की संक्षिप्त विधि पूर्ण हुई। यह ध्यान रहे कि परस्मैपदी धातुओं से परस्मैपद के प्रत्यय लगाये जायें, तथा आत्मनेपदी धातुओं से आत्मनेपद के प्रत्यय लगाये जायें। उभयपदी धातुओं से दोनों पद के प्रत्यय लग सकते हैं।

हलन्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

इन सन्धियों को बुद्धिस्थ करें और ३०२ से ३११ पृष्ठ में दी हुई लिट् लकार के प्रत्ययों की इडागम विधि को अच्छी तरह पढ़ें, उसके बाद ही इसमें प्रवेश करें।

लिट् लकार के रूप बनाने के लिये हलन्त धातुओं का विभाजन आठ हिस्सों में करें -

१. सम्प्रसारणी हलन्त धातु।
२. नलोपी हलन्त धातु।
३. वे हलन्त धातु जिन्हें एत्व तथा अभ्यासलोप होते हैं।
४. एत्वाभ्यासलोप से बचे हुए अदुपध हलन्त धातु।
५. इदुपध हलन्त धातु।
६. उदुपध हलन्त धातु।
७. ऋदुपध हलन्त धातु।
८. शेष हलन्त धातु।

अब हम एक एक वर्ग के धातुओं के रूप बनायें -

१. हलन्त सम्प्रसारणी धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

वच्, स्वप्, यज्, वप्, वह्, वस्, वद्, वेञ्, ह्वेञ्, श्वि, व्येञ्, ये ११ 'वच्यादि धातु' ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज्, ये ९ धातु 'ग्रह्यादि धातु' तथा द्युत्, व्यथ्, इस प्रकार कुल २२ धातु सम्प्रसारणी हैं।

इन सम्प्रसारणी धातुओं में से ह्वेञ्, श्वि, वेञ्, व्येञ्, ज्या, धातु अजन्त धातु हैं। इनके रूप हम 'अजन्त वर्ग' में बना चुके हैं।

अतः अब शेष हलन्त सम्प्रसारणी धातुओं के रूप बनायें। इन्हें सम्प्रसारण आदि करने की विधि हम २९६ से ३०२ पृष्ठ पर बतला चुके हैं। उसे वहीं देखें।

ध्यान रहे कि इन हलन्त सम्प्रसारणी धातुओं में से वस्, वच्, स्वप्, यज्, वप्, वह्, व्यध्, वय्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज् धातु 'थलि वेट्' हैं।

वश्, व्यच्, वद्, ग्रह्, धातु 'थलि सेट्' हैं। द्युत्, व्यथ्, धातु आत्मनेपदी हैं। अतः इनसे परे 'थल्' मिलेगा ही नहीं।

इन सम्प्रसारणी धातुओं में यह भी ध्यान रखना है कि णल् णल् थल् प्रत्यय लगाने के लिये पहले वाले अङ्गों का प्रयोग किया जाये।

शेष १५ अपित् लिट् प्रत्ययों के रूप बनाने के लिये दूसरे वाले अङ्गों का प्रयोग किया जाये।

ये अङ्ग इस प्रकार हैं -

	केवल अभ्यास को सम्प्रसारण करके पित् लिट् प्रत्ययों के लिये अङ्ग	अभ्यास, धातु, दोनों को सम्प्रसारण करके कित् लिट् प्रत्ययों के लिये अङ्ग
थलि वेट् धातु		
यज् -	इयज् -	ईज्
वप् -	उवप् -	ऊप्
वह् -	उवह् -	ऊह्
वस् -	उवस् -	ऊष्
वच् -	उवच् -	ऊच्
स्वप् -	सुष्वप् -	सुषुप्
वय् -	उवय् -	ऊय् / ऊव्
व्यध् -	विव्यध् -	विविध्
ग्रह् -	जग्रह् -	जगृह्
व्रश्च् -	वव्रश्च् -	वव्रश्च्
प्रच्छ् -	पप्रच्छ् -	पप्रच्छ्
भ्रस्ज् -	बभ्रज्ज् / बभर्ज् -	बभ्रज्ज् / बभर्ज्
थलि सेट् धातु		
वद् -	उवद् -	ऊद्
व्यच् -	विव्यच् -	विविच्
वश् -	उवश् -	ऊश्
आत्मनेपदी धातु		
द्युत् -	दिद्युत् -	दिद्युत्
व्यथ् -	विव्यथ् -	विव्यथ्

इन धातुओं में प्रथम पुरुष का णल् प्रत्यय लगाने की विधि

इनमें से जिन धातुओं की उपधा में ह्रस्व 'अ' हो, उन्हें प्रथम पुरुष का णल् प्रत्यय परे होने पर वृद्धि कीजिये। सूत्र है -

अत उपधाया: - अङ्ग की उपधा के ह्रस्व अ को वृद्धि होती है ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। उवस् + णल् - अत उपधाया: से वृद्धि होकर - उवस् - उवास / उवच् - उवाच / सुष्वप् - सुष्वाप / उवद् - उवाद / विव्यध् - विव्याध / विव्यच् - विव्याच / उवश् - उवाश, आदि।

इन धातुओं में उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय लगाने की विधि

णलुत्तमो वा - उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय विकल्प से णित् होता है।

णल् प्रत्यय के णित् होने पर - अत उपधायाः से वृद्धि होकर - उवस् - उवास / उवच् - उवाच / सुष्वप् - सुष्वाप / उवद् - उवाद / विव्यध् - विव्याध / विव्यच् - विव्याच / उवश् - उवाश।

णल् प्रत्यय के णित् न होने पर - अत उपधायाः से वृद्धि न होकर - उवस् + णल् - उवस / उवच् + णल् - उवच / सुष्वप् + णल् - सुष्वप / उवद् + णल् - उवद / विव्यध् + णल् - विव्यध / विव्यच् + णल् - विव्यच / उवश् + णल् - उवश आदि।

इस प्रकार प्रथमपुरुष का णल् प्रत्यय परे होने पर एक एक रूप बनाइये तथा उत्तमपुरुष का णल् प्रत्यय परे होने पर दो दो रूप बनाइये।

इन धातुओं में थल् प्रत्यय लगाने की विधि

थल् प्रत्यय परे होने पर, कोई अङ्गकार्य मत कीजिये। केवल सन्धि कीजिये। इडागम का ध्यान अवश्य रखिये। यथा - वच् से उवचिथ, उवक्थ / स्वप् से सुष्वपिथ, सुष्वप्थ / व्यध् से विव्यधिथ, विव्यद्ध / यज् से इयजिथ, इयष्ठ / वह् से उवहिथ, उवोढ / वप् से उवपिथ, उवप्थ, आदि।

इन धातुओं में शेष अपित् प्रत्यय लगाने की विधि

इनमें अपित् प्रत्ययों को ज्यों का त्यों जोड़ दीजिये। ध्यान रहे कि अपित् प्रत्यय परे होने पर दूसरे वाले अङ्गों का ही प्रयोग किया जाये। यथा -

वस् - ऊष् + अतुः = ऊषतुः / वप् - ऊप् + अतुः = ऊपतुः आदि।

इनके पूरे रूप इस प्रकार बने -

यज् धातु -

इयाज	ईजतुः	ईजुः	ईजे	ईजाते	ईजिरे
इयजिथ / इयष्ठ	ईजथुः	ईज	ईजिषे	ईजाथे	ईजिध्वे
इयाज / इयज	ईजिव	ईजिम	ईजे	ईजिवहे	ईजिमहे

वप् धातु -

उवाप	ऊपतुः	ऊपुः	ऊपे	ऊपाते	ऊपिरे
उवपिथ / उवप्थ	ऊपथुः	ऊप	ऊपिषे	ऊपाथे	ऊपिध्वे
उवाप / उवप	ऊपिव	ऊपिम	ऊपे	ऊपिवहे	ऊपिमहे

वह् धातु -

उवाह	ऊहतुः	ऊहुः	ऊहे	ऊहाते	ऊहिरे
उवहिथ / उवोढ	ऊहथुः	ऊह	ऊहिषे	ऊहाथे	ऊहिध्वे
उवाह / उवह	ऊहिव	ऊहिम	ऊहे	ऊहिवहे	ऊहिमहे

वस् धातु -

उवास	ऊषतुः	ऊषुः
उवसिथ / उवस्थ	ऊषथुः	ऊष
उवास / उवस	ऊषिव	ऊषिम

वच् धातु -

उवाच	ऊचतुः	ऊचुः
उवचिथ / उवक्थ	ऊचथुः	ऊच
उवाच / उवच	ऊचिव	ऊचिम

स्वप् धातु -

सुष्वाप	सुषुपतुः	सुषुपुः
सुष्वपिथ / सुष्वप्थ	सुषुपथुः	सुषुप
सुष्वाप / सुष्वप	सुषुपिव	सुषुपिम

व्यध् धातु -

विव्याध	विविधतुः	विविधुः
विव्यधिथ / विव्यद्ध	विविधथुः	विविध
विव्याध / विव्यध	विविधिव	विविधिम

वय् धातु - ध्यान रहे कि धातुपाठ में वय् कोई धातु नहीं है। वेञो वयिः सूत्र से लिट् लकार में वेञ् धातु को ही विकल्प से वय् आदेश होता है।

परस्मैपद			आत्मनेपद		
उवाय	ऊयतुः	ऊयुः	ऊये	ऊयाते	ऊयिरे
	ऊवतुः	ऊवुः	ऊवे	ऊवाते	ऊविरे
उवयिथ	ऊयथुः	ऊय	ऊयिषे	ऊयाथे	ऊयिध्वे
	ऊवथुः	ऊव	ऊविषे	ऊवाथे	ऊविध्वे
उवाय / उवय	ऊयिव	ऊयिम	ऊये	ऊयिवहे	ऊयिमहे
	ऊविव	ऊविम	ऊवे	ऊविवहे	ऊविमहे

वद् धातु -

उवाद	ऊदतुः	ऊदुः
उवदिथ	ऊदथुः	ऊद
उवाद / उवद	ऊदिव	ऊदिम

वश् धातु -

उवाश	ऊशतुः	ऊशुः
उवशिथ	ऊशथुः	ऊश
उवाश / उवश	ऊशिव	ऊशिम

व्यच् धातु -

विव्याच	विविचतुः	विविचुः
विव्यचिथ	विविचथुः	विविच
विव्याच / विव्यच	विविचिव	विविचिम

ग्रह् धातु -

जग्राह	जगृहतुः	जगृहुः	जगृहे	जगृहाते	जगृहिरे
जग्रहिथ	जगृहथुः	जगृह	जगृहिषे	जगृहाथे	जगृहिध्वे
जग्राह / जग्रह	जगृहिव	जगृहिम	जगृहे	जगृहिवहे	जगृहिमहे

द्युत् धातु -

दिद्युते	दिद्युताते	दिद्युतिरे
दिद्युतिषे	दिद्युताथे	दिद्युतिध्वे
दिद्युते	दिद्युतिवहे	दिद्युतिमहे

व्यथ् धातु -

विव्यथे	विव्यथाते	विव्यथिरे
विव्यथिषे	विव्यथाथे	विव्यथिध्वे
विव्यथे	विव्यथिवहे	विव्यथिमहे

भ्रस्ज् धातु -

भ्रस्ज् के स्थान पर भ्रज्ज् रहने पर -

बभ्रज्ज	बभ्रज्जतुः	बभ्रज्जुः	बभ्रज्जे	बभ्रज्जाते	बभ्रज्जिरे
बभ्रज्जिथ, बभ्रष्ठ	बभ्रज्जथुः	बभ्रज्ज	बभ्रज्जिषे	बभ्रज्जाथे	बभ्रज्जिध्वे
बभ्रज्ज	बभ्रज्जिव	बभ्रज्जिम	बभ्रज्जे	बभ्रज्जिवहे	बभ्रज्जिमहे

भ्रज्ज् को भर्ज् बनाने पर -

बभर्ज	बभर्जतुः	बभर्जुः	बभर्जे	बभर्जाते	बभर्जिरे
बभर्जिथ / बभर्ष्ठ	बभर्जथुः	बभर्ज	बभर्जिषे	बभर्जाथे	बभर्जिध्वे
बभर्ज	बभर्जिव	बभर्जिम	बभर्जे	बभर्जिवहे	बभर्जिमहे

प्रच्छ् धातु -

पप्रच्छ	पप्रच्छतुः	पप्रच्छुः
पप्रच्छिथ / पप्रष्ठ	पप्रच्छथुः	पप्रच्छ
पप्रच्छ	पप्रच्छिव	पप्रच्छिम

व्रश्च् धातु

वव्रश्च	वव्रश्चतुः	वव्रश्चुः
वव्रश्चिथ / वव्रष्ठ	वव्रश्चथुः	वव्रश्च
वव्रश्च	वव्रश्चिव	वव्रश्चिम

२. नलोपी धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

इन्ध् धातु -

ईन्धिभवतिभ्यां च - इन्ध् तथा भू धातु से परे आने वाले केवल अपित् लिट् प्रत्यय कित्वत् होते हैं। इन्ध् - द्वित्वादि करके - ईन्ध् + ए / अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति सूत्र से उपधा के 'न्' का लोप करके - ईध् + ए - ईधे।

समीधे दस्युहन्तमम्। पुत्र ईधे अथर्वणः। ये प्रयोग वैदिक हैं।

ध्यान रहे कि यह धातु इजादि गुरुमान् है। अतः लोक में इससे 'आम्' प्रत्यय लगकर, इन्धाञ्चक्रे रूप बनेगा।

श्रन्थ्, ग्रन्थ् धातु -

श्रन्थिग्रन्थिदम्भिस्वञ्जीनाम् कित्वं वा वक्तव्यम् - श्रन्थ्, ग्रन्थ्, दम्भ्, स्वञ्ज्, धातुओं से परे आने वाले अपित् लिट् प्रत्यय विकल्प से कित्वत् होते हैं।

पित्प्रत्ययानामपि वा कित्वं वक्तव्यम्, इति सुधाकरादयः - सुधाकर आदि के मत में पित् लिट् प्रत्यय विकल्प से कित्वत् होते हैं।

कौमुदीकार को निर्मूल होने के कारण यह मत ग्राह्य नहीं है।

प्रत्यय के कित्वत् होने पर - 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से अनिदित् धातुओं की उपधा के न् का लोप कीजिये -

श श्रन्थ्	+	अतुः	-	शश्रथ्	+	अतुः	=	श्रेथतुः
ज ग्रन्थ्	+	अतुः	-	जग्रथ्	+	अतुः	=	ग्रेथतुः

कित्वत् न होने पर - कुछ नहीं होता।

श श्रन्थ्	+	अतुः	-	शश्रन्थ्	+	अतुः	=	शश्रन्थतुः
ज ग्रन्थ्	+	अतुः	-	जग्रन्थ्	+	अतुः	=	जग्रन्थतुः

श्रन्थश्चेति वक्तव्यम् - न्यास के अनुसार, श्रन्थ् तथा ग्रन्थ धातु की उपधा के न् का लोप होने के बाद, इसके अभ्यास का लोप होता है तथा धातु के 'अ' को एत्व भी होता है।

दोनों के अनुसार श्रन्थ् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

सुधाकर के अनुसार विकल्प से नलोप, एत्व, अभ्यासलोप होने पर

शश्रन्थ, श्रेथ	शश्रन्थतुः, श्रेथतुः	शश्रन्थुः, श्रेथुः
शश्रन्थिथ, श्रेथिथ	शश्रन्थतुः, श्रेथथुः	शश्रन्थ, श्रेथ
शश्रन्थ, श्रेथ	शश्रन्थिव, श्रेथिव	शश्रन्थिम, श्रेथिम

कौमुदीकार के अनुसार नलोप, एत्व, अभ्यासलोप न होने पर

शश्रन्थ	शश्रन्थतुः	शश्रन्थुः
शश्रन्थिथ	शश्रन्थथुः	शश्रन्थ
शश्रन्थ	शश्रन्थिव	शश्रन्थिम

माधव के अनुसार इससे प्रथम पुरुष एकवचन में शश्रथ तथा उत्तम पुरुष एकवचन में शश्राथ, शश्रथ रूप भी बनते हैं।

ग्रन्थ् - जग्रन्थ्, से जग्रन्थ, जग्रन्थतुः, जग्रन्थुः आदि इसी प्रकार बनाइये।

दम्भ् धातु - चूँकि श्रन्थिग्रन्थिदम्भिस्वञ्जीनाम् कित्वं वा वक्तव्यम्, इस वार्तिक के अनुसार दम्भ् धातु से परे आने वाले अपित् लिट् प्रत्यय विकल्प से कित्वत् होते हैं, अतः 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से इसकी उपधा के न् का लोप होता है। सुधाकर आदि के मत में पित् प्रत्यय भी किद्वत् होते हैं। अतः पित् प्रत्यय परे होने पर भी उपधा के न् का लोप होता है।

ध्यान दें कि पक्ष में कित्वत् न होने पर नलोप नहीं होता है।

दम्भेश्च - लिट् प्रत्यय परे होने पर दम्भ्, के अभ्यास का लोप होता है तथा अ को एत्व होता है। अतः दम्भ् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

कौमुदीकार के मत में केवल अपित् प्रत्यय किद्वत् होने पर

ददम्भ	ददम्भतुः, देभतुः	ददम्भुः, देभुः
ददम्भिथ	ददम्भथुः, देभथुः	ददम्भ, देभ

ददम्भ	ददम्भिव, देभिव	ददम्भिम, देभिम

सुधाकर के मत में सारे प्रत्यय किद्वत् होने पर

ददम्भ, देभ	ददम्भतुः, देभतुः	ददम्भुः, देभुः
ददम्भिथ, देभिथ	ददम्भथुः, देभथुः	ददम्भ, देभ
ददम्भ, देभ	ददम्भिव, देभिव	ददम्भिम, देभिम

इस प्रकार श्रन्थ्, ग्रन्थ्, दम्भ्, धातुओं में विकल्प से न् का लोप तथा विकल्प से एत्वाभ्यासलोप सिद्ध हुए।

ष्वञ्ज् धातु -

परि + ष्वञ्ज् / द्वित्वादि करके - परिषस्वञ्ज् में केवल न् का लोप होता है, एत्वाभ्यासलोप नहीं होते। यथा - परिषस्वञ्ज् + ए - परिषस्वज् + ए = परिषस्वजे। यहाँ आदेशप्रत्यययोः सूत्र से षत्व होता है।

यह धातु केवल आत्मनेपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

परिषस्वजे	परिषस्वजाते	परिषस्वजिरे
परिषस्वजिषे	परिषस्वजाथे	परिषस्वजिध्वे
परिषस्वजे	परिषस्वजिवहे	परिषस्वजिमहे

३. ऐसे धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि, जिन्हें एत्व तथा अभ्यासलोप होते हैं

कुछ धातु ऐसे हैं जिनके 'अ' को 'ए' होता है तथा अभ्यास का लोप हो जाता है। जैसे पठ् - प पठ् - पेठ् - पेठतुः को देखिये। यहाँ पपठ् में अभ्यास जो 'प' है उसका लोप हो गया है, यही अभ्यासलोप है, तथा धातु के पठ् में जो 'अ' है उसे 'ए' हो गया है यही एत्व है। अब हम ऐसे धातुओं का विचार करें जिनके अभ्यास का लोप होता है, तथा 'अ' को 'ए' होता है।

अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि / थलि च सेटि -

१. जिन धातुओं में एक ह्रस्व 'अ' हो तथा -

२. उस 'अ' के दोनों ओर केवल एक एक हल् हो तथा -

३. अभ्यासकार्य होने के बाद जिनके अभ्यास के व्यञ्जन में कोई परिवर्तन न हुआ हो अर्थात् जिनके अभ्यास अनादेश हों, ऐसे अनादेश अभ्यास वाले धातुओं के अभ्यास का लोप हो जाता है, तथा ह्रस्व 'अ' को 'ए' हो जाता है, **कित् लिट्**

प्रत्यय परे होने पर तथा सेट् थल् प्रत्यय परे होने पर। जैसे -

पठ् को द्वित्व करके बने हुए - पपठ् को देखिये - इसमें पहिला 'प' तो अभ्यास है। उसके बाद पठ् धातु है। इस धातु में प् + अ + ठ् ये तीन वर्ण हैं। इनमें बीच में अ है। अ के दोनों ओर एक एक हल् हैं, तथा अभ्यास अपरिवर्तित अर्थात् अनादेश है।

अतः इस धातु के अभ्यास का लोप हो जाएगा तथा ह्रस्व 'अ' को 'ए' हो जाएगा, यदि इससे परे आने वाला प्रत्यय कित् लिट् प्रत्यय हो,अथवा सेट् थल् हो। जैसे -

पपठ् + अतुः / पेठ् + अतुः = पेठतुः। इसी प्रकार पेठुः, पेठिव, पेठिम आदि रूप बनेंगे। इसी प्रकार पपठ् + इ + थल् / पेठ + इ + थ = पेठिथ।

ध्यान रहे कि अनिट् थल् प्रत्यय परे होने पर एत्व तथा अभ्यासलोप नहीं होते।

विशेष - रक्ष् धातु को देखिये। इसमें जो 'अ' है, उसके एक ओर तो एक हल् है तथा एक ओर क् + ष् = क्ष्, ये दो हल् हैं। अतः इस धातु को द्वित्व करके जो रक्ष् - ररक्ष् बनेगा, उसके अभ्यास का लोप भी नहीं होगा और धातु को एत्व भी नहीं होगा। ररक्ष् + अतुः = ररक्षतुः।

त्सर् धातु को देखिये। इसमें जो 'अ' है, उसके एक ओर तो त् + स् - त्स् ये दो हल् हैं तथा दूसरी ओर केवल एक हल् है। अतः इस धातु को द्वित्व करके जो त्सर् - तत्सर् बनेगा, उसके अभ्यास का लोप भी नहीं होगा और धातु को एत्व भी नहीं होगा। तत्सर् + अतुः = तत्सरतुः।

जिन अभ्यासों में कोई परिवर्तन नहीं होता, उन अभ्यासों को अनादेश अभ्यास कहा जाता है।

अब हम जानें कि किन धातुओं का अभ्यास अनादेश होता है ?

अभ्यासकार्य में हम पढ़ चुके हैं कि जिन धातुओं के आदि में कवर्ग न हो, किसी भी वर्ग के प्रथम, तृतीय, पञ्चम वर्ण हों, य, र, ल, व हों या श, ष, स, हों, ऐसे धातुओं के अभ्यास का वर्ण अपरिवर्तित अर्थात् अनादेश रहता है।

ऐसे अनादेश अभ्यास वाले धातुओं को हम चार हिस्सों में बतला रहे हैं। ३०२ से ३११ पृष्ठ में दी हुई लिट् प्रत्ययों की इडागम विधि को अच्छी तरह याद रखें, उसके बाद ही इसमें प्रवेश करें।

१. वे अनादेश अभ्यास वाले धातु, जिन्हें एत्व तथा अभ्यासलोप होते ही नहीं हैं।

न शसददवादिगुणानाम् -

हम पढ़ चुके हैं कि ऋृकारान्त धातुओं को कित् प्रत्यय परे होने पर 'ऋच्छत्यॄताम्' सूत्र से गुण करके 'अ' बनता है।

जिनमें गुण करके 'अ' बना हो, ऐसे धातुओं के अभ्यास भले ही अनादेश हों, तो भी इनके 'अ' को न तो एत्व होता है, न ही इनके अभ्यास का लोप होता है। विशॄ - विशशरतुः, विशशरुः, विशशरिथ आदि।

इनके अलावा 'शस्' 'दद्' तथा वकारादि धातुओं के 'अ' को भी न तो एत्व होता है न ही इनके अभ्यास का लोप होता है।

ये धातु इस प्रकार हैं।

शस् दद् वज् वख् वट् वठ् वण् वन् वन् वल् वष् वम् वन् = १३। ये धातु अदुपध हैं। इनके रूप इस प्रकार बनेंगे -

अदुपध धातु + प्रथम पुरुष का णल् प्रत्यय

अत उपधायाः - अङ्ग की उपधा के ह्रस्व अ को वृद्धि होती है ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। शशस् + णल् (अ) / अत उपधायाः सूत्र से वृद्धि होकर - शशास् + अ = शशास।

अदुपध धातु + उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय

'णलुत्तमो वा' सूत्र से उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् होने पर - शशस् + णल् (अ) / अत उपधायाः सूत्र से वृद्धि होकर - शशास् + अ = शशास। उत्तम पुरुष के णल् प्रत्यय के णित् न होने पर - शशस् + णल् (अ) = शशस।

शस् धातु -

शशास	शशसतुः	शशसुः
शशसिथ	शशसथुः	शशस
शशास / शशस	शशसिव	शशसिम

दद् धातु - यह धातु आत्मनेपदी है।

ददद	दददाते	दददिरे
दददिषे	दददाथे	दददिध्वे
ददद	दददिवहे	दददिमहे

वकारादि धातु –

ववाम	ववमतुः	ववमुः
ववमिथ	ववमथुः	ववम
ववाम / ववम	ववमिव	ववमिम

इसी प्रकार शेष वकारादि वज्, वख्, वट्, वठ्, वण्, वन्, वन्, वल्, वष्, वन् धातुओं के रूप बनाइये।

२. वे अनादेश अभ्यास वाले धातु, जिनसे परे आने वाले थल् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है अतः थल् प्रत्यय परे होने पर जिन्हें एत्व तथा अभ्यासलोप भी विकल्प से ही होते हैं –

शप्	पच्	षद्	शद्	तप्	शक्	यभ्	नम्	यम्
नश्	दह्	नह्	रम्	लभ्	रभ्	पद्	मन् = १२	

सेट् थल् प्रत्यय परे होने पर – इन धातुओं से परे जब सेट् थल् प्रत्यय परे हो, तब **'थलि च सेटि'** सूत्र से इनके अभ्यास का लोप कीजिये और इनके 'अ' को 'ए' बनाइये। पच् - पपच् + इट् + थल् / पपच् + इ + थ / अभ्यास का लोप करके और अ को ए बनाकर = पेचिथ।

अनिट् थल् प्रत्यय परे होने पर – इन धातुओं से परे जब अनिट् थल् प्रत्यय परे हो, तब इनके अभ्यास का लोप मत कीजिये और इनके 'अ' को 'ए' भी मत बनाइये। यथा - पच् - पपच् + थल् - पपच् + थ - पपक्थ।

इन धातुओं के पूरे रूप इस प्रकार हैं –

पच् धातु, उभयपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने –

पपाच	पेचतुः	पेचुः	पेचे	पेचाते	पेचिरे
पेचिथ / पपक्थ	पेचथुः	पेच	पेचिषे	पेचाथे	पेचिध्वे
पपाच / पपच	पेचिव	पेचिम	पेचे	पेचिवहे	पेचिमहे

शप् धातु उभयपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने –

शशाप	शेपतुः	शेपुः	शेपे	शेपाते	शेपिरे
शेपिथ / शशप्थ	शेपथुः	शेप	शेपिषे	शेपाथे	शेपिध्वे
शशाप / शशप	शेपिव	शेपिम	शेपे	शेपिवहे	शेपिमहे

शक् धातु परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने –

शशाक	शेकतुः	शेकुः
शशक्थ / शेकिथ	शेकथुः	शेक
शशाक / शशक	शेकिव	शेकिम

षद् धातु परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

ससाद	सेदतुः	सेदुः
ससत्थ / सेदिथ	सेदथुः	सेद
ससाद / ससद	सेदिव	सेदिम

शद् धातु परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

शशाद	शेदतुः	शेदुः
शशत्थ / शेदिथ	शेदथुः	शेद
शशाद / शशद	शेदिव	शेदिम

तप् धातु परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

तताप	तेपतुः	तेपुः
ततप्थ / तेपिथ	तेपथुः	तेप
तताप / ततप	तेपिव	तेपिम

दह् धातु परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

ददाह	देहतुः	देहुः
ददग्ध / देहिथ	देहथुः	देह
ददाह / ददह	देहिव	देहिम

नह् धातु परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

ननाह	नेहतुः	नेहुः
ननद्ध / नेहिथ	नेहथुः	नेह
ननाह / ननह	नेहिव	नेहिम

यभ् धातु परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

ययाभ	येभतुः	येभुः
ययब्ध / येभिथ	येभथुः	येभ
ययाभ / ययभ	येभिव	येभिम

यम् धातु परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

ययाम	येमतुः	येमुः

ययन्थ / येमिथ	येमथुः	येम
ययाम / ययम	येमिव	येमिम

नम् धातु परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

ननाम	नेमतुः	नेमुः
ननन्थ / नेमिथ	नेमथुः	नेम
ननाम / ननम	नेमिव	नेमिम

नश् धातु - परस्मैपदी। 'रधादिभ्यश्च' सूत्र से यह धातु 'थलि वेट्, लिटि वेट्' है।

मस्जिनशोर्झलि - मस्ज् तथा नश् धातु से परे आने वाले झलादि प्रत्ययों को नुम् का आगम होता है - ननश् + थल् - ननंश् + थ = ननंष्ठ।

यदि हम नश् धातु से सेट् 'थल्' प्रत्यय लगायेंगे, तब यह नुमागम नहीं होगा। ननश् + इ + थ / अभ्यासलोप तथा एत्व करके = नेशिथ।

ननाश	नेशतुः	नेशुः
ननंष्ठ / नेशिथ	नेशथुः	नेश
ननाश / ननश	नेशिव / नेश्व	नेशिम / नेश्म

मन् धातु आत्मनेपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

मेने	मेनाते	मेनिरे
मेनिषे	मेनाथे	मेनिध्वे
मेने	मेनिवहे	मेनिमहे

रम् धातु आत्मनेपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

रेमे	रेमाते	रेमिरे
रेमिषे	रेमाथे	रेमिध्वे
रेमे	रेमिवहे	रेमिमहे

रभ् धातु आत्मनेपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

रेभे	रेभाते	रेभिरे
रेभिषे	रेभाथे	रेभिध्वे
रेभे	रेभिवहे	रेभिमहे

लभ् धातु आत्मनेपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

लेभे	लेभाते	लेभिरे

लेभिषे	लेभाथे	लेभिध्वे
लेभे	लेभिवहे	लेभिमहे

पद् धातु आत्मनेपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

पेदे	पेदाते	पेदिरे
पेदिषे	पेदाथे	पेदिध्वे
पेदे	पेदिवहे	पेदिमहे

३. वे अनादेश अभ्यास वाले धातु, जिनसे परे आने वाले थल् प्रत्यय को नित्य इडागम होता है अतः थल् प्रत्यय परे होने पर जिन्हें एत्व तथा अभ्यासलोप भी नित्य ही होते हैं -

चक्	तक्	मख्	णख्	रख्	लख्	दघ्	षघ्	मच्	शच्	षच्
जज्	लज्	जट्	तट्	नट्	पट्	रट्	लट्	शट्	षट्	पठ्
मठ्	शठ्	लड्	मण्	रण्	षण्	चत्	पत्	यत्	पथ्	मथ्
चद्	णद्	नद्	रद्	दध्	बध्	जन्	तन्	सन्	चप्	जप्
रप्	लप्	षप्	रफ्	णभ्	चम्	जम्	णम्	षम्	चय्	णय्
तय्	पय्	मय्	रय्	चर्	दल्	चल्	जल्	टल्	णल्	पल्
मल्	वल्	शल्	बल्	षल्	मव्	षव्	मश्	शश्	चष्	जष्
मष्	लष्	शष्	रस्	लस्	षस्	सस्	चह्	मह्	रह्	षह्

इनमें यह ध्यान रखिये कि थल् प्रत्यय परे होने पर इन्हें नित्य एत्व तथा अभ्यासलोप होते हैं। जैसे -

ततान	तेनतुः	तेनुः	तेने	तेनाते	तेनिरे
तेनिथ	तेनथुः	तेन	तेनिषे	तेनाथे	तेनिध्वे
ततान / ततन	तेनिव	तेनिम	तेने	तेनिवहे	तेनिमहे

इसी प्रकार इन सबके रूप बनायें। पद का ध्यान रखें।

४. अन्य धातु जिन्हें एत्व तथा अभ्यासलोप होते हैं

अब वे धातु बतला रहे हैं, जिन्हें सादेश होने के कारण, या अन्य किसी कारण से एत्व तथा अभ्यासलोप का निषेध किया जा चुका है, तब भी उन्हें एत्व तथा अभ्यासलोप होते हैं। ये धातु इस प्रकार हैं -

फल्, भज्, त्रप् धातु, श्रन्थ् धातु, हिंसार्थक राध् धातु, भ्रम्, त्रस् धातु

तथा फण्, राज्, भ्राज्, भ्राश्, भ्लाश्, स्यम्, स्वन् ध्वन्, तॄ, जॄ धातु = १७

१५ कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर, तथा सेट् थल् प्रत्यय परे होने पर इनके अभ्यास का लोप कीजिये तथा धातु के 'अ' को 'ए' कीजिये।

इन १७ धातुओं के अभ्यास का लोप करने वाले तथा धातु के अ को एत्व करने वाले सूत्र इस प्रकार हैं -

तॄफलभजत्रपश्च - तॄ, फल्, भज्, त्रप् इन धातुओं को द्वित्व करके बने हुए धातुओं के अभ्यास का लोप होता है तथा धातु के 'अ' को एत्व होता है, कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर, तथा सेट् थल् प्रत्यय परे होने पर।

तॄ धातु -

ततॄ + इट् + थ / सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण करके - ततर् + इ + थ - 'तॄफलभजत्रपाम्' से अभ्यास का लोप तथा अ को एत्व करके = तेरिथ।

ततॄ + अतुः / 'ऋच्छत्यॄताम्' से ऋ को गुण करके - ततर् + अतुः - 'तॄफलभजत्रपाम्' से अभ्यास का लोप तथा अ को एत्व करके = तेरतुः।

इसी प्रकार सारे कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर बनाइये।

इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

ततार	तेरतुः	तेरुः
तेरिथ	तेरथुः	तेर
ततार / ततर	तेरिव	तेरिम

फल् धातु - यह सेट् परस्मैपदी धातु है।

पफाल	फेलतुः	फेलुः
फेलिथ	फेलथुः	फेल
पफाल / पफल	फेलिव	फेलिम

भज् धातु - यह धातु उभयपदी है। चूँकि भज् धातु, थलि वेट् है, अतः थल् परे होने इसके दो दो रूप बनते हैं।

बभाज	भेजतुः	भेजुः
भेजिथ / बभक्थ	भेजथुः	भेज
बभाज / बभज	भेजिव	भेजिम

त्रपूष् - त्रप् धातु - यह धातु आत्मनेपदी है।

ध्यान रहे कि ऊदित् होने के कारण यह धातु 'थलि वेट्, लिटि वेट्' है। अभ्यास का लोप तथा अ को एत्व करके इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये-

त्रेपे	त्रेपाते	त्रेपिरे
त्रेपिषे, त्रेप्से	त्रेपाथे	त्रेपिध्वे, त्रेप्ध्वे
त्रेपे	त्रेपिवहे, त्रेप्वहे	त्रेपिमहे, त्रेप्महे

श्रन्थ्, ग्रन्थ् धातु -

'श्रन्थिग्रन्थिदम्भिस्वञ्जीनाम् कित्वं वा वक्तव्यम्' इस वार्तिक से अपित् लिट् प्रत्यय के विकल्प से कित्वत् होने पर श्रन्थ्, ग्रन्थ् के न् का 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से लोप कीजिये।

लोप करके देखिये कि श्रन्थ् तथा ग्रन्थ् धातु के 'अ' के दोनों ओर दो दो हल् हैं, तब भी इनके अभ्यास का **'श्रन्थश्चेति वक्तव्यम्'** इस वार्तिक से लोप करके धातु के 'अ' को कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर, तथा सेट् थल् प्रत्यय परे होने पर, एत्व कीजिये।

श्रन्थ् - शश्रन्थ् + इ + थल् / अभ्यास का लोप तथा अ को एत्व करके - श्रेथ् + इ + थ = श्रेथिथ। इसी प्रकार - शश्रन्थ् + अतुः = श्रेथतुः।

दोनों के अनुसार श्रन्थ्, ग्रन्थ् धातुओं के पूरे रूप पृष्ठ ३५५ - ३५६ पर देखिये।

राधो हिंसायाम् - स्वादिगण के राध् धातु का अर्थ हिंसा करना होता है। इसे द्वित्व करके बने हुए धातु 'रराध्' के अभ्यास का भी लोप होता है तथा धातु के 'आ' को एत्व होता है, कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर, तथा सेट् थल् प्रत्यय परे होने पर।

अप + राध् धातु - यह धातु चूँकि थलि सेट्, लिटि सेट् है।

अपरराध	अपरेधतुः	अपरेधुः
अपरेधिथ	अपरेधथुः	अपरेध
अपरराध	अपरेधिव	अपरेधिम

ध्यान रहे कि दिवादिगण के राध् धातु को एत्वाभ्यासलोप नहीं होते हैं :

रराध	रराधतुः	रराधुः
रराधिथ	रराधथुः	रराध
रराध	रराधिव	रराधिम

वा जॄभ्रमुत्रसाम् – जॄ, भ्रम्, त्रस्, धातुओं को द्वित्व करके बने हुए अङ्ग जजॄ, बभ्रम्, तत्रस्, के अभ्यास का विकल्प से लोप होता है तथा धातुओं के अ को विकल्प से एत्व होता है, कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर, तथा सेट् थल् प्रत्यय परे होने पर।

२. **जॄ धातु** - 'वा जॄभ्रमुत्रसाम्' से अभ्यास का लोप तथा 'अ' को एत्व न करके - जजॄ + इ + थल् / सार्वधातुकार्धधातुकयो: से गुण करके - जजर् + इ + थल् = जजरिथ। इसे एक पक्ष में अभ्यास का लोप तथा अ को एत्व करके - जेरिथ भी बनेगा।

अभ्यास का लोप तथा अ को एत्व न करके - जजॄ + अतु: / 'ऋच्छत्यॄताम्' से ऋ को गुण करके - जजर् + अतु: - जजरतु:।

इसे एक पक्ष में अभ्यास का लोप तथा अ को एत्व करके = जेरतु: भी बनेगा। इसी प्रकार सारे कित् लिट् प्रत्ययों में विकल्प से अभ्यासलोप तथा एत्व होंगे। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

जजार	जेरतु: / जजरतु:	जेरु: / जजरु:
जेरिथ / जजरिथ	जेरथु: / जजरथु:	जेर / जजर
जजार / जजर	जेरिव / जजरिव	जेरिम / जजरिम

भ्रम् धातु – विकल्प से अभ्यास का लोप तथा धातु के अ को 'ए' करके-

भ्रम्	-	बभ्रम्	+	थल्	-	भ्रेम्	+	थ	= भ्रेमिथ
भ्रम्	-	बभ्रम्	+	थल्	-	बभ्रम्	+	थ	= बभ्रमिथ
भ्रम्	-	बभ्रम्	+	अतु:	-	भ्रेम्	+	अतु:	= भ्रेमतु:
भ्रम्	-	बभ्रम्	+	अतु:	-	बभ्रम्	+	अतु:	= बभ्रमतु: आदि।

इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

बभ्राम	भ्रेमतु: / बभ्रमतु:	भ्रेमु: / बभ्रमु:
भ्रेमिथ / बभ्रमिथ	भ्रेमथु: / बभ्रमथु:	भ्रेम / बभ्रम
बभ्राम / बभ्रम	भ्रेमिव / बभ्रमिव	भ्रेमिम / बभ्रमिम

त्रस् धातु – विकल्प से अभ्यास का लोप तथा धातु के अ को 'ए' करके-

त्रस्	-	तत्रस्	+	थल्	-	त्रेस्	+	थ	- त्रेसिथ
त्रस्	-	तत्रस्	+	थल्	-	तत्रस्	+	थ	- तत्रसिथ

त्रस् - तत्रस् + अतुः - त्रेस् + अतुः - त्रेसतुः
त्रस् - तत्रस् + अतुः - तत्रस् + अतुः - तत्रसतुः आदि।

इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

तत्रास	त्रेसतुः / तत्रसतुः	त्रेसुः / तत्रसुः
त्रेसिथ / तत्रसिथ	त्रेसथुः / तत्रसथुः	त्रेस / तत्रस
तत्रास / तत्रस	त्रेसिव / तत्रसिव	त्रेसिम / तत्रसिम

फणां च सप्तानाम् - फण्, राज्, भ्राज्, भ्राश्, भ्लाश्, स्यम्, स्वन्, ध्वन्, ये फणादि धातु हैं। फणादि आठ धातुओं के अभ्यास यद्यपि सादेश हैं, तब भी इनके अभ्यास का लोप, तथा धातु के अवर्ण को विकल्प से एत्व होता है, १५ कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर, तथा सेट् थल् प्रत्यय परे होने पर।

फण् धातु - विकल्प से अभ्यास का लोप तथा धातु के अ को 'ए' करके-

फण् - पफण् + थल् - फेण् + थ = फेणिथ
फण् - पफण् + थल् - पफण् + थ = पफणिथ
फण् - पफण् + अतुः - फेण् + अतुः = फेणतुः
फण् - पफण् + अतुः - पफण् + अतुः = पफणतुः आदि।

इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

पफाण	फेणतुः / पफणतुः	फेणुः / पफणुः
फेणिथ / पफणिथ	फेणथुः / पफणथुः	फेण / पफण
पफाण / पफण	फेणिव / पफणिव	फेणिम / पफणिम

राज् धातु - यह धातु उभयपदी है। इसे विकल्प से अभ्यास का लोप तथा धातु के अ को 'ए' करके -

राज् - रराज् + ए - रेज् + ए = रेजे
राज् - रराज् + ए - रराज् + ए = रराजे

परस्मैपद में, इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये-

रराज	रेजतुः / रराजतुः	रेजुः / रराजुः
रेजिथ / रराजिथ	रेजथुः / रराजथुः	रेज / रराज
रराज	रेजिव / रराजिव	रेजिम / रराजिम

आत्मनेपद में, इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

रेजे / रराजे	रेजाते / रराजाते	रेजिरे / रराजिरे
रेजिषे / रराजिषे	रेजाथे / रराजाथे	रेजिध्वे / रराजिध्वे
रेजे / रराजे	रेजिवहे / रराजिवहे	रेजिमहे / रराजिमहे

भ्राज् धातु – विकल्प से अभ्यास का लोप तथा धातु के अ को 'ए' करके-

भ्राज् - बभ्राज् + ए - भ्रेज् + ए = भ्रेजे

भ्राज् - बभ्राज् + ए - बभ्राज् + ए = बभ्राजे

यह धातु आत्मनेपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

भ्रेजे / बभ्राजे	भ्रेजाते / बभ्राजाते	भ्रेजिरे / बभ्राजिरे
भ्रेजिषे / बभ्राजिषे	भ्रेजाथे / बभ्राजाथे	भ्रेजिध्वे / बभ्राजिध्वे
भ्रेजे / बभ्राजे	भ्रेजिवहे / बभ्राजिवहे	भ्रेजिमहे / बभ्राजिमहे

भ्राश् धातु – विकल्प से अभ्यास का लोप तथा धातु के अ को 'ए' करके-

भ्राश् - बभ्राश् + ए - भ्रेश् + ए = भ्रेशे

भ्राश् - बभ्राश् + ए - बभ्राश् + ए = बभ्राशे

यह धातु आत्मनेपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

भ्रेशे / बभ्राशे	भ्रेशाते / बभ्राशाते	भ्रेशिरे / बभ्राशिरे
भ्रेशिषे / बभ्राशिषे	भ्रेशाथे / बभ्राशाथे	भ्रेशिध्वे / बभ्राशिध्वे
भ्रेशे / बभ्राशे	भ्रेशिवहे / बभ्राशिवहे	भ्रेशिमहे / बभ्राशिमहे

भ्लाश् धातु – विकल्प से अभ्यास का लोप तथा धातु के अ को 'ए' करके -

भ्लाश् - बभ्लाश् + ए - भ्लेश् + ए = भ्लेशे

भ्लाश् - बभ्लाश् + ए - बभ्लाश् + ए = बभ्लाशे

यह धातु आत्मनेपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

भ्लेशे / बभ्लाशे	भ्लेशाते / बभ्लाशाते	भ्लेशिरे / बभ्लाशिरे
भ्लेशिषे / बभ्लाशिषे	भ्लेशाथे / बभ्लाशाथे	भ्लेशिध्वे / बभ्लाशिध्वे
भ्लेशे / बभ्लाशे	भ्लेशिवहे / बभ्लाशिमहे	भ्लेशिमहे / बभ्लाशिमहे

स्यम् धातु – विकल्प से अभ्यास का लोप तथा धातु के अ को 'ए' करके-

स्यम् - सस्यम् + थल् - सस्यम् + इ + थ = सस्यमिथ

स्यम् - सस्यम् + थल् - स्येम् + इ + थ = स्येमिथ

यह धातु परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

सस्याम	स्येमतुः / सस्यमतुः	स्येमुः / सस्यमुः
स्येमिथ / सस्यमिथ	स्येमथुः / सस्यमथुः	स्येम / सस्यम
सस्याम / सस्यम	स्येमिव / सस्यमिव	स्येमिम / सस्यमिम

स्वन् धातु - विकल्प से अभ्यास का लोप तथा धातु के अ को 'ए' करके-

स्वन् - सस्वन् + इट् + थल् - सस्वन् + इ + थ - सस्वनिथ

स्वन् - सस्वन् + इट् + थल् - स्वेन् + इ + थ - स्वेनिथ

यह धातु परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

सस्वान	स्वेनतुः / सस्वनतुः	स्वेनुः / सस्वनुः
स्वेनिथ / सस्वनिथ	स्वेनथुः / सस्वनथुः	स्वेन / सस्वन
सस्वान / सस्वन	स्वेनिव / सस्वनिव	स्वेनिम / सस्वनिम

ध्वन् धातु - विकल्प से अभ्यास का लोप तथा धातु के अ को 'ए' करके-

ध्वन् - दध्वन् + इट् + थल् - दध्वन् + इ + थ = दध्वनिथ

ध्वन् - दध्वन् + इट् + थल् - ध्वेन् + इ + थ = ध्वेनिथ

यह धातु परस्मैपदी है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

दध्वान	ध्वेनतुः / दध्वनतुः	ध्वेनुः / दध्वनुः
ध्वेनिथ / दध्वनिथ,	ध्वेनथुः / दध्वनथुः	ध्वेन / दध्वन
दध्वान / दध्वन	ध्वेनिव / दध्वनिव	ध्वेनिम / दध्वनिम

४. सम्प्रसारणी तथा एत्वाभ्यासलोपी धातुओं से बचे हुए अदुपध धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

अब हम उन अदुपध धातुओं के रूप बनायेंगे, जो सम्प्रसारणी नहीं हैं तथा एत्वाभ्यासलोपी भी नहीं हैं। ३०२ से ३१० पृष्ठ पर दी हुई, 'इडागम विधि' को पढ़कर, थल् तथा अन्य लिट् प्रत्ययों के लिये इडागम का भली प्रकार से निर्णय कर लीजिये। सन्धियों का भी दृढ़ स्मरण कर लीजिये। अब हम केवल अङ्गकार्य बतलायेंगे।

अदुपध धातुओं में प्रथम पुरुष का णल् प्रत्यय लगाने की विधि -

अत उपधायाः - अङ्ग की उपधा के ह्रस्व अ को वृद्धि होती है ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। ज्वल् - जज्वल् + णल् (अ) अत उपधायाः से उपधा के ह्रस्व अ को वृद्धि होकर - जज्वल् + अ = जज्वाल।

अदुपध धातुओं में उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय लगाने की विधि -

णलुत्तमो वा - उत्तम पुरुष का णल् प्रत्यय विकल्प से णित् होता है।

णल् प्रत्यय के णित् होने पर - ज्वल् - जज्वल् + णल् (अ) अत उपधायाः से उपधा के ह्रस्व अ को वृद्धि होकर - जज्वल् + अ = जज्वाल।

णल् प्रत्यय के णित् न होने पर - अङ्ग को अत उपधायाः से वृद्धि नहीं होती। ज्वल् - जज्वल् + णल् (अ) = जज्वल।

अदुपध धातुओं में शेष लिट् प्रत्यय लगाने की विधि

इनके लगने पर अदुपध धातुओं को कुछ मत कीजिये - जज्वल् + अतुः = जज्वलतुः आदि। इसके पूरे रूप इस प्रकार हैं -

जज्वाल	जज्वलतुः	जज्वलुः
जज्वलिथ	जज्वलथुः	जज्वल
जज्वाल / जज्वल	जज्वलिव	जज्वलिम

इसके अपवाद - गम् - द्वित्वादि होकर जगम् धातु -

गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि - गम्, हन्, जन्, खन्, घस्, इन अदुपध धातुओं की उपधा के 'अ' का लोप होता है कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर।

ध्यान रहे कि णल्, थल्, णल् प्रत्यय कित्, ङित् नहीं हैं, अतः इनके लगने पर गम्, हन्, जन्, खन्, घस् धातुओं की उपधा के 'अ' का लोप न होकर ज्वल् के समान ही रूप बनेंगे।

कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर - जगम् + अतुः / उपधा के 'अ' का लोप होकर - जग्म् + अतुः - जग्मतुः आदि। इसके पूरे रूप इस प्रकार हैं -

जगाम	जग्मतुः	जग्मुः
जगमिथ / जगन्थ	जग्मथुः	जग्म
जगाम / जगम	जग्मिव	जग्मिम

हन् - द्वित्वादि होकर जघन् धातु - जघन् + अतुः - उपधा के अ का लोप होकर - जघ्न् + अतुः - जघ्नतुः। इसके पूरे रूप इस प्रकार हैं -

जघान	जघ्नतुः	जघ्नुः
जघनिथ / जघन्थ	जघ्नथुः	जघ्न
जघान / जघन	जघ्निव	जघ्निम

जन् - द्वित्वादि होकर जजन् धातु - यह धातु दिवादिगण में आत्मनेपदी

है तथा जुहोत्यादिगण में परस्मैपदी है। अत: दोनों पदों में इसके रूप बनायें।

जजन् + णल् / अत उपधाया: से वृद्धि होकर - जजान।

जजन् + अतु: / उपधा के अ का लोप होकर - जज्न् + अतु: / स्तो: श्चुना श्चु: से 'न्' को श्चुत्व 'ञ्' होकर - जज्ञ् + अतु: / ज् + ञ् = 'ज्ञ' होकर - जज्ञतु:।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
जजान	जज्ञतु:	जज्ञु:	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
जजनिथ	जज्ञथु:	जज्ञ	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
जजान	जज्ञिव	जज्ञिम	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे

खन् धातु - खन् - चखन् + अतु: - चख्न् + अतु: - चख्नतु:

इसके पूरे रूप इस प्रकार हैं -

चखान	चख्नतु:	चख्नु:
चखनिथ	चख्नथु:	चख्न
चखान / चखन	चख्निव	चख्निम

अद् - धातु -

लिट्यन्यतरस्याम् - लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर अद् धातु को विकल्प से घस् आदेश होता है -

घस् आदेश होने पर - घस् - जघस् + अतु: / 'गमहनजनखनघसां लोप: क्ङित्यनङि' से उपधा का लोप करके - जघ्स् + अतु: -

शासिवसिघसीनाञ्च - शास्, वस् घस् धातुओं के इण् और कवर्ग से परे आने वाले सकार को मूर्धन्य षकार आदेश होता है।

जघ्स् + अतु: / जघ्ष् + अतु: / खरि च से घ् को चर्त्व करके - जक् ष् + अतु: / क् + ष् = क्ष् बनाकर - जक्षतु:।

इसके पूरे रूप इस प्रकार हैं -

जघास	जक्षतु:	जक्षु:
जघसिथ	जक्षथु:	जक्ष
जघास / जघस	जक्षिव	जक्षिम

अद् के स्थान पर अद् ही रहने पर - द्वित्वादि होकर आद् -

आद	आदतुः	आदुः
आदिथ	आदथुः	आद
आद	आदिव	आदिम

दय् धातु - यह धातु आत्मनेपदी है।

दयतेर्दिगि लिटि - दय् धातु को लिट् लकार के सारे प्रत्यय परे होने पर 'दिगि' आदेश होता है।

देखिये कि अब यह धातु 'असंयोगपूर्व इकारान्त' है। अतः इसके रूप बनाने की विधि 'असंयोगपूर्व इकारान्त' धातुओं के समान ही होगी। दय् - दिगि + ए / 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' सूत्र से यण् होकर - दिग्य् + ए = दिग्ये। इसी प्रकार शेष रूप बना डालिये। पूरे रूप इस प्रकार बने -

दिग्ये	दिग्याते	दिग्यिरे
दिग्यिषे	दिग्याथे	दिग्यिध्वे
दिग्ये	दिग्यिवहे	दिग्यिमहे

जभ् - द्वित्वादि होकर जजभ् धातु - जजभ् + णल् / रधिजभोरचि से नुमागम होकर - जज नुम् भ् + णल् / जज न् भ् + णल् = जजम्भ आदि।

जभ् के पूरे रूप इस प्रकार हैं -

जजम्भ	जजम्भतुः	जजम्भुः
जजम्भिथ	जजम्भथुः	जजम्भ
जजम्भ	जजम्भिव	जजम्भिम

अस् धातु - अस्तेर्भूः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अस् धातु को भू आदेश होता है। अस् = भू।

बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
बभूव	बभूविव	बभूविम

इसके लिट् लकार के रूप ऊकारान्त 'भू' धातु के समान बनाइये। भू धातु की प्रक्रिया ३३४ पृष्ठ पर देखिये।

अज् धातु - अजेर्व्यघञपोः - घञ्, अप् के अलावा शेष सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अज् धातु को वी आदेश होता है। अज् = वी।

वी आदेश होने पर ईकारान्त धातुओं के समान रूप बनेंगे -

विव्याय	विव्यतुः	विव्युः
विव्यथिथ	विव्यथुः	विव्य
विव्याय / विव्यय	विव्यिव	विव्यिम

क्षमू - द्वित्वादि होकर - चक्षम् धातु - ध्यान रहे कि ऊदित् होने के कारण यह धातु 'सातों प्रत्ययों में वेट्' है। वकारादि तथा मकारादि प्रत्यय परे होने पर इसके पूरे रूप इस प्रकार बनाइये - चक्षम् + वहे /

म्वोश्च - म् के स्थान पर 'न्' आदेश होता है, वकारादि तथा मकारादि प्रत्यय परे होने पर। चक्षम् + वहे - चक्षन् + वहे / रषाभ्यां णो नः सूत्र से 'न्' को णत्व करके - चक्षण्वहे। इसी प्रकार चक्षम् + महे - चक्षण्महे।

चक्षाम	चक्षमतुः	चक्षमुः
चक्षमिथ / चक्षन्थ	चक्षमथुः	चक्षम
चक्षाम / चक्षम	चक्षण्व / चक्षमिव	चक्षण्म / चक्षमिम

त्यज् धातु - यह धातु परस्मैपदी 'थलि वेट् लिटि सेट्' है।

अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषेतित्याजाश्राताःश्रितमाशीराशीर्ताः - लोक में त्यज् धातु से, अभी बतलाये अनुसार 'तत्याज' ही बनता है, किन्तु वेद में त्यज् धातु के अभ्यास को सम्प्रसारण होकर 'तित्याज' बनता है।

एत्वाभ्यासलोपी अदुपध धातुओं के रूप उनके वर्ग में बतलाये जा चुके हैं। शेष अदुपध धातुओं के रूप 'ज्वल्' धातु के समान ही बनाइये।

अब इदुपध, उदुपध, ऋदुपध धातुओं के रूप बनाने के लिये एक साथ सामान्य अङ्गकार्य बतला रहे हैं।

जिनकी उपधा में लघु इ हों, उन्हें इदुपध, जिनकी उपधा में लघु उ हों उन्हें उदुपध, जिनकी उपधा में लघु ऋ हों, उन्हें ऋदुपध, धातु कहते हैं।

इ, उ, ऋ को इक् भी कहते हैं। अतः इन सभी को लघु इगुपध धातु भी कह सकते हैं। इन लघु इगुपध धातुओं को, लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर, इस प्रकार से अङ्गकार्य कीजिये -

लघु इगुपध धातु + णल्, थल्, णल् प्रत्यय

पुगन्तलघूपधस्य च - उपधा में आने वाले लघु इ, लघु उ, लघु ऋ, को गुण होता है, कित्, ङित् से भिन्न प्रत्यय परे होने पर।

इदुपध धातु -

क्षिप् + णल् - उपधा को गुण होकर - चिक्षेप।

चिक्षिप् + इ + थल् - उपधा को गुण होकर - चिक्षेपिथ।

चिक्षिप् + णल् - उपधा को गुण होकर - चिक्षेप।

उदुपध धातु -

मुमुच् + णल् - उपधा को गुण होकर - मुमोच।

मुमुच् + इ + थल् - उपधा को गुण होकर - मुमोचिथ।

मुमुच् + णल् - उपधा को गुण होकर - मुमोच।

ऋदुपध धातु -

ममृध् + णल् - उपधा को गुण होकर - ममर्ध।

ममृध् + इ + थल् - उपधा को गुण होकर - ममर्धिथ।

ममृध् + णल् - उपधा को गुण होकर - ममर्ध।

लघु इगुपध धातु + शेष १५ लिट् प्रत्यय

असंयोगाल्लिट् कित् - असंयोगान्त धातुओं से परे आने वाले, अपित् लिट् प्रत्यय कित्वत् होते हैं। इगुपध धातु भी असंयोगान्त धातु हैं, अतः इनसे परे आने वाले, अपित् लिट् प्रत्यय भी कित्वत् होते हैं।

क्ङिति च - कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर, इक् के स्थान पर होने वाले गुण, वृद्धि नहीं होते। अतः अपित् लिट् प्रत्यय परे होने पर, धातु की उपधा के लघु इ, लघु उ, लघु ऋ को गुण मत कीजिये। जैसे -

इदुपध धातु - चिक्षिप् + अतुः - 'क्ङिति च' सूत्र से उपधा के 'इ' को गुण निषेध करके = चिक्षिपतुः, आदि।

उदुपध धातु - मुमुच् + अतुः - 'क्ङिति च' सूत्र से उपधा के 'उ' को गुण निषेध करके = मुमुचतुः, आदि।

ऋदुपध धातु - ममर्ध् + अतुः - 'क्ङिति च' सूत्र से उपधा के 'ऋ' को गुण निषेध करके = ममर्धतुः, आदि।

५. इदुपध धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

अभी कही हुई अङ्गकार्य की विधि को पढ़िये। इडागम तथा सन्धि का सम्यक् विचार कीजिये। इदुपध धातुओं के पूरे रूप इस प्रकार बने -

इदुपध क्षिप् - चिक्षिप् धातु -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
चिक्षेप	चिक्षिपतुः	चिक्षिपुः	चिक्षिपे	चिक्षिपाते	चिक्षिपिरे
चिक्षेपिथ	चिक्षिपथुः	चिक्षिप	चिक्षिपिषे	चिक्षिपाथे	चिक्षिपिध्वे
चिक्षेप	चिक्षिपिव	चिक्षिपिम	चिक्षिपे	चिक्षिपिवहे	चिक्षिपिमहे

इसके अपवाद - इकारादि इदुपध धातु - इष्, इख्, इल् धातु - इनके रूप इस प्रकार बनाइये -

णल्, णल् प्रत्यय परे होने पर - इष् - इ इष् + णल् / 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा के 'इ' को गुण करके - इ एष् -

अभ्यासस्यासवर्णे - अभ्यास के इ, उ को क्रमशः इयङ्, उवङ् आदेश होते हैं, असवर्ण अच् परे होने पर।

अब देखिये कि अभ्यास है 'इ'। उससे परे असवर्ण अच् है 'ए'। अतः अभ्यास के 'इ' को **अभ्यासस्यासवर्णे** सूत्र से इयङ् (इय्) आदेश होकर - इय् + एष् - इयेष रूप बना। उत्तमपुरुष के णल् से भी 'इयेष' रूप बनेगा।

थल् प्रत्यय परे होने पर - इष् - इ इष् + इ + थल् / 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा के 'इ' को गुण करके - इ एष् + इ + थ।

अब देखिये कि अभ्यास है 'इ'। उससे परे असवर्ण अच् है ए। तो अभ्यास को इयङ् (इय्) आदेश होकर - इय् एष् + इ + थ - इयेषिथ

शेष कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर - इष् - इ इष् + अतुः / 'क्ङिति च' सूत्र से उपधा के 'इ' को गुण निषेध होने के कारण, 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ सन्धि करके - ईषतुः।

सारे कित् लिट् प्रत्ययों के परे होने पर, इसी प्रकार रूप बनाइये। यह धातु परस्मैपदी 'थलि सेट्' है। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

इयेष	ईषतुः	ईषुः
इयेषिथ	ईषथुः	ईष
इयेष	ईषिव	ईषिम

इसी प्रकार इख् से इयेख तथा इल् से इयेल आदि रूप बनाइये।

६. उदुपध धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

अभी बतलाई हुई अङ्गकार्य की विधि को पढ़िये। इडागम का सम्यक् विचार कीजिये। इसके अनुसार उदुपध धातुओं के पूरे रूप इस प्रकार बने -

उदुपध मुच् - मुमुच् धातु -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
मुमोच	मुमुचतुः	मुमचुः	मुमुचे	मुमुचाते	मुमुचिरे
मुमोचिथ	मुमुचथुः	मुमुच	मुमुचिषे	मुमुचाथे	मुमुचिध्वे
मुमोच	मुमुचिव	मुमुचिम	मुमुचे	मुमुचिवहे	मुमुचिमहे

इसके अपवाद -

१. गुहू धातु - ऊदुपधाया गोहः - गुह् धातु की उपधा के 'उ' को दीर्घ होता है, अजादि प्रत्यय परे होने पर। गुह् - जुगुह् + ए / जुगूह् + ए - जुगूहे आदि। ऊदित् होने के कारण यह धातु थलि वेट्, लिटि वेट् है।

जुगूहे	जुगूहाते	जुगूहिरे
जुघुक्षे, जुगूहिषे	जुगूहाथे	जुघुढ्वे, जुगूहिध्वे
जुगूहे	जुगुह्वहे, जुगूहिवहे	जुगुह्महे, जुगूहिमहे

२. उकारादि, उदुपध धातु - उष्, उख्, उठ्, उच्, उभ्, धातु - इनके रूप इस प्रकार बनाइये

णल्, णल् प्रत्यय परे होने पर - उष् - उ उष् + णल् / 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा के 'उ' को गुण करके - उ ओष्

अभ्यासस्यासवर्णे - अभ्यास के इ - उ को क्रमशः इयङ्, उवङ् आदेश होते हैं, असवर्ण अच् परे होने पर।

अब देखिये कि अभ्यास है 'उ'। उससे परे असवर्ण अच् है 'ओ'। अतः अभ्यास के 'उ' को **अभ्यासस्यासवर्णे** सूत्र से उवङ् (उव्) आदेश होकर -

उव् + ओष् - उवोष रूप बना।

थल् प्रत्यय परे होने पर - उष् - उ उष् + इ + थल् / 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा के 'उ' को गुण करके - उ ओष् + इ + थ।

अब देखिये कि अभ्यास है 'उ'। उससे परे असवर्ण अच् है 'ओ'। तो अभ्यास को उवङ् (उव्) आदेश होकर - उव् ओष् + इ + थ - उवोषिथ

उष् - उ उष् + णल् - 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा के 'उ' को गुण करके - उ ओष् + अ / अभ्यासस्यासवर्णे सूत्र से अभ्यास को उवङ् (उव्) आदेश करके - उव् ओष् + अ - उवोष।

शेष कित् लिट् प्रत्यय परे होने पर - उष् - उ उष् + अतुः / 'क्ङिति च' सूत्र से उपधा के 'उ' को गुण निषेध होने के कारण, 'अकः सवर्णे दीर्घः'

सूत्र से दीर्घ सन्धि करके - ऊषतुः। सारे कित् लिट् प्रत्ययों के परे होने पर, इसी प्रकार रूप बनाइये।

उवोष	ऊषतुः	ऊषुः
उवोषिथ	ऊषथुः	ऊष
उवोष	ऊषिव	ऊषिम

इसी प्रकार उख् से उवोख, उठ् से उवोठ, उच् से उवोच, उभ् से उवोभ आदि बनाइये।

७. ऋदुपध धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

अभी बतलाई हुई अङ्गकार्य की विधि के अनुसार ऋदुपध धातुओं के पूरे रूप इस प्रकार बने -

ऋदुपध मृध् - ममृध् धातु -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
ममर्ध	ममृधतुः	ममृधुः	ममृधे	ममृधाते	ममृधिरे
ममर्धिथ	ममृधथुः	ममृध	ममृधिषे	ममृधाथे	ममृधिध्वे
ममर्ध	ममृधिव	ममृधिम	ममृधे	ममृधिवहे	ममृधिमहे

इसके अपवाद - कृपू धातु -

कृपो रो लः - कृप् धातु के ऋकारघटित 'र्' के स्थान पर 'ल्' आदेश होता है। कृप् - क्लृप् - चक्लृप्।

चक्लृपे	चक्लृपाते	चक्लृपिरे
चक्लृप्से, चक्लृपिषे	चक्लृपाथे	चक्लृब्ध्वे, चक्लृपिध्वे
चक्लृपे	चक्लृप्वहे, चक्लृपिवहे	चक्लृप्महे, चक्लृपिमहे

सृज् दृश् धातु -

सृज् - स सृज् + णल् - पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा के 'इ' को गुण करके = ससर्ज।

सृज् - स सृज् + थल् - 'विभाषा सृजिदृशोः' सूत्र से इनसे परे आने वाले 'थल्' प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है।

इडागम न होने पर - ससृज् + थल् -

सृजिदृशोर्झल्यमकिति - सृज्, दृश्, धातुओं को झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर अम् का आगम होता है। ससृज् + थल् - ससृ अम् ज् + थल् /

/ ससृ अ ज् + थ / इको यणचि से यण् करके - सस्रज् + थ = सस्रष्ठ।

इडागम होने पर - ससृज् + इट् + थल् - पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा के 'इ' को गुण करके = ससर्जिथ।

सृज् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

ससर्ज	ससृजतुः	ससृजुः
सस्रष्ठ / ससर्जिथ	ससृजथुः	ससृज
ससर्ज	ससृजिव	ससृजिम

दृश् धातु के रूप भी ठीक इस प्रकार बनाइये -

ददर्श	ददृशतुः	ददृशुः
दद्रष्ठ / ददर्शिथ	ददृशथुः	ददृश
ददर्श	ददृशिव	ददृशिम

तृप्, दृप् धातु - ये धातु थलि वेट्, लिटि वेट् हैं।

अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् - झलादि अकित् प्रत्यय परे होने पर अनिट् ऋदुपध धातुओं को विकल्प से अम् का आगम होता है। तृप् - ततृप् + थल् / ततृ अम् प् + थल् / इको यणचि से यण् करके - तत्रप् + थ = तत्रप्थ / अमागम न होने पर - ततृप् + थ - पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा को गुण करके - ततर्प् + थ = ततर्प्थ / इडागम होने पर - ततृप् + इथ - पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा को गुण करके - ततर्प् + इथ = ततर्पिथ।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

ततर्प	ततृपतुः	ततृपुः
ततर्प्थ, ततर्पिथ, तत्रप्थ	ततृपथुः	ततृप
ततर्प	ततृप्व, ततृपिव	ततृप्म, ततृपिम

दृप् धातु - इसके रूप तृप् के समान ही बनाइये -

ददर्प	ददृपतुः	ददृपुः
ददर्प्थ, ददर्पिथ, दद्रप्थ	ददृपथुः	ददृप
ददर्प	ददृप्व, ददृपिव	ददृप्म, ददृपिम

मृजू धातु - यह धातु थलि वेट्, लिटि वेट् है।

मृजेर्वृद्धिः / क्ङित्यजादौ वेष्यते - मृज् धातु को वृद्धि होती है, किन्तु अजादि कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर यह वृद्धि विकल्प से होती है।

ममार्ज	ममार्जतुः, ममृजतुः	ममृजुः
ममार्ष्ठ / ममार्जिथ	ममार्जथुः, ममृजथुः	ममृज
ममार्ज / ममृज	ममार्जिव, ममृजिव, ममृज्व	ममार्जिम, ममृजिम, ममृज्म

७. शेष हलन्त धातुओं के लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

ऐसे हलन्त धातु, जो न तो सम्प्रसारणी हैं, न ही जिनमें नलोप होता है, न ही जिन्हें एत्वाभ्यासलोप होते हैं, जो अदुपध, इदुपध, उदुपध, ऋदुपध भी नहीं हैं, ऐसे धातुओं को द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके, केवल इडागम का विचार कीजिये और सन्धि करके, इनमें लिट् लकार के सारे प्रत्यय बिना किसी अङ्गकार्य के ज्यों के त्यों जोड़ दीजिये। यथा -

बन्ध् - बबन्ध् धातु -

बबन्ध	बबन्धतुः	बबन्धुः
बबन्द्ध, बबन्धिथ	बबन्धथुः	बबन्ध
बबन्ध	बबन्धिव	बबन्धिम

दंश् - ददंश् धातु -

ददंश	ददंशतुः	ददंशुः
ददंष्ठ, ददंशिथ	ददंशथुः	ददंश
ददंश	ददंशिव	ददंशिम

इसके अपवाद -

मस्ज् - ममस्ज् धातु - यह धातु भी थलि वेट् लिटि वेट् है।

मस्जिनशोर्झलि - मस्ज् तथा नश् धातु से परे होने आने वाले झलादि प्रत्ययों को नुम् का आगम होता है -

ममज्ज् + थल् / स्कोः संयोगाद्योरन्ते च सूत्र से स् का लोप करके - ममज् + थ / चोः कुः से कुत्व करके - ममग् + थ /

मस्जिनशोर्झलि से नुमागम करके - ममन्ग् + थ / न् को नश्चापदान्तस्य झलि सूत्र से अनुस्वार बनाकर - ममंग् + थ / खरि च से चर्त्व करके - ममंक् + थ /

अनुस्वार को अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः सूत्र से परसवर्ण करके - ममङ्क्थ।

ममज्ज	ममज्जतुः	ममज्जुः
ममङ्क्थ, ममज्जिथ	ममज्जथुः	ममज्ज
ममज्ज	ममज्जिव	ममज्जिम

अर्च् - आनर्च् धातु -

अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषेतित्याजाश्राताःश्रितमाशीराशीर्ताः -

आनर्च	आनर्चतुः	आनर्चुः
आनर्चिथ	आनर्चथुः	आनर्च
आनर्च	आनर्चिव	आनर्चिम

देखिये कि लोक में अर्च् धातु से आनर्चुः बनता है किन्तु वेद में ऊपर कहे गये अपस्पृधेथा. सूत्र से र् को सम्प्रसारण होकर आनृचुः बनता है।

अर्ह् - आनर्ह् धातु -

आनर्ह	आनर्हतुः	आनर्हुः
आनर्हिथ	आनर्हथुः	आनर्ह
आनर्ह	आनर्हिव	आनर्हिम

देखिये कि लोक में अर्ह् धातु से आनर्हुः बनता है किन्तु वेद में आनर्हुः न बनकर र् को सम्प्रसारण होकर आनृहुः बनता है।

चक्ष् धातु - वा लिटि - लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर चक्ष् धातु को विकल्प से ख्याञ् आदेश होता है। अतः इसके रूप आकारान्त 'दा' धातु के समान ही बनाइये। विधि ३१६ - ३१७ पृष्ठ पर देखिये।

ख्याञ् आदेश होने पर -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
चख्यौ	चख्यतुः	चख्युः	चख्ये	चख्याते	चख्यिरे
चख्याथ / चख्यिथ	चख्यथुः	चख्य	चख्यिषे	चख्याथे	चख्यिध्वे
चख्यौ	चख्यिव	चख्यिम	चख्ये	चख्यिवहे	चख्यिमहे

ख्याञ् न आदेश होने पर - चक्ष् + ए = चक्षे आदि।

चक्षे	चक्षाते	चक्षिरे
चक्षिषे	चक्षाथे	चक्षिध्वे
चक्षे	चक्षिवहे	चक्षिमहे

प्याय् धातु - लिड्यङोश्च - लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर, प्याय्

धातु को पी आदेश होता है। प्याय् = पी।

पिप्ये	पिप्याते	पिप्यिरे
पिप्यिषे	पिप्याथे	पिप्यिध्वे
पिप्ये	पिप्यिवहे	पिप्यिमहे

ऋच्छ् धातु -

ऋच्छ धातु को द्वित्व अभ्यास कार्य करके हमने आनृच्छ् अङ्ग बनाया है। उसके बाद 'ऋच्छत्यृताम्' सूत्र से गुण होकर पूरे रूप इस प्रकार बने -

आनर्च्छ	आनर्च्छतुः	आनर्च्छुः
आनर्च्छिथ	आनर्च्छथुः	आनर्च्छ
आनर्च्छ	आनर्च्छिव	आनर्च्छिम

चाय् धातु -

द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - चचाय् - इससे लोक में चचाय / चचाये आदि रूप बनाइये।

वेद में - चायः की - वेद में चाय् धातु को 'की' आदेश होकर की - कीकी - चिकी - चिकाय, चिक्यतुः, चिक्युः रूप बनते हैं। नान्यं चिक्युर्न निचिक्युरन्यम्।

इस प्रकार हमने खण्ड खण्ड में, सारे धातुओं के, लिट् लकार के रूप बनाना सीख लिया। इसके साथ ही सारे धातुओं के लिट् लकार के धातुरूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

अब ३३ वेट् तथा ८ अनिट् धातुओं के रूप दे रहे हैं, ताकि अन्य धातुओं में इडागम सम्बन्धी सन्देह न हो

२४ ऊदित्, ८ रधादि धातु तथा निर् उपसर्ग पूर्वक कुष् धातु = ३३ धातु 'थलि वेट्, लिटि वेट्' हैं। इनसे परे आने वाले लिट् लकार के थल्, व, म, से, ध्वे, वहे, महे, इन सातों लिट् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम करके इनके रूप इस प्रकार बनाइये -

तञ्चू - ततञ्च् धातु -

ततञ्च	ततञ्चतुः	ततञ्चुः
ततञ्च, ततञ्चिथ	ततञ्चथुः	ततञ्च
ततञ्च	ततञ्च्व, ततञ्चिव	ततञ्च्म, ततञ्चिम

व्रश्चू – वव्रश्च् धातु –

वव्रश्च	वव्रश्चतुः	वव्रश्चुः
वव्रष्ठ, वव्रश्चिथ	वव्रश्चथुः	वव्रश्च
वव्रश्च	वव्रश्च्व, वव्रश्चिव	वव्रश्च्म, वव्रश्चिम

अञ्जू – आनञ्ज् धातु –

आनञ्ज	आनञ्जतुः	आनञ्जुः
आनंष्ठ, आनञ्जिथ	आनञ्जथुः	आनञ्ज
आनञ्ज	आनञ्ज्व, आनञ्जिव	आनञ्ज्म, आनञ्जिम

मृजू – ममृज् धातु –

ममार्ज	ममार्जतुः, ममृजतुः	ममृजुः
ममार्ष्ठ / ममार्जिथ	ममार्जथुः, ममृजथुः	ममृज
ममार्ज / ममृज	ममार्जिव, ममृजिव, ममृज्व	ममार्जिम, ममृजिम, ममृज्म

क्लिदू – चिक्लिद् धातु –

चिक्लेद	चिक्लिदतुः	चिक्लिदुः
चिक्लेत्थ / चिक्लेदिथ	चिक्लिदथुः	चिक्लिद
चिक्लेद	चिक्लिद्व / चिक्लिदिव	चिक्लिद्म / चिक्लिदिम

षिधू – सिषिध् धातु –

सिषेध	सिषिधतुः	सिषिधुः
सिषेद्ध / सिषेधिथ	सिषिधथुः	सिषिध
सिषेध	सिषिधव, सिषिध्व	सिषिधम, सिषिध्म

रध् – ररध् धातु –

ररन्ध	ररन्धतुः	ररन्धुः
ररद्ध, ररन्धिथ	ररन्धथुः	ररन्ध
ररन्ध	रेध्व, ररन्धिव	रेध्म, ररन्धिम

गुपू – जुगुप् धातु –

जुगोप	जुगुपतुः	जुगुपुः
जुगोप्थ, जुगोपिथ	जुगुपथुः	जुगुप
जुगोप	जुगुप्व, जुगुपिव	जुगुप्म, जुगुपिम

त्रपूष् - तत्रप् धातु -

त्रेपे	त्रेपाते	त्रेपिरे
त्रेपिषे, त्रेप्से	त्रेपाथे	त्रेपिध्वे, त्रेप्ध्वे
त्रेपे	त्रेपिवहे, त्रेप्वहे	त्रेपिमहे, त्रेप्महे

तृप् - ततृप् धातु -

ततर्प	ततृपतुः	ततृपुः
ततर्प्थ, ततर्पिथ, तत्रप्थ	ततृपथुः	ततृप
ततर्प	ततृप्व, ततृपिव	ततृप्म, ततृपिम

दृप् - ददृप् धातु - इसके रूप तृप् के समान ही बनाइये -

ददर्प	ददृपतुः	ददृपुः
ददर्प्थ, ददर्पिथ, दद्रप्थ	ददृपथुः	ददृप
ददर्प	ददृप्व, ददृपिव	ददृप्म, ददृपिम

कृपू धातु - कृपो रो लः - कृप् धातु के ऋकारघटित 'र्' के स्थान पर 'ल्' आदेश होता है। कृप् - क्लृप् - चक्लृप्।

चक्लृपे	चक्लृपाते	चक्लृपिरे
चक्लृप्से, चक्लृपिषे	चक्लृपाथे	चक्लृब्ध्वे ,चक्लृपिध्वे
चक्लृपे	चक्लृप्वहे, चक्लृपिवहे	चक्लृप्महे, चक्लृपिमहे

क्षमू - चक्षम् धातु -

चक्षाम	चक्षमतुः	चक्षमुः
चक्षमिथ / चक्षन्थ	चक्षमथुः	चक्षम
चक्षाम / चक्षम	चक्षण्व / चक्षमिव	चक्षण्म / चक्षमिम

क्षमूष् - चक्षम् धातु -

चक्षमे	चक्षमाते	चक्षमिरे
चक्षंसे / चक्षमिषे	चक्षमाथे	चक्षन्ध्वे / चक्षमिध्वे
चक्षमे	चक्षण्वहे / चक्षमिवहे	चक्षण्महे / चक्षमिमहे

अशू - आनश् धातु -

आनशे	आनशाते	आनशिरे
आनक्षे / आनशिषे	आनशाथे	आनड्ढ्वे / आनशिध्वे
आनशे	आनश्वहे / आनशिवहे	आनश्महे / आनशिमहे

क्लिशू - चिक्लिश् धातु -

चिक्लेश	चिक्लिशतुः	चिक्लिशुः
चिक्लेष्ठ / चिक्लेशिथ	चिक्लिशथुः	चिक्लिश
चिक्लेश	चिक्लिश्व / चिक्लिशिव	चिक्लिश्म / चिक्लिशिम

नश् - ननश् धातु -

ननाश	नेशतुः	नेशुः
ननंष्ठ / नेशिथ	नेशथुः	नेश
ननाश / ननश	नेशिव / नेश्व	नेशिम / नेश्म

अक्षू - अक्ष् - आनक्ष् धातु -

आनक्ष	आनक्षतुः	आनक्षुः
आनष्ठ, आनक्षिथ	आनक्षथुः	आनक्ष
आनक्ष	आनक्ष्व, आनक्षिव	आनक्ष्म, आनक्षिम

तक्षू - ततक्ष् धातु -

ततक्ष	ततक्षतुः	ततक्षुः
ततष्ठ, ततक्षिथ	ततक्षथुः	ततक्ष
ततक्ष	ततक्ष्व, ततक्षिव	ततक्ष्म, ततक्षिम

त्वक्षू - तत्वक्ष् धातु -

तत्वक्ष	तत्वक्षतुः	तत्वक्षुः
तत्वष्ठ, तत्वक्षिथ	तत्वक्षथुः	तत्वक्ष
तत्वक्ष	तत्वक्ष्व, ततक्षिव	तत्वक्ष्म, तत्वक्षिम

निर् + कुष् - निष्चुकुष् धातु -

निश्चुकोष	निश्चुकुषतुः	निश्चुकुषुः
निश्चुकोष्ठ, निश्चुकोषिथ	निश्चुकुषथुः	निश्चुकुष
निश्चुकोष	निश्चुकुष्व, निश्चुकुषिव	निश्चुकुष्म, निश्चुकुषिम

गुहू - जुगुह् धातु -

ऊदुपधाया गोहः - गुह् धातु की उपधा के 'उ' को दीर्घ होता है, अजादि प्रत्यय परे होने पर। गुह् - जुगुह् + ए / जुगूह् + ए - जुगूहे आदि।

जुगूहे	जुगूहाते	जुगूहिरे
जुघुक्षे, जुगूहिषे	जुगूहाथे	जुघुढ्वे, जुगूहिध्वे

जुगूहे	जुगुह्वहे, जुगूहिवहे	जुगुह्महे, जुगूहिमहे

गृहू - जगृह् धातु -

जगृहे	जगृहाते	जगृहिरे
जघृक्षे, जगृहिषे	जगृहाथे	जघृढ्वे, जगृहिध्वे
जगृहे	जगृह्वहे, जगृहिवहे	जगृह्महे, जगृहिमहे

गाहू - गाह् - जगाह् धातु -

जगाहे	जगाहाते	जगाहिरे
जघाक्षे, जगाहिषे	जगाहाथे	जघाढ्वे, जगाहिध्वे
जगाहे	जगाह्वहे, जगाहिवहे	जगाह्महे, जगाहिमहे

तृन्हू - ततृन्ह् धातु -

ततृंह	ततृंहतु:	ततृंहु:
ततृण्ढ, ततृंहिथ	ततृंहथु:	ततृंह
ततृंह	ततृंह्व, ततृंहिव	ततृंह्म, ततृंहिम

तृहू - ततृह् धातु -

ततर्ह	ततृहतु:	ततृहु:
ततर्ढ, ततर्हिथ	ततृहथु:	ततृह
ततर्ह	ततृह्व, ततृहिव	ततृह्म, ततृहिम

द्रुह् - दुद्रुह् धातु -

दुद्रोह	दुद्रुहतु:	दुद्रुहु:
दुद्रोढ, दुद्रोग्ध, दुद्रोहिथ	दुद्रुहथु:	दुद्रुह
दुद्रोह	दुद्रुह्व, दुद्रुहिव	दुद्रुह्म, दुद्रुहिम

मुह् धातु -

मुमोह	मुमुहतु:	मुमुहु:
मुमोढ, मुमोग्ध, मुमोहिथ	मुमुहथु:	मुमुह
मुमोह	मुमुह्व, मुमुहिव	मुमुह्म, मुमुहिम

वृहू - ववृह् धातु -

ववर्ह	ववृहतु:	ववृहु:
ववर्ढ, ववर्हिथ	ववृहथु:	ववृह
ववर्ह	ववृह्व, ववृहिव	ववृह्म, ववृहिम

स्यन्दू - सस्यन्द् धातु -

सस्यन्दे	सस्यन्दाते	सस्यन्दिरे
सस्यन्त्से, सस्यन्दिषे	सस्यन्दाथे	सस्यन्द्ध्वे, सस्यन्दिध्वे
सस्यन्दे	सस्यन्द्वहे, सस्यन्दिवहे	सस्यन्द्महे, सस्यन्दिमहे

स्निह - सिस्निह् धातु -

सिस्नेह	सिस्निहतुः	सिस्निहुः
सिस्नेढ,	सिस्निहथुः	सस्निह
सिस्नेग्ध, सिस्नेहिथ		
सिस्नेह	सिस्निह्व / सिस्निहिव	सिस्निह्म / सिस्निहिम

स्नुह् - सुस्नुह् धातु -

सुस्नोह	सुस्नुहतुः	सुस्नुहुः
सुस्नोढ, सुस्नोग्ध, सुस्नोहिथ	सुस्नुहथुः	सुस्नुह
सुस्नोह	सुस्नुह्व, सुस्नुहिव	सुस्नुह्म, सुस्नुहिम

स्तृहू - तस्तृह् धातु -

तस्तर्ह	तस्तृहतुः	तस्तृहुः
तस्तर्ढ, तस्तर्हिथ	तस्तृहथुः	तस्तृह
तस्तर्ह	तस्तृह्व, तस्तृहिव	तस्तृह्म, तस्तृहिम

'थलि अनिट्, लिटि अनिट्' धातु

कृ, सृ, भृ स्तु, द्रु, स्रु, श्रु ये सात धातु 'थलि अनिट्, लिटि अनिट्' हैं।

इनसे परे आने वाले लिट् लकार के थल्, व, म, से, ध्वे, वहे, महे, इन सातों लिट् प्रत्ययों को इडागम न करके इनके रूप इस प्रकार बनाइये -

कृ धातु -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
चकार	चक्रतुः	चक्रुः	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
चकर्थ	चक्रथुः	चक्र	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
चकार / चकर	चकृव	चकृम	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे

भृ धातु -

बभार	बभ्रतुः	बभ्रुः	बभ्रे	बभ्राते	बभ्रिरे

बभर्थ	बभ्रथुः	बभ्र	बभृषे	बभ्राथे	बभृढ्वे
बभार / बभर	बभृव	बभृम	बभ्रे	बभृवहे	बभृमहे

सृ धातु -

ससार	सस्रतुः	सस्रुः
ससर्थ	सस्रथुः	सस्र
ससार / ससर	ससृव	ससृम

श्रु धातु

शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः
शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
शुश्राव	शुश्रुव	शुश्रुम
शुश्रव		

द्रु धातु

दुद्राव	दुद्रुवतुः	दुद्रुवुः
दुद्रोथ	दुद्रुवथुः	दुद्रुव
दुद्राव, दुद्रव	दुद्रुव	दुद्रुम

स्तु धातु

तुष्टाव	तुष्टुवतुः	तुष्टुवुः
तुष्टोथ	तुष्टुवथुः	तुष्टुव
तुष्टाव, तुष्टव	तुष्टुव	तुष्टुम

स्रु धातु

सुस्राव	सुस्रुवतुः	सुस्रुवुः
सुस्रोथ	सुस्रुवथुः	सुस्रुव
सुस्राव, सुस्रव	सुस्रुव	सुस्रुम

वृङ्, वृञ् धातुओं के लोक में रूप -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
ववार	वव्रतुः	वव्रुः	वव्रे	वव्राते	वव्रिरे
ववरिथ	वव्रथुः	वव्र	ववृषे	वव्राथे	ववृढ्वे
ववार / ववर	ववृव	ववृम	वव्रे	ववृवहे	ववृमहे

वृङ्, वृञ् धातुओं के वेद में रूप -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
ववार	वव्रतुः	वव्रुः	वव्रे	वव्राते	वव्रिरे
ववर्थ	वव्रथुः	वव्र	ववृषे	वव्राथे	ववृढ्वे
ववार / ववर	ववृव	ववृम	वव्रे	ववृवहे	ववृमहे

ये ४१ धातु थलि वेट्, लिटि वेट् हैं।

इन धातुओं के अलावा अन्य सारे धातुओं से परे आने वाले व, म, से, ध्वे, वहे, महे, इन छहों लिट् प्रत्ययों को इडागम होता है।

अतः इडागम व्यवस्था को पढ़कर इनसे बचे हुए धातुओं में केवल थल् का इडागम विचार ही स्थिर करते चलना चाहिये।

यह सारे धातुओं के लिट् लकार के धातुरूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।



दशम पाठ

समस्त धातुओं के णिजन्त रूप बनाने की विधि

तत्प्रयोजको हेतुश्च - जब एक कर्ता कोई काम करे, और दूसरा कर्ता उससे उस काम को करवाये, तब जो काम कराने वाला है, उसे प्रयोजक कर्ता कहा जाता है, तथा जिससे काम कराया जा रहा है, उसे प्रयोज्य कर्ता कहा जाता है। जैसे -

गुरुः शिष्यं पाठयति - गुरु शिष्य को पढ़ाता है। इस वाक्य के भीतर, शिष्यः पठति, गुरुः प्रेरयति ये दो वाक्य हैं।

यहाँ शिष्य पढ़ रहा है, अतः वह प्रयोज्य कर्ता है, तथा गुरु उसे पढ़ने के लिये प्रेरित कर रहा है, अतः वह प्रयोजक कर्ता है।

इसी प्रकार देवदत्तः यज्ञदत्तं गमयति - देवदत्त यज्ञदत्त को भेजता है। इस वाक्य के भीतर, यज्ञदत्तः गच्छति, देवदत्तः प्रेरयति ये दो वाक्य हैं।

यहाँ यज्ञदत्त जाने का काम कर रहा है, अतः वह प्रयोज्य कर्ता है तथा देवदत्त उसे जाने के लिये प्रेरित कर रहा है, अतः वह प्रयोजक कर्ता है।

हेतुमति च - स्वतन्त्र कर्ता का प्रयोजक हेतु कहलाता है। उसका व्यापार है प्रेषण अर्थात् प्रेरित करना। उस प्रेषणादि व्यापार के वाच्य होने पर किसी भी गण के धातु से 'णिच्' प्रत्यय लगता है। णिच् प्रत्यय लगने पर यह प्रेषण अर्थ अभिव्यक्त हो जाता है। तब उस धातु का अर्थ उस 'क्रिया को कराना या करवाना' हो जाता है। यथा - पठ् का अर्थ है पढ़ना किन्तु इसमें यदि हम णिच् लगा दें तो पठ् + णिच् का अर्थ 'पढ़ाना' हो जायेगा।

इसी प्रकार गम् का अर्थ है जाना। यदि गम् में हम णिच् लगा दें, तो गम् + णिच् का अर्थ 'भेजना' हो जायेगा।

खाद् का अर्थ है 'खाना'। इसमें यदि णिच् लगा दें तो खाद् + णिच् का अर्थ हो जायेगा 'खिलाना'।

अब हम देखें कि 'पठ्' तो धातुपाठ में पढ़ा गया है, अतः इसका नाम धातु है, किन्तु पठ् + णिच् तो धातुपाठ में पढ़ा नहीं गया है, तो फिर इसका नाम धातु कैसे होगा, और इससे किसी भी लकार के प्रत्यय कैसे लगेंगे ?

सनाद्यन्ता धातवः - सन्, क्यच्, काम्यच्, क्यङ्, क्यष्, क्विप्, णिच्,

यङ्, यक्, आय, ईयङ्, णिङ्, ये १२ प्रत्यय जिससे भी लगते हैं, उस प्रत्यय के सहित उसका नाम धातु हो जाता है। तो पठ् + णिच् की, इस सूत्र से धातु संज्ञा हो जाती है, और इससे सभी लकारों के प्रत्यय लगाये जा सकते हैं।

अत्यावश्यक - ध्यान दें कि णिच् प्रत्यय तीन प्रकार का होता है।

१. प्रातिपदिकों से लगने वाला णिच् प्रत्यय - प्रातिपदिकाद् धात्वर्थे बहुलमिष्ठवच्च / तत्करोति तदाचष्टे / तेनातिक्रामति / कर्तृकरणाद् धात्वर्थे / आख्यानात्कृतस्तदाचष्टे कृल्लुक् प्रकृतिप्रत्ययापत्तिः प्रकृतिवच्च कारकम् / मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहलकलकृततूस्तेभ्यो णिच् आदि से, जो णिच् प्रत्यय लगता है, यह णिच् प्रत्यय धातुओं से न लगकर प्रातिपदिकों से लगता है।

यह णिच् प्रत्यय वस्तुतः तद्धित के इष्ठ प्रत्यय के समान होने के कारण तद्धित प्रत्यय होता है, जो कि इस पाठ में कहे जाने वाले णिच् प्रत्यय से सर्वथा भिन्न होता है। अतः इसकी प्रक्रिया आगे नामधातु पाठ में बतलाई जायेगी।

२. चुरादिगण के धातुओं से लगने वाला णिच् प्रत्यय -

सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच् - सत्याप, पाश, रूप, वीणा, तूल, श्लोक, सेना, लोम, त्वच्, वर्म, वर्ण, चूर्ण, इन प्रतिपदिकों से तथा 'चुरादि गण के सारे धातुओं से' किसी भी प्रत्यय को लगाने के पहिले, णिच् प्रत्यय अवश्य लगाया जाता है। इसके लगने से धातु के अर्थ में कोई भी वृद्धि नहीं होती। इसे 'स्वार्थिक' णिच् प्रत्यय कहते हैं। यह प्रथमखण्ड में चुरादिगण के रूप बनाते समय बतलाया जा चुका है।

३. प्रयोज्य प्रयोजक व्यापार वाच्य होने पर धातुओं से लगने वाला णिच् प्रत्यय -

हेतुमति च - जब एक व्यक्ति काम करे और दूसरा व्यक्ति उससे काम करवाये, तब उस प्रयोज्य प्रयोजक व्यापार के वाच्य होने पर, किसी भी धातु से णिच् प्रत्यय लगाया जाता है।

इसका नाम आर्धधातुक प्रत्यय होता है। यही आर्धधातुक णिच् प्रत्यय इस पाठ में बतलाया जा रहा है।

प्रश्न उठता है कि चुरादिगण के धातुओं से स्वार्थिक णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद, जब प्रेरणार्थक णिच् प्रत्यय लगाया जायेगा, तब तो वहाँ दो दो णिच् प्रत्यय हो जायेंगे। तब क्या करेंगे ?

णेरनिटि - अनिडादि आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, णिच् प्रत्यय का लोप हो जाता है। अतः दो णिच् प्रत्यय होने पर इस सूत्र से पूर्व वाले णिच् प्रत्यय

का लोप कर देना चाहिये। यथा - चुर् + णिच् + णिच् / पूर्व वाले णिच् प्रत्यय का लोप करके - चुर् + इ = चोरि = चोरयति।

अर्थात् एक णिच् प्रत्यय लगकर भी चुर् धातु से 'चोरयति' बनेगा और दो णिच् प्रत्यय परे होने पर भी 'चोरयति' ही बनेगा।

अब हम धातुओं से णिच् प्रत्यय लगाकर उनके णिजन्त रूप बनायें। यह कार्य हम दो खण्डों में करें। ये खण्ड इस प्रकार हैं -

१. अजन्त धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि।

२. हलन्त धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि।

१. अजन्त धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि

अजन्त धातुओं को आकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त, ॠकारान्त आदि क्रम से अपनी दृष्टि के सामने रख लीजिये।

अब इनमें हम क्रमशः णिच् प्रत्यय लगायेंगे और णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद उस णिजन्त धातु में लट् लकार के प्रत्यय लगायेंगे।

णिच् प्रत्यय परे होने वाले कार्य -

आकारान्त धातुओं में णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -

अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ - ऋ धातु, ह्री धातु, ब्ली ध ातु री धातु, क्नूय् धातु, क्ष्मायी धातु तथा सभी आकारान्त धातुओं का पुक् को आगम होता है। णिच् में, ण्, च् की इत्संज्ञा होकर 'इ' शेष बचता है। पुक् में उ, क्, की इत् संज्ञा करके प् शेष बचता है।

दा + णिच् = दा + पुक् + इ - दापि

धा + णिच् = धा + पुक् + इ - धापि

एजन्त धातुओं में णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -

आदेच उपदेशेऽशिति - अशित् प्रत्यय परे होने पर सारे एजन्त (ए, ऐ, ओ, औ से अन्त होने वाले) धातुओं को 'आ' अन्तादेश होता है। जैसे - ग्लै - ग्ला, म्लै - म्ला, ध्यै - ध्या, शो - शा, सो - सा, वे - वा, छो - छा।

अब देखिये कि ए, ऐ, ओ, औ से अन्त होने वाले धातु भी आकारान्त बन गये। अतः णिच् प्रत्यय परे होने पर इन्हें भी आकारान्त मानकर 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् (प्) का आगम कीजिए -

ध्यै - ध्या - ध्यापि / म्लै - म्ला - म्लापि

अब णिच् लगे हुए इन धातुओं की अर्थात् दाप् + इ - दापि / धाप् + इ - धापि आदि, की 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातुसंज्ञा कीजिये। धातुसंज्ञा हो जाने से अब इसमें किसी भी लकार के प्रत्यय लगाये जा सकते हैं। अतः अभी

हम इनमें लट् लकार के प्रत्यय लगायें। ये प्रत्यय इस प्रकार हैं -

	लट् लकार परस्मैपद			लट् लकार आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ति	तः	अन्ति	ते	इते	अन्ते
म. पु.	सि	थः	थ	से	इथे	ध्वे
उ. पु.	मि	वः	मः	ए	वहे	महे

णिचश्च - णिजन्त धातुओं से कर्तृगामी क्रियाफल होने पर आत्मनेपद और परगामी क्रियाफल होने पर परस्मैपद के प्रत्यय लगाये जाते हैं।

कर्तरि शप् - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातु से शप् विकरण होता है। देखिये कि लट् लकार के ति, तः, अन्ति आदि प्रत्यय कर्त्रर्थक अर्थात् कर्तृवाच्य के सार्वधातुक प्रत्यय हैं। अतः इनके परे होने पर दापि = इस धातु से 'कर्तरि शप्' इस सूत्र से शप् विकरण लगाइये।

दापि + शप् + ति / शप् में, श्, प् की इत्संज्ञा होकर 'अ' शेष बचता है - दापि + अ + ति। अब सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से 'इ' को गुण करके 'ए' बनाइये - दापे + अ + ति / अब एचोऽयवायावः सूत्र से इस ए को अयादेश करके अय् बनाइये। दापय् + अ + ति = दापयति। पूरे रूप इस प्रकार बने-

परस्मैपद			आत्मनेपद		
दापयति	दापयतः	दापयन्ति	दापयते	दापयेते	दापयन्ते
दापयसि	दापयथः	दापयथ	दापयसे	दापयेथे	दापयध्वे
दापयामि	दापयावः	दापयामः	दापये	दापयावहे	दापयामहे

इसी प्रकार - धा से धापयति आदि बनाइये।

अत्यावश्यक - देखिये कि धातु + णिच् को जोड़ने के बाद, जो भी णिजन्त धातु बनेंगे, ये सदा इकारान्त ही होंगे। अतः आगे हम केवल धातु + णिच् को जोड़कर 'इकारान्त धातु' बनाकर आपको देंगे। उसके बाद आप उसके रूप इसी विधि से बना लीजिये।

कुछ आकारान्त धातुओं में पुगागम नहीं होता। वे इस प्रकार हैं -

पुगागम के अपवाद - शो, छो, षो, ह्वे, व्ये, वे, पा धातु -

शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक् - शो - शा / छो - छा / सो - सा / ह्वे - ह्वा / व्ये - व्या / वे - वा / और पा इन सात आकारान्त धातुओं को पुक् (प्) का आगम न होकर युक् (य्) का आगम होता है -

शो - शा + युक् + णिच् - शायि = शाययति।

छो	-	छा	+	युक्	+	णिच्	=	छायि	=	छाययति
सो	-	सा	+	युक्	+	णिच्	=	सायि	=	साययति
ह्वे	-	ह्वा	+	युक्	+	णिच्	=	ह्वायि	=	ह्वाययति
व्ये	-	व्या	+	युक्	+	णिच्	=	व्यायि	=	व्याययति
वे	-	वा	+	युक्	+	णिच्	=	वायि	=	वाययति
पै शोषणे	-	पा	+	युक्	+	णिच्	=	पायि	=	पाययति
पै पाने	-	पा	+	युक्	+	णिच्	=	पायि	=	पाययति

पा रक्षणे धातु - लुगागमस्तु तस्य वक्तव्यः (वा.) - णिच् परे होने पर 'पा रक्षणे' धातु को लुक् का आगम होता है।

पा - पा + लुक् + णिच् - पालि = पालयति।

वा धातु - वो विधूनने जुक् - वा धातु का अर्थ यदि हवा झलना, कँपाना हो तो उसे जुक् का आगम होता है -

वा - वा + जुक् + णिच् - वाजि = वाजयति।

ला धातु - लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहनिपातने - स्नेहनिपातन अर्थात् घी पिघलाना आदि अर्थ में, ला धातु को लुक् का आगम विकल्प से होता है। लुक् का आगम होने पर -

ला - ला + लुक् + णिच् - लालि = लालयति।

लुक् का आगम न होने पर 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये -

ला - ला + पुक् + णिच् - लापि = लापयति।

ली धातु इकारान्त वर्ग में बतला रहे हैं।

मित् आकारान्त धातु - ज्ञा, ग्ला, स्ना, श्रा धातु - ध्यान रहे कि ये धातु घटादि होने से मित् हैं।

घटादयो मितः - धातुपाठ देखिये। इसमें ८७० से ९२७ तक धातुओं का घटादि अन्तर्गण है। घटादि अन्तर्गण के ये धातु मित् धातु कहलाते हैं। इन मित् धातुओं की उपधा के 'अ' को मितां ह्रस्वः सूत्र से ह्रस्व होता है -

ज्ञा + णिच् = ज्ञाप् + इ - ज्ञापि - ह्रस्व करके ज्ञपि = ज्ञपयति
ग्ला + णिच् = ग्लाप् + इ - ग्लापि - ह्रस्व करके ज्ञपि = ग्लपयति
स्ना + णिच् = स्नाप् + इ - स्नापि - ह्रस्व करके ज्ञपि = स्नपयति

इकारान्त धातुओं से णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -

इनके अन्तिम इ, ई को णिच् परे होने पर 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि

करके ऐ बनाइये तथा एचोऽयवायावः सूत्र से आय् आदेश कीजिये -
नी + णिच् - नै + इ - नाय् + इ - नायि = नाययति।

इसके अपवाद - वी धातु - प्रजने वीयतेः - इसका अर्थ यदि प्रजनन हो, तो इसे 'आ' अन्तादेश होता है।

प्रजनन अर्थ में - इसे 'आ' आदेश कीजिये और आकारान्त होने के कारण 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये -
वी - वा + पुक् + णिच् - वापि = वापयति।

प्रजनन अर्थ न होने पर - वी + णिच् / अचो ञ्णिति सूत्र से इ को वृद्धि करके - वै + इ / एचोऽयवायावः सूत्र से आव् आदेश करके - वाय् + इ - वायि = वाययति।

स्मि धातु - नित्यं स्मयतेः - स्मि धातु के 'इ' को 'आ' अन्तादेश होता है। आकारान्त होने से 'अर्तिह्रीब्ली. सूत्र से सूत्र से पुक् का आगम होता है।
विस्मि + णिच् - वि + स्मा+ पुक् + णिच् - विस्मापि = विस्मापयते।

क्री, जि, अधि + इ धातु -

क्रीङ्जीनां णौ - क्री, जि, अधि + इ धातु, इनके 'इ' को 'आ' अन्तादेश होता है। उसके बाद 'अर्तिह्रीब्ली. सूत्र से सूत्र से पुक् का आगम होता है।
क्री - क्रा + पुक् + णिच् - क्रापि = क्रापयति।
जि - जा + पुक् + णिच् - जापि = जापयति।
अधि + इ - अध्या + पुक् + णिच् - अध्यापि = अध्यापयति।

चि धातु - चिस्फुरोर्णौ - चि धातु तथा स्फुर् धातु के एच् के स्थान पर विकल्प से 'आ'होता है।

'आ' आदेश होने पर - चि + णिच् / अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके - चै + इ / चिस्फुरोर्णौ सूत्र से ऐ के स्थान पर 'आ' आदेश करके - चा + इ / आकारान्त होने के कारण 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से इसे पुक् का आगम करके - चाप् + इ - चापि = चापयति।

'आ' आदेश न होने पर - चि + णिच् / अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके चै + इ / एचोऽयवायावः सूत्र से आय् आदेश करके - चाय् + इ = चायि = चाययति।

ध्यान दीजिये कि 'चि' धातु दो हैं। एक स्वादिगण में तथा दूसरा चुरादिगण में। स्वादिगण के 'चि' धातु से चापयति, चाययति रूप बनता है।

चुरादिगण का चि धातु 'नान्ये मितोऽहेतौ' इस गणसूत्र से मित् होता

है। अत: इसे मितां ह्रस्व: सूत्र से ह्रस्व करके चापि - चपि = चपयति / चायि - चयि = चययति रूप बनते हैं। स्फुर् धातु आगे बतलायेंगे।

भी धातु - बिभेतेर्हेतुभये - भी धातु के अन्त को 'आ' आदेश होता है, यदि प्रयोजक कर्ता से भय हो तो।

भीस्म्योर्हेतुभये - प्रयोजक कर्ता से भय होने पर, भी धातु तथा स्मि धातु से आत्मनेपद होता है।

भी धातु को 'आ' आदेश होने पर - इसे 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये -

भी - भा + णिच् + पुक् - भापि = भापयते।

भी धातु को 'आ' आदेश न होने पर -

भियो हेतुभये षुक् - जब कर्ता से भय हो, और आत्व न हो तब, 'भी' धातु को षुक् का आगम होता है।

भी - भी + णिच् + षुक् - भीषि = भीषयते।

अन्य किसी से भय होने पर -

यदि कर्ता से भय न होकर अन्य किसी से भय हो, तब धातु के अन्त को न तो 'आ' होता है, न पुक् का आगम होता है, न ही षुक् का आगम होता है। तब भी + णिच् / अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके भै + इ / एचोऽयवायाव: सूत्र से आय् आदेश करके - भाय् + इ = भायि = भाययति बनता है।

'कुञ्चिकया एनं भाययति' में डराने वाले से भय नहीं है, अपितु कुञ्चिका से भय है।

प्री धातु - धूञ्प्रीञोर्नुग्वक्तव्य: (वा.) - प्री, धू धातुओं को नुक् का आगम होता है। प्री - प्री + नुक् + णिच् - प्रीणि = प्रीणयति।

धू धातु उकारान्त वर्ग में बतला रहे हैं।

ली धातु - लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहनिपातने - ली धातु को घी पिघलाने अर्थ में विकल्प से नुक् का आगम होता है। नुक् का आगम होने पर-

ली - ली + नुक् + णिच् - लीनि = लीनयति

विभाषा लीयते: - जब भी 'ली' धातु को गुण होकर 'ए' हो, तब उस 'ए' को विकल्प से 'आ' आदेश होता है।

नुक् का आगम न होने पर, विभाषा लीयते: से 'आ' अन्तादेश करके 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये -

ली - ला + पुक् + णिच् - लापि = लापयति।

नुक् का आगम न होने पर तथा 'आ' अन्तादेश न होने पर -

अन्तिम ई को अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके एचोऽयवायाव: सूत्र से आय् आदेश कीजिये -

ली + णिच् - लै + इ - लाय् + इ - लायि = लाययति।

ह्री, ब्ली, री, धातु - इन्हें 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये तथा पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण कीजिये -

ह्री - ह्री + पुक् + णिच् - ह्रेपि = ह्रेपयति

ब्ली - ब्ली + पुक् + णिच् - ब्लेपि = ब्लेपयति

री - री + पुक् + णिच् - रेपि = रेपयति

इण् तथा इक् धातु - णौ गमिरबोधने - अबोधन अर्थ वाले इण् धातु को गम् आदेश होता है -

अबोधन अर्थ मे गम् आदेश होने पर -

इण् + णिच् / गम् + णिच् - गमि = गमयति

बोधन अर्थ में गम् आदेश न होने पर -

बोधन अर्थ में प्रति उपसर्ग पूर्वक 'इ' धातु से णिच् लगाने पर - प्रति + इ + णिच् / अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके - प्रति + ऐ + णिच् / एचोऽयवायाव: सूत्र से आय् आदेश करके - प्रति + आय् + इ / इको यणचि से यण् सन्धि करके - प्रत्याय् + इ - प्रत्यायि = प्रत्याययति।

इण्वदिक: - इण् धातु के समान इक् धातु को भी गम् आदेश होता है - इक् + णिच् - गम् + णिच् - गमि = गमयति।

उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं से णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -

इनके अन्तिम उ, ऊ को णिच् परे होने पर अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके औ बनाइये तथा एचोऽयवायाव: सूत्र से आव् आदेश कीजिये -

भू + णिच् - भौ + इ - भाव् + इ + भावि = भावयति

लू + णिच् - लौ + इ - लाव् + इ + लावि = लावयति

पू + णिच् - पौ + इ - पाव् + इ + पावि = पावयति

द्रु + णिच् - द्रौ + इ - द्राव् + इ + द्रावि = द्रावयति

इसके अपवाद - धू धातु - धूञ्प्रीञोर्नुग्वक्तव्य: (वा.) - प्री, धू धातुओं को नुक् का आगम होता है।

धू - धू + नुक् + णिच् - धूनि = धूनयति

ऋकारान्त, ॠकारान्त धातुओं से णिच् प्रत्यय कैसे लगायें -

इनके अन्तिम ऋ, ॠ को अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके आर् बनाइये -

कृ + णिच् - कार् + इ - कारि = कारयति

हृ + णिच् - हार् + इ - हारि = हारयति

तॄ + णिच् - तार् + इ - तारि = तारयति

इसके अपवाद -

१. **जागृ धातु - जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु -** जहाँ वृद्धि प्राप्त हो, अथवा जहाँ गुण, वृद्धि का निषेध प्राप्त हो, वहाँ जागृ धातु के अन्तिम ऋ को गुण ही होता है। इससे जागृ धातु को गुण करके अर् बनाइये - जागृ + णिच् - जागर् + इ - जागरि = जागरयति।

२. **दॄ, नॄ, जॄ धातु -** इनके अन्तिम ऋ, ॠ को अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके आर् बनाइये। उसके बाद मितां ह्रस्वः सूत्र से उसे ह्रस्व कर दीजिये।

दॄ + णिच् - दार् + इ - दारि - दरि = दरयति

नॄ + णिच् - नार् + इ - नारि - नरि = नरयति

जॄ + णिच् - जार् + इ - जारि - जरि = जरयति

३. **स्मृ धातु -** जब इसका अर्थ आध्यान अर्थात् चिन्तन हो तब मितां ह्रस्वः सूत्र से इसे ह्रस्व कर दीजिये। यथा -

स्मृ + णिच् - स्मार् + इ - स्मारि - स्मरि = स्मरयति

चिन्तन अर्थ न होने पर, मितां ह्रस्वः सूत्र से इसे ह्रस्व मत कीजिये-

स्मृ + णिच् - स्मार् + इ - स्मारि - स्मारि = स्मारयति

४. **ऋ धातु -** इसे 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्याताम् पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम कीजिये तथा पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण कीजिये -

ऋ + णिच् - अर् + पुक् + णिच् - अर्पि = अर्पयति

यह अजन्त धातुओं में 'णिच्' लगाने का विचार पूर्ण हुआ।

२. हलन्त धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि

पहिले हम अपवादों का विचार करके उनके रूप बना लें -

णिच् प्रत्यय परे होने पर -

१. **स्फाय् धातु - स्फायो वः -** स्फाय् धातु को स्फाव् आदेश होता है।

स्फाय् + णिच् - स्फावि = स्फावयति।

२. **शद् धातु - शदेरगतौ तः -** शद् धातु को शत् आदेश होता है।

शद् + णिच् - शाति = शातयति।

३. **रुह् धातु - रुहः पोऽन्यतरस्याम् -** रुह् धातु के ह् को विकल्प से

'प्' आदेश होता है। 'प्' आदेश न होने पर - रुह् + णिच् - रोहि = रोहयति।

'प्' आदेश होने पर - रुह् + णिच् - रोपि = रोपयति बनाइये।

४. **रध्, जभ् धातु** - **रधिजभोरचि** - रध्, जभ् धातुओं को नुम् का आगम होता है। रध् + णिच् - रन्धि = रन्धयति / जभ् + णिच् - जम्भि = जम्भयति।

५. **लभ् धातु** - **लभेश्च** - लभ् धातु को नुम् का आगम होता है। लभ् + णिच् - लम्भि = लम्भयति।

६. **जभ् धातु** - **रभेरशब्लिटो:** - रभ् धातु को नुम् का आगम होता है। रभ् + णिच् - रम्भि = रम्भयति।

७. **दुष् धातु** - **दोषो णौ / वा चित्तविरागे** - दुष् धातु की उपधा को 'ऊ' आदेश होता है, चित्तविकार अर्थ होने पर। दुष् + णिच् - दूषि = दूषयति। चित्तविकार अर्थ न होने पर दुष् + णिच् / पुगन्तलघूपधस्य च से गुण करके - दोषि = दोषयति बनाइये।

८. **सिध् धातु** - **सिध्यतेरपारलौकिके** - सिध् धातु के 'एच्' को पारलौकिक ज्ञानविशेष से भिन्न अर्थ में 'आ' आदेश होता है।

भोजन बनाने या जाने अर्थ में - सिध् + णिच् - पुगन्तलघूपधस्य च से गुण करके - सेध् + इ / ए को 'आ करके - साध् + इ - साधि = साधयति।

तपस्या अर्थ में - सिध् + णिच् - पुगन्तलघूपधस्य च से गुण करके - सेध् + इ - सेधि = सेधयति।

९. **स्फुर् धातु** - **चिस्फुरोर्णौ** - स्फुर् धातु के 'एच्' को विकल्प से 'आ' आदेश होता है।

'आ' आदेश होने पर - स्फुर् + णिच् / पुगन्तलघूपधस्य च से गुण करके - स्फोर् + णिच् / एच् को 'आ' करके - स्फार् + णिच् - स्फारि = स्फारयति।

'आ' आदेश न होने पर - स्फुर + णिच् - स्फोरि = स्फोरयति।

१०. **क्नूय् धातु** - 'अर्तिह्रीब्ली. सूत्र से पुक् का आगम कीजिये तथा पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण कीजिये - क्नूय् + णिच् - क्नोपि = क्नोपयति।

११. **हन् धातु** - 'हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु' सूत्र से हन् धातु के 'ह' को कुत्व करके 'घ' बनाइये - हन् + णिच् - घन् + इ /

अत उपधाया: सूत्र से 'अ' को वृद्धि करके - घान् + इ /

'हनस्तोऽचिण्णलोः' सूत्र से न् को त् करके - घाति = घातयति बनाइये।

१२. कृत् धातु - उपधायाश्च - उपधा के दीर्घ ॠ को 'इ' आदेश होता है, सभी प्रत्यय परे होने पर।

यहाँ ॠ के स्थान पर 'इ' होना कहा गया है, अत: 'इ' के स्थान पर उरण् रपरः से 'इर्' होगा - कृत् + णिच् - किर्त् + इ / तथा **'उपधायाञ्च'** सूत्र से उसे दीर्घ होगा - कीर्त् + इ - कीर्ति = कीर्तयति।

१३. अदन्त धातु - चुरादि गण में १८५१ (कथ) से लेकर १९४३ (तुत्थ) तक के धातु अदन्त धातु कहलाते हैं। इनके 'अ' का अतो लोपः' सूत्र से लोप कीजिये। 'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' सूत्र से इस लुप्त 'अ' के स्थानिवद् हो जाने के कारण यहाँ 'अत उपधायाः' सूत्र से वृद्धि नहीं होती है। जैसे -

कथ	+	णिच्	-	कथ्	+	इ	-	कथि	=	कथयति
गुण	+	णिच्	-	गुण्	+	इ	-	गुणि	=	गुणयति
मृग	+	णिच्	-	मृग्	+	इ	-	मृगि	=	मृगयते

१४. मित् धातु -

घटादयो मितः - धातुपाठ देखिये। इसमें ८७० से ९२७ तक धातुओं का घटादि अन्तर्गण है। घटादि अन्तर्गण के ये धातु मित् धातु कहलाते हैं।

इस घटादिगण के अदुपध धातु इस प्रकार हैं -

चक् कख् अग् कग् रग् लग् षग् ष्टग् ह्वग् घट् णट्
नट् भट् गड् कण् चण् फण् रण् शण् श्रण् अत् क्रथ्
क्लथ् प्रथ् व्यथ् श्रथ् श्लथ् म्रद् जन् वन् क्रप् त्वर् ज्वर्
ज्वल् ह्वल् ह्मल् क्नस् प्रस्

इन अदुपध धातुओं की उपधा के 'अ' को 'अत उपधायाः' सूत्र से वृद्धि करके, 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से उसे पुनः ह्रस्व कीजिये। जैसे - घट् + णिच् - घाट् + इ / उपधा को मितां ह्रस्वः सूत्र से पुनः ह्रस्व करके - घटि।

घट् + णिच् - घाट् + इ - घाटि - ह्रस्व करके घटि = घटयति
व्यथ् + णिच् - व्याथ् + इ - व्याथि - ह्रस्व करके व्यथि = व्यथयति
प्रस् + णिच् - प्रास् + इ - प्रासि - ह्रस्व करके प्रसि = प्रसयति

नान्ये मितोऽहेतौ - चुरादिगण के ज्ञप्, यम्, चह्, रह्, बल्, चिञ्, ये धातु भी मित् कहलाते हैं। इनमें भी णिच् प्रत्यय लगने के बाद इन मित् धातुओं की उपधा के 'अ' को 'अत उपधायाः' सूत्र से वृद्धि करके, 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से उसे पुनः ह्रस्व कीजिये।

ज्ञप् + णिच् - ज्ञाप् + इ - ज्ञापि - ह्रस्व करके - ज्ञपि = ज्ञपयति
यम् + णिच् - याम् + इ - यामि - ह्रस्व करके - यमि = यमयति
चह् + णिच् - चाह् + इ - चाहि - ह्रस्व करके - चहि = चहयति
रह् + णिच् - राह् + इ - राहि - ह्रस्व करके - रहि = रहयति
बल् + णिच् - बाल् + इ - बालि - ह्रस्व करके - बलि = बलयति

(चि धातु से चपयति, चययति बनते हैं, जिन्हें हम इकारान्त वर्ग में बतला चुके हैं।)

अब कुछ ऐसे धातु बतला रहे हैं, जो सदा मित् नहीं होते, अपितु किसी अर्थ विशेष में ही मित् होते हैं, तथा दूसरे अर्थ में होने पर वे मित् नहीं होते।

अर्थ विशेष में मित् होने वाले घटादि धातु

ध्यान रहे कि मित् होने पर ही इनकी उपधा को 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से ह्रस्व होता है। अन्यथा जो रूप ऊपर कही गई प्रक्रिया से बनता है, वही रहता है।

मदी हर्षग्लेपनयोः - यह धातु दिवादिगण का है। हर्ष और ग्लेपन अर्थ में मित् होने पर इससे 'अत उपधायाः' सूत्र से वृद्धि करके, तथा 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से उसे पुनः ह्रस्व करके मदयति तथा अन्य अर्थों में मादयति बनता है।

ध्वन शब्दे - एक ध्वण धातु मूर्धन्यान्त पढ़ा गया है, तथा ज्वलादि में आने वाला एक ध्वन धातु दन्त्यान्त पढ़ा गया है। इन दोनों धातुओं का अर्थ जब शब्द करना होता है, तभी ये मित् होते हैं। तब 'अत उपधायाः' सूत्र से वृद्धि करके, तथा 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से उसे पुनः ह्रस्व करके इनसे ध्वनयति ऐसा रूप बनता है अन्य अर्थों में ध्वानयति रूप बनता है।

दलि, वलि, स्खलि, रणि, ध्वनि, त्रपि क्षपयश्चेति भोजः - भोज के मत में ये मित् हैं, अन्य के मत में नहीं, अतः भोज के मत में 'अत उपधायाः' सूत्र से वृद्धि करके, तथा 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से उसे पुनः ह्रस्व करके इनसे दलयति, वलयति, स्खलयति, रणयति, ध्वनयति, त्रपयति, क्षपयति, आदि रूप बनते हैं, तथा अन्य के मत में मित् न होने पर दालयति, वालयति, स्खालयति, राणयति, ध्वानयति, त्रापयति, क्षापयति रूप बनते हैं।

जनी जॄष् क्नसु, रञ्जोऽमन्ताश्च - जनी जॄष्, क्नसु, रञ्ज्, ये धातु तथा जिन धातुओं के अन्त में अम् हो, जैसे गम्, रम्, नम्, आदि धातु ,ऐसे सारे धातु मित् होते हैं। मित् होने पर इनसे जनयति, जरयति, क्नसयति, रञ्जयति, गमयति, रमयति, नमयति आदि रूप बनते हैं।

रञ्जेर्णौ मृगरमणे नलोपो वक्तव्यः(वा.) -रञ्ज् धातु का अर्थ जब मृग को लुभाना हो, तो रञ्ज् धातु के न् का लोप करके रजयति बनता है। जब रञ्ज् धातु का अर्थ दूसरा होगा तो न् का लोप न होकर रञ्जयति बनता है।

न कमि अमि चमाम् - ये धातु अमन्त होने पर भी मित् नहीं होते हैं अतः इन्हें ह्रस्व नहीं होता। अतः 'अत उपधायाः' सूत्र से वृद्धि करके इनसे कामयति, आमयति, आचामयति रूप बनते हैं।

ग्ला, स्ना, वनु, वमां च - ये धातु मित् हैं अतः इन्हें 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से ह्रस्व होकर ग्लपयति, स्नपयति, वनयति, वमयति रूप बनते हैं।

ज्वल, ह्वल, ह्मल्, नमामनुपसर्गाद्वा - ये धातु उपसर्ग रहित होने पर विकल्प से मित् होते हैं। इनसे ज्वलयति, ज्वालयति, ह्वलयति ह्वालयति, ह्मलयति, ह्मालयति, नमयति, नामयति ऐसे दो दो रूप बनते हैं।

शमो दर्शने - दिवादिगण का शम उपशमे धातु, दर्शन = देखना अर्थ में मित् नहीं होता। अतः वहाँ निशामयति रूप बनता है। उपशम अर्थ में मित् होता है, अतः वहाँ शमयति रूप बनता है।

चुरादिगण के शम आलोचने को **नान्ये मितोऽहेतौ** से मित्व निषेध होता है, अतः चुरादिगण के शम् से शामयते ही बनता है।

स्खदिर् अवपरिभ्यां च - स्खदिर् धातु अव या परि उपसर्गों के साथ मित् नहीं होता तो वहाँ अवस्खादयति, परिस्खादयति बनेगा। किन्तु उपसर्गरहित होने पर स्खदयति ही बनेगा।

नॄ नये - यह धातु क्र्यादिगण का है। जब इसका 'नय' अर्थ होता है, तब इसका पाठ घटादिगण में होता है, तभी यह मित् होता है, अन्य अर्थों में यह मित् नहीं होता है, तो 'नय' अर्थ में 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि करके, तथा 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से उसे पुनः ह्रस्व करके 'नरयति' बनेगा तथा अन्य अर्थों में नारयति बनेगा।

दॄ भये - यह धातु क्र्यादिगण का है। जब इसका 'भय' अर्थ होता है, तब इसका पाठ घटादिगण में होता है, तभी यह मित् होता है, अन्य अर्थों में यह मित् नहीं होता है, तो 'भय' अर्थ में 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि करके, तथा 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से उसे पुनः ह्रस्व करके 'दरयति' बनेगा तथा अन्य अर्थों में दारयति बनेगा।

श्रा पाके - एक श्रा धातु अदादिगण का है। एक भ्वादिगण के श्रै पाके धातु को भी आत्व होकर श्रा बन जाता है। जब इन दोनों धातुओं का अर्थ 'पाक'

होता है, तब इनका पाठ घटादिगण में होता है, तभी ये मित् होते हैं, अन्य अर्थों में ये मित् नहीं होते हैं, तो 'पाक' अर्थ में 'श्रपयति' तथा अन्य अर्थों में श्रापयति बनेगा ।

ज्ञा मारणतोषणनिशामनेषु - एक ज्ञा अवबोधने धातु क्र्यादिगण का है तथा एक ज्ञ: धातु चुरादिगण का है। जब इनका अर्थ मारण, तोषण, निशामन, होता है, तब इनका पाठ घटादिगण में होता है, तभी ये मित् होते हैं, अन्य अर्थों में ये मित् नहीं होते तो 'मारण, तोषण, निशामन' अर्थों में 'ज्ञपयति' बनेगा तथा अन्य अर्थों में 'ज्ञापयति' रूप बनेगा।

चलि कम्पने - यह धातु भ्वादिगण का है तथा एक चलि धातु चुरादिगण का भी है। जब इनका अर्थ 'कम्पन' होता है, जब इनका पाठ घटादिगण में होता है, तभी ये मित् होते हैं, अन्य अर्थों में ये मित् नहीं होते हैं। अतः 'कम्पन' अर्थ में 'अत उपधायाः' सूत्र से वृद्धि करके, तथा 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से उसे पुनः ह्रस्व करके 'चलयति' तथा अन्य अर्थों में चालयति रूप बनेगा।

लडि जिह्वोन्मथने - यह धातु भी भ्वादिगण तथा चुरादिगण में है। जब इसका अर्थ लड़ना होगा तभी यह मित् होगा। तब 'अत उपधायाः' सूत्र से वृद्धि करके, तथा 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से उसे पुनः ह्रस्व करके इसका रूप बनेगा लडयति, अन्यत्र बनेगा लाडयति।

छदिर् ऊर्जने - यह धातु चुरादिगण का है जब इसका अर्थ बलवान् बनाना, ऐसा होगा, तभी यह मित् होगा। तब इसका रूप बनेगा•छदयति। जब इसका अर्थ ढाँकना ऐसा होगा, तब इसका रूप बनेगा - छादयति ।

यमोऽपरिवेषणे - यह यम् धातु भ्वादिगण का है। जब इसका अर्थ 'परोसना' ऐसा होगा, तभी यह मित् होगा। तब इसका रूप बनेगा 'यमयति। अन्यत्र इसका रूप बनेगा आयामयति। वहाँ यह मित् नहीं होगा।

अदुपध से बचे हुए शेष मित् धातुओं से वही रूप बनाइये, जो आगे कही हुई प्रक्रिया से बनेंगे। यथा - सृक् - सर्कयति / क्षञ्ज् - क्षञ्जयति / कन्द् - कन्दयति / क्रन्द् - क्रन्दयति / क्लन्द् - क्लन्दयति / दक्ष् - दक्षयति / हेड् - हेडयति आदि।

अब जो हलन्त धातु बचे हैं, उनके पाँच वर्ग बनाइये। अदुपध, इदुपध उदुपध ऋदुपध तथा शेष। इनमें इस प्रकार णिच् प्रत्यय लगाइये -

१. अदुपध हलन्त धातु -

अत उपधायाः - अदुपध धातुओं की उपधा के 'अ' को वृद्धि होती है

ञित् अथवा णित् प्रत्यय परे होने पर। अतः अदुपध धातुओं की उपधा के 'अ' को वृद्धि करके आ बनाइये।

पठ् + णिच् = पाठ् + इ - पाठि = पाठयति
वद् + णिच् = वाद् + इ - वादि = वादयति
पत् + णिच् = पात् + इ - पाति = पातयति
नट् + णिच् = नाट् + इ - नाटि = नाटयति आदि।

(ध्यान रहे कि यदि 'अदुपध धातु' मित् नहीं हैं, तो उनकी उपधा को 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से ह्रस्व नहीं होगा।)

२. इदुपध हलन्त धातु -

पुगन्तलघूपधस्य च - जिनकी उपधा में लघु इ, लघु उ, लघु ऋ हैं, ऐसे लघु इगुपध धातुओं की उपधा के 'लघु इक्' को पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण होता है। इस सूत्र से उपधा के 'इ' को 'ए' गुण करके -

लिख् + णिच् - लेख् + इ = लेखि = लेखयति
छिद् + णिच् - छेद् + इ = छेदि = छेदयति

३. उदुपध हलन्त धातु - पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के 'उ' को 'ओ' गुण करके -

मुद् + णिच् - मोद् + इ = मोदि = मोदयति
बुध् + णिच् - बोध् + इ = बोधि = बोधयति

४. ऋदुपध हलन्त धातु - पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के 'ऋ' को 'अर्' गुण करके -

वृष् + णिच् - वर्ष् + इ = वर्षि = वर्षयति
कृष् + णिच् - कर्ष् + इ = कर्षि = कर्षयति

५. शेष हलन्त धातु - इनके अलावा जितने भी हलन्त धातु बचे उनमें बिना कुछ किये णिच् प्रत्यय जोड़ दीजिये -

बुक्क् + णिच् - बुक्क् + इ = बुक्कि = बुक्कयति
एध् + णिच् - एध् + इ = एधि = एधयति आदि।

हमने सारे धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाकर, उनके लट् लकार के रूप बनाये। शेष लकारों में णिजन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि तत् तत् लकारों में दी गई है, उसे वहीं देखें और उसी विधि से णिजन्त धातुओं के अन्य सभी लकारों के रूप बना लें।



एकादश पाठ

भावकर्मप्रक्रिया - समस्त धातुओं के भावकर्म बनाने की विधि

सार्वधातुके यक् - भाववाची तथा कर्मवाची सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर धातुओं से यक् प्रत्यय होता है।

अर्थात् किसी भी धातु का भाववाच्य तथा कर्मवाच्य का रूप बनाने के लिये धातु में यक् प्रत्यय लगाया जाता है।

यक् प्रत्यय में 'हलन्त्यम्' सूत्र से क् की इत्संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' सूत्र से उसका लोप हो जाता है और 'य' शेष बचता है। क् की इत् संज्ञा होने के कारण यह यक् प्रत्यय कित् प्रत्यय है।

हम प्रथम खण्ड के प्रथम पाठ में विस्तार से पढ़ चुके हैं कि धातुओं से लगने वाले प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं। सार्वधातुक तथा आर्धधातुक।

लकार भी प्रत्यय ही हैं। इन लकार प्रत्ययों में लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन चार लकारों के प्रत्यय सार्वधातुक हैं।

लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लुङ्, आशीर्लिङ् तथा लृङ्, इन सात लकारों के प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

यह 'सार्वधातुके यक्' सूत्र कह रहा है कि भाववाची तथा कर्मवाची सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातुओं से यक् प्रत्यय होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि भाववाची तथा कर्मवाची आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातुओं से यक् प्रत्यय नहीं होता है। इसलिये भाववाच्य तथा कर्मवाच्य के रूप बनाते समय हमें बहुत सावधान रहना चाहिये कि यदि हमें लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन चार सार्वधातुक लकारों में धातुओं के भाववाच्य तथा कर्मवाच्य के रूप बनाना है, तब तो धातुओं से 'यक्' प्रत्यय लगाना चाहिये।

किन्तु यदि हमें लिट्, लुट्, लृट्, लुङ्, आशीर्लिङ् तथा लृङ्, इन आर्धधातुक लकारों में धातुओं के भाववाच्य तथा कर्मवाच्य के रूप बनाना है, तब धातुओं से 'यक्' प्रत्यय नहीं लगाना चाहिये।

पद का निर्णय - भाववाच्य तथा कर्मवाच्य में सारे धातुओं से आत्मनेपद के प्रत्यय ही लगते हैं। इसके लिये सूत्र है -

भावकर्मणोः - भाव तथा कर्म अर्थ में लकार विहित होने पर धातुओं से आत्मनेपद के प्रत्यय ही लगते हैं, चाहे धातु किसी भी पद का क्यों न हो।

भाववाच्य में वचन तथा पुरुष का निर्णय -

यक् प्रत्यय लगाकर भाववाच्य में धातुओं के रूप केवल आत्मनेपद प्रथमपुरुष एकवचन में ही बनाये जाते हैं। जैसे - आस्यते देवदत्तेन, ग्लायते भवता, सुप्यते भवता, स्थीयते भवता, जीव्यते मया, भूयते त्वया आदि।

भाववाच्य में सारे रूप इसलिये नहीं बनाये जाते क्योंकि भाव का कोई पुरुष वचन नहीं होता।

कर्मवाच्य में वचन तथा पुरुष का निर्णय -

यक् प्रत्यय लगाकर कर्मवाच्य में धातुओं के सारे रूप बनाये जा सकते हैं, क्योंकि कर्म का पुरुष वचन हो सकता है।

निष्कर्ष - अतः ध्यान रखें कि जब धातु सकर्मक होता है, तभी उसके पूरे बनाये जा सकते हैं। इन रूपों को ही हम कर्मवाच्य के रूप कहते हैं।

जब धातु अकर्मक होता है, तब उसके रूप केवल प्रथमपुरुष एकवचन में ही बनाये जा सकते हैं। इन रूपों को ही हम भाववाच्य के रूप कहते हैं।

अब हम चार सार्वधातुक लकारों में धातुओं के भाववाच्य तथा कर्मवाच्य के रूप बनायें। यह कार्य हमें दो हिस्सों में करना चाहिये।

१. धातुओं में यक् प्रत्यय लगाकर, लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन चार सार्वधातुक लकारों में धातुओं के भाववाच्य तथा कर्मवाच्य के रूप बनाना।

२. धातुओं में यक् प्रत्यय लगाये बिना, लिट्, लुट्, लृट्, लुङ्, आशीर्लिङ् तथा लृङ्, इन आर्धधातुक लकारों में धातुओं के भाववाच्य तथा कर्मवाच्य के रूप बनाना।

अब हम धातुओं में यक् प्रत्यय लगाकर उनके सार्वधातुक लकारों में भावकर्म के रूप बनायें। यह कार्य हम खण्ड खण्ड में करें -

१. भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के अजन्त धातुओं में यक् प्रत्यय लगाने की विधि

भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के अजन्त धातुओं में यक् प्रत्यय को जोड़ने के लिये अजन्त धातुओं के इस प्रकार वर्ग बनाइये -

अजन्त (स्वरान्त) धातुओं का वर्गीकरण - आकारान्त तथा एजन्त

धातु, इकारान्त धातु, ईकारान्त धातु, उकारान्त धातु, ऊकारान्त धातु ऋकारान्त धातु तथा ॠकारान्त धातु।

अब इसी क्रम से धातुओं में यक् प्रत्यय जोड़ें -

आकारान्त तथा एजन्त धातु + यक् प्रत्यय

आकारान्त धातु - जिनके अन्त में आ है - जैसे - दा, धा, ला, आदि।

एजन्त धातु - जिनके अन्त में एच् अर्थात् ए, ओ, ऐ, औ हैं - जैसे - धे, दे, ग्लै, म्लै आदि।

आदेच उपदेशेऽशिति - जिनके अन्त में एच् अर्थात् ए, ओ, ऐ, औ हैं, उन एजन्त धातुओं के अन्तिम एच् के स्थान पर 'आ' आदेश होता है, अशित् प्रत्यय परे होने पर।

यक् प्रत्यय भी शित् न होने के कारण अशित् प्रत्यय है, अतः इसके परे होने पर एजन्त धातुओं के अन्तिम एच् के स्थान पर 'आ' आदेश कीजिये।

जैसे - दे - दा / धे - धा / ग्लै - ग्ला / म्लै - म्ला / शो - शा / सो - सा आदि। देखिये कि अशित् प्रत्यय परे होने पर, ये एजन्त धातु भी आकारान्त बन गये हैं। अब इन आकारान्त धातुओं में तथा एजन्त से आकारान्त बने हुए धातुओं में यक् प्रत्यय लगायें -

घुमास्थागापाजहातिसां हलि - आकारान्त तथा एजन्त धातुओं में से घुसंज्ञक धातु अर्थात् दो - दा, देङ् - दा, डुदाञ् - दा, दाण् - दा, धेट् - धा, डुधाञ् - धा, इन ६ धातुओं के आ को, तथा मा, स्था, गा, पा, हा, षो (सा) इन ६ धातुओं के आ को अर्थात् कुल १२ धातुओं के 'आ' को 'ई' होता है, हलादि कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर।

यक् भी हलादि कित् प्रत्यय है, अतः इसके परे होने पर इन आकारान्त धातुओं के आ को पहिले 'ई' बना दें। दा धातु चार हैं, तथा धा धातु दो हैं। अतः हम उदाहरण में एक दा तथा एक धा ही देंगे।

दा	+	यक्	-	दी	+	य	=	दीय
धा	+	यक्	-	धी	+	य	=	धीय
मा	+	यक्	-	मी	+	य	=	मीय
गा	+	यक्	-	गी	+	य	=	गीय
पा	+	यक्	-	पी	+	य	=	पीय
हा	+	यक्	-	ही	+	य	=	हीय
स्था	+	यक्	-	स्थी	+	य	=	स्थीय

सा + यक् - सी + य = सीय

ध्यान रहे कि यक् प्रत्यय लगाकर जो अङ्ग बनते हैं, वे अदन्त होते हैं, अतः इनके लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन चार सार्वधातुक लकारों के रूप बनाने के लिये इनसे प्रथम गण समूह वाले आत्मनेपद के प्रत्यय ही लगाये जायेंगे।

इन लकारों के आत्मनेपदी प्रत्यय इस प्रकार हैं -

लट् लकार के आत्मनेपदी प्रत्यय

प्र. पु.	ते	इते	अन्ते
म. पु.	से	इथे	ध्वे
उ. पु.	ए	वहे	महे

इन्हें लगाकर 'दी + यक् = दीय' के रूप इस प्रकार बने -

प्र. पु.	दीयते	दीयेते	दीयन्ते
म. पु.	दीयसे	दीयेथे	दीयध्वे
उ. पु.	दीये	दीयावहे	दीयामहे

लोट् लकार के आत्मनेपदी प्रत्यय

प्र. पु.	ताम्	इताम्	अन्ताम्
म. पु.	स्व	इथाम्	ध्वम्
उ. पु.	ऐ	आवहै	आमहै

इन्हें लगाकर 'दी + यक् = दीय' के रूप इस प्रकार बने -

प्र. पु.	दीयताम्	दीयेताम्	दीयन्ताम्
म. पु.	दीयस्व	दीयेथाम्	दीयध्वम्
उ. पु.	दीयै	दीयावहै	दीयामहै

लङ् लकार के आत्मनेपदी प्रत्यय

प्र. पु.	त	इताम्	अन्त
म. पु.	थाः	इथाम्	ध्वम्
उ. पु.	इ	वहि	महि

इन्हें लगाकर 'दी + यक् = दीय' के रूप इस प्रकार बने -

प्र. पु.	अदीयत	अदीयेताम्	अदीयन्त
म. पु.	अदीयथाः	अदीयेथाम्	अदीयध्वम्
उ. पु.	अदीये	अदीयावहि	अदीयामहि

विधिलिङ् लकार के आत्मनेपदी प्रत्यय

प्र.पु.	ईत	ईयाताम्	ईरन्

म.पु.	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ.पु.	ईय	ईवहि	ईमहि

इन्हें लगाकर 'दी + यक् = दीय' के रूप इस प्रकार बने -

प्र.पु.	दीयेत	दीयेयाताम्	दीयेरन्
म.पु.	दीयेथाः	दीयेयाथाम्	दीयेध्वम्
उ.पु.	दीयेय	दीयेवहि	दीयेमहि

इसी प्रकार -

धा	-	धी	-	धीय	=	धीयते
मा	-	मी	-	मीय	=	मीयते
गा	-	गी	-	गीय	=	गीयते
पा	-	पी	-	पीय	=	पीयते
हा	-	ही	-	हीय	=	हीयते
स्था	-	स्थी	-	स्थीय	=	स्थीयते
सा	-	सी	-	सीय	=	सीयते आदि बनाइये।

शेष आकारान्त धातु + यक् प्रत्यय

इन १२ आकारान्त धातुओं के अलावा अब जो भी आकारान्त धातु बचे, उन्हें कुछ मत कीजिये। जैसे -

भा	+	य	-	भाय	=	भायते
ध्या	+	य	-	ध्याय	=	ध्यायते
ग्ला	+	य	-	ग्लाय	=	ग्लायते
ला	+	य	-	लाय	=	लायते
वा	+	य	-	वाय	=	वायते
छा	+	य	-	छाय	=	छायते
घ्रा	+	य	-	घ्राय	=	घ्रायते
ध्मा	+	य	-	ध्माय	=	ध्मायते आदि।

यह आकारान्त तथा एजन्त धातुओं में यक् प्रत्यय लगाकर, इनके यगन्त रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

इकारान्त, ईकारान्त धातु + यक् प्रत्यय

क्ङिति च - यदि प्रत्यय कित्, ङित्, गित् हो, तब न तो अङ्गों के अन्त में आने वाले इक् को गुण होता है और न ही उपधा में स्थित लघु इक् को गुण होता है।

जि + यक् / प्रत्यय के कित् होने के कारण क्ङिति च से गुण निषेध हो गया, तो गुण नहीं हुआ। जि + य - जि + य।

अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः - अजन्त धातुओं को दीर्घ होता है कृत् तथा सार्वधातुक से भिन्न यकारादि प्रत्यय परे होने पर।

यक् प्रत्यय यकारादि है तथा यह प्रत्यय कृत् तथा सार्वधातुक से भिन्न है अतः इसके परे होने पर इकारान्त धातुओं को दीर्घ कीजिये -

जि + य - जीय = जीयते आदि। पूरे रूप इस प्रकार बने -

जीयते	जीयेते	जीयन्ते
जीयसे	जीयेथे	जीयध्वे
जीये	जीयावहे	जीयामहे

इसी प्रकार श्रि - श्रीयते, क्षि - क्षीयते आदि बनाइये।

जो दीर्घ ईकारान्त धातु हैं, उन्हें दीर्घ करके भी 'ई' ज्यों का त्यों रहेगा। जैसे - भी - भीयते, नी - नीयते आदि।

ईकारान्त धातु नी + य = नीय, के पूरे रूप इस प्रकार बने -

नीयते	नीयेते	नीयन्ते
नीयसे	नीयेथे	नीयध्वे
नीये	नीयावहे	नीयामहे

इसके अपवाद - शीङ् धातु -

अयङ् यि क्ङिति - शीङ् धातु को अय् आदेश होता है कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर। शी + यक् / शय् + य - शय्य = शय्यते।

उकारान्त, ऊकारान्त धातु + यक् प्रत्यय

अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः - अजन्त धातुओं को दीर्घ होता है कृत् तथा सार्वधातुक से भिन्न, यकारादि प्रत्यय परे होने पर।

नु + यक् / नु + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से दीर्घ होकर - नू + य - नूय = नूयते। इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

नूयते	नूयेते	नूयन्ते
नूयसे	नूयेथे	नूयध्वे
नूये	नूयावहे	नूयामहे

इसी प्रकार हु - हूयते, द्रु - द्रूयते आदि बनाइये।

जो दीर्घ ऊकारान्त धातु हैं, उन्हें दीर्घ करके भी 'ऊ' ज्यों का त्यों रहेगा। भू - भूयते, पू - पूयते, धू - धूयते, लू - लूयते, आदि।

पू धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने --

पूयते	पूयेते	पूयन्ते
पूयसे	पूयेथे	पूयध्वे
पूये	पूयावहे	पूयामहे

इसके अपवाद - ब्रू धातु -

ब्रुवो वचिः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ब्रू धातु को वच् आदेश होता है। ब्रू + यक् / वच् + य / 'वचिस्वपियजादीनाम् किति' सूत्र से व् को सम्प्रसारण करके - उच् - य - उच्य = उच्यते।

ऋकारान्त धातु + यक् प्रत्यय

ऋकारान्त धातु - कृ, भृ, मृ आदि।

रिङ्शयग्लिङ्क्षु - श, यक् और लिङ् प्रत्यय परे होने पर ऋकारान्त धातुओं के 'ऋ' को रिङ् होता है।

कृ	+	यक्	-	क् रिङ्	+	य	-	क्रिय	=	क्रियते
भृ	+	यक्	-	भ् रिङ्	+	य	-	भ्रिय	=	भ्रियते
मृ	+	यक्	-	म् रिङ्	+	य	-	म्रिय	=	म्रियते

पूरे रूप इस प्रकार बने -

क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते
क्रियसे	क्रियेथे	क्रियध्वे
क्रिये	क्रियावहे	क्रियामहे

इसके अपवाद -

१. संयोगादि ऋकारान्त धातु -

गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः - जब ऋकारान्त धातु के आदि में संयोग हो (दो हल् एक साथ हों) जैसे स्मृ, ध्वृ, ह्वृ, स्वृ आदि में, तब उन ऋकारान्त धातुओं को तथा ऋ धातु को गुण होकर 'अर्' हो जाता है।

स्मृ	+	यक्	-	स्मर्	+	य	=	स्मर्यते
ध्वृ	+	ध्वर्	-	ध्वर्	+	य	=	ध्वर्यते
ह्वृ	+	ह्वर्	-	ह्वर्	+	य	=	ह्वर्यते
स्वृ	+	यक्	-	स्वर्	+	य	=	स्वर्यते
ऋ	+	अर्	-	अर्	+	य	=	अर्यते आदि।

२. जागृ धातु -

जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु - जहाँ वृद्धि प्राप्त हो, अथवा जहाँ गुण, वृद्धि

का निषेध प्राप्त हो, वहाँ जागृ धातु को गुण ही होता है, वि, चिण्, णल्, तथा ङित् से भिन्न प्रत्यय परे होने पर।

जागृ + यक् - जागर् + य - जागर्य = जागर्यते।

दीर्घ ॠकारान्त धातु + यक् प्रत्यय

दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के दो वर्ग बनाइये -

१. वे दीर्घ ॠकारान्त धातु, जिनमें दीर्घ 'ॠ' के पूर्व में आने वाला वर्ण ओष्ठ्य अर्थात् पवर्ग या वकार न हो। जैसे - तॄ, गॄ, कॄ, जॄ, शॄ आदि।

ॠत इद् धातोः - ऐसे दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के अन्त में आने वाले दीर्घ 'ॠ' को 'इ' आदेश होता है, कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर।

उरण् रपरः - जब किसी सूत्र से ऋ, ॠ के स्थान पर, अ, इ, या उ होना कहा जाये तब उन्हें अ, इ, या उ, न होकर अर्, इर्, उर् होते हैं।

यहाँ ॠत इद् धातोः सूत्र से दीर्घ ॠ के स्थान पर इ आदेश करने को कहा गया है अतः वह आदेश **'उरण् रपरः'** सूत्र से 'इ' न होकर इर् हो जायेगा। यथा - तॄ + यक् - तिर् + य।

हलि च - यदि धातु के अन्त में र् या व् हो और उपधा में इक् हो तो उस इक् को दीर्घ हो जाता है, हल् परे रहने पर। तिर् + य - तीर् + य - तीर्य - तीर्यते। इसी प्रकार -

दॄ	+	यक्	-	दीर्	+	य	-	दीर्य	=	दीर्यते
गॄ	+	यक्	-	गीर्	+	य	-	गीर्य	=	गीर्यते
शॄ	+	यक्	-	शीर्	+	य	-	शीर्य	=	शीर्यते
जॄ	+	यक्	-	जीर्	+	य	-	जीर्य	=	जीर्यते

२. वे दीर्घ ॠकारान्त धातु, जिनमें दीर्घ ॠ के पूर्व में आने वाला वर्ण ओष्ठ्य हो, अर्थात् पवर्ग या वकार हो। जैसे - पॄ, वॄ आदि।

उदोष्ठ्यपूर्वस्य - यदि धातु के अन्त में दीर्घ 'ॠ' हो, उस 'ॠ' के पूर्व में आने वाला वर्ण ओष्ठ्य हो अर्थात् पवर्ग या व् हो, तो ऐसे दीर्घ 'ॠ' को 'उ' आदेश होता है, कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर।

यहाँ उदोष्ठ्यपूर्वस्य सूत्र से दीर्घ 'ॠ' के स्थान पर उ आदेश करने को कहा गया है, अतः यह आदेश 'उरण् रपरः' सूत्र से 'उ' न होकर 'उर्' हो जायेगा।

पॄ धातु - पॄ + यक् - **उदोष्ठ्यपूर्वस्य** सूत्र से पुर् + य। अब **हलि च** सूत्र से उपधा के 'उ' को दीर्घ करें। पूर् + य - पूर्य = पूर्यते।

इसी प्रकार - भॄ - भूर्यते। वॄ - वूर्यते, बनाइये।

२. भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के हलन्त धातुओं में यक् प्रत्यय लगाने की विधि

भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के हलन्त धातुओं में यक् प्रत्यय को जोड़ने के लिये, हलन्त धातुओं के चार वर्ग बनाइये -

हलन्त धातुओं का वर्गीकरण -

कुछ विशिष्ट धातु, सम्प्रसारणी धातु, अनिदित् धातु, तथा शेष धातु।

कुछ विशिष्ट धातु + यक् प्रत्यय

अस् धातु -

अस्तेर्भूः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अस् धातु को भू आदेश होता है। अस् + यक् / भू + य = भूयते।

चक्ष् धातु -

चक्षिङ् ख्याञ् - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर चक्ष् धातु को ख्या आदेश होता है। चक्ष् + यक् / ख्या + य = ख्यायते।

अज् धातु -

अजेर्व्यघञपोः - घञ्, अप् को छोड़कर शेष सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अज् धातु को वी आदेश होता है। अज् + यते - वी + यते = वीयते।

जन् सन् खन् धातु -

ये विभाषा - यकारादि कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर जन्, सन्, खन् धातुओं के अन्तिम 'न्' के स्थान पर विकल्प से 'आ' आदेश होता है।

आत्व होने पर - जन् + यक् / जा + य - जाय = जायते।

आत्व न होने पर - जन् + यक् / जन् + य - जन्य = जन्यते बनाइये।

इसी प्रकार - खन् धातु से खायते, खन्यते, सन् धातु से सायते, सन्यते बनाइये।

तन् धातु - तनोतेर्यकि - तन् धातु को यक् प्रत्यय परे होने पर विकल्प से 'आ' आदेश होता है।

आत्व होने पर - तन् + यक् / ता + य - ताय = तायते।

आत्व न होने पर - तन् + यक् / तन् + य - तन्य = तन्यते बनाइये।

सम्प्रसारणी धातु + यक् प्रत्यय

इसके लिये पहिले हम सम्प्रसारण, तथा सम्प्रसारण करने की विधि को

जानें -

इग्यणः सम्प्रसारणम् - य्, व्, र्, ल् को इ, उ, ऋ, लृ हो जाना सम्प्रसारण होना कहलाता है। जैसे - यज् - इज् / वच् - उच् / व्रश्च् - वृश्च् / आदि। यहाँ यह जानना चाहिये कि -

न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् - जिन धातुओं में य्, व्, र्, ल् में से दो वर्ण हों, जैसे व्यथ्, व्रश्च् आदि में हैं, वहाँ जो बाद में हो, उसको ही सम्प्रसारण करना चाहिये, पूर्व वाले को नहीं। अर्थात् व्रश्च् में र् को और व्यथ् में य् को सम्प्रसारण होता है, व् को नहीं।

सम्प्रसारणाच्च - जब भी य्, व्, र्, ल् को इ, उ, ऋ, लृ यह सम्प्रसारण होता है, तब सम्प्रसारण के बाद में जो भी वर्ण होता है, उसको पूर्वरूप हो जाता है।

पूर्वरूप - पूर्वरूप का अर्थ होता है पूर्व के वर्ण में मिल जाना तथा दिखाई न पड़ना।

जैसे - वप् में तीन वर्ण हैं व् अ प्। इनमें से व् को सम्प्रसारण करके जब हम 'उ' बनाते हैं तब - उ अ प् यह बनता है। यहाँ सम्प्रसारण 'उ' है, उसके बाद जो 'अ' है, उस 'अ' को इस सूत्र से पूर्वरूप होकर बनता है - उप्।

व्यच् में चार वर्ण हैं व् य् अ च्। इनमें से 'य्' को सम्प्रसारण करके जब हम 'इ' बनाते हैं तब - व् इ अ च् यह बनता है। यहाँ सम्प्रसारण 'इ' है, उसके बाद जो 'अ' है, उस अ को इस सूत्र से पूर्वरूप होकर बनता है - व् इ च् = विच्।

स्वप् में चार वर्ण हैं स् व् अ प्। इनमें से 'व्' को सम्प्रसारण करके जब हम 'उ' बनाते हैं तब - स् उ अ प् यह बनता है। यहाँ सम्प्रसारण 'उ' है, उसके बाद जो 'अ' है उस 'अ' को इस सूत्र से पूर्वरूप होकर बनता है - स् उ प् = सुप्। अब सम्प्रसारण करने वाले सूत्र बतलाते हैं -

वचिस्वपियजादीनाम् किति - वच्, स्वप् तथा यज्, वप्, वह्, वस्, वद्, वेञ्, ह्वेञ्, श्वि, व्येञ्, धातुओं को सम्प्रसारण होता है, कित् प्रत्यय परे होने पर।

ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च -

ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज् इन धातुओं को सम्प्रसारण होता है कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर।

'यक्' चूँकि कित् प्रत्यय है, अतः इसके परे होने पर इन धातुओं को इस प्रकार सम्प्रसारण कीजिये -

ग्रह्	+	यक्	-	गृह्	+	य	-	गृह्य	=	गृह्यते
व्रश्च्	+	यक्	-	वृश्च्	+	य	-	वृश्च्य	=	वृश्च्यते
प्रच्छ्	+	यक्	-	पृच्छ्	+	य	-	पृच्छ्य	=	पृच्छ्यते
भ्रस्ज्	+	यक्	-	भृज्ज्	+	य	-	भृज्ज्य	=	भृज्ज्यते
व्यध्	+	यक्	-	विध्	+	य	-	विध्य	=	विध्यते
व्यच्	+	यक्	-	विच्	+	य	-	विच्य	=	विच्यते
वच्	+	यक्	-	उच्	+	य	-	उच्य	=	उच्यते
स्वप्	+	यक्	-	सुप्	+	य	-	सुप्य	=	सुप्यते
यज्	+	यक्	-	इज्	+	य	-	इज्य	=	इज्यते
वप्	+	यक्	-	उप्	+	य	-	उप्य	=	उप्यते
वह्	+	यक्	-	उह्	+	य	-	उह्य	=	उह्यते
वद्	+	यक्	-	उद्	+	य	-	उद्य	=	उद्यते
वश्	+	यक्	-	उश्	+	य	-	उश्य	=	उश्यते

शासिवसिघसीनाञ्च - इण् और कवर्ग से परे आने वाले शास्, वस्, घस् धातुओं के स् को ष् होता है।

वस्	+	यक्	-	उस्	+	य	-	उष्य	=	उष्यते

सम्प्रसारण करने के बाद जो धातु ह्रस्व इकारान्त तथा ह्रस्व उकारान्त बन जायें, उन्हें अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से दीर्घ कीजिये।

ज्या	+	यक्	-	जि	+	य	-	जीय	=	जीयते
व्येञ्	+	यक्	-	वि	+	य	-	वीय	=	वीयते
वेञ्	+	यक्	-	उ	+	य	-	ऊय	=	ऊयते
ह्वेञ्	+	यक्	-	हु	+	य	-	हूय	=	हूयते
श्वि	+	यक्	-	शु	+	य	-	शूय	=	शूयते

अनिदित् धातु + यक् प्रत्यय

अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति - अनिदित् हलन्त धातुओं की उपधा के 'न्' का लोप होता है, कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर।

इस सूत्र से इन अनिदित् धातुओं से यक् प्रत्यय परे होने पर इनकी उपधा के 'न्' का लोप कीजिये।

कुल अनिदित् धातु इस प्रकार हैं -

अञ्च्	कुञ्च्	क्रुञ्च्	ग्लुञ्च्	चञ्च्	तञ्च्	त्वञ्च्	म्रुञ्च्	म्लुञ्च्
लुञ्च्	वञ्च्	अञ्ज्	रञ्ज्	भञ्ज्	सञ्ज्	ष्वञ्ज्	कुन्थ्	ग्रन्थ्

मन्थ्	श्रन्थ्	उन्द्	बुन्द्	स्कन्द्	स्यन्द्	इन्ध्	बन्ध्	शुन्ध्
तुम्प्	त्रुम्प्	ऋम्फ्	गुम्फ्	तुम्फ्	त्रुम्फ्	तृम्फ्	दृम्फ्	उम्भ्
दम्भ्	शुम्भ्	श्रम्भ्	षृम्भ्	स्तंभ्	हम्म्	दंश्	भ्रंश्	ध्वंस्
भ्रंस्	शंस्	स्रंस्	तृन्ह् = ५०					

इनसे यक् प्रत्यय लगने पर इनकी उपधा के 'न्' का लोप करके इनके रूप इस प्रकार बनाइये -

धातु	**नलोप करके**	**यक् लगाकर**	**प्रथम पुरुष एकवचन का रूप**
स्कन्द्	स्कद्	स्कद्य	स्कद्यते
स्रंस्	स्रस्	स्रस्य	स्रस्यते
ध्वंस्	ध्वस्	ध्वस्य	ध्वस्यते
भ्रंस्	भ्रस्	भ्रस्य	भ्रस्यते
मन्थ्	मथ्	मथ्य	मथ्यते
शुन्ध्	शुध्	शुध्य	शुध्यते
कुञ्च्	कुच्	कुच्य	कुच्यते
क्रुञ्च्	क्रुच्	क्रुच्य	क्रुच्यते
लुञ्च्	लुच्	लुच्य	लुच्यते
वञ्च्	वच्	वच्य	वच्यते
चञ्च्	चच्	चच्य	चच्यते
तञ्च्	तच्	तच्य	तच्यते
त्वञ्च्	त्वच्	त्वच्य	त्वच्यते
म्रुञ्च्	म्रुच्	म्रुच्य	म्रुच्यते
म्लुञ्च्	म्लुच्	म्लुच्य	म्लुच्यते
ग्लुञ्च्	ग्लुच्	ग्लुच्य	ग्लुच्यते
श्रम्भ्	श्रभ्	श्रभ्य	श्रभ्यते
तुम्प्	तुप्	तुप्य	तुप्यते
त्रुम्प्	त्रुप्	त्रुप्य	त्रुप्यते
तुम्फ्	तुफ्	तुफ्य	तुफ्यते
त्रुम्फ्	त्रुफ्	त्रुफ्य	त्रुफ्यते
दृम्फ्	दृफ्	दृफ्य	दृफ्यते
तृम्फ्	तृफ्	तृफ्य	तृफ्यते

ऋम्फ्	ऋफ्	ऋफ्य	ऋफ्यते
सृम्भ्	सृभ्	सृभ्य	सृभ्यते
शुम्भ्	शुभ्	शुभ्य	शुभ्यते
उम्भ्	उभ्	उभ्य	उभ्यते
हम्म्	हम्	हम्य	हम्यते
शंस्	शस्	शस्य	शस्यते
स्रंभ्	स्रभ्	स्रभ्य	स्रभ्यते
रञ्ज्	रज्	रज्य	रज्यते
स्यन्द्	स्यद्	स्यद्य	स्यद्यते
भ्रंश्	भ्रश्	भ्रश्य	भ्रश्यते
दम्भ्	दभ्	दभ्य	दभ्यते
तृन्ह्	तृह्	तृह्य	तृह्यते
गुम्फ्	गुफ्	गुफ्य	गुफ्यते
भञ्ज्	भज्	भज्य	भज्यते
बन्ध्	बध्	बध्य	बध्यते
श्रन्थ्	श्रथ्	श्रथ्य	श्रथ्यते
ग्रन्थ्	ग्रथ्	ग्रथ्य	ग्रथ्यते
कुन्थ्	कुथ्	कुथ्य	कुथ्यते
अञ्च्	अच्	अच्य	अच्यते
अञ्ज्	अज्	अज्य	अज्यते
उन्द्	उद्	उद्य	उद्यते
इन्ध्	इध्	इध्य	इध्यते
लुण्ट्	लुट्	लुट्य	लुट्यते
दंश्	दश्	दश्य	दश्यते
स्वञ्ज्	स्वज्	स्वज्य	स्वज्यते
सञ्ज्	सज्	सज्य	सज्यते

शेष धातु + यक् प्रत्यय

क्ङिति च – कित्, ङित् अथवा गित्, प्रत्यय परे होने पर, इक् के स्थान पर प्राप्त होने वाले गुण, वृद्धि कार्य नहीं होते।

अतः इन शेष हलन्त धातुओं में यक् प्रत्यय को ज्यों का त्यों जोड़ दीजिये, बस। जैसे –

पठ् + यक् = पठ्य - पठ्यते / नन्द् + यक् - नन्द्य = नन्द्यते / लिख् + यक् - लिख्य = लिख्यते / मुद् + यक् - मुद्य = मुद्यते आदि।

यह भ्वादिगण से क्र्यादिगण तक के धातुओं में यक् प्रत्यय लगाने की विधि पूर्ण हुई।

३. चुरादिगण के धातु तथा णिजन्त धातुओं में यक् प्रत्यय लगाने की विधि

चुरादिगण के प्रत्येक धातु से कोई भी प्रत्यय लगाने के पहिले स्वार्थिक णिच् प्रत्यय लगता है। णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद ही चुरादिगण के धातुओं में अन्य कोई सा भी प्रत्यय लगाना चाहिये।

जैसे - चुर् + णिच् = चोरि / कथ् + णिच् - कथि / गण् + णिच् - गणि आदि।

इसी प्रकार जब प्रेरणा अर्थ अर्थात् प्रयोजक व्यापार वाच्य हो तब किसी भी धातु से णिच् प्रत्यय लगा देना चाहिये। यहाँ भी णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद ही धातु से अन्य कोई प्रत्यय लगाना चाहिये।

इसका अर्थ यह हुआ कि णिच् प्रत्यय लगाकर यक् प्रत्यय लगाने पर, हमें दो कार्य करना पड़ते हैं -

१. धातु + णिच् को जोड़कर णिजन्त धातु बनाना।

२. णिजन्त धातु में यक् प्रत्यय लगाना।

धातु + णिच् को जोड़कर, णिजन्त धातु बनाने की विधि पृष्ठ ३८९ से ४०३ पर हमने अभी 'समस्त धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि' नामक दशम पाठ में, विस्तार से पढ़ी है। उसे वहीं देखिये।

उस विधि से धातुओं में णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद, उन णिजन्त धातुओं के भाववाची अथा कर्मवाची रूप बनाने के लिये, उनमें इस प्रकार यक् प्रत्यय लगाइये -

णेरनिटि - अनिडादि आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, णिच् प्रत्यय का लोप हो जाता है।

चूँकि 'णिच्' प्रत्यय को इडागम नहीं होता है, अतः यह भी अनिडादि आर्धधातुक प्रत्यय है। अतः जब णिजन्त धातुओं से परे यक् प्रत्यय हो, तो णिजन्त धातु के 'णिच् = इ' का लोप कर देना चाहिये। ध्यान रहे कि सारे णिजन्त धातुओं के अन्त में 'इ' ही होता है। इस 'णिच् = इ' का 'णेरनिटि' सूत्र से लोप कर देना चाहिये। यथा -

चुर् + णिच् - चोरि / चोरि + यक् - चोर् + य - चोर्य = चोर्यते
कथ् + णिच् - कथि / कथि + यक् - कथ् + य - कथ्य = कथ्यते
गण् + णिच् - गणि / गणि + यक् - गण् + य - गण्य = गण्यते

४. प्रत्ययान्त धातुओं में यक् प्रत्यय लगाने की विधि

सन्नन्त धातु - जिन धातुओं के अन्त में सन् प्रत्यय हो, उन्हें सन्नन्त धातु कहते हैं। सारे सन्नन्त धातुओं के अन्त में सदा 'अ' ही होता है अर्थात् वे सदा अदन्त ही होते हैं।

अतो लोपः - धातुओं के अन्त में आने वाले 'अ' का लोप होता है कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर।

अतः 'यक्' प्रत्यय परे होने पर अतो लोपः सूत्र से सन्नन्त धातुओं के 'अ' का लोप कीजिये। यथा - जिगमिष + यक् + ते / 'अ' का लोप करके - जिगमिष् + यते = जिगमिष्यते।

सारे सन्नन्त धातुओं में 'यक्' प्रत्यय इसी प्रकार लगाइये।

यङन्त धातु - जिन धातुओं के अन्त में यङ् प्रत्यय हो, उन्हें यङन्त धातु कहते हैं। सारे यङन्त धातुओं के अन्त में सदा 'अ' ही होता है अर्थात् वे सदा अदन्त ही होते हैं।

यङ् के पूर्व में अच् होने पर यक् प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

अतो लोपः - धातुओं के अन्त में आने वाले 'अ' का लोप होता है कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर।

यक् प्रत्यय परे होने पर अतो लोपः सूत्र से यङन्त धातुओं के अन्तिम 'अ' का लोप कीजिये। यथा - नेनीय + यते /

अतो लोपः से अन्तिम अ का लोप करके - नेनीय् + यते = नेनीय्यते / लोलूय + यते = लोलूय्यते। / बोभूय + यते = बोभूय्यते, आदि बनाइये।

यङ् के पूर्व में हल् होने पर यक् प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

यस्य हलः - हल् के बाद आने वाले 'य' का लोप होता है, आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। यथा - बाभ्रश्य + यते /

यस्य हलः से अन्तिम य का लोप करके - बाभ्रश् + यते = बाभ्रश्यते। नेनिज्य + यते / यस्य हलः से अन्तिम य का लोप करके - नेनिज् + यते = नेनिज्यते।

इसी प्रकार वेविध्य = वेविध्यते / मोमुद्य = मोमुद्यते आदि बनाइये।

हमने सारे धातुओं में 'यक् प्रत्यय' लगाना सीख लिया है और इनके

सार्वधातुक लकारों के रूप बना लिये हैं।

धातुओं में यक् प्रत्यय लगाये बिना, उनके लृट्, लृङ्, लुट् तथा आशीर्लिङ्, इन आर्धधातुक लकारों में, भाववाच्य तथा कर्मवाच्य के रूप बनाना

'सार्वधातुके यक्' सूत्र कहता है कि भाववाची तथा कर्मवाची 'सार्वधातुक' प्रत्यय परे होने पर, धातुओं से यक् प्रत्यय होता है।

इसका अर्थ यह हुआ कि भाववाची तथा कर्मवाची आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातुओं से यक् प्रत्यय नहीं होता है।

इसलिये भाववाच्य तथा कर्मवाच्य के रूप बनाते समय, हमें बहुत सावधान रहना चाहिये कि यदि हमें लिट्, लुट्, लृट्, लुङ्, आशीर्लिङ् तथा लृङ्, इन आर्धधातुक लकारों में किसी भी धातु के भाववाच्य तथा कर्मवाच्य के रूप बनाना है, तो धातुओं से 'यक्' प्रत्यय नहीं लगाना चाहिये, क्योंकि 'यक्' प्रत्यय तो केवल सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर ही होता है।

अतः हम बहुत सावधानी से धातुओं से 'यक्' प्रत्यय लगाये बिना भाववाच्य तथा कर्मवाच्य में आर्धधातुक लकारों के रूप बनायें।

केवल यह भर ध्यान रखें, कि चाहे किसी भी पद का धातु हो, भाववाच्य तथा कर्मवाच्य में उससे 'भावकर्मणोः' सूत्र से केवल आत्मनेपदी प्रत्यय ही लगायें।

लिट्, लुट्, लृट्, लुङ्, आशीर्लिङ् तथा लृङ् लकारों के कर्तृवाच्य के रूप बनाने की विधि प्रथम खण्ड में विस्तार से बतलाई जा चुकी है। उसे पढ़िये।

वहाँ इन लकारों में जिस धातु का जैसा रूप कर्तृवाच्य में बनता है, ठीक वही का वही रूप, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में भी बनेगा।

केवल यह ध्यान रखना होगा कि चाहे किसी भी पद का धातु हो, भाववाच्य तथा कर्मवाच्य में उससे 'भावकर्मणोः' सूत्र से केवल आत्मनेपदी प्रत्यय ही लगेंगे।

जैसे - पा यह परस्मैपदी धातु है। इसका कर्तृवाच्य में लृट् लकार का रूप बनता है - पास्यति। कर्मवाच्य में आत्मनेपदी प्रत्यय लगकर इसका रूप बनेगा - पास्यते।

इसी प्रकार चि से चेष्यते / नी से नेष्यते / हु से होष्यते / भू से भविष्यते / कृ से करिष्यते / तॄ से तरिष्यते / हन् से हनिष्यते / ग्रह् से ग्रहीष्यते / दृश् से द्रक्ष्यते / लिख् से लेखिष्यते / मुद् से मोदिष्यते आदि बनाइये।

इसी प्रकार प्रथम खण्ड में कही हुई विधि से लृङ्, लुट्, आशीर्लिङ् लकारों

के आत्मनेपदी रूप बनाइये। ये ही इन लकारो के भावकर्म के रूप हैं।

अजन्त धातुओं तथा हन्, ग्रह्, दृश् धातुओं के लृट्, लृङ्, लुट्, आशीर्लिङ् लकारों में कर्मवाच्य, भाववाच्य बनाने के लिये विशेष विधि

स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्म्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च - भाव तथा कर्म विषयक स्य, सिच्, सीयुट्, तास्, प्रत्यय परे रहते उपदेश में अजन्त धातुओं को तथा हन्, ग्रह्, दृश् धातुओं को, विकल्प से चिण् के समान कार्य होता है तथा स्य, सिच्, सीयुट्, तास्, प्रत्ययों को इट् का आगम भी होता है।

ध्यान रहे कि इस 'इट्' के होने के बाद, इन प्रत्ययों को 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से होने वाला इट् नहीं होता।

चिण् के समान कार्य होने का अर्थ यह है कि चिण् प्रत्यय णित् है। अतः मान लीजिये कि ये स्य, सिच्, सीयुट्, तास्, प्रत्यय भी णित् ही हैं।

अतः जो जो कार्य 'चिण्' प्रत्यय परे होने पर धातुओं को होते हैं, वे सारे कार्य इन, भाव तथा कर्म विषयक स्य, सिच्, सीयुट्, तास्, प्रत्यय परे होने पर भी धातुओं को होने लगते हैं।

प्रत्यय के 'चिण्' के समान होने पर इस प्रकार कार्य कीजिये -

जब अजन्त धातु तथा हन्, ग्रह्, दृश् धातुओं के बाद आने वाले स्य, सिच्, सीयुट्, तास् प्रत्यय 'चिण्' के समान हों, तब इन इन प्रत्ययों को 'इट्' का आगम अवश्य कीजिये, भले ही धातु अनिट् क्यों न हो।

अर्थात् 'चिण्' के समान कार्य करने के लिये अनिट् धातुओं से भी सेट् प्रत्यय ही लगाइये। यथा -

आकारान्त धातु - पा + इष्यते /

इस स्य प्रत्यय को 'स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्म्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च' सूत्र से चिण्वद्भाव होने पर -

आतो युक् चिण्कृतोः - आकारान्त धातुओं को युक् का आगम होता है चिण् प्रत्यय परे होने पर, तथा ञित् णित् कृत् प्रत्यय परे होने पर।

पा + इष्यते / इस सूत्र से युक् का आगम करके - पा + युक् + इष्यते / य्, क् की इत् संज्ञा करके - पा + य् + इष्यते = पायिष्यते।

इसी प्रकार लृङ् लकार में अपायिष्यत / लुट् लकार में पायिता / आशीर्लिङ् लकार में पायिषीष्ट बनाइये। **लुङ् लकार आगे बतला रहे हैं।**

इकारान्त, ईकारान्त धातु - चि + इष्यते -

इस स्य प्रत्यय को 'स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्म्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च' सूत्र से चिण्वद्भाव करके -

अचो ञ्णिति - ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर अजन्त अङ्ग को वृद्धि होती है। चि + इष्यते - चै + इष्यते -

एचोऽयवायाव: - एच् के बाद अच् आने पर एच् के स्थान पर क्रमश: अय्, अव्, आय्, आव् आदेश होते हैं। चाय् + इष्यते = चायिष्यते / नी - नायिष्यते आदि।

इसी प्रकार लृङ् लकार में अनायिष्यत / लुट् लकार में नायिता / आशीर्लिङ् लकार में नायिषीष्ट बनाइये।

उकारान्त, ऊकारान्त धातु - हु + इष्यते /

इस स्य प्रत्यय को 'स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्म्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च' सूत्र से चिण्वद्भाव करके -

अचो ञ्णिति से 'उ' के स्थान पर 'औ' वृद्धि करके - हौ + इष्यते / एचोऽयवायाव: सूत्र से आव् आदेश करके - हाव् + इष्यते = हाविष्यते / भू - भाविष्यते आदि।

इसी प्रकार लृङ् लकार में अभाविष्यत / लुट् लकार में भाविता / आशीर्लिङ् लकार में भाविषीष्ट बनाइये।

ऋकारान्त, ॠकारान्त धातु - कृ + इष्यते -

इस स्य प्रत्यय को 'स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्म्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च' सूत्र से 'चिण्वद्भाव' करके -

अचो ञ्णिति से 'ऋ' के स्थान पर 'आर्' वृद्धि करके - कार् + इष्यते = कारिष्यते। दीर्घ ॠकारान्त धातुओं से तॄ - तारिष्यते आदि बनाइये।

इसी प्रकार लृङ् लकार में अकारिष्यत / लुट् लकार में कारिता / आशीर्लिङ् लकार में कारिषीष्ट बनाइये।

हन् धातु - हन् + इष्यते - स्य प्रत्यय को चिण्वद्भाव करके -

हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु - हन् धातु के 'ह' को कुत्व (घ) होता है ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर तथा नकार परे होने पर। इससे हन् के 'ह' को कुत्व करके 'घ' बनाइये - हन् + इष्यते - घन् + इष्यते -

अत उपधाया: - अङ्ग की उपधा के 'अ' को वृद्धि होती है ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। घन् + इष्यते - घान् + इष्यते = घानिष्यते।

इसी प्रकार लृङ् लकार में अघानिष्यत / लुट् लकार में घानिता / आशीर्लिङ् लकार में घानिषीष्ट बनाइये।

ग्रह् धातु - ग्रह् + इष्यते / स्य प्रत्यय को चिण्वद्भाव करके - 'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा के 'अ' को वृद्धि करके - ग्राह् + इष्यते = ग्राहिष्यते।

इसी प्रकार लृङ् लकार में अग्राहिष्यत / लुट् लकार में ग्राहिता / आशीर्लिङ् लकार में ग्राहिषीष्ट बनाइये।

दृश् धातु - दृश् + इष्यते - स्य प्रत्यय को चिण्वद्भाव करके -

पुगन्तलघूपधस्य च - जिनकी उपधा में लघु इ, लघु उ, लघु ऋ हैं, ऐसे लघु इगुपध धातुओं की उपधा के 'लघु इक्' को गुण होता है।

इस सूत्र से उपधा के 'इ' को 'ए' गुण करके - दर्श् + इष्यते = दर्शिष्यते।

इसी प्रकार लृङ् लकार में अदर्शिष्यत / लुट् लकार में दर्शिता / आशीर्लिङ् लकार में दर्शिषीष्ट बनाइये।

णिजन्त मित् धातु - णिच् से अन्त होने के कारण सारे णिजन्त धातु 'इकारान्त' ही होते हैं। अतः ये अजन्त हैं। इनमें से जो मित् धातु हैं, उनको इसी खण्ड के दशम पाठ में पृष्ठ ३९९ से ४०२ में देखिये।

इन णिजन्त मित् धातुओं के रूप इस प्रकार बनाइये -

शम् + णिच् - शमि / शमि + इष्यते / णेरनिटि सूत्र से णिच् का लोप करके - शम् + इष्यते / अजन्त धातु होने के कारण 'स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्म्मणोरुपदेशेऽज्झन ग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च' सूत्र से यह 'स्य' प्रत्यय को चिण् के समान मानकर -

चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम् - यदि मित् धातुओं से परे णिच् हो, और उस णिच् से परे चिण् अथवा णमुल् हों, तो इन मित् धातुओं की उपधा के स्वर को, विकल्प से ह्रस्व तथा दीर्घ होते हैं।

अतः 'चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम्' सूत्र से विकल्प से दीर्घ करके - शामिष्यते / शमिष्यते रूप बनते हैं।

क्षञ्ज् धातु की उपधा में अच् नहीं है, तथापि घटादि गण में पाठ होने से मित् होने के कारण इसके 'अच्' को विकल्प से दीर्घ करके - क्षाञ्जिष्यते / क्षञ्जिष्यते रूप बनते हैं।

इसी प्रकार लृङ् लकार में - अशामिष्यत, अशमिष्यत।

लुट् लकार में - शामिता, शमिता।

आशीर्लिङ् लकार में शामिषीष्ट, शमिषीष्ट आदि बनाइये।

भाववाच्य, कर्मवाच्य में लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

हमने लुङ् लकार के बारह प्रकार के प्रत्यय पढ़े हैं, किन्तु हम जानते हैं कि लुङ् लकार के सिज्लुक् से बने हुए प्रत्यय तथा धातु को सक् का आगम करके बने हुए प्रत्यय केवल परस्मैपदी होते हैं। अङ्, चङ् से बने हुए प्रत्यय केवल कर्तृवाच्य में होते हैं। अतः भाववाच्य तथा कर्मवाच्य में लुङ् लकार के रूप बनाने के लिये केवल क्स तथा सिच् से बने हुए प्रत्यय ही लगते हैं।

इनकी व्यवस्था इस प्रकार है - क्रुश्, दिश्, मृश्, रिश्, रुश्, लिश्, विश्, स्पृश्, कृष्, त्विष्, द्विष्, श्लिष्, मिह् रुह्, लिह्, दिह्, दुह् ये १७ शलन्त इगुपध अनिट् धातु हैं। इन शलन्त इगुपध अनिट् धातुओं से क्स से बने हुए प्रत्यय कहे गये हैं, अतः इनसे वे ही प्रत्यय लगेंगे।

चिण् भावकर्मणोः - भाववाच्य तथा कर्मवाच्य के लुङ् लकार में, आत्मनेपद, प्रथमपुरुष एकवचन में 'त' प्रत्यय परे होने पर, सब प्रत्ययों को रोककर, सभी धातुओं से 'चिंण्' प्रत्यय ही होता है। चिण् प्रत्यय में च्, ण् की इत्संज्ञा करके 'इ' शेष रहता है

चिणो लुक् - चिण् से परे आने वाले 'त' प्रत्यय का लुक् होता है। केवल चिण् का 'इ' शेष रहता है। शेष प्रत्यय वे ही रहते हैं।

अतः क्स से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय इस प्रकार बने -

प्र. पु.	इ (चिण्)	साताम्	सन्त
म. पु.	सथाः	साथाम्	सध्वम्
उ. पु.	सि	सावहि	सामहि

क्रुश् धातु -

अक्रोशि	अक्रुक्षाताम्	अक्रुक्षन्त
अक्रुक्षथाः	अक्रुक्षाथाम्	अक्रुक्षध्वम्
अक्रुक्षि	अक्रुक्षावहि	अक्रुक्षामहि

दिश्, मृश्, रिश्, रुश्, लिश्, विश्, स्पृश्, कृष्, त्विष्, द्विष्, श्लिष् धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाइये।

दुह् धातु -

अदोहि	अधुक्षाताम्	अधुक्षन्त
अधुक्षथाः	अधुक्षाथाम्	अधुक्षध्वम्
अदुग्धाः	-	अधुग्ध्वम्

अधुक्षि	अधुक्षावहि	अधुक्षामहि
–	अदुह्वहि	–

दिह् धातु के रूप इसी प्रकार बनाइये।

लिह् धातु –

अलेहि	अलिक्षाताम्	अलिक्षन्त
अलिक्षथा:	अलिक्षाथाम्	अलिक्षध्वम्
अलीढा:	–	अलीढ्ध्वम्
अलिक्षि	अलिक्षावहि	अलिक्षामहि
–	अलिह्वहि	–

गृहू, बृहू, तृहू, स्तृहू, गुहू ये वेट् धातु भी, शलन्त इगुपध हैं। जब ये अनिट् हों, तब इनसे क्स से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय लगाइये। सेट् होने पर, इनसे 'सिच्' से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय ही लगाइये।

गुह् धातु –

अगोहि	अघुक्षाताम्	अघुक्षन्त
अघुक्षथा:	अघुक्षाथाम्	अघुक्षध्वम्
अगूढा:	–	अघूढ्ध्वम्
अघुक्षि	अघुक्षावहि	अघुक्षामहि
–	अगुह्वहि	–

इन्हें छोड़कर शेष धातुओं से सिच् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय ही लगाये जाते हैं, यह जानिये। केवल प्रथमपुरुष एकवचन में 'चिण् = इ' प्रत्यय लगता है। ये प्रत्यय इस प्रकार बने –

भावकर्म में लुङ् लकार के इट् + सिच् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय

प्र. पु.	इ (चिण्)	इषाताम्	इषत
म. पु.	इष्ठा:	इषाथाम्	इढ्वम्
उ. पु.	इषि	इष्वहि	इष्महि

भावकर्म में लुङ् लकार के अनिट् सिच् से बने हुए आत्मनेपदी प्रत्यय

प्र. पु.	इ (चिण्)	साताम्	सत
म. पु.	स्था:	साथाम्	ध्वम्
उ. पु.	सि	स्वहि	स्महि

धातुओं से प्रत्यय लगाने पर, किस प्रकार से अङ्गकार्य करना है, इसके लिये आवश्यक है कि हम प्रत्यय की सही पहिचान इस प्रकार करें –

१. इनमें से चिण् प्रत्यय णित् है। इस चिण् प्रत्यय के परे होने पर वे सभी कार्य होते हैं, जो णित् प्रत्यय परे होने पर शास्त्र में कहे गये हैं।

२. शेष १६ प्रत्यय णित् नहीं हैं। इनके परे होने पर वे ही रूप बनते हैं, जो रूप लुङ् लकार कर्तृवाच्य आत्मनेपद में इन प्रत्ययों से बनते हैं। **इन्हें बनाने की विधि लुङ् लकार में २२० - २४६ पृष्ठ पर देखें।**

३. किन्तु अजन्त धातुओं तथा हन्, ग्रह्, दृश् धातुओं के बाद आने पर ये शेष १६ प्रत्यय भी चिण् न होते हुए भी चिण् जैसे हो जाते हैं। सूत्र है -

स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्म्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च - भाव तथा कर्म विषयक स्य, सिच्, सीयुट्, तास्, प्रत्यय परे रहते उपदेश में अजन्त धातुओं को तथा हन्, ग्रह्, दृश् धातुओं को, विकल्प से चिण् के समान कार्य होता है तथा स्य, सिच्, सीयुट्, तास्, प्रत्ययों को इट् का आगम भी होता है। ध्यान रहे कि इस 'इट्' के होने के बाद, इन प्रत्ययों को 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से होने वाला इट् नहीं होता।

अतः हम बहुत सावधानी से पहिचानें, कि कब प्रत्यय चिण् है, कब प्रत्यय चिण् जैसा है और कब प्रत्यय चिण् जैसा नहीं है। इसे अच्छी तरह बुद्धिस्थ करके ही भावकर्म में लुङ् लकार के रूप बनाना चाहिये।

अब हम धातुओं का वर्गीकरण करके भावकर्म में लुङ् लकार के रूप बनायें।

ध्यान रहे कि सेट् धातुओं से सेट् प्रत्यय लगाये जायें और अनिट् धातुओं से अनिट् प्रत्यय लगाये जायें।

आकारान्त धातु -

अदा + इ / यह 'इ' प्रत्यय चिण् है, अतः आतो युक् चिण्कृतोः सूत्र से युक् का आगम करके - अदा + युक् + इ = अदायि।

धातुओं को चिण्वत् कार्य होने पर इसी प्रकार -

अदायि	अदायिषाताम्	अदायिषत
अदायिष्ठाः	अदायिषाथाम्	अदायिढ्वम्
अदायिषि	अदायिष्वहि	अदायिष्महि

धातुओं को चिण्वत् कार्य न होने पर -

अदायि	अदिषाताम्	अदिषत
अदिथाः	अदिषाथाम्	अदिढ्वम्

अदिषि	अदिष्वहि	अदिष्महि

इकारान्त, ईकारान्त धातु -

अचि + इ / अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके - अचै + इ + त / एचोऽयवायावः सूत्र से आय् आदेश करके = अचायि।

धातुओं को चिण्वत् कार्य होने पर इसी प्रकार -

अचायि	अचायिषाताम्	अचायिषत
अचायिष्ठाः	अचायिषाथाम्	अचायिढ्वम्
अचायिषि	अचायिष्वहि	अचायिष्महि

धातुओं को चिण्वत् कार्य न होने पर -

अचायि	अचेषाताम्	अचेषत
अचेष्ठाः	अचेषाथाम्	अचेढ्वम्
अचेषि	अचेष्वहि	अचेष्महि

उकारान्त, ऊकारान्त धातु - अलू + इ / अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके - अलौ + इ / एचोऽयवायावः सूत्र से आव् आदेश करके = अलावि।

धातुओं को चिण्वत् कार्य होने पर इसी प्रकार -

अलावि	अलाविषाताम्	अलाविषत
अलाविष्ठाः	अलाविषाथाम्	अलाविढ्वम्
अलाविषि	अलाविष्वहि	अलाविष्महि

धातुओं को चिण्वत् कार्य न होने पर -

अच्यावि	अच्योषाताम्	अच्योषत
अच्योष्ठाः	अच्योषाथाम्	अच्योढ्वम्
अच्योषि	अच्योष्वहि	अच्योष्महि

इसके अपवाद -

उकारान्त कुटादि कु, गु, धु धातु।

इन धातुओं को चिण्वत् कार्य होने पर - अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि होकर, लू धातु के समान ही रूप बनते हैं। अकु + इ - अकावि।

अकावि	अकाविषाताम्	अकाविषत
अकाविष्ठाः	अकाविषाथाम्	अकाविढ्वम्
अकाविषि	अकाविष्वहि	अकाविष्महि

चिण्वत् कार्य न होने पर गु धु, कु धातुओं के रूप -

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्डित् - गाङ् धातु से तथा तुदादिगण के अन्तर्गत

जो कुट् से लेकर कुङ् तक ३५ धातुओं का कुटादिगण है, उस कुटादिगण में आने वाले धातुओं से परे आने वाला ञित् णित् से भिन्न प्रत्यय ङित्वत् मान लिया जाता है।

प्रत्यय के ङित्वत् होने के कारण 'क्ङिति च' सूत्र इनके इक् को गुणनिषेध करके - अकु + साताम् = अकुषाताम्। शेष प्रत्ययों में भी यही प्रक्रिया होगी। ये धातु अनिट् हैं। अतः इनसे अनिट् प्रत्यय लगाइये।

अकावि	अकुषाताम्	अकुषत
अकुथाः	अकुषाथाम्	अकुढ्वम्
अकुषि	अकुष्वहि	अकुष्महि

कुटादि णू, धू धातु धातुओं को चिण्वत् कार्य होने पर -

अनावि	अनाविषाताम्	अनाविषत
अनाविष्ठाः	अनाविषाथाम्	अनाविढ्वम्
अनाविषि	अनाविष्वहि	अनाविष्महि

कुटादि णू, धू धातु धातुओं को चिण्वत् कार्य न होने पर -

अनू + इ - अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके - अनौ + इ / एचोऽयवायावः सूत्र से आव् आदेश करके - अनाव् + इ = अनावि।

अनू + इषाताम् / गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् सूत्र से प्रत्यय के ङित्वत् होने के कारण 'क्ङिति च' सूत्र इनके इक् को गुणनिषेध करके, 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से 'ऊ' को 'उवङ्' आदेश करके - अनुव् + इषाताम् = अनुविषाताम्। शेष प्रत्ययों में भी यही प्रक्रिया होगी। पूरे रूप इस प्रकार बने-

अनावि	अनुविषाताम्	अनुविषत
अनुविष्ठाः	अनुविषाथाम्	अनुविढ्वम्
अनुविषि	अनुविष्वहि	अनुविष्महि

धू धातु के रूप भी इसी प्रकार बनाइये।

ऋकारान्त धातु - अकृ + इ / अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके - अकार् + इ = अकारि।

धातुओं को चिण्वत् कार्य होने पर इसी प्रकार -

अकारि	अकारिषाताम्	अकारिषत
अकारिष्ठाः	अकारिषाथाम्	अकारिढ्वम्
अकारिषि	अकारिष्वहि	अकारिष्महि

धातुओं को चिण्वत् कार्य न होने पर -

अकारि	अकृषाताम्	अकृषत
अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृढ्वम्
अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि

ॠकारान्त धातु - अतॄ + इ / अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके - अतार् + इ = अतारि।

धातुओं को चिण्वत् कार्य होने पर इसी प्रकार -

अतारि	अतारिषाताम्	अतारिषत
अतारिष्ठाः	अतारिषाथाम्	अतारिढ्वम्
अतारिषि	अतारिष्वहि	अतारिष्महि

धातुओं को चिण्वत् कार्य न होने पर -

अतारि	अतरिषाताम्	अतरिषत
अतरिष्ठाः	अतरिषाथाम्	अतरिढ्वम्
अतरिषि	अतरिष्वहि	अतरिष्महि

अदुपध धातु -

अपठ् + इ / अत उपधायाः सूत्र से उपधा के 'अ' को वृद्धि करके - अपाठ् + इ = अपाठि। अपठ् + इषताम् = अपठिषाताम्। ध्यान दें कि यहाँ चिण्वद्भाव न होने से 'अत उपधाया' सूत्र से उपधा को वृद्धि नहीं हुई है।

सेट् अदुपध् पठ् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अपाठि	अपठिषाताम्	अपठिषत
अपठिष्ठाः	अपठिषाथाम्	अपठिढ्वम्
अपठिषि	अपठिष्वहि	अपठिष्महि

अनिट् अदुपध् पच् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अपाचि	अपक्षाताम्	अपक्षत
अपक्थाः	अपक्षाथाम्	अपग्ध्वम्
अपक्षि	अपक्ष्वहि	अपक्ष्महि

हन्, ग्रह् धातु - ध्यान दें कि हन्, ग्रह् धातुओं से भावकर्मवाची सिच् प्रत्यय परे होने पर, धातु को चिण्वद्कार्य होते हैं। अतः इनके रूप इस प्रकार बनाइये -

अहन् + इ / 'हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु' सूत्र से हन् धातु के 'ह' को कुत्व करके अघन् + इ / 'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा के 'अ' को वृद्धि करके

अघन् + इ = अघानि। शेष आठ प्रत्ययों में भी यही प्रक्रिया होगी।

हन् धातु को चिण्वत् कार्य होने पर इसी प्रकार -

अघानि	अघानिषाताम्	अघानिषत
अघानिष्ठाः	अघानिषाथाम्	अघानिढ्वम्
अघानिषि	अघानिष्वहि	अघानिष्महि

हन् धातु को चिण्वत् कार्य न होने पर -

अघानि	अहसाताम्	अहसत
अहसथाः	अहसाथाम्	अहध्वम्
अहसि	अहस्वहि	अहस्महि

ग्रह् धातु को चिण्वत् कार्य होने पर -

अग्राहि	अग्राहिषाताम्	अग्राहिषत
अग्राहिष्ठाः	अग्राहिषाथाम्	अग्राहिढ्वम्
अग्राहिषि	अग्राहिष्वहि	अग्राहिष्महि

ग्रह् धातु को चिण्वत् कार्य न होने पर -

अग्राहि	अग्रहीषाताम्	अग्रहीषत
अग्रहीष्ठाः	अग्रहीषाथाम्	अग्रहीढ्वम्
अग्रहीषि	अग्रहीष्वहि	अग्रहीष्महि

अत उपधायाः से होने वाली वृद्धि के अपवाद -

नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः / अनाचमिकमिवमीनाम् इति वक्तव्यम् - चम् कम् वम् इन सेट् मकारान्त धातुओं को छोड़कर जो शेष सेट् मकारान्त धातु बचे, उन मकारान्त धातुओं को अत उपधायाः सूत्र से प्राप्त होने वाली वृद्धि नहीं होती है। इसे इस प्रकार समझिये -

गम्, रम्, नम्, यम् ये चार मकारान्त धातु अनिट् हैं। अनिट् धातु को ही अनुदात्तोपदेश कहते हैं।

इन चार के अलावा जितने भी मकारान्त धातु हैं जैसे शम् दम् आदि वे सारे के सारे मकारान्त धातु सेट् हैं। सेट् को उदात्तोपदेश कहते हैं। अब इनमें चिण् प्रत्यय इस प्रकार लगायें -

१. जो मकारान्त अनिट् धातु हैं उन्हें अत उपधायाः से प्राप्त होने वाली वृद्धि होती है। यथा - अरम् + इ / अत उपधायाः से वृद्धि होकर - अरामि।

इसी प्रकार - यम् से - अयामि / नम् से अनामि / गम् से अगामि बनाइये।

२. जो सेट् मकारान्त धातु हैं उनमें से चम् कम् वम् धातुओं को अत उपधाया: सूत्र से प्राप्त होने वाली वृद्धि होती है। यथा - आचम् + इ / अत उपधाया: सूत्र से वृद्धि होकर - आचामि।

इसी प्रकार कम् + इ - अकामि / वम् + इ - अवामि /

३. गम् रम् नम् यम् इन चार अनिट् मकारान्त धातुओं को तथा चम् कम् वम् इन तीन सेट् मकारान्त धातुओं को, इस प्रकार कुल सात मकारान्त धातुओं को छोड़कर, जो शेष सेट् मकारान्त धातु बचे, उन मकारान्त धातुओं को अत उपधाया: सूत्र से प्राप्त होने वाली वृद्धि नहीं होती है। उस वृद्धि का इस सूत्र और वार्तिक से निषेध हो जाता है। यथा -

शम् + इ / वृद्धि निषेध होकर अशमि। इसी प्रकार - तम् + इ - अतमि / दम् + इ - अदमि, आदि।

४. जन्, वध् धातु - जनिवध्योश्च - जन्, वध् धातुओं को अत उपधाया: सूत्र से प्राप्त होने वाली वृद्धि नहीं होती है। जन् - अजनि / वध् - अवधि।

५. रध्, जभ् धातु - रधिजभोरचि - रध्, जभ् धातुओं को नुम् का आगम होता है, अजादि प्रत्यय परे होने पर। अरध् + इ - अरन्ध् + इ = अरन्धि। शेष रूप भी इसी प्रकार बनाइये। इसी प्रकार जभ् से अजम्भि आदि।

६. रभ् धातु - रभेरशब्लिटो: - रभ् धातु को नुम् का आगम होता है, शप्, लिट् से भिन्न अजादि प्रत्यय परे होने पर। अरभ् + इ - अरम्भ् + इ = अरम्भि।

७. लभ् धातु - विभाषा चिण्णमुलो: - चिण्, णमुल् प्रत्यय परे होने पर, लभ् धातु को विकल्प से नुम् का आगम होता है। नुम् का आगम होने पर-

अलभ् + इ - अलम्भ् + इ = अलम्भि।

नुम् का आगम न होने पर - अलभ् + इ - अत उपधाया: सूत्र से उपधा के 'अ' को वृद्धि करके - अलाभ् + इ = अलाभि।

८. णिजन्त मित् धातु -

मित् धातुओं को इसी खण्ड के प्रथम पाठ में पृष्ठ ३९९ से ४०२ में देखिये।

चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम् - यदि मित् धातुओं से परे णिच् हो, और उस णिच् से परे चिण् अथवा णमुल् हों, तो इन मित् धातुओं की उपधा के स्वर को, अथवा उपधा में न रहने वाले स्वर को विकल्प से ह्रस्व तथा दीर्घ होते हैं।

सिच् प्रत्यय को चिण्वद्भाव करके -

शम् + णिच् - शमि / अशमि + इ / णेरनिटि सूत्र से णिच् का लोप करके - अशम् + इ / 'चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम्' सूत्र से विकल्प से दीर्घ करके - अशामि / अशमि।

विशेष - ध्यान दें कि णिच् प्रत्यय न लगने पर शम् धातु से 'अशमि' बनता है। णिच् प्रत्यय लगने पर शम् धातु से अशमि, अशामि प्रयोग बनते हैं।

इदुपध धातु - अरिच् + इ / पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के 'इ' को गुण करके - अरेच् + इ - अरेचि।

अनिट् इदुपध् रिच् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अरेचि	अरिक्षाताम्	अरिक्षत
अरिक्था:	अरिक्षाथाम्	अरिग्ध्वम्
अरिक्षि	अरिक्ष्वहि	अरिक्ष्महि

सेट् इदुपध् लिख् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अलेखि	अलेखिषाताम्	अलेखिषत
अलेखिष्ठा:	अलेखिषाथाम्	अलेखिढ्वम्
अलेखिषि	अलेखिष्वहि	अलेखिष्महि

उदुपध धातु - अतुद् +इ / पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के 'इ' को गुण करके - अतोद् + इ - अतोदि।

अनिट् उदुपध् लिख् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अतोदि	अतुत्साताम्	अतुत्सत
अतुत्था:	अतुत्साथाम्	अतुद्ध्वम्
अतुत्सि	अतुत्स्वहि	अतुत्स्महि

सेट् उदुपध् मुद् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

अमोदि	अमोदिषाताम्	अमोदिषत
अमोदिष्ठा:	अमोदिषाथाम्	अमोदिढ्वम्
अमोदिषि	अमोदिष्वहि	अमोदिष्महि

इसके अपवाद - सेट् उदुपध कुटादि धातु

कुट्	पुट्	कुच्	गुज्	गुड्	छुर्	स्फुट्	मुट्
त्रुट्	तुट्	चुट्	छुट्	जुट्	लुठ्	कृड्	कुड्
पुड्	घुट्	तुड्	थुड्	स्थुड्	स्फुर्	स्फुल्	स्फुड्
चुड्	व्रुड्	क्रुड्	मृड्	गुर्			

अकुट् + इ / पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के 'इ' को गुण करके - अकोट् + इ - अकोटि।

शेष प्रत्यय परे होने पर क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध कीजिये - अकुट् + इषाताम् = अकुटिषाताम् आदि।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

अकोटि	अकुटिषाताम्	अकुटिषत
अकुटिष्ठाः	अकुटिषाथाम्	अकुटिढ्वम्
अकुटिषि	अकुटिष्वहि	अकुटिष्महि

कुट् से गुर् तक, उदुपध हलन्त धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाइये।

ऋदुपध धातु - अवृष् + चिण् + त / पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के 'इ' को गुण करके - अवर्ष् + चिण् + त / चिणो लुक् सूत्र से 'त' का लोप करके - अवर्षि। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अवर्षि	अवर्षिषाताम्	अवर्षिषत
अवर्षिष्ठाः	अवर्षिषाथाम्	अवर्षिढ्वम्
अवर्षिषि	अवर्षिष्वहि	अवर्षिष्महि

इसके अपवाद - दृश् धातु - ध्यान दें कि दृश् धातु ऐसा है, जिससे भावकर्मवाची सिच् प्रत्यय परे होने पर, धातु को चिण्वद्कार्य होते है। अतः इनके रूप इस प्रकार बनाइये -

लुङ् लकार के सारे प्रत्यय 'चिण्वत्' होने पर दृश् धातु के रूप -

अदर्शि	अदर्शिषाताम्	अदर्शिषत
अदर्शिष्ठाः	अदर्शिषाथाम्	अदर्शिढ्वम्
अदर्शिषि	अदर्शिष्वहि	अदर्शिष्महि

लुङ् लकार के सारे प्रत्यय 'चिण्वत्' न होने पर दृश् धातु के रूप -

अदर्शि	अदृक्षाताम्	अदृक्षत
अदृष्ठाः	अदृक्षाथाम्	अदृड्ढ्वम्
अदृक्षि	अदृक्ष्वहि	अदृक्ष्महि

भञ्ज् धातु - भञ्जेश्च चिणि - भञ्ज् धातु के 'न्' का विकल्प से लोप होता है, चिण् परे होने पर।

नलोप होने पर - अभञ्ज् + चिण् - अभज् + इ / अत उपधायाः से उपधा वृद्धि होकर = अभाजि /

नलोप न होने पर - अभञ्ज् + चिण् - अभञ्ज् + इ = अभञ्जि।

अभञ्जि, अभाजि	अभङ्क्षाताम्	अभङ्क्षत
अभङ्क्थाः	अभङ्क्षाथाम्	अभङ्ग्ध्वम्
अभङ्क्षि	अभङ्क्ष्वहि	भङ्क्ष्महि

शेष धातुओं के रूप वैसे ही बनाइये, जैसे कर्तृवाच्य में बनाये हैं। ध्यान रहे कि प्रथमपुरुष के एकवचन में चिण् (इ) प्रत्यय ही लगेगा।

चुरादिगण के तथा णिजन्त धातुओं के भाववाच्य, कर्मवाच्य में लुङ् लकार के रूप बनाने की विधि

हम जानते हैं कि चुरादिगण के धातुओं में णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद ही उनमें अन्य कोई भी प्रत्यय लगता है।

चुर् + णिच् - चोरि / अचोरि + चिण् + त / चिणो लुक् से 'त' का लोप करके - अचोरि + इ / 'णेरनिटि' सूत्र से 'णिच्' का लोप करके - अचोर् + इ = अचोरि। इसी प्रकार अचोरि + इषाताम् - अचोरिषाताम् आदि।

अचोरि	अचोरिषाताम्	अचोरिषत
अचोरिष्ठाः	अचोरिषाथाम्	अचोरिढ्वम्
अचोरिषि	अचोरिष्वहि	अचोरिष्महि

भाववाच्य, कर्मवाच्य में लिट् लकार के रूप बनाने की विधि

लिट् लकार में कर्तृवाच्य में जिस धातु का जैसा रूप बनता है, ठीक वही का वही रूप, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में भी बनेगा। केवल भावकर्मणोः सूत्र से प्रत्यय आत्मनेपदी ही लगाना पड़ेंगे। जैसे - भू - बभूवे आदि।



द्वादश पाठ

कर्मकर्तृप्रक्रिया - समस्त धातुओं के कर्मकर्तृ रूप बनाने की विधि

कभी कभी क्रिया इतनी सरलता से हो जाती है कि लगता है, कर्ता ने क्रिया की ही नहीं, वह तो अपने आप ही हो गई। जैसे - देवदत्त जिस लकड़ी को काट रहा है, वह इतनी सूखी है, कि लगता है, वह अपने आप ही कटी जा रही है। ऐसे स्थलों में हम 'देवदत्तः काष्ठं भिनत्ति - देवदत्त लकड़ी काटता है' ऐसा न कहकर, 'भिद्यते काष्ठं स्वयमेव - लकड़ी स्वयं ही कटी जा रही है' ऐसा कहने लगते हैं। पहिले वाक्य में 'काष्ठ' कर्म था, जो कि दूसरे वाक्य में कर्ता बन गया है, किन्तु कर्ता बन जाने के बाद भी, उसे कर्म जैसा ही माना जाता है, इसे ही कहते हैं कि कर्ता को कर्मवद्भाव हो गया।

पहिले वाक्य में 'भेदन क्रिया' अर्थात् कटने की क्रिया काष्ठ के अन्दर हो रही है। दूसरे वाक्य में भी 'भेदन क्रिया' काष्ठ के अन्दर ही हो रही है। अतः दोनों वाक्यों में क्रिया की स्थिति समान है। किन्तु पहिले वाक्य में जो 'काष्ठ' कर्म था वही 'काष्ठ' दूसरे वाक्य में कर्ता बन गया है। अतः जो क्रिया पहिले कर्म में हो रही थी, वही क्रिया अब कर्ता में हो रही है। अतः ये दोनों कर्ता और कर्म तुल्य क्रिया वाले होने से 'तुल्यक्रिय' हैं।

कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः - जहाँ कर्म के कर्ता बन जाने के बाद भी क्रिया वैसी ही लक्षित हो, जैसी कर्मावस्था में थी, उस कर्म के साथ तुल्य क्रिया वाले कर्ता को कर्मवद्भाव हो जाता है अर्थात् उसे कर्म जैसा ही मान लिया जाता है।

तपस्तपःकर्मकस्यैव - तप सन्तापे धातु का कर्म यदि 'तप' हो, तो उसके कर्ता को भी कर्मवद् भाव हो जाता है।

कर्ता को कर्मवद्भाव होने पर, उसे लकार सम्बन्धी वे चारों कार्य होने लगते हैं, जो कार्य अभी कर्मवाच्य में कर्म को कहे गये हैं। ये चार कार्य इस प्रकार हैं -

१. सार्वधातुके यक् सूत्र से सार्वधातुक लकारों के प्रत्यय परे होने पर,

धातुओं से यक् लगाना।

२. भावकर्मणो: सूत्र से केवल आत्मनेपदी प्रत्यय लगना। यथा - भिद्यते काष्ठं स्वयमेव। यहाँ भिद्यते में यक् लगा है और आत्मनेपद हुआ है।

३. चिण्भावकर्मणो: सूत्र से लुङ् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में 'चिण्' प्रत्यय लगना। अभेदि काष्ठं स्वयमेव।

४. स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्म्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च सूत्र से स्य, तास्, सीयुट् तथा सिच् प्रत्ययों को विकल्प से चिण्वद् मानना।

यथा - कारिष्यते कट: स्वयमेव।

ये चारों कार्य भावकर्म प्रक्रिया में विस्तार से बतला दिये गये हैं। तात्पर्य यह है कि भावकर्म प्रक्रिया तथा कर्मकर्तृ प्रक्रिया बिल्कुल एक समान ही हैं। दोनों में प्रक्रिया का कोई भेद नहीं है। अत: जिस धातु का जैसा रूप हमने अभी भावकर्म प्रक्रिया में बनाया है, यहाँ भी ठीक वैसा ही बनाना है।

केवल कुछ कार्यों में जो अन्तर है, उन्हें बतला रहे हैं -

हम जानते हैं कि भावकर्मवाची प्रत्यय परे होने पर, लुङ् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में आत्मनेपद का 'त' प्रत्यय परे होने पर, 'चिण्भावकर्मणो:' सूत्र से 'चिण्' प्रत्यय ही लगता है। किन्तु -

अच: कर्मकर्तरि - जब कर्म कर्ता बन गया हो और उसे कर्मवद्भाव हो गया हो, तब अजन्त धातुओं से, लुङ् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में 'चिण्' प्रत्यय विकल्प से लगता है। यथा - अकारि कट: स्वयमेव / अकृत कट: स्वयमेव।

दुहश्च - कर्मकर्ता अर्थ में दुह् धातु से लुङ् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में आत्मनेपद का 'त' प्रत्यय परे होने पर, 'चिण्' प्रत्यय विकल्प से लगता है।

अदोहि गौ: स्वयमेव / अदुग्ध गौ: स्वयमेव।

न रुध: - कर्मकर्ता अर्थ में रुध् धातु से लुङ् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में आत्मनेपद का 'त' प्रत्यय परे होने पर, 'चिण्' प्रत्यय नहीं लगता है। अन्वारुद्ध गौ: स्वयमेव।

तपोऽनुतापे च - कर्मकर्ता अर्थ में तप् धातु से लुङ् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में आत्मनेपद का 'त' प्रत्यय परे होने पर, 'चिण्' प्रत्यय नहीं लगता है। अन्ववातप्त पापेन कर्मणा। अतप्त तपस्तापस:।

न दुहस्नुनमां यक्चिणौ - कर्मकर्ता अर्थ में स्नु, नम् धातुओं से यक् और चिण् ये दोनों नहीं होते। जैसे -

चिण् न होना - प्रास्नोष्ट शोणितं स्वयमेव। अनंस्त दण्ड: स्वयमेव।

यक् न होना - नमते दण्डः स्वयमेव। प्रस्नुते शोणितं स्वयमेव। दुग्धे गौः स्वयमेव।

कुषिरजोः प्राचां श्यन्परस्मैपदं च - कुष् तथा रञ्ज् इन धातुओं से कर्ता को कर्मवद् भाव में श्यन् प्रत्यय तथा परस्मैपद होता है, प्राचीन आचार्यों के मत में। जैसे - कुष्यति पादः स्वयमेव - पैर स्वयं खिंचा जा रहा है। रज्यति वस्त्रं स्वयमेव - वस्त्र स्वयं रँगा जा रहा है।



त्रयोदश पाठ

समस्त धातुओं के यङन्त रूप बनाने की सरलतम विधि

धातुओं में यङ् प्रत्ययों को लगाने में महान् प्रपञ्च है, अतः इस कार्य को हमें खण्ड खण्ड में ही सीखना चाहिये। पूरा धातुरूप एक साथ बना लेने का प्रयास नहीं करना चाहिये। ये खण्ड इस प्रकार हैं -

१. यङ् प्रत्यय सभी धातुओं से नहीं लगता है। अतः किन किन धातुओं से यङ् प्रत्यय किस किस अर्थ में लगायें, यह विचार करना।

२. यङ् प्रत्यय परे होने पर, होने वाले अङ्गकार्य तथा सम्प्रसारण आदि कार्य करके, यङन्त धातु को द्वित्व करना।

३. द्वित्व करने के बाद सामान्य अभ्यासकार्य करना।

४. सामान्य अभ्यासकार्य करने के बाद, यङ् प्रत्यय परे होने पर होने वाले, विशेष अभ्यासकार्य करके, यङन्त धातु तैयार करना और सनाद्यन्ता धातवः सूत्र से उस यङन्त धातु की धातु संज्ञा करना, उसके बाद उसके धातुरूप बनाना।

अब इनका क्रमशः विचार करें -

१. यङ् प्रत्यय को किन किन धातुओं से लगायें ?

धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् - क्रियासमभिहार अर्थ में हलादि एकाच् धातुओं से यङ् प्रत्यय लगाया जाता है।

सूचिसूत्रिमूत्र्यटत्यर्त्यशूर्णोतीनां यङ् वक्तव्यम् (वा.) - क्रियासमभिहार अर्थ में अनेकाच् धातुओं में से सूचि, सूत्रि, मूत्रि, तथा अजादि धातुओं में से अट्, ऋ, अश्, ऊर्णु, इन धातुओं से भी यङ् प्रत्यय लगाया जाता है।

'पौनःपुन्यं भृशार्थश्च क्रियासमभिहारः' - किसी भी क्रिया के बार बार होने को या बहुत ज्यादा होने को क्रियासमभिहार कहते हैं। जैसे - बहुत अधिक पढ़ता है, या बार बार पढ़ता है, यह कहना हो, तो पठ् धातु से यङ् लगाकर, पठ् + यङ् = पापठ्य, ऐसा नया धातु बना लिया जाता है। यङ् प्रत्यय लगकर जो

पठ् + यङ् = पापठ्य, धातु बना, इसका अर्थ अब 'पढ़ना' नहीं है। इसका अर्थ अब 'बार बार पढ़ना' या 'बहुत अधिक पढ़ना' है।

नित्यं कौटिल्ये गतौ - गत्यर्थक धातुओं से यङ् प्रत्यय क्रियासमभिहार अर्थ में न होकर, कौटिल्य अर्थ में ही होता है - कुटिलं व्रजति - वाव्रज्यते, कुटिलं गच्छति - जंगम्यते आदि।

यङ् प्रत्यय लगकर जो गम् + यङ् = 'जङ्गम्य' धातु बना है, इसका अर्थ अब 'जाना' नहीं है। इसका अर्थ अब कुटिल जाना या टेढ़ा जाना है।

लुपसदचरजपजभदहदशगॄभ्यो भावगर्हायामेव - लुप्, सद्, चर्, जप्, जभ्, दह्, दश्, गॄ, इन धातुओं से यङ् प्रत्यय क्रिया समभिहार अर्थ में न होकर, क्रिया की गर्हा अर्थ में होता है। गर्हितं लुम्पति - लोलुप्यते, गर्हितं चरति - चञ्चूर्यते आदि।

यङ् प्रत्यय लगाकर जो चर् + यङ् = 'चञ्चूर्य' धातु बना है, इसका अर्थ अब 'चलना' नहीं है। इसका अर्थ अब 'निन्दित प्रकार से चलना' है।

इन सूत्रों और वार्तिकों का निष्कृष्ट अर्थ इस प्रकार है -

१. अजादि धातुओं में से यङ् प्रत्यय, केवल अट्, ऋट्, अश्, ऊर्णु इन चार धातुओं से ही लगता है। शेष अजादि धातुओं से यह यङ् प्रत्यय कदापि नहीं लगता।

हलादि धातु दो प्रकार के हैं - अनेकाच् हलादि धातु और एकाच् हलादि धातु।

२. अनेकाच् हलादि धातुओं में से यङ् प्रत्यय केवल सूचि, सूत्रि, मूत्रि इन तीन धातुओं से ही लग सकता है। अन्य से नहीं।

जब इन सूचि, सूत्रि, मूत्रि धातुओं से यङ् प्रत्यय लगता है, तब यङ् प्रत्यय **परे** होने पर **'णेरनिटि'** सूत्र से इन धातुओं के णिच् (इ) का लोप हो जाता है। जैसे - सूचि + यङ् - सूच् / सूत्रि + यङ् - सूत्र् / मूत्रि + यङ् - मूत्र्।

ध्यान रहे कि इन तीन धातुओं के अलावा, दीधी, वेवी, दरिद्रा, चकासृ आदि धातु भी अनेकाच् हैं, किन्तु इनसे यह यङ् प्रत्यय नहीं लगता।

चुरादि गण के धातुओं से चूँकि स्वार्थ में णिच् प्रत्यय लगा रहता है, अतः वे सारे धातु भी णिच् प्रत्यय लगने से अनेकाच् हो जाते हैं, परन्तु चुरादि गण के धातुओं में से ऊपर कहे गये सूचि, सूत्रि, मूत्रि इन तीन धातुओं को छोड़कर चुरादि गण के किसी भी धातु से, यङ् प्रत्यय नहीं लगता।

३. पठ्, वद्, मुद्, बुध् आदि जितने भी एकाच् हलादि धातु हैं, उनसे यङ् प्रत्यय लग सकता है।

हमने निर्णय किया कि यङ् प्रत्यय किन किन धातुओं से लगाया जाता है।

आर्धधातुकं शेषः - तिङ् शित् प्रत्ययों से भिन्न प्रत्ययों की आर्धधातुक संज्ञा होती है। अतः यह यङ् प्रत्यय, तिङ् शित् प्रत्ययों से भिन्न होने के कारण, आर्धधातुक प्रत्यय है।

२. यङ् प्रत्यय परे होने पर, होने वाले अङ्गकार्य तथा सम्प्रसारण आदि कार्य करके, यङन्त धातु को द्वित्व करना

यह कार्य हम दो हिस्सों में करें -

१. हलादि धातुओं के यङन्त रूप बनाना।

२. अट्, ऋ, अश् और ऊर्णु इन अजादि धातुओं के यङन्त रूप बनाना।

धातुओं में यङ् प्रत्यय लगाकर, यङ् प्रत्यय में हलन्त्यम् सूत्र से ङ् की इत् संज्ञा करके, तस्य लोपः से ङ् का लोप करके 'य' बचाइये।

हलादि धातुओं के यङन्त रूप बनाना

हलादि धातुओं का इस प्रकार वर्गीकरण करें -

आकारान्त तथा एजन्त धातु, इकारान्त धातु, ईकारान्त धातु, उकारान्त धातु, ऊकारान्त धातु, ऋकारान्त धातु तथा ॠकारान्त धातु।

सम्प्रसारणी धातु, अनिदित् धातु, अदुपध धातु, तथा इदुपध धातु, उदुपध धातु, ऋदुपध धातु तथा शेष धातु।

आकारान्त तथा एजन्त धातु + यङ् प्रत्यय

आदेच उपदेशेऽशिति - अशित् प्रत्यय परे होने पर सारे एजन्त धातुओं को 'आ' अन्तादेश होता है। जैसे - ग्लै - ग्ला / म्लै - म्ला / ध्यै - ध्या / शो - शा / सो - सा / वे - वा / छो - छा / धे - धा आदि।

यङ् भी अशित् प्रत्यय है। अतः यङ् परे होने पर, सारे एजन्त धातु आकारान्त हो जाते हैं। अतः आकारान्त तथा एजन्त धातुओं का एक साथ विचार कर रहे हैं।

'ङ्' की इत् संज्ञा होने से यह ङित् प्रत्यय है, यह ध्यान में रखकर ही हम आगे के कार्य करें।

घुमास्थागापाजहातिसां हलि - आकारान्त धातुओं में से घुसंज्ञक धातु अर्थात् दो - दा, देङ् - दा, डुदाञ् - दा, दाण् - दा, धेट् - धा, डुधाञ् - धा, इन छह दारूप तथा धारूप आकारान्त धातुओं के 'आ' को, तथा मा, स्था, गा, पा, हा, षो (सा), इन छह आकारान्त धातुओं के 'आ' को, अर्थात् कुल १२ धातुओं के 'आ' को 'ई' होता है, हलादि कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर। यथा -

दा + यङ् - दी + यङ् आदि।

इस सूत्र से 'आ' को 'ई' बन जाने के बाद ही अब इसे द्वित्व कीजिये। द्वित्व करने वाला सूत्र है -

सन्यङोः - जो सन्नन्त तथा यङन्त धातु हैं, उन धातुओं में से हलादि धातुओं के प्रथम अवयव एकाच् को द्वित्व होता है तथा अजादि धातुओं के द्वितीय अवयव एकाच् को द्वित्व होता है।

द्वित्व होने का अर्थ है, एक धातु को दो हो जाना।

अत्यावश्यक -

ध्यान रहे कि धातुओं को यङ् प्रत्यय परे होने पर, जो भी अङ्गकार्य या सम्प्रसारण आदि कार्य प्राप्त होते हैं, उन्हें कर लेने के बाद ही धातुओं को द्वित्व करना चाहिये।

अतः 'घुमास्थागापाजहातिसां हलि' सूत्र से इन दा, धा, मा, स्था, गा, पा, हा, षो (सा), धातुओं के 'आ' को 'ई' बनाकर ही, इन्हें 'सन्यङोः' सूत्र से इस प्रकार द्वित्व कीजिये -

दा	+	यङ्	-	दी	+	यङ्	-	दी दी	+	यङ्
धा	+	यङ्	-	धी	+	यङ्	-	धी धी	+	यङ्
मा	+	यङ्	-	मी	+	यङ्	-	मी मी	+	यङ्
गा	+	यङ्	-	गी	+	यङ्	-	गी गी	+	यङ्
पा	+	यङ्	-	पी	+	यङ्	-	पी पी	+	यङ्
हा	+	यङ्	-	ही	+	यङ्	-	ही ही	+	यङ्
स्था	+	यङ्	-	स्थी	+	यङ्	-	स्थी स्थी	+	यङ्
सा	+	यङ्	-	सी	+	यङ्	-	सी सी	+	यङ्

ई घ्राध्मोः - घ्रा तथा ध्मा धातु के 'आ' को भी 'ई' होता है यङ् प्रत्यय परे रहने पर। इन धातुओं के 'आ' को 'ई' बनाकर, इन्हें 'सन्यङोः' सूत्र से इस प्रकार द्वित्व कीजिये -

घ्रा + यङ् - घ्री + यङ् - घ्री घ्री + यङ्
ध्मा + यङ् - ध्मी + यङ् - ध्मी ध्मी + यङ्

शेष आकारान्त तथा एजन्त धातु - इन १२ + २ = १४ धातुओं के अलावा अब जो भी आकारान्त तथा एजन्त से आकारान्त बने हुए धातु बचे, उन्हें बिना कुछ किये 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व कर दीजिये -

ला + यङ् - ला + यङ् - ला ला + यङ्
वा + यङ् - वा + यङ् - वा वा + यङ्
ध्यै + यङ् - ध्या + यङ् - ध्या ध्या + यङ्
ग्लै + यङ् - ग्ला + यङ् - ग्ला ग्ला + यङ्
छो + यङ् - छा + यङ् - छा छा + यङ्
म्लै + यङ् - म्ला + यङ् - म्ला म्ला + यङ्

इकारान्त, ईकारान्त धातु + यङ् प्रत्यय

अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः - अजन्त धातुओं को दीर्घ होता है कृत् तथा सार्वधातुक से भिन्न, यकारादि प्रत्यय परे होने पर।

'इ' को दीर्घ करके ही 'सन्यङोः' सूत्र से इन्हें द्वित्व कीजिये -

जि + यङ् - जी + यङ् - जी जी + यङ्

'नी' में तो दीर्घ 'ई' ही है। अतः इसे दीर्घ होकर भी 'नी' का 'नी' ही रहेगा। इन धातुओं को 'सन्यङोः' सूत्र से इस प्रकार द्वित्व कीजिये -

नी + यङ् - नी नी + यङ्

इसके अपवाद - शीङ् धातु - अयङ् यि क्ङिति - शीङ् धातु को शय् आदेश होता है, कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर।

शीङ् को शय् बनाकर ही इसे 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व कीजिये -

शी + यङ् - शय् + यङ् - शय् शय् + यङ्

उकारान्त, ऊकारान्त धातु + यङ् प्रत्यय

अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः - अजन्त धातुओं को दीर्घ होता है, कृत् तथा सार्वधातुक से भिन्न, यकारादि प्रत्यय परे होने पर।

'उ' को दीर्घ करके ही 'सन्यङोः' सूत्र से इन्हें द्वित्व कीजिये -

हु + यङ् - हू + यङ् - हू हू + यङ्

'भू' में तो दीर्घ 'ऊ' ही है। अतः इसे इस सूत्र से दीर्घ होकर 'भू' का 'भू' ही रहेगा। इन धातुओं को 'सन्यङोः' सूत्र से इस प्रकार द्वित्व कीजिये -

भू + यङ् - भू भू + यङ्

इसके अपवाद - ब्रू धातु -

ब्रुवो वचिः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ब्रू धातु को वच् आदेश होता है। यङ् भी आर्धधातुक प्रत्यय है, अतः इसके परे होने पर ब्रू धातु को 'वच्' आदेश होगा। उसके बाद 'सन्यङोः' सूत्र द्वित्व करके - वच् वच् + यङ् बनाइये।

ऋकारान्त धातु + यङ् प्रत्यय

ऋकारान्त धातु - रीङ् ऋतः - कृद्भिन्न तथा सार्वधातुक भिन्न, यकारादि प्रत्यय परे होने पर 'ऋ' को रीङ् (री) आदेश होता है।

'ऋ' को रीङ् (री) आदेश करके ही 'सन्यङोः' सूत्र से इन्हें द्वित्व कीजिये-

कृ	+	यङ्	-	क्री	+	यङ्	-	क्री क्री	+	यङ्
भृ	+	यङ्	-	भ्री	+	यङ्	-	भ्री भ्री	+	यङ्
वृ	+	यङ्	-	व्री	+	यङ्	-	व्री व्री	+	यङ्
हृ	+	यङ्	-	ह्री	+	यङ्	-	ह्री ह्री	+	यङ्
धृ	+	यङ्	-	ध्री	+	यङ्	-	ध्री ध्री	+	यङ्
घृ	+	यङ्	-	घ्री	+	यङ्	-	घ्री घ्री	+	यङ्
मृ	+	यङ्	-	म्री	+	यङ्	-	म्री म्री	+	यङ्
दृ	+	यङ्	-	द्री	+	यङ्	-	द्री द्री	+	यङ्

इसके अपवाद -

यङि च - जब ऋकारान्त धातु के आदि में संयोग हो (दो या दो से अधिक हल् एक साथ हों) जैसे - स्मृ, ध्वृ, ह्वृ आदि में, तब उन ऋकारान्त धातुओं को तथा ऋ धातु को 'रीङ्' न होकर 'अर्' यह गुण हो जाता है।

'ऋ' को अर् गुण करके ही इन धातुओं को 'सन्यङोः' सूत्र से इस प्रकार द्वित्व कीजिये -

स्मृ	+	यङ्	-	स्मर्	+	यङ्	-	स्मर् स्मर्	+	यङ्
ध्वृ	+	यङ्	-	ध्वर्	+	यङ्	-	ध्वर् ध्वर्	+	यङ्
ह्वृ	+	यङ्	-	ह्वर्	+	यङ्	-	ह्वर् ह्वर्	+	यङ्

ॠकारान्त धातु + यङ् प्रत्यय

ॠत इद् धातोः / उरण् रपरः - कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले दीर्घ 'ॠ' को 'इर्' आदेश होता है।

तॄ + यङ् / तिर् + यङ्।

हलि च - जिन धातुओं के अन्त में र् अथवा व् हैं, उन धातुओं की उपधा के इक् को दीर्घ होता है, हल् परे होने पर।

अब ॠत इद् धातोः सूत्र से, उरण् रपरः की सहायता से, धातु के अन्तिम 'ॠ' को 'इर्' बनायें और हलि च सूत्र से उनके 'इक्' को दीर्घ कर दें।

तिर् + यङ् = तीर् + यङ्। इसके बाद ही इन ॠकारान्त धातुओं को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व कीजिये -

तॄ + यङ् - तिर् + यङ् - तीर् + यङ् - तीर् तीर् + यङ्
दॄ + यङ् - दिर् + यङ् - दीर् + यङ् - दीर् दीर् + यङ्
शॄ + यङ् - शिर् + यङ् - शीर् + यङ् - शीर् शीर् + यङ्
जॄ + यङ् - जिर् + यङ् - जीर् + यङ् - जीर् जीर् + यङ्

इसके अपवाद - गॄ धातु

ग्रो यङि - गॄ धातु के र् को ल् हो जाता है यङ् परे होने पर।

गॄ + यङ्, ॠत इद् धातोः से इर् होकर गिर् + य / ग्रो यङि से र् को ल् होकर गिल् + यङ् / 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व करके - गिल् गिल् + यङ्।

ध्यान रहे कि जब 'र्' को ग्रो यङि सूत्र से 'ल्' हो जाता है, तब 'हलि च' सूत्र से उपधा को दीर्घ नहीं हो पाता, क्योंकि हलि च सूत्र रेफान्त तथा वकारान्त धातुओं की उपधा को ही दीर्घ करता है। यह धातु अब रेफान्त न होकर, लकारान्त है।

ओष्ठ्यवर्णपूर्वक ॠकारान्त धातु -

उदोष्ठ्यपूर्वस्य / उरण् रपरः / हलि च - यदि दीर्घ ॠ के पूर्व में आने वाला वर्ण ओष्ठ्य हो अर्थात् पवर्ग या वकार हो, तो कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले दीर्घ 'ॠ' को 'उदोष्ठ्यपूर्वस्य' सूत्र से 'उ' आदेश होता है, 'इ' नहीं।

यह 'उ' 'उरण् रपरः' सूत्र से रपर होकर 'उर्' हो जाता है। इसके बाद 'हलि च' सूत्र से 'उ' को दीर्घ होकर 'ऊर्' हो जाता है।

अब इन धातुओं को 'सन्यङोः' सूत्र से इस प्रकार द्वित्व कीजिये -

पॄ + यङ् - पुर् + यङ् - पूर् + यङ् - पूर् पूर् + यङ्
वॄ + यङ् - वुर् + यङ् - वूर् + यङ् - वूर् वूर् + यङ्
भॄ + यङ् - भुर् + यङ् - भूर् + यङ् - भूर् भूर् + यङ्

सम्प्रसारणी धातु + यङ् प्रत्यय

ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च - ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज् इन धातुओं को सम्प्रसारण होता है कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर।

(सम्प्रसारण इसी खण्ड के पृष्ठ ४१३ पर देखिये।)

स्वपिस्यमिव्येञां यङि - यङ् परे होने पर स्वप्, स्यम्, व्येञ् धातुओं को भी सम्प्रसारण होता है।

न वशः - यङ् परे होने पर वश् धातु को सम्प्रसारण नहीं होता है।

यङ् प्रत्यय परे होने पर 'वय्' धातु पाया ही नहीं जाता, और वश् धातु को 'न वशः' सूत्र से सम्प्रसारण नहीं होता, अतः हम इन दो धातुओं को छोड़कर ग्रह्, ज्या, व्यध्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज्, स्वप्, स्यम्, व्येञ्, इन धातुओं के ही उदाहरण देंगे।

इन सम्प्रसारणी धातुओं को सम्प्रसारण करके ही 'सन्यङोः' सूत्र से इस प्रकार द्वित्व कीजिये -

व्यध्	+	यङ्	-	विध्	+	यङ्	-	विध् विध्	+	यङ्
व्यच्	+	यङ्	-	विच्	+	यङ्	-	विच् विच्	+	यङ्
स्यम्	+	यङ्	-	सिम्	+	यङ्	-	सिम् सिम्	+	यङ्
स्वप्	+	यङ्	-	सुप्	+	यङ्	-	सुप् सुप्	+	यङ्
ग्रह्	+	यङ्	-	गृह्	+	यङ्	-	गृह् गृह्	+	यङ्
व्रश्च्	+	यङ्	-	वृश्च्	+	यङ्	-	वृश्च् वृश्च्	+	यङ्
प्रच्छ्	+	यङ्	-	पृच्छ्	+	यङ्	-	पृच्छ् पृच्छ्	+	यङ्
भ्रज्ज्	+	यङ्	-	भृज्ज्	+	यङ्	-	भृज्ज् भृज्ज्	+	यङ्

ज्या - जि + यङ् / व्ये - वि + यङ् / इनमें सम्प्रसारण करने के बाद जि, वि को 'अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः' सूत्र से दीर्घ भी करें -

ज्या	+	यङ्	-	जि	+	यङ्	-	जी जी	+	यङ्
व्येञ्	+	यङ्	-	वि	+	यङ्	-	वी वी	+	यङ्

अनिदित् धातु + यङ् प्रत्यय

अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति - कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर, अनिदित् हलन्त धातुओं की उपधा के 'न्' का लोप हो जाता है।

अनिदित् हलन्त धातु इस प्रकार हैं -

अञ्च्	कुञ्च्	क्रुञ्च्	ग्लुञ्च्	चञ्च्	तञ्च्	त्वञ्च्	म्रुञ्च्	म्लुञ्च्
लुञ्च्	वञ्च्	अञ्ज्	रञ्ज्	भञ्ज्	सञ्ज्	ष्वञ्ज्	कुन्थ्	ग्रन्थ्
मन्थ्	श्रन्थ्	उन्द्	बुन्द्	स्कन्द्	स्यन्द्	इन्ध्	बन्ध्	शुन्ध्
तुम्प्	त्रुम्प्	ऋम्फ्	गुम्फ्	तुम्फ्	त्रुम्फ्	तृम्फ्	दृम्फ्	उम्भ्
दम्भ्	शुम्भ्	श्रम्भ्	षृम्भ्	स्रंभ्	हम्म्	दंश्	भ्रंश्	ध्वंस्
भ्रंस्	शंस्	स्रंस्	तृन्ह् = ५०					

देखिये कि इन अनिदित् धातुओं में से, ऋम्फ्, उम्भ्, अञ्च्, अञ्ज्, उन्द्, इन्ध् धातु अजादि हैं, अतः इनसे यङ् प्रत्यय नहीं लगेगा, क्योंकि हलादि एकाच् धातुओं से ही यङ् प्रत्यय लगाया जाता है।

शेष स्कन्द् से सञ्ज् तक के धातु हलादि एकाच् हैं, अतः इनसे ही यङ् प्रत्यय लगेगा तथा यङ् प्रत्यय लगने पर 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से इनकी उपधा के 'न्' का लोप हो जायेगा। न् का लोप होने के बाद इन धातुओं को 'सन्यङोः' सूत्र से इस प्रकार द्वित्व करें -

स्कन्द्	+	यङ्	-	स्कद्	+	यङ्	-	स्कद् स्कद्	+	यङ्
स्रंस्	+	यङ्	-	स्रस्	+	यङ्	-	स्रस् स्रस्	+	यङ्
ध्वंस्	+	यङ्	-	ध्वस्	+	यङ्	-	ध्वस् ध्वस्	+	यङ्
भ्रंस्	+	यङ्	-	भ्रस्	+	यङ्	-	भ्रस् भ्रस्	+	यङ्
मन्थ्	+	यङ्	-	मथ्	+	यङ्	-	मथ् मथ्	+	यङ्
शुन्ध्	+	यङ्	-	शुध्य	+	यङ्	-	शुध्य शुध्य	+	यङ्
कुञ्च्	+	यङ्	-	कुच्	+	यङ्	-	कुच् कुच्	+	यङ्
क्रुञ्च्	+	यङ्	-	क्रुच्	+	यङ्	-	क्रुच् क्रुच्	+	यङ्
लुञ्च्	+	यङ्	-	लुच्	+	यङ्	-	लुच् लुच्	+	यङ्
वञ्च्	+	यङ्	-	वच्	+	यङ्	-	वच् वच्	+	यङ्
चञ्च्	+	यङ्	-	चच्	+	यङ्	-	चच् चच्	+	यङ्
तञ्च्	+	यङ्	-	तच्	+	यङ्	-	तच् तच्	+	यङ्
त्वञ्च्	+	यङ्	-	त्वच्	+	यङ्	-	त्वच् त्वच्	+	यङ्
म्रुञ्च्	+	यङ्	-	म्रुच्	+	यङ्	-	म्रुच् म्रुच्	+	यङ्
म्लुञ्च्	+	यङ्	-	म्लुच्	+	यङ्	-	म्लुच् म्लुच्	+	यङ्
ग्लुञ्च्	+	यङ्	-	ग्लुच्	+	यङ्	-	ग्लुच् ग्लुच्	+	यङ्
श्रम्भ्	+	यङ्	-	श्रभ्	+	यङ्	-	श्रभ् श्रभ्	+	यङ्

तुम्प्	+	यङ्	-	तुप्	+	यङ्	-	तुप् तुप्	+	यङ्
त्रुम्प्	+	यङ्	-	त्रुप्	+	यङ्	-	त्रुप् त्रुप्	+	यङ्
तुम्फ्	+	यङ्	-	तुफ्	+	यङ्	-	तुफ् तुफ्	+	यङ्
त्रुम्फ्	+	यङ्	-	त्रुफ्	+	यङ्	-	त्रुफ् त्रुफ्	+	यङ्
दृम्फ्	+	यङ्	-	दृफ्	+	यङ्	-	दृफ् दृफ्	+	यङ्
शुम्भ्	+	यङ्	-	शुभ्	+	यङ्	-	शुभ् शुभ्	+	यङ्
सृम्भ्	+	यङ्	-	सृभ्	+	यङ्	-	सृभ् सृभ्	+	यङ्
तृम्फ्	+	यङ्	-	तृफ्	+	यङ्	-	तृफ् तृफ्	+	यङ्
हम्म्	+	यङ्	-	हम्	+	यङ्	-	हम् हम्	+	यङ्
शंस्	+	यङ्	-	शस्	+	यङ्	-	शस् शस्	+	यङ्
स्रंभ्	+	यङ्	-	स्रभ्	+	यङ्	-	स्रभ् स्रभ्	+	यङ्
रञ्ज्	+	यङ्	-	रज्	+	यङ्	-	रज् रज्	+	यङ्
स्यन्द्	+	यङ्	-	स्यद्	+	यङ्	-	स्यद् स्यद्	+	यङ्
भ्रंश्	+	यङ्	-	भ्रश्	+	यङ्	-	भ्रश् भ्रश्	+	यङ्
दम्भ्	+	यङ्	-	दभ्	+	यङ्	-	दभ् दभ्	+	यङ्
तृन्ह्	+	यङ्	-	तृह्	+	यङ्	-	तृह् तृह्	+	यङ्
गुम्फ्	+	यङ्	-	गुफ्	+	यङ्	-	गुफ् गुफ्	+	यङ्
भञ्ज्	+	यङ्	-	भज्	+	यङ्	-	भज् भज्	+	यङ्
बन्ध्	+	यङ्	-	बध्	+	यङ्	-	बध् बध्	+	यङ्
श्रन्थ्	+	यङ्	-	श्रथ्	+	यङ्	-	श्रथ् श्रथ्	+	यङ्
ग्रन्थ्	+	यङ्	-	ग्रथ्	+	यङ्	-	ग्रथ् ग्रथ्	+	यङ्
कुन्थ्	+	यङ्	-	कुथ्	+	यङ्	-	कुथ् कुथ्	+	यङ्
लुण्ट्	+	यङ्	-	लुट्	+	यङ्	-	लुट् लुट्	+	यङ्
दंश्	+	यङ्	-	दश्	+	यङ्	-	दश् दश्	+	यङ्
स्वञ्ज्	+	यङ्	-	स्वज्	+	यङ्	-	स्वज् स्वज्	+	यङ्
सञ्ज्	+	यङ्	-	सज्	+	यङ्	-	सज् सज्	+	यङ्

अदुपध धातु + यङ् प्रत्यय

जिनकी उपधा में ह्रस्व 'अ' हो, वे अदुपध धातु हैं। अदुपध धातुओं को यङ् प्रत्यय परे रहने पर बिना कुछ किये 'सन्यङोः' सूत्र से ज्यों का त्यों द्वित्व

कर दीजिये -

वद् + यङ् - वद् वद् + यङ्
पठ् + यङ् - पठ् पठ् + यङ्
गम् + यङ् - गम् गम् + यङ्
नम् + यङ् - नम् नम् + यङ्

इसके अपवाद - जन् सन् खन् धातु -

ये विभाषा - यकारादि कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर, जन्, सन्, खन् धातुओं के अन्तिम 'न्' के स्थान पर विकल्प से 'आ' आदेश होता है।

आत्व होने पर इन धातुओं को 'सन्यङोः' सूत्र से इस प्रकार द्वित्व करें -

जन् + यङ् - जा + यङ् - जा जा + यङ्
सन् + यङ् - सा + यङ् - सा सा + यङ्
खन् + यङ् - खा + यङ् - खा खा + यङ्

आत्व न होने पर इन धातुओं को 'सन्यङोः' सूत्र से इस प्रकार द्वित्व करें -

जन् + यङ् - जन् + यङ् - जन् जन् + यङ्
सन् + यङ् - सन् + यङ् - सन् सन् + यङ्
खन् + यङ् - खन् + यङ् - खन् खन् + यङ्

हन् धातु -

हन्तेर्हिंसायां घ्नीभावो वाच्यः - हन् धातु का अर्थ जब हिंसा करना हो, तब यङ् प्रत्यय परे होने पर हन् धातु को 'घ्नी' आदेश होता है।

घ्नी आदेश होने पर, इसे 'सन्यङोः' सूत्र से इस प्रकार द्वित्व करें -

हन् + यङ् - घ्नी + यङ् - घ्नी घ्नी + यङ्

हिंसा अर्थ न होने पर इसे घ्नी आदेश नहीं होता।

घ्नी आदेश न होने पर इसे 'सन्यङोः' सूत्र से इस प्रकार द्वित्व करें-

हन् + यङ् - हन् + यङ् - हन् हन् + यङ्

इदुपध धातु + यङ् प्रत्यय

जिनकी उपधा में ह्रस्व 'इ' हो, वे इदुपध धातु हैं। ऐसे इदुपध धातुओं को यङ् प्रत्यय परे रहने पर क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध करके 'सन्यङोः' सूत्र से ज्यों का त्यों द्वित्व कर दीजिये।

लिख् + यङ् = लिख् लिख् + यङ्
भिद् + यङ् = भिद् भिद् + यङ्

उदुपध धातु + यङ् प्रत्यय

जिनकी उपधा में ह्रस्व 'उ' हो, वे उदुपध धातु हैं। ऐसे उदुपध धातुओं को यङ् प्रत्यय परे रहने पर क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध करके 'सन्यङोः' सूत्र से धातु को ज्यों का त्यों द्वित्व कर दीजिये।

बुध् + यङ् - बुध् बुध् + यङ्
रुध् + यङ् - रुध् रुध् + यङ्
लुभ् + यङ् - लुभ् लुभ् + यङ्

ऋदुपध धातु + यङ् प्रत्यय

जिनकी उपधा में ह्रस्व 'ऋ' हो, वे ऋदुपध धातु हैं। ऐसे ऋदुपध धातुओं को यङ् प्रत्यय परे रहने पर क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध करके 'सन्यङोः' सूत्र से ज्यों का त्यों द्वित्व कर दीजिये -

वृष् + यङ् - वृष् वृष् + यङ्
कृष् + यङ् - कृष् कृष् + यङ्
कृप् + यङ् - कृप् कृप् + यङ्

शेष सारे हलन्त धातु + यङ् प्रत्यय

चक्षिङ् ख्याञ् - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर चक्ष् धातु को ख्या आदेश होता है। यङ् भी आर्धधातुक प्रत्यय है, अतः इसके परे होने पर चक्ष् धातु के स्थान पर 'ख्या' आदेश होगा।

चक्ष् + यङ् - ख्या + यङ् - ख्या ख्या + यङ्

चायः की - यङ् प्रत्यय परे होने पर चाय् धातु को 'की' आदेश होता है।

चाय् + यङ् - की + यङ् - की की + यङ्

अभी तक कहे गये धातुओं से जो धातु बच गये हैं, उन सारे हलन्त धातुओं को यङ् प्रत्यय परे रहने पर बिना कुछ किये 'सन्यङोः' सूत्र से ज्यों का त्यों द्वित्व कर दीजिये -

भूष् + यङ् - भूष् भूष् + यङ्
खाद् + यङ् - खाद् खाद् + यङ्

पूर्वोऽभ्यासः - इस द्वित्व प्रकरण में जब भी जिस भी धातु को द्वित्व

होगा, उसमें पूर्व वाले का नाम अभ्यास होगा। यथा नम् धातु को जब हमने नम् नम् बना दिया, तब पहिले वाले 'नम्' का नाम होगा 'अभ्यास'।

इसी प्रकार गम् - गम् गम् में पूर्व वाला गम्, लुभ् - लुभ् लुभ् में पूर्व वाला लुभ्, श्रि - श्री श्री में पूर्व वाला श्री अभ्यास हैं, यह जानिये।

द्वित्व करने के बाद हमें सामान्य अभ्यासकार्य करना चाहिये। वे इस प्रकार होंगे -

३. सामान्य अभ्यासकार्य

१. **हलादिः शेषः** - अभ्यास में जो हल् आदि में है, वह शेष रहता है, तथा जो हल् आदि में नहीं हैं, उन हलों का लोप हो जाता है।

जैसे - पठ् पठ् को देखिये, इसमें पूर्व वाला पठ् अभ्यास है, इस अभ्यास में पहिला हल् 'प्' है तथा पहिला अच् 'अ' है, इन्हें मिलाकर बना 'प'। इसे बचा लीजिये तथा शेष का **'हलादिः शेषः'** से लोप कर दीजिये, तो बनेगा - पपठ्। यह **हलादिः शेषः** अभ्यासकार्य है।

ज्ञा ज्ञा को देखिये, इसमें पूर्व वाला ज्ञा अभ्यास है, इस अभ्यास में पहिला हल् 'ज्' है तथा पहिला अच् 'आ' है, इन्हें मिलाकर बना 'जा'। इसे बचा लीजिये तथा शेष का **हलादिः शेषः** से लोप कर दीजिये, तो बनेगा - जाज्ञा।

श्री श्री को देखिये, इसमें पूर्व वाला श्री अभ्यास है, इस अभ्यास में पहिला हल् 'श्' है तथा पहिला अच् 'ई' है, इन्हें मिलाकर बना 'शी'। इसे बचा लीजिये तथा शेष का **हलादिः शेषः** से लोप कर दीजिये, तो बनेगा - शीश्री।

इसी प्रकार कुछ धातुओं को द्वित्व कीजिये तथा अभ्यास के पहिले हल्, पहिले अच् को बचा लीजिये और शेष का लोप कर दीजिये। इसे करके देखिये-

वद्	+	यङ्	वद् वद्	+	यङ्	व वद्	+	यङ्
लिख्	+	यङ्	लिख् लिख्	+	यङ्	लि लिख्	+	यङ्
खाद्	+	यङ्	खाद् खाद्	+	यङ्	खा खाद्	+	यङ्
मूष्	+	यङ्	मूष् मूष्	+	यङ्	मू मूष्	+	यङ्
भुज्	+	यङ्	भुज् भुज्	+	यङ्	भु भुज्	+	यङ्
भूष्	+	यङ्	भूष् भूष्	+	यङ्	भू भूष्	+	यङ्
मील्	+	यङ्	मील् मील्	+	यङ्	मी मील्	+	यङ्
वृष्	+	यङ्	वृष् वृष्	+	यङ्	वृ वृष्	+	यङ्
नी	+	यङ्	नी नी	+	यङ्	नी नी	+	यङ्

भू	+	यङ्	भू भू	+	यङ्	भू भू	+	यङ्
द्रु	+	यङ्	द्रू द्रू	+	यङ्	दू द्रू	+	यङ्
स्रु	+	यङ्	स्रु स्रु	+	यङ्	सुस्रु	+	यङ्

हलादि: शेष: के अपवाद - शर्पूर्वा: खय: - अभ्यास में शर् पूर्वक खय् शेष बचते है और अन्य हलों का लोप हो जाता है।

अत: यदि ऐसे हलादि धातु हों जिनके आदि में शर् अर्थात् स्, श्, ष् हों तथा उन स्, श्, ष् के बाद खय् अर्थात् किसी भी वर्ग का प्रथम या द्वितीय अक्षर हो, जैसे स्था, स्फुल्, स्तुभ्, स्तम्भ्, स्पर्ध्, स्पृश्, श्च्युत् आदि में है, तब इन धातुओं के अभ्यासों में से, द्वितीय हल् तथा प्रथम अच् को मिलाकर जो भी अक्षर बने उसे बचा लीजिये, और शेष का लोप कर दीजिये। इसे करके देखिये -

स्पर्ध् - स्पर्ध् स्पर्ध् को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में पवर्ग का प्रथम अक्षर प् है, अत: इस अभ्यास के द्वितीय हल् प् तथा प्रथम अच् अ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'प' को बचा लीजिये। और शेष का शर्पूर्वा: खय: से लोप कर दीजिये। स्पर्ध् - स्पर्ध् स्पर्ध् को पस्पर्ध्।

इसी प्रकार स्था - स्था स्था को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में तवर्ग का द्वितीय अक्षर थ् है, अत: इस अभ्यास के द्वितीय हल् थ् तथा प्रथम अच् आ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'था' को बचा लीजिये। और शेष का शर्पूर्वा: खय: से लोप कर दीजिये। स्था - स्था स्था को थास्था।

इसी प्रकार स्तम्भ् - स्तम्भ् स्तम्भ् को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में तवर्ग का प्रथम अक्षर त् है, अत: इस अभ्यास के द्वितीय हल् त् तथा प्रथम अच् अ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'त' को बचा लीजिये, और शेष का शर्पूर्वा: खय: से लोप कर दीजिये। स्तम्भ् - स्तम्भ् स्तम्भ् को तस्तम्भ्।

इसी प्रकार स्फुल् को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में पवर्ग का द्वितीय अक्षर फ् है, अत: इस अभ्यास के द्वितीय हल् फ् तथा प्रथम अच् उ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'फु' को बचा लीजिये। और शेष का शर्पूर्वा: खय: से लोप कर दीजिये। स्फुल् - स्फुल् स्फुल् को फुस्फुल्।

इसी प्रकार श्च्युत् को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में श् है, उस श् के बाद में चवर्ग का प्रथम अक्षर च् है, अत: इस अभ्यास के द्वितीय हल् च् तथा प्रथम अच् उ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'चु' को बचा लीजिये। और शेष का शर्पूर्वा: खय: से लोप कर दीजिये। श्च्युत् - श्च्युत् श्च्युत् को चुश्च्युत्।

धातुपाठ में ऐसे धातु इस प्रकार हैं -

स्तॄ	+	यङ्	-	स्तीर् स्तीर्	+	यङ्	तीस्तीर्	+	यङ्
स्पर्ध्	+	यङ्	-	स्पर्ध् स्पर्ध्	+	यङ्	पस्पर्ध्	+	यङ्
स्कुन्द्	+	यङ्	-	स्कुन्द् स्कुन्द्	+	यङ्	कुस्कुन्द्	+	यङ्
स्पन्द्	+	यङ्	-	स्पन्द् स्पन्द्	+	यङ्	पस्पन्द्	+	यङ्
स्तुच्	+	यङ्	-	स्तुच् स्तुच्	+	यङ्	तुस्तुच्	+	यङ्
स्फूर्ज्	+	यङ्	-	स्फूर्ज् स्फूर्ज्	+	यङ्	फुस्फूर्ज्	+	यङ्
स्फुट्	+	यङ्	-	स्फुट् स्फुट्	+	यङ्	फुस्फुट्	+	यङ्
स्तम्भ्	+	यङ्	-	स्तम्भ् स्तम्भ्	+	यङ्	तस्तम्भ्	+	यङ्
स्कम्भ्	+	यङ्	-	स्कम्भ् स्कम्भ्	+	यङ्	कस्कम्भ्	+	यङ्
स्तुभ्	+	यङ्	-	स्तुभ् स्तुभ्	+	यङ्	तुस्तुभ्	+	यङ्
स्खद्	+	यङ्	-	स्खद् स्खद्	+	यङ्	खस्खद्	+	यङ्
स्खल्	+	यङ्	-	स्खल् स्खल्	+	यङ्	खस्खल्	+	यङ्
स्थल्	+	यङ्	-	स्थल् स्थल्	+	यङ्	थस्थल्	+	यङ्
स्पश्	+	यङ्	-	स्पश् स्पश्	+	यङ्	पस्पश्	+	यङ्
स्कन्द्	+	यङ्	-	स्कन्द् स्कन्द्	+	यङ्	कस्कन्द्	+	यङ्
स्तिघ्	+	यङ्	-	स्तिघ् स्तिघ्	+	यङ्	तिस्तिघ्	+	यङ्
स्थुड्	+	यङ्	-	स्थुड् स्थुड्	+	यङ्	थुस्थुड्	+	यङ्
स्फुर्	+	यङ्	-	स्फुर् स्फुर्	+	यङ्	फुस्फुर्	+	यङ्
स्फुल्	+	यङ्	-	स्फुल् स्फुल्	+	यङ्	फुस्फुल्	+	यङ्
स्फुड्	+	यङ्	-	स्फुड् स्फुड्	+	यङ्	फुस्फुड्	+	यङ्
स्फिट्ट्	+	यङ्	-	स्फिट्ट् स्फिट्ट्	+	यङ्	फिस्फिट्ट्	+	यङ्
स्तुप्	+	यङ्	-	स्तुप् स्तुप्	+	यङ्	तुस्तुप्	+	यङ्
स्तन्	+	यङ्	-	स्तन् स्तन्	+	यङ्	तस्तन्	+	यङ्
स्कु	+	यङ्	-	स्कु स्कु	+	यङ्	कुस्कु	+	यङ्
स्तु	+	यङ्	-	स्तु स्तु	+	यङ्	तुस्तु	+	यङ्
ष्ठिव्	+	यङ्	-	ष्ठिव् ष्ठिव्	+	यङ्	ठिष्ठिव्	+	यङ्
स्ता	+	यङ्	-	स्ता स्ता	+	यङ्	तास्ता	+	यङ्
स्था	+	यङ्	-	स्था स्था	+	यङ्	थास्था	+	यङ्
स्त्या	+	यङ्	-	स्त्या स्त्या	+	यङ्	ता स्त्या	+	यङ्

२. **ह्रस्वः** - अभ्यास के दीर्घ स्वर को ह्रस्व होता है। जैसे -

खा खाद् में पूर्व वाले खा का नाम अभ्यास है, उसे ह्रस्व होकर ख खाद् बन जायेगा। इसी प्रकार मी मील् को मि मील्, भू भूष् को भु भूष्, भू भू को भु भू आदि बनाइये। ह्रस्व इस प्रकार होते हैं -

आ का ह्रस्व	अ	-	यथा	-	खा खाद्	-	खखाद्
ई का ह्रस्व	इ	-	यथा	-	नीनी	-	निनी
ऊ का ह्रस्व	उ	-	यथा	-	भू भू	-	भुभू
ए का ह्रस्व	इ	-	यथा	-	से सेव्	-	सिसेव्
ओ का ह्रस्व	उ	-	यथा	-	गो गोष्ट्	-	गुगोष्ट्
औ का ह्रस्व	उ	-	यथा	-	ढौ ढौक्	-	ढुढौक्

३. **उरत्** - अभ्यास के अन्त में आने वाले, ऋ, ॠ, को 'अ' होता है। यह 'अ' उरण् रपरः सूत्र की सहायता से 'अर्' हो जाता है।

अतः अभ्यास के अन्त के 'ऋ' को इस सूत्र से अर् बनाइये, बाद में हलादिः शेषः से अर् के र् का लोप करके अर् को अ बना दीजिये। यथा -

वृष्	-	वृष् वृष्	-	वृवृष्	-	वर् वृष्	-	ववृष्
कृष्	-	कृष् कृष्	-	कृकृष्	-	कर् कृष्	-	ककृष्
हृष्	-	हृष् हृष्	-	हृहृष्	-	हर् हृष्	-	हहृष्
वृत्	-	वृत् वृत्	-	वृ वृत्	-	वर् वृत्	-	ववृत्
कृप्	-	कृप् कृप्	-	कृ कृप्	-	कर् वृत्	-	कृ कृप्

३. **कुहोश्चुः** - अभ्यास के कवर्ग और हकार के स्थान पर चवर्ग आदेश होता है।

अतः अब अभ्यास को देखिये। उसमें स्थित कवर्ग के वर्ण को आप चवर्ग का वर्ण बना दीजिये। ध्यान रहे कि वर्ण का क्रमाङ्क वही रहे - जैसे क को च, ख को छ, ग को ज, घ को झ। यदि अभ्यास में ह हो तो उस ह को ज बना दीजिये। इसे 'चुत्व' करना कहते हैं। यथा -

खन्	खन् खन्	ख खन्	छ खन्	च खन्
गम्	गम् गम्	ग गम्	ज गम्	ज गम्
हस्	हस् हस्	ह हस्	ज हस्	ज हस्
हन्	हन् हन्	ह हन्	ज हन्	ज हन्

इसके अपवाद - कु धातु - धातुपाठ में तीन कु धातु हैं भ्वादिगण में, अदादिगण में तथा तुदादिगण में। इनमें से अदादिगण तथा तुदादिगण के कु धातु

से तो नियमानुसार कुहोश्चु: से चुत्व होकर कु + यङ् - चुकू ही बनता है किन्तु भ्वादिगण के कु धातु के अभ्यास को कुहोश्चु: से होने वाला चुत्व नहीं होता।

सूत्र है -

न कवतेर्यङि - कुङ् शब्दे धातु के अभ्यास को यङ् परे होने पर कुहोश्चु: से चुत्व नहीं होता - कु + यङ् - कु कू यङ् - कु कू यङ्।

अभ्यासाच्च - अभ्यास से परे जो हन् धातु का हकार उसे कवर्गादेश होकर घ् हो जाता है। जैसे - हन् + यङ् - जहन् + यङ् - जघन् + यङ्।

४. **अभ्यासे चर्च** - यदि अभ्यास में वर्ग का चतुर्थाक्षर है तो इसे उसी वर्ग का तृतीयाक्षर बना दीजिये, इसे जश्त्व करना कहते हैं, तथा यदि अभ्यास में वर्ग का द्वितीयाक्षर है तो उसे उसी वर्ग का प्रथमाक्षर बना दीजिये। इसे चर्त्व करना कहते हैं।

छ खन्	च खन्	भु भुज्	बु भुज्
फ फल्	प फल्	ढु ढौक्	डु ढौक्
थु थुड्	तु थुड्	झ झर्झ्	ज झर्झ्
भु भू	बु भू आदि ।		

हमने देखा कि अभ्यास में रहने वाले कवर्ग के सारे व्यञ्जनों में तथा अन्य वर्गों के केवल दूसरे, चौथे व्यञ्जनों में, तथा हकार में ही ये ऊपर कहे हुए परिवर्तन होते हैं।

यदि अभ्यास में दूसरे, चौथे व्यञ्जनों कवर्ग और हकार के अलावा कोई भी व्यञ्जन हैं तब आप उन्हें कुछ मत कीजिये। जैसे -

चल्	-	च चल्	-	च चल्
जप्	-	ज जप्	-	ज जप्
टीक्	-	टि टीक्	-	टि टीक्
डी	-	डि डी	-	डि डी
तन्	-	त तन्	-	त तन्
दल्	-	द दल्	-	द दल्
नम्	-	न नम्	-	न नम्
पत्	-	प पत्	-	प पत्
बाध्	-	ब बाध्	-	ब बाध्
मील्	-	मि मील्	-	मि मील्

यम्	-	य यम्	-	य यम्
रम्	-	र रम्	-	र रम्ँ
लप्	-	ल लप्	-	ल लप
वृध्	-	व वृध्	-	व वृध्
शास्	-	श शास्	-	श शास्
सद्	-	स सद्	-	स सद्

अब यङ् प्रत्यय परे होने पर, होने वाले विशेष अभ्यासकार्य बतलाते हैं।

३. यङ् प्रत्यय परे होने पर होने वाले विशेष अभ्यासकार्य करके तथा धातुसंज्ञा करके, धातुरूप बनाना

अब यङ् प्रत्यय परे होने पर, होने वाले विशेष अभ्यासकार्य बतला रहे हैं। द्वित्व तथा अभ्यासकार्य कर चुकने के बाद आप पायेंगे, कि जो अभ्यास है, उसके अन्त में या तो 'अ' है, या 'इ' है, या 'उ' है।

विशेष अभ्यासकार्य करने के लिये, अब आप अपनी दृंष्टि केवल अभ्यास के इसी अन्तिम 'अ' 'इ' 'उ' पर रखिये -

१. अभ्यास के अन्तिम ह्रस्व 'अ' को नुक् का आगम

यदि अभ्यास के अन्त में ह्रस्व 'अ' दिखे तो फिर बहुत सावधानी से यह विचार कीजिये कि -

१. जिस धातु के अभ्यास के अन्त में ह्रस्व 'अ' है, उस धातु के अन्त में कहीं अनुनासिक व्यञ्जन अर्थात् ञ्, म्, ङ्, ण्, न् तो नहीं हैं ?

यदि धातु के अभ्यास के अन्त में ह्रस्व 'अ' है, और धातु के अन्त में अनुनासिक व्यञ्जन अर्थात् ञ्, म्, ङ्, ण्, न् हैं, तब उस धातु के अभ्यास के 'अ' के बाद नुक् = अनुस्वार, का आगम कर दीजिये।

नुक् = अनुस्वार का आगम करने वाला सूत्र इस प्रकार है -

नुगतोऽनुनासिकान्तस्य - यदि धातु के अभ्यास के अन्त में ह्रस्व 'अ' हो, और धातु के अन्त में अनुनासिक व्यञ्जन अर्थात् ञ्, म्, ङ्, ण्, न् हों, तो ऐसे धातुओं के अभ्यास को नुक् (अनुस्वार) का आगम होता है, यङ् प्रत्यय परे होने पर तथा यङ्लुक् परे होने पर। जैसे -

गम् - जगम् / तन् - ततन् / यम् - ययम् / रम् - ररम् / को देखिये। इनके अभ्यास के अन्त में 'अ' है तथा धातु के अन्त में अनुनासिक व्यञ्जन 'न्' या 'म्' है।

अतः इनके अभ्यास को नुक् (न्) का आगम होगा। जैसे -

गम्	-	ज गम्	-	जङ्गम्	+	यङ्	-	जङ्गम्य
तन्	-	त तन्	-	तंतन्	+	यङ्	-	तंतन्य
मन्	-	म मन्	-	मंमन्	+	यङ्	-	मंमन्य
रम्	-	र रम्	-	रंरम्	+	यङ्	-	रंरम्य
यम्	-	य यम्	-	यंयम्	+	यङ्	-	यंयम्य

सनाद्यन्ता धातवः - सन्, क्यच्, काम्यच्, क्यष्, क्यङ्, क्विप्, णिङ्, ईयङ्, णिच्, यक्, आय, यङ् ये १२ प्रत्यय जिसके भी अन्त में लगते हैं उनका नाम, धातु हो जाता है।

अतः धातुओं में यङ् प्रत्यय जोड़कर ये जो धातु तैयार हुए हैं, अथवा आगे भी धातुओं में यङ् प्रत्यय जोड़कर जो धातु तैयार होंगे, उनका नाम इस सूत्र से 'धातु' ही होगा। धातु संज्ञा होने के कारण, अब इन यङन्त धातुओं से, किसी भी लकार के तिङ् प्रत्यय, अथवा कृत् आदि प्रत्यय उसी प्रकार लगाये जा सकते हैं, जैसे कि अन्य धातुओं से। किन्तु ध्यान रहे कि -

अनुदात्तङित आत्मनेपदम् - अनुदात्तेत् और ङित् धातुओं से केवल आत्मनेपद के प्रत्यय ही लगते हैं।

चूँकि यङ् प्रत्यय ङित् है अतः इससे बनने वाले सारे यङन्त धातुओं से किसी भी लकार में, केवल आत्मनेपद के प्रत्यय ही लग सकते हैं। यह भी देखें कि सारे यङन्त धातुओं के अन्त में 'ह्रस्व अ' हाने से ये अदन्त अङ्ग हैं, अतः इनसे प्रथम गण समूह वाले आत्मनेपदी प्रत्यय ही लगेंगे। अदन्त अङ्गों से लगने वाले लट् लकार के आत्मनेपदी प्रत्यय इस प्रकार हैं -

लट् लकार आत्मनेपद के प्रत्यय

ते	इते	अन्ते
से	इथे	ध्वे
ए	वहे	महे

कर्तरि शप् - सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर धातुओं से शप् होता है। जङ्गम्य + शप् + ते / जङ्गम्य + अ + ते / अतो गुणे से पूर्व वाले 'अ' को पररूप होकर - जङ्गम्य + ते = जङ्गम्यते। पूरे रूप इस प्रकार बने -

जङ्गम्यते	जङ्गम्येते	जङ्गम्यन्ते
जङ्गम्यसे	जङ्गम्येथे	जङ्गम्यध्वे
जङ्गम्ये	जङ्गम्यावहे	जङ्गम्यामहे

इसी प्रकार अन्य अनुनासिकान्त धातुओं के रूप बनाइये। यथा -

तन्	-	त तन्	-	तंतन्	+	यङ्	-	तंतन्य	=	तंतन्यते
मन्	-	म मन्	-	मंमन्	+	यङ्	-	मंमन्य	=	मंमन्यते
रम्	-	र रम्	-	रंरम्	+	यङ्	-	रंरम्य	=	रंरम्यते
यम्	-	य यम्	-	यंयम्	+	यङ्	-	यंयम्य	=	यंयम्यते

इन यङन्त धातुओं से सभी लकारों के रूप बनाये जा सकते हैं। अन्य लकारों के रूप बनाने की विधि तत् तत् लकारों में बतलाई जा चुकी है।

हन् धातु - हन् - हहन् - जहन्

'अभ्यासाच्च' सूत्र से अभ्यास से परे आने वाले हन् धातु के 'ह' को कुत्व अर्थात् 'घ' होकर - जघन् + यङ्, अब नुक् का आगम करके जघन् + नुक् + यङ्, - जंघन्य - जङ्घन्य - जङ्घन्यते बनाइये।

हन्तेर्हिंसायां घ्नीभावो वाच्यः - हन् धातु का अर्थ जब हिंसा करना हो, तब इसे यङ् प्रत्यय परे होने पर घ्नी आदेश होता है।

हन् + यङ् - घ्नी + यङ् / द्वित्वादि करके - घ्नी घ्नी + यङ् / हलादिः शेषः करके - घी ध्नी + यङ् / ह्रस्वः सूत्र से अभ्यास को ह्रस्व करके - घिघ्नी + यङ् / अभ्यासे चर्च से अभ्यास के 'घ' को जश्त्व करके - जिघ्नी + यङ् /

४६० पृष्ठ पर कहे हुए 'गुणो यङ्लुकोः' सूत्र से अभ्यास को गुण करके - जेघ्नी + यङ् - जेघ्नीय - जेघ्नीयते बनाइये।

जब हिंसा का अर्थ नहीं होगा तब ऊपर कहे अनुसार जङ्घन्यते ही बनेगा।

२. **जपजभदहदशभञ्जपशां च** - जप, जभ्, दह्, दश्, पश्, इन धातुओं के अभ्यास के अन्त में ह्रस्व 'अ' तो है, किन्तु अन्त में अनुनासिक व्यञ्जन नहीं है, तो भी इनके अभ्यास को इस सूत्र से नुक् का आगम होता है यङ् प्रत्यय परे होने पर तथा यङ्लुक् परे होने पर। जैसे -

जप्	-	जजप्	-	जंजप्	+	यङ्	-	जंजप्यते
जभ्	-	जजभ्	-	जंजभ्	+	यङ्	-	जंजभ्यते
दह्	-	ददह्	-	दंदह्	+	यङ्	-	दंदह्यते
पश्	-	पंपश्	-	पंपश्	+	यङ्	-	पंपश्यते

दंश् + यङ् / 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से न् का लोप करके - दश् + य / द्वित्वादि करके - ददश् + य / अभ्यास को नुक् का आगम

करके - दंदश्य = दंदश्यते।

भञ्ज् + यङ् / 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से न् का लोप करके - भज् + य / द्वित्वादि करके - बभज् + य / अभ्यास को नुक् का आगम करके - बंभज्य = बंभज्यते।

३. चरफलोश्च / उत्परस्यातः - चर्, फल्, धातुओं के अभ्यास को भी नुगागम होता है साथ ही धातु के 'अ' को 'उ' भी होता है, यङ् प्रत्यय परे होने पर तथा यङ्लुक् परे होने पर। जैसे -

चर् - चचर् - चञ्चर् / अ को उ होकर - चञ्चुर् / हलि च से 'उ' को दीर्घ करके चञ्चूर् - चञ्चूर्य = चञ्चूर्यते।

इसी प्रकार फल् - पफल् - पंफल् - पंफुल् - पंफुल्य = पंफुल्यते

२. ऋत्वत् धातुओं के अभ्यास के अन्तिम ह्रस्व 'अ' को रीक् का आगम करना

चाहे धातु सम्प्रसारणी हो, चाहे अनिदित् हो, चाहे कैसा भी हो, यदि द्वित्व तथा अभ्यासादिकार्य करने के बाद, उस धातु में कहीं भी 'ऋ' दिखे तो उसे ऋत्वत् धातु समझिये।

रीगृदुपधस्य (रीगृत्वत इति वक्तव्यम्) - ऐसे ऋत्वत् धातुओं के अभ्यास के अन्त में यदि ह्रस्व 'अ' हो, तो उस 'अ' के बाद रीक् = री का आगम कीजिये, यङ् प्रत्यय परे होने पर तथा यङ्लुक् परे होने पर। जैसे -

नृत्	ननृत्	नरीनृत्	नरीनृत्य	नरीनृत्यते
तृप्	ततृप्	तरीतृप्	तरीतृप्य	तरीतृप्यते
वृध्	ववृध्	वरीवृध्	वरीवृध्य	वरीवृध्यते
शृध्	शशृध्	शरीशृध्	शरीशृध्य	शरीशृध्यते
कृष्	चकृष्	चरीकृष्	चरीकृष्य	चरीकृष्यते
मृष्	ममृष्	मरीमृष्	मरीमृष्य	मरीमृष्यते
वृत्	ववृत्	वरीवृत्	वरीवृत्य	वरीवृत्यते

सम्प्रसारण होने के बाद जिन सम्प्रसारणी धातुओं में 'र' को 'ऋ' हो गया है, वे धातु भी अब ऋत्वत् धातु हैं।

अतः उनके अभ्यास के अन्तिम 'अ' को भी इस सूत्र से रीक् का आगम होता है, यङ् प्रत्यय परे होने पर तथा यङ्लुक् परे होने पर। जैसे -

ग्रह्	ग गृह्	ज गृह्	जरीगृह्य	जरीगृह्यते

पृच्छ्	प पृच्छ्	परीपृच्छ्	परीपृच्छ्य	परीपृच्छ्यते
वृश्च्	व वृश्च्	वरीवृश्च्	वरीवृश्च्य	वरीवृश्च्यते
भृज्ज्	ब भृज्ज्	बरीभृज्ज्	बरीभृज्ज्य	बरीभृज्ज्यते

जिन अनिदित् धातुओं में 'ऋ' है, वे धातु 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से न् का लोप करने के बाद भी 'ऋ' दिखने से 'ऋत्वत्' ही हैं। अतः इनके अभ्यास को रीक् का आगम कीजिये -

सृम्भ्	सृभ्	स सृभ्य	सरीसृभ्य	सरीसृभ्यते
तृम्फ्	तृफ्	त तृफ्य	तरीतृफ्य	तरीतृफ्यते
तृन्ह्	तृह्	त तृह्य	तरीतृह्य	तरीतृह्यते

कृप् धातु -

कृप् धातु को द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके कृप् - चकृप् बनाइये और अभ्यास को रीक् का आगम करके 'चरीकृप्य' बन जाने के बाद -

कृपो रो लः - कृप् धातु के र् को ल् आदेश होता है। इस सूत्र से 'चरीकृप्य' के र, ऋ दोनों को को ही 'ल्' बनाइये -

कृप्	क कृप्	च कृप्	चरीकृप्	चलीक्लृप्य	चलीक्लृप्यते

अभ्यास के अन्तिम ह्रस्व 'अ' को नीक् का आगम

नीग्वञ्चुस्रंसुध्वंसुभ्रंसुकसपतपदस्कन्दाम् - वञ्च्, स्रंस्, ध्वंस्, भ्रंस्, कस्, पत्, पद् स्कन्द् धातुओं के अभ्यास के अन्तिम 'अ' को नीक् (नी) का आगम होता है, यङ् तथा यङ्लुक् परे होने पर।

वञ्चु - नलोप होकर - वच् / द्वित्वादि होकर - ववच् / अभ्यास को नीक् (नी) का आगम करके वनीवच् = वनीवच्यते।

स्कन्द् - नलोप होकर - स्कद् / द्वित्वादि होकर - चस्कद् / अभ्यास को नीक् (नी) का आगम करके - चनीस्कद् = चनीस्कद्यते।

स्रंस् - नलोप होकर - स्रस् / द्वित्वादि होकर - सस्रस् / अभ्यास को नीक् (नी) का आगम करके सनीस्रस् = सनीस्रस्यते।

ध्वंस् - नलोप होकर - ध्वस् / द्वित्वादि होकर - दध्वस् / अभ्यास को नीक् (नी) का आगम करके दनीध्वस् = दनीध्वस्यते।

भ्रंस् - नलोप होकर - भ्रस् / द्वित्वादि होकर - बभ्रस् / अभ्यास को नीक् (नी) का आगम करके - बनीभ्रस् = बनीभ्रस्यते।

अभ्यास के अन्तिम ह्रस्व 'अ' को दीर्घ करना -

अभ्यास के अन्तिम ह्रस्व 'अ' को दीर्घ करना -

दीर्घोऽकितः - अब इस नुक्, नीक्, रीक्, के आगम के सारे प्रपञ्च के बाद जो धातु बचे, उन्हें देखिये। यदि द्वित्व तथा अभ्यासादिकार्य करने के बाद, उनके अभ्यास के अन्त में ह्रस्व 'अ' दिखे, तो उस अन्तिम ह्रस्व 'अ' को इस सूत्र से दीर्घ कर दीजिये। यथा -

भा	भा भा	ब भा	बाभा	बाभायते
गल्	ग गल्	ज गल्	जागल्	जागल्यते
पच्	प पच्	प पच्	पापच्	पापच्यते
बाध्	बाबाध्	ब बाध्	बाबाध्	बाबाध्यते

अनिदित् धातुओं में यदि 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से न् का लोप करने के बाद, अभ्यास के अन्त में ह्रस्व 'अ' दिखे, उनके इस 'अ' को इस सूत्र से दीर्घ कर दीजिये। यथा -

मन्थ्	मथ्	ममथ्य	मामथ्य	मामथ्यते
चञ्च्	चच्	चचच्य	चाचच्य	चाचच्यते
तञ्च्	तच्	ततच्य	तातच्य	तातच्यते
त्वञ्च्	त्वच्	तत्वच्य	तात्वच्य	तात्वच्यते
श्रम्भ्	श्रभ्	शश्रभ्य	शाश्रभ्य	शाश्रभ्यते
शंस्	शस्	शशस्य	शाशस्य	शाशस्यते
स्रंभ्	स्रभ्	सस्रभ्य	सास्रभ्य	सास्रभ्यते
रञ्ज्	रज्	ररज्य	रारज्य	रारज्यते
स्पन्द्	स्पद्	पस्पद्य	पास्पद्य	पास्पद्यते
भ्रंश्	भ्रश्	बभ्रश्य	बाभ्रश्य	बाभ्रश्यते
दम्भ्	दभ्	ददभ्य	दादभ्य	दादभ्यते
भञ्ज्	भज्	बभज्य	बाभज्य	बाभज्यते
बन्ध्	बध्	बबध्य	बाबध्य	बाबध्यते
श्रन्थ्	श्रथ्	शश्रथ्य	शाश्रथ्य	शाश्रथ्यते
ग्रन्थ्	ग्रथ्	जग्रथ्य	जाग्रथ्य	जाग्रथ्यते

संयोगपूर्व ऋकारान्त धातुओं में द्वित्व तथा अभ्यासादि कार्य करने के बाद उनके अभ्यास के अन्त में ह्रस्व 'अ' मिलता है। उस अन्तिम 'अ' को इस सूत्र से दीर्घ कर दीजिये। यथा -

स्मृ	सस्मर्	सास्मर्	सास्मर्य	सास्मर्यते

ध्वृ	दध्वर्	दाध्वर्	दाध्वर्य	दाध्वर्यते
ह्वृ	जह्वर्	जाह्वर्	जाह्वर्य	जाह्वर्यते।

इस प्रकार हमने जाना, कि अभ्यास के अन्त में आने वाले 'अ' को जब नुक्, नीक्, रीक्, के आगम नहीं होते, तब उस 'अ' को दीर्घ हो जाता है।

जब अभ्यास के अन्त में ह्रस्व 'इ' या 'उ' होते हैं, तब उन्हें 'गुणो यङ्लुकोः' सूत्र से गुण ही होता है। इसका विस्तृत विवेचन इस प्रकार है -

अभ्यास के अन्तिम ह्रस्व 'इ' को गुण करना

गुणो यङ्लुकोः - यदि अभ्यास के अन्त में 'इ' है तो उसे गुण करके 'ए' बनाइये, और यदि अभ्यास के अन्त में 'उ' है तो इसे गुण करके 'ओ' बनाइये, यङ् प्रत्यय परे होने पर तथा यङ्लुक् परे होने पर।

वे धातु जिनके अभ्यास के अन्त में 'इ' मिलता है -

आकारान्त धातुओं में से जिन धातुओं के आ को ई होता है, उनके अभ्यास के अन्त में 'इ' मिलता है, उसे 'गुणो यङ्लुकोः' से गुण करके 'ए' बनाइये। यथा -

दा	दी	दी दी	दि दी	देदीय	देदीयते
धा	धी	दी धी	दि धी	देधीय	देधीयते
मा	मी	मी मी	मि मी	मेमीय	मेमीयते
गा	गी	गी गी	जि गी	जेगीय	जेगीयते
पा	पी	पी पी	पि पी	पेपीय	पेपीयते
हा	ही	ही ही	जि ही	जेहीय	जेहीयते
स्था	स्थी	थी स्थी	ति स्थी	तेष्ठीय	तेष्ठीयते
सा	सी	सी सीय	सि सीय	सेसीय	सेषीयते

षत्वविधि

तेष्ठीयते, सेषीयते में स को षत्व कैसे हुआ है ?

आदेश प्रत्यययोः - इण् तथा कवर्ग के बाद आने वाले आदेश तथा प्रत्यय के सकार को षकार आदेश होता है।

अर्थात् प्रत्यय के पूर्व में यदि 'अ' के अलावा कोई भी स्वर होगा अथवा इण्, कवर्ग में से कोई व्यञ्जन होगा, तो आदेश तथा प्रत्यय के स को ष बन जायेगा। यथा - तेस्थीयते = तेष्ठीयते / सेसीयते = सेषीयते।

ईकारान्त, ईकारान्त धातुओं के अभ्यास के अन्त में भी 'इ' मिलता है, उसे 'गुणो यङ्लुकोः' से गुण करके ए बनाइये। यथा -

जि	जि जी	जे जीय	जेजीयते
चि	चि ची	चे चीय	चेचीयते
नी	नि नी	ने नीय	नेनीयते

इसके अपवाद - शीङ् धातु - अयङ् यि क्ङिति -

शीङ् धातु को शय् आदेश होता है कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर - शी + यङ् - शय् + य - शय्य।

इसे द्वित्व तथा अभ्यास कार्य करके श शय्य बनाकर दीर्घोऽकितः सूत्र से अभ्यास के इस 'अ' को दीर्घ करके - शाशय्य - शाशय्यते बनाइये।

असंयोगपूर्व ऋकारान्त धातुओं के 'ऋ' को 'रीङ्' होता है, अतः उनके अभ्यास के अन्त में 'इ' मिलता है, उसे 'गुणो यङ्लुकोः' से गुण करके ए बनाइये। यथा -

कृ	क्री	क्रीक्री	किक्री	चेक्री	चेक्रीय	चेक्रीयते
भृ	भ्री	भीभ्री	बिभ्री	बेभ्री	बेभ्रीय	बेभ्रीयते
वृ	व्री	व्रीव्री	विव्री	वेव्री	वेव्रीय	वेव्रीयते
ह्र	ह्री	ह्रीह्री	जिह्री	जेह्री	जेह्रीय	जेह्रीयते
धृ	ध्री	ध्रीध्री	दिध्री	देध्री	देध्रीय	देध्रीयते
घृ	घ्री	घ्रीघ्री	जिघ्री	जेघ्री	जेघ्रीय	जेघ्रीयते
मृ	म्री	मीम्री	मिम्री	मेम्री	मेम्रीय	मेम्रीयते
दृ	द्री	दीद्री	दिद्री	देद्री	देद्रीय	देद्रीयते

इदुपध धातुओं के अभ्यास के अन्त में भी 'इ' मिलता है, उसे 'गुणो यङ्लुकोः' से गुण करके ए बनाइये। यथा -

भिद् - बिभिद् - बेभिद् - बेभिद्य - बेभिद्यते
छिद् - चिच्छिद् - चेच्छिद् - चेच्छिद्य - चेच्छिद्यते
मिद् - मिमिद् - मेमिद् - मेमिद्य - मेमिद्यते
चित् - चिचित् - चेचित् - चेचित्य - चेचित्यते

ॠकारान्त धातुओं के अभ्यास के अन्त में भी 'इ' मिलता है, उसे 'गुणो यङ्लुकोः' से गुण करके ए बनाइये। यथा -

तॄ तितीर् तेतीर् तेतीर्य तेतीर्यते

दॄ	दिदीर्	देदीर्	देदीर्य	देदीर्यति
शॄ	शिशीर्	शेशीर्	शेशीर्य	शेशीर्यति
जॄ	जिजीर्	जेजीर्	जेजीर्य	जेजीर्यति आदि।

गॄ धातु - ग्रो यङि - गॄ धातु के र् को ल् हो जाता है यङ् परे होने पर - गॄ + यङ् / ॠत इद् धातोः से इर् होकर गिर् + य / ग्रो यङि से र् को ल् होकर गिल् + य - गिल्य / द्वित्वादि कार्य होकर जिगिल्य अभ्यास को गुण होकर - जेगिल्य = जेगिल्यते।

अभ्यास के अन्तिम ह्रस्व 'उ' को गुण करना

वे धातु जिनके अभ्यास के अन्त में 'उ' मिलता है -

उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं के अभ्यास के अन्त में 'उ' मिलता है, उसे 'गुणो यङ्लुकोः' से गुण करके ओ बनाइये। यथा -

हु	हु हु	जुहू	जो हू	जोहूय	जोहूयते आदि।
भू	भू भू	बु भू	बो भू	बोभूय	बोभूयते आदि।

पॄ, वॄ धातुओं के अभ्यास के अन्त में 'उ' मिलता है, उसे 'गुणो यङ्लुकोः' से गुण करके ओ बनाइये। यथा -

पॄ धातु - पॄ + यङ् - उदोष्ठ्यपूर्वस्य सूत्र से पुर् + यङ् / अब हलि च सूत्र से उपधा के 'उ' को दीर्घ करके- पूर् + यङ् / अब इसे द्वित्व करके - पूपूर् + य / अभ्यास को ह्रस्व करके - पुपूर् + य - पुपूर्य - अब गुणो यङ्लुकोः से गुण करके - पोपूर्य - पोपूर्यते।

वॄ धातु - वॄ + यङ् - उदोष्ठ्यपूर्वस्य सूत्र से वुर् + यङ् / अब हलि च सूत्र से उपधा के 'उ' को दीर्घ करके - वूर् + यङ् / अब इसे द्वित्व करके - वूवूर् + य / अभ्यास को ह्रस्व करके - वुवूर् + य - वुवूर्य - अब गुणो यङ्लुकोः से गुण करके - वोवूर्य - वोवूर्यते। **वॄ धातु** - इसी प्रकार बोभूर्यते।

जिन अनिदित् धातुओं में न् का लोप करके, द्वित्व तथा अभ्यासादि कार्य करने के बाद, अभ्यास के अन्त में ह्रस्व 'उ' मिले, उनके इस अन्तिम 'उ' को 'गुणो यङ्लुकोः' से गुण करके ओ बनाइये। यथा -

कुञ्च्	कुच्	चुकुच्य	चोकुच्य	चोकुच्यते
क्रुञ्च्	क्रुच्	चुक्रुच्य	चोक्रुच्य	चोक्रुच्यते
लुञ्च्	लुच्	लुलुच्य	लोलुच्य	लोलुच्यते
म्रुञ्च्	म्रुच्	मुम्रुच्य	मोम्रुच्य	मोम्रुच्यते

म्लुञ्च्	म्लुच्	मुम्लुच्य	मोम्लुच्य	मोम्लुच्यते
लुण्ट्	लुट्	लुलुट्य	लोलुट्य	तोलुट्यते
ग्लुञ्च्	ग्लुच्	जुग्लुच्य	जोग्लुच्य	जोग्लुच्यते
तुम्प्	तुप्	तुतुप्य	तोतुप्य	तोतुप्यते
कुन्थ्	कुथ्	चुकुथ्य	चोकुथ्य	चोकुथ्यते
गुम्फ्	गुफ्	जुगुफ्य	जोगुफ्य	जोगुफ्यते
कुंस्	कुस्	चुकुस्य	चोकुस्य	चोकुस्यते
त्रुम्प्	त्रुप्	तुत्रुप्य	तोत्रुप्य	तोत्रुप्यते
तुम्फ्	तुफ्	तुतुफ्य	तोतुफ्य	तोतुफ्यते
त्रुम्फ्	त्रुफ्	तुत्रुफ्य	तोत्रुफ्य	तोत्रुफ्यते
शुम्भ्	शुभ्	शुशुभ्य	शोशुभ्य	शोशुभ्यते
शुन्ध्	शुध्	शुशुध्	शोशुध्य	शोशुध्यते

विशेष धातु - कु धातु - हम पृष्ठ ४५२ - ४५३ पर पढ़ चुके हैं कि धातुपाठ में तीन कु धातु हैं, भ्वादिगण में, अदादिगण में, तुदादिगण में।

इनमें से अदादिगण तथा तुदादिगण के कु धातु से तो नियमानुसार चोकूयते ही बनेगा किन्तु भ्वादिगण के कु धातु के अभ्यास को कुहोश्चुः से होने वाले चुत्व का 'न कवतेर्यङि' सूत्र से निषेध हो जाता है। अतः इससे - कु + यङ् - कूय - कु कूय - को कूय - कोकूयते ऐसा रूप ही बनता है।

अजादि धातुओं के यङन्त रूप बनाना

अजादि धातुओं में से केवल ऋ, अट्, अश्, ऊर्णु इन चार धातुओं से ही यङ् प्रत्यय लगता है। शेष अजादि धातुओं से यह यङ् प्रत्यय कदापि नहीं लगेगा।

इनके रूप इस प्रकार बनाइये -

अश् धातु - यङ् प्रत्यय को धातु में जोड़ लीजिये, जैसे - अश् + यङ् = अश्य, में यङ् के सहित जो अश्य बना है, यह अब अजादि अनेकाच् धातु है।

इसमें द्वितीय अवयव एकाच् 'श्य' को द्वित्व कीजिये। अश्य - अ श्य श्य / हलादिः शेषः सूत्र से अभ्यास के आदि हल् 'श' को बचाकर - अ श श्य / **दीर्घोऽकितः** सूत्र से अभ्यास के अन्त में आने वाले ह्रस्व 'अ' को दीर्घ करके - अशाश्य = अशाश्यते बनाइये।

अट् धातु - अट् + यङ् = अट्य / इसमें यङ् के सहित जो अट्य बना है, यह अब अजादि अनेकाच् धातु है। इसके द्वितीय अवयव एकाच् 'ट्य' को द्वित्व

कीजिये। अट्य - अ ट्य ट्य / हलादिः शेषः सूत्र से अभ्यास के आदि हल् 'ट' को बचाकर - अ ट ट्य / **दीर्घोऽकितः** सूत्र से अभ्यास के अन्त में आने वाले ह्रस्व 'अ' को दीर्घ करके - अ टाट्य = अटाट्यते बनाइये।

ऊर्णु धातु - ऊर्णु + यङ् - इसके द्वितीय अवयव एकाच् 'नु' को द्वित्व करके ऊर्णु नु + यङ् / पूर्व वाले 'णु' की अभ्यास संज्ञा करके, उस अभ्यास को गुणो यङ्लुकोः से गुण करके - ऊर्णोनु + यङ् / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से दीर्घ करके ऊर्णोनू + यङ् - ऊर्णोनूय = ऊर्णोनूयते बनाइये।

ऋ धातु - ऋ + यङ् / यङि च सूत्र से गुण करके अर् + य = अर्य / यह यङ् के सहित जो अर्य है, यह अब अजादि अनेकाच् धातु है। यहाँ भाष्य के निर्देश से अरार्य - अरार्यति बनता है।

यह सारे धातुओं के यङन्त रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

यङ् प्रत्यय लगाकर हमने अभी जो यङन्त धातु बनाये हैं उनके लट् लकार के रूप बनाना सीखा है।

यङन्त धातु बन जाने के बाद इन यङन्त धातुओं में लोट्, लङ् आदि सभी लकारों के प्रत्यय लगाकर इनके रूप ठीक भ्वादिगण के 'एधते' के समान ही बनेंगे।

जैसे - नी + यङ् - नेनीय, इस यङन्त धातु से लट् लकार में नेनीयते / लोट् लकार में नेनीयताम् / लङ् लकार में अनेनीयत / विधिलिङ् लकार में नेनीयेत / लिट् लकार में नेनीयाञ्चक्रे / लुट् लकार में नेनीयिता / लृट् लकार में नेनीयिष्यते / लृङ् लकार में अनेनीयिष्यत / लेट् लकार में नेनीयिषते, नेनीयिषाते / आशीर्लिङ् लकार में नेनीयिषीष्ट / लुङ् लकार में अनेनीयिष्ट / आदि रूप बनाइये।



चतुर्दश पाठ

समस्त धातुओं के यङ्लुगन्त रूप बनाने की सरलतम विधि

यङन्त प्रकरण में हमने बार बार होने अर्थ में तथा बहुत अधिक होने अर्थ में 'धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्' सूत्र से 'यङ्' प्रत्यय लगाया है।

यङोऽचि च – धातुओं से लगने वाले इस 'यङ्' प्रत्यय का विकल्प से लुक् (लोप) हो जाता है, सारे प्रत्यय परे होने पर।

विशेष – यङ् का लुक् हो जाने पर, उस यङ्लुगन्त धातु की '**सनाद्यन्ता धातवः**' सूत्र से धातुसंज्ञा करके इन यङ्लुगन्त धातुओं का प्रयोग लोक, वेद दोनों में ही किया जा सकता है।

ध्यान रहे कि प्रत्यय का लुक् होने पर 'न लुमताङ्गस्य' सूत्र से प्रत्यय निमित्तक अङ्गकार्यों का निषेध हो जाता है। अतः यङ् प्रत्यय को निमित्त मानकर होने वाले कोई भी अङ्गकार्य यहाँ नहीं होंगे।

इनके अलावा ये पाँच कार्य भी यङ्लुक् में नहीं होते हैं –

श्तिपा शपानुबन्धेन निर्दिष्टं यद् गणेन च।
यत्रैकाज्ग्रहणं चैव पञ्चैतानि न यङ्लुकि।।

किन किन धातुओं के यङ्लुगन्तरूप बनायें ?

१. यङन्त के ही समान 'धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्' सूत्र से क्रियासमभिहार अर्थ में हलादि एकाच् धातुओं के ही यङ्लुगन्त रूप बनाइये।

२. यङन्त के ही समान 'सूचिसूत्रिमूत्र्यटत्यर्त्यशूर्णोतीनां यङ् वक्तव्यम्' इस वार्तिक से अनेकाच् धातुओं में से सूचि, सूत्रि, मूत्रि, धातुओं के तथा अजादि धातुओं में से अट्, ऋ, अश्, ऊर्णु, इन धातुओं के भी यङ्लुगन्त रूप बनाइये।

३. जिन वकारान्त धातुओं के अन्तिम 'व्' के पूर्व में 'र्' है, जैसे – धुर्व्, तुर्व्, थुर्व्, दुर्व्, मूर्व्, पूर्व्, खर्व्, गर्व्, चर्व्, पर्व्, भर्व्, मर्व्, शर्व्, षर्व्, आदि में, उनके 'व्' का 'राल्लोपः' सूत्र से लोप हो जाता है। ऐसे वकारान्त धातुओं के यङ्लुगन्त रूप बनाये जाते हैं।

४. स्रिव्, मव्, धातुओं के यङ्लुगन्त रूप बनाये जाते हैं।

५. शेष वकारान्त धातुओं के यङ्लुगन्त रूप नहीं बनाये जाते।

६. यकारान्त 'मव्य्' धातु के यङ्लुगन्त रूप नहीं बनाये जाते। शेष यकारान्त धातुओं के यङ्लुगन्त रूप बनाये जा सकते हैं।

यङ् और यङ्लुक् में क्या अन्तर है ?

१. विकरण का अन्तर - किसी भी धातु से जब हम सार्वधातुक लकारों के प्रत्यय लगाते हैं, तब 'कर्तरि शप्' सूत्र से सारे धातुओं से 'शप् विकरण' ही लगाया जाता है। किन्तु ध्यान रहे कि यङ् का लुक् करके बने हुए यङ्लुगन्त धातुओं से कभी भी 'शप् विकरण' नहीं लगाया जाता।

२. पद का अन्तर - यङन्त धातु 'ङित्' हैं। अतः 'अनुदात्तङित आत्मनेपदम्' सूत्र से इनसे आत्मनेपद के प्रत्यय ही लगाये जाते हैं।

किन्तु यङ्लुगन्त धातु अनुदात्तेत्, ङित्, स्वरितेत् तथा ञित्, भिन्न हैं, अतः इनसे किसी भी लकार में 'शेषात् कर्तरि परस्मैपदम्' सूत्र से कर्तृवाच्य में परस्मैपद के ही प्रत्यय लगेंगे, आत्मनेपद के नहीं।

३. द्वित्वविधि का अन्तर - यङ् प्रत्यय का लुक् हो जाने पर, धातुओं को द्वित्व करते समय हमें बहुत अधिक सावधानी रखना पड़ती है। यह सावधानी इस प्रकार है -

एजन्त धातुओं को 'आदेच उपदेशेऽशिति' सूत्र से होने वाला 'आ' अन्तादेश किसी प्रत्यय को निमित्त मानकर नहीं होता है, अतः यङ् प्रत्यय का लुक् हो जाने के बाद भी 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व होने के पहिले एजन्त धातुओं को आत्व हो जायेगा। जैसे -

ध्यै	-	ध्या	ध्या ध्या	/	ग्लै	-	ग्ला	ग्ला ग्ला
छो	-	छा	छा छा	/	म्लै	-	म्ला	म्ला म्ला

किन्तु यङ् प्रत्यय का लुक् हो जाने पर यङ् प्रत्यय को निमित्त मानकर होने वाले अन्य कोई भी अङ्गकार्य यहाँ नहीं होंगे। जैसे -

यङ् प्रत्यय परे होने पर जिन जिन धातुओं को, जो जो अङ्गकार्य प्राप्त था, उसे करके ही हमने धातुओं को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व किया था, किन्तु यङ् का लुक् हो जाने पर ऐसा बिल्कुल भी नहीं करना है। यहाँ तो जो धातु जैसा है, उसे वैसा का वैसा ही द्वित्व कर देना है। जैसे -

'दा' धातु से यङ् प्रत्यय परे होने पर हमने 'घुमास्थागापाजहातिसां हलि'

सूत्र से 'दा' को 'दी' बनाकर, तब द्वित्व किया था - दा - दी - दी दी। किन्तु यङ् का लुक् हो जाने पर ऐसा नहीं करना है। यहाँ 'दा' को बिना कोई कार्य किये, सीधे द्वित्व कर देना है। जैसे - दा - दा दा।

'कृ' धातु को हमने पहिले 'रीङ् ऋतः' सूत्र से 'क्री' बनाकर तब द्वित्व किया था। कृ - क्री क्री। किन्तु यङ् का लुक् हो जाने पर ऐसा नहीं करना है। यहाँ 'कृ' को बिना कोई कार्य किये सीधे द्वित्व कर देना है। जैसे - कृ - कृ कृ।

'तॄ' धातु को हमने पहिले 'ॠत इद् धातोः' सूत्र से तथा 'हलि च' सूत्र से 'तीर्' बनाकर तब द्वित्व किया था। किन्तु यङ् का लुक् हो जाने पर ऐसा नहीं करना है। यहाँ 'तॄ' को बिना कोई कार्य किये सीधे द्वित्व कर देना है। जैसे - तॄ - तॄ तॄ।

'शी' धातु को हमने पहिले 'अयङ् यि क्ङिति' से 'शय्' बनाकर तब द्वित्व किया था। किन्तु यङ् का लुक् हो जाने पर ऐसा नहीं करना है। यहाँ 'शी' को बिना कोई कार्य किये सीधे द्वित्व कर देना है। जैसे - शी - शी शी।

यङ् प्रत्यय परे होने पर हमने ग्रह्, ज्या, व्यध्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज्, स्वप्, स्यम्, व्येञ्, इन धातुओं को हमने, पहिले सम्प्रसारण करके तब द्वित्व किया था। किन्तु यङ् का लुक् हो जाने पर ऐसा नहीं करना है। यहाँ इन धातुओं को बिना कोई कार्य किये सीधे द्वित्व कर देना है। जैसे -

ज्या	-	ज्या ज्या	व्यध्	-	व्यध् व्यध्
व्यच्	-	व्यच् व्यच्	स्यम्	-	स्यम् स्यम्
व्येञ्	-	व्या व्या	स्वप्	-	स्वप् स्वप्
ग्रह्	-	ग्रह् ग्रह्	व्रश्च्	-	व्रश्च् व्रश्च्
प्रच्छ्	-	प्रच्छ् प्रच्छ्	भ्रज्ज्	-	भ्रज्ज् भ्रज्ज् आदि।

४. अनिदित् धातुओं को हमने पहिले नलोप करके तब द्वित्व किया था। किन्तु यहाँ ऐसा नहीं करना है। यहाँ 'अनिदित्' धातुओं को बिना नलोप किये सीधे द्वित्व कर देना है। जैसे -

मन्थ्	-	मन्थ् मन्थ्	चञ्च्	-	चञ्च् चञ्च्
तञ्च्	-	तञ्च् तञ्च्	त्वञ्च्	-	त्वञ्च् त्वञ्च्
श्रम्भ्	-	श्रम्भ् श्रम्भ्	शंस्	-	शंस् शंस्
स्रंभ्	-	स्रंभ् स्रंभ्	रञ्ज्	-	रञ्ज् रञ्ज् आदि।

इसी प्रकार अन्य सारे धातुओं में भी, किसी भी प्रकार का, कोई भी परिवर्तन किये बिना, उन्हें 'सन्यङोः' सूत्र से धातु को ज्यों का त्यों द्वित्व कर देना चाहिये। जैसे-

ला	-	ला ला	वा	-	वा वा
जि	-	जि जि	नी	-	नी नी
हृ	-	हृ हृ	तृ	-	तृ तृ
दृ	-	दृ दृ	शृ	-	शृ शृ
पठ्	-	पठ् पठ्	वद्	-	वद् वद्

हमने जाना कि -

यङ्लुक् में, एजन्त धातुओं को 'आ' बनाकर द्वित्व करना चाहिये किन्तु अन्य सारे धातु, जैसे हैं, उन्हें वैसा का वैसा ही द्वित्व कर देना चाहिये।

यह यङ्लुगन्त धातुओं को द्वित्व करने की विधि पूर्ण हुई।

४. सामान्य अभ्यासकार्य का अन्तर -

द्वित्व होने के बाद सामान्य अभ्यासकार्य ठीक उसी प्रकार होंगे, जैसे कि यङन्त प्रकरण में बतलाये गये हैं। किन्तु -

यङ् परे होने पर कुङ् शब्दे धातु के अभ्यास को जो **'न कवतेर्यङि'** सूत्र से चुत्व का निषेध करके 'कोकूयते' बनाया है, वह चुत्वनिषेध यहाँ नहीं लगेगा और चुत्व होकर यहाँ कु - कु कू - चु कू - चोकवीति ही बनेगा।

५. विशेष अभ्यासकार्य का अन्तर -

यङ्लुक् परे होने पर धातुओं के अभ्यासों को, वे सारे विशेष अभ्यासकार्य होते हैं, जो कि यङ् प्रत्यय परे होने पर बतलाये गये हैं।

केवल ऋकारान्त तथा ऋदुपध धातुओं में एक कार्य अधिक होता है, जो कि यङ् प्रत्यय परे होने पर नहीं होता। वह इस प्रकार है -

ऋदुपध तथा ऋकारान्त धातुओं के अभ्यास के अन्तिम ह्रस्व 'अ' को रुक्, रिक् का आगम

रुग्रिकौ च लुकि - ऋदुपध धातुओं के अभ्यास के अन्तिम ह्रस्व 'अ' को रिक् = रि, रुक् = र् का आगम होता है, यङ् तथा यङ्लुक् परे होने पर।

इन धातुओं को रीगृदुपधस्य सूत्र से रीक् = री का आगम करना हम पढ़ ही चुके हैं। इस प्रकार ऋदुपध धातुओं के अभ्यास के अन्त के ह्रस्व 'अ'

को तीन आगम होते हैं - रीक्, रिक्, रुक्। इन्हें इस प्रकार कीजिये -

ऋदुपध धातु -

धातु	द्वित्वादि करके	रीक् आगम	रिक् आगम	रुक् आगम
नृत्	ननृत्	नरीनृत्	नरिनृत्	नर्नृत्
तृप्	ततृप्	तरीतृप्	तरितृप्	तर्तृप्
वृध्	ववृध्	वरीवृध्	वरिवृध्	वर्वृध्
शृध्	शशृध्	शरीशृध्	शरिशृध्	शर्शृध्
कृष्	चकृष्	चरीकृष्	चरिकृष्	चर्कृष्
मृष्	ममृष्	मरीमृष्	मरिमृष्	मर्मृष्
वृत्	व वृत्	वरीवृत्	वरिवृत्	वर्वृत्

विशेष ऋदुपध कृप् धातु -

कृपो रो लः - कृप् धातु के र् को ल् आदेश होता है। अतः कृप् धातु को द्वित्व तथा अभ्यास कार्य करके अभ्यास को रीक्, रिक्, रुक् का आगम करके चरीकृप्, चरिकृप्, चर्कृप् बन जाने के बाद **'कृपो रो लः'** सूत्र से र, ऋ दोनों को ल् बनाइये -

कृप्	क कृप्	च कृप्	चरीकृप्	चलीक्लृप्
कृप्	क कृप्	च कृप्	चरिकृप्	चलिक्लृप्
कृप्	क कृप्	च कृप्	चर्कृप्	चल्क्लृप्

ऋतश्च - ऋकारान्त धातुओं के अभ्यास के अन्तिम ह्रस्व 'अ' को रीक् = री, रिक् = रि, रुक् = र् का आगम होता है, यङ् प्रत्यय परे होने पर तथा यङ्लुक् परे होने पर।

ह्रस्व ऋकारान्त धातु -

कृ	चकृ	चरीकृ	चरिकृ	चर्कृ
भृ	बभृ	बरीभृ	बरिभृ	बर्भृ
हृ	जहृ	जरीहृ	जरिहृ	जर्हृ

यङ् का लुक् होने पर, इसी प्रकार धातुओं को द्वित्व, सामान्य अभ्यासकार्य तथा विशेष अभ्यासकार्य करके यङ्लुगन्त धातु तैयार कर लीजिये और 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से उनकी धातुसंज्ञा कर लीजिये।

यह सारे धातुओं से यङ्लुगन्त धातु बनाने की विधि पूर्ण हुई।

उभे अभ्यस्तम् - द्वित्व कर देने के बाद, जो एक के स्थान पर दो धातु दिखने लगते हैं, उन दोनों का सम्मिलित नाम अभ्यस्त होता है।

जैसे - दा - दा में, दोनों 'दा' का सम्मिलित नाम अभ्यस्त है। इस प्रकार इन सारे यङ्लुगन्त धातुओं का नाम 'अभ्यस्त' है, यह जानिये।

विस्तार के भय से हम यहाँ इन यङ्लुगन्त धातुओं के सार्वधातुक लकारों के अर्थात् लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के रूप ही बनायेंगे।

शेष लकारों के रूप अङ्गकार्य पढ़कर तथा तत् तत् लकारों के रूप बनाने की विधि पढ़कर बनाये जा सकते हैं।

विशेष - इन यङ्लुगन्त धातुओं के सार्वधातुक लकारों के अर्थात् लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने के लिये द्वितीय गण समूह के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के प्रत्ययों का ही उपयोग करें।

अदभ्यस्तात् - ध्यान रहे कि यङ्लुगन्त धातुओं का नाम अभ्यस्त है। अभ्यस्त धातुओं से परे आने वाले - अन्ति की जगह अति / अन्तु की जगह अतु / तथा अन् की जगह उः / प्रत्यय लगते हैं।

यङो वा - यङ् से परे आने वाले हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्ययों को, अर्थात् ति, सि, मि, त्, स्, तु, इन छह प्रत्ययों को विकल्प से 'ईट् = ई' का आगम होता है। ईट् का आगम होकर ये प्रत्यय, ति से ईति / सि से ईषि / मि से ईमि / त् से ईत् / स् से ईः / तु से ईतु, भी बन जाते हैं।

अतः अब इन सूत्रों से यङ्लुगन्त धातुओं में लगाने के लिये ये प्रत्यय इस प्रकार तैयार हुए -

यङ्लुगन्त धातुओं के लट् लकार के परस्मैपदी प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	***ति, ईति***	तः	अति
म. पु.	***सि, ईषि***	थः	थ
उ. पु.	***मि, ईमि***	वः	मः

यङ्लुगन्त धातुओं के लोट् लकार के परस्मैपदी प्रत्यय

प्र. पु.	***तु, ईतु*** / तात्	ताम्	अतु
म. पु.	हि / तात्	तम्	त
उ. पु.	***आनि***	***आव***	***आम***

यङ्लुगन्त धातुओं के लङ् लकार के परस्मैपदी प्रत्यय

प्र. पु.	***त्, ईत्***	ताम्	उः
म. पु.	***स्(:), ईः***	तम्	त
उ. पु.	***अम्***	व	म

यङ्लुगन्त धातुओं के विधिलिङ् लकार के परस्मैपदी प्रत्यय

प्र. पु.	यात्	याताम्	युः
म.पु.	याः	यातम्	यात
उ.पु.	याम्	याव	याम

ध्यान से देखिये कि इन सार्वधातुक प्रत्ययों में, कुछ प्रत्यय तिरछे, मोटे तथा बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं। ऐसे प्रत्ययों का नाम पित् सार्वधातुक प्रत्यय है, यह जानिये।

इन पित् सार्वधातुक प्रत्ययों में से भी जो प्रत्यय हल् से प्रारम्भ हो रहे हैं, वे हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं तथा जो अच् से प्रारम्भ हो रहे हैं वे अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं, यह जानिये।

जो प्रत्यय सीधे, पतले तथा छोटे अक्षरों में लिखे गये हैं, उनका नाम अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है। इनमें से भी जो प्रत्यय हल् से प्रारम्भ हो रहे हैं वे हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं, तथा जो अच् से प्रारम्भ हो रहे हैं वे अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं।

सार्वधातुकमपित् - सारे अपित् सार्वधातुक प्रत्यय ङित्वत् होते हैं। अर्थात् ङित् न होते हुए भी ङित् जैसे मान लिये जाते हैं।

अतः इनके परे होने पर वे सारे कार्य किये जाते हैं, जो कार्य ङित् प्रत्यय परे होने पर किये जाते हैं। यह ध्यान में रखकर ही किसी भी धातु में इन प्रत्ययों को जोड़ना चाहिये।

अतः इन प्रत्ययों को सही पहिचानना ही धातुरूप बनाने की क्रिया का सबसे आवश्यक कार्य है। इन प्रत्ययों को इस प्रकार पहिचानिये -

हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - ***ति, सि, मि / तु / त्, स्।***

अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - ***ईति, ईषि, ईमि / ईतु, आनि, आव, आम / ईत्, ईः, अम्।***

हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - तः, थः, थ, वः, मः / हि, तात्, ताम्, तात्,

(ङित् प्रत्यय) तम्, त / ताम्, तम्, त, व, म / यात्, याताम्, युः, याः, यातम्, यात, याम्, याव, याम।

अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - अति / अतु / उः।
(ङित् प्रत्यय)

धातु से परे ज्योंही कोई प्रत्यय आये तो आप तत्काल विचार कीजिये कि वह प्रत्यय इनमें से किस वर्ग का है ?

वह प्रत्यय 'पित् सार्वधातुक' है या 'अपित् सार्वधातुक' है। यदि वह पित् सार्वधातुक प्रत्यय है, तो पुनः विचार कीजिये कि वह अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय है, अथवा हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय है।

यदि वह अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है, तो पुनः विचार कीजिये कि वह 'अजादि अपित् सार्वधातुक' है, अथवा 'हलादि अपित् सार्वधातुक' है।

इस प्रकार प्रत्यय की सही पहिचान करके ही आप धातु + प्रत्यय को जोड़ें, तभी धातुरूप बनाते बनेंगे।

धातु + प्रत्यय को जोड़ने का काम भी दो हिस्सों में होता है।

१. पहिले अङ्गकार्य करना।

२. अङ्गकार्य करने के बाद ही सन्धिकार्य करना।

यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् - जिससे भी प्रत्यय का विधान किया जाता है, उस प्रत्यय के पूर्व में जो जो कुछ भी होता है, वह पूरा का पूरा उस प्रत्यय का अङ्ग कहलाता है।

जैसे - नेनी + ति में 'नेनी' अङ्ग है। अङ्ग पर प्रत्यय का जो प्रभाव पड़ता है, उसका नाम अङ्गकार्य होता है। जैसे - नेनी + ति में, ति प्रत्यय को देखकर नेनी को गुण होकर नेने हो जाता है - नेनी + ति = नेने + ति। यह गुण होना अङ्गकार्य है।

लेलिख् + ति में, ति प्रत्यय को देखकर लेलिख् को गुण होता है - लेलेख् + ति। यह गुण होना अङ्गकार्य है।

चर्कृ + ति में, ति प्रत्यय को देखकर चर्कृ को गुण होता है - चर्कृ + ति = चर्कर् + ति। यह गुण होना अङ्गकार्य है।

नेनी + तः में, तः प्रत्यय को देखकर नेनी को गुण नहीं होता - नेनी + तः = नेनीतः। यह गुण न होना भी अङ्गकार्य है।

चर्कृ + तः = चर्कृतः में, तः प्रत्यय को देखकर चर्कृ को गुण नहीं होता। यह गुण न होना भी अङ्गकार्य है।

हमने अङ्गकार्यों को प्रथम खण्ड में अङ्गकार्य वाले पाठ में बतलाया है। उन्हें वहीं देखें। यहाँ भी संक्षेप में सूत्रनिर्देश करते चलेंगे।

ध्यान रहे कि अङ्गकार्य करने के बाद ही सन्धिकार्य करें। सन्धियों को सन्धि के पाठ में देखें।

धातुओं को द्वित्व तथा अभ्यासादिकार्य कर चुकने के बाद ,जो यङ्लुगन्त धातु हमने तैयार किये हैं, उनमें अब लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के प्रत्ययों को जोड़ें। यह कार्य हम इस क्रम से करें।

अजन्त यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि

१. आकारान्त तथा एजन्त यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि

वा - वावा / ध्यै - ध्या - दाध्या / ग्लै - ग्ला - जाग्ला आदि।

१. हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, इन्हें कोई अङ्गकार्य मत कीजिये, केवल धातु + प्रत्यय को जोड़ दीजिये।

वा - वावा + ति = वावाति।

२. अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर भी, इन्हें कोई अङ्गकार्य मत कीजिये। धातु + प्रत्यय 'आद्गुणः' सूत्र से गुण करके जोड़ दीजिये।

वा - वावा + ईति = 'आद्गुणः' सूत्र से गुण करके वावेति।

२. हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय अर्थात् ङित् प्रत्यय परे होने पर 'ई हल्यघोः' सूत्र से इनके अन्तिम 'आ' को 'ई' बना दीजिये।

वा - वावा + तः - वावी + तः = वावीतः।

३. अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय अर्थात् ङित् प्रत्यय परे होने पर 'श्नाभ्यस्तयोरातः' सूत्र से इनके 'आ' का लोप कर दीजिये। वा - वावा + अति - वाव् + अति = वावति। इनके पूरे रूप इस प्रकार बने-

लट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	वावाति / वावेति	वावीतः	वावति
म.पु.	वावासि / वावेषि	वावीथः	वावीथ
उ.पु.	वावामि / वावेमि	वावीवः	वावीमः

लोट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	वावातु / वावेतु वावीतात्	वावीताम्	वावतु
म.पु	वावीहि / वावीतात्	वावीतम्	वावीत
उ.पु.	वावानि	वावाव	वावाम

लङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	अवावात् / अवावेत्	अवावीताम्	अवावुः
म.पु.	अवावाः / अवावेः	अवावीतम्	अवावीत
उ.पु.	अवावाम्	अवावीव	अवावीम

विधिलिङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	वावीयात्	वावीयाताम्	वावीयुः
म.पु.	वावीयाः	वावीयातम्	वावीयात
उ.पु.	वावीयाम्	वावीयाव	वावीयाम

इसी प्रकार सारे आकारान्त तथा एजन्त यङ्लुगन्त धातुओं से ध्यै - ध्या - दाध्या - दाध्याति, दाध्येति / पा - पा - पापाति, पापेति आदि बनाइये।

२. इकारान्त, ईकारान्त यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि

जैसे - नी - नेनी / भी - बेभी / जि - जेजि / चि - चेचि आदि।

१. हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'इ', 'ई' को सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण कीजिये। नी - नेनी + ति / नेने + ति = नेनेति

२. अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण कीजिये। नी - नेनी + ईति - नेने + ईति / अब एचोऽयवायावः सूत्र से अय् आदेश कीजिये। नेनय् + ईति = नेनयीति।

३. हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय अर्थात् ङित् प्रत्यय परे होने पर कुछ मत कीजिये। नी - नेनी + तः = नेनीतः।

अब अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्ययों का विचार खण्डों में करें -

१. 'उस्' प्रत्यय भी यद्यपि अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है, तथापि इसके परे होने पर 'जुसि च' सूत्र से गुण कीजिये। अनेनी + उः - गुण करके अनेने + उः - अनेनयुः।

२. शेष अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर देखें, कि यदि इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के अन्तिम 'इ' 'ई' के पूर्व में संयोग नहीं है, जैसे - नी - नेनी में, तब इस असंयोगपूर्व अन्तिम 'इ' 'ई' को अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' सूत्र से यण् कर दीजिये।

यथा - नी - नेनी + अति - यण् करके - नेन्य् + अति = नेन्यति।

२. यदि इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के अन्तिम 'इ' 'ई' के पूर्व में संयोग है, जैसे - चेक्री में, तब इस संयोगपूर्व अन्तिम 'इ' 'ई' को अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से इयङ् कर दीजिये।

यथा - क्री - चेक्री + अति - इयङ् करके -चेक्रिय् + अति = चेक्रियति।

असंयोगपूर्व इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के पूरे रूप इस प्रकार बने-

लट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	नेनेति / नेनयीति	नेनीतः	नेन्यति
म.पु.	नेनेषि / नेनयीषि	नेनीथः	नेनीथ
उ.पु.	नेनेमि / नेनयीमि	नेनीवः	नेनीमः

लङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	अनेनेत् / अनेनयीत्	अनेनीताम्	अनेनयुः
म.पु.	अनेनेः / अनेनयीः	अनेनीतम्	अनेनीत
उ.पु.	अनेनयम्	अनेनीव	अनेनीम

लोट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	नेनेतु / नेनयीतु नेनीतात्	नेनीताम्	नेन्यतु
म.प्र.	नेनीहि / नेनीतात्	नेनीतम्	नेनीत
उ.पु.	नेनयानि	नेनयाव	नेनयाम

विधिलिङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	नेनीयात्	नेनीयाताम्	नेनीयुः
म.पु.	नेनीयाः	नेनीयातम्	नेनीयात
उ.पु.	नेनीयाम्	नेनीयाव	नेनीयाम

इसी प्रकार सारे असंयोगपूर्व इकारान्त, ईकारान्त यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाइये।

संयोगपूर्व इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के पूरे रूप इस प्रकार बने-

लट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	जेह्रेति / जेह्रयीति	जेह्रीत:	जेह्रियति
म.पु.	जेह्रेषि / जेह्रयीषि	जेह्रीथ:	जेह्रीथ
उ.पु.	जेह्रेमि / जेह्रयीमि	जेह्रीव:	जेह्रीम:

लङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	अजेह्रेत् / अजेह्रयीत्	अजेह्रीताम्	अजेह्रयु:
म.पु.	अजेह्रे: / अजेह्रयी:	अजेह्रीतम्	अजेह्रीत
उ.पु.	अजेह्रयम्	अजेह्रीव	अजेह्रीम

लोट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	जेह्रेतु / जेह्रयीतु जेह्रीतात्	जेह्रीताम्	जेह्रियतु
म.प्र.	जेह्रीहि / जेह्रीतात्	जेह्रीतम्	जेह्रीत
उ.पु.	जेह्रयाणि	जेह्रयाव	जेह्रयाम

विधिलिङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	जेह्रीयात्	जेह्रीयाताम्	जेह्रीयु:
म.पु.	जेह्रीया:	जेह्रीयातम्	जेह्रीयात
उ.पु.	जेह्रीयाम्	जेह्रीयाव	जेह्रीयाम

३. उकारान्त, ऊकारान्त यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि

जैसे - भू - बोभू / पू - पोपू / लू - लोलू आदि।

१. हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयो: से गुण कीजिये। भू - बोभू + ति = बोभोति।

२. अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयो: से गुण कीजिये - बोभू + ईति - बोभो + ईति / अब एचोऽयवायाव: सूत्र से अवादेश कीजिये। बोभव् + ईति = बोभवीति।

३. हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर कुछ मत कीजिये। बोभू + त: = बोभूत:।

४. 'उस्' प्रत्यय यद्यपि अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है, तथापि इसके

परे होने पर 'जुसि च' सूत्र से गुण कीजिये। अबोभू + उः - गुण करके - अबोभो + उः / अवादेश करके - अबोभवुः।

५. 'उस्' के अलावा शेष अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर हुश्नुवोः सार्वधातुके सूत्र से उ, ऊ को उवङ् कर दीजिये। बोभू + अति - उवङ् आदेश करके - बोभुव् + अति = बोभुवति। पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	बोभोति / बोभवीति	बोभूतः	बोभुवति
म.पु.	बोभोषि / बोभवीषि	बोभूथः	बोभूथ
उ.पु.	बोभोमि / बोभवीमि	बोभूवः	बोभूमः

लङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	अबोभोत् / अबोभवीत्	अबोभूताम्	अबोभवुः
म.पु.	अबोभोः / अबोभवीः	अबोभूतम्	अबोभूत
उ.पु.	अबोभवम्	अबोभूव	अबोभूम

लोट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	बोभोतु / बोभवीतु बोभूतात्	बोभूताम्	बोभुवतु
म.प्र.	बोभूहि / बोभूतात्	बोभूतम्	बोभूत
उ.पु.	बोभवानि	बोभवाव	बोभवाम

विधिलिङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	बोभूयात्	बोभूयाताम्	बोभुयुः
म.पु.	बोभूयाः	बोभूयातम्	बोभूयात
उ.पु.	बोभूयाम्	बोभूयाव	बोभूयाम

इसी प्रकार सारे उकारान्त तथा ऊकारान्त यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाइये।

४. ह्रस्व ऋकारान्त, यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि

जैसे - कृ - चर्कृ / हृ - जर्हृ / भृ - बर्भृ आदि।

१. हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण कीजिये। कृ - चर्कृ - चर्कृ + ति = चर्कर्ति।

२. अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गु

कीजिये। कृ - चर्कृ - चर्कृ + ईति = चर्करीति।

३. हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर कोई अङ्गकार्य मत कीजिये। कृ - चर्कृ - चर्कृ + तः = चर्कृतः।

४. उस् प्रत्यय यद्यपि अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय अर्थात् ङित् प्रत्यय है, तथापि इसके परे होने पर जुसि च सूत्र से गुण कीजिये। अचर्कृ + उः - गुण करके अचर्कर् + उः - अचर्करुः।

५. उस् के अलावा शेष अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर इको यणचि सूत्र से ऋ, ॠ को यण् कर दीजिये। कृ - चर्कृ - चर्कृ + अति = यण् करके चर्क्रति। पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	चर्कर्ति / चर्करीति	चर्कृतः	चर्क्रति
म.पु.	चर्कर्षि / चर्करीषि	चर्कृथः	चर्कृथ
उ.पु.	चर्कर्मि / चर्करीमि	चर्कृवः	चर्कृमः

लङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	अचर्कः / अचर्करीत्	अचर्कृताम्	अचर्करुः
म.पु.	अचर्कः / अचर्करीः	अचर्कृतम्	अचर्कृत
उ.पु.	अचर्करम्	अचर्कृव	अचर्कृम

लोट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	चर्कर्तु / चर्करीतु चर्कृतात्	चर्कृताम्	चर्क्रतु
म.प्र.	चर्कृहि / चर्कृतात्	चर्कृतम्	चर्कृत
उ.पु.	चर्कराणि	चर्कराव	चर्कराम

विधिलिङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	चर्कृयात्	चर्कृयाताम्	चर्कृयुः
म.पु.	चर्कृयाः	चर्कृयातम्	चर्कृयात
उ.पु.	चर्कृयाम्	चर्कृयाव	चर्कृयाम

इसी प्रकार सारे ह्रस्व ऋकारान्त यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाइये।

दीर्घ ॠकारान्त, धातुओं के दो वर्ग बनाइये -

१. ऐसे दीर्घ ॠकारान्त, धातु जिनके 'ॠ' के पूर्व में ओष्ठ्य व्यञ्जन

न हो। जैसे - जैसे तॄ - तातॄ / जॄ - जाजॄ / शॄ - शाशॄ आदि।

२. ऐसे दीर्घ ॠकारान्त, धातु जिनके 'ॠ' के पूर्व में ओष्ठ्य व्यञ्जन हो। जैसे - पॄ - पापॄ / वॄ - वावॄ आदि।

५. जिनके 'ॠ' के पूर्व में ओष्ठ्य व्यञ्जन न हो, ऐसे दीर्घ ॠकारान्त, यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि

जैसे तॄ - तातॄ / जॄ - जाजॄ / शॄ - शाशॄ आदि।

१. हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण कीजिये। तॄ - तातॄ + ति - तातर् + ति = तातर्ति।

२. अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण कीजिये। तॄ - तातॄ + ईति - तातर् + ईति = तातरीति।

३. हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर ॠत इद् धातोः सूत्र से, उरण् रपरः सूत्र की सहायता से 'इर्' बनाइये।

तॄ - तातॄ + तः - तातिर् + तः। उसके बाद हलि च सूत्र से उसके इक् को दीर्घ कीजिये। तातिर् + तः = तातीर्तः।

४. उस् प्रत्यय यद्यपि अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है, तथापि इसके परे होने पर जुसि च सूत्र से गुण कीजिये। अतातॄ + उः - गुण करके अतातर् + उः = अतातरुः।

५. उस् के अलावा शेष अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर ॠत इद् धातोः सूत्र से उरण् रपरः सूत्र की सहायता से, इर् बनाइये। परन्तु आगे हल् न होने के कारण दीर्घ मत कीजिये। तॄ - तातिर् + अति = तातिरति। पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	तातर्ति / तातरीति	तातीर्तः	तातिरति
म.पु.	तातर्षि / तातरीषि	तातीर्थः	तातीर्थ
उ.पु.	तातर्मि / तातरीमि	तातीर्वः	तातीर्मः

लङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	अतातः / अतातरीत्	अतातीर्ताम्	अतातरुः
म.पु.	अतातः / अतातरीः	अतातीर्तम्	अतातीर्त
उ.पु.	अतातरम्	अतातीर्व	अतातीर्म

अतातः - अतातॄ + स् - यहाँ सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण होकर अतातर् + स् - बनने पर 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से स् का लोप करके तथा र् को रुत्व विसर्ग करके अतातः बनता है।

लोट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	तातर्तु / तातरीतु तातीर्तात्	तातीर्ताम्	तातिरतु
म.प्र.	तातीर्हि / तातीर्तात्	तातीर्तम्	तातीर्त
उ.पु.	तातराणि	तातराव	तातराम

विधिलिङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	तातीर्यात्	तातीर्याताम्	तातीर्युः
म.पु.	तातीर्याः	तातीर्यातम्	तातीर्यात
उ.पु.	तातीर्याम्	तातीर्याव	तातीर्याम

६. जिनके 'ॠ' के पूर्व में ओष्ठ्य व्यञ्जन हो, ऐसे दीर्घ ॠकारान्त, यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि

जैसे पॄ - पापॄ / पॄ - वावॄ आदि।

१. हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से पूर्ववत् गुण कीजिये। पॄ - पापॄ + ति - पापर् + ति = पापर्ति।

२. अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः से पूर्ववत् गुण कीजिये। पॄ - पापॄ + ईति - पापर् + ईति = पापरीति।

३. यदि ॠ के पूर्व में कोई ओष्ठ्य व्यञ्जन हो, तब हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर 'ॠ' को उदोष्ठ्यपूर्वस्य सूत्र से उरण् रपरः सूत्र की सूत्र की सहायता से 'उर्' बनाइये। उसके बाद हलि च सूत्र से उसके इक् को दीर्घ कीजिये।

यथा - पॄ - पापॄ + तः = पापूर्तः। वॄ - वावॄ + तः = वावूर्तः।

४. उस् के अलावा शेष अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर 'ॠ' को उदोष्ठ्यपूर्वस्य सूत्र से उरण् रपरः सूत्र की सूत्र की सहायता से 'उर्' बनाइये, दीर्घ मत कीजिये। पॄ - पापॄ + अति = पापुरति / वॄ - वावॄ + अति = वावुरति।

५. उस् प्रत्यय यद्यपि अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है, तथापि इसके परे होने पर जुसि च सूत्र से गुण कीजिये। अपापॄ + उः - गुण करके अपापर् + उः = अपापरुः। पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	पापर्ति / पापरीति	पापूर्तः	पापुरति
म.पु.	पापर्षि / पापरीषि	पापूर्थः	पापूर्थ
उ.पु.	पापर्मि / पापरीमि	पापूर्वः	पापूर्मः

लङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	अपापः / अपापरीत्	अपापूर्ताम्	अपापरुः
म.पु.	अपापः / अपापरीः	अपापूर्तम्	अपापूर्त
उ.पु.	अपापरम्	अपापूर्व	अपापूर्म

लोट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	पापर्तु / पापरीतु पापूर्तात्	पापूर्ताम्	पापुरतु
म.प्र.	पापूर्हि / पापूर्तात्	पापूर्तम्	पापूर्त
उ.पु.	पापराणि	पापराव	पापराम

विधिलिङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	पापूर्यात्	पापूर्याताम्	पापूर्युः
म.पु.	पापूर्याः	पापूर्यातम्	पापूर्यात
उ.पु.	पापूर्याम्	पापूर्याव	पापूर्याम

इसी प्रकार सारे ॠकारान्त यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाइये।

यह सारे अजन्त यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

हलन्त यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि

अब हम हलन्त धातुओं के इस प्रकार वर्ग बनाकर, इनके रूप बनायें-

अनिदित् धातु, इदुपध धातु, उदुपध धातु, ऋदुपध धातु, तथा शेष धातु। ध्यान रहे कि -

१. धातु को बिना कोई अङ्गकार्य किये पहिले सीधे द्वित्व कर लें।

२. द्वित्व करने के बाद अभ्यासकार्य तथा विशेष अभ्यासकार्य ठीक वैसे ही करें, जैसे यङन्त में किये थे।

३. अब ति, तः, अन्ति आदि प्रत्यय लगायें। इन प्रत्ययों की सही पहिचान करके ही आप अङ्गकार्य, सम्प्रसारण, नलोप आदि कार्य करें।

४. अन्त में, धातु + प्रत्यय को जोड़ें, अर्थात् सन्धि करें।

ग्रह्, ज्या, व्यध् यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि

ग्रह् धातु - द्वित्वाभ्यासकार्य होकर - ग्रह् ग्रह् - जाग्रह् -

जाग्रह् + ति / प्रत्यय के 'त' को झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से ध बना दीजिये - जाग्रढ् + धि / प्रत्यय के 'ध' को ष्टुना ष्टुः सूत्र से 'ढ' बनाइये - जाग्रढ् + ढि / ढो ढे लोपः सूत्र से ढ् के बाद ढ् आने पर, पूर्व वाले ढ् का लोप करके - जाग्र + ढि / ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः सूत्र से लुप्त ढ् के पूर्व में स्थित अण् को दीर्घ करके जाग्राढि।

जाग्रह् + तः -

विशेष - यहाँ 'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' सूत्र से ग्रह्यादि धातुओं को सम्प्रसारण प्राप्त है।

परन्तु 'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' इस सूत्र को देखिये।

इसमें वष्टि, विचति, वृश्चति, पृच्छति, भृज्जति, इन धातुओं में 'ति' प्रत्यय लगा है। जिन धातुओं में 'ति' प्रत्यय लगा है, उन धातुओं को यङ्लुगन्त प्रकरण में कभी सम्प्रसारण नहीं होता।

अतः यङ्लुगन्त प्रकरण में यह सम्प्रसारण, अपित् प्रत्यय परे होने पर, केवल ग्रह, ज्या, व्यध् इन तीन धातुओं को ही होता है, क्योंकि इनमें 'ति' प्रत्यय नहीं लगा है। परन्तु ध्यान रहे कि पित् प्रत्यय परे होने पर इन्हें भी नहीं होता।

जाग्रह् + तः / 'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' सूत्र से र् को सम्प्रसारण कीजिये - जागृह् + तः / प्रत्यय के 'त' को झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से ध बना दीजिये - जागृढ् + धः / प्रत्यय के 'ध' को ष्टुना ष्टुः सूत्र से 'ढ' बनाइये - जागृढ् + ढः / ढो ढे लोपः सूत्र से ढ् के बाद ढ् आने पर, पूर्व वाले ढ् का लोप करके - जागृ + ढः - जागृढः।

अतः ग्रह् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

प्र.पु.	जाग्राढि / जाग्रहीति	जागृढः	जागृहति
म.पु.	जाघ्राक्षि / जाग्रहीषि	जागृढः	जागृढ
उ.पु.	जाग्रह्मि / जाग्रहीमि	जागृह्वः	जागृह्मः

ज्या धातु - द्वित्वाभ्यासकार्य होकर - जाज्या

जाज्या + ति - सम्प्रसारण किये बिना सन्धि करके - जाज्याति।

जाज्या + ति - सम्प्रसारण किये बिना सन्धि करके - जाज्येति।

जाज्या + तः - ग्रहिज्या. सूत्र से सम्प्रसारण करके - जाजि + तः / हलः सूत्र से 'इ' को दीर्घ करके - जाजीतः।

अतः ज्या धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

प्र.पु.	जाज्याति / जाज्येति	जाजीतः	जाज्यति
म.पु.	जाज्यासि / जाज्येषि	जाजीथः	जाजीथ
उ.पु.	जाज्यामि / जाज्येमि	जाजीवः	जाजीमः

व्यध् - द्वित्वादि होकर वाव्यध् धातु -

प्र.पु.	वाव्यद्धि / वाव्यधीति	वाविद्धः	वाविधति
म.पु.	वाव्यत्सि / वाव्यधीषि	वाविद्धः	वाविद्ध
उ.पु.	वाव्यध्मि / वाव्यधीमि	वाविध्वः	वाविध्मः

इनके अलावा किसी भी धातु को यङ्लुक् में सम्प्रसारण नहीं होता।

वय् धातु - लिट् लकार में ही वेञ् धातु को ही 'वेञो वयिः' सूत्र से वय् आदेश होता है। अतः 'वय्' के रूप यहाँ मत बनाइये।

अनिदित् धातु

मन्थ् - द्वित्वादि करके मामन्थ् -

मामन्थ् + ति - खरि च से चर्त्व सन्धि करके - मामन्त्ति / मामन्थ् + ईति - मामन्थीति। मामन्थ् + तः -

अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति - अपित् प्रत्यय अर्थात् कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर, अनिदित् धातुओं की उपधा के 'न्' का लोप होता है।

मामन्थ् + तः - मामथ् + तः / सन्धि करके - मामत्तः।

इसके पूरे रूप इस प्रकार बने -

प्र.पु.	मामन्त्ति / मामन्थीति	मामत्तः	मामथति
म.पु.	मामन्त्सि / मामन्थीषि	मामत्थः	मामत्थ
उ.पु.	मामन्थ्मि / मामन्थीमि	मामथ्वः	मामथ्मः

अब धातुपाठ के सारे अनिदित् धातु दे रहे हैं -

पित् प्रत्यय परे होने पर इनकी उपधा के 'न्' का लोप नहीं होगा। अपित् प्रत्यय परे होने पर इनकी उपधा के 'न्' का लोप हो जायेगा -

धातु		'न्' का लोप किये बिना पित् प्रत्यय इनसे लगाइये	'न्' का लोप करके अपित् प्रत्यय इनसे लगाइये
सृम्भ्	-	सरीसृम्भ्	सरीसृभ्
तृम्फ्	-	तरीतृम्फ्	तरीतृफ्
तृन्ह्	-	तरीतृन्ह्	तरीतृह्
दृम्फ्	-	दरीदृम्फ्	दरीदृफ्
दंश्	-	दंदंश्	दंदश्
वञ्चु	-	वनीवञ्च्	वनीवच्
स्कन्द्	-	चनीस्कन्द्	चनीस्कद्
स्रंस्	-	सनीस्रंस्	सनीस्रस्
ध्वंस्	-	दनीध्वंस्	दनीध्वस्
भ्रंस्	-	बनीभ्रंस्	बनीभ्रस्
कुञ्च्	-	चोकुञ्च्	चोकुच्
क्रुञ्च्	-	चोक्रुञ्च्	चोक्रुच्
लुञ्च्	-	लोलुञ्च्	लोलुच्
म्रुञ्च्	-	मोम्रुञ्च्	मोम्रुच्
म्लुञ्च्	-	मोम्लुञ्च्	मोम्लुच्
लुण्ट्	-	लोलुण्ट्	लोलुट्
ग्लुञ्च्	-	जोग्लुञ्च्	जोग्लुच्
तुम्प्	-	तोतुम्प्	तोतुप्
कुन्थ्	-	चोकुन्थ्	चोकुथ्
गुम्फ्	-	जोगुम्फ्	जोगुफ्
कुंस्	-	चोकुंस्	चोकुस्
त्रुम्प्	-	तोत्रुम्प्	तोत्रुप्
तुम्फ्	-	तोतुम्फ्	तोतुफ्
त्रुम्फ्	-	तोत्रुम्फ्	तोत्रुफ्
शुम्भ्	-	शोशुम्भ्	शोशुभ्
शुन्ध्	-	शोशुन्ध्	शोशुध्

मन्थ्	-	मामन्थ्	मामथ्
चञ्च्	-	चाचञ्च्	चाचच्
तञ्च्	-	तातञ्च्	तातच्
त्वञ्च्	-	तात्वञ्च्	तात्वच्
श्रम्भ्	-	शाश्रम्भ्	शाश्रभ्
शंस्	-	शाशंस्	शाशस्
स्रंभ्	-	सास्रंभ्	सास्रभ्
रञ्ज्	-	ररञ्ज्	ररज्
स्पन्द्	-	पास्पन्द्	पास्पद्
भ्रंश्	-	बाभ्रंश्	बाभ्रश्
दम्भ्	-	दादम्भ्	दादभ्
भञ्ज्	-	बाभञ्ज्	बाभज्
बन्ध्	-	बाबन्ध्	बाबध्
श्रन्थ्	-	शाश्रन्थ्	शाश्रथ्
ग्रन्थ्	-	जाग्रन्थ्	जाग्रथ्
हम्म्	-	जाहम्म्	जाहम्
स्वञ्ज्	-	सास्वञ्ज्	सास्वज्
सञ्ज्	-	सासञ्ज्	सासज्

ध्यान रहे कि पित् प्रत्यय परे होने पर **'नलोप न करके'** तथा अपित् प्रत्यय परे होने पर **'नलोप करके'** ही सन्धिकार्य किये जायें।

अब हम वर्गीकरण करके रूप बनायें -

लघु इगुपध धातु -

अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर -

नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके - अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर अभ्यस्तसंज्ञक अङ्ग की उपधा के लघु इक् को गुण नहीं होता है। यथा - लेलिख् + ईति = लेलिखीति। मोमुद् + ईति = मोमुदीति। वरीवृष् + ईति = वरीवृषीति।

हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर -

'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से अङ्ग की उपधा को गुण कीजिये। उसके बाद ही सन्धिकार्य कीजिये। यथा - लिख् - लेलिख् + ति - लेलेख् + ति =

लेलेक्ति। मुद् - मोमुद् + ति - मोमोद् + ति = मोमोत्ति। वृष् - वरीवृष् + ति - वरीवर्ष् + ति = वरीवर्ष्टि।

हलादि तथा अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर - 'क्ङिति च' सूत्र से उपधा के लघु इक् के गुण का निषेध कीजिये। यथा - लिख् - लेलिख् + तः - लेलिख् + तः = लेलिक्तः। लेलिख् + अति = लेलिखति। मोमुद् + अति = मोमुदति।

शेष धातु - सारे पित् तथा अपित् प्रत्यय परे होने पर इन्हें कुछ मत कीजिये।

अब केवल सन्धि करना है। हमने सन्धिकार्यों को विस्तार से प्रथम खण्ड में सन्धि वाले पाठ में बतलाया है। उन्हें भलीभाँति पढ़कर ही अब आप यङ्लुगन्त धातुओं के रूप बनायें।

अब हम इन धातुओं के केवल लट् लकार के रूप बनाकर दे रहे हैं। शेष रूप सन्धियाँ पढ़कर आप स्वयं बनायें -

अब हम उदाहरण के लिये, हलन्त धातुओं के अन्तिम वर्ण के क्रम से एक एक धातु के रूप दे रहे हैं, इसी के अनुकरण से इन वर्णों से अन्त होने वाले धातुओं के रूप बनाइये, परन्तु ध्यान रहे कि अङ्गकार्य करने के बाद ही सन्धि करें।

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद ककारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - शक् - शाशक् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	शाशक्ति / शाशकीति	शाशक्तः	शाशकति
म.पु.	शाशक्षि / शाशकीषि	शाशक्थः	शाशक्थ
उ.पु.	शाशक्मि / शाशकीमि	शाशक्वः	शाशक्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद खकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - लिख् - लेलिख् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	लेलेक्ति / लेलिखीति	लेलिक्तः	लेलिखति
म.पु.	लेलेक्षि / लेलिखीषि	लेलिक्थः	लेलिक्थ
उ.पु.	लेलेख्मि / लेलिखीमि	लेलिख्वः	लेलिख्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद गकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - रिङ्ग् - रेरिङ्ग् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	रेरिङ्क्ति / रेरिङ्गीति	रेरिङ्क्तः	रेरिङ्गति
म.पु.	रेरिङ्क्षि / रेरिङ्गीषि	रेरिङ्क्थः	रेरिङ्क्थ
उ.पु.	रेरिङ्ग्मि / रेरिङ्गीमि	रेरिङ्ग्वः	रेरिङ्ग्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद घकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - घघ् - जाघघ् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	जाघग्धि / जाघघीति	जाघग्धः	जाघघति
म.पु.	जाघक्षि / जाघघीषि	जाघग्धः	जाघग्ध
उ.पु.	जाघघ्मि / जाघघीमि	जाघघ्वः	जाघघ्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद चकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - व्यच् - वाव्यच् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	वाव्यक्ति / वाव्यचीति	वाव्यक्तः	वाव्यचति
म.पु.	वाव्यक्षि / वाव्यचीषि	वाव्यक्थः	वाव्यक्थ
उ.पु.	वाव्यच्मि / वाव्यचीमि	वाव्यच्वः	वाव्यच्मः

चकारान्त व्रश्च् - वाव्रश्च् - लट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	वाव्रष्टि / वाव्रश्चीति	वाव्रष्टः	वाव्रश्चति
म.पु.	वाव्रक्षि / वाव्रश्चीषि	वाव्रष्ठः	वाव्रष्ठ
उ.पु.	वाव्रश्च्मि / वाव्रश्चीमि	वाव्रश्च्वः	वाव्रश्च्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद छकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - प्रच्छ् - पाप्रच्छ् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	पाप्रष्टि / पाप्रच्छीति	पाप्रष्ठः	पाप्रच्छति
म.पु.	पाप्रक्षि / पाप्रच्छीषि	पाप्रष्ठः	पाप्रष्ठ
उ.पु.	पाप्रश्मि / पाप्रच्छीमि	पाप्रच्छ्वः	पाप्रश्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद जकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - त्यज् - तात्यज् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	तात्यक्ति / तात्यजीति	तात्यक्तः	तात्यजति
म.पु.	तात्यक्षि / तात्यजीषि	तात्यक्थः	तात्यक्थ
उ.पु.	तात्यज्मि / तात्यजीमि	तात्यज्वः	तात्यज्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद टकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - लुण्ट् - लोलुण्ट् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र. पु.	लोलुण्ट्टि / लोलुण्टीति	लोलुण्ट्टः	लोलुण्टति
म.पु.	लोलुण्ट्सि / लोलुण्टीषि	लोलुण्ट्ठः	लोलुण्ट्ठ
उ.पु.	लोलुण्ट्मि / लोलुण्टीमि	लोलुण्ट्वः	लोलुण्ट्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद ठकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - शठ् - शाशठ् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	शाशट्टि / शाशठीति	शाशट्टः	शाशठति
म.पु.	शाशट्सि / शाशठीषि	शाशट्ठः	शाशट्ठ
उ.पु.	शाशठ्मि / शाशठीमि	शाशठ्वः	शाशठ्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद डकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - कड् - चाकड् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	चाकड्ढि / चाकडीति	चाकट्टः	चाकडति
म.पु.	चाकट्सि / चाकडीषि	चाकट्ठः	चाकट्ठ
उ.पु.	चाकड्मि / चाकडीमि	चाकड्वः	चाकड्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद णकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - कण् - चाकंण् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	चङ्कण्टि / चङ्कणीति	चङ्कण्टः	चङ्कणति
म.पु.	चङ्कण्सि / चङ्कणीषि	चङ्कण्ठः	चङ्कण्ठ
उ.पु.	चङ्कण्मि / चङ्कणीमि	चङ्कण्वः	चङ्कण्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद तकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - च्युत् - चोच्युत् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	चोच्योत्ति / चोच्युतीति	चोच्युत्तः	चोच्युतति
म.पु.	चोच्योत्सि / चोच्युतीषि	चोच्युत्थः	चोच्युत्थ
उ.पु.	चोच्योत्मि / चोच्युतीमि	चोच्युत्वः	चोच्युत्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद थकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - कुन्थ् - चोकुन्थ् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	चोकुन्ति / चोकुन्थीति	चोकुन्त्तः	चोकुन्थति
म.पु.	चोकुन्त्सि / चोकुन्थीषि	चोकुन्थः	चोकुन्थ
उ.पु.	चोकुन्थ्मि / चोकुन्थीमि	चोकुन्थ्वः	चोकुन्थ्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद दकारान्त धातुओं को प्रत्ययों

में इस प्रकार जोड़िये - ररद् - साररद् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	रारत्ति / रारदीति	रारत्त:	रारदति
म.पु.	रारत्सि / रारदीषि	रारत्थ:	रारत्थ
उ.पु.	रारद्मि / रारदीमि	रारद्व:	रारद्म:

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद नकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - मन् - मंमन् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	मंमन्ति / मंमनीति	मंमत:	मंमनति
म.पु.	मंमंसि / मंमनीषि	मंमथ:	मंमथ
उ.पु.	मंमन्मि / मंमनीमि	मंमन्व:	मंमन्म:

'अनुदात्तोपदेशवनति'. सूत्र से अनुनासिक न् का लोप करके - मंमत:, मंमथ: ।

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद पकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - गुप् - जोगुप् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	जोगोप्ति / जोगुपीति	जोगुप्त:	जोगुपति
म.पु.	जोगोप्सि / जोगुपीषि	जोगुप्थ:	जोगुप्थ
उ.पु.	जोगोप्मि / जोगुपीमि	जोगुप्व:	जोगुप्म:

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद फकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - तुम्फ् - तोतुम्फ् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	तोतुम्प्ति / तोतुम्फीति	तोतुम्प्त:	तोतुम्फति
म.पु.	तोतुम्प्सि / तोतुम्फीषि	तोतुम्प्थ:	तोतुम्प्थ
उ.पु.	तोतुम्फ्म / तोतुम्फीमि	तोतुम्फ्व:	तोतुम्फ्म:

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद बकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - लम्ब् - लालम्ब् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	लालम्प्ति / लालम्बीति	लालम्प्त:	लालम्बति
म.पु.	लालम्प्सि / लालम्बीषि	लालम्प्थ:	लालम्प्थ
उ.पु.	लालम्ब्मि / लालम्बीमि	लालम्ब्व:	लालम्ब्म:

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद भकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - लभ् - लालभ् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	लालब्धि / लालभीति	लालब्ध:	लालभति
म.पु.	लालप्सि / लालभीषि	लालब्ध:	लालब्ध
उ.पु.	लालभ्मि / लालभीमि	लालभ्व:	लालभ्म:

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद मकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - रम् - रंरम् - लट् लकार परस्मैपद -

प्र.पु.	रंरन्ति / रंरमीति	रंरतः	रंरमति
म.पु.	रंरंसि / रंरमीषि	रंरथः	रंरथ
उ.पु.	रंरन्मि / रंरमीमि	रंरन्वः	रंरन्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद यकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - हय् - जाहय् - लट् लकार परस्मैपद -

जाहय् + ति - लोपो व्योर्वलि सूत्र से य् का लोप करके - जाहति। जाहय् + अति - जाहयति। जाहय् + मि - लोपो व्योर्वलि सूत्र से य् का लोप करके - जाह + मि / अतो दीर्घो यञि से 'अ' को दीर्घ करके - जाहामि।

प्र.पु.	जाहति / जाहयीति	जाहतः	जाहयति
म.पु.	जाहसि / जाहयीषि	जाहथः	जाहथ
उ.पु.	जाहामि / जाहयीमि	जाहावः	जाहामः

वकारान्त धातु

वकारान्त धातुओं के लिये पहिले इन सूत्रों के अर्थ समझिये -

ज्वरत्वरस्रिव्यवमवामुपधायाश्च - ज्वर्, त्वर्, स्रिव्, अव्, मव्, धातुओं की **'उपधा तथा वकार'** के स्थान पर ऊठ् होता है, क्विप् प्रत्यय परे होने पर, अनुनासिक प्रत्यय परे होने पर, तथा झलादि कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर।

राल्लोपः - र् के बाद आने वाले छकार, वकार का लोप होता है, क्विप् प्रत्यय परे होने पर तथा झलादि कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर।

हलि च - रेफान्त वकारान्त धातुओं की उपधा के पूर्ववर्ती 'इक्' को दीर्घ होता है, हल् परे होने पर।

उपधायां च - धातु के अन्त में हल् हो, उपधा में र् हो, तथा उस र् के पूर्व में 'इक्' हो, तो उस इक् को भी दीर्घ होता है।

इन सूत्रो के अर्थों को बुद्धिस्थ करके ही वकारान्त धातुओं के रूप बनाइये।

पृष्ठ ४६५ पर देखिये कि सारे वकारान्त धातुओं के यङ्लुगन्त रूप नहीं बनाये जाते।

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद वकारान्त धातुओं को

प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - तुर्व् - तोतुर्व् - लट् लकार परस्मैपद -

तोतुर्व् + ति - राल्लोपः से व् का लोप करके - तोतुर् + ति / पुगन्त. से उपधा को गुण होकर - तोतोर् + ति - तोतोर्ति। तोतुर्व् + तः - राल्लोपः से व् का लोप करके - तोतुर् + तः / यह प्रत्यय अपित् है, अतः उपधा के 'उ' को क्ङिति च' सूत्र से गुण निषेध होने से 'हलि च' सूत्र से उपधा के 'उ' को दीर्घ करके - तोतूर्तः। तोतुर्व् + अति - 'उपधायां च' सूत्र से उपधा के पूर्ववर्ती 'उ' को दीर्घ करके - तोतूर्वति।

प्र.पु.	तोतोर्ति / तोतूर्वीति	तोतूर्तः	तोतूर्वति
म.पु.	तोतोर्षि / तोतूर्वीषि	तोतूर्थः	तोतूर्थ
उ.पु.	तोतोर्मि / तोतूर्वीमि	तोतूर्वः	तोतूर्मः

वकारान्त मव् - मामव् धातु - लट् लकार परस्मैपद

मामव् + ति - ज्वरत्वरस्रिव्यवमवामुपधायाश्च सूत्र से उपधा तथा वकार अर्थात् अव् को ऊठ् करके - माम् ऊ + ति - मामू + ति / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से ऊ को गुण होकर - मामो + ति - मामोति। मामव् + तः - पूर्ववत् मामू + तः / यह प्रत्यय अपित् है, अतः 'उ' को क्ङिति च' सूत्र से गुण निषेध होने से - मामूतः।

मामव् + अति - मामवति। मामव् + वः - लोपो व्योर्वलि सूत्र से व् का लोप करके - माम + वः / अतो दीर्घो यञि से 'अ' को दीर्घ करके - मामांवः।

मामव् + मः - ज्वरत्वरस्रिव्यवमवामुपधायाश्च सूत्र से अव् को ऊठ् करके - माम् ऊ + मः - मामूमः।

प्र.पु.	मामोति / मामवीति	मामूतः	मामवति
म.पु.	मामोषि / मामवीषि	मामूथः	मामूथ
उ.पु.	मामोमि / मामवीमि	मामावः	मामूमः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद रेफान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - ज्वर् - जाज्वर् - लट् लकार परस्मैपद-

जाज्वर् + ति - ज्वरत्वरस्रिव्यवमवामुपधायाश्च सूत्र से 'व् अ' को ऊठ् करके - जाज् ऊ र् + ति - जाजूर् + ति - जाजूर्ति। जाज्वर् + तः - पूर्ववत् जाजूर्तः / जाज्वर् + अति - जाज्वरति।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

प्र.पु.	जाजूर्ति / जाज्वरीति	जाजूर्तः	जाज्वरति
म.पु.	जाजूर्षि / जाज्वरीषि	जाजूर्थः	जाजूर्थ
उ.पु.	जाजूर्मि / जाज्वरीमि	जाजूर्वः	जाजूर्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद शकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - क्रुश् - चोक्रुश् धातु - लट् लकार परस्मैपद-

प्र.पु.	चोक्रोष्टि / चोक्रुशीति	चोक्रुष्टः	चोक्रुशति
म.पु.	चोक्रोक्षि / चोक्रुशीषि	चोक्रुष्ठः	चोक्रुष्ठ
उ.पु.	चोक्रोश्मि / चोक्रुशीमि	चोक्रुश्वः	चोक्रुश्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद षकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - कृष् - चरीकृष् धातु - लट् लकार परस्मैपद-

प्र.पु.	चरीकर्ष्टि / चरीकर्षीति	चरीकृष्टः	चरीकृषति
म.पु.	चरीकर्क्षि / चरीकर्षीषि	चरीकृष्ठः	चरीकृष्ठ
उ.पु.	चरीकर्ष्मि / चरीकर्षीमि	चरीकृष्वः	चरीकृष्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद सकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - वस् - वावस् धातु - लट् लकार परस्मैपद-

प्र.पु.	वावस्ति / वावसीति	वावस्तः	वावसति
म.पु.	वावस्सि / वावसीषि	वावस्थः	वावस्थ
उ.पु.	वावस्मि / वावसीमि	वावस्वः	वावस्मः

यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य कर चुकने के बाद हकारान्त धातुओं को प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये - गाह् - जागाह् धातु - लट् लकार परस्मैपद-

प्र.पु.	जागाढि / जागाहीति	जागाढः	जागाहति
म.पु.	जाघाक्षि / जागाहीषि	जागाढः	जागाढ
उ.पु.	जागाह्मि / जागाहीमि	जागाह्वः	जागाह्मः

यह धातुओं के यङ्लुगन्त रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

ध्यान रहे कि धातुओं को द्वित्वाभ्यास कर चुकने के बाद, जो यङ्लुगन्त धातु बने, उससे तिङ् प्रत्यय परे होने पर, जिस धातु को जो भी अङ्गकार्य कहे गये हैं, उन्हें करके ही सन्धिकार्य करें।

सूत्रों के विशेष अर्थ सिद्धान्तकौमुदी या काशिकावृत्ति में देखें।



पञ्चदश पाठ

समस्त धातुओं के सन्नन्त रूप बनाने की विधि

धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा - इच्छा क्रिया का जो कर्म, उसका वाचक जो धातु, उसका तथा इच्छा क्रिया का कर्ता यदि एक ही हो, तो इच्छा क्रिया के कर्म के वाचक धातु से, इच्छा अर्थ में सन् प्रत्यय विकल्प से लगता है। जैसे -

देवदत्तः कर्तुं इच्छति = देवदत्त करना चाहता है। इस वाक्य में, इच्छा क्रिया का कर्म है 'कर्तुम्'। इस 'करना' क्रिया का तथा इच्छा क्रिया का कर्ता एक ही है। इसलिये इच्छति क्रिया समानकर्तृक है। इस 'करना' क्रिया के वाचक 'कृ' धातु से विकल्प से सन् प्रत्यय लगता है।

'विकल्प से' कहने का तात्पर्य यह है कि हम 'देवदत्त करना चाहता है', इस वाक्य को 'देवदत्तः कर्तुम् इच्छति' भी कह सकते हैं, तथा उसी के बदले कृ धातु में सन् लगाकर 'देवदत्तः चिकीर्षति' भी कह सकते हैं।

'देवदत्त जाना चाहता है' इस वाक्य को हम 'देवदत्तः गन्तुम् इच्छति' भी कह सकते हैं, तथा उसी के बदले गम् धातु में सन् लगाकर 'देवदत्तः जिगमिषति' भी कह सकते हैं।

'देवदत्त देखना चाहता है' इस वाक्य को हम 'देवदत्तः द्रष्टुम् इच्छति' भी कह सकते हैं, तथा उसी के बदले दृश् धातु में सन् लगाकर 'देवदत्तः दिदृक्षति' भी कह सकते हैं।

धातुओं में सन् प्रत्यय को लगाने में महान् प्रपञ्च है अतः इस कार्य को हमें खण्ड खण्ड में ही सीखना चाहिये। पूरा धातुरूप एक साथ बना लेने का प्रयास नहीं करना चाहिये।

धातुओं में सन् प्रत्यय लगाकर धातुरूप बनाने का भी जो कार्य होता है उसके अनेक खण्ड होते हैं। ये खण्ड इस प्रकार हैं -

धात्वादेश, षत्व विधि, इडागम विधि, अतिदेश सूत्र, अङ्गकार्य, सन्धि, द्वित्वविधि तथा अभ्यासकार्य। इन्हें हम एक एक करके जानें -

धात्वादेश

सन् प्रत्यय परे होने पर इन धातुओं के स्थान पर इस प्रकार आदेश (परिवर्तन) कीजिये -

लुङ्सनोर्घस्लृ - लुङ् तथा सन् प्रत्यय परे होने पर, अद् धातु को घस्लृ (घस्) आदेश होता है।

सनि च - सन् प्रत्यय परे होने पर, अबोधनार्थक इण् धातु को गम् आदेश होता है।

इङश्च - सन् प्रत्यय परे होने पर, अबोधनार्थक इङ् धातु को भी गम् आदेश होता है।

अस्तेर्भूः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अस् धातु को भू आदेश होता है।

ब्रुवो वचिः - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ब्रू धातु को वच् आदेश होता है।

चक्षिङ् ख्याञ् - सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर चक्ष् धातु को ख्या आदेश होता है।

अजेर्व्यघञपोः- घञ्, अप् इन दो आर्धधातुक प्रत्ययों को छोड़कर शेष सारे आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अज् धातु को वी आदेश होता है।

आदेच उपदेशेऽशिति - शित् प्रत्यय परे न होने पर सारे एजन्त धातुओं को 'आ' अन्तादेश होता है। अतः सन् प्रत्यय परे होने पर सारे एजन्त धातुओं को 'आ' अन्तादेश होगा। ग्लै - ग्ला, म्लै - म्ला, ध्यै - ध्या, शो - शा, सो - सा, वे - वा छो - छा आदि।

जब भी सन् प्रत्यय परे हो, इन धातुओं को ये आदेश अवश्य करें।

इडागम विधि

आर्धधातुकं शेषः - धातुओं से लगने वाले जो भी प्रत्यय हैं, उन प्रत्ययों में से तिङ् शित् प्रत्ययों को छोड़ दिया जाये, तो जो प्रत्यय बचते हैं, उनका नाम आर्धधातुक प्रत्यय होता है। अतः 'सन्', यह आर्धधातुक प्रत्यय है, यह जानिये।

आर्धधातुकस्येड् वलादेः - वलादि आर्धधातुक प्रत्यय को इट् = इ का आगम होता है। जिसे इट् का आगम होता है, उसे सेट् प्रत्यय कहते हैं।

'सन्' प्रत्यय भी वलादि आर्धधातुक होने से सेट् प्रत्यय है, किन्तु केवल प्रत्यय के सेट् हो जाने से ही प्रत्यय को इडागम नहीं हो जाता है।

यदि प्रत्यय सेट् है तो फिर यहाँ हमें यह विचार करना चाहिये कि क्या

वह धातु भी सेट् है जिससे यह सेट् प्रत्यय लगाया गया है ?

यदि धातु भी सेट् हो, तभी उस धातु से लगे हुए वलादि आर्धधातुक सेट् प्रत्यय को इडागम कीजिये। इसी का नाम इडागम विचार है। जैसे -

'बुभूषति' को देखिये। यहाँ सन् प्रत्यय के पूर्व में आकर 'इट्' नहीं बैठा है। 'लिलेखिषति' को देखिये। यहाँ सन् प्रत्यय के पूर्व में आकर 'इट् - इ' बैठा है। प्रत्यय के पूर्व में 'इट्' बैठने को ही इडागम होना कहते हैं।

जिन धातुओं के बाद आने वाले सन् प्रत्यय को 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से यह 'इडागम' होता है, उन्हें सेट् धातु कहते हैं।

जिन धातुओं के बाद आने वाले सन् प्रत्यय को 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से यह 'इडागम' नहीं होता है, उन्हें अनिट् धातु कहते हैं।

कब हम सन् प्रत्यय को इडागम करें, कब न करें, यह जानने के लिये हम सेट् अनिट् धातु पहिचानने की विधि बतला रहे हैं ताकि यह निर्णय हो सके कि किस धातु से परे आने वाले सन् प्रत्यय को इट् का आगम करना है तथा किस धातु से परे आने वाले सन् प्रत्यय को इट् का आगम नहीं करना है।

सेट् तथा अनिट् धातुओं को पहिचानने की विधि

पहिले हम यह विधि विस्तार से बतलायेंगे, उसके बाद उसका निष्कर्ष अन्त में देंगे।

१. जिन धातुओं में एक से अधिक अच् होते हैं, उन्हें अनेकाच् धातु कहते हैं। ऐसे अनेकाच् धातु सदा सेट् होते हैं, जैसे - जागृ, चकास् आदि।

जब किसी एकाच् धातु में णिच् आदि कोई प्रत्यय लगाकर उसे अनेकाच् बना दिया जाता है, तब वह एकाच् धातु भी अनेकाच् हो जाने से सेट् हो जाता है, जैसे - कृ धातु अनिट् है, किन्तु जब इसमें णिच् प्रत्यय लगकर यह कृ + णिच् - बन जाता है, तब यह सेट् हो जाता है।

इसी प्रकार सारे प्रत्ययान्त धातु अनेकाच् हो जाने से सेट् हो जाते हैं। अतः जो एकाच् अर्थात् एक अच् वाले धातु हैं, वे ही अनिट् हो सकते हैं, किन्तु सब नहीं।

अतः अब हम एकाच् धातुओं के अन्तिम वर्ण को क्रम से रखकर, धातुओं का सेट्, अनिट् विभाजन दे रहे हैं, इन्हें याद करके जानिये कि कौन से धातु सेट् हैं और कौन से अनिट्।

सेट् तथा अनिट् अजन्त धातुओं को पहिचानने की विधि

१. एकाच् आकारान्त धातु - सारे एकाच् आकारान्त धातु अनिट् ही

होते हैं।

२. **एकाच् ह्रस्व इकारान्त धातु** - इनमें श्वि, श्रि धातु सेट् होते हैं तथा इनके अलावा, शेष सारे एकाच् ह्रस्व इकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं।

३. **एकाच् दीर्घ ईकारान्त धातु** - इनमें डीङ्, शीङ् धातु सेट् होते हैं तथा इनके अलावा, शेष सारे एकाच् दीर्घ ईकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं।

४. **एकाच् ह्रस्व उकारान्त धातु** - इनमें स्नु, नु, क्षु, यु, रु, क्ष्णु ये छह धातु सेट् होते हैं तथा इन ६ को छोड़कर, शेष सारे एकाच् उकारान्त धातु अनिट् ही होते हैं।

५. **एकाच् दीर्घ ऊकारान्त धातु** - इनमें सू, धू, वेट् होते हैं, शेष सारे एकाच् ऊकारान्त धातु सेट् ही होते हैं।

६. **एकाच् ह्रस्व ऋकारान्त धातु** - इनमें वृङ्, वृञ् सेट् होते हैं। स्वृ धातु वेट् होता है। शेष सारे एकाच् ह्रस्व ऋकारान्त धातु अनिट् होते हैं।

७. **एकाच् दीर्घ ॠकारान्त धातु** - ये सभी सेट् होते हैं।

८. **एजन्त धातु** - शित् प्रत्यय परे न रहने पर एजन्त धातु 'आदेच उपदेशेऽशिति' सूत्र से आकारान्त बन जाते हैं। जैसे - गै = गा, धे = धा, ग्लै = ग्ला, ध्यै = ध्या आदि। ये सभी अनिट् ही होते हैं।

यह एकाच् अजन्त धातुओं में से सेट् तथा अनिट् धातुओं को अलग अलग पहिचानने की विधि पूर्ण हुई। अब एकाच् हलन्त धातुओं में से, सेट् तथा अनिट् धातुओं को कैसे अलग अलग पहिचाना जाये, यह विधि बतला रहे हैं।

सेट् तथा अनिट् हलन्त धातुओं को पहिचानने की विधि

नीचे १०२ हलन्त एकाच् धातु दिये जा रहे हैं। ये सब उपदेशावस्था में एकाच् तथा अनुदात्त होने के कारण अनिट् हैं। इनके अतिरिक्त जो भी एकाच् हलन्त धातु आप पाएँगे, वे सब सेट् ही होंगे, यह जानना चाहिए।

१. **एकाच् ककारान्त धातुओं में** - ककारान्त धातुओं में स्वादिगण का शक्लृ, यह १ धातु ही अनिट् है। शेष सारे ककारान्त धातु सेट् हैं।

२. **एकाच् चकारान्त धातुओं में** - पच्, मुच्, रिच्, वच्, विच्, सिच्, ये ६ धातु अनिट् हैं। शेष सारे चकारान्त धातु सेट् हैं।

३. **एकाच् छकारान्त धातुओं में** - प्रच्छ्, यह १ धातु अनिट् है। शेष सारे छकारान्त धातु सेट् हैं।

४. **एकाच् जकारान्त धातुओं में** - त्यज्, निजिर्, भज्, भञ्ज्, भुज्,

भ्रस्ज्, मस्ज्, यज्, युज्, रुज्, रञ्ज्, विजिर् (रुधादि), स्वञ्ज्, सञ्ज्, सृज् - ये १५ धातु अनिट् हैं। शेष सभी जकारान्त धातु सेट् हैं।

५. **एकाच् दकारान्त धातुओं में** - अद्, क्षुद्, खिद्, छिद्, तुद्, नुद्, पद् (दिवादिगण), भिद्, विद् (दिवादिगण), विद् (रुधादिगण), शद्, सद्, स्विद्, स्कन्द्, और हद् ये १५ धातु अनिट् हैं। शेष सभी दकारान्त धातु सेट् हैं।

विशेष - दिवादिगण तथा रुधादिगण के विद् धातु अनिट् होते हैं और अदादिगण तथा तुदादिगण के विद् धातु सेट् होते हैं।

६. **एकाच् धकारान्त धातुओं में** - क्रुध्, क्षुध्, बुध् (दिवादिगण), बन्ध्, युध्, रुध्, राध्, व्यध्, साध्, शुध्, सिध् (दिवादिगण) ये ११ धातु अनिट् हैं। शेष सभी धकारान्त धातु सेट् हैं।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि बुध् धातु दो हैं। इनमें से भ्वादिगण का बुध् धातु सेट् होता है। दिवादिगण का बुध् धातु अनिट् होता है।

७. **एकाच् नकारान्त धातुओं में** - मन् (दिवादिगण) तथा हन्, ये २ धातु अनिट् हैं। शेष सारे नकारान्त धातु सेट् हैं।

८. **एकाच् पकारान्त धातुओं में** - आप्, छुप्, क्षिप्, तप्, तिप्, तृप् (दिवादिगण), दृप् (दिवादिगण), लिप्, लुप्, वप्, शप्, स्वप्, सृप्, ये १३ धातु अनिट् हैं। शेष सारे पकारान्त धातु सेट् हैं।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि तृप् धातु तीन हैं। इनमें से स्वादिगण तथा तुदादिगण के तृप् धातु सेट् होते हैं। दिवादिगण का तृप् धातु वेट् होता है।

९. **एकाच् भकारान्त धातुओं में** - यभ्, रभ्, लभ्, ये ३ धातु अनिट् होते हैं। शेष सारे भकारान्त धातु सेट् होते हैं।

१०. **एकाच् मकारान्त धातुओं में** - गम्, नम्, यम्, रम्, ये ४ धातु अनिट् हैं। शेष सारे मकारान्त धातु सेट् हैं।

११. **एकाच् शकारान्त धातुओं में** - क्रुश्, दंश्, दिश्, दृश्, मृश्, रिश्, रुश्, लिश्, विश्, स्पृश्, ये १० धातु अनिट् हैं। शेष शकारान्त धातु सेट् हैं।

१२. **एकाच् षकारान्त धातुओं में** - कृष्, त्विष्, तुष्, द्विष्, दुष्, पुष् (दिवादि गण), पिष्, विष्, शिष्, शुष्, श्लिष् (दिवादिगण), ये ११ धातु अनिट् हैं। शेष सभी षकारान्त धातु सेट् हैं।

१३. **एकाच् सकारान्त धातुओं में** - वस्, घस्, ये २ धातु अनिट् हैं।

शेष सारे सकारान्त धातु सेट् हैं।

१४. एकाच् हकारान्त धातुओं में - दह्, दिह्, दुह्, नह्, मिह्, रुह्, लिह्, वह्, ये ८ धातु अनिट् हैं। शेष सारे हकारान्त धातु सेट् हैं।

सेट्, अनिट् के अलावा कुछ धातु वेट् भी होते हैं, जिनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को भी विकल्प से इट् का आगम होता है।

ये वेट् धातु इस प्रकार हैं -

वेट् धातु

स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा - स्वृ धातु, अदादिगण का सू धातु, दिवादिगण का सू धातु, स्वादि तथा क्र्यादिगण का धूञ् धातु तथा सारे ऊदित् धातुओं से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

ऊदित् धातु - 'ऊदित्' का अर्थ होता है, ऐसे धातु जिनमें 'ऊ' की इत् संज्ञा हुई हो। धातुपाठ में पढ़े गये सारे 'ऊदित् धातु' इस प्रकार हैं -

अक्षू	तक्षू	त्वक्षू	गृहू	मृजू	अशू	वृहू	तृन्हू
क्षमू	क्लिदू	अञ्जू	क्लिशू	षिधू	त्रपूष्	क्षमूष्	गाहू
गुहू	स्यन्दू	कृपू	गुपू	ओव्रश्चू	तृहू	स्तृहू	तृन्हू।

विशेष - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि स्वादि, क्र्यादि तथा चुरादिगण में धूञ् कम्पने धातु हैं। तुदादिगण में धू विधूनने धातु है।

इनमें से स्वादिगण तथा क्र्यादिगण के धूञ् कम्पने धातु ही वेट् होते हैं। इनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

तुदादिगण का धू विधूनने धातु तथा चुरादिगण का धूञ् कम्पने धातु सेट् होता है। इनसे परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को नित्य इडागम होता है।

रधादिभ्यश्च - रध्, नश्, तृप्, दृप्, द्रुह्, मुह्, स्निह्, स्नुह्, ये ८ धातु वेट् होते हैं। इन आठ धातुओं से परे आने वाले सेट् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है।

निरः कुषः - निर् उपसर्गपूर्वक कुष् धातु से परे आने वाले सेट् प्रत्ययों को विकल्प से इडागम हाता है।

इस प्रकार ३७ धातु वेट् हैं। इन ३७ वेट् धातुओं से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्ययों को विकल्प से इडागम होता है। यह सेट्, अनिट् तथा वेट् धातुओं को पहिचानने की औत्सर्गिक अर्थात् मूलभूत सामान्य व्यवस्था है।

इसे कण्ठस्थ कर लीजिये।

किन्तु अनेक बार इस व्यवस्था का उल्लङ्घन होकर इनके सेट् धातु अनिट् हो जाते हैं। अनिट् धातु सेट् हो जाते हैं। यह जिन सूत्रों के कारण होता है, वे सूत्र बतला रहे हैं -

सन् प्रत्यय के लिये विशेष इडागम व्यवस्था

सनि ग्रहगुहोश्च - यद्यपि ग्रह् धातु सेट् है, तथा गुह् धातु वेट् है, किन्तु इनसे परे आने वाले सन् प्रत्यय को इडागम नहीं होता है। उगन्त धातुओं से परे आने वाले सन् प्रत्यय को भी इडागम नहीं होता है।

ग्रह् - जिघृक्षति   गुह् - जुघुक्षति   भू - बुभूषति

इट् सनि वा - वृङ्, वृञ् तथा दीर्घ ॠकारान्त धातु यद्यपि सारे के सारे सेट् हैं तथापि इनसे परे आने वाले सन् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है।

वृङ्	-	वुवूर्षति	/ विवरिषते
वृञ्	-	वुवूर्षति	/ विवरिषते
तॄ	-	तितीर्षति	/ तितरिषति / तितरीषति

सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृयूर्णुभरज्ञपिसनाम् - जिन धातुओं के अन्त में इव् है जैसे - दिव्, सिव्, ष्ठिव् आदि ऐसे इवन्त धातुओं से, तथा ऋधु, भ्रस्ज्, दम्भु, श्रि, स्वृ, यु, ऊर्णु, भृ, ज्ञप्, सन् इन धातुओं से परे आने वाले सन् प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है। जैसे -

दिव्	-	दुद्यूषति	दिदेविषति
ऋध्	-	अर्दिधिषति	ईर्त्सति
भ्रस्ज्	-	बिभ्रज्जिषति	बिभ्रक्षति
		बिभर्ज्जिषति	बिभर्क्षति
दम्भु	-	दिदम्भिषति	धिप्सति
श्रि	-	उच्छिश्रयिषति	उच्छिश्रीषति
स्वृ	-	सिस्वरिषति	सुस्वूर्षति
यु	-	यियविषति	युयूषति
ऊर्णु	-	प्रोर्णुनविषति	प्रोर्णुनुविषति / प्रोर्णुनूषति
भृ	-	बिभरिषति	बुभूर्षति
ज्ञप्	-	जिज्ञपयिषति	ज्ञीप्सति
सन्	-	सिसनिषति	सिषासति

तनिपतिदरिद्राणामुपसंख्यानम् – कुछ लोग यहाँ तन्, पत्, तथा दरिद्रा धातुओं को भी स्वीकार करते हैं। अतः इनके रूप विकल्प से इडागम होकर इस प्रकार बनेंगे।

तन्	–	तितनिषति,	तितंसति / तितांसति
पत्	–	पिपतिषति	पित्सति
दरिद्रा	–	दिदरिद्रिषति	दिदरिद्रासति

सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृदनृतः – हम पढ़ चुके हैं कि कृत्, चृत्, छृद्, तृद्, नृत् इन ५ धातुओं से परे आने वाले सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय को विकल्प से इडागम होता है।

सन् चूँकि सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय है, अतः इसके परे होने पर इन पाँचों धातुओं को विकल्प से इडागम कीजिये –

कृत्	–	चिकृत्सति	चिकर्तिषति
चृत्	–	चिचृत्सति	चिचर्तिषति
छृद्	–	चिच्छृत्सति	चिच्छर्दिषति
तृद्	–	तितृत्सति	तितर्दिषति
नृत्	–	निनृत्सति	निनर्तिषति

गमेरिट् परस्मैपदेषु – गम् धातु यद्यपि अनिट् है तथापि उससे परस्मैपदी सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर उसे इडागम होता है किन्तु आत्मनेपदी सकारादि प्रत्यय परे होने पर उसे इडागम नहीं होता है। यथा –

		परस्मैपद	आत्मनेपद
गम्	–	जिगमिषति	संजिगंसते

न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः – वृत्, वृध्, शृध्, स्यन्द् ये चारों धातु यद्यपि आत्मनेपदी हैं, किन्तु 'वृद्भ्यः स्यसनोः' सूत्र से स्य, सन् प्रत्यय परे होने पर ये धातु विकल्प से परस्मैपदी हो जाते हैं।

जब ये धातु परस्मैपदी हो जाते हैं तब इनसे परे आने वाले सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय को इडागम नहीं होता। आत्मनेपद में इडागम हो जाता है।

		परस्मैपद	आत्मनेपद
वृत्	–	विवृत्सति	विवर्तिषते
वृध्	–	विवृत्सति	विवर्धिषते
शृध्	–	शिशृत्सति	शिशर्धिषते
स्यन्द्	–	सिस्यन्त्सति	सिस्यन्दिषते

तासि च क्लृपः – क्लृप् धातु यद्यपि आत्मनेपदी है किन्तु स्य, सन्,

प्रत्यय परे होने पर यह धातु 'लुटि च क्लृपः' सूत्र से विकल्प से परस्मैपदी हो जाता है। जब यह परस्मैपदी हो जाता है तब इससे परे आने वाले परस्मैपद संज्ञक सकारादि आर्धधातुक प्रत्ययों को तथा तास् प्रत्यय को इडागम नहीं होता है।

		परस्मैपद	आत्मनेपद
क्लृप्	-	चिक्लृप्सति	चिकल्पिषते

स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि - स्मि धातु तथा ऋ धातु अनिट् हैं। अञ्जू धातु तथा अशू धातु ऊदित् होने से वेट् हैं। 'पू' धातु दीर्घ ऊकारान्त होने से सेट् है। किन्तु इनसे परे आने वाले सन् प्रत्यय को नित्य इडागम होता है। यथा -

ऋ	-	अरिरिषति	स्मि	-	सिस्मयिषते
अञ्जू	-	अञ्जिजिषति	अशू	-	अशिशिषते

सूत्र में 'पू'धातु भी कहा है। 'पू' धातु तो दीर्घ ऊकारान्त होने से सेट् ही होता है, यह हम जानते हैं, किन्तु सन् प्रत्यय में इसकी व्यवस्था यह है कि सन् प्रत्यय परे होने पर पूङ् धातु तो सेट् होता है, और पूञ् धातु अनिट् होता है - पूङ् - पिपविषते / पूञ् - पुपूषति।

किरश्च पञ्चभ्यः - कॄ, गॄ, दृङ्, धृङ्, प्रच्छ् इन पाँच धातुओं से परे आने वाले सन् प्रत्यय को नित्य इडागम होता है -

कॄ	-	चिकरिषति	गॄ	-	जिगरिषति
दृङ्	-	दिदरिषते	धृङ्	-	दिधरिषते
प्रच्छ्	-	पिपृच्छिषति।			

ध्यान दीजिये कि 'इट् सनि वा' सूत्र से दीर्घ ॠकारान्त कॄ, गॄ धातु वेट् थे। उन्हें इस सूत्र से नित्य इट् हो गया। दृङ्, धृङ् धातु अनिट् थे उन्हें भी इस सूत्र से इट् हो गया।

अजन्त धातुओं की इडागम व्यवस्था का निष्कृष्टार्थ

सेट् अजन्त धातु - सन् प्रत्यय परे होने पर ऋ, स्मि, श्वि, डीङ्, शीङ्, पूङ्, दृङ्, धृङ् कॄ, गॄ, ये दस एकाच् अजन्त धातु सेट् होते हैं।

वेट् अजन्त धातु - कॄ, गॄ को छोड़कर सारे दीर्घ ॠकारान्त धातु तथा ऊर्णु, श्रि, यु, दरिद्रा, वृङ्, वृञ्, स्वृ, भृ, ये आठ एकाच् अजन्त धातु सन् प्रत्यय परे होने पर वेट् होते हैं।

अनिट् अजन्त धातु - इन सेट्, वेट् से जो बचे, वे सारे अजन्त धातु सन् प्रत्यय परे होने पर अनिट् होते हैं।

ध्यान रहे कि सन् प्रत्यय में पूङ् धातु सेट् है, पूञ् धातु अनिट् है।

हलन्त धातुओं की इडागम व्यवस्था का निष्कृष्टार्थ

अनिट् हलन्त धातु - हमने १०२ हलन्त अनिट् धातु पढ़े हैं। इनमें से प्रच्छ् धातु जो कि अनिट् है, वह सन् प्रत्यय परे होने पर सेट् हो जाता है।

भ्रस्ज् धातु अनिट् है, वह सन् प्रत्यय परे होने पर वेट् हो जाता है।

गम् धातु जो अनिट् है, वह परस्मैपद में सेट् हो जाता है, आत्मनेपद में अनिट् ही रहता है। इस प्रकार इन १०२ में से तीन को छोड़कर ९९ हलन्त धातु ही सन् प्रत्यय परे होने पर अनिट् होते हैं।

ग्रह् धातु, जो कि सेट् है वह, तथा गुह् धातु जो कि वेट् है वह, इस प्रकार ये दो धातु भी सन् प्रत्यय परे होने पर अनिट् हो जाते हैं। इस प्रकार ९९ + २ = १०१ हलन्त धातु सन् प्रत्यय परे होने पर अनिट् होते हैं।

वेट् हलन्त धातु - ऊपर जो ३७ वेट् हलन्त धातु कहे गये हैं, इनमें से अञ्जू, अशू धातु सन् प्रत्यय परे होने पर सेट् हो जाते हैं और गुहू धातु सन् प्रत्यय परे होने पर अनिट् हो जाता है।

अत: ३७ में से तीन धातुओं के कम हो जाने पर ३४ वेट् हलन्त धातु ही सन् प्रत्यय परे होने पर वेट् रहते हैं।

इनके अलावा दिव्, सिव्, ष्ठिव्, स्त्रिव् धातु, तथा ऋध्, दम्भ्, ज्ञप्, सन्, कृत्, चृत्, छृद्, तृद्, नृत्, तन्, पत् धातु ये १५ सेट् धातु भी सन् प्रत्यय परे होने पर वेट् हो जाते हैं। इस प्रकार ३४ + १५ = ४९ धातु सन् प्रत्यय परे होने पर वेट् होते हैं।

वृत्, वृध्, शृध्, स्यन्द, कल्प् ये पाँच सेट् धातु, परस्मैपद में अनिट् होते हैं, तथा आत्मनेपद में सेट् हो जाते हैं। गम् धातु परस्मैपद में सेट् हो जाता है, आत्मनेपद में अनिट् ही रहता है।

इस प्रकार इनकी संख्या ४९ + ५ = ५४ हुई।

सेट् हलन्त धातु - इन १०१ अनिट् + ५४ वेट् के अलावा जितने भी एकाच् हलन्त धातु हैं, वे सन् प्रत्यय परे रहने पर सेट् ही रहते हैं, यह जानिये।

अतिदेश सूत्र

देखिये कि सन् प्रत्यय न तो कित् है, न गित्, न ङित्। तथापि यह कुछ सूत्रों के प्रभाव से यह सन् प्रत्यय, कभी कहीं कित् जैसा और कभी कहीं ङित् जैसा मान लिया जाता है।

जो जैसा नहीं है, उसे वैसा मान लेने को ही अतिदेश कहते हैं। लोक में भी ऐसा होता है कि जब गुरुजी न हों, तो उनके स्थान में गुरुपुत्र को गुरु

जैसा मान लिया जाता है। इसी प्रकार शास्त्र में भी अनेक जगह ऐसा करना पड़ता है कि जो जैसा नहीं होता उसे वैसा मान लेना पड़ता है।

जो जैसा नहीं है, उसे वैसा मान लेने को ही अतिदेश कहते हैं। यह मानने का कार्य जिन सूत्रों के कारण होता है, उन सूत्रों को हम अतिदेश सूत्र कहते हैं। ये इस प्रकार हैं -

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् - गाङ् धातु से तथा तुदादिगण के अन्तर्गत जो कुट् से लेकर कुङ् तक ३६ धातुओं का कुटादिगण है, उस कुटादिगण के धातुओं से परे आने वाले, ञित् णित् से भिन्न सारे प्रत्यय, ङित्वत् मान लिये जाते हैं। कुटादि धातु इस प्रकार हैं -

कु	गु	ध्रु	नू	धू	कड्	डिप्	कुच्	गुज्
कुट्	घुट्	चुट्	छुट्	जुट्	तुट्	पुट्	मुट्	त्रुट्
लुट्	स्फुट्	कुड्	क्रुड्	गुड्	चुड्	तुड्	थुड्	पुड्
व्रुड्	स्थुड्	स्फुड्	गुर्	छुर्	स्फुर्	स्फुल्	कृड्	मृड्।

सन् प्रत्यय भी ञित् णित् से भिन्न प्रत्यय है, अतः यह जब गाङ् धातु या कुटादि धातुओं के बाद आता है, तब इस सन् प्रत्यय को ङित् प्रत्यय जैसा मान लिया जाता है।

विज इट् - विज् धातु से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्यय ङित्वत् माने जाते हैं।

विभाषोर्णोः - ऊर्णु धातु से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्यय, विकल्प से ङित्वत् माने जाते हैं।

रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च - रुद्, विद्, मुष्, ग्रह्, स्वप्, प्रच्छ् इतने धातुओं से परे होने पर, सन् प्रत्यय तथा क्त्वा प्रत्यय कित्वत् होते हैं।

इको झल् - इगन्त धातुओं से परे आने वाला, झलादि सन् प्रत्यय कितवत् होता है। झलादि सन् का अर्थ अनिट् सन् होता है।

हलन्ताच्च - ऐसे हलन्त अनिट् धातु जिनमें कहीं भी इक् हो, उनसे परे आने वाला झलादि सन् प्रत्यय तथा अनिट् दम्भ् धातु से परे आने वाला झलादि सन् प्रत्यय, कितवत् होता है। झलादि सन् का अर्थ अनिट् सन् होता है।

रलो व्युपधाद् हलादेः संश्च - यदि धातु के आदि में हल् हो, और अन्त में य्, व्, को छोड़कर अन्य कोई भी व्यञ्जन (रल्) हो तथा उपधा में इ, या उ हों, तब ऐसे धातुओं से परे आने वाला सन् प्रत्यय विकल्प से कितवत्

है। जब सन् प्रत्यय कित्वत् या ङित्वत् होता है, तब इसके लगने पर वे ही अङ्गकार्य होते हैं, जो अङ्गकार्य कित्, ङित् प्रत्यय लगने पर किये जाते हैं। ये अङ्गकार्य आगे बतलाये जा रहे हैं।

अङ्ग

यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादिप्रत्ययेऽङ्गम् - जब हम धातुओं से प्रत्यय लगाते हैं, तब उस प्रत्यय के परे होने पर, उस प्रत्यय के पूर्व में जो भी होता है, वह पूरा का पूरा, उस प्रत्यय का अङ्ग कहलाता है। जैसे - भू + सन् में, 'सन्' प्रत्यय का अङ्ग 'भू' होता है। इ + सन् में, 'सन्' प्रत्यय का अङ्ग 'इ' होता है। ऊर्णु + सन् में, 'सन्' प्रत्यय का अङ्ग 'ऊर्णु' होता है।

अङ्गकार्य

प्रत्यय लगने पर धातु पर प्रत्यय का जो प्रभाव पड़ता है, उस प्रभाव का नाम ही अङ्गकार्य है। अङ्गकार्य कैसा हो, यह प्रत्यय पर ही निर्भर है।

जैसा प्रत्यय होगा, वैसा ही अङ्गकार्य होगा। अतः अङ्गकार्य करने के लिये प्रत्यय की सही पहिचान सबसे आवश्यक है।

जब सन् प्रत्यय प्रत्यय कित् या ङित् होगा, तो अङ्गकार्य अलग प्रकार का होगा। जब सन् प्रत्यय कित्, ङित्, नहीं होगा, तो अङ्गकार्य अलग प्रकार का होगा। कुछ अङ्गकार्य बतला रहे हैं, कुछ आगे बतलायेंगे।

सार्वधातुकार्धधातुकयोः - धातु के अन्त में आने वाले इक् को गुण होता है, कित्, ङित्, ञित्, णित् से भिन्न सार्वधातुक अथवा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। गुण का अर्थ होता है इ, ई के स्थान पर ए, उ, ऊ के स्थान पर ओ, ऋ, ॠ के स्थान पर अर् हो जाना। ऊर्णु + इ + सन् / ऊर्णुनो + इस।

पुगन्तलघूपधस्य च - धातु की उपधा में स्थित लघु इक् के स्थान पर गुण होता है, कित् ङित् से भिन्न सार्वधातुक अथवा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। जैसे - ऋध् + इट् + सन् - गुण करके, अर्ध् + इट् + स - अर्धिस।

क्ङिति च - यदि धातु से लगने वाला प्रत्यय कित्, ङित्, गित् हो, तब न तो अङ्गों के अन्त में आने वाले इक् को गुण होता है, और न ही उपधा में स्थित लघु इक् को गुण होता है। इ + सन् / इको झल् सूत्र से अनिट् सन् प्रत्यय के कितवत् होने के कारण इस सूत्र से गुणनिषेध करके - इ + स।

अज्झनगमां सनि - अजन्त धातुओं को, तथा हन्, गम् धातुओं को दीर्घ होता है, अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर।

इ + सन् / इस सूत्र से अन्तिम इ को दीर्घ करके - ईस।

उ + सन् / इस सूत्र से अन्तिम उ को दीर्घ करके - ऊस।

आप्ज्ञप्यृधामीत् - अनिट् सन् प्रत्यय परे रहने पर आप् धातु, ज्ञप् धातु, ऋध् धातुओं के अच् को 'ई' आदेश होता है।

आप् + सन् / आ को ई करके - ईप् + सन् - ईप्स।

ऋध् + सन् / ध्यान रहे कि ऋ के स्थान पर होने वाला 'ई' उरण् रपरः सूत्र से ईर् हो जाता है। ईर्ध् + स / खरि च सूत्र से ध् को चर्त्व करके - ईर्त् + स = ईर्त्स। **इन सूत्रों के अर्थों को यहीं याद करके ही आगे बढ़ें।**

षत्व विधि

आदेशप्रत्यययोः - इण् अर्थात् इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र्, ल तथा कवर्ग के बाद आने वाले, आदेश के सकार को तथा प्रत्यय के सकार को 'षकार' आदेश होता है।

ईसिसति को देखिये। इसमें दो सकार हैं। पहिला 'स' ई के बाद आया है। यह 'ई' इण् है। अतः 'इण्' प्रत्याहार के बाद आने के कारण, इस 'स' को 'ष' होगा। दूसरा 'स' 'इ' के बाद आया है। यह 'इ' भी इण् है। अतः 'इण्' प्रत्याहार के बाद आने के कारण इस 'स' को भी 'ष' होगा। ईसिसति = ईषिषति।

इसी प्रकार ऊसिसति = ऊषिषति आदि बनाइये।

मुमुक् + स + ति में प्रत्यय के 'स' के पूर्व में कवर्ग है, अतः इस 'स' को भी 'ष' होगा - मुमुक् + स + ति - मुमुक् + षति। क् + ष् मिलकर क्ष् बनता है (क्ष्संयोगे क्षः) - मुमुक् + षति = मुमुक्षति।

ध्यान दें कि पिपास + ति = पिपासति में स के पूर्व में 'आ' है। यह 'आ' 'इण्' प्रत्याहार में नहीं आता है। अतः इस 'आ' से परे आने वाला 'स', 'स' ही रहेगा।

जिघत् + सति = जिघत्सति में स के पूर्व में 'त्' है। यह 'त्' 'इण्' में नहीं आता है। अतः इस 'त्' से परे आने वाला 'स' भी 'स' ही रहेगा।

अष्टाध्यायी में षत्व के सारे सूत्र ८.३.५५ से लेकर ८.३.११९ तक हैं। इन्हें अष्टाध्यायी की काशिकावृत्ति में एक साथ देख लेना चाहिये।

ध्यान रहे कि षत्व, त्रिपादी के सूत्रों से होता है। अतः इसे सारे कार्य हो जाने के बाद सबसे अन्त में ही करना चाहिये।

अब हम धातुओं के सन्नन्त रूप बनायें। यह कार्य हम दो हिस्सों में करें।

अजादि धातुओं के सन्नन्त रूप बनाने की विधि

जिन धातुओं के आदि में 'अच्' अर्थात् स्वर हो, उन्हें 'अजादि धातु' कहते हैं। द्वित्व करने के लिये इन 'अजादि धातुओं' के तीन वर्ग बनाइये।

१. एकाच् अजादि धातु। जैसे - अट्, अत्, इख्, इङ्ख्, इण्, उङ् आदि।

२. ऊर्णु धातु।

३. अनेकाच् अजादि धातु।

अजादि एकाच् धातुओं को इस प्रकार द्वित्व कीजिये -

१. अजादि एकाच् धातुओं में सन् प्रत्यय लगते ही, सब कार्यों को रोककर, सबसे पहिले इडागम विधि पढ़कर सन् प्रत्यय को इडागम का विचार कीजिये।

यदि सन् प्रत्यय को इट् का आगम प्राप्त है, तो सन् प्रत्यय को इट् का आगम कर लीजिये। अब धातु + इट् + सन् को यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य आदि करके जोड़ लीजिये। जैसे - एध् + इट् + सन् - एधिस / अत् + इट् + सन् - अतिस / उन्द् + इट् + सन् - उन्दिस / अञ्ज् + इट् + सन् - अञ्जिस / अङ्घ् + इट् + सन् - अङ्घिस / उब्ज् + इट् + सन् - उब्जिस।

इष् + इट् + सन् / उपधा के इ को पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके - एष् - इ + स - एषिस /

उख् + इट् + सन् / उपधा के उ को पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके - ओखिस।

ऋध् + इट् + सन् / उपधा के इ को पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके - अर्ध् - इ + स - अर्धिस।

ऋ + इट् + सन् / ऋ को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - अर् - इ + स - अरिस।

यदि सन् प्रत्यय को इट् का आगम नहीं प्राप्त है, तो सन् प्रत्यय को इट् का आगम किये बिना धातु + सन् को यथानिर्दिष्ट अङ्गकार्य करके जोड़ लीजिये। जैसे - इ + सन् को देखिये। यह धातु अनिट् है। अतः अज्झनगमां सनि सूत्र से 'इ' को दीर्घ करके ई + स - ईस।

इसी प्रकार उ + सन् को देखिये। यह धातु भी अनिट् है। अतः अज्झनगमां सनि सूत्र से 'उ' को दीर्घ करके ऊ + स - ऊस बनाइये।

आप् + सन् को देखिये। यह धातु भी अनिट् है। आप्ज्ञप्यृधामीत् सूत्र से आ को ई बनाकर - ईप् + सन् - ईप्स।

(विशेष - सन् प्रत्यय परे होने पर किस धातु को क्या अङ्गकार्य

होंगे, यह आगे यथास्थान बतलाते चलेंगे।)

धातु + सन् को जोड़ने के बाद इसकी 'धातुसंज्ञा' कीजिये -

सनाद्यन्ता धातवः - सन्, क्यच् ,काम्यच्, क्यष्, क्यङ्, क्विप्, णिङ्, ईयङ्, णिच्, यक्, आय, यङ् ये १२ प्रत्यय जिसके भी अन्त में लगते हैं उनका नाम धातु हो जाता है।

अतः एध् की भी धातु संज्ञा है तथा एध् + इ + सन् - एधिस की भी 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातुसंज्ञा है। उख् की भी धातु संज्ञा है तथा उख् + इ + सन् - ओखिस की भी 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातुसंज्ञा है।

इसी प्रकार इ + सन् - ईस, उ + सन् - ऊस, आप् + सन् - ईप्स आदि की धातुसंज्ञा है।

देखिये कि इन अजादि धातुओं में पहिले एक ही अच् था, किन्तु सन् प्रत्यय के मिल जाने से अब ये धातु अजादि अनेकाच् धातु हो चुके हैं। इन अजादि अनेकाच् धातुओं को अब द्वित्व कीजिये -

अजादि धातुओं को द्वित्व करने की विधि

सन्यङोः / अजादेर्द्वितीयस्य - सन्नन्त तथा यङन्त हलादि धातुओं के प्रथम अवयव एकाच् को द्वित्व होता है तथा अजादि अनेकाच् धातुओं के द्वितीय अवयव एकाच् को द्वित्व होता है। द्वित्व करने का अर्थ होता है, एक धातु को दो बना देना। **यह द्वित्व इस प्रकार करें -**

एध् + इट् + सन् - एधिस / इसे देखिये, इसमें द्वितीय अच् 'इ' है। वह ध् के साथ मिलकर 'धि' बना है। अतः इस द्वितीयाक्षर धि को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व होकर बनेगा - एधिस - एधिधिस।

अत् + इट् + सन् - अतिस। इसे देखिये, इसमें द्वितीय अच् है 'इ'। यह त् के साथ मिलकर 'ति' बना है। अतः इस द्वितीयाक्षर 'ति' को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व होकर बनेगा - अतिस - अतितिस।

इष् + इट् + सन् - एषिस / द्वितीयाक्षर 'षि' को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व होकर बनेगा - एषिस - एषिषिस।

उख् + इट् + सन् - ओखिस। इसे देखिये, इसमें द्वितीय अच् है 'इ'। यह ख् के साथ मिलकर 'खि' बना है। अतः इस द्वितीयाक्षर 'खि' को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व होकर बनेगा - ओखिस - ओखिखिस।

ऋ + इट् + सन् - अरिस। द्वितीयाक्षर 'रि' को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व होकर बनेगा - अरिरिस।

इ + सन् - ईस। इसमें द्वितीय अच् 'अ', स् के साथ मिलकर 'स' बना है। अत: इस द्वितीयाक्षर 'स' को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व होकर बनेगा - ईसस।

उ + सन् - ऊस। इसमें द्वितीय अच् 'अ', स् के साथ मिलकर 'स' बना है। अत: इस द्वितीयाक्षर 'स' को ही 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व होकर बनेगा - ऊसस।

न न्द्राः संयोगादयः - यदि द्वितीय अवयव एकाच् के आदि में ऐसा संयोग हो जिसके आदि में न्, द्, र् हों, तो इन न्, द्, र् को छोड़कर बचे हुए द्वितीय अवयव एकाच् को द्वित्व होता है। यथा -

ऋध् + इट् + सन् - अर्धिस। इसमें द्वितीय अवयव एकाच् है 'र्धि'। इस द्वितीयाक्षर 'र्धि' में से र् को छोड़कर केवल 'धि' को द्वित्व होकर बनेगा - अर्धिस - अर्धिधिस।

उन्द् + इट् + सन् - उन्दिस। इसमें द्वितीय अवयव एकाच् है 'न्दि'। इस द्वितीयाक्षर 'न्दि' में से न् को छोड़कर केवल 'दि' को द्वित्व होकर बनेगा - उन्दिदिस।

अर्च् + इ + स = अर्चिष। इसमें द्वितीय अवयव एकाच् है र्चि। इसमें र् को छोड़कर केवल चि को द्वित्व होकर बनेगा - अर्चिचिष।

इसी प्रकार अड्ड् + इट् + सन् - अड्डिष में केवल डि को द्वित्व करके - अड्डिडिष / अज्ज् + इट् + सन् - अज्जिस से अज्जिजिस / अङ्घ् + इट् + सन् - अङ्घिस से अङ्घिघिस / उब्ज् + इट् + सन् - उब्जिस से उब्जिजिस, आदि बनाइये।

इसके अपवाद -

१. ईर्ष्य् धातु को इस प्रकार द्वित्व कीजिये -

ईर्ष्यतेस्तृतीयस्य द्वे - ईर्ष्य् + इट् + सन् = ईर्ष्यिस। इसमें यि को भी द्वित्व हो सकता है - ईर्ष्यियिस।

'स' को भी द्वित्व हो सकता है - ईर्ष्यिसस।

२. ऊर्णु धातु को इस प्रकार द्वित्व कीजिये -

ऊर्णु धातु - यदि अजादि धातु में पहिले से ही अनेक अच् हों, तब उनमें सन् तथा इट् को मिलाकर उन्हें अनेकाच् बनाने की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे अजादि अनेकाच् धातुओं में सन् तथा इट् को मिलाये बिना ही उनके द्वितीय अवयव एकाच् को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व कर दिया जाता है।

ध्यान दें कि धातुपाठ में अजादि धातुओं में केवल 'ऊर्णु' धातु ही ऐसा है, जिसमें एक से अधिक अच् हैं। इसे इस प्रकार द्वित्व कीजिये -

ऊर्णु + सन् / इट् का आगम करके - ऊर्णु + इट् + सन् / इसके द्वितीय अवयव एकाच् 'नु' को द्वित्व करके - ऊर्णुनु + इट् + सन्।

ध्यान दें कि इसमें 'र्' के बाद आने के कारण 'रषाभ्यां नो णः' सूत्र से 'नु' ही 'णु' बन गया था।

३. अजादि णिजन्त धातुओं को इस प्रकार द्वित्व कीजिये -

धातुओं से णिच् प्रत्यय लगाकर जो धातु बनते हैं, उनहें णिजन्त धातु कहा जाता है। इनके अन्त में णिच् प्रत्यय का 'इ' होता है। णिच् प्रत्यय के मिल जाने से धातु अनेकाच् हो जाते हैं और अनेकाच् हो जाने से सारे णिजन्त धातु सेट् हो जाते हैं। धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि विस्तार से णिजन्त प्रकरण में देखें। यहाँ अजादि णिजन्त धातुओं के कुछ उदाहरणों से समझें -

उख् + णिच् + इट् + सन् / उपधा के उ को पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके - ओखि + इट् + सन् / द्वितीयाक्षर 'खि' को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व करके - ओखिखि + इट् + सन्।

अत् + णिच् + इट् + सन् / अत उपधायाः सूत्र से उपधा को वृद्धि करके - आति + इट् + सन् / द्वितीयाक्षर 'ति' को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व करके - आतिति + इट् + सन् ।

ऋध् + णिच् + इट् + सन् / उपधा के इ को पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके - अर्धि + इट् + सन्। द्वितीयाक्षर 'धि' को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व करके - अर्धिधि + इट् + सन्।

इष् + णिच् + इट् + सन् / उपधा के इ को पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके - एषि + इट् + सन् / द्वितीयाक्षर 'षि' को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व करके - एषिषि + इट् + सन्।

ऋ + णिच् + इट् + सन् / अर्तिह्रीब्ली. सूत्र से पुक् का आगम करके अत् - ऋ + पुक् + णिच् + सन् / पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके - अर् + प् + इ + सन् - अर्पिष। इसमें र् को छोड़कर द्वितीय अवयव एकाच् 'पि' को द्वित्व करके - अर्पिपि + इट् + सन्।।

इसी प्रकार इ + णिच् + इट् + सन् को देखिये। इ को 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि करके - ऐ + णिच् + इट् + सन् - आयि + णिच् + इट् +

सन् / द्वितीयाक्षर 'यि' को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व करके - आयियि + इट् + सन्।

उ + णिच् + इट् + सन् को देखिये। उ को 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि करके - औ + णिच् + इट् + सन् - आवि + णिच् + इट् + सन् / द्वितीयाक्षर 'वि' को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व करके - आविवि + इट् + सन्।

यह अजादि सन्नन्त धातुओं को द्वित्व करने की विधि पूर्ण हुई।

अभ्यास संज्ञा तथा अभ्यासकार्य

पूर्वोऽभ्यासः - द्वित्व प्रकरण में जब भी जिस भी धातु को द्वित्व होता है, उसमें पूर्व वाले का नाम अभ्यास होता है। यथा -

एध् - एधिष - एधिधिष में पूर्व वाला 'धि' अभ्यास है, अट् - अटिष - अटिटिष में पूर्व वाला 'टि', अत् - अतिष - अतितिष में पूर्व वाला ति, इख् - एखिष - एखिखिष में पूर्व वाला खि, इष् - एषिष - एषिषिस में पूर्व वाला षि, ऋच्छ् - ऋच्छिष - ऋच्छिछिष में पूर्व वाला छि, उन्द् - उन्दिष - उन्दिदिष में पूर्व वाला दि, ईक्षिष - ईकिक्षिष में पूर्व वाला कि, ईर्ष्य् - ईर्ष्यिसस में पूर्व वाला स, ईर्ष्य् - ईर्ष्यियिष में पूर्व वाला यि अभ्यास हैं, यह जानिये।

ई - ईस - ईसस, में पूर्व वाला स, ऊ - ऊस - ऊसस में पूर्व वाला स, अभ्यास हैं, यह जानिये।

अब इन अभ्यासों में इस प्रकार अभ्यासकार्य कीजिये -

१. **कुहोश्चुः** - अब अभ्यास को देखिये। यदि अभ्यास में कवर्ग का कोई वर्ण हो, तो इस सूत्र से अभ्यास के उस कवर्ग के वर्ण को आप उसी क्रम से चवर्ग का वर्ण बना दीजिये।

यदि अभ्यास में 'ह' हो तो उसे 'ज' बना दीजिये। इसे चुत्व करना कहते हैं। यदि **'षत्व'** प्राप्त हो तो सब कार्य हो जाने के बाद अन्त में कीजिये।

अङ्क्	-	अङ्किस	अङ्किकिस	अञ्चिकिष
ईक्ष्	-	ईक्षिस	ईकिक्षिस	ईचिक्षिष
अङ्ग्	-	अङ्गिस	अङ्गिगिस	अञ्जिगिष
ऊह्	-	ऊहिस	ऊहिहिस	ऊजिहिष
ईह्	-	ईहिस	ईहिहिस	ईजिहिष

२. **अभ्यासे चर्च** - अभ्यास के झश् को जश् और खय् को चर् आदेश होते हैं।

अत: यदि अभ्यास में वर्ग का चतुर्थाक्षर अर्थात् झ, भ, घ, ढ, ध हों, तो उन्हें उसी वर्ग का तृतीयाक्षर अर्थात् ज, ब, ग, ड, द बना दीजिये, इसे जश्त्व करना कहते हैं।

जश्त्व इस प्रकार होता है –

उज्झ्	–	उज्झिस	उज्झिझिस	उज्जिझिष
उम्भ्	–	उम्भिस	उम्भिभिस	उम्बिभिष
एध्	–	एधिस	एधिधिस	एदिधिष

यदि अभ्यास में वर्ग के द्वितीयाक्षर हों अर्थात् ख, फ, छ, ठ, थ हों, तो उनको उसी वर्ग का प्रथमाक्षर बना दीजिये। इसे चर्त्व करना कहते हैं।

चर्त्व इस प्रकार होता है –

ऋम्फ्	–	ऋम्फिस	ऋम्फिफिस	ऋम्पिफिष
उञ्छ्	–	उञ्छिस	उञ्छिच्छिस	उञ्चिच्छिष
अण्ठ्	–	अण्ठिस	अण्ठिठिस	अण्टिठिष

विशेष – यदि अभ्यास में कुहोश्चु: और अभ्यासे चर्च सूत्र एक साथ प्राप्त हों तब आप पहिले पहिले कुहोश्चु: सूत्र से कार्य करें और बाद में अभ्यासे चर्च से। जैसे –

अङ्घ्	–	अङ्घिस	अङ्घिघिस	अज्झिघिस	अज्जिघिष
उख्	–	ओखिस	ओखिखिस	ओछिखिस	ओचिखिष
इङ्ख्	–	इङ्खिस	इङ्खिखिस	इञ्छिखिस	इञ्चिखिष

हमने देखा कि अभ्यास में रहने वाले कवर्ग के सारे व्यञ्जनों में, तथा अन्य वर्गों के केवल दूसरे, चौथे व्यञ्जनों में, तथा हकार में ही ये ऊपर कहे हुए परिवर्तन होते हैं।

यदि अभ्यास में दूसरे, चौथे व्यञ्जनों कवर्ग और हकार के अलावा कोई भी व्यञ्जन हैं तब आप उन्हें कुछ मत कीजिये। जैसे –

अत्	–	अतितिष	अतितिष
ऋ	–	अरिरिष	अरिरिष
अट्	–	अटिटिष	अटिटिष
इष्	–	एषिषिष	एषिषिस
उन्द्	–	उन्दिदिष	उन्दिदिष
उब्ज्	–	उब्जिजिष	उब्जिजिष

अञ्ज् - अञ्जिजिष अञ्जिजिष

अब हम अजादि धातुओं के सन्नन्त रूप बनायें

१. **अतिदेश का विचार** - ध्यान रहे कि 'विभाषोर्णोः' सूत्र से ऊर्णु धातु से परे आने वाले सेट् आर्धधातुक प्रत्यय, विकल्प से ङित्वत् माने जाते हैं।

तथा इको झल् सूत्र से अनिट् इगन्त धातुओं से परे आने वाला, झलादि अर्थात् अनिट् सन् प्रत्यय कितवत् होता है। यह बुद्धिस्थ रखें।

२. **इडागम का विचार** - यह भी बुद्धि में रखना चाहिये कि इस सन् प्रत्यय को इट् का आगम करना है या नहीं। अर्थात् धातु सेट् है या अनिट् ?

अजादि इकारान्त धातुओं के सन्नन्त रूप -

इक् धातु - यह धातु अनिट् है। इसमें हलन्त्यम् सूत्र से क् की इत् सञ्ज्ञा करके - इ + सन् / इको झल् सूत्र से अनिट् सन् प्रत्यय के कितवत् होने के कारण 'अज्झनगमां सनि' सूत्र से अन्तिम इ को दीर्घ करके - ई + स - ईस।. सनाद्यन्ता धातवः सूत्र से धातुसंज्ञा करके, 'सन्यङोः' सूत्र से द्वितीय अवयव एकाच् को द्वित्व करके - ईस - ईसस।

ध्यान दें कि इसमें पूर्व वाला 'स' अभ्यास है। इसके अन्त में 'अ' है।

अभ्यास के 'अ' को 'इ' बनाना -

सन्यतः - यदि अभ्यास के अन्त में 'अ' हो, तो अभ्यास के इस अन्तिम 'अ' को 'इ' हो जाता है, सन् प्रत्यय परे होने पर। जैसे - ईसस - ईसिस / अब दोनों 'स' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से षत्व करके - ईषिष।

पूर्ववत्सनः - यदि सन्नन्त धातु परस्मैपदी है, तो उसमें सन् लगने के बाद भी परस्मैपद के ही प्रत्यय लगाइये और यदि आत्मनेपदी है तो उसमें आत्मनेपद के प्रत्यय लगाइये।

इक् धातु परस्मैपदी है अतः सन् लगने के बाद भी यह परस्मैपदी ही रहेगा। अतः इसमें परस्मैपदी प्रत्यय लगाइये। ईषिष + ति।

कर्तरि शप् - कर्त्र्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर धातुओं से शप् होता है। ईषिष + शप् + ति / ईषिष + अ + ति / अतो गुणे से पूर्व वाले 'अ' को पररूप होकर - ईषिष + ति = ईषिषति। पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार

प्र.पु.	ईषिषति	ईषिषतः	ईषिषन्ति
म.पु.	ईषिषसि	ईषिषथः	ईषिषथ
उ.पु.	ईषिषामि	ईषिषावः	ईषिषामः

ईङ् (आत्मनेपदी) धातु – यह धातु अनिट् है तथा ङ् की इत् संज्ञा होने से आत्मनेपदी है। इ + सन् – इ को अज्झनगमां सनि सूत्र से दीर्घ करके – ईस / 'सन्यङो:' सूत्र से धातु के द्वितीय अवयव एकाच् 'स' को द्वित्व करके – ईसस / सन्यत: सूत्र से अभ्यास के अ को इ बनाकर – ईसिस / दोनों 'स' को आदेशप्रत्यययो: सूत्र से षत्व करके – ईषिष – पूर्ववत् ईषिषते।

यहाँ इण्, इङ् धातुओं का विचार यहाँ क्यों नहीं किया ?

आरम्भ में ही धात्वादेश में हमने पढ़ा है कि 'सनि च' सूत्र से सन् प्रत्यय परे होने पर, अबोधनार्थक इण् धातु को गम् आदेश होता है तथा 'इङश्च' सूत्र से सन् प्रत्यय परे होने पर, अबोधनार्थक इङ् धातु को भी गम् आदेश होता है।

गम् आदेश हो जाने से ये इण्, इङ् धातु अजादि नहीं रह जाते हैं, अत: इनका विचार यहाँ नहीं किया। इनका विचार हम हलादि धातुओं के अदुपध वर्ग में करेंगे।

अजादि उकारान्त धातुओं के सन्नन्त रूप –

उङ् धातु – यह धातु अनिट् है तथा ङ् की इत् संज्ञा होने से आत्मनेपदी है। उ + सन् – उ को अज्झनगमां सनि सूत्र से दीर्घ करके, ऊ + स – ऊस।

'सन्यङो:' सूत्र से धातु के द्वितीय अवयव एकाच् स को द्वित्व करके – ऊसस / सन्यत: सूत्र से अभ्यास के अ को इ बनाकर – ऊसिस / दोनों 'स' को आदेशप्रत्यययो: सूत्र से षत्व करके – ऊषिष – ऊषिषते।

ऊर्णु धातु – यह धातु वेट् है, तथा 'विभाषोर्णो:' सूत्र से इससे परे आने वाला सेट् सन् प्रत्यय विकल्प से ङित्वत् माना जाता है, अत: इसके रूप तीन प्रकार से बनेंगे –

१. जहाँ इडागम होगा, और सन् प्रत्यय ङित् नहीं होगा, वहाँ –

ऊर्णु + इट् + सन् / ऊर्णु + इ + स / ऊर्णुनु + इस। सार्वधातुकार्धधातुकयो: सूत्र से गुण करके – ऊर्णुनो – इस / एचोऽयवायाव: से 'ओ' को अव् आदेश करके – ऊर्णुनव् + इ + स, प्रत्यय के स को आदेशप्रत्यययो: सूत्र से षत्व करके – ऊर्णुनविष। ऊर्णु धातु परस्मैपदी है अत: ऊर्णुनविष धातु भी परस्मैपदी ही होगा और इसके रूप इस प्रकार बनेंगे –

लट् लकार

प्र.पु.	ऊर्णुनविषति	ऊर्णुनविषत:	ऊर्णुनविषन्ति
म.पु.	ऊर्णुनविषसि	ऊर्णुनविषथ:	ऊर्णुनविषथ
उ.पु.	ऊर्णुनविषामि	ऊर्णुनविषाव:	ऊर्णुनविषाम:

२. जहाँ इडागम होगा, और सन् प्रत्यय 'विभाषोर्णो:' सूत्र से ङित्वत् होगा, वहाँ - ऊर्णुनु + इस / क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध होने के कारण -

अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ - जब गुण नहीं होता है, तब धातु के अन्त में आने वाले इ को इयङ् तथा उ को उवङ् आदेश होते हैं अजादि कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर।

इस सूत्र से अन्तिम 'उ' को उवङ् करके - ऊर्णुनुव् - इस / प्रत्यय के 'स' को आदेशप्रत्यययो: सूत्र से षत्व करके - ऊर्णुनुविष - ऊर्णुनुविषति।

३. जहाँ इडागम नहीं होगा, और सन् प्रत्यय 'इको झल्' सूत्र से कित् होगा, वहाँ - ऊर्णनु + सन् - ऊर्णुनु + स, अन्तिम उ को 'अज्झनगमां सनि' सूत्र से दीर्घ करके - ऊर्णनू + स / प्रत्यय के स को 'आदेशप्रत्यययो:' सूत्र से षत्व करके - ऊर्णुनूष - ऊर्णुनूषति बनाइये।

अजादि हलन्त धातुओं के सन्नन्त रूप -

आप् धातु - आप् अनिट् परस्मैपदी धातु है। आप् + सन् / 'आप्ज्ञप्यृधामीत्' सूत्र से आ को ई बनाकर - ईप् + सन् - ईप्स। द्वितीय अवयव एकाच् स को 'सन्यङो:' सूत्र से द्वित्व करके - ईप्सस।

अत्र लोपोऽभ्यासस्य - आप्ज्ञप्यृधामीत् सूत्र में आप् धातु, ज्ञप् धातु, ऋध् धातु कहे गये हैं। इन धातुओं के अभ्यास का लोप हो जाता है। ईप्सस - अभ्यास का लोप करके - ईप्स - ईप्सति।

ऋध् धातु - यह वेट् धातु है। इसे विकल्प से इडागम होता है।

इडागम न होने पर - ऋध् + सन् / अब आप्ज्ञप्यृधामीत् सूत्र से अच् को ई आदेश कीजिये। ध्यान रहे कि ऋ के स्थान पर होने वाला 'ई' उरण रपर: सूत्र से ईर् हो जाता है। ऋध् + सन् - ईर्ध् + स - खरि च सूत्र से चर्त्व करके - ईर्त्स। द्वितीय अवयव एकाच् स को 'सन्यङो:' सूत्र से द्वित्व करके - ईर्त्सस। अत्र लोपोऽभ्यासस्य सूत्र से अभ्यास का लोप करके - ईर्त्स - ईर्त्सति।

इडागम होने पर - ऋध् + सन् / ऋध् + इट् + सन् /

पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके, अर्ध् + इट् + स - अर्धिस।

द्वितीय अवयव एकाच् 'धि' को 'सन्यङो:' सूत्र से द्वित्व करके - अर्धिधिस / अभ्यास को अभ्यासे चर्च से जश्त्व करके - अर्दिधिष - अर्दिधिषति।

शेष अजादि हलन्त धातुओं के सन्नन्त रूप -

द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके अजादि धातु का जो भी रूप बना है, उसमें यदि कोई अन्य कार्य प्राप्त न हो, तब उसमें परस्मैपद, आत्मनेपद का विचार

करके 'ति' 'ते' लगा लीजिये, बस। जैसे -

अङ्क्	-	अञ्चिकिष	-	अञ्चिकिषति
ईक्ष्	-	ईचिक्षिष	-	ईचिक्षिषते
अङ्ग्	-	अञ्जिगिष	-	अञ्जिगिषते
ऊह्	-	ऊजिहिष	-	ऊजिहिषते
ईह्	-	ईजिहिष	-	ईजिहिषते
उज्झ्	-	उज्जिझिष	-	उज्जिझिषति
उम्भ्	-	उम्बिभिष	-	उम्बिभिषति
एध्	-	एदिधिष	-	एदिधिषते
उख्	-	ओचिखिष	-	ओचिखिषति
इङ्ख्	-	इञ्चिखिष	-	इञ्चिखिषति
ऋम्फ्	-	ऋम्पिफिष	-	ऋम्पिफिषति
उञ्छ्	-	उञ्चिच्छिष	-	उञ्चिच्छिषति
अण्ठ्	-	अण्टिठिष	-	अण्टिठिषति
अङ्घ्	-	अञ्जिघिष	-	अञ्जिघिषति
अञ्ज्	-	अञ्जिजिष	-	अञ्जिजिषति
अत्	-	अतितिष	-	अतितिषति
ऋ	-	अरिरिष	-	अरिरिषति
अट्	-	अटिटिष	-	अटिटिषति
इष्	-	एषिषिष	-	एषिषिषति
उन्द्	-	उन्दिदिष	-	उन्दिदिषति
उब्ज्	-	उब्जिजिष	-	उब्जिजिषति

अब हम अजादि णिजन्त धातुओं के सन्नन्त रूप बनायें

ध्यान रहे कि णिच् प्रत्यय से बने हुए धातु सदा अनेकाच् होते हैं। अतः सेट् होते हैं। हम पढ़ चुके है कि यदि अजादि धातु के बाद 'णिच्' प्रत्यय हो, तथा उसके बाद 'सन्' प्रत्यय हो, तब धातु में 'णिच्' प्रत्यय के 'इ' को मिलाकर उसे अनेकाच् बना लिया जाता है, उसके बाद उसके द्वितीय अवयव एकाच् को 'सन्यङोः' सूत्र से द्वित्व कर दिया जाता है।

जैसे - एध् + णिच् - एधि / एधि + इट् + सन् - एधि धि + इट्+सन्-अभ्यास के ध् को जश्त्व करके - एदिधि + इस - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से एधि के अन्त के इ को गुण करके - एदिधे + इस -एचोऽयवायावः से

अयादेश करके एदिधय् + इस / प्रत्यय के स को षत्व करके - एदिधयिष = एदिधयिषति।

धातुओं में णिजन्त कैसे जोड़ें यह णिजन्त प्रक्रिया में विस्तार से बतलाया गया है, उसे वहीं देखें।

यह सारे अजादि धातुओं के सन्नन्त रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

हलादि धातुओं के सन्नन्त रूप बनाने की विधि

अत्यावश्यक -

हलादि धातुओं के सन्नन्त रूप बनाते समय यह ध्यान रखिये कि यदि धातु अनिट् है, तो पहिले अङ्गादिकार्य करना चाहिये तथा बाद में द्वित्वाभ्यासकार्य। यदि धातु सेट् है तो पहिले द्वित्वाभ्यासकार्य करना चाहिये, बाद में अङ्गादिकार्य।

वे कौन से अङ्गादिकार्य हैं, जो कि द्वित्व करने के पहिले अनिट् धातुओं को किये जाते हैं -

अङ्गादिकार्य

१. ॠकारान्त धातुओं को छोड़कर अन्य अजन्त धातुओं को तथा हन् गम् धातुओं को दीर्घ करना -

अज्झनगमां सनि - अजन्त धातुओं को, तथा हन्, गम् धातुओं को दीर्घ होता है, अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर। जैसे - चि + सन् - अज्झनगमां सनि सूत्र से दीर्घ करके - ची + स / इसी प्रकार - हु + सन् - हु + स / कृ + सन् - कॄ + स / गम् + सन् - गाम् + स / हन् + सन् - हान् + स आदि। ध्यान रहे कि सेट् सन् प्रत्यय परे होने पर यह दीर्घ न किया जाये।

ध्यान रहे कि अनिट् अजन्त धातुओं को तथा अनिट् गम्, हन् धातुओं को यह दीर्घ करके ही इन्हें द्वित्व किया जाये।

२. जिस ॠ के पूर्व में ओष्ठ्यवर्ण नहीं है, उसे इर् बनाना -

ॠत इद् धातोः - धातु के अन्त में आने वाले दीर्घ ॠ को इ आदेश होता है कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर।

उरण् रपरः - जब भी किसी सूत्र से ऋ के स्थान पर, अ, इ, या उ होना कहा जाये तब उन्हें अ, इ, या उ न करके अर्, इर्, उर् करना चाहिये।

अतः ॠत इद् धातोः सूत्र से जो दीर्घ ॠ के स्थान पर इ आदेश कहा गया है वह 'इ' न होकर इर् हो जायेगा। तॄ + सन् - तिर् + स -

हलि च - यदि धातु के अन्त में र् या व् हो और उपधा में इक् हो तो उस इक् को दीर्घ हो जाता है, हल् परे रहने पर। तिर् + स - तीर् + स।

ध्यान रहे कि अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर ॠकारान्त धातुओं के ॠ को इर् बनाकर ही इन्हें द्वित्व किया जाये।

३. जिस ॠ के पूर्व में ओष्ठ्यवर्ण है, उसे उर् बनाना -

उदोष्ठ्यपूर्वस्य - कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले दीर्घ ॠ को उ आदेश होता है यदि उस दीर्घ ॠ के पूर्व में आने वाला वर्ण पवर्ग या व् हो तो।

यह उ आदेश उरण् रपरः सूत्र से उर् हो जाता है। और हलि च सूत्र से दीर्घ होकर ऊर् हो जाता है। पॄ + सन् - पुर् + सन् - पूर् + स / वॄ + सन् - वुर् + सन् - वूर् + सन्।

ध्यान रहे कि अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर ओष्ठ्यवर्णपूर्वक ॠकारान्त धातुओं के ॠ को उर् बनाकर ही इन्हें द्वित्व किया जाये।

४. ग्रह्, स्वप्, प्रच्छ् धातुओं को सम्प्रसारण करना -

यद्यपि सम्प्रसारणकार्य अङ्गकार्य नहीं है, तथापि उसे यहाँ जानना आवश्यक है, अतः बतला रहे हैं।

५०३ पृष्ठ पर 'रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च' सूत्र को पढ़िये। इसके अनुसार देखिये कि इनमें केवल ग्रह्, स्वप्, प्रच्छ् धातुओं से परे आने वाला सन् प्रत्यय कित् होता है। अतः सन् प्रत्यय परे होने पर ग्रह्, प्रच्छ् धातुओं को 'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' सूत्र से सम्प्रसारण करके ही इन्हें द्वित्व कीजिये। ग्रह् + सन् - गृह् + सन् - गृह् गृह् + सन् / प्रच्छ् + सन् - पृच्छ् + सन् - पृच्छ् पृच्छ् + सन्।

स्वप् धातु को 'वचिस्वपियजादीनाम् किति' सूत्र से सम्प्रसारण करके ही इसे द्वित्व कीजिये। स्वप् + सन् - सुप् + सन् - सुप् सुप् + सन्।

५. अनिट् तृन्ह्, दम्भ् धातुओं के न् का लोप करना -

अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति - कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर, अनिदित् हलन्त धातुओं की उपधा के 'न्' का लोप होता है।

ध्यान रहे कि अनिदित् हलन्त धातुओं में से केवल तृन्ह्, दम्भ् धातु से परे आने वाला सन् प्रत्यय ही कित् है अतः इससे अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर इनकी उपधा के 'न्' का लोप होगा। न् का लोप करके ही इन्हें द्वित्व होगा।

तृन्ह् + सन् - तृह् + सन् - तृह् तृह् + सन्
दम्भ् + सन् - दभ् + सन् - दभ् दभ् + सन्

ध्यान रहे कि इडागम हो जाने पर इन्हें कित्वत्भाव नहीं होगा। अतः

सेट् सन् प्रत्यय परे होने इनकी उपधा के 'न्' का लोप भी नहीं होगा।

तृन्ह्	+	इट्	+	सन्	-	तृंह् तृंह्	+	इ	+	सन्
दम्भ्	+	इट्	+	सन्	-	दम्भ् दम्भ्	+	इ	+	सन्

६. छ् को श् तथा व् को ऊठ् आदेश करना -

च्छ्वोः शूडनुनासिके च - क्वि प्रत्यय परे होने पर झलादि कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर तथा अनुनासिक प्रत्यय परे होने पर, च्छ् को श् तथा व् को ऊठ् आदेश होता है। ध्यान रहे कि अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर धातुओं के अन्त में आने वाले छ् को श् तथा व् को ऊठ् आदेश करके ही इन्हें द्वित्व किया जाये। यथा -

दिव्	+	सन्	-	दि ऊठ्	+	सन्	=	द्यू	+	सन्
सिव्	+	सन्	-	सि ऊठ्	+	सन्	=	स्यू	+	सन्
स्त्रिव्	+	सन्	-	स्त्रि ऊठ्	+	सन्	=	स्त्र्यू	+	सन्
ष्ठिव्	+	सन्	-	ष्ठि ऊठ्	+	सन्	=	ष्ठ्यू	+	सन्

७. सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस् - सन् प्रत्यय परे रहने पर मी धातु, मा धातु, घु धातु, रभ् धातु, लभ् धातु, शक् धातु, पत् धातु, पद् धातुओं के अच् को इस् आदेश होता है।

ध्यान रहे कि अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर मी धातु, मा धातु, घु धातु, रभ् धातु, लभ् धातु, शक् धातु, पत् धातु, पद् धातुओं के अच् को इस् आदेश करके ही इन्हें द्वित्व किया जाये।

८. आप्ज्ञप्यृधामीत् - सन् प्रत्यय परे रहने पर आप् धातु, ज्ञप् धातु, ऋध् धातुओं के अच् को ई आदेश होता है।

ध्यान रहे कि अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर ज्ञप् धातु के अच् को 'ई' आदेश करके ही इसे द्वित्व किया जाये। आप् और ऋध् धातु अजादि धातुओं के वर्ग में बतलाये जा चुके हैं।

९. दम्भ इच्च - सन् प्रत्यय परे रहने पर दम्भ् धातु के अच् को विकल्प से इ, ई आदेश होता है। **ध्यान रहे कि अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर दम्भ् धातु के अच् को विकल्प से 'इ' 'ई' आदेश करके ही इसे द्वित्व किया जाये।**

१०. मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा - सन् प्रत्यय परे रहने पर अकर्मक मुच् धातु के अच् को विकल्प से गुण होता है सकारादि सन् प्रत्यय परे होने पर।

ध्यान रहे कि अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर मुच् धातु के अच् को विकल्प से गुण करके ही इसे द्वित्व किया जाये।

११. **अत्र लोपोऽभ्यासस्य** - सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस्, आप्ज्ञप्यृधामीत्, दम्भ इच्च, मुचोऽकर्मकस्यगुणो वा, इन चार सूत्रों में जितने भी धातु कहे गये हैं, उन धातुओं को द्वित्व करने के बाद उनके अभ्यास का लोप हो जाता है।

अत: इन्हें द्वित्व करके इनके अभ्यास का लोप कर दें। इन सबके उदाहरण आगे देंगे। **इन सूत्रों के अर्थों को बुद्धिस्थ करके ही अब हलादि धातुओं के सन्नन्त रूप बनाइये।**

हलादि धातुओं को द्वित्व कैसे करें ?

सन्यङो: / एकाचो द्वे प्रथमस्य - सन्नन्त तथा यङन्त हलादि अनभ्यास धातु के प्रथम अवयव एकाच् को द्वित्व होता है।

द्वित्व करने में बहुत सावधानी यह रखना चाहिये कि -

१. हमने अजादि धातुओं में पहिले इट्, सन् को जोड़कर, उन्हें अनेकाच् बना लिया है, तब उन्हें 'सन्यङो:' सूत्र से द्वित्व किया है। जैसे -

एध् + इट् + सन् - एधिस - द्वितीय अवयव एकाच् 'धि' को द्वित्व करके - एधिधिष / उख् + इट् + सन् - ओखिस - ओखिखिष आदि।

किन्तु हलादि धातुओं में ऐसा नहीं होता। यहाँ सन्, धातु से दूर ही बैठा रहता है और इट्, सन् को छोड़कर, यह द्वित्व केवल धातु को ही होता है। यथा - यु + इट् + सन् - यु यु + इट् + सन् आदि।

२. दूसरी बात यह कि हमने अजादि सन्नन्त धातु के द्वितीय अवयव एकाच् को द्वित्व किया है। किन्तु यदि धातु हलादि हो, तब उसके प्रथम अवयव एकाच् को ही द्वित्व होता है। अजादि तथा हलादि, दोनों ही प्रकार के धातुओं को द्वित्व करने में यह सावधानी रखना चाहिये कि -

द्विर्वचनेऽचि - यदि धातु अनिट् है, तो पहिले अङ्गादिकार्य किये जाते हैं, तथा बाद में द्वित्वाभ्यासकार्य। यदि धातु सेट् है तो पहिले द्वित्वाभ्यासकार्य किये जाते हैं, बाद में अङ्गादिकार्य। यही 'द्विर्वचनेऽचि' सूत्र का तात्पर्य है।

अत: द्वित्व करने के लिये हलादि धातुओं के दो वर्ग बनाइये।

१. हलादि अनिट् धातु - हलादि धातु यदि अनिट् हो तब उसमें पहिले ऊपर कहे हुए कार्यों में से जो भी अङ्गादिकार्य प्राप्त हों, उन्हें कर लीजिये। उसके बाद ही द्वित्व तथा अभ्यासकार्य कीजिये। जैसे -

कृ + सन् - अज्झनगमां सनि सूत्र से दीर्घ करके - कॄ + स / ॠत इद् धातो: सूत्र से ॠ को इर् करके - किर् + स / अब इस 'किर्' को द्वित्व

कीजिये।

तॄ + सन् / ॠत इद् धातोः सूत्र से ॠ को इर् करके - तिर् + स / अब इस 'तिर्' को द्वित्व कीजिये।

वृ + सन् अज्झनगमां सनि सूत्र से दीर्घ करके - वॄ + स / उदोष्ठ्यपूर्वस्य सूत्र से ॠ को उर् करके - वुर् + स / अब इस 'वुर्' को द्वित्व कीजिये।

मृ + सन् - अज्झनगमां सनि सूत्र से दीर्घ करके - मॄ + स / उदोष्ठ्यपूर्वस्य सूत्र से ॠ को उर् करके - मुर् + स / अब इस 'मुर्' को द्वित्व कीजिये।

भृ + सन् - अज्झनगमां सनि सूत्र से दीर्घ करके - भॄ + स / उदोष्ठ्यपूर्वस्य सूत्र से ॠ को उर् करके - भुर् + स / अब इस 'भुर्' को द्वित्व कीजिये।

स्वप् + सन् - वचिस्वपियजादीनां किति सूत्र से सम्प्रसारण करके - सुप् + स / अब इस 'सुप्' को द्वित्व कीजिये।

२. **हलादि सेट् धातु** - हलादि धातु यदि सेट् हो तब उसे पहिले द्वित्व तथा अभ्यासकार्य कीजिये। उसके बाद जो भी अङ्गादिकार्य प्राप्त हों, उन्हें कीजिये।

जैसे - यु + इट् + सन् में पहिले यु को द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके यियु + इस बनाइये। उसके बाद ही सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - यियो + इस आदि बनाइये। यह सावधानी रखकर ही हलादि धातुओं को इस प्रकार द्वित्व कीजिये -

यदि हलादि धातु में एक ही अच् हो तब आप पूरे के पूरे धातु को द्वित्व कर दीजिये क्योंकि उस धातु में वही प्रथम अवयव एकाच् है। जैसे-

पठ्	+	सन्	-	पठ् पठ्	+	सन्
वद्	+	सन्	-	वद् वद्	+	सन्
लिख्	+	सन्	-	लिख् लिख्	+	सन्
खाद्	+	सन्	-	खाद् खाद्	+	सन् आदि।

यदि हलादि धातु में एक से अधिक अच् हों, तब आप उस धातु के पहिले हल् और पहिले अच् को मिलाकर जो भी अक्षर बने उसको द्वित्व कर दीजिये क्योंकि उस धातु में वही प्रथम अवयव एकाच् है। जैसे -

चकास्	+	सन्	-	च चकास्	+	सन्	-
जागृ	+	सन्	-	जा जागृ	+	सन्	-

दरिद्रा + सन् - द दरिद्रा + सन् - आदि।

यदि धातु अनिट् हो तो पहिले ऊपर कहे हुए अङ्गादिकार्य करके, उसके बाद ही द्वित्व कीजिये।

कृ	+	सन्	-	किर्	+	सन्	-	किर् किर्	+	सन्
मृ	+	सन्	-	मुर्	+	सन्	-	मुर् मुर्	+	सन्
तॄ	+	सन्	-	तिर्	+	सन्	-	तिर् तिर्	+	सन्
वृ	+	सन्	-	वुर्	+	सन्	-	वुर् वुर्	+	सन्
दा	+	सन्	-	दिस्	+	सन्	-	दिस् दिस्	+	सन्
मा	+	सन्	-	मिस्	+	सन्	-	मिस् मिस्	+	सन्
पद्	+	सन्	-	पिस्	+	सन्	-	पिस् पिस्	+	सन्
गम्	+	सन्	-	गाम्	+	सन्	-	गाम् गाम्	+	सन्
हन्	+	सन्	-	हान्	+	सन्	-	हान् हान्	+	सन्
दिव्	+	सन्	-	द्यू	+	सन्	-	द्यू द्यू	+	सन्
सिव्	+	सन्	-	स्यू	+	सन्	-	स्यू स्यू	+	सन्
स्त्रिव्	+	सन्	-	स्त्र्यू	+	सन्	-	स्त्र्यू स्त्र्यू	+	सन्
ष्ठिव्	+	सन्	-	ष्ठ्यू	+	सन्	-	ष्ठ्यू ष्ठ्यू	+	सन्
ग्रह्	+	सन्	-	गृह्	+	सन्	-	गृह् गृह्	+	सन्
प्रच्छ्	+	सन्	-	पृच्छ्	+	सन्	-	पृच्छ् पृच्छ्	+	सन्
स्वप्	+	सन्	-	सुप्	+	सन्	-	सुप् सुप्	+	सन्
ज्ञप्	+	सन्	-	ज्ञिप्	+	सन्	-	ज्ञिप् ज्ञिप्	+	सन्
तृंह्	+	सन्	-	तृह्	+	सन्	-	तृह् तृह्	+	सन्
दम्भ्	+	सन्	-	दभ्	+	सन्	-	दभ् दभ्	+	सन्

पूर्वोऽभ्यासः - हम जानते हैं कि जिसे द्वित्व किया जाता है, उन दो में जो पूर्व वाला अंश होता है, उसका नाम अभ्यास होता है।

द्वित्व करने के बाद इस प्रकार अभ्यासकार्य कीजिये -

अभ्यासकार्य

१. हलादिः शेषः - अभ्यास के धातु में जो हल् आदि में है, वह शेष रहता है, तथा जो हल् आदि में नहीं हैं, उन हलों का लोप हो जाता है।

अब अभ्यास के धातुओं को देखिये, इनमें जो पहिला हल् तथा पहिला अच् है उसे बचा लीजिये, शेष का लोप कर दीजिये। जैसे - पठ् पठ् को देखिये, इसमें पूर्व वाला पठ् अभ्यास है, इस अभ्यास में पहिला हल् प् है तथा पहिला अच्

अ है, इन्हें मिलाकर बना 'प'। इसे बचा लीजिये तथा शेष का हलादिः शेषः से लोप कर दीजिये, तो बनेगा - पपठ्।

'हलादिः शेषः' सूत्र से, आदि हल् के अलावा, अन्य हलों का लोप कर देना अभ्यासकार्य है।

ज्ञा ज्ञा को देखिये, इसमें पूर्व वाला 'ज्ञा' अभ्यास है। इस अभ्यास में पहिला हल् 'ज्' है तथा पहिला अच् 'आ' है, इन्हें मिलाकर बना 'जा'। इसे बचा लीजिये तथा शेष का हलादिः शेषः से लोप कर दीजिये, तो बनेगा - जाज्ञा।

अब कुछ धातुओं को द्वित्व करके, अभ्यास के 'पहिले हल् + पहिले अच्' को बचाकर शेष का लोप करके देखिये -

पठ्	को	पठ् पठ्	प पठ्
वद्	को	वद् वद्	व वद्
लिख्	को	लिख् लिख्	लि लिख्
खाद्	को	खाद् खाद्	खा खाद्
मूष्	को	मूष् मूष्	मू मूष्
भुज्	को	भुज् भुज्	भु भुज्
भूष्	को	भूष् भूष्	भू भूष्
मील्	को	मील् मील्	मी मील्
ज्ञा	को	ज्ञा ज्ञा	जा ज्ञा
श्रि	को	श्रि श्रि	शि श्रि
स्तु	को	स्तु स्तु	सु स्तु
द्यू	को	द्यू द्यू	दु द्यू
दा - दिस्	को	दिस् दिस्	दि दिस्
पद् - पिस्	को	पिस्	पि पिस्
वृ - वुर्	को	वुर् वुर्	वु वुर्
कॄ - किर्	को	किर् किर्	कि किर्
मृ - मुर्	को	मुर् मुर्	मु मुर्

पा + सन् - पा पा + सन् / नी + सन् - नी नी + सन् आदि में अभ्यास जो 'पा' 'नी' हैं, उनमें एक ही 'हल्' है, अतः यहाँ किसी का लोप मत कीजिये। जैसे - नी - नी नी / पा - पा पा / भू - भू भू आदि।

हलादिः शेषः के अपवाद -

शर्पूर्वाः खयः - यदि ऐसे हलादि धातु हों जिनके आदि में स्, श्, या

ष् हों तथा उन स्, श्, ष् के बाद, किसी भी वर्ग का प्रथम या द्वितीय अक्षर हो, जैसे स्था, स्फुल्, स्तुभ्, स्तम्भ्, स्पर्ध्, स्पृश्, श्च्युत् आदि में है, तब इन धातुओं के अभ्यासों में से, द्वितीय हल् तथा प्रथम अच् को मिलाकर जो भी अक्षर बने उसे बचा लीजिये, और शेष का लोप कर दीजिये। इसे करके देखिये -

स्पर्ध् - स्पर्ध् स्पर्ध् को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में पवर्ग का प्रथम अक्षर प् है। अतः इस अभ्यास के द्वितीय हल् 'प्' तथा प्रथम अच् 'अ', इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'प' को बचा लीजिये। और शेष का **शर्पूर्वाः खयः** से लोप कर दीजिये - स्पर्ध् - स्पर्ध् स्पर्ध् को पस्पर्ध्।

इसी प्रकार स्था - स्था स्था को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में तवर्ग का द्वितीय अक्षर थ् है, अतः इस अभ्यास के द्वितीय हल् थ् तथा प्रथम अच् आ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'था' को बचा लीजिये। और शेष का **शर्पूर्वाः खयः** से लोप कर दीजिये - स्था - स्था स्था को थास्था।

इसी प्रकार स्तम्भ् - स्तम्भ् स्तम्भ् को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में तवर्ग का प्रथम अक्षर त् है, अतः इस अभ्यास के द्वितीय हल् त् तथा प्रथम अच् अ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'त' को बचा लीजिये। और शेष का **शर्पूर्वाः खयः** से लोप कर दीजिये - स्तम्भ् - स्तम्भ् स्तम्भ् को तस्तम्भ्।

इसी प्रकार स्फुल् को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में स् है, उस स् के बाद में पवर्ग का द्वितीय अक्षर फ् है। अतः इस अभ्यास के द्वितीय हल् फ् तथा प्रथम अच् उ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'फु' को बचा लीजिये। और शेष का **शर्पूर्वाः खयः** से लोप कर दीजिये - स्फुल् को फुस्फुल्।

इसी प्रकार श्च्युत् को देखिये। यहाँ अभ्यास के आदि में श् है, उस श् के बाद में चवर्ग का प्रथम अक्षर च् है। अतः इस अभ्यास के द्वितीय हल् च् तथा प्रथम अच् उ, इन दोनों को मिलाकर बने हुए 'चु' को बचा लीजिये। और शेष का **शर्पूर्वाः खयः** से लोप कर दीजिये - श्च्युत् को चुश्च्युत्।

ऐसे धातु इस प्रकार हैं -

स्पर्ध्	-	पस्पर्ध्	स्कुन्द्	-	कु स्कुन्द्
स्पन्द्	-	पस्पन्द्	स्तुच्	-	तु स्तुच्
स्फूर्ज्	-	फूस्फूर्ज्	स्फुट्	-	फु स्फुट्
स्तम्भ्	-	तस्तम्भ्	स्कम्भ्	-	क स्कम्भ्
स्तुभ्	-	तुस्तुभ्	स्वद्	-	ख स्वद्

स्खल्	-	खस्खल्	स्थल्	-	थ स्थल्
स्पश्	-	पस्पश्	स्कन्द्	-	क स्कन्द्
स्तिघ्	-	तिस्तिघ्	स्थुड्	-	थु स्थुड्
स्फुर्	-	फुस्फुर्	स्फुल्	-	फु स्फुल्
स्फुड्	-	फुस्फुड्	स्फुड्	-	फु स्फुड्
स्फिट्ट्	-	फिस्फिट्ट्	स्तुप्	-	तु स्तुप्
स्तन्	-	तस्तन्	स्तेन्	-	ते स्तेन्
स्कु	-	कु स्कु	स्तॄ	-	तृस्तॄ
स्तु	-	तु स्तु	स्ता	-	ता स्ता
स्था	-	थास्था	स्त्या	-	ता स्त्या।

२. **उरत्** - अभ्यास के अन्त में आने वाले, ऋ, ॠ, को 'अ' होता है। यह 'अ' उरण् रपरः सूत्र की सहायता से 'अर्' हो जाता है।

अतः यदि 'हलादिः शेषः' सूत्र से अभ्यास के हलों का लोप करने के बाद किसी अभ्यास के अन्त में ऋ, ॠ, आ गये हों, जैसे - वृत् - वृत् वृत् - वृ वृत् में है / तो ऐसे अभ्यासों के अन्तिम ऋ ,ॠ को भी इस सूत्र से अर् बनाइये और हलादिः शेषः सूत्र से 'र्' का लोप कर दीजिये। यथा -

वृष्	-	वृष् वृष्	-	वृ वृष्	-	वर् वृष्	-	व वृष्
कृष्	-	कृष् कृष्	-	कृ कृष्	-	कर् कृष्	-	क कृष्
हृष्	-	हृष् हृष्	-	हृ हृष्	-	हर् हृष्	-	ह हृष्
वृत्	-	वृत् वृत्	-	वृ वृत्	-	वर् वृत्	-	व वृत्

३. **ह्रस्वः** - धातु को द्वित्व तथा 'हलादिः शेषः' करने के बाद देखिये, कि जो अभ्यास है, उसमें यदि दीर्घ स्वर है, तो उसे ह्रस्व हो जाता है।

ह्रस्व इस प्रकार होते हैं -

आ का ह्रस्व	अ	-	यथा	-	खा खाद्	-	ख खाद्
ई का ह्रस्व	इ	-	यथा	-	नी नी	-	नि नी
ऊ का ह्रस्व	उ	-	यथा	-	भू भू	-	भु भू
ए का ह्रस्व	इ	-	यथा	-	से सेव्	-	सि सेव्
ओ का ह्रस्व	उ	-	यथा	-	गो गोष्ट्	-	गु गोष्ट्
औ का ह्रस्व	उ	-	यथा	-	ढौ ढौक्	-	ढु ढौक्

४. **कुहोश्चुः** - अब अभ्यास को देखिये। यदि अभ्यास में कवर्ग का कोई वर्ण हो, तो इस सूत्र से अभ्यास के उस कवर्ग के वर्ण को आप, चवर्ग का वर्ण

बना दीजिये। ध्यान रहे कि वर्ण का क्रमाङ्क वही रहे - जैसे क को च / ख को छ / ग को ज / घ को झ। इसे चुत्व करना कहते हैं। यदि अभ्यास में 'ह' हो तो उस 'ह' को चुत्व करके 'ज' बना दीजिये। कुछ उदाहरण -

कृ	कि किर्	कि किर्	चि किर्
खन्	खन् खन्	ख खन्	छ खन्
गम्	गम् गम्	ग गम्	ज गम्
हस्	हस् हस्	ह हस्	ज हस्
हन्	हान् हान्	ह हान्	ज हान्

अभ्यासाच्च - अभ्यास से परे जो हन् धातु का हकार उसे कवर्गादेश होकर घ् हो जाता है। जैसे - हन् - जहान् - जघान्

५. **अभ्यासे चर्च** - यदि अभ्यास में वर्ग का चतुर्थाक्षर है तो इसे उसी वर्ग का तृतीयाक्षर बना दीजिये, इसे जश्त्व करना कहते हैं, तथा यदि अभ्यास में वर्ग का द्वितीयाक्षर है तो उसे उसी वर्ग का प्रथमाक्षर बना दीजिये। इसे चर्त्व करना कहते हैं। उदाहरण -

चर्त्व		**जश्त्व**	
थु थुड्	तु थुड्	भ भ्रज्ज्	ब भ्रज्ज्
छ खन्	च खन्	झ झर्झ्	ज झर्झ्
फ फल्	प फल्	ढु ढौक्	डु ढौक्
फ फण्	प फण्	भु भू	बु भू आदि।

हमने देखा कि अभ्यास में रहने वाले कवर्ग के सारे व्यञ्जनों में तथा अन्य वर्गों के केवल दूसरे, चौथे व्यञ्जनों में, तथा हकार में ही ये ऊपर कहे हुए परिवर्तन होते हैं।

यदि अभ्यास में दूसरे, चौथे व्यञ्जनों, कवर्ग और हकार के अलावा कोई भी व्यञ्जन हैं, तब आप उन्हें कुछ मत कीजिये। जैसे -

चल्	-	च चल्	-	च चल्
जप्	-	ज जप्	-	ज जप्
टीक्	-	टि टीक्	-	टि टीक्
डी	-	डि डी	-	डि डी
तॄ	-	त तॄ	-	त तॄ
दल्	-	द दल्	-	द दल्
नम्	-	न नम्	-	न नम्

पत्	-	प पत्	-	प पत्
बाध्	-	ब बाध्	-	ब बाध्
मील्	-	मि मील्	-	मि मील्
यम्	-	य यम्	-	य यम्
वृध्	-	व वृध्	-	व वृध्
रम्	-	र रम्	-	र रम्
लप्	-	ल लप्	-	ल लप्
शास्	-	श शास्	-	श शास्

६. **द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम्** - द्युत् धातु तथा ण्यन्त स्वप् धातु के अभ्यास को सम्प्रसारण होता है। जैसे - द्युत् - द्वित्व करके द्युत् द्युत् - अभ्यास को सम्प्रसारण करके - दिद्युत्।

७. **अभ्यास के 'अ' को 'इ' बनाना** - ये सारे कार्य हो चुकने के बाद हम देखें कि क्या अभ्यास में 'अ' है, यदि है तो उसे 'इ' बना दीजिये।

सन्यतः - यदि अभ्यास के अन्त में अ हो, तो अभ्यास के उस अन्तिम 'अ' को 'इ' हो जाता है, सन् प्रत्यय परे होने पर। जैसे -

स्पर्ध्	-	पस्पर्ध्	-	पिस्पर्ध्
स्पन्द्	-	पस्पन्द्	-	पिस्पन्द्
स्खल्	-	चस्खल्	-	चिस्खल्
स्थल्	-	तस्थल्	-	तिस्थल्
स्पश्	-	पस्पश्	-	पिस्पश्
स्कन्द्	-	चस्कन्द्	-	चिस्कन्द्
स्तन्	-	तस्तन्	-	तिस्तन्
वृष्	-	व वृष्	-	वि वृष्
खन्	-	च खन्	-	चि खन्
चल्	-	च चल्	-	चि चल्
जप्	-	ज जप्	-	जि जप्
दल्	-	द दल्	-	दि दल्
पत्	-	प पत्	-	पि पत्
बाध्	-	ब बाध्	-	बि बाध्
वृध्	-	व वृध्	-	वि वृध्
लप्	-	ल लप्	-	लि लप्

शास्	-	श शास्	-	शि शास्
हन्	-	जघान्	-	जि घान् आदि।

हमने जाना कि - धातु में सन् प्रत्यय जोड़ते समय हमारी दृष्टि में चार बातें एकदम स्पष्ट होना चाहिये।

१. पहिली बात यह स्पष्ट होना चाहिये कि सन् प्रत्यय को देखकर कहीं किसी धातु को धात्वादेश होकर धातु की आकृति तो नहीं बदल रही है ? धात्वादेश हमने प्रारम्भ में ही दे दिये हैं।

२. दूसरी बात यह स्पष्ट होना चाहिये कि जिस धातु में हम प्रत्यय जोड़ रहे हैं, वह धातु सेट् है या अनिट् या वेट् ?

यदि धातु सेट् है तो सन् प्रत्यय को इट् का आगम कीजिये। यदि धातु अनिट् है तो सन् प्रत्यय को इट् का आगम मत कीजिये। यदि धातु वेट् है तो सन् प्रत्यय को इट् का आगम विकल्प से कीजिये।

धातुओं की इडागम व्यवस्था का निष्कृष्टार्थ प्रारम्भ में दिया जा चुका है, उसे वहीं देखकर तथा समझकर ही यहाँ प्रविष्ट हों।

३. तीसरी बात यह स्पष्ट होना चाहिये कि कहीं किसी अतिदेश सूत्र के प्रभाव से यह सन् प्रत्यय कित् जैसा अथवा कहीं ङित् जैसा तो नहीं मान लिया गया है ?

४. यह भी स्पष्ट होना चाहिये कि जब सन् प्रत्यय को इडागम हो, तब हमें द्वित्वकार्य पहिले करना है। जब सन् प्रत्यय को इडागम न हो, तब हमें अङ्गादिकार्य पहिले करना है।

इन चार निर्णयों पर ही हमारी सारी सन्नन्त प्रक्रिया आधारित है। ये चारों कार्य ऊपर बतलाये जा चुके हैं।

अब हम हलादि धातुओं के सन्नन्त रूप इस क्रम से बनायें -

१. हलादि अजन्त धातु। २. हलादि हलन्त धातु।

हलादि अजन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि

इनका इस प्रकार वर्गीकरण कीजिये - हलादि आकारान्त तथा एजन्त धातु, हलादि इकारान्त धातु, हलादि ईकारान्त धातु, हलादि उकारान्त धातु, हलादि ऊकारान्त धातु, हलादि ऋकारान्त धातु, हलादि ॠकारान्त धातु।

१. आकारान्त तथा एजन्त धातुओं के सन्नन्त रूप

इडागम विचार - सन् प्रत्यय परे होने पर सारे के सारे आकारान्त तथा एजन्त धातु अनिट् हैं। दरिद्रा धातु वेट् है। इनके रूप इस प्रकार बनाइये-

पा + सन् / हलन्त्यम् सूत्र से न् की इत् संज्ञा करके बना - पा + स / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - पपा + स / सन्यतः से अभ्यास को इत्व करके पिपा + स - पिपास - पिपासति। इसी प्रकार -

घ्रा + सन् - घ्रा + स - द्वित्वाभ्यासकार्य करके - जघ्रा + स / सन्यतः से अभ्यास को इत्व करके जिघ्रास - जिघ्रासति।

भा + सन् - द्वित्वाभ्यासकार्य करके - बभा + स / सन्यतः से अभ्यास को इत्व करके - बिभास - बिभासति आदि बनाइये।

हम जानते हैं कि शित् प्रत्ययों को छोड़कर, आदेच उपदेशेऽशिति सूत्र से सारे एजन्त धातुओं को 'आ' अन्तादेश होता है।

अतः सन् प्रत्यय परे होने पर सारे एजन्त धातुओं को 'आ' अन्तादेश कीजिये - ग्लै - ग्ला, म्लै - म्ला, ध्यै - ध्या, शो - शा, सो - सा, वे - वा छो - छा आदि।

आकारान्त होने के कारण ये एजन्त धातु भी अनिट् हैं। अतः इनके रूप भी ठीक इसी प्रकार बनेंगे। म्लै - म्ला - मम्ला - मिम्ला - मिम्लासति।

इसके अपवाद - घु संज्ञक दा, धा धातु तथा मा धातु -

सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस् - सन् प्रत्यय परे रहने पर मी धातु, मा धातु, घु संज्ञक दा, धा धातु, रभ् धातु, लभ् धातु, शक् धातु, पत् धातु तथा पद् धातु के अच् को इस् आदेश होता है।

दा + सन्, आ को इस् होकर = दिस् + स / द्वित्वाभ्यासकार्य करके - दिदिस् + स / अत्र लोपोऽभ्यासस्य सूत्र से अभ्यास का लोप करके - दिस् + स -

सः स्यार्धधातुके - स् को त् आदेश होता है सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। दिस् + स - दित्स - दित्सति। इसी प्रकार -

धा	+	सन्	-	धिस्	+	स	=	धित्स	-	धित्सति
मा	+	सन्	-	मिस्	+	स	=	मित्स	-	मित्सति

दरिद्रा धातु - हम जानते है कि दरिद्रा धातु सन् प्रत्यय परे होने पर वेट् होता है। अतः इसके रूप इस प्रकार बनाइये -

इडागम होने न होने पर - दरिद्रा + सन् / द्वित्वाभ्यासकार्य करके - ददरिद्रा + स / सन्यतः से अभ्यास को इत्व करके दिदरिद्रा + स - दिदरिद्रास - दिदरिद्रासति।

इडागम होने होने पर - दरिद्रा + इट् + सन् - दरिद्रा + इस / द्वित्वाभ्यासकार्य करके तथा सन्यतः से अभ्यास के अ को इत्व करके दिदरिद्रा + इस / **'दरिद्रातेरार्धधातुके विवक्षिते आलोपो वाच्यः'** इस वार्तिक से 'आ' का लोप करके दिदरिद्र् + इस / प्रत्यय के स को षत्व करके दिदरिद्र् + इष - दिदरिद्रिष - दिदरिद्रिषति।

ह्वेञ् धातु - आदेच उपदेशेऽशिति सूत्र से ह्वेञ् धातु को ह्वा बनाइये।

अभ्यस्तस्य च - इस ह्वा धातु को द्वित्व के पहले ही सम्प्रसारण हो जाता है। अतः इसे पहले सम्प्रसारण करके हु बनाइये।

ह्वे + सन् / सम्प्रसारण होकर - हु + स / अज्झनगमां सनि सूत्र से दीर्घ करके - हू + स / अब द्वित्वाभ्यासकार्य करके - जुहूष - जुहूषति

यह आकारान्त धातुओं में सन् प्रत्यय जोड़ने की विधि पूर्ण हुई।

सेट् इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के सन्नन्त रूप

इडागम विचार - स्मि, श्वि, डी, शी, को छोड़कर शेष इकारान्त, ईकारान्त धातु सन् प्रत्यय में अनिट् होते हैं। श्रि धातु वेट् होता है, शेष इकारान्त, ईकारान्त धातु अनिट् होते हैं।

सेट् धातुओं को पहिले द्वित्व कीजिये, बाद में इनमें सन् प्रत्यय को देखकर अङ्गकार्य कीजिये। अङ्गकार्य करने के लिये यह ध्यान रखिये कि इन धातुओं से परे आने वाला सन् प्रत्यय सेट् होने के कारण कित् नहीं होता है।

स्मि- सिस्मि + सन् - सिस्मि + इ + स / 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण होकर सिस्मे + इ + स / एचोऽयवायावः से अयादेश होकर सिस्मय् + इ + स / आदेशप्रत्यययोः सूत्र से प्रत्यय के स को षत्व होकर सिस्मय् + इ + ष = सिस्मयिष - सिस्मयिषते।

इसी प्रकार - श्वि - शिश्वि + इट् + सन् से शिश्वयिषति / शी - शिशी + इट् + सन् से शिशयिषते / डी - डिडी + इट् + सन् से डिडयिषते बनाइये। श्रि धातु वेट् है, अतः इससे शिश्रयिषति और शिश्रीषति बनेंगे।

अनिट् इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के सन्नन्त रूप

इको झल् - अनिट् इगन्त धातुओं से परे आने वाला अनिट् सन् प्रत्यय कित् होता है। अनिट् धातुओं में पहिले अङ्गकार्य कीजिये बाद में द्वित्व कीजिये।

क्ङिति च - कित्, ङित्, गित् प्रत्यय परे होने पर, इक् के स्थान पर

चि + स = ची + स / द्वित्वादि करके - चिची + स - चिचीस - चिचीष - चिचीषति। नी + सन् - निनी + स = निनीष - निनीषति। इसी प्रकार सारे अनिट् इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के रूप बनाइये।

इसके अपवाद - मी धातु -

सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस् - सन् प्रत्यय परे रहने पर मी धातु,मा धातु, घु संज्ञक दा, धा धातु, रभ् धातु, लभ् धातु, शक् धातु, पत् धातु तथा पद् धातु के अच् को इस् आदेश होता है।

मी - मी + सन् / ई को इस् होकर = मिस् + स / द्वित्वाभ्यासकार्य करके - मिमिस् + स / अत्र लोपोऽभ्यासस्य सूत्र से अभ्यास का लोप करके - मिस् + स /

सः स्यार्धधातुके - स् को त् आदेश होता है सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। मिस् + स - मित्स - मित्सति।

यह इकारान्त, ईकारान्त धातुओं में सन् प्रत्यय जोड़ने की विधि पूर्ण हुई।

सेट् उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं के सन्नन्त रूप

उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं में पूङ् धातु सेट् है। ऊर्णु, यु धातु वेट् हैं, शेष धातु अनिट् हैं।

धातु के सेट् होने पर पहिले द्वित्व कीजिये - पूङ् + इट् + सन् - पु पू + इट् + सन् / सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण करके - पु पो + इ + स / एचोऽयवायावः से अवादेश करके - पुपव् + इ + स -

अभ्यास के 'उ' को 'इ' बनाना -

ओः पुयण्ज्यपरे - यदि अभ्यास के अन्त में 'उ' हो, और उस 'उ' के बाद पवर्ग, यण् या जकार हों, तथा उन पवर्ग, यण्, जकार के बाद अवर्ण हो तो अभ्यास के 'उ' को 'इ' आदेश होता है सन् प्रत्यय परे होने पर। हमने जाना कि अभ्यास के 'उ' को 'इ' बनाने के लिये दो बातें होना चाहिये -

१. अभ्यास के बाद का अक्षर पवर्ग, य, र, ल, व, या ज हो।

२. इनके बाद 'अ' हो ।

पुपव् + इ + स - इसमें अभ्यास के अन्त में 'उ' है, और उस 'उ' के बाद पवर्ग, है, तथा उस पवर्ग के बाद अवर्ण है, तथा सन् प्रत्यय परे है, अतः

अभ्यास के अन्तिम 'उ' को 'इ' आदेश होकर - पिपविष - पिपविषते बनाइये।

इसी प्रकार - यु से यियविषति बनाइये।

इडागम न होने पर यु से युयूषति बनाइये।

विशेष - यद्यपि उकारान्त धातुओं में से पूञ्, भू, मू, रु, लू, जु, इतने धातुओं में भी उकार के बाद पवर्ग, यण् या जकार है, किन्तु अनिट् होने के कारण इन्हें गुण नहीं होता, अतः पवर्ग, यण्, जकार के बाद 'अ' न मिलने से इनके अभ्यास के 'उ' को 'इ' नहीं होता। किन्तु जब ये धातु णिजन्त होकर अनेकाच् होने से सेट् हो जाते हैं, तब गुण होकर अकार मिल जाने से वहाँ अभ्यास के 'उ' को 'इ' हो जाता है। यथा - पिपावयिषति, मिमावयिषति, बिभावयिषति, रिरावयिषति, यियावयिषति, लुलावयिषति, जिजावयिषति।

अनिट् उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं के सन्नन्त रूप

उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं में पूङ् धातु सेट् है। ऊर्णु, यु वेट् हैं, शेष अनिट् हैं।

अनिट् धातुओं में पहिले अङ्गादिकार्य कीजिये बाद में द्वित्व कीजिये।

अनिट् उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं से परे आने वाला सन् प्रत्यय 'इको झल्' सूत्र से कित्वत् होता है।

सन् प्रत्यय के कित् होने के कारण 'क्ङिति च' सूत्र से गुण का निषेध होने से - द्रु + सन् - द्रु + स / अज्झनगमां सनि से दीर्घ करके - द्रू + स / द्वित्व, अभ्यासकार्य, षत्वादि करके - दुद्रूष - दुद्रूषति। इसी प्रकार -

भू + सन् - बुभूषति / पूञ् + सन् - पुपूषति, पुपूषते / लूञ् + सन् - लुलूषति, लुलूषते / हु + सन् - जुहूषति / ध्रु + सन् - दुध्रूषति / नू + सन् - नुनूषति / धू + सन् - दुधूषति / गु + सन् - जुगूषति / कु + सन् - चुकूषति, आदि बनाइये। यह उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं के सन्नन्त रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

सेट् ॠकारान्त धातुओं के सन्नन्त रूप

ॠकारान्त धातुओं में से ॠ, दृङ्, धृङ्, धातु ही सेट् होते हैं। सेट् धातुओं को पहिले द्वित्व कीजिये, बाद में अङ्गकार्य कीजिये।

इनमें से 'ॠ' धातु अजादि है। इससे अरिरिषति बनाना हम लोग अजादि धातुओं में सीख चुके है। उसे वहीं देखिये। यहाँ हम दृङ्, धृङ्, के रूप बनायें।

दृ + इट् + सन्, द्वित्व करके - दृ दृ + इ + स / उरत् से अभ्यास को उर् करके और हलादि: शेष: करके - ददृ + इ + स / सन्यत: से अभ्यास के 'अ' को 'इ' करके - दिदृ + इ + स / सार्वधातुकार्धधातुकयो: सूत्र से गुण करके = दिदर् + इ + स - प्रत्यय के स को षत्व करके - दिदरिष - दिदरिषते। इसी प्रकार - धृङ् से दिधरिषते बनाइये।

वेट् ॠकारान्त धातु - वृङ्, वृञ्, भृञ्, स्वृ धातु, वेट् होते हैं।

वृङ्, वृञ्, धातुओं के सेट् होने पर -

ये धातु जब सेट् हों तब इन्हें पहिले द्वित्व कीजिये, बाद में अङ्गकार्य कीजिये। सेट् ॠकारान्त धातु से सन् लगने पर चूँकि सन् प्रत्यय इको झल् सूत्र से कित् नहीं होगा अत: सार्वधातुकार्धधातुकयो: सूत्र से गुण कीजिये।

ध्यान दें कि वृञ् धातु उभयपदी है।

वृञ् + इट् + सन् / पूर्वोक्त दिदरिषते के समान - विवरिषति, विवरिषते। भृञ् + इट् + सन् - बिभरिषति, बिभरिषते।

वृङ् धातु आत्मनेपदी है। वृङ् + इट् + सन्। इसी प्रकार - विवरिषते।

स्वृ धातु परस्मैपदी है। स्वृ + इट् + सन्। इसी प्रकार - सिस्वरिषति।

'वृतो वा' सूत्र से होने वाला इट् को दीर्घ सन् में नहीं होता है।

वृङ् वृञ्, धातुओं के अनिट् होने पर - ये धातु जब अनिट् हों, तब पहिले अङ्गकार्य कीजिये और बाद में उसे द्वित्व कीजिये।

यह ध्यान रखिये कि अनिट् इगन्त धातु से परे आने वाला सन् प्रत्यय इको झल् सूत्र से कित्वत् होता है, अत: गुण निषेध होगा।

वृञ् + सन्, अज्झनगमां सनि से दीर्घ करके - वॄ + स / देखिये कि अत्र यह धातु दीर्घ ॠकारान्त है।

उदोष्ठ्यपूर्वस्य - कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्त में आने वाले, दीर्घ ॠ को 'उ' आदेश होता है, यदि उस दीर्घ ॠ के पूर्व में आने वाला वर्ण ओष्ठ्य अर्थात् पवर्ग या वकार हो तो।

यह 'उ' आदेश उरण् रपर: सूत्र से उर् हो जाता है। और 'हलि च' सूत्र से दीर्घ होकर 'ऊर्' हो जाता है। वॄ + सन् - वुर् + स - वुवूर् + स - वुवूर्ष - वुवूर्षति / वुवूर्षते। आत्मनेपदी वृङ् धातु से वुवूर्षते। उभयपदी भृञ् से बुभूर्षति, बुभूर्षते। परस्मैपदी स्वृ से सुस्वूर्षति।

अनिट् ऋकारान्त धातुओं के सन्नन्त रूप

इन सेट्, वेट् धातुओं से जो बचे वे ऋकारान्त धातु सन् प्रत्यय परे होने पर अनिट् होते हैं। चूँकि ये धातु अनिट् हैं, इसलिये इनमें पहिले अङ्गकार्य कीजिये और बाद में इन्हें द्वित्व कीजिये।

अङ्गकार्य करते समय ध्यान रखिये कि अनिट् ऋकारान्त, ॠकारान्त धातुओं से परे आने वाला सन् प्रत्यय 'इको झल्' सूत्र से कित्वत् होता है। सन् प्रत्यय के कित् होने के कारण 'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध होता है -

कृ + सन् / अज्झनगमां सनि से दीर्घ करके - कॄ + स / देखिये कि अब यह धातु दीर्घ ॠकारान्त हो गया है।

ॠत इद् धातोः - धातु के अन्त में आने वाले दीर्घ ॠ को इ आदेश होता है कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर।

उरण् रपरः - जब भी किसी सूत्र से ऋ के स्थान पर, अ, इ, या उ होना कहा जाये, तब उन्हें अ, इ, या उ न करके अर्, इर्, उर् करना चाहिये।

अतः ॠत इद् धातोः सूत्र से जो दीर्घ ॠ के स्थान पर 'इ' आदेश कहा गया है वह 'इ' न होकर इर् हो जायेगा। कॄ + सन् - किर् + स -

हलि च - यदि धातु के अन्त में र् या व् हो और उपधा में इक् हो, तो उस उपधा के इक् को दीर्घ होता है, हल् परे होने पर।

किर् + स - हलि च से इ को दीर्घ करके कीर् + स / द्वित्वादि करके - चिकीर्ष - चिकीर्षति बनाइये। इसी प्रकार हृ से जिहीर्षति आदि बनाइये।

मृङ् धातु - मृ + स, अज्झनगमां सनि से दीर्घ करके - मॄ + स / अब देखिये कि ॠ के पूर्व में व् है। यह ओष्ठ्य वर्ण है।

अतः ॠ को ॠत इद् धातोः सूत्र से इर् न होकर उदोष्ठ्यपूर्वस्य सूत्र से उर् होगा। मॄ + स = मुर् + स / हलि च से उ को दीर्घ करके मूर् + स / द्वित्वादि करके - मुमूर्ष - मुमूर्षति।

यह ऋकारान्त धातुओं में सन् प्रत्यय जोड़ने की विधि पूर्ण हुई।

दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के सन्नन्त रूप

सेट् धातु - ॠकारान्त धातुओं में से गॄ, कॄ धातु सेट् होते हैं। सेट् होने के कारण इन्हें पहिले द्वित्व कीजिये, बाद में अङ्गकार्य कीजिये।

गॄ, कॄ धातु - गॄ + इट् + सन् / द्वित्व करके गॄ गॄ + इट् + सन्। अभ्यासकार्य करके - जगॄ + इट् + सन् / सन्यतः से अभ्यास को इत्व करके - जिगॄ + इ + स / सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण करके - जि गर् + इ + स / आदेशप्रत्यययोः सूत्र से प्रत्यय के स को षत्व करके - जिगर् + इ + ष - जिगरिष = जिगरिषति बनाइये। ठीक इसी प्रकार कॄ - चिकरिषति।

अचि विभाषा - अजादि प्रत्यय परे होने पर गॄ धातु के र को विकल्प से ल आदेश होता है। जिगरिषति, जिगलिषति।

वेट् धातु - गॄ, कॄ धातुओं से बचे हुए सारे ॠकारान्त धातु 'इट् सनि वा' सूत्र से वेट् होते हैं। इनके रूप इस प्रकार बनाइये -

पॄ धातु -

इडागम होने पर - गॄ के समान पिपरिषति बनाइये।

इडागम न होने पर - पॄ + सन् / अज्झनगमां सनि से दीर्घ करके - पॄ + स / अब देखिये कि ॠ के पूर्व में प् है, यह ओष्ठ्य वर्ण है।

अतः ॠ को ॠत इद् धातोः सूत्र से इर् न होकर उदोष्ठ्यपूर्वस्य सूत्र से उर् होगा। पॄ + स = पुर् + स / हलि च से उ को दीर्घ करके - पूर् + स / द्वित्वादि करके - पुपूर्ष - पुपूर्षति बनाइये।

इसी प्रकार - तॄ से तितरिषति, तितीर्षति आदि बनाइये।

स्तॄ से - तिस्तरिषति, तिस्तीर्षति आदि बनाइये।

तॄ, स्तॄ आदि में ॠ के पूर्व में ओष्ठ्यवर्ण न होने के कारण ॠ को इर् ही होता है।

यह हलादि अजन्त धातुओं के सन्नन्त रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

अब उन धातुओं के रूप बनायें जिनके आदि में हल् हो और अन्त में भी हल् हो। ऐसे धातुओं को हम हलादि हलन्त कहेंगे।

२. सेट् हलन्त धातुओं के सन्नन्त रूप बनाने की विधि

प्रारम्भ में कहे गये, सन् प्रत्यय के कित्व ङित्व विचार को बुद्धि में स्पष्ट रखें। इसका संक्षेप इस प्रकार है -

१. गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् सूत्र से कुटादि धातुओं से परे आने वाला सन् प्रत्यय ङित् होता है।

२. 'विज इट्' सूत्र से विज् धातु से परे आने वाला सन् प्रत्यय ङित् होता है।

३. 'रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छ: संश्च' सूत्र से रुद् धातु, विद् धातु, मुष् धातु, ग्रह् धातु तथा प्रच्छ् धातुओं से परे आने वाला सन् प्रत्यय कित् होता है।

४. धातु सेट् हो, उसके आदि में हल् हो, अन्त में रल् अर्थात् य्, व्, को छोड़कर अन्य कोई भी व्यञ्जन हो, तथा उपधा में 'इ' या 'उ' हों, तब ऐसे सेट् धातुओं से परे आने वाला सन् प्रत्यय विकल्प से कितवत् होता है।

सेट् अदुपध धातु -

वद् धातु - द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - विवद् + इट् + सन् - विवद् + इस - आदेशप्रत्यययो: सूत्र से प्रत्यय को षत्व करके - विवदिषति। इसी प्रकार जन् - जिजनिषति / खन् - चिखनिषति / पठ् - पिपठिषति आदि सारे सेट् अदुपध हलन्त धातुओं के रूप बनाइये।

सन् धातु - यह धातु वेट् है।

जनसनखनां सञ्झलो: - सन् धातु को झलादि सन् प्रत्यय अर्थात् अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर 'आ' आदेश होता है।

इडागम न होने पर - इसके न् को आ होता है - सन् + सन् / सा + सन् / द्वित्व होकर सा सा + स / अभ्यास के अ को इत्व करके - सिषा + स - सिषास - सिषासति।

इडागम होने पर - सन् प्रत्यय झलादि नहीं रह जाता, अत: वहाँ आत्व भी नहीं होता - सन् + इट् + सन् / द्वित्वादि होकर - सिसन् + इस / षत्व होकर - सिसनिष - सिसनिषति।

अब इदुपध, उदुपध, ऋदुपध धातुओं के रूप बनाते समय बहुत सावधानी से प्रत्यय के कित्त्व, अकित्त्व का विचार करते चलें।

सेट् इदुपध धातुओं के सन्नन्त रूप

डिप् धातु - यह कुटादि धातु है। ध्यान रहे कि 'गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्' सूत्र से कुटादि धातुओं से परे आने वाला सन् प्रत्यय ङित् होता है। ङित्वत् होने का फल क्ङिति च से गुणनिषेध करना होता है।

डिप् + इट् + सन् / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - डि डिप् + इट् + सन् / क्ङिति च सूत्र से उपधा के गुण का निषेध करके तथा प्रत्यय को षत्व करके - डिडिपिषति।

विज् धातु - विज् धातु से परे आने वाला सेट् सन् प्रत्यय 'विज इट्' सूत्र से ङिद्वत् होता है।

विज् + इट् + सन् - द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - वि विज् + इस / क्ङिति च सूत्र से उपधा के गुण का निषेध करके तथा प्रत्यय को षत्व करके - विविजिष - विविजिषति।

इसका प्रयोग उत् उपसर्ग के साथ कीजिये - उद्विविजिषति।

विद् धातु - विद् + इट् + सन् / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - विविद् + इट् + सन् - विविद् + इ + स / 'रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छ: संश्च' सूत्र से विद् धातु से परे आने वाले सन् प्रत्यय के कित्वत् होने से क्ङिति च सूत्र से उपधा के गुण का निषेध करके तथा प्रत्यय को षत्व करके - विविदिष - विविदिषति।

शेष सेट् इदुपध धातु -

रलो व्युपधाद् हलादे: संश्च - यदि धातु सेट् हो, उसके आदि में हल् हो, अन्त में रल् अर्थात् य्, व्, को छोड़कर अन्य कोई भी व्यञ्जन हो, तथा उपधा में 'इ' या 'उ' हो, तब ऐसे सेट् धातुओं से परे आने वाला सन् प्रत्यय विकल्प से कितवत् होता है। जैसे -

सन् प्रत्यय के कितवत् होने पर उपधा को गुण न करके -

लिख् + इट् + सन् / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - लिलिख् + इ + स / क्ङिति च सूत्र से उपधा के गुण का निषेध करके तथा प्रत्यय को षत्व करके - लिलिखिष - लिलिखिषति।

सन् प्रत्यय के कितवत् न होने पर उपधा को गुण करके -

लिख् + इट् + सन् / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - लिलिख् + इट् + सन् - लिलिख् + इ + स / पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा को गुण करके तथा प्रत्यय को षत्व करके - लिलेखिष - लिलेखिषति।

यदि धातु रलन्त न हो तो कित्त्व न होने से गुण हो जायेगा - दिव् - दिदेविषति।

सेट् उदुपध धातुओं के सन्नन्त रूप

कुटादि उदुपध धातु -

कुच् गुज् कुट् घुट् चुट् छुट् जुट् तुट् पुट्

मुट् त्रुट् लुट् स्फुट् कुड् क्रुड् गुड् चुड् तुड्
थुड् पुड् व्रुड् स्थुड् स्फुड् गुर् छुर् स्फुर् स्फुल्

इनसे परे आने वाला सन् प्रत्यय 'गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्' सूत्र से कित् होता है। चूँकि ये धातु सेट् हैं। इसलिये इन्हें पहिले द्वित्व कीजिये, बाद में अङ्गकार्य कीजिये।

कुट् धातु - द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - चुकुट् + इट् + सन् / चुकुट् + इस / गााङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् सूत्र से सन् प्रत्यय के ङित्वत् होने के कारण क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध करके, आदेशप्रत्यययो: सूत्र से प्रत्यय को षत्व करके - चुकुटिष - चुकुटिषति।

इसी प्रकार इन सारे उदुपध कुटादि धातुओं के रूप बनाइये।

रुद् विद् मुष् धातु - रुद् विद् मुष् इन उदुपध धातुओं से परे आने वाला सन् प्रत्यय रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च इस सूत्र से कित्वत् होता है।

चूँकि रुद्, मुष् धातु सेट् हैं इसलिये इन्हें पहिले द्वित्व तथा अभ्यासकार्य कीजिये, बाद में अङ्गकार्य कार्य कीजिये। अङ्गकार्य करने के लिये यह ध्यान रखिये कि इससे परे आने वाला सन् प्रत्यय कित् होता है। यहाँ कित्वत् होने के कारण क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध करके इनके रूप इस प्रकार बनाइये -

रुद् - द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - रुरुद् + इट् + सन् / रुरुद् + इ + स - प्रत्यय को षत्व करके - रुरुदिष - रुरुदिषति।

मुष् - द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - मुमुष् + इट् + सन् - मुमुष् + इ + स - प्रत्यय को षत्व करके - मुमुषिष - मुमुषिषति

शेष सेट् उदुपध धातु -

रलो व्युपधाद् हलादेः संश्च - यदि धातु सेट् हो, उसके आदि में हल् हो, अन्त में रल् अर्थात् य्, व्, को छोड़कर अन्य कोई भी व्यञ्जन हो, तथा उपधा में 'इ' या 'उ' हो, तब ऐसे सेट् धातुओं से परे आने वाला सन् प्रत्यय विकल्प से कितवत् होता है। जैसे -

कितवत् होने पर उपधा को गुण न करके - मुद् इट् + सन् - द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - मुमुद् + इट् + सन् / क्ङिति च सूत्र से उपधा के गुण का निषेध करके तथा प्रत्यय को षत्व करके - मुमुदिष - मुमुदिषते।

कितवत् न होने पर उपधा को गुण करके - मुमोदिषते।

सेट् ऋदुपध धातुओं के सन्नन्त रूप

कृड्, मृड् धातु - ये दो सेट् ऋदुपध धातु कुटादि धातु है। इनसे परे आने वाला सन् प्रत्यय गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् सूत्र से ङित् होता है।

कृड् + इट् + सन् / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - चिकृड् + इट् + सन् - चिकृड् + इस / प्रत्यय के ङित्वत् होने के कारण क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध करके, आदेशप्रत्यययो: सूत्र से प्रत्यय को षत्व करके - चिकृडिष - चिकृडिषति। इसी प्रकार - मृड् से मिमृडिषति बनाइये।

शेष ऋदुपध सेट् धातु -

वृष् धातु - वृष् + इट् + सन् / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - विवृष् + इस - पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के ऋ को गुण करके तथा प्रत्यय के स को आदेशप्रत्यययो: सूत्र से षत्व करके - विवर्षिष - विवर्षिषति।

इसी प्रकार सेट् हृष् धातु से जिहर्षिषति / सेट् तृष् धातु से तितर्षिषति / सेट् गृज् धातु से जिगर्जिषति / सेट् वृत् धातु से विवर्तिषते / सेट् वृध् धातु से विवर्धिषते / सेट् वृत् धातु से विवर्तिषते आदि बनाइये।

शेष सेट् हलादि धातुओं के सन्नन्त रूप

प्रच्छ् धातु - प्रच्छ् + इट् + सन् / रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छ: संश्च सूत्र से प्रच्छ् धातु से परे आने वाला सन् प्रत्यय कित् होता है। कित् होने के कारण ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च सूत्र से सम्प्रसारण होकर - पृच्छ् + इस / द्वित्वादि होकर - पिपृच्छिष - पिपृच्छिषति।

अब जो सेट् हलन्त धातु बचे, उन्हें कोई भी अङ्गकार्य मत कीजिये। जैसे - बुक्क् + इट् + सन् - बुबुक्किषति आदि।

३. अनिट् तथा वेट् हलन्त धातुओं के सन्नन्त रूप बनाने की विधि

अब अनिट् हलन्त धातु बचे हैं। इनके रूप इस प्रकार बनाइये -

१. ये धातु अनिट् हैं। अत: इन अनिट् धातुओं में पहिले अङ्गकार्य कीजिये। उसके बाद धातु को द्वित्व तथा अभ्यासकार्य कीजिये।

२. यदि अभ्यास के अन्त में 'अ' दिखे, तो उसे 'सन्यत: सूत्र से 'इ' अवश्य बनाइये।

३. इट् न होने के कारण इन अनिट् धातुओं की उपधा को कभी

भी 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से गुण मत कीजिये क्योंकि इनसे परे आने वाला सन् प्रत्यय 'हलन्ताच्च' सूत्र से कित्वत् होता है।

४. अन्त में हलन्त धातु + सन् प्रत्यय को सन्धि करके जोड़ दीजिये।

कवर्गान्त धातु -

शक् धातु -

सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस् - सन् प्रत्यय परे रहने पर मी धातु, मा धातु, घु संज्ञक दा, धा धातु, रभ् धातु, लभ् धातु, शक् धातु, पत् धातु, पद् धातुओं के अच् को इस् आदेश होता है।

शक् + सन् / अच् को इस् आदेश करके - शिस् क् + स / स्कोः संयोगाद्योरन्ते च सूत्र से स् का लोप करके - शिक् + स / अब द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके शिशिक् + स -

अत्र लोपोऽभ्यासस्य -

५०६ - ५०७ पृष्ठ पर सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस्, आप्ज्ञप्यृधामीत्, दम्भ इच्च मुचोऽकर्मकस्यगुणो वा, इन चार सूत्रों में जितने भी धातु कहे गये हैं, उनके अभ्यास का लोप हो जाता है -

शिशिक् + स - शिक् + स / अब प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये। अब क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये - शिक्ष - शिक्षति।

चवर्गान्त धातु -

अनिट् चकारान्त धातु - सकारादि प्रत्यय परे होने पर, धातु के अन्त में आने वाले 'च्' को चोः कुः सूत्र से 'क्' बनाइये। प्रत्यय के 'स्' को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से 'ष्' बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

वच्	+	सन्	-	विवक्ष	=	विवक्षति
रिच्	+	सन्	-	रिरिक्ष	=	रिरिक्षति
विच्	+	सन्	-	विविक्ष	=	विविक्षति
सिच्	+	सन्	-	सिसिक्ष	=	सिसिक्षति

विशेष चकारान्त मुच् धातु -

मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा - अकर्मक मुच् धातु को विकल्प से गुण होता है, अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर। गुण होने पर अत्र लोपोऽभ्यासस्य सूत्र से अभ्यासलोप होगा, गुण न होने पर अभ्यासलोप भी नहीं होगा।

मुच् + सन्, गुण होने पर - मोच् + स / द्वित्व करके अभ्यासकार्य करके - मुमोच् + स - अत्र लोपोऽभ्यासस्य से अभ्यास का लोप करके - मोच् + स - मोक्ष - मोक्षते।

गुण न होने पर - मुच् + सन् / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - मुमुक्ष - मुमुक्षते।

व्रश्च् धातु - यह धातु वेट् है।

इडागम न होने पर व्रश्च् के रूप इस प्रकार बनाइये-

व्रश्च् + सन् - द्वित्वाभ्यासकार्य करके - विव्रश्च् + स / 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - विव्रच् + स / अब अन्त में आने वाले 'च्' को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - विव्रष् + स / 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - विव्रक् + स / प्रत्यय के 'स' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष' बनाकर - विव्रक् + ष - विव्रक्ष = विव्रक्षति।

इडागम होने पर - व्रश्च् + इ + सन् / द्वित्वाभ्यासकार्य करके - विव्रश्चिषति।

अनिट् जकारान्त धातु - द्वित्व तथा अभ्यासादि कार्य करने के बाद 'ज्' को पहिले 'चोः कुः' सूत्र से कुत्व करके 'ग्' बनाइये। उसके बाद उस 'ग्' को 'खरि च' सूत्र से उसी कवर्ग का प्रथमाक्षर क् बनाइये। प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाइये।

त्यज्	+	सन्	-	तित्यक्ष	=	तित्यक्षति
भज्	+	सन्	-	बिभक्ष	=	बिभक्षति
यज्	+	सन्	-	यियक्ष	=	यियक्षति
निज्	+	सन्	-	निनिक्ष	=	निनिक्षति
विज्	+	सन्	-	विविक्ष	=	विविक्षति
भुज्	+	सन्	-	बुभुक्ष	=	बुभुक्षति
रुज्	+	सन्	-	रुरुक्ष	=	रुरुक्षति
युज्	+	सन्	-	युयुक्ष	=	युयुक्षति
सृज्	+	सन्	-	सिसृक्ष	=	सिसृक्षति

सबसे अन्त में अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः से अनुस्वार को परसवर्ण कीजिये।

भञ्ज्	+	सन्	-	बिभंक्ष	=	बिभङ्क्षति
रञ्ज्	+	सन्	-	रिरंक्ष	=	रिरङ्क्षति
स्वञ्ज्	+	सन्	-	सिस्वंक्ष	=	सिस्वङ्क्षति
सञ्ज्	+	सन्	-	सिसंक्ष	=	सिसङ्क्षति

विशेष जकारान्त मस्ज् धातु -

मस्ज् + सन् - द्वित्वाभ्यासकार्य करके - मिमस्ज् + सन् /

मस्जिनशोर्झलि - मस्ज् तथा नश् धातु को झलादि प्रत्यय अर्थात् अनिट् स्य प्रत्यय, परे होने पर नुम् का आगम होता है।

इस सूत्र से नुमागम करके - मिमंस्ज् + स / 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - मिमंज् + स / ज् को चोः कुः से कुत्व करके - मिमंग् + स / ग् को खरि च से चर्त्व करके - मिमंक् + स / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाकर - मिमंक् + ष - मिमंक्ष - मिमंक्षति / अनुस्वार को 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' से परसवर्ण करके = मिमंङ्क्षति।

विशेष जकारान्त भ्रस्ज् धातु -

भ्रस्जो रोपधयोः रमन्यतरस्याम् - आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर भ्रस्ज् धातु के 'र्' तथा उपधा के स्थान पर, विकल्प से 'रम्' आदेश होता है। 'रम्' आदेश होकर भ्रस्ज् को भर्ज् हो जाता है।

'रम्' का आगम होने पर पर - भ्रस्ज् + सन् - भर्ज् + स / द्वित्वाभ्यासकार्य करके - बिभर्ज् + स / बिभर्क्ष - बिभर्क्षति।

'रम्' का आगम न होने पर पर - भ्रस्ज् + सन् / बिभ्रस्ज् + स / 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि में स्थित 'स्' का लोप करके - बिभ्रज् + स - बिभ्रक्ष - बिभ्रक्षति।

वेट् मृज् धातु -

मृजेर्वृद्धिः - मृज् धातु के इक् के स्थान पर वृद्धि होती है।

इडागम न होने पर - मृज् + सन् - मार्ज् + स / द्वित्वाभ्यासकार्य करके - मिमार्ज् + स / व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से अन्त में आने वाले 'ज्' को 'ष्' बनाकर - मिमार्ष् + स / 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाकर - मिमार्क् + स / प्रत्यय के 'स' को 'आदेशप्रत्यययोः'

सूत्र से 'ष' बनाकर - मिमार्क् + ष = मिमार्क्षति।

इडागम होने पर - मिमार्जिषति।

तवर्गान्त धातु -

वेट् पत् धातु - पत् + सन् - सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस् सूत्र से इसके अच् को इस् आदेश करके - पिस् त् + सन् / स्कोः संयोगाद्योरन्ते च सूत्र से स् का लोप करके - पित् + स / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके पिपित् + स / 'अत्र लोपोऽभ्यासस्य' सूत्र अभ्यास का लोप करके - पित्स - पित्सति। इडागम होने पर - पिपतिषति।

दकारान्त अनिट् पद् धातु -

पूर्ववत् अनिट् पत् धातु के ही समान पद् + सन् - पित्सते, बनाइये।

कृत्, चृत्, छृद्, तृद्, नृत् धातु - इन ५ धातुओं से परे आने वाले सन् प्रत्यय को **'सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृदनृतः'** को विकल्प से इडागम होता है।

कृत्	-	चिकर्तिषति	/	चिकृत्सति
चृत्	-	चिचर्तिषति	/	चिचृत्सति
छृद्	-	चिच्छर्दिषति	/	चिच्छृत्सति
तृद्	-	तितर्दिषति	/	तितृत्सति
नृत्	-	निनर्तिषति	/	निनृत्सति

वृत् तथा स्यन्द् धातु - इन्हें इसी वर्ग में आगे देखिये।

शेष अनिट् दकारान्त धातु -

द्वित्व तथा अभ्यासादि कार्य करने के बाद त् थ् द् ध् को 'खरि च' सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर त् बनाइये प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये-

छिद्	+	सन्	-	चिच्छित्स	=	चिच्छित्सति
सद्	+	सन्	-	सिसत्स	=	सिसत्सति
शद्	+	सन्	-	शिशत्स	=	शिशत्सति
हद्	+	सन्	-	जिहत्स	=	जिहत्सते
स्कन्द्	+	सन्	-	चिस्कन्त्स	=	चिस्कन्त्सति
खिद्	+	सन्	-	चिखित्स	=	चिखित्सति
छिद्	+	सन्	-	चिच्छित्स	=	चिच्छित्सति
भिद्	+	सन्	-	बिभित्स	=	बिभित्सति

विद्	+	सन्	-	विवित्स	=	विवित्सति
स्विद्	+	सन्	-	सिस्वित्स	=	सिस्वित्सति

अनिट् धकारान्त धातु -

क्रुध्	+	सन्	-	चुक्रुत्स	=	चुक्रुत्सति
व्यध्	+	सन्	-	विव्यत्स	=	विव्यत्सति
साध्	+	सन्	-	सिसात्स	=	सिसात्सति
सिध्	+	सन्	-	सिसित्स	=	सिसित्सति

विशेष धकारान्त बुध्, बन्ध् धातु -

बुध् + सन् / कित्वात् गुण निषेध करके, द्वित्वाभ्यासकार्य करके - बुबुध् + स / 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वो:' सूत्र से बकार के स्थान पर भकार आदेश करके - बुभुध् + स / 'खरि च' सूत्र से 'ध्' को चर्त्व करके - बुभुत् + स / प्रत्यय को षत्व करके - बुभुत्स = बुभुत्सति।

बन्ध् + सन् में अभ्यास के अ को इ करके पूर्ववत् - बिभन्त्सति

विशेष धकारान्त रध् धातु -

राधो हिंसायाम् सनि इस् वाच्य: - अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर, हिंसार्थक राध् धातु के अच् को इस् होता है।

इडागम न होने पर - रध् + सन् - रिध् + स - रिरित्स - अभ्यासलोप होकर - रित्स = रित्सति।

ध्यान रहे कि रध् धातु वेट् है, अत: इडागम होने पर इस् नहीं होगा। अत: रध् + सन् - रध् + इट् + सन् - रधिष = रिरधिषति बनेगा।

वेट् तवर्गान्त वृत्, वृध्, शृध्, स्यन्द् धातु -

ये धातु आत्मनेपदी हैं किन्तु स्य, सन् प्रत्यय परे होने पर ये धातु **'वृद्भ्य: स्यसनो:'** सूत्र से परस्मैपदी हो जाते हैं। जब ये धातु परस्मैपदी हो जाते हैं तब इनसे परे आने वाले सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय को **'न वृद्भ्यश्चतुर्भ्य:'** सूत्र से इडागम नहीं होता। आत्मनेपद में इडागम हो जाता है। यथा -

धातु		**परस्मैपद**	/	**आत्मनेपद**
वृत्	-	विवृत्सति	/	विवर्तिषते
वृध्	-	विवृत्सति	/	विवर्धिषते
शृध्	-	शिशृत्सति	/	शिशर्धिषते

स्यन्द् - सिस्यन्त्सति / सिस्यन्दिषते

वेट् धकारान्त षिध् धातु - इडागम न होकर - सिसित्सति / इडागम होकर - सिसेधिषति।

वेट् क्लिद् धातु - इडागम न होने पर - चिक्लित्सति / इडागम होने पर - चिक्लेदिषति बनाइये।

नकारान्त धातु -

मन् धातु - न् को अनुस्वार बनाइये, प्रत्यय के स को कुछ मत कीजिये - मन् + सन् - मिमंस = मिमंसते।

तन् धातु - यह धातु वेट् है। इसके रूप तीन प्रकार से बनते हैं -

इडागम होने पर - इसे पहिले द्वित्व तथा अभ्यासकार्य कीजिये, बाद में अङ्गकार्य कीजिये। तन् + इट् + सन् - तितन् + इस - तितनिष - तितनिषति।

इडागम न होने पर - पहिले अङ्गकार्य कीजिये, बाद में द्वित्व कीजिये।

तन् + सन् - तन् + स / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - तितंस - तितंसति।

तनोतेर्विभाषा - तन् धातु की उपधा को विकल्प से दीर्घ होता है अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर। तन् + सन् - तान् + स / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - तितांस - तितांसति।

हन् धातु - हन् + सन् / अज्झनगमां सनि सूत्र से दीर्घ करके - हान् + स / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके जिहांस - अब अभ्यासाच्च सूत्र से अभ्यास के बाद वाले 'ह' को कुत्व करके - जिघांस - जिघांसति

पवर्गान्त धातु -

प् फ् ब् भ् को खरि च सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर प् बनाइये प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये -

छुप्	+	सन्	-	चुच्छुप्स	=	चुच्छुप्सति
तिप्	+	सन्	-	तितिप्स	=	तितिप्सते
लिप्	+	सन्	-	लिलिप्स	=	लिलिप्सति
छुप्	+	सन्	-	चुच्छुप्स	=	चुच्छुप्सति
क्षुप्	+	सन्	-	चुक्षुप्स	=	चुक्षुप्सति

लुप्	+	सन्	-	लुलुप्स	=	लुलुप्सति
सृप्	+	सन्	-	सिसृप्स	=	सिसृप्सति
तप्	+	सन्	-	तितप्स	=	तितप्सति
वप्	+	सन्	-	विवप्स	=	विवप्सति
शप्	+	सन्	-	शिशप्स	=	शिशप्सति

स्वप् धातु - रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च सूत्र से स्वप् धातु से परे आने वाला सन् प्रत्यय कित्वत् होता है।

स्वप् + सन् - प्रत्यय के कित् होने के कारण 'वचिस्वपियजादीनां किति' सूत्र से सम्प्रसारण करके - सुप् + स / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके सु सुप्स / आदेश के स को षत्व करके - सु षुप्स - सुषुप्सति।

क्लृप् धातु - क्लृप् धातु यद्यपि सेट् आत्मनेपदी है किन्तु स्य, सन्, तास् प्रत्यय परे होने पर यह 'लुटि च क्लृपः' सूत्र से विकल्प से परस्मैपदी हो जाता है। परस्मैपदी होने पर इससे परे आने वाले परस्मैपद संज्ञक सकारादि आर्धधातुक प्रत्ययों को 'तासि च क्लृपः' सूत्र से इडागम नहीं होता है।

परस्मैपद में इडागम न होकर - क्लृप् - चिक्लृप्सति। आत्मनेपद में इडागम होकर - चिकल्पिषते।

वेट् तृप्, दृप् धातु -

इडागम न होने पर - तृप् + सन् - तितृप् + स - तितृप्सति।

इडागम होने पर - तृप् + इट् + सन् / गुण होकर - तर्प् + इ + स = तर्पिष - तितर्पिषति। इसी प्रकार दृप् से दिदृप्सति तथा दिदर्पिषति बनाइये।

भकारान्त धातु - यभ् + सन् - यियप्स = यियप्सति।

दम्भ् धातु - इसके रूप तीन प्रकार से बनते हैं -

इडागम होने पर - दम्भ् + इट् + सन् - द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके दिदम्भ् + इस / प्रत्यय के स को षत्व करके दिदम्भिष - दिदम्भिषति।

इडागम न होने पर -

हम जानते हैं कि जब धातु अनिट् होता है, तब पहिले अङ्गकार्य करते हैं, बाद में द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करते हैं। ध्यान रहे कि सन्धिकार्य सबसे अन्त में किया जाता है। दम्भ् + सन् -

दम्भ इच्च – सन् प्रत्यय परे रहने पर दम्भ् धातु के अच् को विकल्प से इ, ई आदेश होते हैं।

अच् को इ आदेश होने पर - दम्भ् + स - दिम्भ् + स

हलन्ताच्च सूत्र से झलादि सन् प्रत्यय के कितवत् होने से 'अनिदितां हल उपधाया: क्ङिति' सूत्र से इसकी उपधा के न् का लोप करके - दिम्भ् + सन् - दिभ् + सन् / 'द' को एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वो: सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर ध् बनाकर - धिभ् + स / अब द्वित्वादि करके - धि धिभ् + स - **'अत्र लोपोऽभ्यासस्य' सूत्र से अभ्यास का लोप करके** - धि धिप्स - धिप्स - धिप्सति।

दम्भ् धातु के अच् को विकल्प से 'ई' आदेश होने पर इसी प्रकार धीप्सति बनाइये।

रभ्, लभ् धातु -

सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस् सूत्र से इनके अच् को इस् आदेश करके - रभ् + सन् - रिस् भ् + स / स्को: संयोगाद्योरन्ते च सूत्र से रिस्भ्, के स् का लोप होकर रिभ् + स / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके रिरिप्स / अत्र लोपोऽभ्यासस्य सूत्र से अभ्यास का लोप करके - रिप्स - रिप्सते।

इसी प्रकार लभ् + सन् से लिप्सते बनाइये।

मकारान्त धातु -

द्वित्वाभ्यासकार्य करके म् को अनुस्वार बनाइये, प्रत्यय के स को कुछ मत कीजिये -

रम्	+	सन्	-	रिरंस	=	रिरंसते
नम्	+	सन्	-	निनंस	=	निनंसति
यम्	+	सन्	-	यियंस	=	यियंसति

गम् धातु -

गमेरिट् परस्मैपदेषु - गम् धातु से परे आने वाले सेट् प्रत्ययों को परस्मैपद में इडागम होता है, आत्मनेपद में नहीं।

परस्मैपद में इडागम होने पर -

इसे पहिले द्वित्व तथा अभ्यासकार्य कीजिये, बाद में अङ्गकार्य कीजिये। गम् + इट् + सन् / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - जिगम् + इस - जिगमिष

- जिगमिषति।

आत्मनेपद में इडागम न होने पर - पहिले अङ्गकार्य कीजिये। बाद में द्वित्व तथा अभ्यासकार्य कीजिये। अधि गम् + सन् / अज्झनगमां सनि सूत्र से दीर्घ होकर - अधिगाम् + स / द्वित्वाभ्यासकार्य अधिजिगांस - अधिजिगांसते।

ऐसे वकारान्त धातु जिनके अन्त में 'इव्' है। जैसे -

दिव्, सिव्, स्रिव्, ष्ठिव् आदि - ये धातु वेट् हैं।

इडागम न होने पर - दिव् + सन् / क्ङिति च से गुण निषेध करके - दिव् + सन् / अब च्छ्वोः शूडनुनासिके च सूत्र से व् को ऊठ् बनाया तो दि ऊठ् स / ठ् की इत् संज्ञा करके दि ऊ स / इको यणचि से इ को यण् आदेश करके - द् य् ऊ स - द्यू + स / अब द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - दुद्यूष - दुद्यूषति बनाइये।

इसी प्रकार - स्रिव् + सन् = स्र्यू + स / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - सिस्र्यूष - सिस्र्यूषति बनाइये।

सिव् + सन् = स्यू + स / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - सिस्यूष - सिस्यूषति बनाइये।

ष्ठिव् + सन् = ष्ठ्यू + स / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - टुष्ठ्यूष - टुष्ठ्यूषति बनाइये।

इडागम होने पर - सेट् होने के कारण इन्हें पहिले द्वित्व तथा अभ्यासकार्य कीजिये, उसके बाद अङ्गकार्य करके इनके रूप इस प्रकार बनाइये-

दिव् + इट् + सन् / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - दिदिव् + इट् + सन् / प्रत्यय के कित् न होने के कारण पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा को गुण करके - दिदेविषति बनेगा। इसी प्रकार -

सिव् + इट् + सन् से सिसेविषति बनाइये।

ष्ठिव् + इट् + सन् से टिष्ठेविषति बनाइये।

स्रिव् + इट् + सन् से सिस्रेविषति बनाइये।

ऊष्मान्त धातु

अनिट् शकारान्त धातु - सकारादि प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले श्, को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये। इस 'ष्' को 'षढोः कः सि' सूत्र से 'क्' बनाइये तथा प्रत्यय के स्

को आदेशप्रत्यययो: सूत्र से ष् बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

दृश्	+	सन्	-	दिदृक्ष	=	दिदृक्षति
स्पृश्	+	सन्	-	पिस्पृक्ष	=	पिस्पृक्षति
मृश्	+	सन्	-	मिमृक्ष	=	मिमृक्षति
दंश्	+	सन्	-	दिदंक्ष	=	दिदंक्षति
क्रुश्	+	सन्	-	चुक्रुक्ष	=	चुक्रुक्षति
दिश्	+	सन्	-	दिदिक्ष	=	दिदिक्षति
रिश्	+	सन्	-	रिरिक्ष	=	रिरिक्षति
लिश्	+	सन्	-	लिलिक्ष	=	लिलिक्षति
विश्	+	सन्	-	विविक्ष	=	विविक्षति
रुश्	+	सन्	-	रुरुक्ष	=	रुरुक्षति

नश् धातु - यह धातु वेट् है।

मस्जिनशोर्झलि - अनिट् मस्ज् धातु तथा अनिट् नश् धातु को अनिट् सकारादि प्रत्यय परे होने पर 'मस्जिनशोर्झलि' सूत्र से नुम् का आगम कीजिये।

अनिट् सन् प्रत्यय लगाने पर - नश् + सन् - नंश् + स / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - निनंक्ष - निनंक्षति।

सेट् सन् प्रत्यय लगाने पर - यह नुमागम नहीं होगा। नश् + सन् - नश् + इट् + स - निनशिष - निनशिषति।

षकारान्त धातु -

कृष्	+	सन्	-	चिकृक्ष	=	चिकृक्षति
त्विष्	+	सन्	-	तित्विक्ष	=	तित्विक्षति
द्विष्	+	सन्	-	दिद्विक्ष	=	दिद्विक्षति
पिष्	+	सन्	-	पिपिक्ष	=	पिपिक्षति
विष्	+	सन्	-	विविक्ष	=	विविक्षति
शिष्	+	सन्	-	शिशिक्ष	=	शिशिक्षति
श्लिष्	+	सन्	-	शिश्लिक्ष	=	शिश्लिक्षति
तुष्	+	सन्	-	तुतुक्ष	=	तुतुक्षति
दुष्	+	सन्	-	दुदुक्ष	=	दुदुक्षति
पुष्	+	सन्	-	पुपुक्ष	=	पुपुक्षति

शुष् + सन् - शुशुक्ष = शुशुक्षति
कृष् + सन् - चिकृक्ष = चिकृक्षति

सकारान्त धातु - स् के बाद सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय आने पर 'सः स्यार्धधातुके' सूत्र से अङ्ग के अन्तिम स् को त् बना दीजिये। यथा -

वस् + सन् - विवत्स = विवत्सति
घस् + सन् - जिघत्स = जिघत्सति

अनिट् हकारान्त धातु - हकारान्त धातुओं के चार वर्ग बनाइये -

१. गाह्, गृह्, गुह् धातु - इन गकारादि हकारान्त धातुओं के बाद सकारादि प्रत्यय आने पर, इन धातुओं के अन्तिम 'ह्' को, 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाइये - गाह् + सन् / गाढ् + स / द्वित्वादि करके - जिगाढ् + स - अब धातु के आदि में जो वर्ग क । तृतीयाक्षर 'ग' है, उसे 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर 'घ' बना दीजिये - जिघाढ् + स / अब 'षढोः कः सि' सूत्र से, 'ढ्' को 'क्' बनाइये प्रत्यय के स् को ष् बनाइये - जिघाक्ष - जिघाक्षते। इसी प्रकार -

गृह् + सन् - जिघृक्ष = जिघृक्षते
गुह् + सन् - जुघुक्ष = जुघुक्षति / जुघुक्षते

जब स्य प्रत्यय सेट् होगा, तब धातु के आदि में स्थित द, ब, ग को कभी भी वर्ग के चतुर्थाक्षर ध, भ, घ नहीं होंगे।

अतः इनके रूप इस प्रकार बनेंगे -

ये तीनों धातु वेट् हैं, अतः इडागम होने पर -

गाह् + इ + सन् - जिगाहिषते
गुह् + इ + सन् - जुगूहिषते
गृह् + इ + सन् - जिगर्हिषते

गुह् धातु की उपधा को ऊदुपधायाः गोहः सूत्र से दीर्घ हुआ है।

२. दुह्, दिह्, द्रुह् धातु -

इनके अन्तिम ह् को 'दादेर्धातोर्घः' सूत्र से घ् बनाइये। 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से धातु के 'आदि द' को उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर 'ध्' बनाइये। प्रत्यय के स् को षत्व करके -

दुह् + सन् - दुधुक्ष = दुधुक्षति
दह् + सन् - दिधक्ष = दिधक्षति
दिह् + सन् - दिधिक्ष = दिधिक्षति
द्रुह् + सन् - दुध्रुक्ष = दुध्रुक्षति

३. **नह् धातु - नहो धः** - नह् धातु के ह् को ध् होता है, झल् परे होने पर तथा पदान्त में। इस सूत्र से नह् के अन्तिम 'ह्' को 'ध्' बनाइये। ध् को खरि च से चर्त्व करके त् बनाइये। प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये-

नह् + सन् - निनत्स = निनत्सति

ऊपर कहे गये आठ धातुओं से बचे हुए हकारान्त धातु -

इनके बाद सकारादि प्रत्यय आने पर इनके अन्तिम 'ह्' को हो ढः सूत्र से ढ् बनाकर षढोः कः सि सूत्र से 'क्' बनाइये। तथा प्रत्यय के स् को ष् बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

वह् + सन् - विवक्ष = विवक्षति
लिह् + सन् - लिलिक्ष = लिलिक्षति
मिह् + सन् - मिमिक्ष = मिमिक्षति
दिह् + सन् = दिधिक्ष = दिधिक्षति
रुह् + सन् - रुरुक्ष = रुरुक्षति
दुह् + सन् - दुधुक्ष = दुधुक्षति

वेट् स्निह्, द्रुह्, स्नुह्, मुह् धातु -

नह् + सन् - निनत्स= निनत्सति

ऊपर कहे गये आठ धातुओं से बचे हुए हकारान्त धातु -

इनके बाद सकारादि प्रत्यय आने पर इनके अन्तिम 'ह्' को हो ढः सूत्र से ढ् बनाकर षढोः कः सि सूत्र से 'क्' बनाइये। तथा प्रत्यय के स् को ष् बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

वह् + सन् - विवक्ष = विवक्षति
लिह् + सन् - लिलिक्ष = लिलिक्षति
मिह् + सन् - मिमिक्ष = मिमिक्षति
दिह् + सन् = दिधिक्ष = दिधिक्षति
रुह् + सन् - रुरुक्ष = रुरुक्षति
दुह् + सन् - दुधुक्ष = दुधुक्षति

वेट् स्निह्, द्रुह्, स्नुह्, मुह् धातु -

इडागम न होने पर - सन् प्रत्यय कित् होगा तो क्ङिति च सूत्र से गुण निषेध होगा। स्निह् + सन् - सिस्निक्षति।

इडागम होने पर - रलो व्युपधाद् हलादेः संश्च सूत्र से सन् प्रत्यय विकल्प से कित् होगा।

प्रत्यय के कित् होने पर क्ङिति च सूत्र से गुण निषेध होकर - सिस्निहिषति बनेगा।

प्रत्यय के कित् न होने पर पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा को गुण करके - सिस्नेहिषति बनेगा। ठीक इसी प्रकार -

द्रुह् धातु से दुध्रुक्षति / दुद्रुहिषति / दुद्रोहिषति बनाइये।

स्नुह् धातु से सुस्नुक्षति / सुस्नुहिषति / सुस्नोहिषति बनाइये।

मुह् धातु से मुमुक्षति / मुमुहिषति / मुमोहिषति बनाइये।

तृन्ह् धातु - यह वेट् है।

इडागम होने पर - तृन्ह् + इट् + सन्

हम जानते हैं कि जब धातु सेट् होता तब उसे पहिले द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करते हैं, उसके बाद यदि कोई अङ्गकार्य प्राप्त हो तो उसे करते हैं। तृन्ह् + इट् + सन् - द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके - ति तृन्ह् + इस / यहाँ कोई अङ्गकार्य प्राप्त नहीं है, अतः प्रत्यय के स को षत्व करके तितृंहिष - तितृंहिषति।

इडागम न होने पर -

हम जानते हैं कि जब धातु अनिट् होता है तब पहिले अङ्गकार्य करते हैं, बाद में द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करते हैं। तृन्ह् + सन्।

हलन्ताच्च - ऐसे हलन्त अनिट् धातु जिनमें इक् है, और इक् के बाद कोई अच् नहीं है, ऐसे धातुओं से परे आने वाला झलादि सन् प्रत्यय कितवत् होता है।

कित्वत् होने से - अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति से इसकी उपधा के न् का लोप करके - तृन्ह् + सन् - तृह् + स / द्वित्व तथा अभ्यासकार्य करके तितृक्ष - तितृक्षति।

हलादि णिजन्त धातुओं के सन्नन्त रूप बनाने की विधि

चुरादिगण के प्रत्येक धातु से कोई भी प्रत्यय लगाने के पहिले स्वार्थिक

णिच् प्रत्यय लगता है। णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद ही चुरादिगण के धातुओं में अन्य कोई प्रत्यय लगाना चाहिये। इसी प्रकार जब प्रेरणा अर्थ अर्थात् प्रयोजक व्यापार वाच्य हो, तब किसी भी धातु से णिच् प्रत्यय लगता है। यहाँ भी णिच् प्रत्यय लग जाने के बाद ही धातु से अन्य कोई प्रत्यय लगाना चाहिये।

णिच् प्रत्यय लगने पर सारे धातु अनेकाच् हो जाते हैं। अनेकाच् हो जाने से ये सेट् हो जाते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि णिजन्त धातुओं से सन् प्रत्यय लगने पर यहाँ हमें चार खण्ड मिलते हैं।

धातु + णिच् + इट् + सन्। इन्हें किस क्रम से जोड़ें ?

१. हलादि णिजन्त धातु से सन् प्रत्यय परे होने पर, आप सबसे पहिले सन्यङोः सूत्र से धातु के प्रथम अवयव एकाच् को द्वित्व तथा अभ्यासकार्य कीजिये - चुर् + णिच् + इट् + सन् / चु चुर् + णिच् + इस।

२. अब धातु में णिच् प्रत्यय को जोड़िये। जैसे -

चु चुर् + णिच् + सन् / णिच् में ण्, च् इन अनुबन्धों का लोप करके इ बचाइये। पुगन्तलघूधस्य च सूत्र से चुर् को गुण करके - चु चोर् + इ + स - चुचोरि + इस / अब सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से चोरि के अन्त को गुण करके चु चोरे + इ + इस /

एचोऽयवायावः से अयादेश करके चु चोरय् + इ + इस / प्रत्यय के स को षत्व करके = चुचोरयिष - चुचोरयिषति।

इसी प्रकार - हु + णिच् + इट् + सन् - हु को द्वित्व करके हु हु + णिच् + इट् + सन्। द्वित्वाभ्यासकार्य करके - जुहु + इ + इस / अचो ञ्णिति सूत्र से वृद्धि करके - जु हौ + इ + इस / एचोऽयवायावः से आवादेश करके जुहाव् + इ + इस - जुहावि + इस /

अब जुहावि + इस में सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - जुहावे + इस / एचोऽयवायावः से अवादेश करके जुहावय् + इस / प्रत्यय के स को षत्व करके - जुहावयिष - जुहावयिषति।

द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम् - द्युत् धातु तथा ण्यन्त स्वप् धातु के अभ्यास को सम्प्रसारण होता है। जैसे -

स्वप् + णिच् + इट् + सन् / स्वप् + इ + इस / द्वित्वाभ्यासकार्य करके - स्वप् स्वप् + इ + इस / अभ्यास को सम्प्रसारण करके - सु स्वप् + इ + इष / अत उपधायाः सूत्र से उपधा के 'अ' को वृद्धि करके - सु स्वाप् +

इ + इस /

सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से इ को गुण करके - सु स्वाप् + ए + इस / एचोऽयवायावः सूत्र से अयादेश करके - सु स्वाप् + अय् + इस - प्रत्यय के स को षत्व करके - सुस्वापयिष - सुस्वापयिषति।

इसी प्रकार - द्युत् + णिच् + इट् + सन् = दिद्योतयिषति।

धातु में णिच् प्रत्यय कैसे जोड़ें यह णिजन्त प्रक्रिया में विस्तार से बतलाया गया है, उसे वहीं देखें।

कण्ड्वादि धातुओं के सन्नन्त रूप

कण्ड्वादीनां तृतीयस्य - कण्ड्वादि गण में जो धातु पढ़े गये हैं उनमें सन् प्रत्यय लगाने पर जो तृतीय अच् के साथ मिला हुआ व्यञ्जन है उसके सहित तृतीय अच् को द्वित्व होता है - कण्डूयिष - कण्डूयियिष - कण्डूयियिषति / असूयिष - असूयियिष - असूयियिषति।

नामधातुओं के सन्नन्त रूप

यथेष्टं नामधातुषु - यदि नामधातु से सन् प्रत्यय लगा हो, तब प्रथम, द्वितीय, तृतीय में से किसी भी अवयव एकाच् को द्वित्व कर सकते हैं। यथा - पुत्रीय + सन् / यहाँ पु को द्वित्व करके - पुपुत्रीयिष - पुपुत्रीयिषति / ति को द्वित्व करके - पुतित्रीयिष - पुतित्रीयिषति / यि को द्वित्व करके - पुत्रीयियिष - पुत्रीयियिषति बनाइये।

यह समस्त धातुओं में सन् प्रत्यय जोड़ने की विधि पूर्ण हुई।



षोडश पाठ

नामधातु बनाने की विधि

नाम क्या होता है –

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् – धातुओं तथा प्रत्ययों को छोड़कर जितने भी अर्थवान् शब्द भाषा में होते हैं, उनकी प्रातिपदिक संज्ञा होती है। वे प्रातिपदिक ही नाम कहलाते हैं। जैसे – राम, कृष्ण, वृक्ष, फल आदि शब्द, प्रातिपदिक अथवा नाम हैं। भू, पठ्, गम् आदि धातु प्रातिपदिक नहीं हैं, अतः ये नाम भी नहीं हैं।

कृत्तद्धितसमासाश्च – कृदन्त और तद्धितान्त तथा समास जो अर्थवान्, उनकी भी प्रातिपदिक संज्ञा होती है। वे प्रातिपदिक भी नाम कहलाते हैं।

इसका अर्थ यह हुआ कि धातुओं तथा प्रत्ययों को छोड़कर, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, संख्या, कृदन्त, तद्धित, समास आदि जितने भी शब्द भाषा में हैं, उन सभी को नाम कहा जाता है।

विभक्ति – हम जानते हैं कि विभक्तियाँ दो प्रकार की होती हैं सुप् विभक्ति तथा तिङ् विभक्ति।

धातुओं से तिङ् विभक्तियाँ लगाई जाती हैं तथा नामों से सुप् विभक्तियाँ लगाई जाती हैं। जैसे –

'भू' धातु है, तो इससे तिङ् विभक्तियाँ लगेंगी – भवति, भवतः, भवन्ति आदि। 'पुत्र' यह नाम है, तो इससे सुप् विभक्तियाँ लगेंगी – पुत्रः, पुत्रौ, पुत्राः आदि।

यदि किसी प्रकार, नाम को भी धातु बना दिया जाये, तो फिर उस 'नाम' को हम 'नामधातु' कहने लगते हैं, और तब उस नामधातु से सुप् विभक्तियाँ न लगाकर तिङ् विभक्तियाँ लगने लगती हैं।

ऐसा कैसे होता है, कि नाम ही धातु बन जाये ?

जब किसी भी नाम से क्यच्, क्यङ्, काम्यच्, क्यष्, क्विप्, णिङ् अथवा णिच् प्रत्यय लगता है तब वह नाम अर्थात् प्रातिपदिक नामधातु बन जाता है और

धातु बन जाने के कारण अब इसमें सुप् विभक्तियाँ न लगकर तिङ् विभक्तियाँ लगने लगती हैं। जैसे -

भिक्षुः कुट्याम् प्रासाद इवाचरति - भिक्षुः कुट्याम् प्रासादीयति - प्रासाद का अर्थ है महल। यह संज्ञा शब्द है।

जब इस 'प्रासाद' शब्द से क्यच् प्रत्यय लगता है, तब प्रासाद + क्यच् = प्रासादीय की, 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातु संज्ञा हो जाती है। अब यह प्रासाद + क्यच् = प्रासादीय, नाम नहीं है, नामधातु है। अब इसमें हम तिङ् विभक्ति लगाकर - प्रासादीयति, प्रासादीयतः, प्रसादीयन्ति आदि धातुरूप बना सकते हैं।

गुरुः छात्रं पुत्र इवाचरति = गुरुः छात्रं पुत्रीयति। पुत्र का अर्थ है बेटा। यह संज्ञा शब्द है। जब इस पुत्र शब्द से क्यच् प्रत्यय लगता है तब पुत्र + क्यच् = पुत्रीय की 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातु संज्ञा हो जाती है।

अब यह 'पुत्रीय' नाम नहीं है, नामधातु है। अब इसमें हम तिङ् विभक्ति लगाकर - पुत्रीयति, पुत्रीयतः, पुत्रीयन्ति आदि धातुरूप बना सकते हैं।

गर्दभी अप्सराः इवाचरति = गर्दभी अप्सरायते। अप्सरस् का अर्थ है अप्सरा। यह संज्ञा शब्द है। जब इस अप्सरस् शब्द से क्यङ् प्रत्यय लगता है, तब अप्सर + क्यङ् = अप्सराय की सनाद्यन्ता धातवः सूत्र से धातु संज्ञा हो जाती है।

अब यह 'अप्सराय' नाम नहीं है, अब यह नामधातु है। अतः इसमें अब सारे लकारों के प्रत्यय तथा कृत् प्रत्यय भी लगाये जा सकते हैं। यथा - लट् लकार के प्रत्यय लगाकर अप्सरायते, अप्सरायेते, अप्सरायन्ते आदि।

काकः श्येन इवाचरति = काकः श्येनायते। श्येन का अर्थ है बाज। यह संज्ञा शब्द है। जब इस श्येन शब्द से क्यङ् प्रत्यय लगता है, तब श्येन + क्यङ् = श्येनाय की 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातु संज्ञा हो जाती है।

अब यह 'श्येनाय' नाम नहीं है, नामधातु है। अब इसमें हम तिङ् विभक्ति लगाकर - श्येनायते, श्येनायेते, श्येनायन्ते आदि धातुरूप बना सकते हैं।

अश्व का अर्थ है घोड़ा। यह संज्ञा शब्द है। जब इस अश्व शब्द से क्विप् प्रत्यय लगता है, तब अश्व + क्विप् = 'अश्व' की सनाद्यन्ता धातवः सूत्र से धातु संज्ञा हो जाती है। अब यह 'अश्व' नाम नहीं है, नामधातु है। अब इसमें हम तिङ् विभक्ति लगाकर - अश्वति, अश्वतः, अश्वन्ति आदि रूप बना सकते हैं।

अब हम प्रातिपदिकों में क्यच्, क्यङ्, काम्यच्, क्यष्, क्विप्, णिङ् अथवा णिच् प्रत्यय लगाकर नामधातु बनायें। सबसे पहिले क्यच् प्रत्यय लगायें -

क्यच् प्रत्यय लगाकर नामधातु कैसे बनायें ?

क्यच् प्रत्यय लगाने वाले सूत्र -

सुप आत्मनः क्यच् - जब कोई कर्ता अपने लिये कोई इच्छा करे, तो उस इच्छा का जो कर्म हो, उस कर्म के वाचक प्रातिपादिक से क्यच् प्रत्यय लगता है। जैसे - देवदत्तः आत्मनः पुत्रम् इच्छति। देवदत्त अपने लिये पुत्र की इच्छा करता है। यहाँ देवदत्त अपने लिये इच्छा कर रहा है। उस इच्छा का कर्म है पुत्र। इससे क्यच् प्रत्यय लगेगा - देवदत्तः पुत्रीयति।

क्यच् प्रत्यय में 'हलन्त्यम्' सूत्र से च् की तथा लशक्वतद्धिते सूत्र से क् की इत् संज्ञा करके' तस्य लोपः' सूत्र से दोनों का लोप करके 'य' को बचा लीजिये।

उपमानादाचारे - उपमानवाची सुबन्त कर्म से, आचार अर्थ में विकल्प से, क्यच् प्रत्यय होता है। तात्पर्य यह है कि आचरण क्रिया के कर्म को जिसके समान माना जाये उस उपमान वाचक प्रातिपदिक से क्यच् प्रत्यय होता है।

जैसे - गुरुः पुत्रम् इव आचरति शिष्यम्। गुरु शिष्य में पुत्र जैसा आचरण करता है। यहाँ आचरण का कर्म है शिष्य।

उस शिष्य को पुत्र जैसा मान रहे हैं अतः पुत्र उपमान है। उस उपमान वाचक प्रातिपदिक पुत्र से क्यच् प्रत्यय होता है। गुरुः शिष्यं पुत्रीयति।

अधिकरणाच्चेति वक्तव्यम् (वार्तिक)

यदि उपमान अधिकरणवाची हो, तो उससे भी आचार अर्थ में क्यच् प्रत्यय होता है। भिक्षु कुटी में महल जैसा रहता है - भिक्षुः कुट्याम् प्रासादीयति। भिक्षु महल में कुटी जैसा रहता है - भिक्षुः प्रासादे कुटीयति । देवदत्त मञ्च पर पलङ्ग जैसा आचरण करता है - देवदत्तः मञ्चे पर्यङ्कीयति।

नमोवरिवसश्चित्रङः क्यच् - नमस् इस प्रातिपदिक से 'पूजां करोति' इस अर्थ में / वरिवस् इस प्रातिपदिक से 'परिचर्यां करोति' इस अर्थ में / चित्रङ् इस प्रातिपदिक से 'आश्चर्यं करोति' इस अर्थ में, क्यच् प्रत्यय होता है।

यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि चित्रङ् में चूँकि ङ् की इत् संज्ञा हुई है अतः इससे क्यच् प्रत्यय लगने के बाद भी जो नामधातु बनेगा उससे 'अनुदात्तङित आत्मनेपदम्' सूत्र से आत्मनेपदी प्रत्यय ही लगेंगे।

नमस् - देवान् नमस्यति।
वरिवस् - गुरून् वरिवस्यति।
चित्रङ् - चित्रीयते।

सनाद्यन्ता धातवः - सन्, क्यच् ,काम्यच्, क्यष्, क्यङ्, क्विप्, णिङ्, ईयङ्, णिच्, यक्, आय, यङ् ये १२ प्रत्यय जिसके भी अन्त में लगते हैं, उनका नाम, धातु हो जाता है।

यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् - जिससे भी प्रत्यय का विधान किया जाता है, उस प्रत्यय के पूर्व में जो जो कुछ भी होता है, वह पूरा का पूरा उस प्रत्यय का अङ्ग कहलाता है। जैसे -

हम 'पुत्र' शब्द से क्यच् प्रत्यय लगाते हैं, तो क्यच् प्रत्यय का अङ्ग 'पुत्र' है। 'अप्सरस्' शब्द से क्यङ् प्रत्यय लगाते हैं, तो क्यच् प्रत्यय का अङ्ग 'अप्सरस्' है। 'लोहित' शब्द से क्यष् प्रत्यय लगाते हैं, तो क्यष् प्रत्यय का अङ्ग 'लोहित' है। इसी प्रकार सर्वत्र जानें।

अकारान्त, आकारान्त प्रातिपदिकों से क्यच् प्रत्यय लगाने की विधि

क्यचि च - प्रातिपदिक के अन्तिम अ, आ को 'ई' होता है, क्यच् प्रत्यय परे होने पर। इस सूत्र से, अङ्ग के अन्तिम अ, आ को 'ई' बनाइये -

पुत्र + क्यच् / क् च् की इत् संज्ञा होकर - पुत्र + य / पुत्री + य = पुत्रीय। अब यह 'पुत्रीय' **सनाद्यन्ता धातवः** सूत्र से नामधातु बन गया है। इसमें धातुओं से लगने वाले सारे प्रत्यय लग सकते हैं।

शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् - क्यच् प्रत्यय से बने हुए धातुओं से सदा परस्मैपदी प्रत्यय ही लगते हैं। यह सब ध्यान में रखकर अब हम इस 'पुत्रीय' नामधातु के सार्वधातुक लकारों के रूप बनायें -

कर्तरि शप् - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, उन सारे धातुओं से शप् विकरण लगता है, जिनसे कोई अन्य विकरण न कहा जाये।

एतदनुसार सारे नामधातुओं से केवल सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, शप् विकरण लगाइये - पुत्रीय + ति / पुत्रीय + शप् + ति / श्, प् की इत् संज्ञा करके - पुत्रीय + अ + ति। 'अतो गुणे' से पररूप करके - पुत्रीय् + अ + ति -- पुत्रीयति। चार सार्वधातुक लकारों में इसके रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	पुत्रीयति	पुत्रीयतः	पुत्रीयन्ति
म.पु.	पुत्रीयसि	पुत्रीयथः	पुत्रीयथ
उ.पु.	पुत्रीयामि	पुत्रीयावः	पुत्रीयामः

लोट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	पुत्रीयतु / पुत्रीयतात्	पुत्रीयताम्	पुत्रीयन्तु
म.पु	पुत्रीय / पुत्रीयतात्	पुत्रीयतम्	पुत्रीयत
उ.पु.	पुत्रीयाणि	पुत्रीयाव	पुत्रीयाम

लङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	अपुत्रीयत्	अपुत्रीयताम्	अपुत्रीयन्
म.पु.	अपुत्रीयः	अपुत्रीयतम्	अपुत्रीयत
उ.पु.	अपुत्रीयम्	अपुत्रीयाव	अपुत्रीयाम

विधिलिङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	पुत्रीयेत्	पुत्रीयेताम्	पुत्रीयेयुः
म.पु.	पुत्रीयेः	पुत्रीयेतम्	पुत्रीयेत
उ.पु.	पुत्रीयेम्	पुत्रीयेव	पुत्रीयेम

घट + क्यच् - घटीय - घटीयति / पट + क्यच् - पटीय - पटीयति / खट्वा + क्यच् - खट्वीय - खट्वीयति / माला + क्यच् - मालीय - मालीयति / आदि अकारान्त तथा आकारान्त प्रातिपदिकों के रूप इसी प्रकार बनाइये।

ध्यान रहे कि आर्धधातुक लकारों के प्रत्यय परे होने पर, शप् विकरण नहीं लगाया जाता।

यलोप - यदि प्रातिपदिक के अन्त में अपत्यार्थ तद्धित प्रत्यय 'य' हो तो क्यच् प्रत्यय परे होने पर, उस तद्धित के य प्रत्यय में से 'य्' का लोप कर दीजिये, 'अ' को बचा लीजिये। सूत्र है -

क्यच्च्व्योश्च - अपत्यार्थक तद्धित प्रत्यय के यकार का लोप होता है। क्यच् तथा च्वि प्रत्यय परे होने पर।

गार्ग्य + क्यच् - अपत्यार्थक तद्धित प्रत्यय के य् का लोप होकर - गार्ग + य, क्यचि च सूत्र से अ को ई होकर गार्गी + य - गार्गीय = गार्गीयति।

इसी प्रकार वात्स्य + क्यच् - य् होकर वात्स + य, क्यचि च सूत्र से अ को ई होकर वात्सी + य - वात्सीय - वात्सीयति बनाइये।

अशनायाउदन्यधनाया बुभुक्षापिपासागर्धेषु -

अशन (भोजन) उदक (जल) तथा धन ये तीन प्रातिपदिक ऐसे हैं, जिनसे भूख, प्यास तथा लोभ अर्थ होने पर इस प्रकार नामधातु बनते हैं -

'अभी खाना चाहता है', इस अर्थ में - अशना + क्यच् - अशनायति

'अभी पीना चाहता है', इस अर्थ में - उदक + क्यच् / उदक को उदन्य आदेश होकर - उदन्य + य = उदन्यति।

'धन होते हुए भी पुनः धन का लोभ करता है', इस अर्थ में - धन + क्यच् - धनायति।

यदि ये अर्थ न होकर, सामान्य इच्छा हो, तो पूर्ववत् 'पुत्रीयति' के समान ही रूप बनेंगे -

'भोजन चाहता है', इस अर्थ में - अशना + क्यच् - अशनीयति।

पानी की इच्छा करता है, इस अर्थ में - उदक + क्यच् - उदकीयति।

धन की इच्छा करता है, इस अर्थ में - धन + क्यच् - धनीयति।

क्यच् प्रत्यय को सुक्, असुक् का आगम -

अश्ववृषयोर्मैथुनेच्छायाम् - अश्व और वृष ये दो अकारान्त प्रातिपदिक ऐसे हैं, जिनसे मैथुनेच्छा अर्थ होने पर प्रातिपदिक और प्रत्यय के बीच में असुक् का आगम होता है। असुक् में उ, क्, की इत्संज्ञा होकर अस् शेष बचता है।

अश्व + क्यच् / अश्व + असुक् + य / अतो गुण से अ को पररूप होकर - अश्व् + अस् + य - अश्वस्य = अश्वस्यति बडवा।

वृष + क्यच् / वृष + असुक् + य / अतो गुण से अ को पररूप होकर - वृष् + अस् + य - वृषस्य = वृषस्यति गौः।

यह अकारान्त, आकारान्त अङ्गों में क्यच् प्रत्यय लगाने की विधि पूर्ण हुई।

सर्वप्रतिपदिकानां क्यचि लालसायां सुगसुकौ -

देखिये, इव्छा करना और लालसा करना ये अलग अलग क्रियाएँ हैं। लालसा में लालच भी है, खाने की उत्कट अभिलाषा भी है, तो ऐसी लालसा यदि हो, तब आप केवल अश्व और वृष प्रातिपदिकों से नहीं, अपितु सारे प्रातिपदिकों से क्यच् प्रत्यय परे होने पर प्रातिपदिक और प्रत्यय के बीच में सुक् या असुक् का आगम करें। सुक् में स् तथा असुक् में अस् शेष रहेगा। जब सुक् या असुक् का आगम करें तब अकारान्त अङ्ग के 'अ' को 'ई' न बनायें।

बालक दूध की लालसा करता है - बालः क्षीरस्यति। प्रक्रिया इस प्रकार है - क्षीर + क्यच् / क्षीर + य / क्षीर + सुक् + य / क्षीर + स् + य - क्षीरस्य = क्षीरस्यति आदि।

बालक दधि की लालसा करता है - दधि + सुक् + क्यच् / दधि +

स् + य - दधिस्य /

आदेशप्रत्यययोः - इण् अथवा कवर्ग के बाद आने वाले आदेश तथा प्रत्यय के सकार को मूर्धन्यादेश होता है। अतः दधिस्य - दधिष्य = दधिष्यति।

दधि + असुक् + क्यच् / दधि + अस् + य / इको यणचि से यण् सन्धि होकर दध्यस्य = दध्यस्यति।

इसी प्रकार - लवण + सुक् + क्यच् - लवण + स् + य - लवणस्य = लवणस्यति। वाक्य है - उष्ट्रः लवणस्यति।

मधु को सुक् का आगम होने पर देवदत्तः मधुस्यति / असुक् होने पर देवदत्तः मध्वस्यति बनेगा।

इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त प्रातिपदिकों से क्यच् प्रत्यय लगाने की विधि

अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः - अजन्त अङ्ग को दीर्घ होता है कृद्भिन्न तथा सार्वधातुकभिन्न यकार परे होने पर।

क्यच् प्रत्यय परे होने पर, इस सूत्र से प्रातिपदिक के अन्त में आने वाले इ, ई, उ, ऊ को दीर्घ 'ई' 'ऊ' बनाइये।

मूर्ख में कवि जैसा आचरण करता है। कविम् इव आचरति मूर्खम् - कवीयति। प्रक्रिया इस प्रकार है -

कवि + क्यच् - कवि + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अजन्त अङ्ग को दीर्घ करके - कवी + य - कवीय - कवीयति।

पोखरे में नदी जैसा आचरण करता है। नदीम् इव आचरति पल्वलम् - नदीयति। प्रक्रिया इस प्रकार है -

नदी + क्यच् - नदी + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अजन्त अङ्ग को दीर्घ करके - नदीय - नदीयति।

मूर्ख में गुरु जैसा आचरण करता है। गुरुम् इव आचरति मूर्खम् - गुरूयति। प्रक्रिया इस प्रकार है -

गुरु + क्यच् / गुरु + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अजन्त अङ्ग को दीर्घ करके - गुरूय - गुरूयति।

ब्राह्मण में विष्णु जैसा आचरण करता है। विष्णुम् इव आचरति द्विजम् - विष्णूयति। प्रक्रिया इस प्रकार है -

विष्णु + क्यच् / विष्णु + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अजन्त

अङ्ग को दीर्घ करके - विष्णू + य - विष्णूय - विष्णूयति।

ऋकारान्त प्रातिपदिकों से क्यच् प्रत्यय लगाने की विधि

रीङ् ऋतः - ऋकारान्त अङ्ग को रीङ् आदेश होता है, कृद्भिन्न तथा सार्वधातुकभिन्न यकार परे होने पर और च्वि प्रत्यय परे होने पर।

क्यच् प्रत्यय परे होने पर, इस सूत्र से प्रातिपदिक के अन्त में आने वाले ह्रस्व 'ऋ' को रीङ् (री) बनाइये।

जो कर्ता नहीं है, उसके साथ कर्ता जैसा आचरण करता है -

कर्तृ + क्यच् / कर्तृ + य / ऋ को रीङ् (री) आदेश करके - कर्त् + री + य - कर्त्री + य - कर्त्रीय = कर्त्रीयति।

जो माता नहीं है, उसके साथ माता जैसा आचरण करता है -

मातृ + क्यच् / मातृ + य / ऋ को रीङ् (री) आदेश करके - मात् + री + य - मात्री + य - मात्रीय = मात्रीयति।

जो भ्राता नहीं है, उसके साथ भ्राता जैसा आचरण करता है -

भ्रातृ + क्यच् / भ्रातृ + य / ऋ को रीङ् (री) आदेश करके - भ्रात् + री + य - भ्रात्री + य - भ्रात्रीय = भ्रात्रीयति।

ओकारान्त, औकारान्त प्रातिपदिकों से क्यच् प्रत्यय लगाने की विधि

वान्तो यि प्रत्यये - ओ, औ को क्रमशः अव् और आव् आदेश होते हैं यकारादि प्रत्यय परे होने पर।

क्यच् प्रत्यय परे होने पर, इस सूत्र से प्रातिपदिक के अन्त में आने वाले ओ, औ को क्रमशः अव् और आव् बनाइये।

जो गाय नहीं है, उसके साथ गाय जैसा आचरण करता है। गो + क्यच् - गव् + य - गव्य = गव्यति।

जो नाव नहीं है, उसके साथ नाव जैसा आचरण करता है। नौ + क्यच् - नाव् + य - नाव्य = नाव्यति।

यह अजन्त प्रातिपदिकों में क्यच् प्रत्यय लगाकर नामधातु बनाने का विचार पूर्ण हुआ।

हलन्त प्रातिपदिकों से क्यच् प्रत्यय लगाने की विधि

नकारान्त प्रातिपदिक / नः क्ये - जो नकारान्त प्रातिपदिक होते हैं, उनकी क्यङ्, क्यच्, क्यष् प्रत्यय परे होने पर पद संज्ञा होती है।

नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य - पदसंज्ञक जो प्रातिपदिक, उसके अन्तिम

नकार का लोप हो जाता है।

राजन् + क्यच् - नलोप होकर - राज + य / क्यचि च से 'अ' को 'ई' होकर राजी + य - राजीय = राजीयति।

करिन् + क्यच् / नलोप होकर - करि + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः से दीर्घ होकर - करी + य - करीय = करीयति।

शेष हलन्त प्रातिपदिक - इनसे क्यच् प्रत्यय परे होने पर, कुछ मत कीजिये। धनुष् + क्यच् / धनुष् + य - धनुष्य = धनुष्यति। इसी प्रकार हविष् + क्यच् - हविष्यति / वाच् + क्यच् - वाच्यति / समिध् + क्यच् - समिध्यति आदि।

हमने क्यच् प्रत्यय लगाकर बने हुए धातुओं के लट् लकार के केवल 'ति' प्रत्यय के रूप बनाकर दिये हैं। इसी प्रकार लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन सार्वधातुक लकारों के रूप बनाइये। **परन्तु ध्यान रहे कि सार्वधातुक लकारों के प्रत्यय परे होने पर ही धातुओं से 'कर्तरि शप्' से शप् विकरण लगाया जाता है, आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर नहीं।**

जिस भी आर्धधातुक लकार में इसके रूप बनाना हो, उस लकार के रूप बनाने की विधि इसी ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में उस लकार के पाठ में देखें।

क्यच् प्रत्यय कहाँ नहीं होता ?

मान्तप्रकृतिकसुबन्तादव्ययाच्च क्यच् न - मकारान्त प्रातिपदिकों से बने हुए जो सुबन्त, उनसे तथा अव्यय प्रातिपदिकों से बने हुए सुबन्तों से क्यच् प्रत्यय नहीं होता। इसका अर्थ यह हुआ कि आगे कहे जाने वाले काम्यच् क्यङ् आदि प्रत्यय हो सकते हैं।

किम् इच्छति - किम् मकारान्त प्रातिपदिक है। अतः इससे क्यच् नहीं होता। इदम् इच्छति, यह इदम् मकारान्त प्रातिपदिक है। अतः इससे भी क्यच् नहीं होता। स्वरिच्छति में 'स्वर्' अव्यय प्रातिपदिक है। अतः इससे भी क्यच् नहीं होता।

काम्यच् प्रत्यय लगाकर नामधातु कैसे बनायें ?

काम्यच्च - इच्छा करने वाले के, आत्मसम्बन्धी इच्छा के सुबन्त कर्म से, इच्छा अर्थ में, विकल्प से काम्यच् प्रत्यय होता है। तात्पर्य यह है कि कोई कर्ता जब अपने लिये कोई इच्छा करे, तो उस इच्छा का जो कर्म हो, उस कर्म के वाचक प्रातिपादिक से काम्यच् प्रत्यय भी लगता है। जैसे -

देवदत्तः आत्मनः पुत्रम् इच्छति। देवदत्त अपने लिये पुत्र की इच्छा करता है। यहाँ देवदत्त अपने लिये इच्छा कर रहा है। उस इच्छा का कर्म है पुत्र। इससे काम्यच् प्रत्यय लगेगा। पुत्र + काम्यच् - पुत्रकाम्य।

सनाद्यन्ता धातवः सूत्र से धातुसंज्ञा होकर -

कर्तरि शप् - पुत्रकाम्य + ति, इसमें कर्तरि शप् से शप् लगाइये। पुत्रकाम्य + शप् + ति। अनुबन्ध कार्य करके पुत्रकाम्य + अ + ति। अतो गुणे से पररूप करके पुत्रकाम्यं + अ + ति - पुत्रकाम्यति। देवदत्तः पुत्रकाम्यति।

काम्यच् प्रत्यय मान्त तथा अव्यय प्रातिपदिकों से भी होता है।

किम् इच्छति - किंकाम्यति

इदम् इच्छति - इदंकाम्यति।

स्वः इच्छति - स्वःकाम्यति।

यशः इच्छति - यशःकाम्यति।

सर्पिः इच्छति - सर्पिःकाम्यति।

क्यङ् प्रत्यय लगाकर नामधातु कैसे बनायें ?

कर्तुः क्यङ् सलोपश्च - हमने क्यच् प्रत्यय में देखा है कि जब भी कोई, कर्म का उपमान बनता है, तब उस उपमान कर्मवाचक प्रातिपदिक से क्यच् प्रत्यय लगता है।

यह सूत्र कह रहा है कि जब कोई कर्ता का उपमान बनता है तब उस उपमानकर्ता के वाचक प्रातिपदिक से क्यच् प्रत्यय न लगकर क्यङ् प्रत्यय लगाता है। साथ ही यदि यह क्यङ् प्रत्यय किसी सकारान्त प्रातिपदिक से लगा है, तो उस प्रातिपदिक के अन्तिम सकार का इसी सूत्र से लोप भी हो जाता है।

अनुदात्तङित आत्मनेपदम् - क्यङ् प्रत्यय चूँकि ङित् है अतः इसे लगाकर बने हुए जो नामधातु होते हैं, उनसे केवल आत्मनेपदी प्रत्यय ही लगाये जाते हैं।

स्त्रीलिङ्ग प्रातिपदिकों में क्यङ् प्रत्यय लगाने की विधि -

क्यङ्मानिनोश्च - क्यङ् प्रत्यय परे होने पर यदि क्यङ् का पूर्ववर्ती अङ्ग स्त्रीलिङ्ग है, तो उसे पुल्लिङ्ग हो जाता है, बशर्ते कि उस शब्द में पुल्लिङ्ग बन सकने का सामर्थ्य हो।

सामर्थ्य का तात्पर्य यह है कि हंसी शब्द का पुल्लिङ्ग हंस बन सकता है, मयूरी का मयूर बन सकता है, तो इन्हें पुल्लिङ्ग बना दिया जायेगा, परन्तु जिन शब्दों का पुल्लिङ्ग होता ही नहीं है जैसे स्त्री शब्द, लक्ष्मी शब्द, तो इन्हें

हम पुल्लिङ्ग बनाने की चेष्टा न करें।

ऐसे शब्द जिनके दोनों लिङ्ग बन सकते हैं, उन्हें भाषितपुंस्क शब्द कहा जाता है। उन्हें ही आप क्यङ् लगने पर पुल्लिङ्ग बनायें। जैसे -

हंसी इव आचरति। हंसी + क्यङ् / पुंवद्भाव करके - हंस + क्यङ् / हंस + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः से दीर्घ करके - हंसाय / हंसाय + शप् + ते / अतो गुणे से पररूप करके - हंसाय + ते = हंसायते।

सपत्नी इवाचरति - सपत्न + क्यच् / सपत्नी का पुंवद्भाव करके सपत्न बनाया। सपत्न + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः से दीर्घ करके - सपत्नायते।

सपत्नी का पुंवद्भाव करके सपति बनाया। सपति + क्यच् / सपति + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः से दीर्घ करके - सपतीयते।

कुमारी इव आचरति। यहाँ कुमारी को पुंवद्भाव किया तो बना - कुमार + य। अब अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः से दीर्घ करके - कुमाराय - कुमारायते बनाइये।

हरिणी इव आचरति। यहाँ हरिणी को पुंवद्भाव किया तो बना - हरित + य। अब अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः से दीर्घ करके - हरिताय - हरितायते।

हरिणी इव आचरति। यहाँ हरिणी को पुंवद्भाव किया तो बना - हरिण + य। अब अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः से दीर्घ करके - हरिणाय -हरिणायते।

गुर्वी इव आचरति - यहाँ गुर्वी को पुंवद्भाव किया तो बना - गुरु + य। अब अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः से दीर्घ करके - गुरूय - गुरूयते।

युवती इव आचरति युवायते। यहाँ युवती को पुंवद्भाव किया तो बना - युवन् + य। नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य से न् का लोप करके - युव + य। अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः से दीर्घ करके - युवाय - युवायते।

पट्वीमृद्व्यौ इव आचरति पट्वीमृदूयते। यहाँ पट्वीमृद्वी को पुंवद्भाव किया तो बना - पट्वीमृदु + य। अब अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः से दीर्घ करके - पट्वीमृदूय - पट्वीमृदूयते।

इसके अपवाद - न कोपधायाः - यहाँ यह ध्यान रखें कि जिन शब्दों की उपधा में अर्थात् अन्तिम वर्ण के ठीक पूर्व में 'क' आया है ऐसे कोपध शब्दों को पुंवद्भाव नहीं होता। पाचिका इवाचरति पाचिकायते। यहाँ पाचिका को पाचक नहीं बनायेंगे।

सदा ध्यान रहे कि धातु बन जाने के बाद, यदि उस धातु से परे कोई सार्वधातुक लकार का प्रत्यय आ रहा हो, तो धातु से 'कर्तरि शप्' सूत्र से 'शप्'

विकरण अवश्य लगायें और इस शप् = अ के पूर्व यदि 'अ' हो, तो पूर्व वाले 'अ' को अतो गुणे सूत्र से पररूप कर दें।

अब हम प्रातिपदिकों से 'क्यङ् प्रत्यय' लगायें -

अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, प्रातिपदिकों से क्यङ् प्रत्यय लगाने की विधि

क्यङ् प्रत्यय परे होने पर -

क्यच् के ही समान क्यङ् प्रत्यय परे होने पर भी प्रातिपदिकों के अन्त में आने वाले अ, इ, उ को अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से दीर्घ कर दें -

श्येन इव आचरति काकः श्येनायते - श्येन + क्यङ् / श्येन + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अ को दीर्घ करके श्येनाय = श्येनायते।

कृष्ण इव आचरति गोपालः कृष्णायते - कृष्ण + क्यङ् / कृष्ण + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अ को दीर्घ करके कृष्णाय = कृष्णायते।

पुष्करम् इव आचरति कुमुदम् पुष्करायते - पुष्कर + क्यङ् / पुष्कर + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अ को दीर्घ करके पुष्कराय = पुष्करायते।

अवगल्भ इव आचरति देवदत्तः अवगल्भायते - अवगल्भ + क्यङ् / अवगल्भ + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अ को दीर्घ करके अवगल्भाय = अवगल्भायते।

होड इव आचरति देवदत्तः होडायते - होड + क्यङ् / होड + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अ को दीर्घ करके होडाय = होडायते।

क्लीब इव आचरति देवदत्तः क्लीबायते + क्यङ् / क्लीब + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अ को दीर्घ करके क्लीबाय = क्लीबायते।

अश्व इवाचरति गर्दभः अश्वायते - अश्व + क्यङ् / अश्व + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अ को दीर्घ करके अश्वाय = अश्वायते।

हरिः इव आचरति पौण्ड्रकः - हरि + क्यङ् / हरि + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अ को दीर्घ करके हरीय = हरीयते।

गुरुः इव आचरति शिष्यः - गुरु + क्यङ् / गुरु + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अ को दीर्घ करके गुरूय = गुरूयते।

ऋकारान्त, प्रातिपदिकों से क्यङ् प्रत्यय लगाने की विधि

क्यच् के ही समान क्यङ् प्रत्यय परे होने पर भी प्रातिपदिकों के अन्त में आने वाले ऋ को 'रीङ् ऋतः' सूत्र से रीङ् बना दें -

स्वयं कर्ता न होकर भी कर्ता जैसा आचरण करता है।

कर्तृ + क्यच् / कर्तृ + य / ऋ को रीङ् (री) आदेश करके - कर्त् + री + य - कर्त्री + य - कर्त्रीय = कर्त्रीयते।

स्वयं माता न होकर भी माता जैसा आचरण करती है।

मातृ + क्यच् / मातृ + य / ऋ को रीङ् (री) आदेश करके - मात् + री + य - मात्री + य - मात्रीय = मात्रीयते।

स्वयं भ्राता न होकर भी भ्राता जैसा आचरण करता है।

भ्रातृ + क्यच् / भ्रातृ + य / ऋ को रीङ् (री) आदेश करके - भ्रात् + री + य - भ्रात्री + य - भ्रात्रीय = भ्रात्रीयते।

नकारान्त, प्रातिपदिकों से क्यङ् प्रत्यय लगाने की विधि

नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य सूत्र से न् का लोप कर दें। नलोप करने के बाद यदि प्रातिपदिक के अन्त में अ, इ, उ दिखें तो उन्हें अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से दीर्घ कर दें -

स्वयं राजा न होकर भी राजा जैसा आचरण करता है। राजन् + क्यङ् / राज + य / राजाय = राजायते।

स्वयं हाथी न होकर भी हाथी जैसा आचरण करता है। करिन् + क्यङ् / करि + य / करीय = करीयते।

सकारान्त, प्रातिपदिकों से क्यङ् प्रत्यय लगाने की विधि

ओजसोऽप्सरसो नित्यमितरेषां विभाषया - क्यङ् प्रत्यय परे होने पर सकारान्त प्रातिपदिकों में से ओजस् तथा अप्सरस् के स् का तो नित्य लोप होता है किन्तु शेष सकारान्त प्रातिपदिकों के सकार का विकल्प से लोप होता है।

स्वयं अप्सरा न होकर भी अप्सरा जैसा आचरण करती है। अप्सरस् + क्यङ् / सलोप करके - अप्सर + य / दीर्घ होकर अप्सराय / अप्सरायते।

इसी प्रकार - ओजस् + क्यङ् / सलोप करके - ओज + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अ को दीर्घ करके ओजाय = ओजायते।

शेष सकारान्त प्रातिपदिकों के सकार का क्यङ् प्रत्यय परे होने पर विकल्प से लोप होता है। यथा -

सलोप होने पर - पयस् + क्यङ् / पय + य / पयाय / पयायते।

सलोप न होने पर - पयस् + क्यङ् / पयस्य = पयस्यते।

इसी प्रकार यशस् + क्यङ् - यशायते / यशस्यते।

विद्वस् + क्यङ् - विद्वायते / विद्वस्यते, आदि बनाइये।

युष्मद् अस्मद् प्रातिपदिकों से क्यङ् प्रत्यय लगाने की विधि

प्रत्ययोत्तरपदयोश्च - एकवचन में युष्मद् को त्वद्, अस्मद् को मद् आदेश होते हैं। त्वं इव आचरति त्वद्यते / अहम् इव आचरति मद्यते।

किन्तु बहुवचन में युस्मद्, अस्मद् ही रहेंगे - यूयम् इव आचरति - युस्मद्यते / वयम् इव आचरति अस्मद्यते।

अभी तक जो 'क्यङ्' प्रत्यय बतलाया, उसका अर्थ 'आचरति' है। अब जो 'क्यङ्' प्रत्यय बतला रहे हैं, उसके अन्य अन्य अर्थ हैं -

भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः - 'जो जैसा नहीं है, वह वैसा हो जाता है' इस अर्थ में वस्तुतः च्वि प्रत्यय का विधान होता है, किन्तु यहँ च्वि प्रत्यय के बिना ही भृश आदि २० प्रातिपदिकों से 'भवति' अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है। साथ ही यदि प्रातिपदिक के अन्त में हल् हो, तो उसका लोप भी होता है।

अभी हमने जो क्यङ् प्रत्यय लगाया है उसका अर्थ 'आचरति' है। इस सूत्र से जो क्यङ् प्रत्यय होता है उसका अर्थ 'आचरति' न होकर 'भवति' होता है। यथा - अभृशो भृशो भवति भृशायते। भृशायते का अर्थ है, जो भृश नहीं है, वह भृश हो जाता है।

ये २० भृशादि प्रातिपदिक इस प्रकार हैं - भृश, शीघ्र, मन्द, चपल, पण्डित, उत्सुक, अधर, शुधि, उन्मनस्, अभिमनस्, सुमनस्, दुर्मनस्, रहस्, रेहस्, शश्वत्, वेहत्, बृहत्, नृषत्, ओजस्, वर्चस्। इनसे क्यङ् प्रत्यय लगाकर, अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से 'अ' को दीर्घ करके इस प्रकार रूप बनेंगे -

भृश - अभृशो भृशो भवति भृशायते
शीघ्र - अशीघ्रो शीघ्रो भवति शीघ्रायते।
मन्द - अमन्दो मन्दो भवति मन्दायते।
पण्डित - अपण्डितः पण्डितो भवति पण्डितायते।
उत्सुक - अनुत्सुकः उत्सुको भवति उत्सुकायते।
अधर - अनधरः अधरो भवति अधरायते आदि बनाइये।
शुधि - अशुधिः शुधिः भवति शुधीयते

'भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः' इस सूत्र में जो 'लोपश्च हलः' कहा है, उसी से उन्मनस् आदि के अन्तिम हल् का लोप होता है -

अनुन्मनाः उन्मनाः भवति उन्मनायते - उन्मनस् + क्यङ् / उन्मनस्

+ य / स् का लोप करके - उन्मन + य / अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से अ को दीर्घ करके - उन्मनाय - उन्मनायते। इसी प्रकार -

अभिमनस् - अनभिमनाः अभिमनाः भवति अभिमनायते।

सुमनस् - दुर्मनाः सुमनाः भवति सुमनायते।

दुर्मनस् - सुमनाः दुर्मनाः भवति दुर्मनायते आदि बनाइये।

इसी प्रकार रहस् + क्यङ् - रहायते / रेहस् + क्यङ् - रेहायते / शश्वत् + क्यङ् - शश्वायते / वेहत् + क्यङ् - वेहायते / नृषत् + क्यङ् - नृषायते / ओजस् + क्यङ् - ओजायते / वर्चस् + क्यङ् - वर्चायते / बृहत् + क्यङ् - बृहायते / आदि बनाइये।

लोहितडाज्भ्यः क्यष्वचनं, भृशादिष्वितराणि - आगे 'लोहितादिडाज्भ्यः क्यष्' सूत्र आ रहा है। इस लोहितादिगण में लोहित, श्याम, सुख, दुःख, गर्व, हर्ष, मूर्च्छा, निद्रा, कृपा, धूम, करुणा, नित्य, चर्मन्, शब्द हैं। इनसे क्यष् होना चाहिये।

किन्तु इस वार्तिक के अनुसार इनमें से लोहितादिगण में केवल लोहित तथा डाजन्त शब्द ही आते हैं। शेष सारे शब्द भृशादिगण के ही समझे जाते हैं।

अतः इन शेष शब्दों से भी क्यङ् प्रत्यय होकर आत्मनेपद ही होता है। ये इस प्रकार हैं -

अश्यामः श्यामो भवति	श्याम	+	क्यङ्	-	श्यामायते
असुखवान् सुखवान् भवति	सुख	+	क्यङ्	-	सुखायते
अदुःखवान् दुःखवान् भवति	दुःख	+	क्यङ्	-	दुःखायते
अगर्वः गर्ववान् भवति	गर्व	+	क्यङ्	-	गर्वायते
अहर्षो अहर्षवान् भवति	हर्ष	+	क्यङ्	-	हर्षायते
अनिद्रो निद्रावान् भवति	निद्रा	+	क्यङ्	-	निद्रायते
अकरुणो करुणावान् भवति	करुणा	+	क्यङ्	-	करुणायते
अकृपः कृपावान् भवति	कृपा	+	क्यङ्	-	कृपायते

इसी प्रकार मूर्च्छा - मूर्च्छायते / धूमा - धूमायते / नित्य - नित्यायते / चर्मन् -चर्मायते आदि बनाइये।

यह आकृतिगण है, अतः इसी आकृति के अन्य शब्द भी यदि मिलें, तो उन्हें भी लाहितादिगण का समझिये। यथा - नील - नीलायते / पीत - पीतायते / हरित - हरितायते / मद्र - मद्रायते / आदि भी बनाइये।

कष्टाय क्रमणे - चतुर्थ्यन्त कष्ट शब्द से उत्साह अर्थ में क्यङ् प्रत्यय

होता है। कष्टाय क्रमते - कष्ट + क्यङ् = कष्टाय - कष्टायते। इसका अर्थ होगा - पापं कतुं उत्सहते।

सत्रकक्षकृच्छ्रगहनेभ्यः पापचिकीर्षायाम् इति वक्तव्यम् - **(वार्तिक)** - सत्र, कक्ष, कृच्छ्र, गहन इन शब्दों से पाप करने की इच्छा अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है। सत्रायते / कक्षायते / कृच्छ्रायते / गहनायते।

कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः - जब वृत् धातु का कर्म रोमन्थ करना हो और चर् धातु का कर्म तपस् हो तब रोमन्थ शब्द से वर्तयति अर्थ में तथा तपस् शब्द से चरति अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है।

यहाँ यह विशेष है कि तपस् से क्यङ् लगने पर भी परस्मैपद ही होता है - तापसः तपश्चरति - तपस्यति / रोमन्थ से क्यङ् लगने पर आत्मनेपद ही होता है - कीटो रोमन्थं वर्तयति - रोमन्थायते।

वाष्पोष्मभ्यामुद्वमने - वाष्प और ऊष्मन् इन कर्म वाचक प्रातिपदिकों से उद्वमन अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है।

वाष्पम् उद्वमति - वाष्पायते / ऊष्माणं उद्वमति - ऊष्मायते।

फेनाच्चेति वक्तव्यम् - फेन से भी उद्वमन अर्थ में क्यङ् होता है - फेनम् उद्वमति - फेनायते।

शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे - इन प्रातिपदिकों से 'करोति' अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है।

शब्दं करोति - शब्दायते / वैरं करोति - वैरायते / कलहं करोति - कलहायते। इसी प्रकार अभ्रायते, कण्वायते, मेघायते आदि बनाइये।

सुदिनदुर्दिननीहारेभ्यश्च वक्तव्यम् - **(वार्तिक)** सुदिन, दुर्दिन, नीहार, इन प्रातिपदिकों से 'करोति' अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है - सुदिनं करोति सुदिनायते / दंर्दिनं करोति दुर्दिनायते / नीहारं करोति नीहारायते।

अटाट्टाशीकाकोटापोटासोटाकष्टासृष्टाधृष्टापृष्टाग्रहणं कर्तव्यम् (वार्तिक) - इन प्रातिपदिकों से भी करोति अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है -

अटायते / अट्टायते / शीकायते / कोटायते / पोटायते / सोटायते / सृष्टायते / घृष्टायते / पृष्टायते।

सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम् - सुख। दुःख। तृप्त। गहन। कृच्छ्र। अस्त्र। अलीक। प्रतीप। करुण। कृषण। सोढ। ये प्रातिपदिक सुखादि गण में हैं। इनसे 'अनुभव करना' इस अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है।

सुखं वेदयते (अनुभवति) सुखायते। इसी प्रकार - दुःखायते, तृप्तायते आदि बनाइये। यह समस्त प्रातिपदिकों में क्यङ् प्रत्यय लगाने की विधि पूर्ण हुई।

क्यष् प्रत्यय लगाकर नामधातु कैसे बनायें ?

क्यष् प्रत्यय लगाने वाले सूत्र -

लोहितादिडाज्भ्यः क्यष् - लोहित प्रातिपदिक से तथा डाजन्त प्रतिपदिकों से 'भवति' अर्थ में क्यष् प्रत्यय होता है।

क्यष् प्रत्यय में हलन्त्यम् सूत्र से ष् की तथा लशक्वतद्धिते सूत्र से क् की इत् संज्ञा करके तस्य लोपः सूत्र से दोनों का लोप कर दीजिये और 'य' शेष बचा लीजिये।

वा क्यषः - क्यष् प्रत्यय लगाकर बने हुए नामधातुओं से आत्मनेपदी प्रत्ययः अथवा परस्मैपदी प्रत्यय में से कोई से भी प्रत्यय लगाये जा सकते हैं।

किसी भी प्रातिपदिक से क्यष् प्रत्यय परे होने पर पुंवद्भाव को छोड़कर वे सारे कार्य होते हैं, जो कार्य क्यङ् प्रत्यय परे होने पर बतलाये गये हैं।

लोहित	+	क्यष्	-	लोहितायति / लोहितायते।
लोहिनी	+	क्यष्	-	लोहिनीयति / लोहिनीयते।

अव्यक्तानुकरणाद्द्व्यजवरार्धादनितौ डाच् -

कृञो द्वितीयतृतीयशम्बबीजात्कृषौ -

ये दो सूत्र डाच् प्रत्यय का विधान करते हैं। ऐसी ध्वनियाँ जिनमें अकारादि वर्णों की स्पष्ट प्रतीति न हो जैसे - खट्खट् / सर्सर् / पट्पट्, आदि, उनसे डाच् प्रत्यय होता है।

ऐसे ध्वन्यात्मक शब्दों से डाच् प्रत्यय लगाकर खटखटा, पटपटा, खरटखरटा आदि रूप बनते हैं तथा ऐसे डाजन्त प्रातिपदिकों से 'भवति' अर्थ में क्यष् प्रत्यय लगाकर 'वा क्यषः' सूत्र से इसके रूप दोनों पद में बनते हैं -

पटपटा	+	क्यष्	-	पटपटायति	-	पटपटायते
खटखटा	+	क्यष्	-	खटखटायति	-	खटखटायते
त्रपटत्रपटा	+	क्यष्	-	त्रपटत्रपटायति	-	त्रपटत्रपटायते
खरटखरटा	+	क्यष्	-	खरटखरटायति	-	खरटखरटायते
दमदमा	+	क्यष्	-	दमदमायति	-	दमदमायते
मटमटा	+	क्यष्	-	मटमटायति	-	मटमटायते

यह क्यष् प्रत्यय लगाकर नामधातु बनाने की विधि पूर्ण हुई।

क्विप् प्रत्यय लगाकर नामधातु कैसे बनायें ?

सर्वप्रातिपदिकेभ्यो क्विब्वा वक्तव्य: - समस्त प्रातिपदिकों से 'आचरति' अर्थ में क्विप् प्रत्यय होता है।

क्विप् प्रत्यय में हलन्त्यम् सूत्र से प् की लशक्वतद्धिते सूत्र से क् की तथा उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से इ की इत् संज्ञा करके तस्य लोप: सूत्र से तीनों का लोप कर दीजिये और बचे हुए व् का वेरपृक्तस्य सूत्र से लोप कर दीजिये।

इस प्रकार क्विप् प्रत्यय में कुछ भी शेष नहीं बचता। जब प्रत्यय में कुछ भी शेष न बचे, तो कहना चाहिये कि प्रत्यय का सर्वापहारी लोप हो गया है।

शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् - क्विप् प्रत्यय लगाकर बने हुए जो नामधातु होते हैं, उनसे केवल परस्मैपदी प्रत्यय ही लगाये जाते हैं।

अश्व + क्विप् - अश्वति / गर्दभ + क्विप् - गर्दभति आदि।

आचारेऽवगल्भक्लीबहोडेभ्य: क्विब्वा वक्तव्य: - अवगल्भ, क्लीब, होड प्रातिपदिकों से 'आचरति' अर्थ में क्विप् तथा क्यङ् प्रत्यय विकल्प से होते हैं।

अवगल्भ, क्लीब, होड इन तीन प्रातिपदिकों से क्विप् प्रत्यय लगाकर बने हुए जो नामधातु बनते हैं उनसे केवल आत्मनेपदी प्रत्यय ही लगाये जाते हैं।

अवगल्भ से क्विप् लगने पर अवगल्भते, क्यङ् लगने पर अवगल्भायते।

क्लीब से क्विप् लगने पर क्लीबते, क्यङ् लगने पर क्लीबायते।

होड से क्विप् लगने पर होडते, क्यङ् लगने पर होडायते।

अब हम प्रातिपदिकों में क्विप् प्रत्यय लगाकर नामधातु बनायें -

अजन्त प्रातिपदिकों में क्विप् प्रत्यय लगाने की विधि -

अकारान्त प्रातिपदिक -

गर्दभ: इव आचरति गर्दभति / गर्दभ + क्विप् / क्विप् का सर्वापहारी लोप होकर - गर्दभ /

सनाद्यन्ता धातव: - सन्, क्यच् ,काम्यच्, क्यष्, क्यङ्, क्विप्, णिङ्, ईयङ्, णिच्, यक्, आय, यङ् ये १२ प्रत्यय जिसके भी अन्त में लगते हैं उनका नाम, धातु हो जाता है।

अत: गर्दभ + क्विप् से बना हुआ 'गर्दभ' शब्द अब नामधातु है।

इसलिये अब सार्वधातुक लकारों के रूप बनाने के लिये इसमें 'कर्तरि शप्' सूत्र से शप् विकरण लगाइये -

ध्यान रहे कि केवल सार्वधातुक लकारों के प्रत्यय परे होने पर ही धातुओं

से शप् विकरण लगाया जाता है, आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर नहीं।

गर्दभ + शप् - अतो गुणे से अ को पररूप होकर - गर्दभ् + अ - गर्दभ / गर्दभ + ति = गर्दभति। इसी प्रकार - अश्व + क्विप् - अश्वति / गज + क्विप् = गजति आदि बनाइये।

आकारान्त प्रातिपदिक -

माला इव आचरति मालाति। माला + क्विप् / क्विप् का सर्वापहारी लोप होकर - माला / माला + शप् - माला + अ / अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ होकर - माला = मालाति। इसी प्रकार - शाला + क्विप् = शालाति / चटका + क्विप् = चटकाति / खट्वा + ति = खट्वाति आदि बनाइये।

इकारान्त प्रातिपदिक -

कविः इव आचरति कवयति। कवि + क्विप् / क्विप् का सर्वापहारी लोप होकर - कवि / कवि + शप् - कवि + अ / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से 'इ' को गुण होकर - कवे + अ / एचोऽयवायावः सूत्र से ए को अयादेश होकर - कवय् + अ - कवय = कवयति। इसी प्रकार - वि + क्विप् - वय् + अ - वय = वयति / हरि + क्विप् = हरयति आदि बनाइये।

ईकारान्त प्रातिपदिक -

श्रीः इव आचरति श्रयति। श्री + क्विप् / क्विप् का सर्वापहारी लोप होकर - श्री / श्री + शप् - श्री + अ / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से 'ई' को गुण होकर - श्रे + अ - एचोऽयवायावः सूत्र से ए को अयादेश होकर - श्रय् + अ - श्रय = श्रयति। इसी प्रकार - लक्ष्मी + क्विप् = लक्ष्मयति / ध ी + क्विप् = धयति आदि बनाइये।

उकारान्त प्रातिपदिक -

भानुः इव आचरति भानवति। भानु + क्विप् - क्विप् का सर्वापहारी लोप होकर - भानु / भानु + शप् - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण होकर - भानो + अ / एचोऽयवायावः सूत्र से ओ को अवादेश होकर - भानव् + अ - भानव = भानवति। इसी प्रकार कृशानु + क्विप् = कृशानवति / गुरु + क्विप् = गुरवति आदि बनाइये।

ऊकारान्त प्रातिपदिक -

वधूः इव आचरति वधवति। वधू + क्विप् - क्विप् का सर्वापहारी लोप होकर - वधू / वधू + शप् - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण होकर - वधो

+ अ - एचोऽयवायावः सूत्र से ओ को अवादेश होकर - वधव् + अ - वधव = वधवति। इसी प्रकार श्वश्रू + क्विप् = श्वश्रवति आदि बनाइये।

ऋकारान्त प्रातिपदिक -

माता इव आचरति मातरति। मातृ + क्विप् - क्विप् का सर्वापहारी लोप होकर - मातृ / मातृ + शप् - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण होकर - मातर् + अ - मातर = मातरति। इसी प्रकार पितृ + क्विप् = पितरति / कर्तृ + क्विप् = कर्तरति आदि बनाइये।

ऐकारान्त प्रातिपदिक -

राः इव आचरति रायति। रै + क्विप् - क्विप् का सर्वापहारी लोप होकर - रै / रै + शप् - एचोऽयवायावः सूत्र से ऐ को आयादेश होकर - राय् + अ - राय = रायति।

ओकारान्त प्रातिपदिक -

गौः इव आचरति गवति। गो + क्विप् - क्विप् का सर्वापहारी लोप होकर - गो / गो + शप् - एचोऽयवायावः सूत्र से ओ को अवादेश होकर - गव् + अ - गव = गवति।

औकारान्त प्रातिपदिक -

नौः इव आचरति नावति। नौ + क्विप् - क्विप् का सर्वापहारी लोप होकर - नौ / नौ + शप् - एचोऽयवायावः सूत्र से औ को आवादेश होकर - नाव् + अ - नाव = नावति।

हलन्त प्रातिपदिकों में क्विप् प्रत्यय लगाने की विधि -

अनुनासिकान्त प्रातिपदिक - अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति - प्रातिपदिकों के अन्त में अनुनासिक व्यञ्जन अर्थात् ञ्, म्, ङ्, ण्, न् आने पर इन प्रातिपदिकों की उपधा को दीर्घ हो जाता है।

इदम्	+	क्विप्	-	इदाम्	+	शप्	-	इदाम्	+	अ	=	इदामति
राजन्	+	क्विप्	-	राजान्	+	शप्	-	राजान्	+	अ	=	राजानति
मथिन्	+	क्विप्	-	मथीन्	+	शप्	-	मथीन्	+	अ	=	मथीनति
ऋभुक्षिन्	+	क्विप्	-	ऋभुक्षीन्	+	शप्	-	ऋभुक्षीन्	+	अ	=	ऋभुक्षीणति
करिन्	+	क्विप्	-	करीन्	+	शप्	-	करीन्	+	अ	=	करीणति
पथिन्	+	क्विप्	-	पथीन्	+	शप्	-	पथीन्	+	अ	=	पथीनति

वकारान्त प्रातिपदिक - वकारान्त प्रातिपदिको में क्विप् प्रत्यय लगने पर

वकारान्त प्रातिपदिकों के अन्तिम व् को च्छ्वोः शूडनुनासिके च सूत्र से ऊठ् हो जाता है।

दिव् + क्विप् - दि + ऊ - इको यणचि से यण् करके - द्यू / द्यू + शप् / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से 'ऊ' को गुण होकर - द्यो + अ - एचोऽयवायावः सूत्र से 'ओ' को अवादेश होकर - द्यव् + अ - द्यव = द्यवति।

शेष हलन्त प्रातिपदिक - शेष हलन्त प्रातिपदिकों से क्विप् प्रत्यय जोड़ने पर कुछ नहीं होता -

क्षुध् + क्विप् - क्षुध् - क्षुधति / तृष् + क्विप् - तृषति / सरित् + क्विप् = सरितति आदि। यह सारे प्रातिपदिको में क्विप् प्रत्यय जोड़कर नामधातु बनाने की विधि पूर्ण हुई।

णिच् तथा णिङ् प्रत्यय लगाकर नामधातु कैसे बनायें ?

प्रातिपदिकों से णिच्, णिङ् प्रत्यय लगाने वाले सूत्र तथा इनके उदाहरण हम अन्त में देंगे। उसके पहिले हम णिच्, णिङ् प्रत्यय लगाने के लिये बुद्धि में कुछ बातें स्थिर कर लें -

णिच् प्रत्यय में हलन्त्यम् सूत्र से च् की, तथा चुटू सूत्र से ण् की इत् संज्ञा करके तस्य लोपः सूत्र से दोनों का लोप करके 'इ' शेष बचता है।

णिङ् प्रत्यय में हलन्त्यम् सूत्र से ङ् की, तथा चुटू सूत्र से ण् की इत् संज्ञा करके तस्य लोपः सूत्र से दोनों का लोप करके 'इ' शेष बचता है।

णिच्, णिङ् इन दोनों में ही 'णि' है। अतः ध्यान दें कि जब किसी सूत्र में 'णौ' कहा जाता है, तब उससे णिच् तथा णिङ्, इन दोनों को समझना चाहिये।

णिच् प्रत्यय लगने पर पद का निर्णय

णिचश्च - णिच् प्रत्यय से बने हुए नामधातुओं से उभयपदी प्रत्यय लगते हैं। कुमारयति / कुमारयते।

णिङ् प्रत्यय लगने पर पद का निर्णय

अनुदात्तङित आत्मनेपदम् - णिङ् प्रत्यय चूँकि ङित् है, अतः इसे लगाकर बने हुए जो नामधातु होते हैं, उनसे केवल आत्मनेपदी प्रत्यय ही लगाये जाते हैं। उत्पुच्छयते / सम्भाण्डयते आदि।

जब प्रातिपदिकों से णिच् तथा णिङ् प्रत्यय लगाकर नामधातु बनाये जाते हैं, तब कहीं तो 'टि' का लोप होता है और कहीं नहीं। अतः आवश्यक है कि हम 'टि' को जानें।

टि किसे कहते हैं –

अचोऽन्त्यादि टि – किसी भी शब्द में जो अन्तिम अच् होता है, वह 'टि' कहलाता है। जैसे – अश्व में अ, हरि में इ, विधु, लघु, पटु में उ, मातृ, पितृ, भ्रातृ में ऋ 'टि' हैं।

यदि शब्द के अन्तिम अच् के बाद कोई हल् हो, तो वह हल् भी उस अच् के साथ मिलकर टि कहलाने लगता है। जैसे मनस् में अन्तिम अच् 'अ' है। इसके बाद 'स्' यह हल् है। अतः इस स् के सहित 'अ' की अर्थात् 'अस्' की टि संज्ञा होती है।

इसी प्रकार विद्वस् में अस्, महत् में अत्, राजन् में अन्, करिन् में इन् 'टि' है। इस टि का लोप कहाँ करें, कहाँ न करें, यह आगे विस्तार से बतलायेंगे।

ये णिच् तथा णिङ् प्रत्यय, प्रातिपदिकों से लगने के कारण आर्धधातुक प्रत्यय नहीं हैं

प्रातिपदिकों से णिच् तथा णिङ् प्रत्यय लगाकर भी नामधातु बनाये जाते हैं। किन्तु णिच् तथा णिङ् प्रत्यय लगाकर नामधातु बनाते समय, हमें बहुत सावधानी से यह समझ लेना चाहिये, कि जब ये णिच् तथा णिङ् प्रत्यय, धातुओं से लगते हैं, तब इनका नाम आर्धधातुक प्रत्यय होता है।

जब ये णिच् तथा णिङ् प्रत्यय, धातुओं से न लगकर, प्रातिपदिकों से लगते हैं, तब इनका नाम आर्धधातुक प्रत्यय नहीं होता है।

अतः प्रातिपदिकों से लगने वाले, इन णिच् तथा णिङ् प्रत्ययों का नाम, आर्धधातुक प्रत्यय नहीं है।

णौ प्रातिपदिकस्य इष्ठवत् कार्यं भवतीति वक्तव्यम् –

जब ये णिच् तथा णिङ् प्रत्यय, प्रातिपदिक से लगते हैं, तब उस प्रातिपदिक को वे सारे कार्य किये जाते हैं, जो कार्य तद्धित के इष्ठन् प्रत्यय परे होने पर प्रातिपदिकों को किये जाते हैं।

अतः हमें जानना चाहिये कि वे कौन से कार्य हैं, जो तद्धित के इष्ठन् प्रत्यय परे होने पर प्रातिपदिक को किये जाते हैं।

यचि भम् – देखिये कि अष्टाध्यायी के चतुर्थ तथा पञ्चम अध्याय में जो भी प्रत्यय प्रातिपदिकों से कहे गये हैं, उन प्रत्ययों में से जो यकारादि प्रत्यय हैं, उनके परे होने पर, जो अजादि प्रत्यय हैं, उनके परे होने पर, तथा सु, औ, जस् अम्, औट्, शस् को छोड़कर जो १६ स्वादि प्रत्यय हैं, उनके परे होने पर, पूर्व

की 'भ' संज्ञा होती है। अत: जब भी किसी प्रातिपदिक से 'णिच् - इ' यह अजादि प्रत्यय लगेगा, तब उस प्रातिपदिक की 'यचि भम्' सूत्र से 'भ' संज्ञा होगी, यह जानिये।

इन 'भ' संज्ञक प्रातिपदिकों को जो भी अङ्गकार्य किये जाना चाहिये, वे सारे कार्य पाणिनीय अष्टाध्यायी में ६. ४. १२९ से लेकर ६.४.१७५ के सूत्रों में एक साथ हैं। अत: किसी भी प्रातिपदिक में 'णिच् - इ' प्रत्यय लगाकर नामधातु बनाने वाले सूत्र इसी 'भाधिकार' में ही देखना चाहिये।

परन्तु प्रातिपदिकों से णिच् अथवा णिङ् प्रत्यय परे होने पर कभी कभी ऐसा होता है, कि अनेक सूत्रों से होने वाले कार्य एक साथ प्राप्त होने लगते हैं। अत: शङ्का होती है कि हम उनमें से कौन सा कार्य पहिले करें और कौन सा कार्य बाद में करें ?

जैसे - प्रिय + णिच् में, प्रिय शब्द के 'अ' को 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि प्राप्त है, 'टे:' सूत्र से प्रिय शब्द की 'टि' का लोप प्राप्त है तथा 'प्रियस्थिरस्फिरोरु- बहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रब्द्राघिवृन्दा:' इस सूत्र से प्रिय शब्द को 'प्र' आदेश भी प्राप्त है। इनमें से हम क्या करें ?

गुरु + णिच् में, गुरु शब्द के 'उ' को 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि प्राप्त है, 'टे:' सूत्र से गुरु शब्द की 'टि' का लोप प्राप्त है तथा 'प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरु-वृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रब्द्राघिवृन्दा:' इस सूत्र से गुरु शब्द को 'गर्' आदेश भी प्राप्त है। इनमें से हम क्या करें ?

स्थूल + णिच् में, 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि प्राप्त है, स्थूल शब्द की 'टि' का 'टे:' सूत्र से लोप भी प्राप्त है, तथा 'स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुण:' इस सूत्र से स्थूल शब्द को 'स्थो' ऐसा आदेश भी प्राप्त है, इनमें से हम क्या करें ?

रवि + णिच् को देखिये। यहाँ 'अचो ञ्णिति' सूत्र से 'इ' को वृद्धि भी प्राप्त है तथा 'टे:' सूत्र से 'टि' का लोप भी प्राप्त है। इनमें से हम क्या करें?

पयस्विनी + णिच् में 'अचो ञ्णिति' सूत्र से 'ई' को वृद्धि भी प्राप्त है, 'टे:' सूत्र से 'टि' का लोप भी प्राप्त है तथा 'भस्याढे तद्धिते पुंवद्भाव:' से पुंवद्भाव भी प्राप्त है। इनमें से हम क्या करें ?

स्रग्विन् + णिच् में 'टे:' सूत्र से 'टि' का लोप भी प्राप्त है तथा 'विन्मतोर्लुक्' सूत्र से विन् प्रत्यय का लुक् भी प्राप्त है। इनमें से हम क्या करें?

इसकी व्यवस्था इस प्रकार है -

णिच् अथवा णिङ् प्रत्यय परे होने पर, कार्य
इस क्रम से होते हैं -

१. यदि किसी शब्द को प्रकृत्यादेश प्राप्त हो, तो सबसे पहिले उसे प्रकृत्यादेश ही कीजिये -

णिच् प्रत्यय परे होने पर स्थूल, दूर, युव, ह्रस्व, आदि अनेक शब्दों की आकृति परिवर्तित हो जाती है। इस आकृति बदलने को ही प्रकृत्यादेश होना कहते हैं। प्रकृत्यादेश करने वाले ये सूत्र पृष्ठ ५८५ से ५८८ पर बतलाये जा रहे हैं।

यदि ऐसे शब्दों से णिच् प्रत्यय लगे, तो सबसे पहिले इन शब्दों की आकृति पृष्ठ ५८५ से ५८८ पर बतलाये जा रहे सूत्रों के अनुसार बदल दीजिये। जैसे - प्रिय + णिच् = प्र + णिच् / अन्तिक + णिच् = नेद् + णिच् / बाढ + णिच् = साध् + णिच् / वृद्ध + णिच् = ज्या + णिच् / युवन् + णिच् = कन् + णिच् आदि।

२. यदि शब्द स्त्रीप्रत्ययान्त हो, तो उसे पुंवद्भाव कीजिये -

भस्याढे तद्धिते पुंवद्भाव: - जिस स्त्रीलिङ्ग शब्द के अन्त में कोई स्त्रीप्रत्यय होता है, उसे भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्ग शब्द कहते है। ऐसे भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्ग प्रातिपदिक से परे 'ढ' से भिन्न तद्धित प्रत्यय आने पर, प्रातिपदिक को पुंवद्भाव होता है।

णिच् प्रत्यय 'ढ' से भिन्न तद्धित प्रत्यय है। अत: इसके परे होने पर, यदि प्रातिपदिक स्त्रीलिङ्ग है, तो उसे इस सूत्र से पुंवद्भाव कर दीजिये।

पुन: प्रश्न होता है कि णिच् प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कैसे हो गया ?

हम पढ़ चुके हैं कि 'प्रातिपदिकाद् धात्वर्थे बहुलमिष्ठवच्च' इस गणसूत्र से प्रातिपदिकों से णिच् प्रत्यय लगने पर, प्रकृति को वे सारे कार्य होते हैं, जो कार्य तद्धित के इष्ठन् प्रत्यय परे होने पर प्रकृति को होते हैं।

अत: यदि प्रातिपदिक स्त्रीलिङ्ग है, तो सबसे पहिले उस प्रातिपदिक के स्त्रीप्रत्यय का लोप करके उसे पुल्लिङ्ग बना लीजिये। यथा -

पयस्विनीं करोति - पयस्विनी + णिच् / भस्याढे तद्धिते पुंवद्भाव: से पुंवद्भाव करके अर्थात् स्त्री प्रत्यय का लोप करके - पयस्विन् + णिच् /

इसी प्रकार - कुमारीम् आचष्टे - कुमारी + णिच् - कुमार + णिच् / हंसीं आचष्टे - हंसी + णिच् - हंस + णिच् / एनीम् आचष्टे - एनी + णिच् - एत + णिच् / आदि बनाइये।

३. विन् तथा मतुप प्रत्ययों का लुक् कीजिये -

विन्मतोर्लुक् - यदि किसी प्रातिपदिक के अन्त में विन् प्रत्यय हो, अथवा मतुप् प्रत्यय हो और ऐसे विन्नन्त या मतुबन्त प्रातिपदिकों से णिच् प्रत्यय लगे, तब उस णिच् प्रत्यय के परे होने पर, विन्नन्त प्रातिपदिक के विन् का तथा मतुबन्त प्रातिपदिक के मतुप् का लोप हो जाता है।

स्त्रग्विणं करोति (माला वाला बनाता है) स्त्रग्विन् + णिच् / विन्मतोर्लुक् से विन् का लोप करके - स्त्रज् + णिच् /

पयस्विनीं करोति - पयस्विनी + णिच् / भस्याढे तद्धिते पुंवद्भावः से पुंवद्भाव करके अर्थात् स्त्री प्रत्यय का लोप करके - पयस्विन् + णिच् / विन्मतोर्लुक् से विन् का लुक् करंके - पयस् + णिच् /

४. उसके बाद 'टिलोप' करने वाले इन सूत्रों में से यदि कोई सूत्र प्राप्त हो, तो उससे टिलोप कीजिये -

टेः - इष्ठन्, इमनिच्, तथा ईयसुन् इन तद्धित प्रत्ययों के परे होने पर **'अनेकाच् अङ्ग'** की 'टि' का लोप होता है।

'प्रातिपदिकाद् धात्वर्थे बहुलमिष्ठवच्च' इस गणसूत्र से प्रातिपदिकों से णिच् प्रत्यय लगने पर, प्रकृति को वे सारे कार्य होते हैं, जो कार्य तद्धित के इष्ठन् प्रत्यय परे होने पर प्रकृति को होते हैं। अतः इस णिच् प्रत्यय के परे होने पर अनेक अच् वाले प्रातिपदिक की टि का 'टेः' सूत्र से लोप कीजिये। यथा -

विद्वस् + णिच् - टिलोप होकर - विद्व + णिच् / हरि + णिच् - टिलोप होकर - हर् + णिच् / विधु + णिच् - टिलोप होकर - विध् + णिच् / महत् + णिच् - टिलोप होकर - मह् + णिच् / करिन् + णिच् - टिलोप होकर - कर् + णिच् / रवि + णिच् - टिलोप होकर - रव् + णिच् आदि।

अव्ययानां भमात्रे टिलोपः - यदि प्रातिपदिक अव्यय है, तब णिच् प्रत्यय परे होने पर, **'अनेकाच् न होते हुए भी'** उसकी 'टि' का लोप हो जाता है। स्वर् + णिच् - टिलोप होकर - स्व् + णिच्।

नस्तद्धिते - यदि प्रातिपदिक नान्त हो, तो **'अनेकाच् न होते हुए भी'** उसकी 'टि' का लोप हो जाता है। श्वन् + णिच् - श्व् + णिच्।

टिलोप कहाँ नहीं करें -

क. प्रकृत्यैकाच् -

यदि प्रातिपदिक एकाच् हो तो णिच् प्रत्यय परे होने पर उस एकाच् अङ्ग

की टि का लोप नहीं होता। यथा - स्व + णिच् - स्व + णिच् / गो + णिच् - गो + णिच्। यहाँ प्रातिपदिक एकाच् हैं, अत: इनकी 'टि' का लोप नहीं होगा।

ख. यदि किसी सूत्र से अनेकाच् प्रातिपदिक को एकाच् बना दिया जाता है, तब एकाच् हो जाने के कारण, उसकी टि का भी लोप नहीं होता है।

जैसे - स्थूल शब्द अनेकाच् है किन्तु स्थूल शब्द से णिच् लगने पर 'स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुण:' सूत्र से स्थूल शब्द को 'स्थो' हो जाता है। अब यह 'स्थो' एकाच् हो गया है, तब भी इसकी टि का लोप नहीं होता है। स्थूल + णिच् - स्थो + णिच् - इसकी टि का लोप नहीं होगा।

इसी प्रकार - दूर + णिच् - दो + णिच् - इसकी टि का लोप भी नहीं होगा। युवन् + णिच् - यो + णिच् - इसकी टि का लोप भी नहीं होगा। युवन् + णिच् - कन् + णिच् - इसकी टि का लोप भी नहीं होगा, क्योंकि आदेश हो जाने के बाद अब ये प्रातिपदिक 'एकाच्' हो गये हैं।

ग. अनेकाच् प्रातिपदिक की 'टि' का, एक बार लोप करने के बाद भी यदि प्रातिपदिक अनेकाच् ही बच जाये तो भी उस अनेकाच् प्रातिपदिक की टि का, दुबारा लोप नहीं होता है। जैसे - देवद्रि अङ् + णिच् - टि का लोप करके - देवद्रि + णिच् - यहाँ टि का दुबारा लोप नहीं होगा।

घ. लुका लुप्ते टिलोपो न - यदि किसी प्रातिपदिक के अन्त में विन् प्रत्यय हो अथवा मतुप् प्रत्यय हो, और ऐसे प्रातिपदिकों से णिच् प्रत्यय लगे तब विन्मतोर्लुक् सूत्र से विन्, मतुप् प्रत्ययों का लुक् अर्थात् लोप होता है।

'विन्मतोर्लुक्' सूत्र से विन्, मतुप् प्रत्ययों का लुक् अर्थात् लोप होने के बाद जो प्रातिपदिक बचता है, वह चाहे एकाच् हो, चाहे अनेकाच्, उसकी 'टि' का लोप नहीं होता। जैसे - पयस्विनं करोति / आचष्टे वा - पयस्विनी + णिच् / भस्याढे तद्धिते पुंवद्भाव: से पुंवद्भाव करके - पयस्विन् + णिच् / विन्मतोर्लुक् से विन् का लोप करके - पयस् + णिच्।

ध्यान दें कि यहाँ 'पयस्विन्' अनेकाच् है। विन् का लुक् होने के बाद यह पयस् + णिच्, भी अनेकाच् ही है, तो भी इसकी टि का लोप नहीं होता - पयसयति। **निष्कर्ष** -

एकाच् प्रातिपदिक	**अनेकाच् प्रातिपदिक**
एकाच् अव्यय प्रातिपदिक की टि का लोप होता है।	सारे अनेकाच् प्रातिपदिकों की टि का लोप होता है।

एकाच् नान्त प्रातिपदिकों की टि का लोप होता है।
अन्य एकाच् प्रातिपदिकों की टि का लोप नहीं होता।

किन्तु अनेकाच् प्रातिपदिक की टि का एक बार लोप हो जाने के बाद जो अनेकाच् प्रातिपदिक बचे, उसकी टि का दोबारा लोप नहीं होता।
विन्, मतुप् प्रत्ययों का लोप होने के बाद जो अनेकाच् प्रातिपदिक बचे, उसकी टि का भी लोप नहीं होता।

यह विचार करके ही आप प्रातिपदिकों की टि का लोप करें।

५. जिन शब्दों को प्रकृत्यादेश, पुंवद्भाव, विन्, मतुप् प्रत्ययों का लुक् तथा टिलोप प्राप्त न हों, उनमें इस प्रकार वृद्धि कीजिये -

अचो ञ्णिति - अजन्त अङ्ग को वृद्धि होती है ञित्, णित् प्रत्यय परे होने पर। यथा स्व + णिच् - स्वा + णिच् / प्र + णिच् - प्रा + णिच् / गो + णिच् - गौ + णिच् आदि।

अत उपधायाः - उपधा के 'अ' को वृद्धि होती हैं, ञित्, णित् प्रत्यय परे होने पर। त्वद् + णिच् - त्वाद् + णिच् /

प्रश्न होता है कि जहाँ वृद्धि, टिलोप तथा प्रकृत्यादेश, ये तीनों एक साथ प्राप्त हों, वहाँ वृद्धि तथा टिलोप को रोककर हम प्रकृत्यादेश करते हैं।

जैसे - प्रिय + णिच् में 'अचो ञ्णिति' सूत्र से होने वाली वृद्धि तथा 'टेः' सूत्र से प्राप्त होने वाले टिलोप को रोककर प्रिय के स्थान पर 'प्र' आदेश करते हैं। गुरु + णिच् में 'अचो ञ्णिति' सूत्र से होने वाली वृद्धि तथा 'टेः' सूत्र से प्राप्त होने वाले टिलोप को रोककर गुरु शब्द को 'गर्' ऐसा प्रकृत्यादेश करते हैं।

परन्तु कभी कभी होता यह है कि प्रकृत्यादेश कर लेने के बाद पुनः यह वृद्धि प्राप्त हो जाती है। ऐसे स्थलों में क्या करें ?

जैसे - प्रिय + णिच् में वृद्धि तथा टिलोप को रोककर, प्रकृत्यादेश करके जब हम प्र + णिच् बना लेते हैं, तब हमें पुनः 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि प्राप्त होती है। स्थूल + णिच् में हम टिलोप को रोककर, प्रकृत्यादेश करके जब स्थो + णिच् बना लेते हैं, तब हमें पुनः 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि प्राप्त होती है।

गुरु + णिच् में वृद्धि तथा टिलोप को रोककर, प्रकृत्यादेश करके जब हम गर् + णिच् बना लेते हैं, तब हमें पुनः 'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा को वृद्धि प्राप्त होती है। ये वृद्धि हम करें या नहीं ?

इसके लिये इस परिभाषा को जानना अत्यावश्यक है -

संज्ञापूर्वको विधिरनित्यः - 'अचो ञ्णिति' अथवा 'अत उपधायाः' सूत्र से प्राप्त होने वाली वृद्धि, चूँकि 'वृद्धि' इस संज्ञा शब्द के द्वारा कही जा रही है, अतः यह अनित्य है। अनित्य होने का अर्थ होता है - जो कभी हो और कभी न हो। अतः यह वृद्धि कभी होती है और कभी नहीं होती।

अतः हम आगे उदाहरण देते समय बतलाते चलेंगे कि एक अङ्गकार्य कर चुकने के बाद यह वृद्धि कहाँ होती है और कहाँ नहीं होती।

अब हम सारे प्रातिपदिकों में 'णिच्' प्रत्यय लगाना जान चुके हैं। अतः प्रातिपदिकों का वर्गीकरण करके उनमें इस प्रकार णिच् प्रत्यय लगायें -

एकाच् अकारान्त प्रातिपदिक - स्व + णिच्। यहाँ एकाच् होने के कारण टिलोप नहीं होगा। अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर - स्वा + णिच् /

अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्मायातां पुङ्णौ - ऋ धातु, ब्ली, ह्री, री ,क्नूयी, क्ष्मायी, तथा आकारान्त अङ्गों को पुक् का आगम होता है णि परे होने पर।

पुक् का आगम होकर - स्वाप् + इ - स्वापि -

सनाद्यन्ता धातवः - सन्, क्यच् ,काम्यच्, क्यष्, क्यङ्, क्विप्, णिङ्, ईयङ्, णिच्, यक्, आय, यङ् ये १२ प्रत्यय जिसके भी अन्त में लगते हैं, उसका नाम, धातु हो जाता है।

अतः स्व + णिच् से बना हुआ यह 'स्वापि' अब 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातुसंज्ञक है। धातुसंज्ञा हो जाने से, अब हम इनके किसी भी लकार के रूप बना सकते हैं। ध्यान दें कि लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन लकारों के प्रत्यय सार्वधातुक हैं। सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर धातु + प्रत्यय के बीच में 'शप्' विकरण लगता है। सूत्र है -

कर्तरि शप् - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातु + प्रत्यय के बीच में शप् विकरण लगता है। आर्धधातुक लकारों के प्रत्यय परे होने पर धातु प्रत्यय के बीच में कभी भी विकरण नहीं लगता।

शप् प्रत्यय में हलन्त्यम् सूत्र से प् की, तथा लशक्वतद्धिते सूत्र से श् की इत् संज्ञा करके तस्य लोपः सूत्र से दोनों का लोप होकर 'अ' शेष बचता है।

अब इसके लट् लकार के रूप इस प्रकार बने -

स्वम् आचष्टे - स्व + णिच् - स्वापि / लट् लकार में स्वापि + शप् + ति / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से 'इ' को गुण करके - स्वापे + अ + ति

– एचोऽयवायाव: सूत्र से ए को अय् आदेश करके = स्वापयति।

पूरे रूप इस प्रकार बने –

स्वापयति	स्वापयत:	स्वापयन्ति
स्वापयसि	स्वापयथ:	स्वापयथ
स्वापयामि	स्वापयाव:	स्वापयाम:

इसी प्रकार लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लकारों के रूप बनायें।

ध्यान दें कि प्रातिपदिकों में जब भी 'णिच् या णिङ्' प्रत्यय लगाकर नामधातु बनते हैं, तब वे धातु इकारान्त ही रहते हैं।

अत: प्रातिपदिकों में णिच् लगाकर इकारान्त नामधातु बन जाने के बाद, धातुरूप बनाने की प्रक्रिया स्वापयति के समान ही होगी। अत: आगे के उदाहरणों में हम इकारान्त नामधातु बन जाने तक की क्रिया तो बतलायेंगे, उसके बाद बना बनाया धातुरूप लिख देंगे।

अनेकाच् अकारान्त प्रातिपदिक – अश्व + णिच्। यहाँ अनेकाच् होने के कारण टिलोप होगा। टिलोप होकर – अश्व् + णिच् – अश्वि + शप् + ति – सार्वधातुकार्धधातुकयो: सूत्र से गुण करके – अश्वे + अ + ति – एचोऽयवायाव: सूत्र से अश्वय् + अ + ति – अश्वयति।

त्वच + णिच्। ध्यान दें कि यह अदन्त शब्द है, हलन्त नहीं। यहाँ अनेकाच् होने के कारण टिलोप होगा। टिलोप होकर – त्वच् + णिच् – त्वचि + शप् + ति – सार्वधातुकार्धधातुकयो: सूत्र से गुण करके – त्वचे + अ + ति – एचोऽयवायाव: सूत्र से त्वचय् + अ + ति – त्वचयति।

एकाच् इकारान्त, ईकारान्त प्रातिपदिक –

वि + णिच् / यहाँ एकाच् होने के कारण टिलोप नहीं होगा। अत: अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर – वै + इ / एचोऽयवायाव: से आयादेश होकर वायि + शप् + ति – वाययति।

धी + णिच् – अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर – धै + इ / एचोऽयवायाव: से आयादेश होकर – धायि + शप् + ति – धाययति।

अनेकाच् इकारान्त, ईकारान्त प्रातिपदिक –

कवि + णिच्। यहाँ अनेकाच् होने के कारण टिलोप होगा। टिलोप होकर – कव् + णिच् – कवि + शप् + ति – कवयति।

नदी + णिच्। यहाँ अनेकाच् होने के कारण टिलोप होगा। टिलोप होकर

- नद् + णिच् - नदि + शप् + ति - नदयति।

एकाच् उकारान्त, ऊकारान्त प्रातिपदिक -

भू + णिच् / यहाँ एकाच् होने के कारण टिलोप नहीं होगा, अत: अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर - भौ + इ, एचोऽयवायाव: से आवादेश होकर - भावि + शप् + ति - भावयति।

अनेकाच् उकारान्त, ऊकारान्त प्रातिपदिक -

भानु + णिच्। यहाँ अनेकाच् होने के कारण टिलोप होगा। टिलोप होकर - भान् + णिच् - भानि + शप् + ति - भानयति।

इसी प्रकार - लघु - लघयति, वसु - वसयति आदि बनाइये।

वधू + णिच्। यहाँ अनेकाच् होने के कारण टिलोप होगा। टिलोप होकर - वध् + णिच् - वधि + शप् + ति - वधयति।

एकाच् ऋकारान्त प्रातिपदिक - नृ + णिच् / यहाँ एकाच् होने के कारण टिलोप नहीं होगा, अत: अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर - नार् + इ - नारि + शप् + ति - नारयति।

अनेकाच् ऋकारान्त प्रातिपदिक - मातृ + णिच् - यहाँ अनेकाच् होने के कारण टिलोप होगा। टिलोप होकर - मात् + णिच् - माति + शप् + ति - मातयति। इसी प्रकार - भ्रातृ + णिच् - भ्रातृ + शप् + ति - भ्रातयति। स्वसृ + णिच् - स्वसि + शप् + ति - स्वसयति आदि बनाइये।

एकाच् ऐकारान्त प्रातिपदिक - रै + णिच् / यहाँ एकाच् होने के कारण टिलोप नहीं होगा, अत: अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर रै + इ , एचोऽयवायाव: से आयादेश होकर रायि + शप् + ति - राययति।

एकाच् ओकारान्त प्रातिपदिक - गो + णिच् / यहाँ एकाच् होने के कारण टिलोप नहीं होगा, अत: अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर गौ + इ , एचोऽयवायाव: से आवादेश होकर गावि + शप् + ति - गावयति।

विशेष - गोमत् + णिच् में जब विन्मतोर्लुक् से मतुप् का लुक् होकर गो + णिच् बचेगा तब 'संज्ञापूर्वको विधिरनित्य:' इस परिभाषा से अचो ञ्णिति से होने वाली वृद्धि नहीं होगी। अत: एचोऽयवायाव: सूत्र से अवादेश होकर गो + णिच् - गव् + णिच् - गवयति ही बनेगा।

एकाच् औकारान्त प्रातिपदिक - नौ + णिच् / यहाँ एकाच् होने के कारण टिलोप नहीं होगा, अत: अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर नौ + इ , एचोऽयवायाव:

से आवादेश होकर नावि + शप् + ति - नावयति।

अनेकाच् हलन्त प्रातिपदिक - इनकी टि का लोप कीजिये -

सरित् + णिच् - टिलोप करके - सर् + णिच् - सरि - शप् + ति - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - सरे + शप् + ति - एचोऽयवायावः सूत्र से सरय् + अ + ति - सरयति। **ध्यान रहे कि 'टिलोप' होने के बाद वृद्धि नहीं होती।**

इसी प्रकार - हस्तिन् + णिच् - टिलोप करके - हस्त् + णिच् - हस्ति - शप् + ति - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - हस्ते + शप् + ति - एचोऽयवायावः सूत्र से हस्तय् + अ + ति - हस्तयति।

करिन् + णिच् - टिलोप करके - कर् + णिच् - करि - शप् + ति - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - करे + शप् + ति - एचोऽयवायावः सूत्र से करय् + अ + ति - करयति।

वचस् + णिच् - टिलोप करके - वच् + णिच् - वचि - शप् + ति - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - वचे + शप् + ति - एचोऽयवायावः सूत्र से वचय् + अ + ति - वचयति।

एकाच् हलन्त प्रातिपदिक -

हम जानते हैं कि 'टिलोप' होने के बाद वृद्धि नहीं होती है। हम यह भी जानते हैं कि एकाच् प्रातिपदिकों में 'प्रकृत्यैकाच्' सूत्र से टिलोप नहीं होता है, अतः यहाँ वृद्धि होना चाहिये।

पर ऐसा नहीं होता है, क्योंकि 'अत उपधायाः' सूत्र से होने वाली वृद्धि अनित्य है। अनित्य होने का अर्थ होता है - जो कभी हो और कभी न हो।

अतः यहाँ एकाच् हलन्त प्रातिपदिकों में 'अत उपधायाः' सूत्र से होने वाली वृद्धि को सावधानी से कीजिये -

त्वद् + णिच् - अत उपधायाः से उपधा को वृद्धि करके - त्वाद् + णिच् - त्वादि + शप् + ति - त्वादयति बनाइये।

मद् + णिच् - अत उपधायाः सूत्र से उपधा को वृद्धि करके - माद् + णिच् - मादि + शप् + ति - मादयति बनाइये।

शेष एकाच् हलन्त प्रातिपदिकों की उपधा के 'अ' को कुछ मत कीजिये - कन् + णिच् - कनयति / गर् + णिच् - गरयति / ह्रस् + णिच् - ह्रसयति / क्षुध् + णिच् - क्षुधयति, आदि।

यह प्रातिपदिकों में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि पूर्ण हुई।

उन प्रातिपदिकों के रूप, जिनकी आकृति णिच् प्रत्यय परे होने पर बदल जाती है

णिच् प्रत्यय परे होने पर -

वृद्धस्य च - वृद्ध को ज्य तथा वर्ष् ये दो आदेश होते हैं।

वृद्ध को ज्य आदेश होने पर - वृद्ध + णिच् / ज्य + इ / अचो ञ्णिति सूत्र से 'अ' को वृद्धि करके - ज्या + इ /

अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्मायातां पुङ्णौ - ऋ धातु, ब्ली, ह्री, री ,क्नूयी, क्ष्मायी, तथा आकारान्त अङ्गों को पुक् का आगम होता है णि परे होने पर।

ज्या + इ - ज्याप् + इ - ज्यापि - ज्यापयति।

वृद्ध को वर्ष् आदेश होने पर -

वृद्ध + णिच् - वर्ष् + णिच् - वर्षि - वर्षयति

अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ - अन्तिक और बाढ शब्दों को नेद् और साध् आदेश होते हैं।

अन्तिक + णिच् - नेद् + णिच् - नेदि - नेदयति

बाढ + णिच् - साध् + णिच् - साधि - साधयति

युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम् - युवन् और अल्प शब्दों को नेद् और साध् आदेश होते हैं।

युवन् + णिच् - कन् + णिच् - कनि - कनयति

अल्प + णिच् - कन् + णिच् - कनि - कनयति

ये सारे आदेश एकाच् हैं। इन आदेशों के एकाच् होने से इनकी टि का लोप नहीं हुआ है।

स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः - स्थूल, दूर, युव, ह्रस्व, क्षिप्र, क्षुद्र को क्रमशः स्थो, दो, यो, ह्रस्, क्षेप्, क्षोद् आदेश होते हैं, इष्ठन्, इमनिच्, अथवा ईयसुन् प्रत्यय परे होने पर।

स्थूलं करोति - स्थूल + णिच् - स्थो + णिच् / एचोऽयवायावः से अवादेश होकर स्थव् + इ - स्थवि - स्थवयति।

इसी प्रकार - दूर + णिच् - दो + णिच् से दवयति / युवन् + णिच् - यो + णिच् से यवयति बनाइये।

ह्रस्व + णिच् - ह्रस् + णिच् - ह्रसि - ह्रसयति।

इसी प्रकार - क्षिप्र + णिच् - क्षेप् + णिच् - क्षेपि - क्षेपयति / क्षुद्र + णिच् - क्षोद् + णिच् - क्षोदि - क्षोदयति बनाइये।

प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रब्द्राघिवृन्दाः - प्रिय, स्थिर, स्फिर, उरु, बहुल, गुरु, वृद्ध, तृप्र, दीर्घ, वृन्दारक को क्रमशः प्र, स्थ, स्फ, वर्, बंह्, गर्, वर्ष्, त्रप्, द्राघ्, वृन्द् आदेश होते हैं, इष्ठन्, इमनिच्, अथवा ईयसुन् प्रत्यय परे होने पर।

प्रिय + णिच् - प्र + णिच् / अचो ञ्णिति सूत्र से अजन्त अङ्ग को वृद्धि करके - प्रा + णिच् - प्रा + इ / 'अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्मायातां पुङ्णौ' सूत्र से पुक् का आगम करके - प्राप् + इ - प्रापि - प्रापयति। इसी प्रकार -

स्थिर	+	णिच्	-	स्थ	+	णिच्	-	स्थापि	-	स्थापयति
स्फिर	+	णिच्	-	स्फ	+	णिच्	-	स्फापि	-	स्फापयति

उरु + णिच् / वर् + णिच् - वरि / वरि + शप् + ति - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से इ को गुण करके - वरे + अ + ति - एचोऽयवायावः सूत्र से ए को अय् आदेश करके - वरयति। इसी प्रकार -

बहुल	+	णिच्	-	बंह्	+	णिच्	-	बंहि	-	बंहयति
गुरु	+	णिच्	-	गर्	+	णिच्	-	गरि	-	गरयति
तृप्र	+	णिच्	-	त्रप्	+	णिच्	-	त्रपि	-	त्रपयति
दीर्घ	+	णिच्	-	द्राघ्	+	णिच्	-	द्राघि	-	द्राघयति
वृन्दारक	+	णिच्	-	वृन्द्	+	णिच्	-	वृन्दि	-	वृन्दयति

बहोर्लोपो भू च बहोः - बहु को भू आदेश होता है।

बहु	+	णिच्	-	भू	+	णिच्	-	भावि	-	भावयति
										बहयति

र ऋतो हलादेर्लघोः - पृथु मृदु भृश कृश दृढ तथा परि + वृढ शब्दों के लघु ऋ के स्थान पर र आदेश होता है। अनेकाच् होने के कारण टेः सूत्र से टि का लोप भी होता है।

पृथु	+	णिच्	-	प्रथ्	+	णिच्	-	प्रथि	-	प्रथयति
मृदु	+	णिच्	-	म्रद्	+	णिच्	-	म्रदि	-	म्रदयति
भृश	+	णिच्	-	भ्रश्	+	णिच्	-	भ्रशि	-	भ्रशयति
कृश	+	णिच्	-	क्रश्	+	णिच्	-	क्रशि	-	क्रशयति
दृढ	+	णिच्	-	दृढ्	+	णिच्	-	द्रढि	-	द्रढयति

परि + वृढ + णिच् - परिव्रढ् + णिच् - परिव्रढि - परिव्रढयति

प्रत्ययोत्तरपदयोश्च - युष्मद्, अस्मद् शब्दों को एकवचन में त्वद् मद् आदेश होते हैं। त्वद् + णिच् - अत उपधायाः से उपधा को वृद्धि करके - त्वाद् + णिच् - त्वादि + शप् + ति - त्वादयति।

मद् + णिच् - अत उपधायाः से उपधा को वृद्धि करके - माद् + णिच् - मादि + शप् + ति - मादयति।

बहुवचन में - युवाम् युष्मान् वा आचष्टे युष्मयति - युष्मद् + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टिलोप करके - युष्म् + णिच् - युष्मि + शप् - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - युष्मे + शप् + ति - एचोऽयवायावः सूत्र से युष्मय् + अ + ति - युष्मयति।

अस्मान् आचष्टे अस्मयति - अस्मद् + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टिलोप करके - अस्म् + णिच् - अस्मि + शप् + ति - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से अस्मे + शप् + ति - एचोऽयवायावः सूत्र से अस्मय् + अ + ति - अस्मयति।

विद्वस् शब्द - इसके रूप तीन प्रकार से बनते हैं।

१. विद्वांसम् आचष्टे विद्वयति - विद्वस् + णिच् - टिलोप करके विद्व् + णिच् - विद्वि + शप् + ति - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से विद्वे + शप् + ति - एचोऽयवायावः सूत्र से विद्वय् + अ + ति - विद्वयति।

२. विद्वांसम् आचष्टे विदावयति - विद्वस् + णिच् - टिलोप करके - विद्व् + णिच् - वसोः सम्प्रसारणम् सूत्र से संप्रसारण करके - विदु + णिच् - अचो ञ्णिति से वृद्धि करके - विदौ + णिच् - एचोऽयवायावः सूत्र से आवादेश करके - विदाव् + इ - विदावि / विदावि + शप् + ति - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से विदावे + शप् + ति - एचोऽयवायावः सूत्र से विदावय् + अ + ति - विदावयति।

३. विद्वांसम् आचष्टे विदयति - विद्वस् + णिच् - वस् को संप्रसारण करके - विदु अस् + णिच् - सम्प्रसारणाच्च से पूर्वरूप करके - विदुस् + णिच् - टिलोप करके विद् + णिच् - विदि + शप् + ति - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से विदे + शप् + ति - एचोऽयवायावः सूत्र से विदय् + अ + ति - विदयति।

अञ्चु धातु से बने हुए शब्द -

विष्वद्र्यङ् + णिच् - विष्वद्र्यङ् + णिच् - इसमें 'अङ्' टि है। अर्थात् यह शब्द विष्वद्रि + अङ् + णिच् है। इसकी टि का लोप करके - विष्वद्रि + णिच् / अचो ञ्णिति से वृद्धि करके - विष्वद्रै + णिच् / एचोऽयवायावः सूत्र

से आवादेश करके - विष्वद्राय् + इ - विष्वद्रायि / विष्वद्रायि + शप् + ति - - विष्वद्राययति।

इसी प्रकार देवद्र्यङ् से देवद्राययति, तद्र्यङ् से तद्राययति, यद्र्यङ् से यद्राययति आदि बनाइये।

सम्यङ् को समीच् होता है - सम्यङ् + णिच् - समीच् + णिच् - समीचि - समीचयति।

प्रत्यङ् को प्रतीच् होता है - प्रत्यङ् + णिच् - प्रतीच् + णिच् - प्रतीचि - प्रतीचयति।

उदङ् को उदीच् होता है - उदङ् + णिच् - उदीच् + णिच् - उदीचि - उदीचयति।

सध्र्यङ् को सध्रि होता है - सध्र्यङ् + णिच् - सध्रि + णिच् / अचो ञ्णिति से वृद्धि करके सध्रै + णिच् - एचोऽयवायावः सूत्र से आयादेश करके - सध्राय् + इ - सध्रायि - सध्राययति।

तिर्यङ् को 'तिरि' होता है - तिरि + णिच् - अचो ञ्णिति से वृद्धि करके - तिरै + णिच् - एचोऽयवायावः सूत्र से आयादेश करके - तिराय् + इ - तिरायि - तिराययति बनाइये।

श्वन् + णिच् - इसके रूप दो प्रकार से बनते हैं -

१. श्वानम् आचष्टे शावयति - श्वन् + णिच् - नस्तद्धिते सूत्र से टि का लोप करके - श्व् + णिच् - श्वयुवमघोनामतद्धिते सूत्र से व् को संप्रसारण करके - शु + णिच् - अचो ञ्णिति से वृद्धि करके - शौ + णिच् - एचोऽयवायावः सूत्र से आवादेश करके - शाव् + इ - शावि - शावयति।

२. श्वानम् आचष्टे शुनयति - श्वन् + णिच् - श्वयुवमघोनामतद्धिते सूत्र से व् को संप्रसारण करके - शु अन् + णिच् - संप्रसारणाच्च से अ को पूर्वरूप करके - शुन् + णिच् - शुनि - शुनयति।

यह णिच् प्रत्यय लगाकर नामधातु बनाने की विधि पूर्ण हुई। अब सबसे अन्त में हम प्रातिपदिकों में णिच् प्रत्यय लगाने वाले सूत्र पढ़ें। इससे हम यह जान सकेंगे कि किस शब्द से किस अर्थ में यह णिच् प्रत्यय लगता है तथा णिच् प्रत्यय के कौन कौन से अर्थ होते हैं।

प्रातिपदिकों में णिच् प्रत्यय लगाने वाले सूत्र

प्रातिपदिकाद् धात्वर्थे बहुलमिष्ठवच्च - प्रातिपदिकों से धातु के ही अर्थ

में णिच् प्रत्यय होता है तथा इस णिच् प्रत्यय के परे होने पर, प्रकृति को वे कार्य होते हैं, जो कार्य प्रकृति को, तद्धित के इष्ठन् प्रत्यय परे होने पर किये जाते हैं।

धात्वर्थ का तात्पर्य है - दर्शन, वचन, श्रवण, आख्यान, करण आदि। अर्थात् देखना, सुनना, बोलना, करना आदि। इन अर्थों में किसी भी प्रातिपदिक से 'णिच्' प्रत्यय लगता है।

तत्करोति तदाचष्टे - प्रातिपदिकों से तत्करोति / तदाचष्टे अर्थ में भी णिच् प्रत्यय होता है। युद्धं आचष्टे - युद्ध + णिच् / अनेकाच् होने के कारण टे: सूत्र से टिलोप करके - युद्ध् + इ - युद्धि = युद्धयति। कविम् आचष्टे - कवि + णिच् / अनेकाच् होने के कारण टे: सूत्र से टिलोप करके - कव् + इ - कवि = कवयति।

तेनातिक्रामति - प्रातिपदिकों से तेनातिक्रामति अर्थ में भी णिच् प्रत्यय होता है। अश्वेन - अतिक्रामति - अश्व + णिच् / अनेकाच् होने के कारण टे: सूत्र से टिलोप करके - अश्व् + इ - अश्वि = अश्वयति।

इसी प्रकार - हस्तिना अतिक्रामति - हस्तिन् + णिच् - 'नस्तद्धिते' सूत्र से टिलोप करके - हस्त् + इ - हस्ति = हस्तयति।

विशेष - यदि शब्द नान्त हो, तब तद्धित प्रत्यय परे होने पर नान्त अङ्ग की 'टि' का लोप **'नस्तद्धिते'** सूत्र से होता है।

कर्तृकरणाद् धात्वर्थे - प्रातिपदिकों से 'कर्ता के व्यापार' अर्थ में भी णिच् प्रत्यय होता है। असिना हन्ति - असि + णिच् / अनेकाच् होने के कारण टे: सूत्र से टिलोप करके - अस् + इ - असि = असयति।

शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्य: करणे - इन प्रातिपदिकों से 'करोति' अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है। क्यङ् प्रत्यय लगाकर हम शब्दं करोति - शब्दायते बना चुके हैं। न्यासकार के अनुसार इन प्रातिपदिकों से 'करोति' अर्थ में णिच् प्रत्यय भी होता है। शब्दं करोति - शब्द + णिच् - शब्दयति।

इसी प्रकार वैरं करोति - वैर + णिच् = वैरयति / कलहं करोति = कलहयति आदि बनाइये।

मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहलकलकृततूस्तेभ्यो णिच् - मुण्ड, मिश्र, श्लक्ष्ण, लवण, व्रत, वस्त्र, हल, कल, कृत, तूस्त, इन प्रातिपदिकों से तत्करोति अर्थ में णिच् प्रत्यय होता है।

मुण्डं करोति - मुण्ड + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टिलोप करके

- मुण्डयति।

मिश्रं करोति - मिश्र + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टिलोप करके - मिश्रयति। इसी प्रकार हलयति, कलयति, श्लक्ष्णयति, लवणयति बनाइये।

इस सूत्र की व्याख्या इस प्रकार है -

व्रताद् भोजने तन्निवृत्तौ च - व्रत शब्द से भोजन तथा उपवास अर्थों में णिच् प्रत्यय होता है। पयो व्रतयति, वृषलान्नं व्रतयति।

वस्त्रात्समाच्छादने - वस्त्र शब्द से समाच्छादनअर्थ में णिच् प्रत्यय होता है। संवस्त्रयति।

हल्यादिभ्यो ग्रहणे - हलिं गृह्णाति - हलि + णिच् - टिलोप करके - हलयति, इसी प्रकार - कलिं गृह्णाति कलयति।

तूस्तानि विहन्ति - तूस्त + णिच् - टिलोप करके - केशान् वितूस्तयति (विशदीकरोति)।

सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्-

सत्याप, पाश, रूप, वीणा, तूल, श्लोक, सेना, लोम, त्वच्, वर्मन्, वर्ण, चूर्ण, प्रतिपदिकों से तथा चुरादिगण पठित धातुओं से णिच् प्रत्यय होता है।

इनमें इस प्रकार 'णिच्' लगाइये -

पाशाद् विमोचने - पाशाद् विमोचयति - विपाश + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टे: सूत्र से टिलोप करके - विपाशि - विपाशयति।

रूपाद् दर्शने - रूपं दर्शयति - रूप + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टे: सूत्र से टिलोप करके - रूपि - रूपयति।

वीणया उपगायति - उपवीणा + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टे: सूत्र से टिलोप करके - उपवीणि - उपवीणयति।

तूलेन अनुकुष्णाति - अनुतूल + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टे: सूत्र से टिलोप करके - अनुतूलि - अनुतूलयति।

श्लोकै: उपस्तौति - उपश्लोक + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टे: सूत्र से टिलोप करके - उपश्लोकि - उपश्लोकयति।

सेनया अभियाति - अभिषेण + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टे: सूत्र से टिलोप करके - अभिषेणि - अभिषेणयति।

लोमानि अनुमार्ष्टि - अनुलोम + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टे: सूत्र से टिलोप करके - अनुलोमि - अनुलोमयति।

वर्मणा संनह्यति - संवर्मन् + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टेः सूत्र से टिलोप करके - संवर्म् + इ - संवर्मि - संवर्मयति।

चूर्णैः अवध्वंसयति - अवचूर्ण + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टेः सूत्र से टिलोप करके - अवचूर्णि - अवचूर्णयति।

वर्णं गृह्णाति - वर्ण + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टेः सूत्र से टिलोप करके - वर्णि - वर्णयति।

त्वचं गृह्णाति - त्वच + णिच् - अनेकाच् होने के कारण टेः सूत्र से टिलोप करके - त्वचि - त्वचयति। (ध्यान दें कि यह 'त्वच' अदन्त प्रातिपदिक है, चकारान्त नहीं।)

अर्थवेदयोरापुग्वक्तव्यः - सत्य शब्द तो आपुक् लगाकर सूत्र में दिया ही है। अर्थ, वेद शब्दों से भी आपुक् होता है। आपुक् के विधानसामर्थ्य से आपुक् की टि का लोप नहीं होता।

सत्यम् आचष्टे	-	सत्य	+	आपुक्	-	सत्यापयति।
अर्थम् आचष्टे	-	अर्थ	+	आपुक्	-	अर्थापयति।
वेदम् आचष्टे	-	वेद	+	आपुक्	-	वेदापयति।

तत्करोति इत्युपसंख्यानम् सूत्रयत्याद्यर्थम् -

सूत्रं करोति - सूत्रयति।

आख्यानात्कृतस्तदाचष्टे कृल्लुक् प्रकृतिप्रत्ययापत्तिः प्रकृतिवच्च कारकम्।

कंसवधम् आचष्टे - कंसं घातयति।

बलिबन्धम् आचष्टे - बलिं बन्धयति।

राजागमनमाचष्टे - राजानमागमयति।

आङ्लोपश्च कालान्तसंयोगे मर्यादायाम् -

आरात्रि विवासम् आचष्टे - रात्रिं विवासयति

चित्रीकरणे प्रापि - उज्जयिन्या प्रस्थितो माहिष्मत्यां सूर्योद्गमनम् संभावयते - सूर्यम् उद्गमयति।

नक्षत्रयोगे ज्ञि - पुष्ययोगं जानाति - पुष्येण योजयति।

इस प्रकार णिच् प्रत्यय के अनेक अर्थ हैं। इन निर्देशों के साथ णिच् प्रत्यय से नामधातु बनाकर उनका प्रयोग करना चाहिये । यथा -

मधुर - मधुरयति / बधिर - बधिरयति / शिथिल - शिथिलयति आदि।

ये णिच् प्रत्यय लगाने वाले सूत्र तथा वार्तिक पूरे हुए।

णिङ् प्रत्यय लगाकर नामधातु कैसे बनायें

पुच्छभाण्डचीवराण्णिङ् – पुच्छ, भाण्ड, चीवर, इन प्रातिपदिकों से णिङ् प्रत्यय लगाकर करोति अर्थ में नामधातु बनाये जाते हैं। प्रक्रिया बिल्कुल णिच् के समान ही होती है।

अनुदात्तङित आत्मनेपदम् – णिङ् प्रत्यय चूँकि ङित् है अत: इसे लगाकर बने हुए जो नामधातु होते हैं उनसे केवल आत्मनेपदी प्रत्यय ही लगाये जाते हैं।

इनके अर्थ इस प्रकार हैं –

पुच्छादुसने पर्यसने वा – विविधं विरुद्धं वा पुच्छम् उत्क्षिपति – उत्पुच्छ + णिङ् / टिलोप करके – उत्पुच्छयते।

भाण्डात् समाचयने – भाण्डं संचिनोति – सम्भाण्ड + णिङ् / टिलोप करके – सम्भाण्डयते।

चीवरादर्जने परिधाने वा – वस्त्रेण सम्यग् आच्छादयति – संचीवर + णिङ् – टिलोप करके – संचीवरयते भिक्षुः।

यह णिङ् प्रत्यय लगाकर नामधातु बनाने की विधि पूर्ण हुई।

हमने प्रातिपदिकों में क्यच्, क्यङ्, काम्यच्, क्यष्, क्विप्, णिङ्, णिच् प्रत्यय लगाकर जो नामधातु बनाये हैं उनके लट् लकार के रूप बनाना सीखा है। चूँकि ये नामधातु भी धातु हैं अत: इनमें सभी लकारों के प्रत्यय तथा सभी कृत् प्रत्यय लगाये जा सकते हैं। जैसे –

पुत्र + क्यच् – पुत्रीय यह नामधातु बनाया है इससे लट् लकार में पुत्रीयति, लोट् लकार में पुत्रीयतु, लङ् लकार में अपुत्रीयत्, विधिलिङ् लकार में पुत्रीयेत्, लिट् लकार में पुत्रीयाञ्चकार, लुट् लकार में पुत्रीयिता, लृट् लकार में पुत्रीयिष्यति, आशीर्लिङ् लकार में पुत्रीय्यात्, लुङ् लकार में अपुत्रीयीत्, लृङ् लकार में पुत्रीयिष्यत्। प्राप्त होने पर लेट् लकार में पुत्रीयति, पुत्रीयाति, पुत्रीयिषति, पुत्रीयिषाति। पन्तु ध्यान दें कि वेद में जो शब्द दृष्ट है, उसी के रूप हमें बनाना चाहिये, स्वेच्छा से नहीं।

इन धातुओं का जिस भी लकार में रूप बनाना हो उस लकार के रूप बनाने की विधि उस लकार के प्रकरण में देखिये। हमने प्रत्येक लकार का रूप बनाना अलग अलग प्रकरणों में बताया है।



सप्तदश पाठ

लकारों के अर्थ

लट् लकार

वर्तमाने लट् (३.२.१२३) - प्रारम्भ की हुई क्रिया जब तक समाप्त नहीं होती, तब तक का काल वर्तमानकाल कहलाता है। ऐसे वर्तमानकाल में विद्यमान धातु से लट् लकार होता है। जैसे - पचति - पकाता है। पठति - पढ़ता है। भवति - होता है।

यद्यपि लट् लकार वर्तमानकाल में होता है, तथापि कभी कभी अन्य कालों में भी होने लगता है। अत: हम विस्तार से जानें कि लट् लकार का प्रयोग कब कब किस प्रकार किया जा सकता है।

लट् स्मे (३.२.११८) - परोक्ष अनद्यतन भूतकाल में वर्तमान धातु से स्म शब्द उपपद में रहने पर लट् लकार होता है। जैसे - युधिष्ठिरो यजते स्म। (युधिष्ठिर यज्ञ करते थे।) धर्मेण पाण्डवा युध्यन्ते स्म। (पाण्डव धर्म से युद्ध करते थे।) नलेन पुरा अधीयते स्म - नल पहिले पढ़ते थे।

अपरोक्षे च (३.२.११९) - अपरोक्ष अनद्यतन भूतकाल में वर्तमान धातु से भी 'स्म' शब्द उपपद में रहने पर, लट् लकार होता है। जैसे - गुरु: माम् अध्यापयति स्म (मुझको गुरुजी पढ़ाया करते थे।) पिता माम् ब्रवीति स्म (पिताजी मुझसे बोला करते थे।) मया सह पुत्रो गच्छति स्म। (मेरे साथ पुत्र जाया करता था।)

ननौ पृष्टप्रतिवचने (३.२.१२०) - पृष्टप्रतिवचन अर्थात् 'पूछे जाने पर जो उत्तर दिया जाये' इस अर्थ में, धातु से 'ननु' शब्द उपपद में रहने पर, सामान्य भूतकाल में लट् लकार होता है। जैसे - अकार्षी: कटं देवदत्त ? ननु करोमि भो: (देवदत्त, तूने चटाई बना ली, जी हाँ बनाई है।) यह पृष्टप्रतिवचन हुआ। ननु उपपद में है ही। अत: करोमि में लट् लकार हुआ है।

नन्वोर्विभाषा (३.२.१२१) - पृष्टप्रतिवचन अर्थ में धातु से 'न' अथवा

'नु' शब्द उपपद में रहते, सामान्य भूतकाल में विकल्प से लट् तथा लुङ् लकार होते हैं। जैसे - 'न' उपपद में होने पर - अकार्षीः कटं देवदत्त ? न करोमि भोः / नाकार्षम् (देवदत्त तूने चटाई बना क्या ? नहीं बनाई।)

'नु' उपपद में होने पर - अकार्षीः कटं देवदत्त ? अहं नु करोमि। अहं न्वकार्षम् (देवदत्त तूने चटाई बनाई क्या ? हाँ, मैंने बनाई।)

पुरि लुङ् चास्मे (३.२.१२२) - स्म शब्द रहित पुरा शब्द उपपद में हो, तो अनद्यतन भूतकाल में धातु से लट्, लुङ्, लङ्, लिट् लकार विकल्प से होते हैं। जैसे - यह पहले रथ से गया था - लट् - रथेनायं पुरा याति। लुङ् - रथेनायं पुराऽयासीत्। लङ् - रथेनायं पुराऽयात्। लिट् - रथेनायं पुरा ययौ।

इसी प्रकार - यहाँ छात्र रहते थे - लट् - वसन्तीह पुरा छात्राः। लुङ् - अवात्सुः पुरा छात्राः। लङ् - अवसन् पुरा छात्राः। लिट् - ऊषुः पुरा छात्राः। स्म शब्द उपपद में होने पर केवल लट् लकार होगा - नलेन पुरा अधीयते स्म। नल पहिले पढ़ा करते थे।

यावत्पुरानिपातयोर्लट् (३.३.४) - यावत् और पुरा निपात उपपद में हों, तो भविष्यत् काल में लट् लकार होता है। जैसे - यावद् भुङ्क्ते, पुरा भुङ्क्ते।

विभाषा कदाकर्ह्योः (३.३.५) - कदा और कर्हि शब्द उपपद में हों तो भविष्यत् काल में धातु से विकल्प से लट्, लृट् तथा लुट् लकार होते हैं।

जैसे - कब खायेगा - लट् - कदा भुङ्क्ते। लृट् - कदा भोक्ष्यते। लुट् - कदा भोक्ता। कब खायेगा - लट् - कर्हि भुङ्क्ते। लृट् - कर्हि भोक्ष्यते। लुट् - कर्हि भोक्ता।

किं वृत्ते लिप्सायाम् (३.३.६) - किम् शब्द के किसी भी विभक्ति के रूप उपपद में होने पर, अथवा किम् शब्द से बने हुए कतर, कतम आदि शब्द उपपद में होने पर, लिप्सा अर्थ गम्यमान होने पर, भविष्यत् काल में धातु से विकल्प से लट्, लृट् तथा लुट् लकार होते हैं। जैसे - आप किसको खिलायेंगे - लट् - कं, कतरं, कतमं वा भवान् भोजयति। लृट् - कं, कतरं, कतमं वा भवान् भोजयिष्यति। लुट् - कं, कतरं, कतमं वा भवान् भोजयिता।

लिप्स्यमानसिद्धौ च (३.३.७) - लिप्स्यमान अर्थात् चाहे जाते हुए अभीष्ट पदार्थ से सिद्धि गम्यमान हो तो भविष्यत् काल में धातु से विकल्प से लट्, लृट् तथा लुट् लकार होते हैं। जैसे - जो भात देगा वह स्वर्ग जायेगा। लट् - यो भक्तं ददाति स स्वर्गं गच्छति। लृट् - यो भक्तं दास्यति स स्वर्गं

गमिष्यति। लुट् - यो भक्तं दाता स स्वर्गं गन्ता।

लोडर्थ लक्षणे च (३.३.८) - करो, करो, ऐसा प्रेरित करना लोट् लकार का अर्थ है। इस अर्थ में वर्तमान धातु से भविष्यत् काल में विकल्प से लट्, ऌट् तथा लुट् लकार होते हैं।

जैसे - यदि उपाध्याय जी आ जायेंगे, तो तुम छन्द तथा व्याकरण पढ़ना।

लट् - उपाध्यायश्चेद् आगच्छति, अथ त्वं छन्दोऽधीष्व, व्याकरणमधीष्व।

ऌट् - उपाध्यायश्चेद् आगमिष्यति , अथ त्वं छन्दोऽधीष्व, व्याकरणमधीष्व।

लुट् - उपाध्यायश्चेद् आगन्ता, अथ त्वं छन्दोऽधीष्व, व्याकरणमधीष्व।

यहाँ लोडर्थ 'अधीष्व' है। वह आगमन क्रिया से लक्षित हो रहा है। अत: गम् धातु से लट्, ऌट्, लुट् लकार हुए हैं।

वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा (३.३.१३१) - यद्यपि लट् लकार वर्तमानकाल में होता है, तथापि वर्तमानकाल के बिल्कुल समीप जो भूतकाल हो, अथवा वर्तमानकाल के बिल्कुल समीप जो भविष्यत् काल हो, उनमें भी लट् लकार का प्रयोग, विकल्प से किया जा सकता है। जैसे -

वर्तमान के समीपवर्ती भूतकाल में लट् लकार का प्रयोग - देवदत्त, कदा आगतोऽसि ? अयम् आगच्छामि। (देवदत्त, कब आये हो ? बस आ ही तो रहा हूँ।) / विकल्प से लुङ् लकार का प्रयोग भी किया जा सकता है। देवदत्त, कदा आगतोऽसि ? अयम् आगमम्।

वर्तमान के समीपवर्ती भविष्यत्काल में लट् लकार का प्रयोग - देवदत्त, कदा गमिष्यसि ? अयम् गच्छामि। (देवदत्त, कब जाओगे ? बस जा ही तो रहा हूँ।) विकल्प से ऌट्, लुट् लकारों का प्रयोग भी किया जा सकता है। देवदत्त, कदा गमिष्यसि ? अयम् गमिष्यामि / अयम् गन्तास्मि।

विशेष - जिज्ञासु पाठक अष्टाध्यायी देखें। इसमें वर्तमाने लट् (३.२.१२३) से उणादयो बहुलम् (३.३.१) सूत्र तक केवल लट् ही नहीं, अपितु शतृ, शानच् आदि अनेक प्रत्यय कहे गये हैं। यह भी कहा गया है कि ये सारे प्रत्यय वर्तमान काल में ही होते हैं।

किन्तु यदि वर्तमानकाल के समीप का भूतकाल हो, अथवा वर्तमानकाल के समीप का भविष्यत्काल हो, तो उसमें इन सूत्रों में कहे हुए वर्तमानकाल के शतृ, शानच् आदि सारे प्रत्यय भी विकल्प से हो सकते हैं, यह जानना चाहिये।

जैसे - देवदत्त, कदा आगतोऽसि ? आगच्छन्तम् एव मां विद्धि / एष आगतवान्। देवदत्त, कदा गमिष्यसि ? गच्छन्तम् एव मां विद्धि / एष गमिष्यामि।

गर्हायां लडपिजात्वोः (३.३.१४२) - यदि निन्दा अर्थ गम्यमान हो, तो 'अपि' तथा 'जातु' उपपद में रहने पर धातु से लट् प्रत्यय होता है।

जैसे - क्या आप मांस खाते हैं, आपने मांस खाया था, या आप मांस खायेंगे, यह बड़ा ही निन्दित कर्म है। इन तीनों लकारों के लिये लट् लकार का ही प्रयोग होगा। अपि तत्रभवान् मांसं खादति, गर्हितम् एतत्।

इसी प्रकार जातु के योग में भी जानें - जातु तत्रभवान् मांसं खादति, गर्हितम् एतत्।

लिट् लकार

परोक्षे लिट् (३.२.११५) - परोक्ष का अर्थ होता है अक्ष्णः परः। जो काल हमारी इन्द्रियों से न देखा गया हो ऐसे भूतकाल में वर्तमान धातु से, लिट् लकार होता है। जैसे - चकार कटं देवदत्तः (देवदत्त ने चटाई बनाई।)

प्रश्ने चासन्नकाले (३.२.११७) - आसन्नकाल का अर्थ होता है समीप का काल। ऐसे समीप के अनद्यतन परोक्ष भूतकाल के विषय में, यदि प्रश्न किया जाये, तो धातु से लङ् तथा लिट् लकार विकल्प से होते हैं।

जैसे - देवदत्त अभी गया क्या ? किम् देवदत्तोऽगच्छत् ? किम् देवदत्तो जगाम ?

छन्दसि लिट् (३.२.१०५) - वेदविषय में सामान्य भूतकाल में धातुमात्र से लिट् प्रत्यय होता है। जैसे - अहं सूर्यमुभयतो ददर्श।

छन्दसि लुङ्लङ्लिटः (३.४.६) - वेदविषय में धात्वर्थ सम्बन्ध होने पर विकल्प से लुङ्, लङ्, तथा लिट् प्रत्यय होते हैं। जैसे -

दवो देवेभिरागमत्। यहाँ वर्तमानकाल में लुङ् लकार हुआ है।

शकलाङ्गुष्ठोऽकरत्। यहाँ वर्तमानकाल में लुङ् लकार हुआ है।

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः। यहाँ वर्तमानकाल में लङ् लकार हुआ है। अहन्नहिमन्वपस्ततर्द। यहाँ वर्तमानकाल में लिट् लकार हुआ है।

त्वष्टाऽस्मै वज्रं स्वर्य्यं ततक्ष। यहाँ वर्तमानकाल में लिट् लकार हुआ है। पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति। यहाँ वर्तमानकाल में लिट् लकार हुआ है। स दाधार पृथिवीम्। यहाँ वर्तमानकाल में लिट् लकार हुआ है।

लुट् लकार

अनद्यतने लुट् (३.३.१५) - अनद्यतन भविष्यत् काल में धातु से लुट् लकार होता है। (जिस काल में अद्यतन काल शामिल न हो, उसे अनद्यतन काल कहते हैं। बीती हुई रात्रि के अन्तिम प्रहर से लेकर आने वाली रात्रि के प्रथम प्रहर तक का काल अद्यतन काल कहलाता है। यह काल जिसमें सम्मिलित न हो उसे अनद्यतन काल कहते हैं। न विद्यते अद्यतनं यस्मिन्।) जैसे - श्वः कर्ता (कल करेगा।) यह अनद्यतन भविष्यत्काल है।

लृट् लकार

लृट् शेषे च (३.३.१३) - परन्तु यदि इस काल में अद्यतन काल मिल जाये तो ऐसे व्यामिश्र काल में लुट् का प्रयोग नहीं होगा, उसमें लृट् का प्रयोग किया जायेगा। जैसे - अद्य श्वो वा भविष्यति। आज या कल होगा। अतः जानिये कि सामान्य भविष्यत्काल में लृट् लकार का प्रयोग किया जाता है।

अभिज्ञावचने लृट् (३.२.११२) - अभिज्ञावचन अर्थात् स्मृति को कहने वाला कोई शब्द उपपद में हो, तो धातु से अनद्यतन भूतकाल में लृट् लकार होता है। जैसे - अभिजानासि देवदत्त, कश्मीरेषु वत्स्यामः। याद है देवदत्त, कि पहिले कश्मीर में रहे थे।

न यदि (३.२.११३) - यत् शब्द सहित अभिज्ञावचन उपपद में हो, तो धातु से अनद्यतन भूतकाल में लृट् लकार नहीं होता, अतः जो लङ् लकार प्राप्त था, वही हो जाता है। जैसे - अभिजानासि देवदत्त, यत् कश्मीरेषु अवसाम।

विभाषा साकाङ्क्षे (३.२.११४) - अभिज्ञावचन उपपद में हो, तो यत् शब्द का प्रयोग हो या न हो, धातु से अनद्यतन भूतकाल में लृट् लकार विकल्प से होता है, यदि प्रयोक्ता साकाङ्क्ष हो तो। जैसे - अभिजानासि देवदत्त, यत् कश्मीरेषु वत्स्यामः, तत्र ओदनं भोक्ष्यामहे। अभिजानासि देवदत्त; यत् मगधेषु वत्स्यामः, तत्र सक्तून् पास्यामः।

क्षिप्रवचने लृट् (३.३.१३३) - शीघ्रवाची शब्द उपपद में होने पर धातु से अनद्यतन भूतकाल में लृट् लकार होता है। जैसे - उपाध्यायश्चेद् क्षिप्रं त्वरितं आशु शीघ्रं वा आगमिष्यति, क्षिप्रं त्वरितं आशु शीघ्रं वा व्याकरणम् अध्येष्यामहे।

किंवृत्ते लिङ्लृटौ (३.३.१४४) - किंवृत्त का अर्थ होता है किम् से बने हुए शब्द। अतः किम् शब्द के किसी भी विभक्ति के रूप अथवा किम् शब्द से

बने हुए कतर, कतम शब्द उपपद में होने पर, गर्हा अर्थ गम्यमान होने पर धातु से लिङ् तथा लृट् लकार होते हैं। जैसे - को नाम यो विद्यां निन्देत्, को नाम यो विद्यां निन्दिष्यति। कतरो विद्यां निन्देत्, कतरो विद्यां निन्दिष्यति।

लृट् के उदाहरण लृट् लकार में देखें।

अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिंवृत्तेऽपि (३.३.१४५) - अनवक्लृप्ति अर्थात् असम्भावना, अमर्ष अर्थात् सहन न करना, ये अर्थ गम्यमान हों, तो किंवृत्त शब्द उपपद में हों, या किंवृत्त शब्द उपपद में न हों, तो भी धातु से काल सामान्य में, सब लकारों के अपवाद लिङ् तथा लृट् लकार होते हैं। जैसे -

अनवक्लृप्ति अर्थ में - नावकल्पयामि, न सम्भावयामि, न श्रद्दधे, तत्रभवान् नाम मांसं भुञ्जीत। मैं सोच भी नहीं सकता, कि आप मांस खाते हैं। **अमर्ष अर्थ में** - न मर्षयामि तत्रभवान् विद्यां निन्देत्। मैं सहन नहीं कर सकता कि आप विद्या की निन्दा करते हैं।

किंकिलास्त्यर्थेषु लृट् (३.३.१४६) - अनवक्लृप्ति अर्थात् असम्भावना, अमर्ष अर्थात् सहन न करना, ये अर्थ गम्यमान हों, तो किंकिल तथा अस्ति अर्थ वाले पदों के उपपद रहते धातु से लृट् लकार होता है। जैसे - अस्ति, भवति, विद्यते, ये सब अस्त्यर्थक पद हैं। किंकिल यह क्रोध का द्योतन करने वाला शब्द है।

किंकिल के उपपद में रहने पर - न संभावयामि, किंकिल भवान् धान्यं न दास्यति। मैं सोच भी नहीं सकता कि आप धान्य नहीं देंगे।

न मर्षयामि, किंकिल भवान् धान्यं न दास्यति। मैं सहन नहीं कर सकता कि आप धान्य नहीं देंगे।

अस्ति, विद्यते, भवति आदि के उपपद में रहने पर - न संभावयामि, अस्ति भवान् मां त्यक्ष्यति। मैं सोच भी नहीं सकता कि आप मुझे छोड़ देंगे। न संभावयामि, विद्यते भवान् मां त्यक्ष्यति। मैं सोच भी नहीं सकता कि आप मुझे छोड़ देंगे / न संभावयामि, भवति भवान् मां त्यक्ष्यति। मैं सोच भी नहीं सकता कि आप मुझे छोड़ देंगे। इसी प्रकार 'मर्षयामि' का प्रयोग करें।

शेषे लृडयदौ (३.३.१५१) - 'यदि' शब्द का प्रयोग न हो और 'यच्च' 'यत्र' से भिन्न शब्द उपपद में हो तो चित्रीकरण अर्थात् आश्चर्य अर्थ गम्यमान होने पर, धातु से लृट् लकार होता है। जैसे - अन्धो नाम मार्गे क्षिप्रं यास्यति, बधिरो नाम व्याकरणं पठिष्यति, आश्चर्यमेतत्।

लेट् लकार

लिङर्थे लेट् (३.४.७) - वेदविषय में लिङ् के अर्थ में धातु से विकल्प से लेट् लकार होता है। जैसे - जोषिषत्, तारिषत्, मन्दिषत्।

उपसंवादाशङ्कयोश्च (३.४.८) - उपसंवाद तथा आशङ्का गम्यमान हों, तो भी धातु से वेदविषय में लेट् प्रत्यय होता है। जैसे -

उपसंवाद - निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा। तू मुझे क्रेतव्य वस्तु दे, तो मैं भी तुझे दूँ।

आशङ्का - नेज्जिह्मायन्तो नरकं पताम। कुटिल आचरण करते हुए कहीं हम नरक में न जा गिरें।

लोट् लकार

लोट् च (३.३.१६२) - विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, अधीष्ट, संप्रश्न तथा प्रार्थना, ये विधिलिङ् लकार के अर्थ हैं। इन्हीं अर्थों में लोट् लकार का भी प्रयोग किया जा सकता है।

विधि - विधि का अर्थ है - अपने से छोटे किसी व्यक्ति को काम से लगाना। जैसे - स्वामी सेवक से कहता है - वस्त्रं क्षालयेः - कपड़े धो दो।

निमन्त्रण - श्राद्ध आदि में दौहित्र (नाती) आदि को भोजन के लिए बुलाना। इह श्राद्धे भवान् भुञ्जीत।

आमन्त्रण - जहाँ कार्य को करना या न करना, करने वाले की इच्छा पर छोड़ दिया जाये, उस कामाचारानुज्ञा को आमन्त्रण कहते है। यथा - इह भवान् भुञ्जीत - आप यहाँ भोजन करें। करें या न करें, यह आपकी इच्छा।

अधीष्ट - सत्कार पूर्वक व्यापार को अधीष्ट कहते हैं। जैसे - मेरे बच्चे को आप पढ़ा दीजियेगा। भवान् माणवकम् अध्यापयेद्।

संप्रश्न - इस प्रकार का काम करें या न करें, ऐसे विचार को संप्रश्न कहते हैं। क्यों भाई, क्या मैं व्याकरण पढ़ूँ ? किं नु खलु भोः व्याकरणमधीयीय?

प्रार्थन - प्रार्थन, याच्ञा (माँगना) को कहते हैं। भवान् मे अन्नं दद्यात्। (वस्तुतः जब भी किसी को, किसी काम में लगाया जाये, तो उसे प्रवर्तना कहते हैं। ये विधि आदि सब प्रवर्तना के ही भेद हैं।)

इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ (३.३.१५७) - इच्छार्थक धातुओं के उपपद रहने पर, धातुओं से लिङ्, लोट्, लकार होते हैं। जैसे - मै चाहता हूँ कि आप भोजन

कर लें - इच्छामि भुञ्जीत भवान् / इच्छामि भुङ्क्तां भवान्।

आशिषि लिङ्लोटौ (३.३.१७३) - आशी: का अर्थ होता है - अप्राप्त को पाने की इच्छा, न कि आशीर्वाद देना। इस अर्थ में लिङ् तथा लोट् लकारों का प्रयोग होता है। यथा - लोट् - चिरं जीवतु भवान्। लिङ् - आयुष्यं भूयात्। चिरं जीव्याद् भवान् / शत्रु: म्रियात्।

क्रियासमभिहारे लोट् लोटो हिस्वौ वा च तध्वमो: (३.४.२) - यदि कोई क्रिया बार बार हो या बहुत अधिक हो, तो उस धातु से लोट् लकार हो जाता है और उस लोट् के स्थान पर सब कालों, तथा सब पुरुषों में, हि तथा स्व प्रत्यय ही होते हैं। ध्यान रहे कि यदि धातु परस्मैपदी है तो 'हि' प्रत्यय होता है और यदि धातु आत्मनेपदी है तो 'स्व' प्रत्यय होता है। जैसे -

वर्तमान विषय में -

लुनीहि लुनीहि इत्येवायं लुनाति। वह बार बार काटता है।

लुनीहि लुनीहि इतीमौ लुनीत:। वे दोनों बार बार काटते हैं।

लुनीहि लुनीहि इत्येवाहं लुनामि। मैं बार बार काटता हूँ।

लुनीहि लुनीहि इति त्वं लुनासि। तुम बार बार काटते हो।

इसी प्रकार सब पुरुष, सब वचनों में जानिये।

भूत विषय में -

लुनीहि लुनीहि इति भवान् अलावीत्। आपने बार बार काटा।

लुनीहि लुनीहि इति भवन्तौ अलाविष्टाम्। आप दोनों ने बार बार काटा।

लुनीहि लुनीहि इति अहं अलाविषम्। मैंने बार बार काटा।

लुनीहि लुनीहि इति त्वं अलाविष्ठा:। मैंने बार बार काटा।

इसी प्रकार सब पुरुष, सब वचनों में जानिये।

भविष्यद् विषय में -

लुनीहि लुनीहि इति भवान् लविष्यति। वह आप बार बार काटेंगे।

लुनीहि लुनीहि इति भवन्तौ लविष्यत:। आप दोनों बार बार काटेंगे।

लुनीहि लुनीहि इति वयं लविष्याम:। हम सब बार बार काटेंगे, आदि। इसी प्रकार सब पुरुष, सब वचनों में जानिये।

यदि बहुवचन है, तो 'हि' के स्थान पर 'त' प्रत्यय भी विकल्प से

हो सकता है तथा पक्ष में 'हि' ही रहता है।

लुनीत लुनीत इति इमे लुनन्ति। वे सब बार बार काटते हैं।
लुनीत लुनीत इति यूयं लुनीथ। तुम सब बार बार काटते हो।
लुनीत लुनीत इति यूयं अलाविष्ट। तुम सबने बार बार काटा।
लुनीत लुनीत इति वयं अलाविषम्। हम सबने बार बार काटा।
लुनीत लुनीत इति भवन्तः अलाविषुः। आप सबने बार बार काटा।

आत्मनेपद में 'स्व' प्रत्यय लगाइये -

वर्तमान विषय में -

अधीष्व अधीष्व इत्येवायं अधीते। वह बार बार पढ़ता है।
अधीष्व अधीष्व इतीमौ अधीयाते। वे दोनों बार बार पढ़ते हैं।
अधीष्व अधीष्व इत्येवाहं अधीये। मैं बार बार पढ़ता हूँ।
अधीष्व अधीष्व इति त्वं अधीषे। तुम बार बार पढ़ते हो।
इसी प्रकार सब पुरुष, सब वचनों, सब कालों में जानिये।

यदि बहुवचन है, तो ध्वम् प्रत्यय भी विकल्प से हो सकता हैं तथा पक्ष में स्व ही रहता है।

अधीध्वम् अधीध्वम् इति इमे अधीयते। वे सब बार बार पढ़ते हैं।
अधीध्वम् अधीध्वम् इति यूयं अधीध्वे। तुम सब बार बार पढ़ते हो।
अधीध्वम् अधीध्वम् इति वयं अधीमहे। हम सब बार बार पढ़ते हैं।
अधीध्वम् अधीध्वम् इति भवन्तः अधीयते। आप सब बार बार पढ़ते हैं।

समुच्चयेऽन्यतरस्याम् (३.४.३) - जहाँ अनेक क्रियाओं को कहा जाये, वहाँ क्रियाओं का समुच्चय होता है। ऐसी समुच्चीयमान क्रियाओं को कहने वाले धातु से लोट् लकार के प्रत्यय लगते है और उस लोट् के स्थान में हि तथा स्व आदेश नित्य होते हैं तथा त, ध्वम् के स्थान में विकल्प से हि, स्व आदेश होते हैं तथा पक्ष में त, ध्वम् ही रहते हैं। जैसे -

भ्राष्ट्रमट, मठमट, खदूरमट, स्थाल्यपिधानमट, इत्येवायमटति।
ध्यान रहे कि यहाँ 'हि' प्रत्यय का 'अतो हेः' सूत्र से लोप हो गया है।
छन्दोऽधीष्व, व्याकरणमधीष्व, निरुक्तमधीष्व, इत्येवायमधीते।
क्रियाओं का समुच्चय होने पर अन्य लकार भी हो सकते हैं।

यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन् (३.४.४) - पूर्व में लोट् विधायक

'क्रियासमभिहारे लोट् लोटो हिस्वौ वा च तध्वमोः' सूत्र में यथाविधि अर्थात् जिस धातु से लोट् लकार किया गया हो, उसके बाद उसी धातु का अनुप्रयोग होता है। जैसे - स भवान् लुनीहि लुनीहि इति लुनाति, यहाँ लुनाति का ही अनुप्रयोग होता है, उसके पर्यायवाची 'छिनत्ति' का नहीं।

समुच्चये सामान्यवचनस्य (३.४.५) - समुच्चयेऽन्यतरस्याम् से जहाँ लोट् किया गया है, वहाँ उस धातु का अनुप्रयोग होता है, जिसमें उन सभी धातुओं के अर्थ समाहृत हो जायें।

जैसे - ओदनं भुङ्क्ष्व, सक्तून् पिब, धानाः खाद इत्यभ्यवहरति। ध्यान दें कि 'अभ्यवहरति' क्रिया में खाना, पीना आदि सभी अर्थ समाहृत हो जाते हैं। इसी प्रकार सत्यं वद, अग्निहोत्रं जुहुधि, सत्पुरुषान् सेवस्व इति धर्मं करोति। 'धर्मं करोति' क्रिया में जुहुधि, सेवस्व आदि सभी अर्थ समाहृत हो जाते हैं।

लङ् लकार

अनद्यतने लङ् (३.२.१११) - अनद्यतन भूतकाल में वर्तमान धातु से लङ् लकार होता है। जैसे - अकरोत् , अहरत्। (अनद्यतन का लक्षण ५९७ पृष्ठ पर देखें।)

हशश्वतोर्लङ् च (३.२.११६) - ह, शश्वत् ये शब्द उपपद में हों, तो धातु से अनद्यतन भूतकाल में लङ् लकार होता है। जैसे - इति ह अकरोत् , इति ह चकार। शश्वदकरोत् , शश्वत् चकार।

प्रश्ने चासन्नकाले (३.२.११७) - आसन्नकाल का अर्थ होता है समीप का काल। ऐसे समीप के अनद्यतन परोक्ष भूतकाल के विषय में, यदि प्रश्न किया जाये, तो धातु से लङ् तथा लिट् लकार विकल्प से होते हैं। जैसे - देवदत्त अभी गया क्या ? किम् देवदत्तोऽगच्छत् ? किम् देवदत्तो जगाम ?

पुरि लुङ् चास्मे (३.२.१२२) - स्म शब्द रहित पुरा शब्द उपपद में हो, तो अनद्यतन भूतकाल में धातु से लट्, लुङ्, लङ्, लिट् लकार विकल्प से होते हैं। जैसे - यह पहले रथ से गया था - लट् - रथेनायं पुरा याति। लुङ् - रथेनायं पुराऽयासीत्। लङ् - रथेनायं पुराऽयात्। लिट् - रथेनायं पुरा ययौ।

इसी प्रकार - यहाँ छात्र रहते थे - लट् - वसन्तीह पुरा छात्राः। लुङ् - अवात्सुः पुरा छात्राः। लङ् - अवसन् पुरा छात्राः। लिट् - ऊषुः पुरा छात्राः।

स्मोत्तरे लङ् च (३.३.१७६) - स्म शब्द उत्तर है जिससे, ऐसे माङ्

शब्द के उपपद रहते धातु से लुङ्, लङ् प्रत्यय होते हैं। जैसे - मा कार्षीत्, मा हार्षीत्। मा स्म करोत्, मा स्म हरत्।

छन्दसि लुङ्लङ्लिटः (३.४.६) - वेदविषय में धात्वर्थ सम्बन्ध होने पर विकल्प से लुङ्, लङ्, तथा लिट् प्रत्यय होते हैं। जैसे -

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः। यहाँ वर्तमानकाल में लङ् लकार हुआ है। अहन्नहिमन्वपस्ततर्द। यहाँ वर्तमानकाल में लिट् लकार हुआ है।

दवो देवेभिरागमत्। यहाँ वर्तमानकाल में लुङ् लकार हुआ है।

लिङ् लकार

विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् (३.३.१६१) - विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, अधीष्ट, संप्रश्न तथा प्रार्थना, इतने अर्थों में लिङ् लकार का प्रयोग होता है। ये अर्थ इस प्रकार हैं -

विधि - विधि का अर्थ है - अपने से छोटे किसी व्यक्ति को काम से लगाना। जैसे - स्वामी सेवक से कहता है - वस्त्रं क्षालयेः - कपड़े धो दो।

निमन्त्रण - श्राद्ध आदि में दौहित्र (नाती) आदि को भोजन के लिए बुलाना। इह श्राद्धे भवान् भुञ्जीत।

आमन्त्रण - जहाँ कार्य को करना या न करना, करने वाले की इच्छा पर छोड़ दिया जाये, उस कामाचारानुज्ञा को आमन्त्रण कहते है। यथा - इह भवान् भुञ्जीत - आप यहाँ भोजन करें। करें या न करें, यह आपकी इच्छा।

अधीष्ट - सत्कार पूर्वक व्यापार को अधीष्ट कहते हैं। जैसे - मेरे बच्चे को आप पढ़ा दीजियेगा। भवान् माणवकम् अध्यापयेद्।

संप्रश्न - इस प्रकार का काम करें या न करें, ऐसे विचार को संप्रश्न कहते हैं। क्यों भाई, क्या मैं व्याकरण पढ़ूँ ? किं नु खलु भोः व्याकरणमधीयीय?

प्रार्थन - प्रार्थन, याच्आ (माँगना) को कहते हैं। भवान् मे अन्नं दद्यात्। वस्तुतः जब भी किसी को, किसी काम में लगाया जाये तो उसे प्रवर्तना कहते हैं। ये विधि आदि सब प्रवर्तना के ही भेद हैं। उस प्रवर्तना अर्थ में लिङ् लकार होता है, यह समझना चाहिये। (प्रवर्तनायां लिङ्।)

लिङ् चौर्ध्वमौहूर्त्तिके (३.३.१६४) - प्रैष, अतिसर्ग तथा प्राप्तकाल अर्थ अर्थ गम्यमान हो, तो मुहूर्त भर से ऊपर के काल को कहने में धातु से लिङ् लकार होता है। जैसे - मुहूर्तस्य पश्चाद् भवान् ग्रामं गच्छेद् (मुहूर्त भर के पश्चाद् आप गाँव को जावें।)

लिङ्चोर्ध्वमौहूर्तिके (३.३.९) - मुहूर्त = दो घड़ी से ऊपर के भविष्यत् काल को कहना हो, तो लोट् लकार के अर्थ में वर्तमान धातु से विकल्प से लट्, लृट्, लुट् तथा लिङ् लकार होते हैं। जैसे - मुहूर्तस्य पश्चाद् उपाध्यायश्चेद् आगच्छेत्, आगच्छति, आगमिष्यति, आगन्ता वा, अथ त्वं छन्दोऽधीष्व, व्याकरणमधीष्व।

आशंसावचने लिङ् (३.३.१३४) - आशंसावाची शब्द उपपद में हो, तो धातु से लिङ् लकार होता है। जैसे - उपाध्यायश्चेदाऽऽगच्छेत्, आशंसे अवकल्पये वा युक्तोऽधीयीय, (उपाध्याय जी यदि आ जायेंगे तो आशा है कि लगकर पढ़ेंगे।)

विभाषा कथमि लिङ् च (३.३.१४३) - गर्हा गम्यमान हो, तो कथम् शब्द उपपद रहते विकल्प करके लिङ् लकार होता है तथा चकार से लट् लकार भी होता है। जैसे - कथं भवान् ब्राह्मणं क्रोशेत्, (कैसे आप ब्राह्मण को डाँटेंगे।)

किंवृत्ते लिङ्लृटौ (३.३.१४४) - किंवृत्त का अर्थ होता है किम् से बने हुए शब्द। अतः किम् शब्द के किसी भी विभक्ति के रूप अथवा किम् शब्द से बने हुए कतर, कतम शब्द उपपद में होने पर, गर्हा अर्थ गम्यमान होने पर धातु से लिङ् तथा लृट् लकार होते हैं। जैसे - को नाम यो विद्यां निन्देत्, को नाम यो विद्यां निन्दिष्यति। कतरो विद्यां निन्देत्, कतरो विद्यां निन्दिष्यति।

अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिंवृत्तेऽपि (३.३.१४५) - अनवक्लृप्ति अर्थात् असम्भावना, अमर्ष अर्थात् सहन न करना, ये अर्थ गम्यमान हों, तो किंवृत्त शब्द उपपद में हों, या किंवृत्त शब्द उपपद में न हों, तो भी धातु से काल सामान्य में, सब लकारों के अपवाद लिङ् तथा लृट् लकार होते हैं। जैसे -

अनवक्लृप्ति अर्थ में - नावकल्पयामि, न सम्भावयामि, न श्रद्दधे, तत्रभवान् मांसं भुञ्जीत। मैं सोच भी नहीं सकता, कि आप मांस खाते हैं।

अमर्ष अर्थ में - न मर्षयामि तत्रभवान् विद्यां निन्देत्। मैं सहन नहीं कर सकता कि आप विद्या की निन्दा करते हैं।

जातुयदोर्लिङ् (३.३.१४७) - अन्वक्लृप्ति, अमर्ष अभिधेय हों, तो जातु तथा यद् उपपद रहते धातु से लिङ् लकार होता है। जैसे - न संभावयामि जातु भवान् धर्मं त्यजेत् / यद् भवान् धर्मं त्यजेत्, (मैं सोच नहीं सकता कि आप कभी धर्म छोड़ देंगे।)

यच्चयत्रयोः (३.३.१४८) - अन्वक्लृप्ति, अमर्ष गम्यमान हों, तो यच्च तथा यत्र, ये अव्यय उपपद रहते धातु से लिङ् लकार होता है। जैसे - न संभावयामि यच्च भवद्विधोऽनृतं वदेत्, (मैं सोच भी नहीं सकता कि आप जैसे पुरुष भी झूठ बोल देंगे।)

गर्हायाञ्च (३.३.१४९) - गर्हा गम्यमान हो तो यच्च तथा यत्र, ये अव्यय उपपद रहते धातु से लिङ् लकार होता है। जैसे - यच्च भवान् मांसं खादेत्, यत्र भवान् मांसं खादेत्, अहो गर्हितमेतत् (जो आप मांस खाते हैं, यह बड़ी निन्दित बात है।)

चित्रीकरणे च (३.३.१५०) - गर्हा गम्यमान हो तो यच्च तथा यत्र ये अव्यय उपपद रहते धातु से लिङ् लकार होता है। जैसे - यच्च भवान् वेदविद्यां निन्देत्, यत्र भवान् वेदविद्यां निन्देत्, आश्चर्यमेतत् बुद्धिमान् सज्जनोऽपि सन्। (बुद्धिमान् और सज्जन होते हुए भी जो आप वेदविद्या की निन्दा करते हैं, यह आश्चर्य है।)

उताप्योः समर्थयोर्लिङ् (३.३.१५२) - उत, अपि, इन अव्ययों का अर्थ जब 'हाँ' हो, तब धातु से लिङ् लकार होता है। जैसे - उत कुर्यात् (हाँ करे।) अपि कुर्यात् (हाँ करे।) उत पठेत् (हाँ पढ़े।) अपि पठेत् (हाँ पढ़े।)

कामप्रवेदनेऽकच्चिति (३.३.१५३) - अपने अभिप्राय का प्रकाशन गम्यमान हो तो तथा कच्चित् शब्द उपपद में न हो तो धातु से लिङ् लकार होता है। जैसे - कामो मे भुञ्जीत भवान् (मेरी इच्छा है कि आप भोजन करें।) अभिलाषो मे भुञ्जीत भवान् (मेरी इच्छा है कि आप भोजन करें।)

सम्भावनेऽलमिति चेत् सिद्धाप्रयोगे (३.३.१५४) - पर्याप्त विशिष्ट सम्भावना अर्थ में वर्तमान धातु से लिङ् लकार होता है यदि अलम् शब्द का प्रयोग न हो तो। जैसे - अपि पर्वतं शिरसा भिन्द्यात् (यह तो सिर से पर्वत को तोड़ सकता है।) अपि वृक्षं हस्तेन त्रोटयेत् (यह तो हाथ से वृक्ष को तोड़ सकता है।)

विभाषा धातौ सम्भावनवचनेऽयदि (३.३.१५५) - सम्भावन अर्थ को कहने वाला धातु उपपद में हो और यत् शब्द उपपद में न हो, तो सम्भावना अर्थ में वर्तमान धातु से लिङ् लकार विकल्प से होता है, यदि अलम् शब्द का प्रयोग न हो तो। जैसे - सम्भावयामि भुञ्जीत भवान् (मैं सम्भावना करता हूँ

कि आप खायेंगे।) अवकल्पयामि भुञ्जीत भवान् (मैं सम्भावना करता हूँ कि आप खायेंगे।)

सम्भावना भविष्यत् काल की ही होती है, अतः विकल्प से लृट् लकार भी हो सकता है। सम्भावयामि भोक्ष्यते भवान् (मैं सम्भावना करता हूँ कि आप खायेंगे।) अवकल्पयामि भोक्ष्यते भवान् (मैं सम्भावना करता हूँ कि आप खायेंगे।)

हेतुहेतुमतोर्लिङ् (३.३.१५६) - हेतु और हेतुमत् अर्थ में वर्तमान धातु से लिङ् प्रत्यय विकल्प से होता है। जैसे - दक्षिणेन चेद् यायात् न शकटं पर्यभिवेद् (यदि दक्षिण के रास्ते से जाये, तो छकड़ा न पलटे।)

इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ (३.३.१५७) - इच्छार्थक धातुओं के उपपद रहने पर, धातुओं से लिङ्, लोट्, लकार होते हैं। जैसे - मै चाहता हूँ कि आप भोजन कर लें - इच्छामि भुञ्जीत भवान् / इच्छामि भुङ्क्तां भवान्।

लिङ् च (३.३.१५९) - समानकर्तृक इच्छार्थक धातुओं के उपपद रहने पर, धातु से लिङ् लकार होता है। जैसे - भुञ्जीय इति इच्छति (खाऊँ, ऐसा चाहता है।)

इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्तमाने (३.३.१६०) - इच्छार्थक धातुओं से विकल्प से लिङ् लकार होता है। जैसे - इच्छेत् (चाहता है।)

शकि लिङ् च (३.३.१७२) - शक्यार्थक गम्यमान हो, तो धातु से लिङ् लकार होता है तथा चकार से कृत्यसंज्ञक प्रत्यय भी होते हैं। जैसे - भवान् शत्रुं जयेत्। (आप शत्रुओं को जीत सकते हैं।)

आशिषि लिङ्लोटौ (३.३.१७३) - इसका अर्थ लोट् लकार में देखें।

लुङ् लकार

लुङ् (३.२.११०) - सामान्य भूतकाल में वर्तमान धातु से लुङ् लकार होता है। अकार्षीत्, अहार्षीत्।

पुरि लुङ् चास्मे (३.२.१२२) - स्म शब्द रहित पुरा शब्द उपपद में हो, तो अनद्यतन भूतकाल में धातु से लट्, लुङ्, लङ्, लिट् लकार विकल्प से होते हैं। जैसे - यह पहले रथ से गया था - लट् - रथेनायं पुरा याति। लुङ् - रथेनायं पुराऽयासीत्। लङ् - रथेनायं पुराऽयात्। लिट् - रथेनायं पुरा ययौ।

माङि लुङि (३.३.१७५) - माङ् शब्द उपपद हो तो धातु से लुङ्, लिङ्, तथा लोट् प्रत्यय होते हैं। जैसे - मा कार्षीत्, मा हार्षीत्।

स्मोत्तरे लङ् च (३.३.१७६) - स्म शब्द उत्तर है जिससे, ऐसा माङ् शब्द उपपद में रहने पर, धातु से लुङ्, लङ् प्रत्यय होते हैं। जैसे - मा कार्षीत्, मा हार्षीत्। मा स्म करोत् , मा स्म हरत्।

आशंसायाम् भूतवच्च (३.३.१३२) - अप्राप्त पदार्थ को प्राप्त करने की इच्छा को आशंसा कहते हैं। आशंसा भविष्यत् काल की ही होती है। तथापि आशंसा गम्यमान होने पर धातु से भूतकाल के समान, तथा वर्तमानकाल के समान प्रत्यय भी विकल्प से होते हैं। जैसे - उपाध्यायश्चेद् आगमत्, आगतः, आगच्छति वा, वयं व्याकरणमध्यगीष्महि, अधीतवन्तोऽधीमहे वा। पक्षे - उपाध्यायश्चेद् आगमिष्यति, वयं व्याकरणमध्येष्यामहे।

छन्दसि लुङ्लङ्लिटः (३.४.६) - वेदविषय में धात्वर्थ सम्बन्ध होने पर विकल्प से लुङ्, लङ्, तथा लिट् प्रत्यय होते हैं। जैसे - दवो देवेभिरागमत्। यहाँ वर्तमानकाल में लुङ् लकार हुआ है।

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः। यहाँ वर्तमानकाल में लङ् लकार हुआ है। अहन्नहिमन्वपस्ततर्द। यहाँ वर्तमानकाल में लिट् लकार हुआ है।

लृङ् लकार

लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ (३.३.१३९) - भविष्यत् काल में लिङ् का निमित्त होने पर क्रिया की अतिपत्ति अर्थात् उल्लङ्घन अथवा क्रिया का सिद्ध न होना गम्यमान हो तो धातु से लृङ् प्रत्यय होता है। जैसे -

दक्षिणेन चेदागमिष्यत्, न शकटं पर्याभविष्यत्। (यदि दक्षिण से जाओगे तो गाड़ी नहीं पलटेगी।)

यदि मत्समीपमासिष्यत्, भवान् घृतेन अभोक्ष्यत्।(यदि मेरे पास रहोगे तो घी से खाओगे।)

सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् सुमिक्षमभविष्यत्। (यदि अच्छी वृष्टि होगी तो अच्छा अन्न होगा।)

यहाँ दक्षिण से आना, मेरे पास बैठना, अच्छी वृष्टि होना, ये हेतु हैं। छकड़े का न उलटना, घी से खाना, अच्छा अन्न होना, ये हेतुमत् हैं। वह दक्षिण से नहीं आयेगा, अतः छकड़ा टूट जायेगा, यह क्रिया की अतिपत्ति है। अतः लृङ् लकार हुआ है।

भूते च (३.३.१४०) - भूतकाल में लिङ् का निमित्त होने पर क्रिया

की अतिपत्ति = उल्लङ्घन अथवा क्रिया का सिद्धि न होना गम्यमान हो, तो धातु से ऌङ् लकार होता है। जैसे - दृष्टो मया भवत्पुत्रोऽन्नार्थी चङ्क्रम्यमाणः, अपरश्च द्विजो ब्राह्मणार्थी, यदि स तेन दृष्टोऽभविष्यत्, तदा अभोक्ष्यत, न तु भुक्तवान्, अन्येन पथा स गतः।

वोताप्योः (३.३.१४१) - अष्टाध्यायी में इस सूत्र से लेकर उताप्योः समर्थयोर्लिङ् (३.३.१५२) से पहले पहले जितने भी सूत्र हैं उनमें लिङ् का निमित्त होने पर क्रिया की अतिपत्ति = उल्लङ्घन अर्थ में, धातु से विकल्प से भूतकाल में ऌङ् लकार होता है।

इस प्रकार जानिये कि इस सूत्र के द्वारा ३.३.१४२ से ३.३.१५२ तक के सूत्रों में विकल्प से भूतकाल में लृङ् लकार का विधान किया जा रहा है।

जैसे - विभाषा कथमि लिङ् च सूत्र (३.३.१४३) से लिङ् का विधान है। अतः यहाँ भूतकाल अर्थ में भी लृङ् लकार हो सकता है। जैसे - कथं नाम तत्र भवान् ब्राह्मणं क्रोशेत् के स्थान पर कथं नाम तत्र भवान् ब्राह्मणम् अक्रोक्ष्यत्, यह भी बन सकता है। ये सारे सूत्र इस प्रकार हैं -

वोताप्योः ३.३.१४२
विभाषा कथमि लिङ् च ३.३.१४३
किंवृत्ते लिङ्लृटौ ३.३.१४४
अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिंवृत्तेऽपि ३.३.१४५
किंकिलास्त्यर्थेषु लृट् ३.३.१४६
जातुयदोर्लिङ् ३.३.१४७
यच्चयत्रयोः ३.३.१४८
गर्हायाञ्च ३.३.१४९
चित्रीकरणे च ३.३.१५०
शेषे लृडयदौ ३.३.१५१
उताप्योः समथयोर्लिङ् ३.३.१५२

इन सूत्रों से कहे गये प्रयोगों में विकल्प से भूतकाल में लृङ् लकार कीजिये। इन सारे सूत्रों के अर्थ इसी पाठ में पीछे विभिन्न लकारों में दिये जा चुके हैं। उन्हें वहीं देखिये।



अष्टादश पाठ

च्वि, साति, त्रा, डाच् प्रत्ययों के रूप बनाने की विधि

ध्यान रहे कि इस प्रकरण में जो भी च्वि, साति, त्रा, डाच् प्रत्यय बतलाये जा रहे हैं, वे प्रत्यय करोति, भवति, स्यात्, सम्पद्यते आदि क्रियाओं के योग में ही होते हैं। इनका प्रयोग अकेले कभी भी नहीं होता।

हम इन क्रियाओं के प्रथमपुरुष एकवचन के रूप ही उदाहरण में दे रहे हैं। आवश्यकतानुसार इन क्रियाओं का प्रयोग किसी भी पुरुष, वचन, लकार में कर लेना चाहिये।

च्वि प्रत्यय

अभूततद्भावे कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्विः (५.४.५०) -

अभूततद्भाव अर्थात् जो जैसा नहीं है, वह वैसा हो जाये, या वैसा बना दिया जाये, इस अर्थ को कहने के लिये प्रातिपदिकों से 'च्वि' प्रत्यय लगता है, और उसके लगने के बाद जो शब्द बनता है, उससे, करोति, भवति, या स्यात् क्रियाओं का प्रयोग होता है। जैसे - जो सफेद नहीं है, उसे सफेद जैसा करता है, अथवा जो सफेद नहीं है, वह सफेद जैसा हो जाता है, अथवा जो सफेद नहीं है, वह सफेद जैसा हो जाये, यह कहने के लिये हम सफेद अर्थात् शुक्ल शब्द से 'च्वि' प्रत्यय लगा देते हैं। यथा - शुक्ल + च्वि /

'च्वि' प्रत्यय में 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से 'इ' की तथा 'चुटू' सूत्र से 'च्' की इत् संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' सूत्र से दोनों का लोप होकर व् शेष बचता है। शुक्ल + च्वि - शुक्ल + व्।

वेरपृक्तस्य - प्रत्यय में जब अपृक्त अर्थात् अकेला 'व्' बचे, तो उसका भी लोप हो जाता है। अतः प्रत्यय में अकेले बचे हुए इस व् का भी इस सूत्र से लोप कर दीजिये। इस प्रकार च्वि प्रत्यय में सारे वर्णों का लोप होकर कुछ भी शेष नहीं बचता। जब प्रत्यय के सारे वर्णों का लोप होकर कुछ भी शेष

न बचे तो कहना चाहिये कि प्रत्यय का 'सर्वापहारी लोप' हो गया।

अस्य च्वौ - अ को ई होता है, च्वि प्रत्यय परे होने पर।

शुक्ल + च्वि / च्वि प्रत्यय का सर्वापहारी लोप करके शुक्ल / अस्य च्वौ सूत्र से 'अ' को ई बनाकर - शुक्ली। अब च्वि प्रत्यय से बने हुए इस शुक्ली शब्द में करोति, भवति, या स्यात् क्रियाओं को आवश्यकतानुसार लगा लीजिये।

यथा - शुक्लीकरोति, शुक्लीभवति, या शुक्लीस्यात्।

इसका अर्थ इस प्रकार होगा - अशुक्लः शुक्लः सम्पद्यते, तं करोति शुक्लीकरोति = जो सफेद नहीं है, उसे सफेद जैसा करता है। शुक्लीभवति = जो सफेद नहीं है, वह सफेद जैसा हो जाता है। शुक्लीस्यात् = जो सफेद नहीं है, वह सफेद जैसा हो जाये।

इसी प्रकार - अकृष्णः कृष्णः सम्पद्यते, तं करोति कृष्णीकरोति, कृष्णीभवति, कृष्णीस्यात् / अगङ्गा गङ्गा सम्पद्यते, तां करोति गङ्गीकरोति, गङ्गीभवति, गङ्गीस्यात् / अदूरं दूरं सम्पद्यते, तं करोति दूरीकरोति, दूरीभवति, दूरीस्यात् / अमित्रं मित्रं सम्पद्यते, तं करोति मित्रीकरोति, मित्रीभवति, मित्रीस्यात् आदि।

इसी प्रकार सारे अकारान्त, आकारान्त प्रातिपदिकों से 'च्वि' प्रत्यय लगाइये।

इसके अपवाद - अव्ययस्य च्वौ ईत्वं नेति वाच्यम् -

यदि अकारान्त, या आकारान्त प्रातिपदिक अव्यय हों, तो अनके अ, आ को 'ई' नहीं होता, च्वि प्रत्यय परे होने पर।

दोषा, यह आकारान्त शब्द अव्यय है। इसका अर्थ रात है।

दिवा, यह आकारान्त शब्द अव्यय है। इसका अर्थ दिन है।

ऐसे अव्ययों के अ, आ को च्वि प्रत्यय परे होने पर ई नहीं होता। यथा - अदोषा दोषा भवति दोषाभवति। दिन, रात नहीं है, पर रात जैसा हो रहा है। यहाँ दोषा (रात) शब्द 'अव्यय' है, अतः इसके 'आ' को 'ई' नहीं हुआ है।

इसी प्रकार - अदिवा दिवा भवति दिवाभवति। रात, दिन नहीं है, पर दिन जैसी हो रही है। यहाँ दिवा (दिन) शब्द 'अव्यय' है, अतः इसके 'आ' को 'ई' नहीं हुआ है।

इकारान्त, उकारान्त प्रातिपदिक -

च्वौ च - च्वि प्रत्यय परे होने पर इकार, उकार को दीर्घ हो जाता है। यथा -

अशुचिः शुचिः सम्पद्यते, तं करोति शुचीकरोति, शुचीभवति, शुचीस्यात् / अगुरुः गुरुः सम्पद्यते, तं करोति गुरूकरोति, गुरूभवति, गुरूस्यात् / अपटुः पटुः सम्पद्यते, तं करोति पटूकरोति, पटूभवति, पटूस्यात् / अबन्धुः बन्धुः सम्पद्यते, तं करोति बन्धूकरोति, बन्धूभवति, बन्धूस्यात् आदि।

ऋकारान्त प्रातिपदिक - रीङ् ऋतः -

च्वि प्रत्यय परे होने पर ऋकार को रीङ = री, हो जाता है। यथा मातृ + च्वि - मात् री - मात्री - मात्रीकरोति / अमाता माता सम्पद्यते, तां करोति मात्रीकरोति, मात्रीभवति, मात्रीस्यात् / अभ्राता भ्राता सम्पद्यते, तं करोति भ्रात्रीकरोति, भ्रात्रीभवति, भ्रात्रीस्यात् / आदि।

नकारान्त प्रातिपदिक - नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य -

प्रातिपदिक संज्ञक जो पद, उसके नकार का लोप होता है। यथा ब्रह्मन् + च्वि - न् का लोप करके ब्रह्म / अस्य च्वौ से अ को ई करके - ब्रह्मी - ब्रह्मीकरोति / अब्रह्म ब्रह्म सम्पद्यते, तत् करोति ब्रह्मीकरोति, ब्रह्मीभवति, ब्रह्मीस्यात् / इसी प्रकार - अराजा राजा सम्पद्यते, तं करोति राजीकरोति, राजीभवति, राजीस्यात् / आदि।

सकारान्त प्रातिपदिक - अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसां लोपश्च -

इन शब्दों के स् का लोप होता है च्वि प्रत्यय परे होने पर। यथा - अरुस् + च्वि / च्वि का लोप होकर - अरुस् / स् का लोप होकर - अरु / च्वौ च से उ को दीर्घ होकर - अरू - अरूकरोति, अरूभवति, अरूस्यात्। जो लाल खदिर नहीं है, उसे लाल खदिर बनाता है। इसी प्रकार -

उन्मनस् + च्वि / च्वि का लोप होकर -, उन्मनस् / स् का लोप होकर - उन्मन / अस्य च्वौ से अ को ई होकर - उन्मनी - उन्मनीकरोति, उन्मनीभवति, उन्मनीस्यात्। जो उदास नहीं है, उसे उदास बनाता है।

उच्चक्षुस् + च्वि / च्वि का लोप होकर - उच्चक्षुस् / स् का लोप होकर - उच्चक्षु / च्वौ च से उ को दीर्घ होकर - उच्चक्षू - उच्चक्षूकरोति, उच्चक्षूभवति, उच्चक्षूस्यात्। जो जागता नहीं है, उसे जगाता है।

विचेतस् + च्वि / च्वि का लोप होकर - विचेतस् / स् का लोप होकर

– विचेत / अस्य च्वौ से अ को ई होकर – विचेती – विचेतीकरोति, विचेतीभवति, विचेतीस्यात्। जिसे चेतना नहीं है, उसे चेताता है।

विरहस् + च्वि / च्वि का लोप होकर – विरहस् / स् का लोप होकर – विरह / अस्य च्वौ से अ को ई होकर – विरही – विरहीकरोति, विरहीभवति, विरहीस्यात्। जिसे एकान्त नहीं है, उसे एकान्त में स्थित करता है।

विरजस् + च्वि / च्वि का लोप होकर – विरजस् / स् का लोप होकर – विरज / अस्य च्वौ से अ को ई होकर – विरजी – विरजीकरोति, विरजीभवति, विरजीस्यात्। जिसे रजोगुण नहीं है, उसे रजोगुण से युक्त करता है।

क्यच्च्योश्च – हल् से परे अपत्यार्थक तद्धित प्रत्यय हो, तो उस अपत्यार्थक तद्धित प्रत्यय का लोप होता है, च्वि प्रत्यय परे होने पर। यथा – गार्ग्य + च्वि / अपत्यार्थक तद्धित प्रत्यय 'य' का लोप करके तथा च्वि का सर्वापहारी लोप करके – गार्ग / अस्य च्वौ से अ को ई होकर – गार्गीकरोति, गार्गीभवति, गार्गीस्यात्।

साति प्रत्यय

ध्यान दें कि साति प्रत्यय में 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से 'इ' की इत् संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' सूत्र उसका लोप होकर सात् शेष बचता है।

विभाषा सति कात्स्न्र्ये – कात्स्न्र्य का अर्थ है सम्पूर्णता। यदि कोई वस्तु सम्पूर्ण रूप से कुछ अन्य बन जाये, तव साति और च्वि प्रत्यय विकल्प से होते हैं। जैसे – सारा नमक पानी बन जाता है – उदकसात्भवति लवणम्। अथवा च्वि प्रत्यय होने पर – उदकीभवति लवणम्।

सारा लोहा अग्नि बन जाता है – साति प्रत्यय होने पर – अग्निसात्भवति लौहम्। च्वि प्रत्यय होने पर – अग्नीभवति लौहम्।

अभिविधौ सम्पदा च – अभिव्याप्ति अर्थ गम्यमान होने पर, साति तथा च्वि प्रत्यय होते हैं। किन्तु साति प्रत्यय होने पर करोति, भवति, स्यात् तथा सम्पद्यते इन चार का प्रयोग होता है तथा च्वि प्रत्यय के योग में केवल करोति, भवति, स्यात्, इन तीन का ही प्रयोग होता है। यथा – साति प्रत्यय के योग में – शस्त्रम् अग्निसात्भवति, अग्निसात्सम्पद्यते / लवणम् जलसात्भवति, जलसात्सम्पद्यते आदि।

च्वि प्रत्यय के योग में – शस्त्रम् अग्नीभवति / लवणम् जलीभवति।

(सर्वथा अन्यथाभाव हो जाना कात्स्र्न्य है। जैसे - पूरा का पूरा नमक पानी बन जाता है। थोड़ा थोड़ा अन्यथाभाव हो जाना अभिविधि है। जैसे - जितना भी नमक है, वह वर्षा में गीला हो जाता है।)

ध्यान दें कि यहाँ तक अभूततद्भाव अर्थ था। यहाँ से आगे अभूततद्भाव (जो जैसा नहीं है, वह वैसा हो जाये, या वैसा बना दिया जाये) यह अर्थ नहीं लगेगा।

तदधीनवचने - 'किसी के अधीन हो जाना', ऐसा अर्थ गम्यमान होने पर, साति प्रत्यय होता है और उसके साथ करोति, भवति, स्यात् तथा सम्पद्यते इन चार का प्रयोग होता है। राजाधीनं करोति = राजसात्करोति, राजसात्भवति, राजसात्स्यात्, राजसात्सम्पद्यते आदि। राजा के अधीन करता है और राजा उसका स्वामी होता है।

ब्राह्मणाधीनं करोति = ब्राह्मणसात्करोति, ब्राह्मणसात्भवति,

ब्राह्मणसात्स्यात्, ब्राह्मणसात्सम्पद्यते आदि। ब्राह्मण के अधीन करता है और ब्राह्मण उसका स्वामी होता है।

त्रा प्रत्यय

देये त्रा च - देने के योग्य वस्तु देय कहलाती है। जब कोई वस्तु किसी को दे दी जाये, तब साति तथा त्रा प्रत्यय विकल्प से होते हैं, और उनके साथ करोति, भवति, स्यात् तथा सम्पद्यते इन चार का प्रयोग होता है।

ब्राह्मणाधीनं देयं करोति = ब्राह्मणसात्करोति, ब्राह्मणसात्भवति, ब्राह्मणसात्स्यात्, ब्राह्मणसात्सम्पद्यते आदि।

ब्राह्मणाधीनं देयं करोति = ब्राह्मणत्रा करोति, ब्राह्मणत्रा भवति, ब्राह्मणत्रा स्यात्, ब्राह्मणत्रा सम्पद्यते आदि।

ब्राह्मण के अधीन करता है और ब्राह्मण उसका स्वामी होता है।

देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो द्वितीयासप्तम्योर्बहुलम् - इन द्वितीयान्त तथा सप्तम्यन्त शब्दों से बहुल करके त्रा प्रत्यय होता है। परन्तु ध्यान दें कि इनके साथ करोति, भवति, स्यात् तथा सम्पद्यते का प्रयोग नहीं होता। यथा -

देवान् गच्छति = देवत्रा गच्छति / देवेषु वसति = देवत्रा वसति।

(देवताओं की ओर जाता है / देवताओं में बसता है।) इसी प्रकार - मनुष्यान् गच्छति = मनुष्यत्रा गच्छति / मनुष्येषु वसति = मनुष्यत्रा वसति।

पुरुषान् गच्छति = पुरुषत्रा गच्छति / पुरुषेषु वसति = पुरुषत्रा वसति।
पुरून् गच्छति = पुरुत्रा गच्छति / पुरुषु वसति = पुरुत्रा वसति।
मर्त्यान् गच्छति = मर्त्यत्रा गच्छति / मर्त्येषु वसति = मर्त्यत्रा वसति।

डाच् प्रत्यय

ध्यान दें कि डाच् प्रत्यय में 'चुटू' सूत्र से 'ड्' की तथा हलन्त्यम् सूत्र से 'च्' की इत् संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' सूत्र उनका लोप होकर 'आ' शेष बचता है।

अव्यक्तानुकरणाद् द्व्यजवरार्धादनितौ डाच् -

पानी के गिरने की आवाज, पत्तों के सरकने की आवाज, पत्थर के लुढ़कने की आवाज, खटखटाने की आवाज, आदमी के गिरने की आवाज, आदि ऐसी अनेक प्राकृतिक आवाजें होती हैं, कि जिनमें अकारादि वर्ण व्यक्त नहीं होते हैं। इन आवाजों का अनुकरण करके हम कुछ ध्वनियाँ बना लेते हैं। किसी को हम खट् कहते हैं, किसी को सर् किसी को पट् किसी को धम् आदि।

इन प्राकृतिक आवाजों के अनुकरण से बने हुए शब्द यदि दो अच् वाले हों, तो उनसे डाच् प्रत्यय होता है, और उससे करोति, भवति, स्यात् का प्रयोग होता है।

डाचि द्वे बहुलम् - जिन अनुकरणात्मक ध्वनियों से डाच् प्रत्यय लगाया जाता है, उन्हें डाच् प्रत्यय परे होने पर द्वित्व हो जाता है। जैसे - पटत् + डाच् - पटत् पटत् + डाच् = पटत् पटत् + आ आदि।

तस्य परमाम्रेडितम् - जिस भी पद को द्वित्व होता है, उसमें बाद वाले की आम्रेडितसंज्ञा होती है। अतः बाद वाला पटत् आम्रेडित है, यह जानें।

नित्यमाम्रडिते डाचि - आम्रेडित परे होने पर, पूर्व वाले शब्द के अन्तिम वर्ण को पररूप होता है। पररूप का अर्थ होता है, अपने अगले अक्षर में जाकर मिल जाना। यथा - पटत् पटत् + डाच् = पटपटत् + आ, आदि।

ध्यान दें कि पटपटत् में 'अत्' भाग 'टि' है। अब 'टेः' सूत्र से इसकी 'टि' का लोप करके बना - पटपट् + आ = पटपटा / अब इसमें करोति, भवति, स्यात् का प्रयोग करके - पटपटा करोति, पटपटा भवति, पटपटा स्यात् बनाइये।

इसी प्रकार दमदमा करोति, दमदमा भवति, दमदमा स्यात् / खटखटा करोति, खटखटा भवति, खटखटा स्यात् आदि बनाइये।

कृञो द्वितीयतृतीयशम्बबीजात्कृषौ - द्वितीय, तृतीय, शम्ब, बीज, इन प्रातिपदिकों से कृषि अर्थ में डाच् प्रत्यय होता है और उसके बाद करोति का प्रयोग होता है। द्वितीय + डाच् = द्वितीया करोति - दूसरी बार हल चलाता है।

इसी प्रकार तृतीया करोति - तीसरी बार हल चलाता है।

शम्बाकरोति - अनुलोम हल चलाये हुए खेत में पुनः प्रतिलोम हल चलाता है। बीजाकरोति - बीज बोते हुए हल चलाता है आदि।

संख्यायाश्च गुणान्तायाः - संख्यावाची शब्द हो और उसके अन्त में गुण शब्द हो, तो उससे डाच् प्रत्यय होता है, और उसके बाद करोति का प्रयोग होता है। द्विगुण + डाच् = द्विगुणा करोति - दो बार जुताई करता है।

इसी प्रकार त्रिगुणा करोति - तीन बार जुताई करता है।

शम्बा करोति - अनुलोम हल चलाये हुए खेत में पुनः प्रतिलोम हल चलाता है। बीजा करोति - बीज बोते हुए हल चलाता है आदि।

समयाच्च यापनात् - समय बिताना अर्थ हो, तो 'समय' प्रातिपदिक से डाच् प्रत्यय होता है और उसके बाद करोति का प्रयोग होता है। समय + डाच् = समया करोति - समय बिताता है।

सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने - अतिव्यथन अर्थ हो, तो सपत्र, निष्पत्र इन प्रातिपदिकों से डाच् प्रत्यय होता है और उसके बाद करोति का प्रयोग होता है।

सपत्र + डाच् = सपत्राकरोति मृगं व्याधः - बाण के पुच्छ सहित बाण को मृग के शरीर में घुसाता है।

निष्पत्र + डाच् = निष्पत्राकरोति मृगं व्याधः - बाण के पुच्छ सहित बाण से मृग को ऐसे बींधता है कि पूरा का पूरा बाण मृग के शरीर के उस पार निकल जाता है।

निष्कुलान्निष्कोषणे - निष्कोषण अर्थ हो, तो निष्कुल प्रातिपदिक से डाच् प्रत्यय होता है और उसके बाद करोति का प्रयोग होता है।

निष्कुल + डाच् = निष्कुला करोति पशून् - पशुओं को इस तरह मारता है कि उनके आँत आदि अवयव बाहर निकल आते हैं।

सुखप्रियादानुलोम्ये - आनुलोम्य अर्थ हो, तो सुख और प्रिय प्रातिपदिकों

से डाच् प्रत्यय होता है और उसके बाद करोति का प्रयोग होता है।

सुख + डाच् = सुखा करोति स्वामिनम् - स्वामी के चित्त को सुख पहुँचाता है।

प्रिय + डाच् = प्रिया करोति मातरम् - माता का प्रिय करता है।

दुःखात्प्रातिलोम्ये - प्रातिलोम्य अर्थ हो, तो दुःख प्रातिपदिक से डाच् प्रत्यय होता है और उसके बाद करोति का प्रयोग होता है।

दुःख + डाच् = दुःखा करोति स्वामिनम् - स्वामी के चित्त को दुःख पहुँचाता है।

शूलात्पाके - पाक अर्थ हो, तो शूल प्रातिपदिक से डाच् प्रत्यय होता है और उसके बाद करोति का प्रयोग होता है।

शूल + डाच् = शूला करोति मांसम् - शूल अर्थात् लोहे की सलाई में लगाकर मांस पकाता है।

सत्यादशपथे - अशपथ अर्थ हो, तो सत्य प्रातिपदिक से डाच् प्रत्यय होता है और उसके बाद करोति का प्रयोग होता है।

सत्य + डाच् = सत्या करोति वणिक् भाण्डम् - मुझे बर्तन खरीदना है, ऐसा बनिया सत्य कहता है।

मद्रात् परिवापणे - परिवापण अर्थात् मुण्डन कराना अर्थ हो, तो मद्र (शुभ) प्रातिपदिक से डाच् प्रत्यय होता है और उसके बाद करोति का प्रयोग होता है। मद्र + डाच् = मद्रा करोति शुभ मुण्डन कराता है।



एकोनविंशति पाठ

अष्टाध्यायी पढ़ने की विधि

पाणिनीय अष्टाध्यायी अपने सामने खोलकर रख लें। देखिये कि इसमें आठ अध्यायों में कुल ३९७८ सूत्र हैं। प्रत्येक अध्याय में चार चार पाद हैं। इस प्रकार पूरी अष्टाध्यायी में बत्तीस पाद हैं।

हमें सूत्र का क्रम अध्याय पाद सहित ज्ञात होना चाहिये। जैसे - प्रथम अध्याय के प्रथम पाद का पहिला सूत्र है - वृद्धिरादैच्। इसे हम कहेंगे - १.१.१। १.१.१ का अर्थ है - पहिले अध्याय के पहिले पाद का पहिला सूत्र।

हलन्त्यम् सूत्र को देखिये। इसे हम कहेंगे - १.३.३। १.३.३ का अर्थ है - पहिले अध्याय के तीसरे पाद का तीसरा सूत्र। इस प्रकार अध्याय पाद सहित अष्टाध्यायी के सारे सूत्रों के क्रम को जानना चाहिये। यह क्रम ही अष्टाध्यायी का प्राण है। सूत्रों के अर्थ इस ग्रन्थ 'अष्टाध्यायी सहज बोध' में यत्र तत्र दिये हुए हैं। उन्हें वहाँ से पढ़ लें किन्तु सूत्रों का पाठ 'पाणिनीय अष्टाध्यायी' के क्रम से ही करें। सूत्रों के अर्थ भी 'पाणिनीय अष्टाध्यायी' के क्रम से ही याद करें। इस क्रम से याद करने में यह लाभ होता है कि सूत्रों के अर्थ अपने आप बनते चले जाते हैं, उन्हें रटना नहीं पड़ता।

अष्टाध्यायी में अलग अलग कार्य, अधिकारों तथा प्रकरणों में बँटे हुए हैं। जैसे - द्वित्व करने वाले सूत्र एक साथ बैठे हैं। लोप करने वाले सूत्र एक साथ बैठे हैं। धात्वादेश करने वाले सूत्र एक साथ बैठे हैं। इडागम करने वाले सूत्र एक साथ बैठे हैं। सन्धि करने वाले सूत्र एक साथ बैठे हैं। परस्मैपद, आत्मनेपद बतलाने वाले सूत्र एक साथ बैठे हैं। धातुओं से प्रत्ययों का विधान करने वाले सूत्र एक साथ बैठे हैं, आदि। हमें केवल यह ज्ञान होना चाहिये कि क्या काम करने वाले सूत्र अष्टाध्यायी में कहाँ बैठे हैं ?

हमें जब भी किसी शब्द को बनाना होता है, तो इन इन प्रकरणों से सूत्र आते हैं और शब्द को बना देते हैं। परन्तु वे रहते वहीं के हैं, जहाँ वे

पढ़े गये है, यह बात हमें सर्वथा याद रखना चाहिये।

हमें चूँकि इस ग्रन्थ में सारे धातुओं के रूप, सभी लकारों में बनाना है, अत: हमने इसके लिये अष्टाध्यायी से कारक, समास, तद्धित, स्वर, कृदन्त आदि के सारे सूत्रों को अलग करके 'अष्टाध्यायी सहज बोध' के प्रथम, द्वितीय भाग में उतने ही सूत्रों को लिया है, जिनका उपयोग लकारों के रूप बनाने में होता है। अब अष्टाध्यायी के क्रम से उन सारे सूत्रों का पाठ आपके सामने रख रहे हैं।

सूत्रों का पाठ अष्टाध्यायी के क्रम से ही करना चाहिये। अत: संक्षेप करने के बाद भी सूत्रों को हमने अष्टाध्यायी के क्रम से ही दिया है तथा उनके सामने उनकी जो क्रमसंख्या लिखी है, वह भी अष्टाध्यायी की ही है।

अष्टाध्यायी क्रमानुसार इन सूत्रों की वृत्ति तथा अर्थ बनाने की संक्षिप्त विधि इस प्रकार है -

'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र १.३.२ को देखिये। इसमें चार पद हैं। उपदेशे, अच्, अनुनासिक तथा इत्। क्रियापद नहीं है और बिना क्रिया के वाक्य पूरा नहीं होता। अत: जहाँ कोई भी क्रिया न हो, वहाँ स्यात्, भवति, भवेत् आदि क्रियापदों की कल्पना कर लेना चाहिये, यह नियम है। अत: यहाँ 'स्यात्' क्रिया की कल्पना करके अर्थ बना - उपदेशे अनुनासिक अच् इत् स्यात् अर्थात् उपदेशावस्था में जो अनुनासिक अच् होता है, उसकी इत्संज्ञा होती है।

इसके ठीक बाद में सूत्र है 'हलन्त्यम्' १.३.३। इसमें दो ही पद हैं। हल् तथा अन्त्यम्। इतने से वाक्य पूरा नहीं होता। अत: यहाँ ऊपर के सूत्र से जितने भी पदों की आवश्यकता हो, उन्हें खींचकर ले लेना चाहिये। खींचते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि ऊपर से उस विभक्ति के पदों को ही खींचा जाये, जिस विभक्ति का पद सूत्र में न हो। हल् और अन्त्यम् ये दोनों ही पद प्रथमा विभक्ति में हैं। अत: ऊपर के सूत्र के प्रथमा विभक्ति के अनुनासिक तथा अच्, इन दो पदों को छोड़ दीजिये तथा उपदेशे और इत् इन दो पदों को नीचे उतार लीजिये।

ध्यान दें कि इत् पद प्रथमान्त है, तब भी इसे इसलिये उतार लिया जाता है, कि उसी इत् का तो विधान किया जा रहा है। तात्पर्य यह है कि उद्देश्यपद तभी उतारे जायें जब उनकी विभक्ति असमान हो तथा विधेयपद समान विभक्ति

होने के बाद भी उतार लिये जायें। इस प्रकार उपदेशे तथा इत् पदों को नीचे उतारकर हलन्त्यम् सूत्र का अर्थ्र बना - उपदेशे अन्त्यम् हल् इत् स्यात् अर्थात् उपदेशावस्था में जो अन्तिम हल् होता है, उसकी इत्संज्ञा होती है।

इसके ठीक बाद में सूत्र है 'न विभक्तौ तुस्माः' १.३.४। इस सूत्र में तीन पद हैं। इसमें 'विभक्तौ' पद सप्तमी में है। अतः इस सूत्र में ऊपर के सूत्र से सप्तमी विभक्ति वाले 'उपदेशे' पद को नहीं लेंगे। केवल विधेयपद 'इत्' को लेंगे। तो सूत्र का अर्थ इस प्रकार बनेगा - विभक्तौ तुस्माः इतः न स्युः। अर्थात् विभक्ति में स्थित तवर्ग, सकार, मकार की इत् संज्ञा नहीं होती।

अब सूत्रों में स्थित विभक्तियों के अर्थों का निर्णय करें। उदाहरण के लिये 'इको यणचि' सूत्र को देखें। सूत्र में यदि बिना किसी सम्बन्धविशेष के षष्ठी विभक्ति होती है, तो उसका अर्थ 'के स्थान पर' होता है। सूत्र में यदि बिना किसी सम्बन्धविशेष के सप्तमी विभक्ति होती है, तो उसका अर्थ 'के परे होने पर' होता है। अतः 'इको यणचि' सूत्र का अर्थ इस प्रकार बना - इक् के स्थान पर यण् होता है, अच् परे होने पर।

जब कोई अधिकार सूत्र आता है, तब वह अधिकारसूत्र उन सारे सूत्रों में जा जाकर मिलता जाता है, जितने सूत्रों तक उसका अधिकार चलता है। अतः यह जानना आवश्यक होता है, कि अधिकारसूत्र का अधिकार कहाँ से कहाँ तक चल रहा है। जैसे - प्रत्ययः ३.१.१ / परश्च ३.१.२ / आद्युदात्तश्च, ३.१.३ ये तीनों अधिकार सूत्र हैं। इनका अधिकार ५.४.१६० तक चलता है। उसके बाद धातोः सूत्र ३.१.९१ आता है। इसका अधिकार ३.४.११७ तक चलता है।

इनके बाद जब वर्तमाने लट् सूत्र ३.२.१ आता है, तो ये चारों अधिकार सूत्र उसके साथ मिलकर, उसका अर्थ इस प्रकार बनाते हैं - वर्तमान काल अर्थ में धातु से परे लट् प्रत्यय होता है। जो सूत्र यह सब करने की विधि बतलाते है, उन्हें परिभाषा सूत्र कहा जाता है। इस प्रकार जान लेने से वृत्ति रटने की आवश्यकता नहीं रह जाती तथा सूत्रों के सही स्थान का ज्ञान बना रहता है।

अब हम सभी लकारों के लिये उपयोगी सूत्रों को अष्टाध्यायी के क्रम से पढ़ें। इनके अर्थों का मनन भी इसी क्रम से ही करें - - -

विंशति पाठ

अष्टाध्यायी सूत्रपाठ

(तिङन्तोपयोगी)

प्रथमाध्याये प्रथमः पादः

१. वृद्धिरादैच्।

२. अदेङ् गुणः।

५. क्ङिति च।

६. दीधीवेवीटाम्।

७. हलोऽनन्तराः संयोगः।

८. मुखनासिकावचनोनुनासिकः।

४५. इग्यणः संप्रसारणम्।

४६. आद्यन्तौ टकितौ

४७. मिदचोऽन्त्यात्परः।

४८. एच इग्घ्रस्वादेशे।

५१. उरण रपरः।

५७. अचः परस्मिन् पूर्वविधौ।

५९. द्विर्वचनेऽचि

६०. अदर्शनं लोपः।

६४. अचोन्त्यादि टि।

६५. अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा।

प्रथमाध्याये द्वितीयः पादः

अथ ङित्वातिदेशः

१. गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्।

२. विज इट्।

३. विभाषोर्णोः।

४. सार्वधातुकमपित्

(इति ङित्वातिदेशः)

अथ कित्वातिदेशः

५. असंयोगाल्लिट् कित्।

६. ईन्धिभवतिभ्यां च।

७. मृडमृदगुधकुशक्लिशवदवसः क्त्वा।

८. रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च।

९. इको झल्।

१०. हलन्ताच्च।

११. लिङ्सिचावात्मनेपदेषु।

१२. उश्च।

१३. वा गमः।

१४. हनः सिच्।

१५. यमो गन्धने।

१६. विभाषोपयमने।

१७. स्थाघ्वोरिच्च।

१८. न क्त्वा सेट्।

१९. निष्ठा शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः।

२०. मृषस्तितिक्षायाम्।

२१. उदुपधाद् भावादिकर्मणो - रन्यतरस्याम्।

२२. पूङः क्त्वा च।

२३. नोपधात्थफान्ताद्वा।

२४. वञ्चिलुञ्च्यृतश्च।

२५. तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य।

२५. रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च -

(इति कित्वातिदेशः)।

४१. अपृक्त एकाल प्रत्ययः।

४५. अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

४६. कृत्तद्धितसमासाश्च।

प्रथमाध्याये तृतीयः पादः

अथ धातुसंज्ञा

१. भूवादयो धातवः।

(इति धातुसंज्ञा)

अथ इत्संज्ञाप्रकरणम्

२. उपदेशेऽजनुनासिक इत्।

३. हलन्त्यम्।

४. न विभक्तौ तुस्माः।

५. आदिर्ञिटुडवः।

६. षः प्रत्ययस्य।

७. चुटू।

८. लशक्वतद्धिते।

९. तस्य लोपः।

(इति इत्संज्ञाप्रकरणम्)

अथ आत्मनेपदप्रकरणम्

१२. अनुदात्तङित आत्मनेपदम्।

१३. भावकर्मणोः।

१४. कर्तरि कर्मव्यतिहारे।

१५. न गतिहिंसार्थेभ्यः।

१६. इतरेतरान्योन्योपपदाच्च।

१७. नेर्विशः।

१८. परिव्यवेभ्यः क्रियः।

१९. विपराभ्यां जेः।

२०. आङो दोऽनास्यविहरणे।

२१. क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च।

२२. समवप्रविभ्यः स्थः।

२३. प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च।

२४. उदोऽनूर्ध्वकर्मणि।

२५. उपान्मन्त्रकरणे।

२६. अकर्मकाच्च।

२७. उद्विभ्यां तपः।

२८. आङो यमहनः।

२९. समो गम्यृच्छिप्रच्छिस्वरत्यर्तिश्रु - विदिभ्यः।

३०. निसमुपविभ्यो ह्वः।

३१. स्पर्धायामाङः।

३२. गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्य प्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः।

३३. अधेः प्रहसने।

३४. वेः शब्दकर्मणः।

३५. अकर्मकाच्च।

३६. संमाननोत्सञ्जनाचार्यकरण - ज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु नियः।

३७. कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि।

३८. वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः।

३९. उपपराभ्याम्।

४०. आङ उद्गमने।

४१. वेः पादविहरणे।

४२. प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्।

४३. अनुपसर्गाद्वा।

४४. अपह्नवे ज्ञः।

४५. अकर्मकाच्च।

४६. संप्रतिभ्यामनाध्याने।

४७. भासनोपसंभाषाज्ञानयत्न - विमत्युपमन्त्रणेषु वदः।

४८. व्यक्तवाचां समुच्चारणे।

४९. अनोरकर्मकात्।

५०. विभाषा विप्रलापे।

५१. अवाद् ग्रः।

५२. समः प्रतिज्ञाने।

५३. उदश्चरः सकर्मकात्।
५४. समस्तृतीयायुक्तात्।
५५. दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे।
५६. उपाद्यमः स्वकरणे।
५७. ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः।
५८. नानोर्ज्ञः।
५९. प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः।
६०. शदेः शितः।
६१. म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च।
६२. पूर्ववत्सनः।
६३. आम्प्रत्ययवत्कृञोऽनुप्रयोगस्य।
६४. प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु।
६५. समः क्ष्णुवः।
६६. भुजोऽनवने।
६७. णेरणौ यत्कर्म णौ चेत्स कर्ता - नाध्याने।
६८. भीस्म्योर्हेतुभये।
६९. गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने।
७०. लियः संमाननशालीनीकरणयोश्च।
७१. मिथ्योपपदात्कृञोऽभ्यासे।
७२. स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले।
७३. अपाद्वदः।
७४. णिचश्च।
७५. समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे।
७६. अनुपसर्गाज्ज्ञः।
७७. विभाषोपपदेन प्रतीयमाने।

(इति आत्मनेपदप्रकरणम्)।

अथ परस्मैपदप्रकरणम्

७८. शेषात्कर्तरि परस्मैपदम्।
७९. अनुपराभ्यां कृञः।
८०. अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः।
८१. प्राद्वहः।
८२. परेर्मृषः।
८३. व्याङ्परिभ्यो रमः।
८४. उपाच्च।
८५. विभाषाकर्मकात्।
८६. बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः।
८७. निगरणचलनार्थेभ्यश्च।
८८. अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्।
८९. न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुह रुचिनृतिवदवसः।
९०. वा क्यषः।
९१. द्युद्भ्यो लुङि।
९२. वृद्भ्यः स्यसनोः।
९३. लुटि च क्लृपः

(इति परस्मैपदप्रकरणम्)।

प्रथमाध्याये चतुर्थः पादः

२. विप्रतिषेधे परं कार्यम्।
१०. ह्रस्वं लघु।
११. संयोगे गुरु।
१२. दीर्घं च।
१३. यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि - प्रत्ययेऽङ्गम्
१४. सुप्तिङन्तम् पदम्।
१५. नः क्ये।
१८. यचि भम्।
५९. उपसर्गाः क्रियायोगे।

द्वितीयाध्याये चतुर्थः पादः

३५. आर्धधातुके *(अधिकारसूत्रम्)*।
३६. अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति।
३७. लुङ्सनोर्घस्लृ।
३८. घञपोश्च।
३९. बहुलं छन्दसि। *

४०. लिट्यन्यतरस्याम्।
४१. वेञो वयिः।
४२. हनो वध लिङि।
४३. लुङि च।
४४. आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्।
४५. इणो गा लुङि।
४६. णौ गमिरबोधने।
४७. सनि च।
४८. इङश्च।
४९. गाङ् लिटि।
५०. विभाषा लुङ्लृङोः।
५१. णौ च संश्चङोः।
५२. अस्तेर्भूः।
५३. ब्रुवो वचिः।
५४. चक्षिङः ख्याञ्।
५५. वा लिटि।
५६. अजेर्व्यघञपोः।
५७. वा यौ *(इति आर्धधातुके)*।

अथ लुक्प्रकरणम्

७२. अदिप्रभृतिभ्यः शपः (लुक्)।
७३. बहुलं छन्दसि। *
७४. यङोऽचि च।
७५. जुहोत्यादिभ्यः श्लुः।
७६. बहुलं छन्दसि।
७७. गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु।
७८. विभाषाघ्राधेट्शाच्छासः।
७९. तनादिभ्यस्तथासोः।
८०. मन्त्रे घसह्वरणशवृदहाद्वृच्कृगमि - जनिभ्यो लेः।
८१. आमः।

(इति लुक्प्रकरणम्)

तृतीयाध्याये प्रथमः पादः

१. प्रत्ययः।
२. परश्च।
३. आद्युदात्तश्च।
४. अनुदात्तौ सुप्पितौ।
५. गुप्तिज्किद्भ्यः सन्।
६. मान्बधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य।
७. धातोः कर्मणः समानकर्तृका - दिच्छायां वा।
८. सुप आत्मनः क्यच्।
९. काम्यच्च।
१०. उपमानादाचारे।
११. कर्तुः क्यङ् सलोपश्च।
१२. भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः।
१३. लोहितादिडाज्भ्यः क्यष्।
१४. कष्टाय क्रमणे।
१५. कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः।
१६. वाष्पोष्मभ्यामुद्वमने।
१७. शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे।
१८. सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम्।
१९. नमोवरिवसश्चित्रङः क्यच्।
२०. पुच्छभाण्डचीवराण्णिङ्।
२१. मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहल - कलकृततूस्तेभ्यो णिच्।
२२. धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभि - हारे यङ्।
२३. नित्यं कौटिल्ये गतौ।
२४. लुपसदचरजपजभदहदशगृभ्यो - भावगर्हायाम्।
२५. सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोक -

सेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्ण - चुरादिभ्यो णिच्।
२६. हेतुमति च।
२७. कण्ड्वादिभ्यो यक्।
२८. गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्यः आयः।
२९. ऋतेरीयङ्।
३०. कमेर्णिङ्।
३१. आयादय आर्धधातुके वा।
३२. सनाद्यन्ता धातवः।
३३. स्यतासी लृलुटोः।
३४. सिब्बहुलं लेटि।
३५. कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि।
३६. इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः।
३७. दयायासश्च।
३८. उषविदजागृभ्योन्यतरस्याम्।
३९. भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च।
४०. कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि।
४१. विदांकुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम्।
४२. अभ्युत्सादयांप्रजनयांचिकयांरम - यामकः पावयांक्रियाद्विदाम क्रन्निच्छन्दसि। *
४३. च्लि लुङि।
४४. च्लेः सिच्।
४५. शल इगुपधादनिटः क्सः।
४६. श्लिष आलिङ्गने।
४७. न दृशः।
४८. णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ्।
४९. विभाषा धेट्श्व्योः।
५०. गुपेश्छन्दसि।
५१. नोनयतिध्वनयत्येलयत्यर्दयतिभ्यः।
५२. अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्।
५३. लिपिसिचिह्वश्च।
५४. आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्।
५५. पुषादिद्युताद्य्लृदितः परस्मैपदेषु।
५६. सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च।
५७. इरितो वा।
५८. जॄस्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चु - श्विभ्यश्च।
५९. कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि। *
६०. चिण्ते पदः।
६१. दीपजनबुधपूरीतायिप्यायिभ्योऽन्य - तरस्याम्।
६२. अचः कर्मकर्तरि।
६३. दुहश्च।
६४. न रुधः।
६५. तपोऽनुतापे च।
६६. चिण्भावकर्मणोः।
६७. सार्वधातुके यक्।
६८. कर्तरि शप्।
६९. दिवादिभ्यः श्यन्।
७०. वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसि - त्रुटिलषः।
७१. यसोऽनुपसर्गात्।
७२. संयसश्च।
७३. स्वादिभ्यः श्नुः।
७४. श्रुवः शृ च।
७५. अक्षोऽन्यतरस्याम्।
७६. तनूकरणे तक्षः।
७७. तुदादिभ्यः शः।
७८. रुधादिभ्यः श्नम्।
७९. तनादिकृञ्भ्यः उः।
८०. धिन्विकृण्व्यो र च।
८१. क्र्यादिभ्यः श्ना।
८२. स्तन्भुस्तुन्भुस्कन्भुस्कुन्भुस्कुञ्भ्यः -

श्नुश्च।
८३. हलः श्नः शानज्झौ।
८४. छन्दसि शायजपि। *
८५. व्यत्ययो बहुलम्। *
८६. लिङ्याशिष्यङ्।
८७. कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः।
८८. तपस्तपःकर्मकस्यैव।
८९. न दुहस्नुनमां यक्चिणौ।
९०. कुषिरजोः प्राचां श्यन् परस्मैपदं च।

तृतीयाध्याये द्वितीयः पादः

८४. भूते
११०. लुङ्
१११. अनद्यतने लङ्
११५. परोक्षे लिट्
१२३. वर्तमाने लट्

तृतीयाध्याये तृतीयः पादः

१३. लृट् शेषे च
१५. अनद्यतने लुट्
१३९. लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ
१६१. विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्ट संप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्
१६२. लोट् च
१७३. आशिषि लिङ्लोटौ
१७५. माङि लुङ्
१७६. स्मोत्तरे लङ् च

तृतीयाध्याये चतुर्थः पादः

७. लिङर्थे लेट्। *
८. उपसंवादाशङ्कयोश्च। *

षष्ठाध्याये प्रथमः पादः

अथ द्वित्वप्रकरणम्

१. एकाचो द्वे प्रथमस्य।
२. अजादेर्द्वितीयस्य।
३. न न्द्राः संयोगादेः।
४. पूर्वोऽभ्यासः।
५. उभे अभ्यस्तम्।
६. जक्षित्यादयः षट्।
७. तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य। *
८. लिटि धातोरनभ्यासस्य।
९. सन्यङोः।
१०. श्लौ।
११. चङि।
१२. दाश्वान्साह्वान्मीढ्वांश्च। *

(इति द्वित्वप्रकरणम्)।

अथ सम्प्रसारणप्रकरणम्

१५. वचिस्वपियजादीनां किति
१६. ग्रहिज्यावयिव्याधिवष्टिविचति - वृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां - ङिति च।
१७. लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्।
१८. स्वापेश्चङि।
१९. स्वपिस्यमिव्येयां यङि।
२०. न वशः।
२१. चायः की।
२२. स्फायः स्फी निष्ठायाम्।
२३. स्त्यः प्रपूर्वस्य।
२४. द्रवमूर्तिस्पर्शयोः श्यः।
२५. प्रतेश्च।
२६. विभाषाऽभ्यवपूर्वस्य।
२७. श्रृतं पाके।
२८. प्यायः पी।
२९. लिड्यङोश्च।

३०. विभाषा श्वेः।
३१. णौ च संश्चङोः।
३२. ह्वः सम्प्रसारणम्।
३३. अभ्यस्तस्य च।
३४. बहुलं छन्दसि। *
३५. चायः की।
३६. अपस्पृधेथामानृचुरानृहु - श्चिच्युषेतित्याजश्राताःश्रित - माशीराशीर्ताः। *
३७. न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम्।
३८. लिटि वयो यः।
३९. वश्चास्यान्यतरस्यां किति।
४०. वेञः।
४१. ल्यपि च।
४२. ज्यश्च।
४३. व्यश्च।
४४. विभाषा परेः

(इति सम्प्रसारणप्रकरणम्)।

अथ आत्वप्रकरणम्

४५. आदेच उपदेशेऽशिति।
४६. न व्यो लिटि।
४७. स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि।
४८. क्रीङ्जीनां णौ।
४९. सिध्यतेरपारलौकिके।
५०. मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च।
५१. विभाषा लीयते।
५२. खिदेश्छन्दसि। *
५३. अपगुरो णमुलि।
५४. चिस्फुरोर्णौ।
५५. प्रजने वीयते।
५६. बिभेतेहेतुर्भये।
५७. नित्यं स्मयते

(इति आत्वप्रकरणम्)।

अथ अमागमप्रकरणम्

५८. सृजिदृशोर्झल्यमकिति।
५९. अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम्।

(इति अमागमप्रकरणम्)

अथ धात्वादेशप्रकरणम्

६४. धात्वादेः षः सः।
६५. णो नः।

अथ लोपप्रकरणम्

६६. लोपोव्योर्वलि।
६७. वेरपृक्तस्य।

(इति लोपप्रकरणम्)

अथ संहितायाम्

७३. छे च।
७५. दीर्घात्।
७६. पदान्ताद्वा।
७७. इको यणचि।
७८. एचोऽयवायावः।
७९. वान्तो यि प्रत्यये।
८७. आद्गुणः।
८८. वृद्धिरेचि।
८९. एत्येधत्यूठ्सू।
९०. आटश्च।
९१. उपसर्गादृति धातौ।
९४. एङि पररूपम्।
९६. उस्यपदान्तात्।
९७. अतो गुणे।
१०१. अकः सवर्णे दीर्घः।
१०८. संप्रसारणाच्च।

षष्ठाध्याये तृतीयः पादः

१११. ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।

११२. सहिवहोरोदवर्णस्य।

११३. साढ्यै साढ्वा साढेति निगमे। *

षष्ठाध्याये चतुर्थः पादः

१. अङ्गस्य *(अधिकारसूत्रम्)।*

अथ दीर्घप्रकरणम्

२. हलः *(सम्प्रसारणस्य दीर्घः)।*

१५. अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति।

१६. अज्झनगमां सनि।

१७. तनोतेर्विभाषा।

१८. क्रमश्च क्त्वि

(इति दीर्घप्रकरणम्)।

अथ ऊठादेशप्रकरणम्

१९. च्छ्वोः शूडनुनासिके।

२०. ज्वरत्वरस्रिव्यविमवमुपधायाश्च।

अथ छ्वलोपप्रकरणम्

२१. राल्लोपः।

अथ असिद्धवदधिकारः

२२. असिद्धवदत्राभात् *(अधिकारसूत्रम्)।*

अथ नलोपप्रकरणम्

२३. श्नान्नलोपः।

२४. अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति।

२५. दंशसञ्जस्वञ्जां शपि।

२६. रञ्जेश्च।

३३. भञ्जेश्च चिणि।

(इति नलोपप्रकरणम्)

३४. शास इदङ्हलोः।

(क्ङिति सार्वधातुके आर्धधातुके च)

अथ शासः शादेशः

३५. शा हौ।

अथ हन्तेजदिशः

३६. हन्तेर्जः।

अथ अनुनासिकलोपप्रकरणम्

३७. अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीना - मनुनासिकलोपो झलि क्ङिति।

(इति अनुनासिकलोपप्रकरणम्)

अथ अनुनासिकस्य आत्वप्रकरणम्

४२. जनसनखनां सञ्झलोः।

४३. ये विभाषा।

४४. तनोतेर्यकि।

(इति आत्वम्)।

अथ आर्धधातुकाधिकारः

४६. आर्धधातुके *(अधिकारसूत्रम्)।*

अथ आर्धधातुके रमागमः

४७. भ्रस्जो रोपधयो रमन्यतरस्याम्।

आर्धधातुके लोपप्रकरणम्

४८. अतो लोपः।

४९. यस्य हलः।

५०. क्यस्य विभाषा।

५१. णेरनिटि।

(इति लोपप्रकरणम्)।

अथ आर्धधातुके णेः अयादेशप्रकरणम्

५५. अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु।

(इति अयादेशः)

अथ चिण्वद्भावः

६२. स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणो रुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च। *

(इति चिण्वद्भावः)

अथ दीङो युडागमः

६३. दीङो युडचि क्ङिति।

(इति दीङो युडागमः)

अथ आल्लोपः

६४. आतो लोप इटि च।

अथ आकारस्य ईत्वम्, एत्वम्, इत्वम्

६५. ईद्यति।

६६. घुमास्थागापाजहातिसां हलि।

६७. एर्लिङि।

६८. वान्यस्य संयोगादेः

(इति आर्धधातुके)।

अथ अडागमः, आडागमः

७१. लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः।

७२. आडजादीनाम्।

७३. छन्दस्यपि दृश्यते। *

७४. न माङ्योगे।

७५. बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि। *

अथ प्रत्ययादेशः

७६. इरयो रे। *

अथ इयङुवङ्विधिः

७७. अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ।

(सार्वधातुके आर्धधातुके च)

७८. अभ्यासस्यासवर्णे।

८१. इणो यण्। *(सार्वधातुके)*

८२. एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य

८७. हुश्नुवोः सार्वधातुके।

८८. भुवो वुग्लुङ्लिटोः *(अचि)।*

८९. ऊदुपधाया गोहः।

(अचि सार्वधातुके आर्धधातुके च)

९०. दोषो णौ।

९१. वा चित्तविरागे।

९२. मितां ह्रस्वः।

९३. चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम्।

अथ उपधालोपः

९८. गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि।

(सार्वधातुके आर्धधातुके च)

९९. तनिपत्योश्छन्दसि। *

१००. घसिभसोर्हलि च। *

(अचि सार्वधातुके आर्धधातुके च)

१०१. हुझल्भ्यो हेर्धिः।

१०२. श्रुशृणुपॄकृवृभ्यश्छन्दसि। *

१०३. अङितश्च। *

अथ लुक्

१०४. चिणो लुक्।

१०५. अतो हेः।

१०६. उतश्चप्रत्ययादसंयोगपूर्वात्।

१०७. लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः।

१०८. नित्यं करोतेः।

१०९. ये च *(इति लुक्)।*

अथ सार्वधातुके

११०. अत उत्सार्वधातुके।

१११. श्नसोरल्लोपः।

११२. श्नाभ्यस्तयोरातः।

११३. ई हल्यघोः।

११४. इद्दरिद्रस्य।

११५. भियोऽन्यतरस्याम्।

११६. जहातेश्च।

११७. आ च हौ।

११८. लोपो यि।

११९. घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च।

अथ लिटि एत्वाभ्यासलोपौ

१२०. अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि।

१२१. थलि च सेटि।

१२२. तॄफलभजत्रपश्च।

१२३. राधो हिंसायाम्।

१२४. वा जॄभ्रमुत्रसाम्।

१२५. फणां च सप्तानाम्।

१२६. न शसददवादिगुणानाम्

(इति एत्वाभ्यासलोपौ)।

१२९. भस्य। *(अधिकारसूत्रम्)*

अथ टिलोप:

१५५. टे: *(लोप:, इष्ठेमेयस्सु)।*

१५६. स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां - यणादि परं पूर्वस्य च गुण:।

१५७ प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरु वृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वषि त्रब्द्राघिवृन्दा:।

१५८. बहोर्लोपो भू च बहो:।

१५९. इष्ठस्य यिट् च।

१६०. ज्यादादीयस:।

१६१. र ऋतो हलादेर्लघो:।

१६२. विभाषर्जोश्छन्दसि। *

१६३. प्रकृत्यैकाच्।

सप्तमाध्याये प्रथम: पाद:

अथ प्रत्ययादेशा:

३. झोऽन्त:

४. अदभ्यस्तात्

५. आत्मनेपदेष्वनत:

अथ रुडागम:

६. शीङो रुट्।

७. वेत्तेर्विभाषा।

८. बहुलं छन्दसि। *

अथ प्रत्ययादेश:

३४. आत औ णल:।

३५. तुह्योस्तातङाशिष्यन्यतरस्याम्।

अथ प्रत्ययादेशा:

३९ सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेया - डाड्यायाजाल:।

४०. अमो मश्। *

४१. लोपस्त आत्मनेपदेषु। *

४२. ध्वमो ध्वात्। *

४३. यजध्वैनमिति च। *

४४. तस्य तात्। *

४५. नप्तनप्तनथनाश्च। *

४६. इदन्तो मसि:। *

अथ असुगागम:

५१. अश्वक्षीरवृषलवणानामात्म- प्रीतौ क्यचि।

अथ नुमागम:

५८. इदितो नुम् धातो:।

५९. शे मुचादीनाम्।

६०. मस्जिनशोर्झलि।

६१. रधिजभोरचि।

६२. नेट्यलिटि रधे:।

६३. रभेरशब्लिटो:।

६४. लभेश्च।

६५. आङो यि।

६६. उपात्प्रशंसायाम्।

६९. विभाषा चिण्णमुलो: *(इति नुम्)।*

अथ णिद्वद्भावः

९१. णलुत्तमो वा।

अथ ऋृकारस्य इत्वम्

१००. ऋृत इद्धातोः।

१०१. उपधायाश्च।

१०२. उदोष्ठ्यपूर्वस्य।

१०३. बहुलं छन्दसि। *

सप्तमाध्याये द्वितीयः पादः

अथ सिचि परस्मैपदेषु वृद्धिः

१. सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु।

२. अतो ल्रान्तस्य।

३. वदव्रजहलन्तस्याचः।

४. नेटि।

५. ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणि श्व्येदिताम्।

६. ऊर्णोतेर्विभाषा।

७. अतोहलादेर्लघोः

अथ वृद्धिः

११४. मृजेर्वृद्धिः।

११५. अचो ञ्णिति।

११६. अत उपधायाः।

सप्तमाध्याये तृतीयः पादः

अथ ञ्णिति वृद्धिः

३२. हनस्तो चिण्णलोः। (ञ्णिति)

३३. आतो युक्चिण्कृतोः।

३४. नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः।

३५. जनिवध्योश्च।

अथ णौ

३६. अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुग्णौ।

३७. शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक्।

३८. वोविधूनने जुक्।

३९. लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेह-निपातने।

४०. भियो हेतुभये षुक्।

४१. स्फायो वः।

४२. शदेरगतौ तः।

४३. रुहः पोन्यतरस्याम्।

अथ कुत्वम्

५४. हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु।

५५. अभ्यासाच्च।

५६. हेरचङि।

५७. सन्लिटोर्जेः।

५८. विभाषा चेः।

७१. ओतः श्यनि।

७२. क्सस्याचि।

७३. लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये।

७४. शमामष्टानां दीर्घः श्यनि।

७५. ष्ठिवुक्लमुचमां शिति।

७६. क्रमः परस्मैपदेषु।

७७. इषुगमियमां छः।

७८. पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्ति - सर्तिशदसदां पिबजिघ्रधम - तिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छ - धौशीयसीदाः।

७९. ज्ञाजनोर्जा।

८०. प्वादीनां ह्रस्वः।

८१. मीनातेर्निगमे। *

८२. मिदेर्गुणः।

८३. जुसि च।

८४. सार्वधातुकार्धधातुकयोः।

८५. जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु।
८६. पुगन्तलघूपधस्य च।
अथ सार्वधातुके
८७. नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके।
८८. भूसुवोस्तिङि।
८९. उतोवृद्धिर्लुकि हलि।
९०. ऊर्णोतेर्विभाषा।
९१. गुणोऽपृक्ते।
९२. तृणह इम्।
९३. ब्रुव ईट्।
९४. यङो वा।
९५. तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके।
९६. अस्तिसिचोऽपृक्ते।
९७. बहुलं छन्दसि। *
९८. रुदश्च पञ्चभ्यः।
९९. अड्गार्ग्यगालवयोः।
१००. अदः सर्वेषाम्।
१०१. अतो दीर्घो यञि।
सप्तमाध्याये चतुर्थः पादः
अथ णौ चङि
१. णौ चङ्युपधायाः ह्रस्वः।
२. नाग्लोपिशास्वृदिताम्।
३. भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडा - मन्यतरस्याम्।
४. लोपः पिबतेरीच्चाभ्यासस्य।
५. तिष्ठतेरित्।
६. जिघ्रतेर्वा।
७. उर्ऋत्।
८. नित्यं छन्दसि। *
इति णौ चङि
९. दयतेर्दिगि लिटि।
१०. ऋतश्च संयोगादेर्गुणः।
११. ऋच्छत्यॄताम्।
१२. शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा।
१६. ऋदृशोऽङि गुणः।
१७. अस्यतेस्थुक्।
१८. श्वयतेरः।
१९. पतः पुम्।
२०. वच् उम्।
२१. शीङः सार्वधातुके गुणः।
(सार्वधातुके)
अथ यकारादौ क्ङिति आर्धधातुके
२२. अयङ् यि क्ङिति।
२३. उपसर्गाद्ध्रस्व ऊहतेः।
२४. एतेर्लिङि।
अथ दीर्घः
२५. अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः।
२६. च्वौ च।
अथ रीङागमः, रिङागमः
२७. रीङृतः।
२८. रिङ्श्यग्लिङ्क्षु
अथ गुणः
२९. गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः।
३०. यङि च।
अथ ईकारादेशः
३१. ई घ्राध्मोः।
३२. अस्य च्वौ।
३३. क्यचि च।
इति ईकारादेशः
३४. अशनायोदन्यधनायाबुभुक्षा - पिपासागर्धेषु।

३५. न च्छन्दस्यपुत्रस्य। *
३६. दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृष - ण्यतिरिषण्यति। *
३७. अश्वाघस्यात्। *
३८. देवसुम्नयोर्युजुषि काठके। *
३९. कव्यध्वरपृतनस्यर्चिलोपः। *
(इति छान्दसविधयः)।
४९. सः स्यार्धधातुके।
५३. यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः।
अथ सनि
५४. सनि मीमाघुरभलभशक - मतपदामच इस्।
५५. आप्ज्ञप्यृधामीत्।
५६. दम्भ इच्च।
५७. मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा।
इति सनि
अथ अभ्यासस्य
५८. अत्र लोपोऽभ्यासस्य।
५९. ह्रस्वः।
६०. हलादि: शेषः।
६१. शर्पूर्वाः खयः।
६२. कुहोश्चुः।
६३. न कवतेर्यङि।
६४. कृषेश्छन्दसि। *
६५. दाधर्तिदर्धर्तिदर्धर्षिबोभूतुतेतिक्ते - ऽलर्ष्यापनीफणत्संसनिष्यदत्क - रिक्रत्कनिक्रदद्भरिभ्रद्दविध्वतोद - विद्युतत्तरित्रतःसरीसृपतंवरीवृजन् मर्मृज्यागनीगन्तीति च। *
६६. उरत्।
६७. द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम्।
६८. व्यथो लिटि।
६९. दीर्घ इणः किति।
७०. अत आदेः।
७१. तस्मान्नुड् द्विहलः।
७२. अश्नोतेश्च।
७३. भवतेरः।
७४. ससूवेति निगमे। *
७५. निजां त्रयाणां गुणः - श्लौ।
७६. भृञामित्।
७७. अर्तिपिपर्त्योश्च।
७८. बहुलं छन्दसि। *
७९. सन्यतः।
८०. ओः पुयण्ज्यपरे।
८१. स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्लवति - च्यवतीनां वा।
८२. गुणो यङ्लुकोः।
८३. दीर्घोऽकितः।
८४. नीग्वञ्चुस्रंसुध्वंसुभ्रंसुकसप - तपदस्कन्दाम्।
८५. नुगतोऽनुनासिकान्तस्य।
८६. जपजभदहदशभञ्जपशां च।
८७. चरफलोश्च।
८८. उत्परस्यातः।
९०. रीगृदुपधस्य च।
९१. रुग्रिकौ च लुकि।
९२. ऋतश्च।
९३. सन्वल्लघुनिचङ्परे नग्लोपे।
९४. दीर्घो लघोः।
९५. अत्स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तॄस्पशाम्।
९६. विभाषा वेष्टिचेष्ट्योः।
९७. ई च गणः

(इति अभ्यासस्य)।

अष्टमाध्याये द्वितीयः पादः

१८. कृपो रो लः।

१९. उपसर्गस्यायतौ।

२०. ग्रो यङि।

२१. अचि विभाषा।

अथ लोपः

२३. संयोगान्तस्य लोपः।

२४. रात्सस्य।

२५. धि च।

२६. झलो झलि।

२७. ह्रस्वादङ्गात्।

२८. इट ईटि।

२९. स्कोः संयोगाद्योरन्ते च *(इति लोपः)।*

३०. चोः कुः।

३१. हो ढः।

३२. दादेर्धातोर्घः।

३३. वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्।

३४. नहो धः।

३५. आहस्थः।

३६. व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः।

३७. एकाचो बशो भष्झषन्तस्य स्ध्वोः।

३८. दधस्तथोश्च।

३९. झलां जशोऽन्ते।

४०. झषस्तथोर्धोऽधः।

४१. षढोः कः सि।

६५. म्वोश्च।

६६. ससजुषो रुः।

७३. तिप्यनस्तेः।

७४. सिपि धातो रुर्वा।

७५. दश्च।

७६. र्वोरुपधाया दीर्घ इकः।

७७. हलि च।

७८. उपधायां च।

७९. न भकुर्छुराम्।

अष्टाध्याये तृतीयः पादः

१३. ढो ढे लोपः।

१५. खरवसानयोर्विसर्जनीयः।

२३. मोऽनुस्वारः।

२४. नश्चापदान्तस्य झलि।

५९. आदेशप्रत्यययोः।

६०. शासिवसिघसिनां च।

अष्टाध्याये चतुर्थः पादः

१. रषाभ्यां नो णः समानपदे।

२. अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि।

४०. स्तोः श्चुना श्चुः।

४१. ष्टुना ष्टुः।

५३. झलां जश्झशि।

५४. अभ्यासे चर्च।

५८. अनुस्वारस्य ययि परसवर्णे।

६५. झरो झरि सवर्णे।

 **श्रीकृष्णार्पणमस्तु** 

सूत्रवार्तिकाद्यनुक्रमणिका

ऊ.

ऋ.

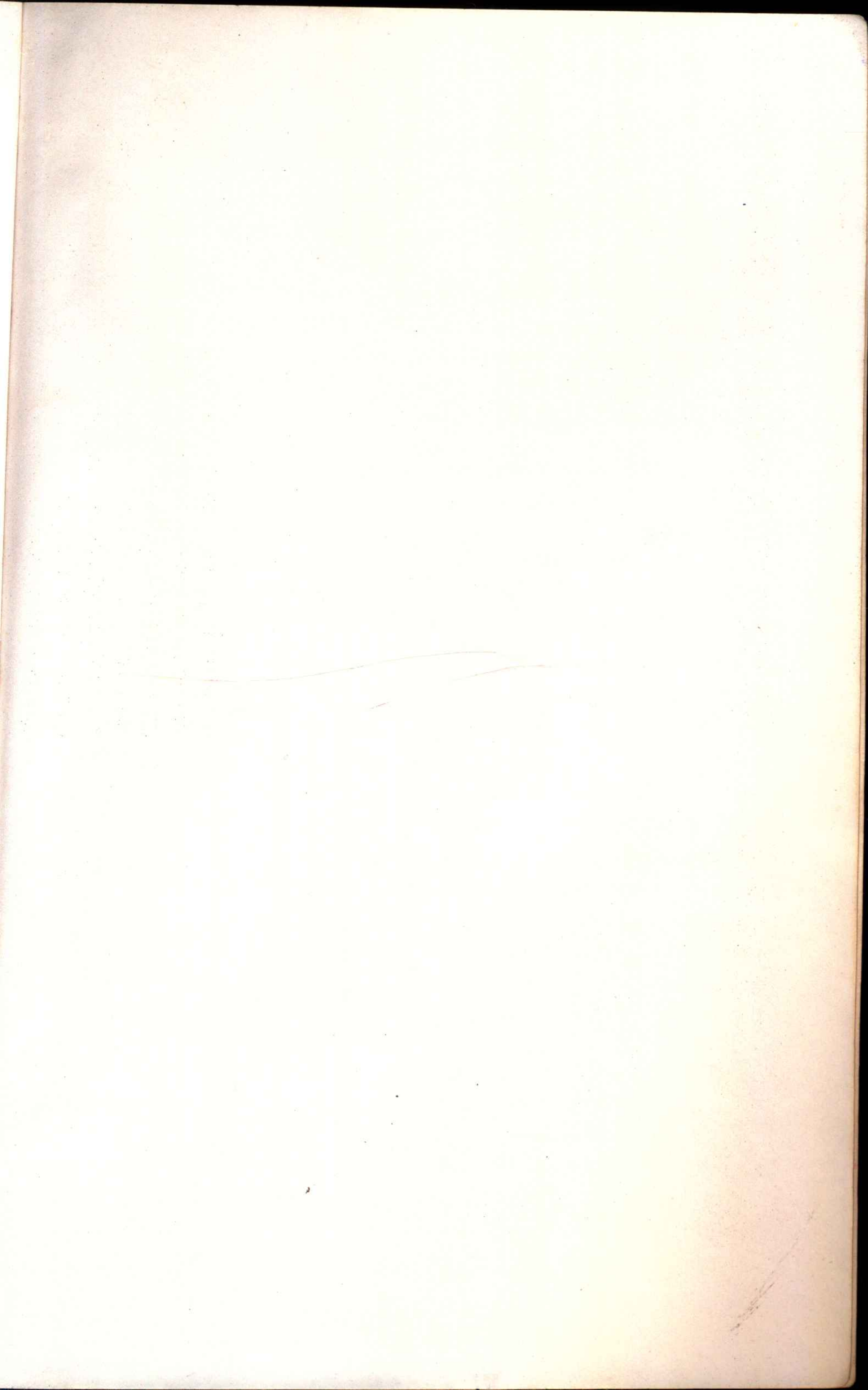
ॠ.

ए.

ओ.

क.







डॉ० पुष्पा दीक्षित

12 जून 1943 को जबलपुर नगर में, प्रख्यात आयुर्वेद चिकित्सक तथा न्याय, वेदान्त और संस्कृत साहित्य के गम्भीर विद्वान प्राणाचार्य पण्डित सुन्दरलाल जी शुक्ल के घर जन्म। बाल्यकाल से ही पूज्यपिताजी से तथा अनन्तर काशी की विद्वत्परम्परा के महनीय आचार्य पण्डित विश्वनाथ जी त्रिपाठी, प्राचार्य, कृष्णबोधाश्रम संस्कृत महाविद्यालय, जबलपुर से नव्यव्याकरण का अध्ययन। एम० ए०, पी–एच०डी० करके सन् 1965 से मध्यप्रदेश शासन/छत्तीसगढ़ शासन की महाविद्यालयीन शिक्षा में प्राध्यापक पद से सेवानिवृत्त। आपने पाणिनीय अष्टाध्यायी के वैज्ञानिक क्रम का अनुसंधान करके व्याकरणशास्त्र में एक सर्वथा नवीन प्रस्थान को जन्म दिया, जिससे 6 मास में सम्पूर्ण अष्टाध्यायी अधिगत हो जाती है।

प्रकाशित ग्रन्थ

1. अष्टाध्यायी सहजबोध, भाग 1 सार्वधातुक लकार। **2. अष्टाध्यायी सहजबोध**, भाग 2 आर्धधातुक लकार। **3. अष्टाध्यायी सहजबोध**, भाग 3 कृदन्तप्रकरणम्। **4. अष्टाध्यायी सहजबोध** भाग 4 तद्धितप्रकरणम्। **5. आर्धधातुक प्रत्ययों की इडागम व्यवस्था। 6. अग्निशिखा** (गीतिकाव्य)। **7. शाम्भवी** (गीतिकाव्य)। **8. शीघ्रबोध व्याकरणम्। 9. अष्टाध्यायीसूत्रपाठः।**

प्रकाश्यमानग्रन्था

10. कृदन्तरूपकोशः। 11. तिङन्तरूपकोशः। 12. प्रक्रियानुसारपाणिनीयधातुपाठः। 13. पारिभाषेन्दुशेखरस्य बहुतरपरिभाषाणामन्यथासिद्धिः। 14. अष्टाध्यायीसहजबोध के अवशिष्ट चार भाग। **15. नव्यसिद्धान्तकौमुदी** तथा अन्य।

ग्रन्थ के विषय में

डॉ० पुष्पा दीक्षित का यह **'अष्टाध्यायी सहजबोध'** महामुनि पाणिनि की अन्तरात्मा को निश्चित ही आनन्दित करेगा। इससे संस्कृत साहित्य का अत्यन्त कल्याण सम्भावित है, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

-आचार्य डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी

डॉ० पुष्पा दीक्षित की यह **'सहजबोध'** नामक कृति परम्परागत विद्वानों और विद्यार्थियों में 'पाणिनीय महाशास्त्र' के प्रति अभिनव रुचि जगायेगी एवं शोध की नई–नई दिशाओं का निर्माण करने में सहायक होगी।

-आचार्य डॉ० रामकरण शर्मा



प्रतिभा प्रकाशन
(प्राच्यविद्या प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता)
7259/23 अजेन्द्र मार्केट
प्रेमनगर, शक्ति नगर, दिल्ली-7
e-mail : pratibhabooks@ymail.com

